

3/6/23



Dec 6523

# विश्रामसागर

2961

बस्रामसार

जिसमें

महद शास्त्र अठारहों पुराणों का मत और श्री विभुवनपति  
कृष्ण चन्द्रावतार के चरित्र जन्म से निज लोक गमन  
पर्यन्त और श्री सच्चिदानन्द परब्रह्म रासावतार  
की कथा बहुत से गुणों के मत से उत्तम २  
कुण्डों में वर्णित है

उसको

श्री मन्महा महोपाध्याय गुराण गण मण्डली मण्डन श्री  
परब्रह्म रामचन्द्र जी के पादारविन्दानुगामी परम वैष्णव  
महन्ध श्री रघुनाथ दास राम सनेहीजी ने महात्माओं और  
हरिभक्तों और विद्या रसासूत स्पर्शियों के निमित्त अतीव  
परिश्रम करके सम्पूर्ण गुणों के आशय लेकर भाषा  
उल्ल्या किया

दूसरी बार

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापा गया

अक्टूबर सन् १८८० ई०

श्री सन्वत् १८३७ ई०

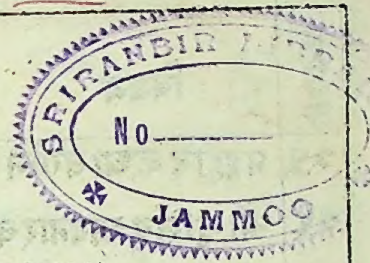


## विज्ञापि

इस महीने अर्थात् अक्टूबर सन् १८८० ई० पर्यन्त जो पुस्तकें बेच  
केलिये तैय्यार हैं वह इस फ्रेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी  
बहुत किफायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी  
सस्ती होंगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छाप खाने के मुहतमि-  
म अथवा मालिक के नाम खत भेजकर कीमत का निर्णय कर लें।

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा पुराणा इतिहास	दोहा वाली रामायणा	शुकबहनरी
काव्य कोष	विनय पत्रिका	बकावली मुमन
महाभारत भाषा छन्द	सुरवसागर टैप	चहार दरवेश
प्रबन्ध	तथा उत्तम पत्थर के छ	किस्सा हातम ताई
विजय मुक्तावली महा	पे की	अपूर्व कथा
भारत का संक्षेप	सती बिलास	किस्सा गुलसनोबर
रामायणा तुलसी कृतम्	प्रेमसागर	इन्द्र सभा
तथा मटीक मानस दीपि	ब्रज बिलास	सहस्र रजनी चरित्र
का कोष इत्यादि अहित	भक्त माल	दास्तान अमीर हमजा
तथा मोटे अक्षरों की मये	चित्रम बिलास	मनोहर कहानी
तस्वीर	श्री राम व्याहोत्सव	अवतार कथाऽमृत
रामायणा कवितावली	बैताल पच्चीसी	कमीशन बड़ोदा
तथा रीतावली	सिंहासन खन्तीसी	सूरसागर
रामायणा राम बिलास	पद्मावती खण्ड	कृष्णसागर
कृष्ण प्रिया	दान लीला नागलीला	देवी भागवत





# सूचीपत्र

## विश्रामसागर की कथा का।

संख्या	विषय	पृष्ठ	क	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	क
१	मंगल चरणा	१	६		वर्णन	६६	७२
२	कथा प्रसंग वर्णन	६	१२	१४	गीतमी सुवरता धर्मा		
३	गुरुमाहात्म्य और नारद				प्रसंग वर्णन	७२	७६
	कथा	१२	१६	१५	सुदगल प्रसंग वर्णन	७६	८१
४-५	गुरुमाहात्म्य और चरणा			१६	वीरभद्र प्रसंग वर्णन	८१	८६
	दनकथा	१७	२७	१७	हरिश्चन्द्र सुधन्वा कथा		
६	नाम माहात्म्य	२७	३४		वर्णन	८६	८५
७	बालमीक-गज-गणिका			१८	राजासिद्धिवादेवदन प्र-		
	यमन उद्धारणा	३४	३८		संग वर्णन	८६	८६
८	अज्ञानिल कथा वर्णन	३८	४३	१८	सुदर्शन कथा वर्णन	८६	९०
९	यमदूत कथा वर्णन	४३	४६	२०	बहुला गज की कथा		
१०	गुरुधर्म अधिक कथोत				वर्णन	९०	९०
	संवाद	४६	५१	२१	मोरध्वज कथा वर्णन	९०	९१
११	यमपुरी वर्णन	५१	६०	२२	मोरध्वज आख्यायन व-		
१२	गुरुधर्म कर्मविपाक				वर्णन	९१	९१
	वर्णन	६०	६६	२३	ध्रुवचरित्र वर्णन	९१	९२
१३	सुवरता यमराज प्रसंग			२४	ध्रुव मधुवन आगमन	९२	९३



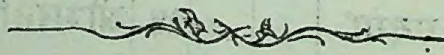
क्र.सं.	विषय	पृ.सं.	पृ.सं.	क्र.सं.	विषय	पृ.सं.	पृ.सं.
२५	प्रह्लाद कथा वर्णन	२३०	२३६	३६	मत्संग माहात्म्य वर्णन	२२३	२२७
२६	श्री नृसिंह अवतार वर्णन	१३६	१४४	४०	अम्बरीष कथा वर्णन	२२७	२३१
२७	ब्रह्मा की उत्पत्ति अयोध्या की उत्पत्ति ग्राम्भूम नु कथा वर्णन	१४४	१५०	४१	चन्द्रहास आख्यान वर्णन	२३१	२३६
२८	सातोहीयन वखण्ड प्रमान श्री सरयू की उत्पत्ति वर्णन	१५१	१५८	४२	नृग प्रसंग संत तनूझरा वर्णन	२३६	२४७
२९	श्री गंगा की उत्पत्ति वर्णन	१५८	१६४	४३	राजा क्वास आख्यान वर्णन	२४७	२५२
३०	एकादशी उत्पत्ति वर्णन	१६४	१६८	४४	राजा क्वास नारद संवाद वर्णन	२५३	२५७
३१	एकादशी माहात्म्य वर्णन	१६८	१८२	४५	क्वास पितृ उद्धार वर्णन	२५७	२६३
३२	श्री तुलसी माहात्म्य वर्णन	१८२	१८८	४६	नवधा भक्ति वर्णन	२६३	२७२
३३	शुद्धिचरित्र वर्णन	१८८	१९७	४७	छ ओं शास्त्र की जुदी जुदी वाक्य	२७२	२८२
३४	धर्महरि भक्ति साधन वर्णन	१९८	२०७	१	कृष्णायन प्रसंग वर्णन	२८२	२८९
३५	जामुन्य कृषि तुलाधार प्रसंग वर्णन	२०७	२०९	२	कृष्ण जन्म उत्साह पूतना का गा सुरतुणा वर्त वध वर्णन	२८९	२९८
३६	मल्लीदत्ताचर्य संवाद चौबिस गुरु कथा वर्णन	२०९	२१०	३	कृष्ण दधि चोरी वाक्य बिलास वर्णन	२९८	३०७
३७	पिता पुत्र संवाद अलरक प्रसंग	२१०	२१५	४	कृष्ण ऊरव लवन्धन यमलार्जुन उद्धार राधिका विवाह ब्रह्मा बच्छ		
३८	सयन जीत प्रसंग वर्णन	२१५	२२३				



क्र.सं.	विषय	पृ.सं.	पृ.सं.	विषय	पृ.सं.	पृ.सं.
५	हरणा धेनुक बध वार्तान	३०५	३१५	४	श्रीराम चन्द्र बाललीला वार्तान	३८५ ४०३
६	कृष्ण चतुर्मासा चौरह- रण दान लीला गोनई- न लीला वार्तान	३१५	३२३	५	राम चरित्र वार्तान	४०३ ४१५
६	कृष्ण राम लीला वार्तान	३२३	३२९	६	विश्वामित्र मरव रक्षाणा वार्तान	४१५ ४२४
७	कृष्ण मथुरा आगमन वार्तान	३२९	३३५	७	श्रीरामचन्द्र रंग भूमि आगमन	४२४ ४३६
८	कृष्ण कुबरी गृह आग- मन वार्तान	३३५	३४०	८	श्री परम राम बन यात्रा वार्तान	४३६ ४४३
८	उद्धव व्रज आगमन	३४०	३५३	९	श्रीरामचन्द्र विवाह वार्तान	४४३ ४५६
१०	कृष्ण जरासंध समर वार्तान	३५३	३५८	१०	श्रीराम कलेवा वार्तान	४५६ ४६५
११	कृष्ण रुक्मिणी हरणा वार्तान	३५८	३६६	११	श्रीरामचन्द्र श्री अयो- ध्या आगमन	४६५ ४६८
१२	रुक्मिणी मंगल प्रसु- प्त उत्पत्ति अरु रति संग विवाह वार्तान	३६६	३६८	१२	श्री राम बन यात्रा नृप विवाह वार्तान	४६८ ४७३
१	रामायणा प्रसंग रावणा उत्पत्ति अरु युद्ध विषय जय पराजय वार्तान	३७०	३७८	१३	श्रीराम चित्रकूट आगमन वार्तान	४७३ ४८८
२	मेघनाद अहि रावणा विजय वार्तान	३७८	३८४	१४	श्री भरत चित्रकूट गम- न वार्तान	४८८ ४८८
३	राम जन्म उत्सव वार्तान	३८४	३८५	१५	श्री भरत चित्रकूट आ- गमन वार्तान	४८८ ४८६
				१६	श्री भरत पादुका प्र-	

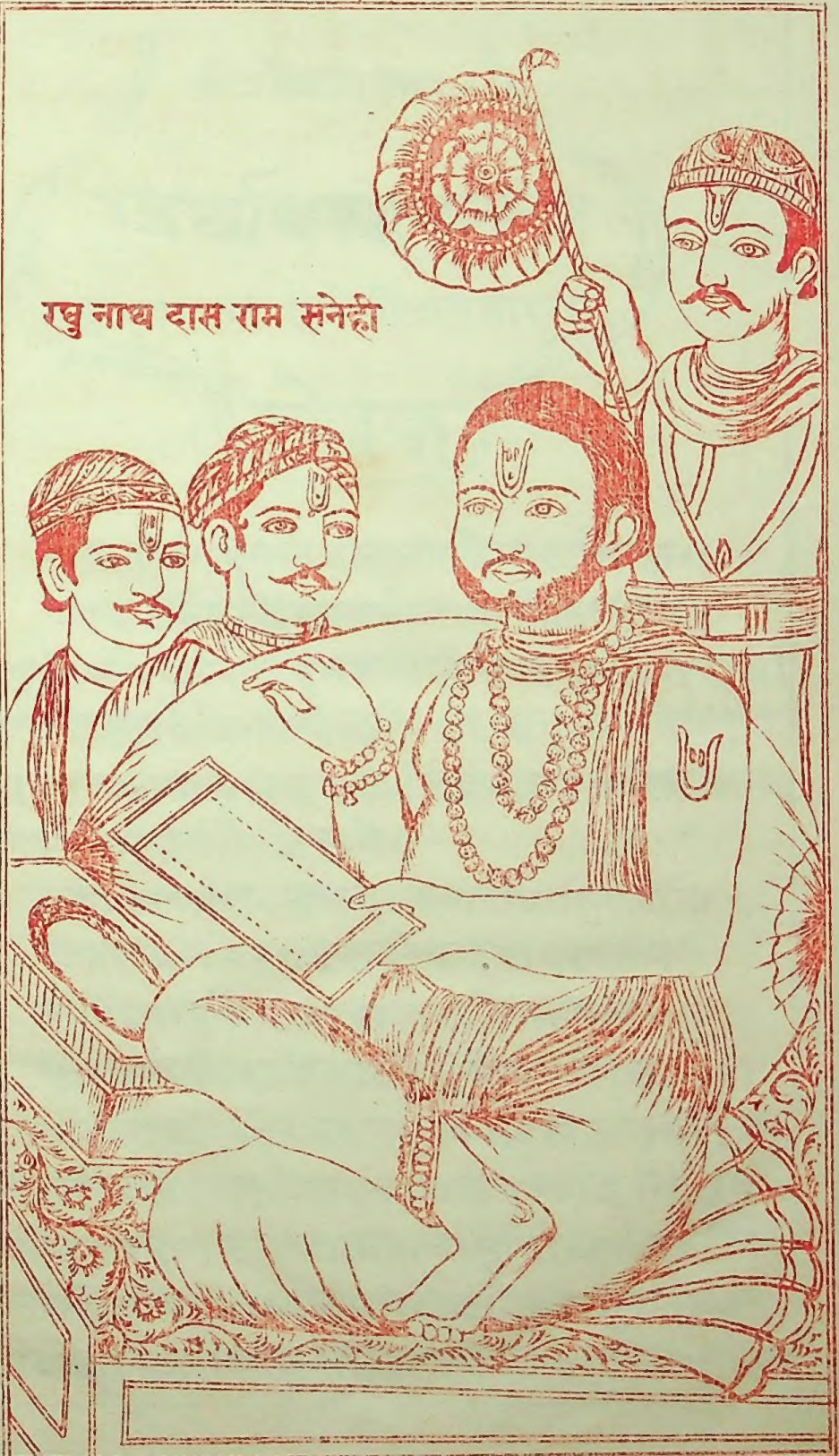


अध्याय	विषय	पृ.सं.	पृ.सं.	अध्याय	विषय	पृ.सं.	पृ.सं.
१७	भिवेक चरानि श्रीरामदंड कवन आ- गमन वरानि	४८६	५०५	२५	न वरानि अंगद रावणा सम्बाद वरानि	५४६	५६३
१८	श्रीराम सेवरी गृह आ- गमन वरानि	५०५	५१३	२६	लक्ष्मणा हित राम बि- रह वरानि	५६३	५६६
१९	श्रीराम सुग्रीव मित्रता वरानि	५१३	५२४	२७	मेघनाद बध और सु- लोचना सती वरानि	५६६	५७६
२०	बाल वध सैन आगम- न वरानि	५२४	५३१	२८	कुम्भकरणा बध राम रावणा समर वरानि	५७६	५८३
२१	मारुत नन्दन श्री सी- ता प्रति श्रीराम संदेश वरानि	५३१	५३५	२९	श्रीराम करके रावणा बध श्री अयोध्या आ- गमन वरानि	५८३	५९०
२२	हनुमान लंका पुरी वि- ध्वंस वरानि	५३५	५४२	३०	श्रीराम भरत सिन्हा- प श्रीराम राज्य अ- भिवेक वरानि	५९०	६०६
२३	श्रीराम सिंधु तट आग- मन वरानि	५४२	५४८		इति		
२४	श्रीराम सुबेल आगम	५४८	५५८				





रघु नाथ दास राम सनेही









श्रीगणेशायनमः

# अथ विश्रामसागर

रघुनाथदासगमसनेहीकृतप्रारम्भः

## श्लोक

सीतारामेति युगलं बस्तु तस्त्वेकरूपिणाम् ॥  
परमानन्दसन्दोहं सर्व्वीराध्वनतोऽस्यहम् ॥  
तत्प्राप्त्येपरिमार्गिताहि बह्व्यो लोके जनानेव तद्वातां  
हरिभक्तदासगुरुतो न्यायं क्वचिदृष्टवान् । तेषामेव तु पा-  
दपद्मप्रभवायासुस्त्रचक्ष्वाजिहं रघुनाथारिवलग्न्य  
सारसुखदं विश्रामसिन्दौ कृते ॥

दो० सुमिरिरामसिय सत्तगुरुगणपतिरासुखदाम् ।  
नानाग्रन्थनकेरमतकहौ बन्दना वरधानि ॥  
बन्दौं शारदके चरणाहरणप्रविद्यामूल ॥  
बुधिसुधिविद्यादे सुमतिहै मो परप्रनकूल ॥

कुंये एकरदनकरिवदनसदनसुखकेदुखनाशक । ईश  
तनयगणेश शीशरजनीश प्रकाशक ॥ ऋद्धि सिद्धि बु-  
धिलेतदेत हरिकुमतिनजागता ॥ जो सुमिरै मनलाय विष-  
णाता जनके भागत ॥ जय जय गणेश गिरजासुवन भुवन  
विदित यशप्रघहरण । रघुनाथदासवन्दन करत बारगण



तिचरणा॥ जै प्रनङ्ग प्ररिसङ्ग उमा प्ररधङ्ग विराजता मुराड  
माल स्रग काल कराह विष व्याल जो क्राजत ॥ शीस गङ्ग सार-  
ङ्ग भस्म सरवाङ्ग लगावत ॥ तीन नयन मरु वै न प्रप्रन सुरधनुः  
खन शावत ॥ दीन दयाल कृपाल हर कर अश्ल वर गौर तन ॥  
रघु नाथ दास बन्दन करत करी कृपा मोहिं जानि जन ॥ बन्दों  
द्विज पद कमल प्रमल सुन्दर सब लायक ॥ बन्दों रघु पति सखि-  
व सराव सेवक मुख दायक ॥ बन्दों गङ्ग तरङ्ग मेदिनी कुमुद  
विभाकर ॥ बन्दों सुर मुनि मनुज दनुज विधि जीष चराचर ॥ ब-  
न्दों कविकोषिद विमल जिन वरा यौ सिय राम यश ॥ सब मो पर  
किरपा करहु कहों कथा बल पायतम ॥

चौ ॥ राम चरित्र विचित्र प्रपारा ॥ गावत निगमन पावत पारा ॥  
निज मति सरिस तदपि मुनि गावैं ॥ मन चञ्चल तेहि तहौं मावैं ॥  
अवरा कीर्तन सुमिरा सेवा ॥ भक्ति भङ्ग भाषत महि देवा ॥  
कराय विचित्र गिरा अधहारी ॥ सब प्रकार मुद मङ्गल कारी ॥  
प्रसविचारि वरा त रघु नाथा ॥ भाषा करि हरि प्रेरित गाथा ॥  
कवित दोष गुण ग्रंथ भभारा ॥ कहे नाग पति यहि परकारा ॥  
रोचुं मगरा नगरा प्ररु भगरा यगरा शुभ चारि कहा-  
वैं ॥ जगरा रगरा पुनिसगरा तगरा कवि प्रशुभ बतवैं ॥  
मगरा तीन गुण प्रादि देव महि सब सुरव कारी ॥ नगरा  
तीन लघु देव नाग दायक बुधि भारी ॥ भगरा प्रादि  
गुरु देव चंद्र मंगल दा होई ॥ यगरा प्रादि लघु देव नी-  
रु प्रावन्द प्रद सोई ॥ जगरा मध्य गुरु देव सर सुरव सक-  
ल बिनाशै ॥ रगरा मध्य लघु देव प्रविन दाहल लनुत्राशै ॥  
सगरा प्रन्त गुरु देव काल निल देत उदासी ॥ तगरा प्र-  
न्त लघु देव व्योम निरफल फल नासी ॥ मनुज कवित



के आदि महं लीजै इन्हें विचारि खुब। कहै रघुनाथ श्री रा-  
म गुरा वर रात अशुभौ होत शुभ ॥

दो० तहां मित्र को उदास हैं उदासीन रिष को उ।  
अक्षर शुद्ध अशुद्ध को उ सुनो कहौ मैं सो उ।  
खग कच धन अजइ परत छत इति सुख प्रद अड्ड।  
शेष परे जो कवित तो करै रावते रड्ड ॥

चौ० यहि विधि पिङ्गल कहत बखाने ॥ सो है मम विशेष नहिं जानी  
तोहि ते सबै कहौ कर जोरी ॥ जो कह्यु चक परै लारि मोरी ॥

सुजन सुधारि लहे उतुम ताही ॥ लघु गुरु वराज हां जस चाही  
मेहि न जान बुधियल चतु राई ॥ कीन्ह चहैं हरि कथा सो हाई  
मति अति ह्यान पीन रुचि मोरी ॥ चाहत न भै छुवन वर जोरी ॥

यह ही राता समुक्ति वर जानी ॥ हमि हैं निजु शिशु सेवक जानी  
सुनि हैं मुदित सराहि सराही ॥ राम सिया पद ल मति जाही ॥

जिमि बालक बोलात सुत राई ॥ सुनत मात पितु प्रति हर पाई  
निदि हैं कपटी रसल अभिमानि ॥ जे हरि बिमुख भक्ति नहिं जानी

ता सुबचन सुनि सुजन सुख न्दा ॥ तजहि न उड पदारव शिव निन्दा  
राबिह उलूक कहै भल नाहीं ॥ साही किमि धारै मन माहीं ॥

निन्दा फल नहिं कह्यो वरगानी ॥ पै हैं जब तब जै हैं जानी ॥ ॥  
दो० राम कथा सब का सुख दजर तुवरी की नाइ ॥

अकै जवा सा दुष्ट जन ते प्रापु दुजरि जाइ ॥

चौ० यदपि है मम भनित भदेशी ॥ परि हरि जन गुरा नाम ते ले शी  
ताते भई अनूप मनी की ॥ जिमि मनि मादित चौतनी फी की ॥

हरि जन बिन जो कवि ताई ॥ सुभग प्राण बिन जिमि बपु भाई  
खल बायस कर तीरथ सोई ॥ सुजन हंसत हं सैन कोई ॥ ॥

कल्प प्रबंधन हरि गुरा गावै ॥ संजीवनि सोइ काच कहावै ॥



कहें सुनै मिलि सज्जन ताही ॥ कोरें प्रणाम श्रीतिगुण ग्राही ॥  
 यथा बक्र गति सरित निहारी ॥ ता सुधा यथावन सुरव कांरी ॥  
 मज्जहि ताहि महामुनि देवा ॥ अपरनका कोयरं सो भेवा ॥

दो० श्रीपति धीपति यज्ञ पति प्रखिल लोक पति जोषि  
 प्रणायो भूपति प्रजापति करो कृपा प्रभु सोषि ॥  
 बन्दों हरी जनपद कमल प्रसन्न तत्त्व प्रदरेनु ॥  
 जिनके संग प्रभु फिरत इमि जिमि बच्छ संग धेनु ॥  
 यद्यपि कामी कुटिल खल समली जन रघुनाथ ॥  
 तद्यपि ग्रहे तुम्हारे इ समुक्तिन छंडो हाथ ॥  
 बड़ कृत प्रंगो कार जेहि प्रतिपालन सजिताहि ॥  
 ग्रहि महि हर विष दीध प्रगिनित जतन दुख प्रद ग्रहि ॥  
 बन्दों खल मल रहित जे राम भक्ति गुण खानि ॥ ॥  
 पर दुख सोई सुरव जिन्हें पर मुख मोटी हानि ॥ ॥  
 हरि जन मणि की कोठरी प्राप्ता सुता री प्राहि ॥  
 मुयहु न त्यागन टेक निज तेहि ते छंडो नानाहि ॥  
 सत्त सुभाव प्रभाव लखि समुक्ति खलन कै रीति ॥  
 तब मैं कीन्हौ ग्रंथ यह हृदय न प्रान्यो भीति ॥ ॥  
 करि प्री केरे कुंवर को कहा सकै करि स्वान ॥ ॥  
 भूक्त मारे जाइ हैं यम के भवन निदान ॥ ॥

सो० बन्दों सत्त समाज शीस नाइ कर जोरि करि ॥  
 जहं हरि नाम जहाज प्रमित पतित चदि भय तरहि ॥

चौ० बन्दों गुरु पद बारीहिं बारा ॥ जासु कृपा छूटत संसारा ॥  
 होत विमल मति मान बड़ाई ॥ मिटत विभेद कपट कुटिलाई ॥  
 मोहिं समय तित न यहि जग कोऊ ॥ लघु मति प्रगुण वपुर खल बुझाऊ ॥  
 सत गुरु गुरु मोका गुरु कीन्हा ॥ यथा दंड कर बाधन लीन्हा ॥



करहुतासुकेहिभांतिप्रशंसा॥ जौकनकागहिपिकवकहंसा  
मत्तिनभक्षतजिकपटकुमंगा॥ लागेउनामचुननसतसंगा॥

दो० काशीवामनिवाससुरमगिदयाथसरूप।

गुरुमरतिपशुपतिप्रकटनारकमंत्रअनूप।

चौ० बन्दोंप्रवधप्रवधपुरवासी॥ जेअनन्यसियरामउपासी  
बन्दोंसरथविमलतरंगा॥ पावनकरिगकरिगाअद्यभंगा॥  
करहिंपानजलसुमिरेंनामा॥ बैसेप्रवधमेंजेवसुजामा॥  
तेननुर्ताजिफिरजगनहिंप्रावें॥ असप्रभावनिगमागमगावें  
बन्दोंन्यदसरथसवरानी॥ दुलरीयजिनमारंगयानी॥॥  
बन्दोंश्रीमिथिलेशमुनयना॥ अवलोकिरघुपतिनिजप्रयना  
बन्दोंभरथलवनरिषुप्रारी॥ रामानुजसवविधिमुखकारि  
छुंयेजयनिबातसंज्ञातजयतिरविमंडलग्रासक॥ जय-  
तिसन्नमुरमुखदजयतिनिष्चरकुलनाशक॥ जयति  
विजयमदहरगाजयतिसियशेचनिवारगा॥ जयतिज्ञान  
गुगाउदीधजयतिसवसंकटदारगा॥ जयतिज्ञासुउरवस-  
तनितरखकुलमशिासरचापधर॥ सोदुप्रभुसेवकजानि  
केकौंकुपारघुनाथपर॥

दो० बन्दोंश्रीजानुकीपदपदमजेरियुगयानि॥

विधिहरिहरचिंतनजिन्हेंशक्तिसहितमुखखानि

छुंयेसारंगसेद्रगलालमालसारंगकीसोहत॥ सारंगज्यौं  
तनश्यामवदनलारिसारंगमोहत॥ सारंगसमकटिहा-  
थमाथविचसारंगराजत॥ सारंगलायेअंगदेरिवकुबिसा-  
रंगलाजत॥ सारंगभूपराधीतपदसारंगपदसारंगधर  
रघुनाथदासबन्दनकरतसीगापतिरघुवंशधर॥

दो० गुणागारगुरारहितहरिगुरानियनगुगाबोली



गुरा नायक गुणनिधन कर गुरा दायक गुरा जाल  
 मावृषित गोमित्र द्विज गुरु हा दुर्बत कोउ ॥  
 जासु नाम कीर्तन किये शुद्ध होत जग सोउ ॥  
 ग्रंथ बिलोचन पंगु पगल है मूक बचनासु ॥  
 जासु कृपा तेति मिमह कहि हौ गुरा गरा नासु ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुना-  
 थ हासराम सनेही कृत बन्दना वरणा नो नाम  
 प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दो० बन्दों बंद पुराणा जे करहिं राम गुरा गान ॥  
 जो सुनि प्रारी पाव हो भोग भक्ति निर्बान ॥

चौ० बन्दों राम नाम प्रविनाशी ॥ प्रचल प्रखंड चमचर दासी  
 सब सुख करण हरण दुख भारी ॥ जै पै जाहि शिव शैल कुमारी  
 भवनिधान कलिमलमथ नारी ॥ पावन हू को पावन कारी ॥  
 मुक्ति पंथ विश्राम स्थाना ॥ कवि सुसंत के जीवन धाना ॥  
 धर्म विटप वरवीज प्रकाशक ॥ मंगल करण शोक सब नाशक  
 मानस रोग प्रनेक प्रकारा ॥ भेष जनाम विनाशन हारा ॥  
 वियति गहन धन वाणा कुठारा ॥ करि प्रज्ञान मृगेश निहारा ॥  
 मंत्र राज घट वरणा समेता ॥ कहत सकल निगमागम वेता ॥  
 परम सरल सुमिरत सुख दाई ॥ लोकानंद परलोक भलाई ॥  
 जन मन सारंग सारंग हरि से ॥ जगदधिकूल कलपदल सरि से  
 मुक्ति वाम श्रुति सुमन विहंगा ॥ मुनि मन पक्ष उड़न जिन संग  
 कलिमल तम विधु वल्लभ गंजन ॥ ब्रह्म नयन भ्रम धम्य भंजन  
 करम कोट करि दशन काला दु बीसना उड़ पकस्ताला ॥

अनेक प्रसाद विविध ध्यापियासा ॥ नाम पियूष प्रसन वर दासा  
 नान विराग अथवा जल जाना ॥ कहै रघुनाथ मोर पितु माता ॥



दो० रामनाम बैसे जा सु उर प्ररिवल मंत्र को वीर्ज  
प्रलय प्रनल विष मृत्यु ते सो नर होइ उ तोर्ज

तो० छं० सोइ नाम सुमिरि सुभाय कहों ग्रंथ एक बनाय ॥

विश्रामसागर नाम सुनिल हैं नर प्राराम ॥

दो० संख्यन्त मुनि वसुनि गम शतरुद्र प्रधिक मधुमास

शुक्ल यक्ष कवि नौ मिदिन कीन्ही कथा प्रकास

प्रवध पुरी परसिद्ध जग सकल पुरि नसि नाम

राम घाट के बाट मे राम निवास सुधाम ॥

तहाँ कीन प्रारम्भ मै रघुपति प्राय सुयाय ॥

श्रीगुरु देवा दास के पद निज हृदय बसाय

सतगुरार जगुरा तमो गुरा रै विधि के मुनि वाच

मोक्ष दस्वर्ग दत्त म द हैं धरि हों मुख प्रद साँचा

उभाशम्भु सीतारमरा जो मो पर प्रन कल

तो बरगां सो होइ फुर प्रन्त मध्य प्ररुमूल

चौ० पर उपदेश नलेश बड़ाई कहें कथानिज मति हित गाई

जग बन मन करि दुरव दब दहई हरिगुरा सरि परित वसुखल हई

श्रुति पुराणा वह विधि सुरबानी लघु मति मोरि परत नहि जानी

भाषा वन्द्य कर बं मै ताते ॥ समुभि परै प्रस्मा कस जाते ॥

वचन विभेद प्रथन नहिं दजा ॥ यथा मिंदु शशि प्रचन पूजा

पुनि बहु मत बहु ग्रंथन माहीं ॥ सब संग्रह बिन जानि न जाहीं

तेहि ते मै एक ग्रंथ सभारा ॥ धर बरगा कस प्रर्थ प्रपारा

वात प्रवर इति हासा ॥ भक्ति बिबेक सहित नहिं हासा

मुनि सन्देह कोरे जनि कोई ॥ देखे वेद पुराणा विलोई ॥

सब कासार प्रशमत लीन्हा ॥ मै विश्राम सुसागर कीन्हा ॥

आदि प्रन्त दोउ जानि किनारा ॥ राम मुय प्रयय वावन भारा



दो० अद्भुतहामसिगारभववीरविभक्तविषाद।  
रुद्रसुरुचिसमशान्तयेयामें नवरामस्वाद।

चौ० संशैभंवरकरासतसंगा॥ प्रथमगहिरप्रध्यावतरंगा॥  
कमलकवित्तसोराहोहा॥ भक्तिमुवाससंतःप्रलिमोहा॥  
छन्दैविविधिभांतिकीमीना॥ सीपसकलचौयार्ददीना॥  
रामनाममुक्ताहलभाई॥ जासुःप्रावत्रभुवनमहंछाई॥  
सुजनमरालचुगनहरयाही॥ दुष्टकागबाकीगतिनाही॥  
नानाविधिइतिहासपुरानी॥ सोइ यहिचिन्तनकीरयानी॥  
मनगिरिवासुकिमुगलिलावै॥ यहिविधिमथेसोइजनपावै॥  
क्षमाशीलसंतोषविचाग॥ मोहसयनभक्षकधरिःप्राग॥

दो० उक्तियुक्तिःपौरवधुनिःप्रथभावनाकेर।  
चोजप्रासःप्रन्यैजमकजलचरःप्रयर्थनेर।

चौ० वसततहांश्रीयुतभगवाना॥ यामेंरामसियाकरधाना॥  
जोचाहैप्रभुदरशनभाई॥ तासुयुक्तिइमिःप्रागसगाई॥  
प्रथमेंश्रद्धासम्मलबांधै॥ दूसरसाधुसंगशुभसाधै॥  
तीसरभजनक्रियासोइचलई॥ तुर्यअनर्थविरतिवनलहई॥  
पंचमनिष्कारुचिउपजावै॥ षष्ठसुज्ञानध्यानचितलावै॥  
सप्तमनामाशिकहैजावै॥ जयतजीवत्रैतापनशावै॥  
अष्टमभावहौदुरवनाना॥ नवमप्रेमवैकरिःप्रस्त्राना॥  
दशमदरसरघुपतिकेपावै॥ जीवव्याधिसबतुरननशावै॥  
निजसरूपसुखलहैहजरी॥ यहिउपायविनदरशनदूरी॥  
रामरूपाविनश्रमेउपाई॥ पावैजिमिद्विजसुतसमुदाई॥  
ग्रंथःप्रनेकबदीनदनारा॥ बहिःप्रायेशुचिजासुमभारा॥  
गी० कृ० यटशास्त्रवेदपुराणामतविश्रामयाहीमेंलह्यो॥  
यहिःप्रथतेविश्रामसागरनाममेंयाकोकह्यो॥ जमुन-



हिंसमुझहिं प्रीतिकरि हरि चरणों में चित लाइ हैं । रघुनाथ ते गो-  
पद सरिस संसार यह तरि जाइ हैं ॥

दो० कलप दुस सम गंध यह सब सुफल दातार ॥  
धर्म मोक्ष का मार्थ हरि भक्ति विराग विचार ।  
बुद्धि न ज्ञान विवेक कछु बड़ै न हरि पद प्रीति ।  
तिन्हें न प्रीत मलाग यह विश्रामो दीधरि ति ।  
विविधि गंध देरें सुने जिन के कपट न शोच ।  
ते प्रमुदित हैं वारिग हैं पद प्रीति प्रश्लोक ।

चौ० ये हैं सुख संपति यश पावन ॥ हैं हैं हरि जन मन भावन ।  
कलपित गंध कहें जो कोऊ ॥ यांचों ताहि जो रिकार दोऊ ॥  
यह मम कृत तुम बार कबारा ॥ देखि जाउ सुचि सहित विचार ।  
जो मम मति कलपित कछु होई ॥ तौ मिलि दोष देह सब कोई ।  
प्रागे मुनिन कथन जो कीन्हा ॥ सोई मैं भाषा करि दीन्हा ॥  
बहु गंधन मारि है जो बाता ॥ सोए के माधरी सोहाता ॥ ॥  
तहं कोइ कहै कहां है भारवा ॥ तेहि ते मैं बुबीत विन मारवा ।  
सुरनर यशु यक्षा जो होई ॥ लिज बानी स मुझ त सब कोई ।  
रहें विबिहु को विद गिरि राया ॥ गरुड़ वायस यास पठाया ॥  
प्रायुध स्त्रो पुनि हंस शरीरा ॥ जब गुण सुने भुषु राही तीरा ।  
प्रजहं जे सुर बानी कहई ॥ प्राकृति करि समुझावत ग्रहई ।  
तय सब हरषें प्रीति बड़ावैं ॥ नाहित कोइ निकट नहिं आवैं ।  
तेहि ते जो निज हाँ की बानी ॥ सोई ताहित हाँ सुख दानी ॥  
लेन देन विधि जो कछु करई ॥ देश वाक्य ते कारज सरई ॥  
दो० जेहि ते निज कारज सैं ताँको नोँद नीच ॥  
यथा कोल पथ पान करि पुनिकरि डारत कीच ।  
जो भाषा मानन नहीं तो भाषा मति गाय ॥



जो बोले तो स्वान सम उगिलि असन फिरिखाय ॥

अब गुरु पद रज अंजि द्रग राम चरना सिरनाय ॥

चली कथा जेहि भांति जहं सो सब कहौ बुझाय ॥

चौ० पद अटु माहिं सिसिर अटु जानो ॥ फाल्गुन शुक्ल पक्ष पहिचानो ॥

नैमिष क्षेत्र अटन तब होई ॥ यक्ष एक निवसै सब कोई ॥

प्रथम चक्र तीरथ जलयावै ॥ पुनि सब पंच प्राग चलि जावै ॥

यह विधि ब्रह्म सरा दिन हाई ॥ धेनु मतिहि आवै अट पि राई ॥

तहित दव्यास देव कर ध्याना ॥ अट पि सौन कत हं हैं सुजाना ॥

बहुरि सूत आयें तेहि ठामा ॥ लखि सौन क कियो दस द प्रणामा ॥

चरण धौइ आसन बैठारि ॥ धूप दीप प्रारती उत्तारि ॥ ॥

बोले बचन सुचित करि गाढ़े ॥ हाथ जेरि सन मुरन भेठाढ़े ॥

नाथ नात कहु पंछा चह ऊं ॥ आ य सु होय बचन तब कह ऊं ॥

दो० अति श्रेष्ठीति विलोकित ब कहाम त हरषाय ॥

मुनि मन जनि शंका कौरो पछो जो जिय आय ॥

चौ० बोले रिषि मुनिय महि देवा ॥ तुम जानत तिहुं काल क भेवा ॥

वेद रु शास्त्र सकल तब देखा ॥ नित्या नित्य क कीन्हें लेखा ॥

तुम दयाल दीन न सुख दाई ॥ तुम तजि कहां पंछिये जाई ॥

प्रथम कहौ गुरु महि मा गाई ॥ नाम महान सब बहुरि सुनाई ॥

कर्मा कर्म धर्म आधर्मी ॥ ज्ञान विराग भक्ति को मर्मा ॥

दुख सुख स्वर्ग नर्क सब भांती ॥ कौन कर्म करि केहि मा जानी ॥

माया ब्रह्म जीव जग जाना ॥ हरि हरि जन गुन कौरो बखाना ॥

ब्रह्म प्रनादि धर्याव पु आई ॥ कीन्ह चरित कस कहौ बुझाई ॥

चारि खानि जग जीव प्रपारा ॥ उत यति पालन प्ररु संहारा ॥

दो० योग यज्ञ व्रत दान तप वरणा अम कर भेउ ॥

भिन्न भिन्न भारों सकल रहै हाये तेउ ॥



॥  
 शास्त्रविनानहिं ज्ञानभवज्ञानविनानहिं भक्ति  
 भक्तिविनानहिं सत्यसुखताते सुनियमुशक्ति  
 कुं० श्री शंभार शुति सर्पविलग्रह मलमगसमलयन।  
 कारसनकरयगः प्रकलतरुमेरियक्षशशिनयन॥ मोरप-  
 क्षशशिनयनप्रातविनविग्रहः प्रहर्द। नवेन गुरुजनचरणा  
 रामगुनसुनैनकहर्द॥ करेन जोहरिकर्महितः प्रदेन तीर्थमु-  
 नीश॥ दारुजोखिता सरिस मोधावन नावन श्रीश॥  
 दो० हरिविषयक जोहोइ जनताहि उचित है यह  
 महा मनोहर हरिचरित सुनै सदा करि नह॥  
 चौ० मुनिमुनिवचन सुत सुखयावा॥ वेद व्यास पद श्रीशंभुनाह  
 छिन एक हरिकर ध्यान लगाई॥ युनिमदुवचन कहै हर्याई।  
 भेद तुम्हार हँवै सब जाना॥ प्रहोउ जिमि सुखः प्रजाना॥  
 सोमै प्रवतुम्हार मत जाना॥ कीन्ह चहत सब कर कल्याना  
 धन्यस्तुम मुनिबड़ भागी॥ रह्यो राम कथाः अनुगामी।  
 राम कथा शुभचिंता मरिणीसी॥ दायक सकल यदारथ जनमी  
 मोह महातम बसि करणीसी॥ अहंकार करि हरि वरणीसी  
 अभिमत फल प्रदेवेधनुसी॥ स्वच्छ करणा गुरु चरणोरासी  
 कलिमल भेक विपुल मरणीसी॥ क्रोध माहिष दुर्गेदरणीसी॥  
 मुजन समाज उड़य रजनीसी॥ साधु पोत पालन जननीसी  
 ब्रह्म लषन हित दृग युतरणीसी॥ मन मृग बन्धन हित सुतरणीसी  
 लाल चलो भलवा बहरीसी॥ सदगुण सकल चनक डहरीसी  
 दुर्वासना समूह मल भरीसी॥ दीप सिखा सम दहन कल भरी  
 हरि भैरवा विभाव सुतासी॥ दुखदः प्रविद्या तल हुतासी॥  
 धर्म कर्म वर वो जरासी॥ सुमति बड़ावन सुख सुद सासी॥  
 ज्ञान भान भव सुखतीसी कविकोविद हितः प्रज युवतीसी



कामभुवंगबिछेलहरीसी॥मनिमयूरपाटनगहरीसी॥॥  
 भर्मबलाहकजगतप्राप्तसी॥ज्ञानखड्गस्वरधरनसानसी  
 भवसरस्वानकमलबहनीसी॥विरतिविचारकहनिरदनेसी  
 दालिददुरवमूषकपिनकीसी॥रघुपतिध्यानकरनपिनकीसी  
 सर्वभूतपादपमधुऋतुसी॥कलिमलभञ्जनहेतमिरतुसी  
 विरतिनिवेकनृत्यतिमोहनीसी॥सदसंतोषक्षीरदोहनीसी॥  
 शोकशुकभवभीमगुसासी॥पितरतरगाहरिभक्तिमुपासी॥  
 प्रभुपदप्रतिवदावनिसेसी॥अनुदिनलाभलोभकहंजैसी॥  
 रामहिप्रियजिमिकाककजासी॥भक्तिमुक्तिप्रदमंगलरासी  
 दो० मङ्गलबकताकेभवनमङ्गलश्रोताधाम॥  
 मङ्गललेखककेकरनिमंगलहोतेहिंशम॥

इति श्री विश्रामसागरसबमतः प्रागरग्रंथ उजागरश्रीरघुनाथदा-

सगमसनेहीकृतवन्दनावाणोनामदुर्तीयाध्याय २

दो० भगवतचरितपिऊषवरनितसेवैजोकोइ॥

अन्तकालकेसमैमेंतोहिउदवेगनहोइ॥

चौ० असिहरिकथाकह्योसुखदाता॥सुनोप्रथमगुरुमहिमाताता

गुरुब्रह्मागुरुविष्णुपुरी॥गुरुपरब्रह्मदीनदुरवहारी॥॥

गुरुशरणागतजोकोइयावै॥बहुरिनसोचोगसीजावै॥

गुरुकृपालप्रगनितगतदाता॥गुरुकृपाकट्टेयमनाता॥

महाप्रथमपापीनरहोई॥गुरुशरणागतयावैसोई॥

किरितेनर्कपरनाहियानी॥जोगुरुबचनलेइफुरसानी॥

कह्योसकइतिहासपुरानी॥मनुलगायमुनुमुनिवरजानी

सो० रहाबधिकसकनीचकैरठगाहीबनविषे॥

नामतासुसारीचअतिनिर्देकपटीकुदिल॥

चौ० तोहिंसकदिनमनकीन्हविचारा॥मोसमर्पितनकोउससारा



जब ते धर्यो देह जग प्राई ॥ पाप करत सब उमिर बिताई ॥  
 इन अषराध को नि गति होई ॥ यहि विधि विधिनि शोच कर मोई ॥  
 तेहि आनसर गौतम ऋषि प्रोये ॥ जात रहै कहु सहज सुभाये ॥  
 मुनिहिं बिलोकि तुरत उठि थावा ॥ चरगानाय सिर बचन सुनावा ॥  
 मे पापी रा कुटिल चवाई ॥ तुम दयाल यति तन गति दाई ॥  
 तेहिने प्रभु कृपा प्रब कीजे ॥ मोहिं आयनो शिष्य करि लीजे ॥  
 कह मुनि तोहि शिष्य जो करहु ॥ अर्द्ध पाप अर्धने सिर धरहु ॥  
 दो० सुनु ठग पदम पुराण मैं देखी सब निरताय ॥ ॥

पाप पुराय जोहि विधि बँटे सो तोहि कहों बुझाय ॥ ॥

चौ० एक तपसी विषयी एक होऊ ॥ भोजन करै एक महं दोऊ ॥  
 भली बुरी सङ्गति होइ जाई ॥ पाप पुराय प्राधा बटि जाई ॥  
 कुँवै सराई औ बतलावै ॥ दशनां प्रंशत हों बटि जावै ॥  
 दरशन ध्यान बचन सुनु जाका ॥ सतवों प्रंश पाप पुनि ताका ॥  
 जयतप दान धर्म एक करई ॥ एक सेवा वाकी अनुसरई ॥  
 दंशों प्रंश फल सोऊ पावै ॥ पाप पुराय जोई होइ आवै ॥  
 करज कादि पुनि पाप जो करई ॥ तीन भाग फल धन दहि परई ॥  
 चारी करि धर्म करे जो कोई ॥ पाप पुराय तेहि कहु न होई ॥  
 जो कोउ काहूँ परिकरावै ॥ पुराय पाप षट् बाँश सो पावै ॥  
 प्रजा जो धर्मी धर्म कमाई ॥ षटा प्रंश राजा दिग जाई ॥  
 होम पाठ सन्या प्रज्ञाना ॥ जाय करत वा पूजा ठाना ॥  
 बात करै प्रथवा कहु लैई ॥ षटा प्रंश निज पुराय हि देई ॥  
 प्रान के कर निज धर्म करावै ॥ षटा प्रंश फल सोऊ पावै ॥  
 दो० पिता पुत्र नारी पुरुष गुरु शिष्य यहि भाय ॥

पाप पुराय जो कहु करै अर्द्ध अर्द्ध बटि जाय ॥

चौ० प्रसवि चारि शिष्य करों न तोहीं ॥ बाढनो कहु जावै मोहीं ॥



बोला बधिक जान नहि देहीं ॥ जब लगि गुरु न मुहें करि लेहीं  
 सुनि सुनि हृदय विचारहि प्राना ॥ यहु है खल नहि देहै जाना ॥  
 सहसनेह चहनिज भल भाई ॥ परी पर पथ देहु बनाई ॥ ॥  
 कह ऋषि गुरु दाक्षिणा दे मोहीं ॥ तब तो शिष्य करौ मैं तोहीं ॥  
 बोला का दीजै सो कहऊ ॥ समदि गहोइ लेव जो चहऊ ॥  
 प्रबजनि पाय कि हेउ कछु भाई ॥ राम नाम सा सुमिरहु जाई  
 परम जाप तारक ब्रह्म सद्गी ॥ ब्रह्म हत्यादि पाप हौं जड़ी ॥  
 प्रस कहि ऋषि चलि भेजि उपाई ॥ बधिक नाम में प्रीति लगाई  
 यहि भांति न कछु काल बितावा ॥ मरणा काल कादि नु जव आवा  
 ताहि लेन यम दूत सिधायै ॥ पाछे ते हरि गरा चलि आयै ॥  
 शीश मुकुट मरिा कुण्डल काना ॥ पीत वसन नन भूषणाना  
 भुज विशाल प्रनुपम कर लाजै ॥ हरि दर चक्र कौ मुदी राजै ॥  
 गगान देखि यम दूत डराने ॥ बोलि वचन कपट कल साने ॥  
 बड़ी भाग्य हम दरशन पायै ॥ प्राजु कहौ यहि धीर सिधायै  
 दो० कहा गगान दूतौ सुनौ बधिक भक्त यहि ग्राम ॥

तेहि प्रानै प्रायन इहाँ लै जै बे हरि धाम ॥

चौ० सुनत वचन किं कर यम कोरे ॥ बोलि निज नैन मरे रे ॥ ॥  
 बधिक नीच पायी प्रन्याई ॥ जीव हते सि नहि जाय गनाई ॥  
 बन के बन यहि कीन्हे सि नासा ॥ तेहि तुम कहत राम कर दासा  
 कह गरा जब ते गुरु यहि कीन्हा ॥ राम नाम में मन चित दीन्हा  
 किहि सिन तब ते कछु प्रपराधू ॥ यहि सम प्रोर कोन हे साधू  
 प्रस कहि लीन विमान चढ़ाई ॥ हरि पुर का चलि भेहर पाई ॥  
 गी० छं० चलि भे विमान चढ़ाई हरि पुर ताहि गारव्यो जाय के ॥  
 प्रति देखि गुरु परताप यम के दूत गय रिबसि याय के ॥ प्रस  
 समुभि नर गुरु शरण है हरि भजन जिन नाही कियो ॥ तिन



याय नरतन प्राद जग करि हानि न केहि चलि दियो ॥

दो० गुरु शरणागत प्राद के जो सुमिरे सिय राख ॥

इहो रहै आनन्द में अन्त बसे हरि धाम ॥ ॥

ब्रह्माविष्णु महेश ते जो अध की है जाय ॥

गुरु विन भवनि धिमा तरे कहत निगम असाय ॥

चो० यामें कछु सन्देह न पैखी ॥ प्रादिहित सब गुरु करि सली ॥

ब्रह्म के शिष्य प्रकृति ही जानो ॥ प्रकृति शिष्य महंत त्व पिछानो ॥

महातत्व शिषि प्रगो जो कहिये ॥ ओंकार ते विष्णु हिल हिये ॥

विष्णु कि शिष्य लक्ष्मी भयऊ ॥ तिन के विधि विधिके शिष्य कहैऊ ॥

राम चन्द्र अवतार जो लीन्हा ॥ विश्वामित्र गुरु तिन कीन्हा ॥

व्यास पुत्र शुक देव सुभाये ॥ जन्म लेत ही विपिनि सिधाये ॥

तिन्ह गुरु कीन्हों जन के जाई ॥ तब हिरंद महं निष्ठा प्राई ॥

ब्रह्म पुत्र नारद मुनि जेऊ ॥ मनु भगवान केर मुनि लेऊ ॥

दिक्षा हीन जाइ हरि तीरा ॥ दरशन हेत सदा मुनि धीरा ॥

कछु क काल रहि जब फिर आवै ॥ जब वरै सो दाउं धो बाधै ॥

एक बार नारद लखि लयऊ ॥ रसानाथ ते पंछुत भयऊ ॥ ॥

दो० बेलि हरि नारद सुनौ तुम गुरु अबै न कीन ॥

सो विचार सती जगह नित पाक करि लीन ॥

चो० दिक्षा हीन जहाँ चलि जावै ॥ सो जागा अशुद्ध है जावै ॥ ॥

गुरु मुख चरण पौरे जब प्राई ॥ तब सो दधरा शुद्ध है जाई ॥

कह नारद मुनि ये सुर राया ॥ प्रथमैं तुम मोहि कत न बतया ॥

कह प्रभु तुम अति श्रेष्ठ प्रिय मोरे ॥ कहौं न मुनि होई दुख तोरे ॥

ताहि ते अब गुरु की जे जाई ॥ काहिं करौं प्रभु देहु बत जाई ॥

जो प्रथमैं मिलि जाय सकारे ॥ ताहि गुरु तुम कीन्हौं प्यारे ॥

भोर भये निकसे मुनि जब ही ॥ धीमरं देह धरी हरि तब ही ॥

मुनि-प्रोगेहोइनिकसे-प्राई॥ नारददेखियरे यग धार्द॥ ॥

तेहि गुरु करि हरि के दिग-प्राये॥ देखत प्रभुनिज हृदय लगाये  
दा० कह गुरु कीन्हें कोन पै मुनि बोले हरि राउ॥

गुरु में पै जो तुम कही चौरासी कहं जाउ॥

चौ० मुनि नारद निज गुरु यहं-प्राये॥ समाचार सब कहि समुझाये

गुरु दयाल बोले तुम जाओ॥ हरि ली चौरासी लिरख बाओ॥

लिरिख जब होहि लौटि तब जायौ॥ हाथ जोरियुग बचन सुनायौ

मुनि नारद-प्राये प्रभु पाही॥ चौरासी जानत मैं नाहीं॥ ॥

सोलिरिख मोहि देहु समुझाई॥ ताहि देखि भुगतों मैं जाई॥

कह हरि नौलख जल चर जाती॥ सब योनि न भर मैं बहु भाँती॥

दस लाख पक्षी को बिस्तारा॥ उड़तर हैं भय को उर धारा॥

ग्यारह लाख जाति कृमि कीटा॥ बीस लाख वन विटय जो दीटा

तीस लाख पशु योनि हि जानौ॥ चारि लाख मानुष्य पिछानौ॥

यह चौरासी योनि कहैं वै॥ सब भुगते विन-प्रत न पावैं॥

ह कुं० मुनि गये नारद लौटि तामें देखि प्रभु बोलत भयो॥

केहि दीन मत यह तुम्हें कह अरु पि-प्राजु गुरु मां को दयो॥

तेहि कहत पै जिन सक छिन में मेदि चौरासी दई॥ अस औ-

र नाहिं कृपाल दीन दयाल गुरु सम जग हई॥ ॥

दा० गुरु गोविन्द ते-अधिक हैं यह प्रतीत मन साइ

गोविन्द डोरें न की जातौ गुरु लेइ बचाइ॥ ॥

तम गुकार रूता सुहर गुरु सोइ करै प्रकाश॥

बरणी धर्म-प्रशस्त्र की यह मै बर इति हास॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत-आमर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ

दास राम सनेही कृत मारीच नारद कथा बरगाने नाम

॥ तृतीयोऽध्यायः ॥ १३ ॥



दो० बन्दिगमसिय सन गुरु गराय गिरा सुख स्थानि।  
बर गो धर्म अरु शास्त्र को पुनि इतिहास बखानि।

चो० कही सत गुरु महि ता गाई॥ सुनि सैन क बोले हर पाई॥  
नाथ मोहि निज किं कर जानौ॥ गुरु प्रभाव कहु और बखानौ॥  
कहा सत गुरु बिन कहु करई॥ ताको काज एक नहिं सरई॥  
गुरु बिनु मुक्ति पंथ नहि पावै॥ गुरु बिन नर खोर सी जावै॥  
गुरु बिनु ज्ञान भक्ति नहिं जानै॥ गुरु बिन प्रात नहिं पहिचानै॥

दो० विन गुरु दिहा प्रकल सब जपन दहो मदि यादि  
ज्यो पाहन में बोज वय उय जै ना फल बादि॥

चो० तेहि पर एक इतिहास बखानो॥ सुंदर ताहि पुरातन जानो॥  
अबध उत्तरे योजन चारी॥ रहे नगर एक अति सुख कारी॥  
तामि कृष्ण दत्त द्विज रहई॥ सुंदरि नाम ता सुत्रिय अहई॥  
कैंरे दान दिन प्रति अधिकारई॥ द्वारे प्रति थलि मुख नहिं जाई॥  
हीरा हेम पदारथ नाना॥ दिहि विप्र कहं बेह बिधाना॥॥  
असन वसन गजि बाजि मिठाई॥ शय्या दाम कैंरे मन लाई॥

दो० एक दिवस द्विज वर सोई गयौ रहै कहं ग्राम।  
नाम सुन्दरी ता सुधि पारहे आपने धाम॥॥

चो० तेहि दिन तेहि पुर नारद आवै॥ कर दीना सिर गिल कल गालि॥  
गम चरित गावन हर पाई॥ तेहि द्वारे हें निकले जाई॥॥  
अपि हिंदेरिय सुन्दरि उठि पाई॥ करि बहु विनय भवन ले पाई॥  
उच्चासन नापर बैठारै॥ हेम पारनै चरता परवारै॥॥  
कहु चर गोद क कीन्हो पाना॥ कहु छिं बजो सगरे प्रस्थाना॥  
धूप दीप आरती उतारै॥ बड़ी भार्य भै आजु हमारी॥  
सुनि प्रज्ञाले पाक बनार्य॥ कह्यो स्यामि कील भोग लतारि॥  
तब नारद उठि भोजन कीन्ह॥ अपनै बहुरि आसन पगारीन्ह॥



सुन्दरि बात करन तब लागी ॥ लखि नारद बोले ॥ अनुरागी  
धन्य तुम्हार मान पितु चीन्हा ॥ जिन की कोरि बज न तुम लीन्हा  
नर तन पाय सकल तब भय ऊ ॥ जो मन जन सेवा मह दय ऊ  
धन्य तुम्हार गुरु सुख दाई ॥ साधु से बजिन तुम्हें दिदाई  
सो ॥ मुनि बोली द्विज नारि मेरे तो गुरु हैं नहीं ॥

अपने हृदय विचारि देहु ॥ असन लखि सुधित कहू ॥  
चौ ॥ मुनि ॥ प्रसवचन देव ऋषिता सुडारे ॥ प्रसनवान्त करि ॥  
लखि सुन्दरि डरि बोले लीन्हा ॥ केहि ॥ प्रपराध बमन प्रभु कीन्हा  
बह मुनि होइ वैशाव जो जन ॥ करै ॥ प्रवैशाव के गृह भोजन  
बाँवै तहाँ जलहु बिन जानै ॥ ताको यह प्राञ्चित बखानै  
चंद्रायन व्रत ठानै सोई ॥ तेहि ॥ प्रपते तब पावन होई ॥  
दृष्टा पूर्ति पुराव सब वाके ॥ किये ॥ प्रमिथ्या निष्फल ताके  
तेहिते ॥ अधिक पाप तेहि परई ॥ निगुरा कुवा जो भोजन करई  
यहिते नष्ट कर्म नहिं ॥ प्राणा ॥ भृष्ट बुद्धि करि देत ॥ प्रयाना  
दो ॥ ताते सुन्दरि तब कुवा भोजन कीन ॥ अजान ॥

कियो बान्त या कारो नष्ट भयो मम ज्ञान ॥

चौ ॥ मुनि सुन्दरि मन कीन विचारा ॥ कत मैं कीन्हु धर्म प्रीति कार  
कत मैं विविध दान व्रत किहू ॥ कत मैं तीर्थोदन मन देह ऊ ॥  
कत मैं सुवरा सींग मढ़ाई ॥ दई गऊ बिप्र रास सुदाई ॥  
गुरु बिन धर्म करै जो कोई ॥ मैं नहिं जान्यो निरफल होई  
तेहिते मुनि ॥ प्रबदाया कीजै ॥ राम मंत्र मोका प्रभु दोजै ॥  
प्रबजनि देर लगवहु स्वामी ॥ देखि प्रीति बोले ऋषि नामी  
प्रथम जाइ कीजै प्रसन्ना ॥ सुन्दरि कहा ॥ बचन पर माना  
जब हरि शरणा जीव यह जाई ॥ यम मरा रासैं कुटुम्बिन ॥  
सुन पितु मानु कहै ॥ प्रसवेना ॥ भक्ति न काजै हमरे रेना ॥ ॥



कोऊ कहै-अबै उजगत सुरब कीजे ॥ चहु मये पर हो भजि लीजे  
 सुनि मति भ्रम जै रहै चपाई ॥ लीन्हों काल अचानक खाई  
 मृतक जानि सुत पुत्री नारी ॥ रेवहि स्थार यहै तु पुकारी ॥  
 नासु सोच कोउ नेकन करई ॥ हरिहि विमुख्यों कस दुख पई  
 तेहि ते मै नहि जाव नहाई ॥ सुनि नर नारि देहें मर पाई ॥  
 राम चरणा पंकज चित दीन्ह ॥ जेहि ते होत पाय सब कीन्ह  
 मुनत बचन मुनि प्रति मुख पावा ॥ तुलसी माल कंठ पहिराया  
 हो ॥ विप्र वयस नृप सुद्रवा होइ ॥ प्रपति यति बामा  
 हरि व्रत धारै उचित तेहि है तुलसी के दाम ॥  
 विधि हरि हर कह सारि व करि राम मंत्र तव दीन्ह  
 वैशाख धर्म सिखाइ कै गवन पिता पुर कीन्ह  
 चौ ॥ तेहि क्षिरा निलै नासु यति आवा ॥ लखि सकोप अस वचन सुनावा  
 केहि के कहै लीन्ह लै माला ॥ जानि परा यहं चातव काला ॥  
 अथ ते तोरु बहसि जो प्राना ॥ नाहित कटिहों शीण रूपाना ॥  
 सुनि सुन्दरि बोली कर जोरी ॥ मुनहुं प्रान यति देक जो मेरी ॥  
 चहु नन टूक टूक करि डारो ॥ आवै अनल माहिं धरि जारो ॥  
 धरौ खोदितो यि बरु देह ॥ तजौ न रामहिं प्रणाम मयेह ॥  
 जिन प्रथमैं करि पाके काड़ा ॥ तिन्है जानि मस्वांगी भाड़ा  
 हो ॥ अस प्रबला के बचन मुनि गुरिा दिज रह्यो बुपाय  
 काढि देउ लीं जग हसे मारे हत्या अपाय ॥  
 चौ ॥ तेहि दिन ते प्रसने म सो धरई ॥ यति काहु वान भोजन करई  
 सहित प्रीति ते प्रसन बन आवै ॥ यमि दूरिते ताहि यथा वै ॥ ॥  
 यहि विधि दिन प्रतियावै खाना ॥ देखि विप्र मन भई गिलाना  
 जोह मारि जूनि नित खाई ॥ सो अब दूरिते देत बहाई ॥ ॥  
 अब की उर पि आवैं मम धामा ॥ मोहें गुरु करि सुमिरो रामा

गहिबिधिहिजमनकरतबिचारा॥ हृषीकेशकीन्हनारद प्रगुधारा  
गुरुहिहरिवसुंदरिहरयानी॥ शीतनायबोलीमृदु बानी ॥

सुफलजन्मभा आजुहमा॥ जोनि केतरीरेपगु धारा ॥ ॥

सुन्दरग्रासनपरबैठावा॥ चरणाधोदचररोदक पाया॥

बहुरिबोचपैकरसा कीन्हा॥ दर्विभेटले आंग दीन्हा॥

दो० गुरुबैद्यग्ररुज्यातवीदेबमित्रबड़राज ॥ ॥

इन्हैभेटबिनजो मिलैहोइनधरराकाज ॥

चौ० आज्ञामैगि कीन्हजिवनारा॥ पदसब्यजनविविधप्रकारा

सुवराधारपरसिधिरिदीन्हा॥ हरिहिआर्यमुनिभोजनकीन्हा

अचमनकरिआसनजवआये॥ द्विजसुन्दरिलेबचनसुनाये

गुरुदिक्षाभोहिदेहुदेवाई॥ जातेतबसंगमिहोहुजाई॥

सुंदरिआहुकहीगुरुपासा॥ इनहुनकाकीजैहरिदासा॥

विप्रहुतबबोलाकरजोरी॥ पुरवौप्रभुअभिलाषामोरी

दिक्षालिहैसरीसमकाज॥ नातेबिनैकीन्हमैआज॥

कह नारदद्विजआउनहाई॥ तबतुमकाहरिनामसुनाई

मुनिमुनिबचनविप्रहरयाना॥ युगलदसरितहैबल्योनहाना

मगसकपंडिततेमैमेंदा॥ गढ़कीन्हतेहिगहिकरफेंदा

पंकाकृषादत्ततुमआज॥ हरचरचलतकौनबड़काज

कृषादत्तपंडिततेभावा॥ गुरुदिक्षाकीहैअभिलाषा॥

दो० तबपंडितबोलेबचनकृषादत्तमुनिलह॥

यहमनुपक्षकुंवारहैगुरुदिक्षाजनिलह॥

चौ० यामेपिराडदानमलचीन्हा॥ दिक्षासंवनयाहियलीन्हा

कार्तिकशुक्लपक्षशुभसासा॥ तबतुमहोयहुहरिकेदासा

मुनतबचनद्विजअतसमझावा॥ तुल्यलीदनारपहैशावा

कहप्रभुआरजानअबदीजो॥ कार्तिकशुक्लपक्षशिवकीजो



यह मुनि नारद गेविधि भासा ॥ विप्र रहे कानिक की आसा ॥  
ताकी प्रबोधन यह चन पाई ॥ बीचहि दुहुन काल लियो खाई  
दो ॥ पल पहा की खबर नहिं धौ यों में का होय ॥

आगे की आशा करत काल हंसे मुख मोय ॥

अस विचार जे चतुर नर करत न लायें बार ॥

नहिं जानी कहि घरी में काल करै संहार ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मन आगर ग्रन्थ उजागर श्री रघुनाथ  
दासराम सने ही कृत कृपा दत्त कथा श्री नो नाम वनु थो आया ॥

चौ ॥ कहं सोन क मुनि कहो बरवानी ॥ तनु तजि कहं गय सो प्राणी ॥

कहा सत मुन्दरि द्विज नारी ॥ चाँद बिमान हरि लोक य धारी ॥

विप्र गयो यम के दरबार ॥ पाप पुराय का भयो विचार ॥

यम ते चित्र गोविन्द बरवाना ॥ इन बहु कीन्ह पुराय प्ररुदाना ॥

जबने जाय देह इन धारी ॥ उभै पाप कीन्ह अति भारी ॥

कह यम कोन पाप सो कहिये ॥ तहि अनुसार दराइ यह चहिये ॥

सक बार इन यज्ञ जा कीन्हा ॥ सब विप्र गा कह्यो ता दीन्हा ॥

नहो सक हरि जन चलि आया ॥ कृपा दत्त ते बचन सुनावा ॥

हम हें सुधावल्लहि जराई ॥ कछु भोजन माहिं देहु मंगाई ॥

अस मुनि विप्र क्रोधी कियो भारो ॥ अनुचित बचन कहं दुइ चारो ॥

मुनि कहु बचन गयो उरि साधू ॥ तेहि ते यहि परमा अपराध ॥

हरि जन जा सुयज्ञ महं प्रावें ॥ मिलै न अस न सुधित फिरि जावें ॥

ताकी पुराय सकल यदि जाई ॥ बहुरि पाप होवें प्रधिकारि ॥

दसर जय मुन्दरि गुरु कीन्हा ॥ तेहि लखि इन प्रतिशोटी लीन्हा ॥

तानि पुराय छिन्न भैया की ॥ घेरी सक रही है बाकी ॥ ॥

सो ॥ मुनि बोले बरवाय यहि देहु गज देह प्रवा ॥

निज फल भोगी जाय आप कहें नृप के भवन ॥

चौ० अस कहि धर्म विपिनि जनमाया ॥ कशादन गज कातु पावा  
 कछु कदिव सवन माहि पितायो ॥ पुनि नृप चंद्र सेन गृह आयो  
 चंद्र सेन कुरु क्षत्र के राजा ॥ जिन के सदा धर्म कर साजा ॥  
 यह मव चरित देखि बडि जनारी ॥ मन माओ चकौ प्रतिमारी ॥  
 मम पति सो वारणा तनु पावा ॥ मोह विषम मन रवेद बदावा ॥  
 घर लै पुनि मृत लोकहि गेली ॥ जह आसा तह वासा पेली ॥  
 जाके घर गज तानु पकेरी ॥ भई सुना प्रति रूप घनेरी ॥ ॥

दो० दान दिहिसि अरु कहिसि गुरु भै कन्या नृप केरि  
 राजा को करि दिज भयो दनो जाति सुमेरि ॥

चौ० कन्या जब कछु भई सयाती ॥ गई द्विरद पहनि जपति जानी  
 इन देखवा यह है मम नारी ॥ भई मही पति केरि कुमारी ॥  
 अस विचारि दोउ प्रीति बढाई ॥ दिन २ होत जान प्रीति काई  
 एक दिवस नृप हृदय विचारी ॥ व्याह योग्य भई सुता हमारी  
 विप्र बोलि शुभ घरी सो धाई ॥ यत्न सोय स्वर केरि बनाई ॥  
 मुनि सेद्वीर निरासन त्याग्या ॥ करि विचारि मन सोचन ल्याया  
 लखि राजा बर वैद्य बोलावा ॥ तब हुन कुम्भी दाना रखावा  
 यहि विधि बीत बार बहु गयऊ ॥ तब तो नृप के प्रति दुख भयऊ  
 कह कन्या पितु ते प्रस जाई ॥ गजहि असन में देहुं कराई ॥  
 बोले भूप जाडु किन प्रबहीं ॥ मरि जाई तब जे हो कबहीं ॥  
 पिता बचन मुनि गेयति यासा ॥ बोली तुम कतरहन उदासा  
 बहु दिन ते भोजन नहिं खाये ॥ सो कारणा सोहिं नाहिं बताये  
 दो० कह गयन्द चाहत करन नृपति तुम्हार विवाह ॥  
 सो विचारि प्रब होत है हृदय हमारे दाह ॥

चौ० जब ते यहाँ जन्म तव भयऊ ॥ कब हुन संग विदुरि ममायऊ  
 अस विचारि दुख होत है मोहीं ॥ व्याही ज्ञान पुरुष प्रब तोहीं ॥



ताते में नहिं दाना खाहूं ॥ बारहिं बार मनहिं यहि ताहूं ॥  
मुनि कन्या बोली मृदु बानी ॥ शोच कि हे दुख होइ रहानी  
हम जो कहान नर न के माहीं ॥ भजहु राम फिरि औ मानाहीं  
तब कारिक की आस लगायो ॥ प्रवधारता की देही पायो ॥

दो० तब कारिक की आस करि विसर्यो सिजनहार  
प्रवचो रासीयोनि में आय पयो भर नार ॥  
ताते पुनि मैं कहन हों दुख तजि भोजन खाहु  
तुम्हें कौहि हों नाक ब्रजान युख संग व्याहु ॥

सो० मुनि गज भोजन की न तरि प्यवालों कुंवरितो  
कोन मंत्र तुम दीन जो सुनि खायो तुरत हीं ॥

ष० कूं कह कन्या बोहि जन्म के रगज ॥ पहे मोर यति में होया  
की नारि बिप्र धर जन्म रहै सति ॥ हों गुरु करि हरि भज्यो भइ  
उतै हि सुता आइ तय ॥ इन दीन्हों बहु दान भक्ति दिन बार रा  
बपु भव ॥ सज्यो स्वयम्बर साज मुनि करि भोजन तज दीन  
नहि ॥ बचन दान में जाइ जब तब फिरि भोजन की कह्यो ॥

चौ० मुनि अस बचन भूप हराना ॥ कन्या बचन सौं चरहिं माना  
लागे करन स्वयम्बर साजा ॥ आय देश देश के राजा ॥ ॥  
रानी तब कन्ये अन्हवाया ॥ कीन्हों तन शंकर सो हावा ॥ ॥  
सहित सनेह गोद बैठाई ॥ बोली भधुर बचन सुख दाई ॥  
रंग भूमि आयि बहु भूया ॥ देश देश के सुभग सखा ॥ ॥  
जो तब मन भावै महि पाला ॥ मेल्यो ता सु गौर जय माला ॥  
अस कहि हार दीन्हं तहि हाथा ॥ पठई मक सहेली साथ ॥  
भजन दिसि नहिं दृष्टि उगई ॥ चली कुवरि कुंजर यह आई ॥  
पद्मी उर मेल्यो जे माला ॥ चकृत भय सब देखि मुबाला ॥  
सबहिन कही बयस लघु जानी ॥ चौधि गई कन्या फिरि ठानी ॥

सखीसदनलाईजहंरानी॥मातुताहलखिवबहुतरिसानी  
 दईसबैमतिहरीतुहारी॥नृपतजिमाखव्यालउरडारी॥  
 दीनचहैविधिदुरजबजेही॥तार्कामतिपहिलेहरिलेही॥  
 असकहिपुनिदीन्हैंकरमानहि॥अबतेपदिरावहुनरयालहि  
 गईकुंवरिपुनिकरिउरडारी॥देखिभूपसबचलेसिधारी॥  
 तबराजाअतिशैदुरवयावा॥प्रसिलैकनैसारसाधावा॥  
 अतिधारीजबिप्रप्रबीना॥छेरिकुपाननृपतिनेलीन्हा॥  
 अत्यवयसयहअहैकुमारी॥हैअज्ञाननचाहियमारी॥  
 सो० गेहरहैदिजेचौरमुतानारिन्याभिचारसी॥  
 यतीभृष्टजनपौरतदपिनदनकोमारिये॥  
 य० छ० दशगोमारेपापसदृशसकद्विजसंहारे॥दशद्विज  
 बधेजोपापसकस्त्रीकेमारे॥दशस्त्रीबधयापसककन्या  
 बधहोई॥दसकन्याबधयापयतीसकमारेसोई॥दशदं-  
 डीमारेकैजोपातकसिरआय॥तेहिसमसकहरिजनबधे  
 कहवनिगमअसगाय॥

दो० तातेहाजनलीजियेकीजेसकउयाय॥

बरखोजायदीकाकरोबहरिदेहुमौरचाय॥

चौ० सुनिनृपनाऊबिप्रबोलावा॥बरहुंदनहितनुरतपदावा  
 पुरअरुगामअनेकनदेशा॥देखेजहतहंसकलनरेखा॥

उद्गपंगुअन्याधरकाना॥सिरीवरीकोदीजाना॥

असबरुमिलैजहांचलिजाहो॥कन्यासरिसमिलैकहुनाहो  
 तबद्विजनाऊदोउफिरिआये॥राजानेसबबरिआखुनाये॥  
 सुनिनृपकर्मविषाकमंगाई॥बिप्रनतेताकोबचवाई॥  
 कहद्विजकन्याकहाजोरहई॥महाराजसोदुसांचीअहई  
 जहांतहांफैलीयहबाता॥हाथीराजाकरयामाता॥



मुनिप्रपकीरतिनृपदुखयावा॥ अग्निकुण्डगुरतैखनवावा  
दो० गोमलघृतभरिदारुनृपजैलागतेहिमाहा

तेहिद्वाराऽप्रायेदेवऽरिषिरेविनीहगहिवाहै॥

चौ० कहनारदकेयाजैरमुवाला॥ सोसबवर्गीमोसेहाला॥

बाल्योनृपगजऽपसनकीन्हा॥ कन्याताहिरखवावेलोन्हा॥

मेपूछाकसदिहेखवाई॥ कन्याकहामोरयातऽआई॥

तासुगिराहमसत्यनजानी॥ यलस्वयम्बरकीसबदानी॥

कन्याहारगजहिपहिरावा॥ तेहियादेमैवरुखोजवावा॥

जसिकन्यावरुमिलानतैसा॥ मिलीसोऽंधारपंगुऽपनेसा

तबमेंकर्मबियाकबंचाई॥ कन्याकहासोसांचीयाई॥

ताहूपरजैयुरुयऽधनारी॥ यगयगनिद्याकरैहमारी॥

सोऽपकीरतिमुनीनजाई॥ तातेजरिभरिहैंऽरिषिराई

दो० कहनारदजनिजरहुऽप्रबहैकहुकरकउपाय।

रामनामगजमुनैतोऽप्रबहींनरहोइजाय।

चौ० मुनिमुनिबचनभूषमुखयावा॥ बारऽचरणानसिरनावा

महाराजऽप्रबदेरनकीजै॥ बेगिगजैगुरुदिक्षादीजै॥

जैहिऽपकीरतिमिटैहमारी॥ बरीजाइतेहिसाथकुमारी

मुनिनारदहरिमंत्रमुनावा॥ गजपातकसबदूरिवहावा॥

मुखतेभाबालकुसकऽआई॥ तेहिशेभाकहुवरिगानजाई

बैसकिशोरगोरतनजासू॥ द्रुगविशालशशिसममुखहासू

बालबिलोकिभूयऽप्ररुगनी॥ इकठकरहेनिमेषनऽपानी

देखिसरबीसबकुंवारिसराहैं॥ धन्यभागबड़नुमरेऽपाहैं॥

प्रथमेंतनदुखसह्योऽप्रपारा॥ तातेयायोसुभगकुमारा॥

हमेंनबिधिऽपसदीन्हेंनाहा॥ सरबीसराहिकहैमनमाहा

तबकुमारशिशुबन्दनकीन्हा॥ शीशनाइचरणानधरिदीन्हा

जयजयजय बटविराजतुह्यारी॥ मोहि पाषीकी विपति निवारी  
गजतनु लहि मैं प्रतिदुख पावा॥ ता दुख ते तुम प्राजु बचावा  
दो० जान्यो मैं तव कृपा ते प्रबसत संग प्रभाव ॥

दानो जा तनवादि हित करत जहां चलि जाव  
चौ० तब मुनि वर वर शिक्षा दी है॥ मुनि तेहि सहित हिये धरि लीने  
नृप रानी कन्या सोइ जाने॥ मे नारद के शिष्य बरवानो॥

तेहि पाछे पंडित बोलवावा॥ व्याह हेत शुभ दिवस से धावा  
यत्रा खेलि बिप्र अस बोला॥ प्राजु लगन नृप अहे प्रमोला  
मुनि नरेष्म मन भै परतीती॥ कीन्ह व्याह गंधर्व की रीती॥

बहु विधि दायजु दीन्ह भुवाला॥ बड़ आनन्द भयो तेहि काला  
गी० हु० नृप कीन्ह सुता बिवाह अति उत साह नहिं वर गात  
वनो दिवो दान बहु महि सुरन कहं गज बाजि पुररघ को ग-

ने॥ दिन दिन अधिक अधिकत सुख सुर पुरसरि सबहु  
भौंति हो॥ गुरु सरा के परताप तेरहि सकल संप्रै जाति हो॥

दो० गुरु सगान तिहुं लोक में और न दूसर देव॥

ताते सौन क कीजिये गुरु चरण की सेव॥

दीप उड़ पमनि चंद्र बिपंच प्रकृति गुरु जानि॥

बैसाव दिहा सर्व पर मुनि वर कहत बखानि॥

बैसाव धर्म ते परे जो धर्म निरूपे कोइ ॥ ॥

सो सहस्र जा जमन ते मुजन न पावे सोइ ॥

कुं० अन्य सुगंध होइ तो राम मंत्र फिरि देस॥ राम मंत्र युन जो  
न तेहि प्रपर न देय न लेय॥ प्रपर न देय न लेय सोई पप पाव बला-

दे॥ तत गुरु मानहिं ताहि ज्ञान जो जाति पावे॥ कहत दास

रघुनाथ ये गुरु शिष्य दोउ धन्य॥ परे न के सह जाय जो धर्म सिखावे प्रव-

दी० वि० विश्रामसागर सब मत प्रागर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दास



रामसेनेही कृतगुरुमहात्म्यकशादत्तकथावर्णनामपंचमोऽध्यायः ५  
 दो० सुमिरिगामसियसन्तगुरुगगायगिरासुरखदानि॥  
 बरगोनामप्रभावबहुग्रंथनकरमतप्रानि॥  
 चौ० मुनिसौनकबोलेकरजोरी॥ ऋषिसुमंत्रयदप्रीतिनधोरी  
 नाथमोहिनिजसेवकजानी॥ नाममहातमकहौबरवानी॥  
 मुनिमुनिबचनसुतहरषानि॥ बोलेविमलवचनसुरवसाने॥  
 सुनौकहोंमैंनामप्रभावा॥ जोगिरिजाप्रतिशंकरगावा॥  
 एकबारशिवसहितभवानी॥ बैठेनिजप्राश्नमसुरखदानी॥  
 पतिहिप्रसन्नदेखिअधिकारी॥ बोलीशिवासनेहबढ़ाई  
 दो० मुहुमुहुतुमकहतहौरामनामसुरखदानी॥  
 तासुअर्थकरिकृपाप्रभुमोसेकहौबरवानी॥  
 धन्यप्रियातुमजगतमेंकह्योईशहरषाई॥  
 रामनामकेअर्थहीजोपूछ्योमनलाइ॥  
 चारिवेहप्ररुषटसहससबपुराणमुनिदेव॥  
 नामप्रभावसोउग्रप्रतितेनहिंजानतभेव॥  
 रामनामकोअर्थजोसोसबजान्योराम॥  
 तासुअनुग्रहलेकहुकमेंपायोसुरखधाम॥  
 चौ० निजप्रतिसरिसुनहुंमनलाइ॥ नामअर्थमेंकहोंगुभाई  
 कोटिकामसमजातनघोभा॥ असकोजोनदेखितेहिंलोभा  
 जनकनारजेनरअरुनारी॥ रमेदेखितनसुरतिविसारी  
 सप्तदीपकेनृपजेअये॥ सहितविदेहसोदेखिलोभाये  
 परसरामबिनकारणकोही॥ रामरूपदेखतगेमोही॥  
 बनबिहरतरवगपुगनरनारी॥ कोलकिरातयातहुमडारी  
 रमेसकलमिलिसेवाठानी॥ रामकोडांतैहकहतभवानी॥  
 धोरिनिशाचरिलरिबकुबिरामा॥ पतिइच्छाकीहोसेवसकामा॥

चौदहसहस्रप्रसुरखरदूषणा॥ मोहेदेखिरामविनभूषणा  
दो० हंडकवनमुनिसर्वजेज्ञानयोगतपधाम॥

रामरूपछविदेखिकैमेपूस्वतेवाम॥ ॥

चौ० मेहुबालिदेखतरछुराया॥ प्रजगमरनीहंलीहीकाया  
रावणासमरनिशाचरजेते॥ देखिरामछविमोहेतेते॥

प्रबधनगरनरनारिचराचर॥ रम्यो रामतनदोरवदिवाकर  
रमकीड़ातातेतुमजानौ॥ प्रबसोसुनौजो० प्रौरवरधानो  
जलतरंगजिमिरविप्ररुघामा॥ कनकसकभूषाबहुनाभा  
गिरा० धर्यजिमि० प्रगिनउषाता॥ कहतभिन्ननहिभिन्नसो० अनता

तेसनामरूपहैभावा॥ यहपिनामकर० प्रधिकप्रभावा  
दो० रूपमिलतनहिनामविननामरूपविनवादि।

तातेदोऊनित्यहैं० प्रमल० प्रनप० प्रनादि।  
रामवदनराजानिये० प्रतेहिउरपहिचानि।  
मामकारदोउचरणाभेरफतेजचेतानि॥

सो० कोटिभानुतेभूरि। हैप्रकाशजामेबिमल।  
रह्योचराचरपूरि। परब्रह्मनाकोकहता  
कोटिविष्णु० प्रजईशकोटिशारदाशेषशशि।  
सुरपतिकोटिकरीशसमप्रभावजामेविशद।  
तीरथकोटि० अनन्तनाम० प्रधिकपावनकल  
हरणायापश्रुतिसन्त। कहततदपिउपमानही

चौ० कहंरविकहंखंदैतप्रकाश॥ समकिलहैमुखफूकवताश  
उपमानामकीनामन० प्राना॥ गृह्यभेदसुनकरहंवरवाना  
रामनाम० प्रशाशतेजानौ॥ तीनसिद्धिमेप्रगटवरधानौ॥  
साहजीज० प्रौरउंकारा॥ प्रहुं० तेकरवविचारा॥ ॥  
प्रहुंकारतेऊपहिचानौ॥ रेफसो० प्रन्तरभूतपिछानो॥



हलमकार ऊपर प्रनुस्वारा ॥ ताजो सिद्धि भई ओंकारा ॥

यहिविधि सोहं लीन भवामी ॥ नाम ते प्रकट मुक्ति को दानी

दो० राम नाम ते प्रकट भैषट वस्तुदू जे ॥ जोर ॥

तिन के नाम बरवान है सुनु मन करि दुकंदोर

परब्रह्म ॥ परु जीव जो महानाद स्वरचारि ॥

पंचम बिदुषष्टरु ॥ प्रवर माया दिव्यनिहारि ॥

चो० परब्रह्म सोरेफ ते भयऊ ॥ जीवकार प्रादिते कहैऊ

मध्याकार नाद सो कहिये ॥ रादीरघ ते स्वर को लहिये ॥

हलमकार ते भा ॥ प्रनुस्वारा ॥ प्रनुस्वार ते प्रसो विचारा

प्रसो ते भये तीन गुरा जानो ॥ सतरजतामस प्रादि पिछो

त्रै गुरा ते त्रै देव उपाये ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश कहाये ॥

तिन ते भयो सकल संसारा ॥ रम कीड़ा तेहि करत उचारा

दो० नारायण को रूप करि जो है प्रथम रकार

महा विष्णु प्राकार ते महा शंभु माकार

राम नाम के भीतरै ब्रह्म जीव त्रै लोक ॥

ज्यो स्थिति बीजन हनन भनन माहि ग्रह थोक ॥

राम नाम के ध्यान में स्थिति ध्यान होइ जात ॥

जिमि सींचे एक मूल के डारयात हरियात ॥

राम नाम को कैंडि कै करत जो ॥ प्रपर उपाय

मुखतजि भोजन भजै जिमि सपनेहुं सुधान जाइ

चो० रम कीड़ा ते बुध कहई ॥ प्रपर हेतु सुनिये जो ॥ प्रहई

परम जाग शुभ रेफ कहावै ॥ परम विरागर कार बतावै ॥

सो पावक के बीज हिलहिये ॥ बड़वानल प्रादिक जो कहिये

अस विचारि जो नाम उचारै ॥ कर्म शुभाशुभ सो सब जाई ॥

परम ज्ञान विज्ञान जो कहई ॥ ताको मूल प्रकार सो ॥ प्रहई

सो सूरज का बीज यही है ॥ सुमिरत काल प्रकाश सही है ॥  
 भक्ति सरूप मकार सुहावनि ॥ चंद्र बीज तै ताप नशावनि ॥  
 लीनिकांड रवि शशि सब जाते ॥ रम कीड़ा कबि दरशात ताते  
 सतर फार चित जानु प्रकारा ॥ आनंद रूप मकार विचारा ॥  
 सत कहि पे जो बिन सै नाहीं ॥ चित चेतन सकल घट माहीं ॥  
 आनन्द जो नित रहै अनन्दा ॥ ताते नाग सच्चिदानन्दा ॥ ॥

हो० तत पद ब्रह्म सो रेफ कहित्वं पद जीव प्रकार  
 हल मकार माया प्रसीत तत्त्व मसी श्रुति सार ॥  
 हल मकार कुर माया प्रहर ब्रह्म प्रकार ॥ ॥  
 रेफ निरक्षर ब्रह्म कहि सब व्यापक निरकार ॥  
 हल मादृच्छा प्रकृति ते सकल शक्ति संजाय  
 रम कीड़ा तोहि कहत प्रब सुख नाम कहों गाय ॥

कुं० कुं० विष्णु नारायण कृष्ण जो शसु देव हरि ब्रह्मा ॥ परमेश्वर परमा-  
 तमा विद्वत्भरति धर्म विद्वत्भरति धर्म कलानिधि कलुष ह-  
 नन्ता ॥ कैशौ कमला कन्त विश्ववपु भव भगवन्ता ॥ औं ऐं ना-  
 म अनेक जो रटै त्यागि मुख से सुगु ॥ सुखद सकल पावन महा  
 यहुं चावत पुर विष्णु ॥ सब नाम नमैं राम नाम परका शक जि-  
 य जानु ॥ जिमि नक्षत्र महं चंद्रमा अरु ग्रह राग नमैं भानु ॥ अ-  
 रु ग्रह राग नमैं भानु कविन नमैं यथा अनन्ता ॥ निर्जर नमैं जिमि श-  
 क्र भक्त नमैं जिमि हनुमन्ता ॥ लोक नमैं गोलोक सरिन नमैं सरय-  
 धारा ॥ नर नमैं हिं जिमि भूपधनु धारि नमैं मारा ॥ भगवन्ता-  
 न नमैं राम यथा शक्ति नमैं सीता ॥ अद्रि नमैं जिमि मेरु पुराय  
 पाठन नमैं गीता ॥ कामधेनु गोआहि अहिं साधर्मि नमैं जिमि ॥  
 वृं सन नमैं सुरलक्ष्मण नमैं वयन तेइ तिमि ॥ क्षिम नमैं हिं-  
 जिमि क्षिमा सस्त्रि नमैं जिमि सरस्वना ॥ कर्म नमैं हरि कर्म ज्ञान



भेदह्यज्ञानापुरि न माहिं जिमि प्रवधमं न भेजिमि डों कारा ।  
रुद्रनमें में यथा स्वरनमें जिमि आकारा ॥ पुष्करतीरय माहिं  
सरानमें कौस्तुभ जैसे । सब नामनमें राम नाम तुम जानै तैसे ॥  
सुनि बोली गिरजा बहुरि बरगौति न के अर्थ प्रवाक कहि शिव सो  
ऊ सुनु प्रिया बन्दों नाम संक्षेप सब ॥

चौ० नरजीवन की संज्ञा मानौ ॥ नर सब जा के अश्रित जानौ ॥  
ताते नाम न रावरा कहिये ॥ न रहिय प्रयन जा सुको लहिये ॥  
हरिदुख हरत भक्त के पापा ॥ ताते हरि अस्त नाम सुधा पा ॥ ॥  
वासुदेव सब मावश जोई ॥ सब जहं बसै वा सुदेव सोई ॥ ॥  
केशी सो जे हिते हु सुर सैं बें ॥ फला अंश अवतार जो ले बें ॥  
पोषत भारत सकल संसार ॥ ता सुविश्वम्भर नाम उच्चार ॥  
पूरा जिमि सब जगत अकाशा ॥ सर्व भिन्न निरगुरा परकाश ॥  
ताते ब्रह्म कहावत सोई ॥ अनंत अनन्तरूप जेहि होई ॥ ॥

दो० कृषि भूवाचक शब्द जे ताहि कहत हैं कृषा ॥  
सब में व्यापक रहत नित विषया व्याप सो विषा ॥  
सब श्रव्य सुधर्म यश श्री विराग विज्ञान ॥ ॥  
षट्भग जामें होइ ये तोहि कहिये भगवान ॥  
राम नाम ते होत जो सो काहते नाहिं ॥ ॥  
यह निश्चे करि देरि वये सकल पुराण माहिं ॥  
राम नाम निर्वर्ण है सब बरान कोई श ॥ ॥  
मुकुट छत्र ये जानिये रेफ बिन्दु सब श्री सा ॥  
राम नाम मय सर्व है नाम प्रकृति अरु वरी ॥  
राम कोड़ा ताते कहत सुनहुं अपर धरि करी ॥  
कोटि तीर्थ व्रत दान तप कोटि योग जप ध्यान ॥  
कोटि ज्ञान विज्ञान मख तुलै न नाम समान ॥

सप्रकोट जेमें वहै चितमखावन काज॥

परोमें वहै रामनाम सकल मंत्र को राज॥॥

चौ० रामनाम जे जेपें सदा हीं॥ मुक्ति मुक्ति तेहि संशे नाहीं॥

मूर्द्ध गगन तहं बस तरकारा॥ त्रकुटी बास अकार बिचारा॥

जि ह्वा बास मकारहि जोई॥ निजनिज थल उच्चार सो होई॥

योगी अर्घ्य कारहि ध्यावै॥ अरु अकार जानि मन भावै॥

पूरा नाम जेपै हरि दाशा॥ मुक्ति भुक्ति कीछाई प्राप्ता॥॥

जै जै मंत्र प्रयोग कहावै॥ तैस तैस साधे फल पावै॥॥

ते सब सिद्धि प्रहोइ जाई॥ रामनाम सुमिरे मन लावै॥

जेपे कौन बिधि भुक्ति बतलावै॥ निज जन जानि न नाथ दावै॥

कह शिव सुनौ प्रिया की प्रीती॥ नाम जपन की बर रौं रौंती॥

सत गुरु ते जब पावै नामें॥ करि विष्णु सदै ताजे कामें॥॥

गो० कुंतजि काम को धवि मत्सर लस लोभ मोह निवारि॥

को० कुल मल कुसंगति त्यागि सदुपवासना सन सारि कै॥

शुचि अंग गोमन जीति नासानिरत नित नामै रदै॥ है जाय सो-

नर राम ही को रूप भय बंधन कटै॥॥

चौ० प्रीति अ प्रीति गीति बिन जाने॥ कहत नाम सुख लइत सपाने॥

अभिय गरल गद जल मल प्राणी॥ पारस सम गुण कहत विरणी॥

अंतर नाम जपत जो कोई॥ मुक्ति होत परि भक्तन सोई॥॥

राम रूप दर्शन नहि पावै॥ ताते जन रसना मन लावै॥॥

रसनाना मरदत जो कोई॥ परा भक्त हरि दर्शन होई॥॥

रसनाना मरदो जिन जानों॥ तिन सब हिन के नाम बरवानों॥

दो० लोमस नारद व्यास शुक भृगु प्रगस्ति प्रह्लाद॥

गणिकाय मन गयंद द्विज नाम क जान्यो स्वाहा॥

चौ० काग भुगुराड नाम गति जोई॥ कल्याणो जोहि नाशन होई॥



बालमीकध्रुवसुमिर्योनामा॥ पावनभयालह्योविश्रामा  
नामप्रसादशेषमहिलीन्हें॥ भुवनचारिदशरजसमकीन्हें  
नामहिबलमेंबिषकियोपाना॥ वेदपुराणाविदितजगजाना  
सनकादिकगराधनिहरिजाता॥ जीवनमुक्तिपूज्यसुखदाता  
ज्योरोप्रमितभयेहरिदसा॥ नामसुमिरिगेप्रभुकेपासा॥  
सो० योगीशानीभक्तजसुकर्मकरसासकल॥

रामनामअनुरक्तरमकीहातातेकहस॥

चौ० सतयुगसत्यनभूढवरानी॥ करिहरिध्यानतोरैभवप्रानी  
चेतातणमरबसंयमकरहीं॥ सुरबलिदेइजीवजगतरहीं॥  
ह्वापरव्रतपूजाग्राचारा॥ करिकरिजीवहोइभवपारा॥  
करिनहिंतपव्रतसंयमयोगा॥ साधनकदिनदेहवसरेगा॥  
तातेनिगमसुगममगगावा॥ कलिभवसिन्धुनामदृढनावा  
नामप्रतापसकलयुगजान्॥ कलिविशेषजिमिग्रीवमभान्  
असबिचारिजेनरवरजानी॥ जपहिंनामअटुअनअटुमानी  
अनअसनतजिबनफलखाना॥ गजरथवाजिदेइगोदाना  
गो० कूं गोदेइकोदिनदानगिरिचढ़िभौपलेतनजारहीं॥ स-  
बकरहिंतीरथअटनज्ञानपुराबादेबिचारहीं॥ मरबकोटिसुर  
तैतोसराधैयोगअष्टंगिहिंकरै॥ एकनामनामजहा-  
जबिनसंसारसागरनातोरै॥

दो० अथैअनलशशिख्योमफलतमरविदेइमिदाये॥  
बिनहीरभजननभवतोरैकैजोकोटिउपाये॥  
गरुडैखाइभुजइवरुछतनिकसैजलनीके॥  
भजनबिनासुखनालहैयहपाथरकीलीके॥  
असबिचारिरघुनाथभजुनामनाममनमोर॥  
जबहोईतबहोइहैयेहीतेभलतोर॥ ॥

सोर जानीध्यामीगुरति दाता सूरसुजान॥  
 ज्ञातिपवित्ररघुनाथसो जो सुमिरै भगवान॥  
 रामनाम का अर्थ कह्यो बुद्धि अनुसार॥  
 नाम प्रभाव प्रपार ज्ञातिको अस पावै पार॥  
 शठ अशिष्य विष पाठ कीति नैन्यह मत देइ॥  
 राम उपासक ते कहौ जो मुनि उर धरि लेइ॥

इति श्री विश्रामसागर सवमत प्रारंभ उजागर श्रीरघुनाथदास-  
 राम सुनेही कृत नाम महात्म्य वरी नो नाम षष्ठो अध्यायः ६॥

दो० सुमिरि राम सिय संत गुरु गराय गिरा सुख बरवानि॥  
 कर्म को लपराणा की कहौ इति दास बरवानि॥  
 कह सौ न कह रि नाम कहि पति ततरे जग को न॥  
 यह प्री भला पा सुनन की कहौ नाथ तुम तौ न॥  
 बदे उस्त हरि नाम कहि तारे पति त अनेक॥  
 पारन पावै जोग नैं सह स शारदा शेष॥

जो कह्यु मम जाने मुने गुरो पुरा गान माहि॥

सो तव हित धर गान करौ जो यूछ्यो मेहि पाहि॥

चौ० बालमीक गारि का गज जानौ॥ यमन केर इति दास बरवानो  
 कारति मुख इक मुनि घर रह्यो॥ विपिन मध्य तन योगन बह्यो  
 इक दिन स्वपने शुक्र बिना सा॥ बांधी धरि जरा बिचले उदासा॥  
 तेहि ते बालमीक मुनि भयक॥ दगन केर संगति होइ गयक॥  
 तिन के साथ विपिन नित जाई॥ मारि जीव धन लेइ छिनाई॥  
 सब विधि सों जब भयो सयाना॥ तब बन लाग्य केलीहि जाना  
 ब्राह्मण वयस गूढ़ जेहि पावै॥ प्रथम मारि तेहि बस्तु छिनावै  
 जो कोइ प्रापुइ ते धन देई॥ विन बध किहे कबहुं नहि लेई॥  
 दो० एक दिवस बाइ देर भइ मिलान कोउ ताहि॥



तेहि मगनिके ससत्र करि कहत नाम जो आहि ॥  
कश्यप प्रजेयमदगिनि विश्वामित्र वशिष्ठ ॥  
मरहान गौतम कहे नाम सत्र करि गिष्ट ॥

चौ० इन्हें देखि धारा हरवाई ॥ बोला वचन मुनिन ते जाई ॥  
पौषी पत्रा देहु उत्तारी ॥ नाहित सबन डारि हों मारी ॥ ॥  
जानि दुष्ट बोले मुनि जानी ॥ मुनु रग हम पूछत इक बानी ॥  
जो तुम पाप करत अति भारी ॥ तिन मा कोइ औरो सफियारी ॥  
बहु धर जाइ छिये वाता ॥ आइ हें ये फिरि कीजें घाता ॥  
कहे विहंसि मैं बभन जावों ॥ तुम भजि जाउ कहां पुनि पावों ॥  
तब मुनि सोह सम कोखाई ॥ सुनि आवा घर देर न लाई ॥ ॥  
तात् मात सुत वनिता भाई ॥ पूछे सि सब कानि कह बोलाई ॥  
मैं जो लूटि मारि धन लावों ॥ खात सकल मिलि भोग भोगावों ॥  
जीव बधे कर पाप जो होई ॥ तेहि मात भियारी हें कोई ॥ ॥  
सबहिन कहा पाप जो आहीं ॥ ता के हम साथी हें नाहीं ॥  
दो० अस मुनि सोइ पत भयो गयो सप्र करि पास ॥

हाथ जोरि चरगाव पस्था कल्यो वचन परकाश ॥

चौ० महाराज हों शरणा तुम्हारी ॥ पतित जानि मोहिले दुउवारी ॥  
सुत पिनु मातु बन्धु त्रिय नाती ॥ हें सब स्वारथ केर संघाती ॥ ॥  
संकर पर काम नहिं आवैं ॥ सब के सब जहंत हं भजि जावैं ॥  
अवलगं मैं सब कानि जु जानी ॥ कसर हों पातक सुख मानी ॥  
सो अघ सभु भि लगत डर भारी ॥ पाहि वाहि मैं शरणा तुम्हारी ॥  
हीन जानि बोले सुख दाई ॥ मरामरा कहि सुमिरहु जाई ॥ ॥  
सुनि मुनि वचन हृदय धरि लीन्हा ॥ मरा सोइ सुमिरन कीन्हा ॥  
तिसरे शब्द राम होय गायक ॥ बाल मीक कर कारज भयक ॥  
जाप करत भे पातक नाश ॥ निर्मल हृदय भयो परकाश ॥

दो० तबभविष्यसियरामयशकहोकोटिसतगाइ

सौनकनामप्रभावप्रसमराकहेगतिपाइ॥

चौ० प्रौरसुनोगरिकाइकरहई॥ ताकेपापवारकीलहई॥

अन्तसमयलीन्हें॥ यमधेरी॥ लगेदेनतेहित्राशधनेरी॥

तेहीसमयएकहरिजनआये॥ देखिजायकाबिनयसुनाये

तुमहोदीनबंधुसुखदाई॥ मोहिंसडूटतेलेहुछुडाई॥

मुनिसाधूमनबिसमयकीन्हा॥ मंचयाहिनहिंचाहियदीन्हा

जोयाकरकल्याणनहोई॥ तौप्रराजाइहमारोखोई॥

बिनानामभल्लहोतनजानौं॥ यहिकौनबिधिनामबरवानौं

दो० असबिचारिसाधकहो जगजोहिन्दूलेग॥

कीरयदावतकहोसोइतबतबनाशेलेग॥

चौ० सुनिगरिकाकहरामसोआई॥ असकहतैतनछूटाही

सुनतहिरिगराआयेधाई॥ यमफांसीसेलेतहुडाई॥

हिततेसुभगबिमानचढावा॥ रामधामतहंजाइबसावा॥

असहैरामनामसुखदाई॥ अधमजातिगरिकाकैंगतिपाई

सुनहुंएकगजअतिबलवाना॥ करनगयोसागरजलपाना॥

ग्राहगहोताकरपगधाई॥ लेगाजलगहिरेघसिलाई॥

फिरिगजरैबचिकिनारेलावा॥ यहिविधिसेबहुकासबितावा

गजकेतातधातसुतभामा॥ कछुदिनभोजनदीन्हेंतामा॥

पाछेसबनत्यागितेहिदीन्हा॥ सुधाक्षीराभावलतेहीना॥

कोउसहायकजबनहिंदेखा॥ जान्योगाअथप्रानबिशेरवा॥

तबतेहिअर्द्धनामगोहगयो॥ गरुडछाँड़िहरितुरतहिधायो

ग्राहैइतिगजस्त्रीनबचाई॥ सुनुमुनिअसदयालरघुग्राई॥

तिन्हेंछाँड़िजेअनेधारैं॥ तजिसुरसरिजलकूपखनारैं॥

प्रौरसुनोमेंकहोंबरवानी॥ अहोमलेच्छएकअघरवानी



एकदिवसगुर्चोकहंगयऊ॥ बाहेरग्रामसोबैदतभयऊ॥  
 पाहेतेसूकरसुतग्रावा॥ विटऊपरमुखभारिगिरावा॥  
 कहायमनमाख्योहारामा॥ अससांगतछूट्योताजामा॥  
 यमकेदूतगहिनतेहिधाई॥ आइगरानतबलीनछिड़ाई  
 कहागरानलीन्होयहिनामा॥ अबनहिंजायतुम्हारेधामा॥  
 कहयमदूतहरामजोकीन्हा॥ सोयहिनामसुवरकालीन्हा  
 हरिगराकंहसंकटकैमारे॥ हाइरामअसकहिसिबिचारे  
 दूतकहाचलिन्यावचुकाई॥ जाहिमिलेसोईलैजाई॥  
 यहिबिधिभगरतगेबिधिपासा॥ बोलैब्रह्मजाहुकैलासा॥  
 तबचलिउमानाथपहंगयऊ॥ दोउमिलिहालगुजारतभयऊ  
 दो० सुनतकहाशिवनामकरन्यावनमोसोहोइ॥  
 चलिबैकुराठचुकाइयेथीपतितेकहिसोइ॥  
 चौ० असबिचारिबैकुराठहिअये॥ सभाचारसबहरिहिसुनाये  
 कहयमदूतचराशिरनाई॥ इहुहैअतिपाथीअन्याई॥  
 मरतहरामकहेसिमुखयेही॥ तातेगरालैजाननदेही॥  
 सोनियायतुमतेप्रभुहोई॥ जोतुमकहोकरैहमसोई॥  
 सुनतविद्यामनकीन्हबिचारा॥ नामप्रभावअनन्तअपारा॥  
 बोलैयमदूतोसुनिलीजे॥ याकोदूहैरहनअबदीजे॥  
 सुनियमगराचलिभैरवसियाई॥ हर्षशिवचिरंचिमुनिराई॥  
 गी० छं० हर्षचिरंचिमहेशशेषगरीशनारदआदिकै॥ जेहि  
 हेतुमुनितदकरतयोगीयोगआसनसाधिकै॥ नहिंमिलत  
 सोषदयमनकहिहारामबिनअमयायहअसजानिना  
 मेंनाजंयतिनवादिजन्मगंवायह॥  
 दो० असहैनामप्रभावजेहिकहिनसकैहारसु  
 तांतसत्ततकीजियेगमनामकोजायु॥॥

इति श्रीविश्रामसागरस्य मतश्रृंगारग्रंथ उजागरश्रीरघुनाथदासस्य  
सनेहीकृतबालमीकगजगनिका उद्धारवर्तिनेनामसंप्रदायः ॥

दो० सुमिरिगमसिय सन्त गुरुगणाय गिरा सुखदानि ॥  
कहाँ कथा भागवत की प्रवदति हास बखानि ॥

चौ० बोलै मुनि कछु नाम प्रभावा ॥ कहौ सुनौ प्रब प्रपर सोहावा  
कन उजतीर ग्राम इक प्रहर्द ॥ प्रजा मील द्विज तामें रहई  
माता पिता नाम यश धारा ॥ सो सब सांच कीन्ह करतारा ॥ ॥  
पूर्व कर्म बसत जिनि जनारी ॥ बेश्या एकलिहि सि बैवारी ॥  
सुरायान तांके संग कीन्हा ॥ शोच सयान दूर धरि दीन्हा ॥ ॥  
प्रजा मील लै नीच न देई ॥ चर्म नफा पर प्रयना लेई ॥ ॥  
असया तक निशि वासर करई ॥ हृदय नैकु दायानहि धरई ॥  
प० क० एकदिवस इक साधुता सुन गरी महं प्राये ॥ पूछ्यो  
हरिजन धाम सुनत दुष्ट न बहं कायो ॥ आज्ञा मील घर जाहु  
चहौ जो शुभ विश्रामा हरिजन जान्यो ॥ सांच गयो बलिता के धामा  
गणिका लखि धूमें तुरत प्रजा मील सुनि पाद विनती  
करि फिरि लै गयो ॥ प्रासन दीन बनाइ ॥

दो० यद्यपि मैं यहि जन्म मंदुर्भग प्रचयुत दीन ॥  
तदपि पाछिले जन्म महं पुराय धनी कछु कीन ॥

सो० पुराय पुंज बिन नाथ ॥ मोको तव दर्शन कहां ॥  
जोपि मिलत कहूं साथ तौ नहिं होतौ भाउर ॥

चौ० अस कहि सीधा विटतें लाये ॥ विविध भाँति भोजन कावाये  
है प्रसन्न बोल्यो हरिदासा ॥ तब बनिता उर पुत्र निवासा ॥ ॥  
अब की बेर जन्म लेइ जययाही ॥ धर्यो नाम नारायण ताही ॥  
नारायण जो धरि होनामा ॥ तौ नहिं जै होय म के धामा ॥ ॥  
प० क० अस कहि हरिजन गयो भयो जब बालक जानी ॥



अस्यो नरायण नाम वचन वैशो कीमानी ॥ ता सो राखे नेह  
ने कु नहि न्यास करई ॥ मोह बश्य भाग्रं धमृत्यु ते नाही डरई ॥  
यहि भांति न कहु काल गे अन्त संभेका बार ॥ लैन चले यम  
दूत बद्ध आये ता सुप्रगार ॥

चौ० महाभयानक रूप निहारी ॥ अजामील दरयो प्रतिभारी  
योग दर मारि डारि गर फांसा ॥ काढ़त जीव चले उद्धे स्वासा ॥  
निक सत प्राणा भई प्रति पीरा ॥ रही न तन कौ सुद्धि शरीरा ॥  
कराद धरि यम गराइ कलयऊ ॥ मुख से बचन बोलि नहि गयऊ  
दो० तब सोइ सुत की आदिकारि कह्यो बचन हरु बाई ॥

कहौ नरायण पुत्र यम तेहि मोहि देउ देर वाइ ॥  
चौ० नाम लेत हरि हृदय विचारा ॥ दुख की वस कह्यो मोहि पुकारा  
मोर नाम जे जग मेले हीं ॥ तेहि कि कष्ट यम किं कारे हीं ॥ ॥  
सबैया तुरतै हरि बोलि कह्यो गराते केहुं नाम लियो तेहि बे-  
गि बचावो ॥ फांस छोड़ाइ चढ़ाइ बियान बजाइ निशान मे-  
रे दिगतावो ॥ आय सुपाइ गये द्विज धाम बिलोकिके दूत  
सबें दुख पावो ॥ बोलि उठे तब ही गराते केहि कारणा मो-  
न घुसे तुम आवो ॥

चौ० इतना सुनि उत्तर गरा दीन्हा ॥ इहो रहत हरि जन हम चीन्हा  
ता सु फांस काढ़न केहेता ॥ तांति पठइ निरुपानि केता ॥  
मुनियम दूतन कहारि साई ॥ तुम तौ गरीं बड़े अन्याई ॥  
याकी सम नहि दूसर पापी ॥ ताको तुम हरि जन करि थापी ॥  
रायसि मांस किहि सिम दयाना ॥ अस जाहि लै चलयो बिमान  
सुनहु गनौ जे आमि बखौ हीं ॥ तेहि सम प्रोर पाप नहि आही  
याकर दोष जौ न कहु होई ॥ कृपा कह्यो पारथ से सोई ॥  
यभूहते जोरोम शरीरा ॥ तितने बर्षन के सह पीरा ॥ ॥

आठ जुहिंसा के गृह जानौ ॥ सो भारत में सारिब बरवानो  
 जीव बधन इक प्रजा देई ॥ दू जो मारे त्रै गाहि लेई ॥ ॥  
 चौथो सुनो सवारन हारा ॥ पंच वांवेचन हार निहारा ॥ ॥  
 छठो रसोई जो न चढ़ावै ॥ सत वों सो जो परसि जिमावै ॥  
 अठवां खान हार जो होई ॥ धरे नर्क सहं ग्रांठो सोई ॥ ॥  
 दो० मोल संगी वै धर हंतै ताहि दर्वि दे कोउ ॥ ॥

सुरवसम्पत्ति सब नाश ही मोल लहै नहिं सोउ ॥

चौ० द्विज है कै मदिग जो खाई ॥ देवतुरुक कर पूजै जाई ॥  
 बार मुखी जो गरे लगावै ॥ कुल का धर्म सकल धदि जावै ॥  
 तेहि द्विज की पूजा जो करई ॥ पुराय जादू घटि अघ सिर परई  
 यामें नहिं हम भूढ़ बरवाना ॥ धर्म शास्त्र में यह परमाना ॥ ॥  
 तेहि ते अग्र बंसे सी जनि कीजै ॥ याहि नर्क लै जाने दीजै ॥ ॥  
 अस पाषी जो हरि पुर जाई ॥ नर्क काहि हम डार बभाई ॥  
 संचैया बोले तबै गरा दूत न ते तुम नाम प्रभावन जानत भा-  
 र्द ॥ गोद्विज पाप करै नर जो अग्र पने करते मधु लेइ छोड़ाई ॥ चो-  
 री करै बट्यारी करै गुरु तल्प धरै पग आसिष खाई ॥ औ-  
 रहु पाप करै बहु जो हरि नाम लिहे सब ही जारि जाई ॥

दो० गरी काय मन गयन्द से बाल मीक अघ खानि ॥

नाम कहत सब तरि गये कहं लगु कहौ बरवानि ॥

चौ० कोटि गरु जो देवै दाना ॥ ग्रहरा करै काशी अस्नाना ॥  
 मकर प्रयाग बंसे जो जाई ॥ यज्ञ करै दश सहस सोहाई ॥ ॥  
 गिरि सम हेम दान कर कोई ॥ राम नाम सम तुलै न सोई ॥ ॥  
 यथा देवुक मुद्रा जग माहीं ॥ हैं सब सकय दिक्क सम नाहीं ॥  
 वस्तु अमोल यथा मति कहहीं ॥ जिन जाना जसत सफल लहैं  
 संकेतं परिहास जो करई ॥ राम नाम सुमिरत अघ हरई ॥ ॥



असहरिनामप्रकटजगद्ग्राही॥ शेषमहेशरत्नहैजाही॥  
 सोईनामयातेकहिग्रावा॥ याकीसमकोभक्तकहावा॥  
 कहयमदूतसुनहुंगराजेता॥ कबयहिकीनरामतेहेता॥  
 यहितौपुत्रनामकहिटेरा॥ तातेहमदियोडुःखधनरा॥  
 जोयहलेतरामकरनामा॥ तौहमतेयातेकाकामा॥  
 कहयसाहरिजनजोकहिगयऊ॥ ताकेबचनमानियहिलयऊ  
 करिउपदेशसन्तदियनामा॥ तातेभक्तभयोबहरासा॥  
 चारौयुगश्रीशारंगयानी॥ सौचौकरिआयेजनबानी॥  
 यहिविधिदूतनकहसमुभाई॥ लीन्होताहिविमानचढ़ाई  
 रामधामलैगेयहिभांती॥ यमकिंकरचलिभेरिवसियाती  
 हरिगी॥ रिवसियाहिवलिभेदूतयमकेदेरियमहिमा  
 नामकी॥ असग्रधमयापीखलसुरापीनिर्दयीहरिबामकी  
 सोअन्तसमैपुकारिसुतकोनामहरिपुरकागयो॥ अ-  
 सरामनामप्रभावसुनिअतिहर्षशौनककेभयो॥  
 दो० नारायणइतिनामकहिअजामीलभोधार॥  
 तातेसन्ततकीजियोरामनामउच्चार॥  
 सुतबनिताधनधामजोसबइहनैरहिजाइ॥  
 नर्कस्वर्गयमलोकमेंनामैहोतसहाइ॥  
 इतिश्रीविश्रामसागरसबमतप्रसारग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ  
 दासरामसनेहीकृतअजामीलप्रसंगवर्णननामअष्टमोऽध्यायः  
 दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगरावगिरामुखशनि॥  
 धर्मदूतसम्बादअबकहौअसकंदबरवानि॥  
 सो० कहसौनकहरपाइ॥ अजामीलजबनामित्या॥  
 दूतधर्मदिगजाइ॥ कहाकहिनसोबरशिये॥  
 चौ० कहासूतयमदूतरिसाई॥ धर्मराजयहंयहुंचेजाई॥

दंड फाँस सब दीन्हों हारी ॥ देखौ रवि सुत दशा हमारी ॥ ॥  
 जाहि अधम पापी हम चीन्ह ॥ तेहि तब दिगन्तावन मन कीन्ह ॥  
 अन्त समै सुत नाम पुकारा ॥ तुरतै हरि गरा ताहि उबार ॥  
 लीन्ह निषहरि बिमान चढ़ाई ॥ राम धाम तहँ गारे निजाई ॥  
 अस अन्न रीति न हमें सो हाई ॥ ताते तब दिगन्तावन साँई ॥  
 दो० दंड फाँस लीजै अपनिक ह्यो सब नशिर नाइ ॥  
 दूत कर्म नहिं करब अव अस कहि चले रिमाइ ॥  
 चौ० रिस सह जानिय मराज बोलाये ॥ करि सनमान निकट वैराये ॥  
 कहा धर्म दूत सुनौ मम बाता ॥ हे हरि नाम सकल सुख दाता ॥  
 संसकार जो अध कर आही ॥ सूक्ष्म रूप कहत मुनि ताही ॥  
 सो नहिं नशेत यादिक कीन्ह ॥ यत्न अने कदा न बिधि दीन्ह ॥  
 सो वह सूक्ष्म अध को मूला ॥ सुकृत नाम नाशत सब शूला ॥  
 ताते ताके अध सब नाशे ॥ जिमित म सह जै भानु प्रकाशे ॥  
 जो जन लेइ राम कर नामा ॥ तेहि ते तुम तेहँ का कासा ॥ ॥  
 तिन के निकट न जाये भाई ॥ देखि दूर तेहि ह्यो बराई ॥ ॥  
 सुनत दूत कह जग के माहीं ॥ नाम सब कर लेत को नाहीं ॥  
 जो उनके दिग जान न याई ॥ तौ मृत्यु लोक कर का जाई ॥  
 कह रवि सुत दूत सुनिलेह ॥ मैं जो बूत तामे मन देह ॥ ॥  
 राम कहत जो नर जग माहीं ॥ सो ब्याहार नेह कहु नाहीं ॥  
 गुरु ते राम नाम जिन पावा ॥ करि विश्वास सो हृदय दसावा ॥  
 जो कोइ को दिन करे उपाई ॥ मारै राशे लोभ दिरवाई ॥ ॥  
 तदपि राम तजि अन्त न धायै ॥ सो हमर लोके नहिं आवै ॥  
 अस हरि भक्त बिलोक्यो जबहीं ॥ कल्याण गाम दूर ते न बहीं ॥  
 साकट कहंतु मधिरि लै आवो ॥ न कीडारि सब कर्म भोगावो ॥  
 बोले दूत जेरि युग पानी ॥ इक संशे हमरे उत पानी ॥ ॥



पाँच तत्व की सब की देही ॥ किमि जानवै राम सने ही ॥ ॥  
 भक्तान के रचिन्ह कहों गाई ॥ जाते हम उन दिग नहिं जाई ॥  
 बहुरि कहों साकट कर भेदा ॥ जिन्हें लाय देई बहुरि खाई ॥ ॥  
 कह रचित नय सुनौरे भाई ॥ भक्त चिन्ह मैं कहों बुझाई ॥ ॥  
 करार विषे तुलसी की माला ॥ मस्तक में दिये तिलक विशाला ॥  
 शङ्ख चक्र भुज मूल सो हाये ॥ भुवन यविच करार भुज प्राये ॥  
 हरि की कथा सुनै हरि भाई ॥ राम नाम सुनिरे मन लाई ॥ ॥  
 जीव बधन हित अरु न धरहीं ॥ देख्यो दीन दया अतिकारी ॥  
 क्षमा श्रील सनोषे गहरी ॥ बाल बद्ध सब के प्रिय रहरी ॥  
 मन क्रम का ह दुःख न देखें ॥ अति उदार सन्तन कह सैं ये ॥  
 अस हरि भक्त हरी सम जान्यो ॥ यामें रज्ज्व क भेदन आयो ॥  
 चौ० जो कदापि भक्तन विषे कहु क दोष दाशाइ ॥  
 तथा देह कन मानिये भक्तन पर सैं नाइ ॥  
 भक्त दोष प्राकृत नहीं तिन्हें न बाध कहो ॥  
 और न को यावन करन सद स मर्थ है सोय ॥  
 चौ० ताको यह दृष्टान्त विचारो ॥ सो सुनिके संदेह निवारो ॥  
 जो गङ्गा में फेन दिखावै ॥ तौ का गङ्गा प्रभाव मिटावै ॥ ॥  
 ब्रह्म द्रव जग मगत जहाहीं ॥ हरत ब्रह्म हत्या किणामाहीं ॥  
 तैसे सन्त गोविन्द पियारे ॥ सब दोषन को भञ्जन हारो ॥ ॥  
 ताते तुम्हें कहों समुझाई ॥ भक्तन दिग जनि जाये भाई ॥  
 दो० भक्तन के लक्षणा कहै कहु संक्षेप बखानि ॥  
 अब साकट बरीन करों सो उलैहु तुम जानि ॥  
 चौ० साकट जेहि हरि भक्ति न भावै ॥ साधन लखि मन को धरि ॥  
 साकट जे परनिध्या करई ॥ परसुख देखि बिना न लजरई ॥  
 साकट सो हिंसा रत रहई ॥ तजै सुपन्य कुपं ये गहई ॥ ॥

साकट जो परद्रव्य चोरै ॥ परप्रयकार सदा सनभावै ॥  
 साकट सो भोगै परदारा ॥ करै प्रकारन क्रोध अपारा ॥ ॥  
 जिव बढ़ले जो जीव मरावै ॥ साकट मास बिराना खावै ॥  
 गुरु पितु मात वचन नहि मानै ॥ साकट औरन का दुख ठानै  
 दूमिनर बिमुख राम ते आहीं ॥ डारहु अनिन के के माहीं ॥  
 दो० कौन करम करिल हत नरन के स्वर्ग में बास ॥

सो हम ते वरीन करौ जानि आपने दास ॥

चौ० कहयम दूत सुनौ जेहि कर्मा ॥ परतन के महं कहौ सो मर्मा  
 हिन्सा करै वचन कहु भारै ॥ सुनै बेद परतीति न राखै ॥ ॥  
 देविश्वास घात जो करई ॥ प्रारणी सोई नर्क महं परई ॥ ॥  
 देव बिप्र संतन दुख दाई ॥ परनिंछा करै अपन बडाई ॥  
 बिना समै भोगै जो नारी ॥ परतन के महं मांस ग्रहारी ॥ ॥  
 राज स्वला चिय गर्भ धृत होई ॥ तासों रसन करै जो कोई ॥ ॥  
 बिप्रेने उति बहुरि नहिं देवै ॥ सो प्रानी नर्क बासा लेवै ॥ ॥  
 शूद्र भील सुपचाधम कोई ॥ भगवति भक्ति परायण होई  
 तिनहं जानिके करै जो तर्का ॥ मन्द बुद्धि सो भोगै नर्का ॥ ॥  
 जेनि जंदेह मौक्त अभिमानी ॥ आत्म बुद्धि लखै प्रजानी ॥  
 हरिकलत्र अघनी करि मानै ॥ प्रतिमा मात्र देव करि जानै ॥  
 सलिल मात्र तीरथ जिन जाना ॥ सतन में कहु भावन आना  
 ते गोखर सम जानी प्रानी ॥ परतन के महं बाचक जानी ॥  
 अर्च बिशु शिला करि मानै ॥ श्रीगुरु देवै नर करि जानै ॥  
 बैशांकी जो जाति विचारै ॥ अन्य देव सम बिशु हिधारै  
 हरि हरि जन चरणोदक होई ॥ तीर्थ बुद्धि करि मानै सोई ॥  
 राम नाम मंत्र न सम धरई ॥ सो नरघोरन के महं परई ॥  
 गोशाला अरु ग्राम जरावै ॥ द्योत चौरी पर त्रिभुवन भावै



देखे बिना दोष दे सीसा ॥ नर्क परे सो विस्वे वीसा ॥ ॥  
 तीरथ देव गऊ अस्थाना ॥ मध्यगली धर्मशाला जाना  
 जाय मेल बिद्या जो करई ॥ जीव बधे सो तम में परई ॥ ॥  
 पूजे नाहिं सन्त घर लाई ॥ और देखि मन को धवदाई ॥  
 रोम गुरु ते बात चोरवैं ॥ हरिय शतजिनर की स्ति गावैं ॥  
 भक्तन को यशक भून कहई ॥ राम भक्ति ते बिमुख हिर हई ॥  
 पर औ गुण जो करें उधार ॥ तेश्वर भुगतें नर्क अपारा ॥  
 नारी जो निज पति छिटकावैं ॥ आन पुरुष का गैर लगावैं  
 पति ते बोलै बचन कठोरा ॥ राम ते बिमुख धर्म मुख मोरा  
 अस त्रिपरी नर्क के माहीं ॥ यामें कहु संशे है नाहीं ॥ ॥  
 पाप कर्म सब ते तम होई ॥ ऊंच नीच चाहें करै कोई ॥ ॥  
 हो ॥ नर्क परत जहि कर्म करि सो में कह्यो बखानि ॥  
 स्वर्ग मिलै सो कहत अब दूत लिह्यो तुम जानि ॥  
 चौ ॥ अद्वा सहित करें जे दाना ॥ पूजे उत्तम विप्र सुजाना ॥ ॥  
 होम यज्ञ तीरथ व्रत करहीं ॥ जप तप गायत्री मन धरहीं ॥  
 पर उपकार महा मन भावैं ॥ द्वारे प्रतिथ बिमुख नहिं जावैं  
 बोलैं बचन सबन सुख दाई ॥ ते नर बसैं स्वर्ग महं जाई ॥  
 काहू के बुरा नहिं बहहीं ॥ रक्षा करत जीव की रहहीं ॥ ॥  
 मान पराधी गिरन न देहीं ॥ सत्य वचन दुद्दी गहि लेहीं ॥  
 बेशो देखि करें परनामा ॥ रजकन जितने लागें जामा ॥  
 तितने शत मन्वन्तर माहीं ॥ वसैं स्वर्ग कहि आंगम जाहीं  
 नारी पति ब्रता जो होई ॥ धर्मवान को मल चित सोई ॥  
 पति कुष्टी दारिद्र्य जानौ ॥ रोगी कृपिण अन्ध यहि चानौ  
 कामी क्रोधी कैं सो होई ॥ नारि दुःश सम मानै सोई ॥ ॥  
 पति के संग सती होइ जावैं ॥ सोतिय सत्य स्वर्ग सुख पावैं

सो० अप्राश्रम धर्म दृढ़ होइ बिहंग कपोता की सरिस॥

बसे स्वर्ग महं सोइ ॥ बहुत काल लगि जानिये॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुपदास रा-  
म सनेही कृत यमदूत सम्बाद बरानो नाम नवमोऽध्यायः ६॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गगाव गिरा सुख दानि॥

कहाँ इति हास समुच्च की अवइति हास बरवानि॥

चौ० मुनत दूत अस पूछे लोन्हा॥ बिहंग कपोत धर्म का कीन्हा

सो उनाथ अवक हो बरवानी॥ जाई गृह अप्राश्रम जोहि जानी

कह धर्म मुनहुं दूत मन लाई॥ बन्दौ कथा सुंदर सुख दाई॥

बधिक सक अति निरदै रहई॥ विपिनि जाइ जीवन कह गहई

निस दिन नीच जीव संहारै॥ पाप दोष नहिं हृदय बिचारै॥

एक दिवस एक बनहिं सिधावा॥ तामें जीवन एकहु पावा॥

उत्तर दिशि ते औंधो आई॥ भयौ ग्रंथ धरन सभे राई॥

गर्ज्यो मेघ प्रलय की नाई॥ भाग्यो मुनत पंथ नहिं पाई॥

वृष्टि होन पुनि अति शैल गी॥ पाथर परत सबै सुधि भागी

जहां तहां जल बहै घनेरा॥ पांचन अंदे बिपाति नै धेरा॥

माघ मास कौपे सब देहा॥ सहै आस करि करम सनेहा॥

सुधा सतावै ज्यों ज्यों तन को॥ होवै पीर अधिक ही मन को

पवन जे रसैं यक्षी जानौ॥ गिरि गिरि परे वृक्ष तर मानौ

दामिन चमक कपोती देखी॥ धाई बधिक तेहि गहैं विशेषी

दो० आपु काल के गाल में सोन बिचार्यो ग्रंथ॥

वाहि पीजरा मांही करि चलत भयो माति मंद॥

चौ० शेष तमु मन कपोती सोई॥ मम पाति आजु प्रकल होई

मंदिर तिन कर जहां रहावा॥ तेहि द्रुम तरे बधिक सोइ आवा

कपोता की सधन निहारी॥ बैठा समिदि सुयास बिचारी॥



शीत सुधावस बोलिन जावै ॥ काठ सरिस तनु भादुख पावै  
 ताही सभै कपोत सो आये ॥ प्यारी बाम धाम नहिं पाये ॥  
 दो० मोते पहिले प्रावती निज बधू गृह माहिं ॥  
 आजु रही कहं प्रारा प्रिय कछु कुशल है नाहिं ॥  
 चौ० अस विचारि मन शोचन लाये मोह प्रवल हिरदे महे जाये  
 मैं सु अकेल रह्यो घर माहीं ॥ बिन बनिता जीवन कछु नाहीं  
 नारि पुरुष तें अंतर परई ॥ धृग तेहिं न रहि जो गृह मन धरई  
 आश्रम की शोभा त्रिय जानौ ॥ बनिता बिना यथा सुख मनीं  
 जिस्तित दृष्टि कपोत हिं फेरी ॥ देखी बधू पींजरे गेरी ॥ ॥  
 विस्मै कीन्ह कपोत जवहीं ॥ बोल्यो बचन बिकल है तबहीं  
 अहे प्रिया अब मैं का करि हों ॥ तुम बिन प्रारा त्यागि के मरि हों  
 यति को बिकल कपोती जानी ॥ बोलि बचन धर्म नै सानी ॥  
 हेयति त्यागौ शोच सनेहा ॥ दुःख मूल जानौ जग गेहा ॥ ॥  
 मिलन वियोग दुःख सुख साधा ॥ ताते शोच करि यजनि नाथा  
 देखा तुम विचारि मन माहीं ॥ जग में कोउ काहू कर नाहीं  
 धाम बाम नन धन सुत भाई ॥ सक दिवस सब ही कुटि जाई  
 जो कछु धर्म धर्म कमावै ॥ अंत सभै सो संग सिधावै ॥ ॥  
 अधरम करै भरे यम चासा ॥ धर्म ते लहे अमर पुर बासा  
 साते धर्म करै मन लाई ॥ याते लोक प्रलोक भलाई ॥  
 बाधक आश्रम तुम्हरे आये ॥ या को पूजि करौ मन भाये  
 यति यति बैरी याका जानौ ॥ बैठो शरण तुम्हारी मानौ ॥ ॥  
 विपति परे जो करै सहाही ॥ होइ ता सुयश त्रिभुवन माहीं  
 घर आवे सतकार न करई ॥ नाथे पुराय याप सिर परई ॥  
 धनि यह गेह कुटुम्ब परिवारा ॥ जाते होवै पर उपकारा ॥  
 ताते याकी सेवा करह ॥ गृस्थ धर्म सो हिरदे धरह ॥ ॥

करो धर्मजनि देर लगावो ॥ फिरि ऐसे ओसर नहिं जावो ॥

दो० सुनत कपोती के वचन की न कपोत बिचार ॥

मैं पक्षी मानुष यह किमि पोषों यहि वार ॥

अस कहि उत स्यो ब्रह्म ते गयो बधिक कपास ॥

सन मुख है अद्भुत सी है त कीन्हें वचन प्रकास ॥

मोको अज्ञा देहु कहु साइ करों यहि वार ॥

धन्य भाग मेरे प्रभु जो तुम आवे द्वार ॥ ॥

चौ० सुनिकिरात बोला प्रसिवानी ॥ अहो कपोत सुनहुं सुख दानी ॥

मोको शीत सतावे भारी ॥ सो काहू बिधि देहु निवार ॥ ॥

तब कपोत चढ़ि चहुं दिशि देखी ॥ बरत बृहद डक पुर में पेर दी ॥

बिहंग चाव करि यहुं चो जाई ॥ जरत समाधि गाहि लायो धाई ॥

भौं भ उजारि भूमि में डारी ॥ तमि अगिनि दई पर जारी ॥ ॥

औरी पात सूरव तरु केरे ॥ चुनि चुनि लाइ अगिनि में हंगेरे ॥

ताप्यो बधिक शीत भयो नाश ॥ चेतनु है पुनि वचन प्रकाश ॥

दो० पर उपकारी बिहंग तैं शीत निवारै मार ॥

अब कहु भोजन दीजिये सुधा सतावे धार ॥

चौ० सुनिकपोत मन की न बिचार ॥ धूम है पशु पक्षी अवतार ॥

चरि चुनिके निजु पेद हि भर ही ॥ पर उपकार कौन बिधिक रही ॥

धनि वै मनुष्य बहुत मुख डारें ॥ धूम हम अपन ओढ़ पसारें ॥

भयो कपोत खेद उर भारी ॥ विन वि त गृह को बस ब उजारी ॥

भवन कप कूम कुटुम्ब बिलासा ॥ होइ पाप जन जाइ निरासा ॥

रुदन कपोत कियो बहु तेरो ॥ केहि बिधि हों दुःख या केरो ॥

शाचत ही मन की न बिचार ॥ त्रै बिधिते चहि पर उपकार ॥

धर्म संधें तो करो उपाई ॥ हरि बधिक ते बो ल्यो जाई ॥ ॥

धीरज धरो अति मन माहीं ॥ देत अहार देर प्रब नाहीं ॥



दो० करि परिकर्माग्निनिकों कृदि पन्योता बीच॥  
यह सब को तु कंदे रिब के बांध क कियो शिर नीच॥

सो० प्ररन पुराय प्रताप उदै भयो बैराग तेहि॥  
लाग्या करन कलाय मोसम मन्दन बुद्धि को उ॥

चौ० धन्य धन्य पक्षी तन तेरो॥ धृग जन्म मम मानुष केरो॥  
नरतन लहि का कीन्ह कसाई॥ पाय करत सब बयस गंवाई  
कबहं कछु सुकृत नहिं कीन्हें॥ नहिं काह करदुर खहरि लीन्हें  
धृग धृग मोकों बारहिं बारा॥ धनि विहङ्ग जेहि धर्म बिचारा  
मैं जो किये प्रतिपात कभारी॥ अवतय करि सब देहों जारी  
अस कहि डाख्यो जारहि फारी॥ तुरत बिहङ्गिनि दीन निकारी  
दो० छटिक पोती फन्द सों ऐसे करत विचार॥

पाति बिन जीवन नारि को जग में ब्रथानिहार॥

चौ० यों कहि गिरी अग्नि महं साई॥ भई सती सौं चीयह जोई  
मध्य अग्नि महं दीख विमाना॥ पाति ताबीच बँटि जिमि भाना  
बिहंगिनि को तनु पलटि जोग यऊ॥ ताहं केर दिव्य बयु भय ऊ  
पातल रिब भेट्यो गेर लग गई॥ गयो दुःख सन्ताप न साई॥ ॥  
रन्ध्र कदुर ख कीन्हें धर्म हेता॥ सुख जो भयोग ने को तेता॥  
ताते धर्म की जिये भाई॥ या में जनि रहिये कदराई॥ ॥  
नारि पुरुष दोउ चंदे विमाना॥ गरा लै डंड भगन मन जाना  
जय जय देव किहि निहर पाई॥ सत्य लोक तहें राखे निजाई  
दो० प्रवरा प्रवरी की कथा भई कही में सोय॥

बांध कहल बर नों बहुरि सुनि राखो हिय जोय॥

चौ० बांध क विपिनित पकीन्हो भारी॥ भगन ध्यान तन सुरति बिसारी  
इक दिन अग्नि लगी चहुं पासा॥ बांध क देह जरि बरि भइ नासा  
अथ जो रहे जरे तन सङ्गा॥ बांध क सो राख्यो हरि के रङ्गा॥

दिव्यविमानपारषदलायो॥ तापरचढ़िकरस्वर्गसिधायी  
 कपटीकुटिलकीरप्रघधामा॥ सज्जनसङ्गलहोविश्रामा  
 गृस्तधर्मजसतसयहगावा॥ सुनिदूतनप्रतिसेसुखयावा  
 कहयमचराचारसिरनाई॥ प्रबहममृत्युलोककहंजाई  
 कौनेठोरजाइहमरहिये॥ कहानजायकृपाकरिकहिये॥  
 बोलेयमजोपूछ्योआई॥ तुमहिदेहुप्रस्थानबताई॥ ॥  
 जेनरहरिपूजनमनधरहीं॥ लैचरगोदकभोजनकरहीं॥  
 कथासुनेंहरिकीरतिगोवैं॥ ठाकुरद्वारेमेंनितजावैं॥ ॥  
 कुदुम्बसहितगुरुसाधुनसेवैं॥ सुधितदेरिवतेहिभोजनदेवैं  
 दो० हरिगुरुदासनतेरहेसांचेनिहछलजौन॥  
 तिनकेढिगजनिजायहदिलौ॥ त्यागियेभोजन॥

चौ० यिताप्रवज्ञापुत्रनकरहीं॥ द्वारेप्रतिथिविसुखनहिंफिरहीं  
 यज्ञहोमकरिविप्रजिमावैं॥ सन्तनकीसंगतिचलिजावैं॥  
 वेदबचनरारैवैविश्वासा॥ इतनेठोरतुम्हारनबासा॥ ॥  
 असप्रसधामत्यागितुमदेह॥ बसोजहांसोऊसुनिलेह  
 जहानकथारामकीहोई॥ हरिकीभक्तिनजानैकोई॥ ॥  
 पुत्रनमानैयितुकीसीरवा॥ जेहिघरलहैनभिभुक्तभीरवा  
 कराटकदक्षहोइजेहिधामा॥ तहांजाइतुमकरोसुकामा  
 जिवहिन्साजाकेघरहोई॥ मदिरामांसमीनभरवजोई॥  
 हरितजिपूजैभूतयिशाचा॥ बेप्रयारतकहसत्यनबाचा॥  
 प्रसनरजहंतहंबसियेजाई॥ मरेनकेमहंडाख्योलाई॥ ॥  
 सनेभवनदीपनहिंवरई॥ गरिबाकाआयनृत्यजहंकरई॥  
 गृहजठानेजारालपटाना॥ परबपरेनहिंदेवेंदाना॥ ॥  
 सुतापराईघरमाआवे॥ रहेनिरादरदुरवजहंयावैं॥ ॥  
 परबपरेभोगेंजोनारी॥ बसहुजाइप्रसभवनविचारी



बासी अन्न जो दिन प्रति खावैं ॥ जेहि गृह सन्त न आदर पावैं  
कलह होइ जहं सांभ सकारे ॥ साधु विप्र जे कों दुखारे ॥  
बिना दीपनि शि भोजन खाहीं ॥ बसहु दूत तिन के घर माहीं  
दो० मात पिता कहं देहिं दुख कों कहैं जो याम ॥

तहां बसौ तुम जाइ के जे न भजहिं सिय राम ॥

चौ० आपु भक्त घर साकट नारी ॥ सुत कलत्र सब मांस अहारी  
तिन का छुवा जो भोजन खाई ॥ भक्ति धर्म सब ही पटि जाई  
अवसि बसौ तिन के गृह सोधी ॥ जे सत गुरु ते मये विरोधी ॥  
छाड़ के शर हैं जो नारी ॥ बहू सासु से लड़ैं प्रचारी ॥  
मर घट चारि पन्थ जो होई ॥ अजया पुत्र हैं जहं सोई ॥  
ये अस्थान कहें में बरनी ॥ औरौ लेहु जानि लखि करनी ॥  
धर्म राज के बचन सो हाये ॥ सुनिय म दूतन के मन भाये ॥  
गी० छं० भयो सुनत यम दूत पुर विप्रत जो बरगान कियो ॥  
उठि नाइ शिर मन मुदित है सब कांस मुगहर करि लियो ॥  
यह दूत यत्न सखाद बरनौ सुनैं जे अरु गाइ हैं ॥ तेहि भूत अ-  
पर पिशाच यम के दूत नाहिं सताइ हैं ॥

दो० लक्षणा धर्मा धर्म के ऊंच नीच जे आहिं ॥

जनरघुनाथ विचारि कछु लिखे ग्रन्थ के माहिं ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ द-  
राम सेने ही कृत गृह धर्म यम दूत कथा बरी नो नाम दशमोऽध्याय १०

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गराय गिरा मुख दानि ॥

नाम के त भारत्य की कहौं इति हास बरवानि ॥

धर्म राज निज गगान ते दोले निकट बोलाइ ॥

गंग यमुन के बीच इक द्विज तेहि लावहु जाइ ॥

चौ० जामू गिरि दिग बस्ती आही ॥ तामें विप्र रहत है बाही ॥

नामशालमलिताको जानौ॥ गोत्रग्रगस्त्यकेर यहिं चानौ  
 पूरणाग्रायुभई सब ताकी॥ लाबहु बेगिनहीं प्रबवाकी  
 मुनियमदूत सकल हरषाने॥ निज निज वाहन सब नयलाने  
 कोइ कूकर भूकर परकोई॥ करमें गुर्ज भयानक सोई॥  
 कोई बलै यहि बचि बौरा॥ बड़े दसन लिहै धनु तीरा॥  
 कोइ खर पर आरु दुपिछाना॥ कारी देहं सुमेर समाना॥  
 कोइ सुरदा पर किहै सवारी॥ ठाढ़े केश गदा कर धारी॥  
 कोइ सिंह चित्ता चढ़ि धाये॥ लोहित लोचन भौंह चढ़ाये  
 कोइ बसहा पर आसन कीन्है॥ फाँसी अरु मुहूर कर लीन्है  
 यहि भाँति नयमदूत सिधायै॥ बसत बिप्र जहं तेहि पुर आये  
 सो० सोइ गोत्र सोइ नाम दूसर द्विजता में रहता॥  
 यम घुसि गेतेहि धाम डारि फाँस आसन लगे॥  
 दो० उमें घरी के बीच महँ मारि लिहिनि द्विज सोई॥  
 मुश्क बाँधिलै चलत भेरहे कुदुस्वी रोई॥  
 तात मात सुत भ्रात तन ग्राम धाम धन जोई॥  
 सब जहं के तहं ई रहें संग चल्यो नहिं कोई॥

चौ० भूसुर कह आगे करि लीन्हा॥ यम पुर आर पयाना कीन्हा  
 मृत्यु लोक ते यम पुर जाना॥ सहस छियासी योजन मानो  
 आठ ठौर तोहि मारग माहीं॥ अति शोक छे होत सुख नाहीं  
 प्रथमै दुइ सहस मग जोई॥ तामें दुख सुख कहु नहिं होई  
 एक सहस योजन तेहिं आगे॥ सिंह बहुत लखि प्रति भेलगे  
 जे बैँठे साधन के माहीं॥ तिनैं दुःख तहं व्यापै नाहीं॥  
 योजन पाँच सहस अस होई॥ काँटे पर लोह सम सोई॥  
 पापन में सो चुभि चुभि जावैं॥ तामें प्रारणि बहु दुख पावैं  
 गजरथ बाज पाल की दीन्हा॥ ते नर तोहि चढ़ि जाते चीन्हा॥



उभैसहसयोजनयहि भौंती॥ वारूतपतरहत प्रतिताती॥  
 सोपरदानदिहिनिजिनलोणा॥ तिनकातहौनव्यापैसोगा॥  
 योजनद्वादशसहसप्रगारा॥ परतविषमखौंडेकीधारा॥  
 रथकरदानकामतहंप्रावै॥ नाहितनरप्रतिशैदुरखपावै॥  
 आगेयोजनप्राढहजारा॥ मिलततहौजलगहिरप्रपारा॥  
 महीदानदीन्हेसुखपावै॥ उतरतपावनमेंछुड़जावै॥ ॥  
 योजनतीसप्रगारुजाई॥ ग्रंथकारतहंप्रतिदुरवदाई॥  
 दीपदानतहेंकामेंप्रावै॥ ठाकुरद्वारेजौनबरावै॥ ॥  
 कीबाह्यराघरकीसगमाहीं॥ साधभवनकीतुलसीबाहीं॥  
 तीरयमाहिंकथाकेनेरे॥ बारिदीपतेजाहिंउजेरे॥ ॥  
 सो० आगेयोजनप्राढमहाभयानकमगमिलत॥  
 चढ़ाउतरकेघाटहोततहौप्राणीबिकल॥  
 दो० तेहिंकेआगेमिलतहैयोजनसहसप्रगारा॥  
 तपतभानुभसशीसपरतहंप्रतितुदनप्रपारा॥  
 चौ० तेहिमारगमेंसोसुखपावै॥ कुवाँबावलीतालखोदावै॥  
 कीयोसरादीनबैदाई॥ कीठाकुरद्वारेपहुंचाई॥ ॥  
 प्ररुमारगमेंबहुलगावै॥ सेसादानकामतहंप्रावै॥  
 सहसद्वियासीयोजनयेही॥ पृथक्देख्योद्विजतेही॥  
 आगेजाययमपुरीतीरा॥ देखीतहेंएकनदीगैभीरा॥  
 नामतासुबैतरनीप्राही॥ मज्जारीधरभरातेहिंमाही॥  
 गोजरबीछिसर्पप्ररुकीरा॥ उतरतपापीयावहिंधीरा॥  
 सोयोजनकीचाकलसोई॥ देखतप्राणाबिकलतहंहोई॥  
 जोअथनेस्वामीकोमारे॥ कन्याकामिनिद्विजसंहारे॥  
 जीवबंधप्ररुसबैसतावै॥ पुरजंगलमहंप्राणिलगावै॥  
 तिन्हेप्यासतहेंलागेभाई॥ रक्तपीवसोइपावैजाई॥ ॥

दे० अग्नि वज्रहारी मद्यिया ज्वारी चोर कसाय ॥  
 बट पारी जो यात की दुख पावत अघिकाय ॥  
 कोउ उद्धत बडत कोऊ लहरि संग बहि जात ॥  
 काहू बीछी सर्प बहु क्रीड़ा नो चेखात ॥ ॥

सो० जो कोउ पापी होय ताहि रुधिर की लखि परै ॥  
 पुराय बान कह सोइ देरि वपै धृत छीर की ॥

छ० होम यज्ञ ब्रत की न दीन जिन अन्न के दान हिं ॥ पूजे  
 द्विज च पुरार किये तीरथ प्रस्नान हिं ॥ पुरट दान पट दान  
 तुला गज बाजि जो दीन्हें ॥ अज्य मिठाई क्षीर दही पोथी  
 दत्त कीन्हें ॥ सन्त चरण में प्रीति जिन गुरु दिक्षा लिय जा-  
 निसुखा ते बैकुण्ठि शैल चढ़ि उतरि जात नहिं होत दुख ॥  
 चौ० जिन गोदान दीन्ह संसारा ॥ पकरि पूछ सो हो बैंधारा ॥  
 यहि विधि न दी उतरि द्विज पाई ॥ पुरह्य मपुरी देख्यो जाई  
 जो जन सहस ता सुबिस्तारा ॥ तामें द्वारे चारि निहारा ॥ ॥  
 पूरव उत्तर पश्चिम जानो ॥ चौथा दक्षिण द्वार पिछानो ॥  
 धर्मवान जो प्रारणी भयऊ ॥ सो तौ तीनि द्वार हूँ गयऊ ॥  
 दक्षिण द्वारे भे सो जाई ॥ जो नर पाप कीन्ह अघिकाई ॥  
 बिप्र साधु सुरभिन दुख दीन्हा ॥ अरु विश्वास पात जिन कीन्हा  
 दुष्ट बडे तन मन दुख दाई ॥ सब जीवन की तकैं बुराई ॥  
 चोरी करैं चोपया मोरैं ॥ पक्षी पकरि फन्द में डारैं ॥ ॥  
 कन्या बेंचि द्रव्य जे लेहीं ॥ छल करि कै काहू विष देहीं ॥  
 हरिते विमुख सदा जे रहई ॥ काम क्रोध लज्जा बस बहई  
 वेद पुराण शरु नहिं मानैं ॥ गुरु ते कपट सयान पहानैं ॥  
 दुखी दीन कहं प्रापु सतावैं ॥ भूँटी सारि बभरन जे जावैं ॥  
 साधू ब्राह्मण सेइन नाहीं ॥ किहिनि दान पर्व के माहीं ॥



असप्राणी दक्षिणादिशि जावैं ॥ यम किं कर तेहि बहुत सतावैं  
दक्षिणा द्वार गये द्विज सोई ॥ जाय साल मलि देर यो जोई ॥

दे० ॥ तहां सिंह बहु स्थान बक सप्ये गीध ॥ प्ररुभाल ॥

अन्धकार नहिं जान कोउ राति दिवस काहल ॥

नर्क हजार न हैं जहां परे पतित रह रोई ॥

त्यों त्यों मारें दूत शिर रक्षक तहां न कोई ॥

तिन में बड़े जे सुख हैं नर्क ॥ प्रगर ह जानि ॥

मिन्न कर नाम ॥ प्रब सब के कहैं बखानि ॥

पड़ु जवाटिका कुं ॥ प्रथमैं इक कुम्भी पाव जानि ॥ अति

शे दुख दाई ताहि मानि ॥ जो बिप्र गऊ पशु पक्षि मारि ॥ ब्रह्म

चारी को तप दीहैं टारि ॥ ॥ प्ररुदान देत हट के जो नीच ॥ सो प

लन के कुम्भी के बीच ॥ है कुम्भ सरिस मुख छोट जासु ॥

षोडश योजन बिस्तार तासु ॥ तामें मलमज्जा अति मिहा-

रि ॥ दुख पावत पापी नर नारि ॥

काल हंस कुं ॥ दूसर नर्क ॥ प्रबीचि नाम ॥ तामें पलन नहीं

है ॥ अराम ॥ गुरु ॥ प्ररु कन्या बधैं कोई ॥ भक्ष्य ॥ प्रभक्ष्य जो

खात होई ॥ जो पाहुन ॥ प्रायें नि केत तेहि न कोरें सन मान हैत ॥

नर्क ॥ प्रबीची परत सोई ॥ नर नारी चाहे सो होई ॥

हरि गीतिका कुं ॥ अब नर्क तीसर नाम रौरव है भयानक

सोम हों ॥ तेहि देरि धडर पत जीव वारु ॥ सप सरह ती है त-

हों ॥ पग जरत प्राणी करत रोदन दौरि चहुं दिशि जाव-

हों ॥ अति होत व्याकुल एक छरा विश्राम नाहि न पावहीं ॥

तोटक कुं ॥ जिन राज विषे नहिं न्याव कियो ॥ बिल ॥ औ गु-

न पजि हिंदु दियो ॥ जिन ब्राह्मण वेद पढ़े जु भले ॥ तेहि

मारण प्राप्ति सो नाहि चले ॥ केहैं ॥ आरत ॥ आइ के प्रभ करी ॥

ग्रहदेवताइ सुविहरी। धरि पाखराइ रूप फिरै जगमें।  
 हरीविमुख सो बूडि रहे प्रघमें॥ जप संखम पूजन नाहिं करै।  
 तपती गय यजन ध्यान धरै॥ ब्रत दान कभूजे ना करते। त-  
 न रोख माहिं परै नरसे॥

चौ० जीतनर्क गुरु जिमि है नामा॥ गुरु सप्रम औदत है तामा  
 जो काहू कीमों जी भारै॥ ग्रह काहू कायरा बिचारै॥ ॥

चर गुरालौ राजो लोह चारों वै॥ गुरु जिन नर्क सोई दुख पावै  
 पंचदोष नर्क तहें प्रहई॥ तामें प्रारणी प्रति दुख लहई॥

कूप ससान बननि तेहि केरी॥ पीचर क कृमिता में हेरी॥

ता सुनि कट बेंटे बहु कागा॥ बूडि २ चांच भयानक नागा॥

परै जीव जव हीं उतर हीं॥ मारें चांच रसातल जा हीं॥ ॥

दो० राम भक्ति जिन नहिं करी गुरु दिखानहिं लीन॥

राम नाम सुनि स्थौ न हीं साधु सङ्ग नहिं कीन॥

सो० मानुष देही पादू क ह्यो सुन्यो नहिं राम यथा॥

दासी संग किराडू। कूपनक यह सोइ परत॥

चौ० छटवां कीटनर्क है जानौ॥ तामें कीड़ा भरे दरखानौ॥ ॥

पापिन के तन चोटे सोई॥ तामें नाश अधिक ही होई॥ ॥

मारि मारि मछरी जिन खाई॥ है कृमि रहैं निरै मंह जाई॥

भनीयस्तु जो छिपि कै खावैं॥ ग्रह काहू को अन्न चोरों वै

दुरादीन लखि दयान कर हीं॥ कीटनर्क मंह सो नर यहीं

ससबाँ प्रसी पत्र वध नामा॥ ताके पत्र दुधारे स्यामा॥

पापिन को तामें घसिलावैं॥ कटि २ जाय बहुरि जुरि प्रावैं

चाहि २ तहें जीव पुकारैं॥ त्यों त्यों दूत परिघ सिर मारैं॥

जिन को उअपने मित्राहि मारा॥ कादिन हरि अर वृक्ष गवाँरा

कामी कुटिल प्रकार लकोधी॥ परनिन्दक गुरु संत विरोधी॥



सखावरतभङ्ग जे करहीं॥ असीपत्रमहं सो दुख भरहीं॥

दो० अदवां दारुणानर्क हैं जेहि देखत भय होय॥

जे कामी हैं नारि नरतहं पावैं दुख सोय॥

बहुतरखम्भनररूपतहं बहु हैं नारि प्रकार॥

बरतरहतकरससदा दोउ दिशकाष्टप्रवार॥

चौ० जो नर परवियगरे लगवैं॥ पकरिखम्भमहं ताहि भेटावैं

कहैं कि चीन्हिले हु सोइ नारी॥ जेहि के सङ्ग कियो सुख भारी

जे त्रिय प्राण पुरुष सङ्ग करहीं॥ तहो जायते उदुख भरहीं

परवी परे वरत वा होई॥ तेहि दिन मै थुन करे जो कोई॥

सो उखम्भमहं जात भेटावा॥ यम के दूत अधिक तेहिं तावा

कहैं कि तुम मानुष तन पायौ॥ करि मै थुन ताहि गवायौ॥

तुम तेखर थकर भल जानी॥ वरय सन्तोषै प्राणी॥

हरि की भक्ति कियो सो नाहीं॥ सही कष्ट प्रब दारुण माहीं

नवम नर्क निरस्वास कहावैं॥ तामें स्वासन घटी जावैं॥

सो० ब्राह्मण विधवानारि॥ सुरु गुरु ग्रंथ चोखवहीं॥

कहैं नवचन विचारि॥ परे सोइ निरस्वास महैं॥

चौ० दशवां कुलशकुल है भारी॥ तामें तौ प्रतिदुख अधिकारी

अग्नि समान जरत दुम रहहीं॥ दशयोजन के चाकल ग्रहहीं

योजन पांच धेर बिस्तारा॥ एक एक कान्यारान्यारा॥

बंधे जंजीर नमें तहं पापी॥ हाय हाय धोलैं सन्तापी॥

ब्राह्मण क्षत्री शूद्र रुबेसा॥ भारी पाप कीन जिन जैसा॥

मारे जीव मास लै खावैं॥ ते नर यही नर्क दुख पावैं॥

गेरहों नर्क सोई मुख नामा॥ सूची छेद परे जिब तासा॥

जिन सत गुरु की निंछा कीन्हा॥ संतन दोष लगावत हीना

तीरथ वहि मुख धेद पुराना॥ सबहिन की निंछा जिन राना

नारिबधै प्ररु बिप्रसतावै॥ सोसूची मुख नर्कहि जावै॥  
 बरहों धारनकी प्रसनाऊँ॥ सोविकराल भयानक ठाऊँ  
 तामें सिंह स्यार प्रहि शूकर॥ भाल भेड़िया कागर रुकूकर  
 जिनरसना हरि नाम नलीन्हा॥ कटुक बाद साधन ते कीन्हा  
 कबहुँ न कोमल वचन उचौर॥ तेहि मुख नाग लगावत कारे  
 सन्त दरश जिन कीन्हों नही॥ निरखि धर्यो नहिं पग भूमाही  
 पर त्रिय देखि कुट्टिहि भौं कै॥ तिनकी काग निकारत आर्ये  
 जो कोउ पुर में प्रागिल गावै॥ तिनका मांस भेड़िया खावै॥  
 जो कोउ बन पशु पक्षी मारे॥ ताका पेट सिंह धरि फारे॥  
 जो कोउ काहुडू मारे भाई॥ शूकर ताके हाथ चबाई॥  
 जिन हरि चरित सुनै नहिं जाना॥ सोस औटि डारै तेहि काना  
 जिन नर प्रमिष प्रहारै कीन्हा॥ गोला लाल पियावै लीन्हा  
 पीवत गोला करै पुकारा॥ त्रास देइ यम दूत अपारा॥  
 तब तो भयो परावा मांस॥ अब कत रोवत बड़े बड़े आंसू  
 काँट चुभत प्रपने दुख मान्यो॥ पर को संकट देत न जान्यो  
 दो० विन दावानि तरहत जे फूल पात चुनिले त॥  
 तिनै मारि भक्षरा किह्यो केवल रसना हेत॥  
 चौ० कर्म किह्यो जस भोगो सोई॥ नर्क अधार माहि प्रस होई  
 ते रहों शूली नर्क कहावै॥ शूली सम दुख तामें पावै॥  
 जो नर पाप करै अधिकाई॥ करि शिकार मृग मारे जाई॥  
 नाहक नर सरी धरि दीन्हो॥ जिन बन माहि ठगाही कीन्हो  
 काहु को शस्त्र न ते मारे॥ तेहि यम शूली नर्क में डारै॥  
 नर्क चौदहों हैं दुख खानी॥ अग्नि कुंड तेहि नाम बखानि  
 तामें अग्नि बरै प्रति भारी॥ जाहि देखि डर पे नर नारी॥  
 जैरे जीव बहु ताके माहीं॥ हाय हाय बोलैं धिधि पाहीं॥



कोउ कहैं में बहुत पियासा ॥ जल पियाइ फिरि दीजै वासा ॥  
 दूत कहैं मुनुरे मति हीना ॥ तूतौ दया धर्म नहिं कीन्हा ॥  
 प्यासे को जल नहिं पियायौ ॥ भूखे को नहिं कबहुं खवायौ ॥  
 साधु ब्राह्मण गुरु गुरु भाई ॥ पूज्यौ नहीं कबहुं घरलाई ॥  
 ग्रहन परे नहिं दीन्हें आदना ॥ पेट भर्यो नित बैल समाना ॥  
 धग धगरे मरुद नर लोई ॥ अपना किया भुगत अब सोई ॥  
 पानी मांगत कौन जाना ॥ प्रथमै अग्नि कुंड नहिं जाना ॥  
 दो० नर्क पन्द्रहों हैं जहाँ तेल जंत्रताना ॥

कोल्ह की सम सो बना डरत देखि नर वाम ॥

चौ० जो चोराइ परावे तहि कोटै ॥ निस दिन मात पिता कहंडोटे ॥  
 भूमि थराई लेइ छिनाई ॥ पर पत्नी बर बसलै जाई ॥  
 तुला बढाय घाटि जो देखै ॥ तेल यंत्र सो बासा लेवै ॥ ॥  
 सोरहों नर्क नाम दुख दाई ॥ तामें तो है दुख अधिक दाई ॥  
 जो मद पावै आभिषखावै ॥ झूठे काहू दोष लगावै ॥ ॥  
 पर अंगुरा जो करै उधारा ॥ दुखी दीन कहं नाहू क मारा ॥  
 भक्ति के दावै निगुरा करई ॥ कहे कहाये जो परहरई ॥ ॥  
 दुखद नर्क में सो दुख पावै ॥ जो नर कीन्ही कृत विसरावै ॥  
 सो० नर्क सब हों जानि ॥ अन्धकार जेहि नाम है ॥

महाभयानक मानि ॥ तामें कछु सुभै नहीं ॥

चौ० जेरा कस प्रति निरंदै कोही ॥ तन अभिमानी हरि जन दोही ॥  
 गे बिगाने करद चलावै ॥ अन्धकार दुख सोई पावै ॥  
 नर्क अठरहों हैं दुख धामा ॥ हवै विलोचन ताकर नामा ॥  
 तामें नर अन्धा है जावै ॥ भर्मत फिरै कष्ट बहु पावै ॥  
 जो मग चलत जीवनहिं परै ॥ क्रोध दृष्टि है साधुहि देखै ॥  
 अरु पर नारि कुट्टि निहारै ॥ कराटक तोरि बाट में डारै ॥

विधवानारिनयनजोऽग्रंजै॥ खाइ पान पर यतिके काजै॥  
 जोठा कुरहारे नहिं जावै॥ साधु गुरु लखि श्रीशानवावै॥  
 ग्रन्थे को देवै बहं काई॥ परै विलोचन में सोइ आई॥

दो० नर्क अठारों साल मल देखि डर्यो मन माहिं॥  
 तन को पत सब कहु वचन मुख ते आवत नाहिं॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रन्थ उजागर श्रीरघुनाथ  
 दास राम सनेही रक्त यम पुरी बरी नो नाम सकादशाऽध्यायः ११॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गरा पगिरा सुख दानि॥  
 बरगों कर्म विपाक कहु सोइ इति हास बखानि॥

चौ० फिरि दूसन आगे करि लीन्हो॥ यम की सभा ठाढ़ तहं कीन्हो॥  
 विप्र बिलोके उधर्म क रूपा॥ मार कैं ड्यौ सम तेज प्रनूया॥  
 रतन जटित शिर मुकुट बिराजै॥ श्रुति कुराड लगल माल सुकाजै॥  
 चारि वेद के पढ़ने वारे॥ और मिमोसा जानन हारे॥ ॥

बहुत शास्त्र रचि आपु बनाये॥ धर्म हेत जग माहिं चलाये॥  
 बैठे सिंहासन हरषाहीं॥ शोभा कान्ति अधिक तिन माहीं॥  
 और ऋषीश्वर बहु सति बादी॥ धर्म राज दिगति न को गादी॥  
 जीवहिं जब यम गरा लै जावैं॥ ठाढ़ करै रवि सुत के ठावैं॥  
 कहैं महि शेष दहौ लै जावो॥ चित्र गोपि त्रैयाहि दिखावो॥

दो० गुप्त प्रकट पुनि पाप जो करत जीव जग माहिं॥  
 सो सब लिखि रधरत हैं तन को चूकत नाहिं॥

चौ० पाप पुराय ते सब कहि देहीं॥ रवि सुत निज कानन सुनि लेहीं॥  
 धर्म सहित सब न्याउ चुकावैं॥ जो जस करै सो तस फल पावैं॥  
 पापिन को लैन नर्क में डारैं॥ यम किं कर शिर मुद्गर मारैं॥  
 धर्मवान ते स्वर्ग सिधावैं॥ आगे बाजन बाजत जावैं॥ ॥  
 यहैं चैं स्वर्ग निकट जब जाई॥ आगे मिलैं प्रसरा आई॥



चर्य करत भीतर लै जावैं ॥ सिंहासन ऊपर बैठावैं ॥ ॥  
 कहैं कि हम हैं तुम्हरी दासी ॥ रहिये एक कने बचवासी ॥  
 देव देव है करै निवासा ॥ हे मालै सुख भोग बिलासा ॥  
 अब सो पुराय कहौ समुझाई ॥ जासे बसत स्वर्ग महं जाई ॥  
 जिन नरदान द्विजन कहै दीन्हा ॥ काहू कर अपमान न कीन्हा ॥  
 सब जीवन की दया विचारैं ॥ काहु दुख देवें नहिं सारैं ॥  
 वेद पुराण सुनै सुख पावैं ॥ कथा की रतन में मन लावैं ॥  
 योग तप स्या तीरथ करहीं ॥ संयम सहित वरत अनुसरहीं ॥  
 मांडे बस्तर धोइ हाथी ॥ गौवें दई बाछरा साथी ॥ ॥  
 कन्द मूल फल अन्न जो दीन्हा ॥ विप्र साधु कर आश कीन्हा ॥  
 मग में वृक्ष विपुल लगवाये ॥ कूप बावली ताल खनाये ॥  
 कार्तिक माह वैशाख नहाये ॥ नाग पग सो पर पहिराये ॥  
 गौरी धर्म विविध विधि कीन्हा ॥ स्वर्ग साहिंतिन वासालीन्हा ॥  
 दो० जो कोइ करे सो आपु को पर को करे न कोइ ॥  
 अपना कीन्हा पाइ हैं ऊंच नीच किन होइ ॥  
 चौ० जिन को उगुरु ते दिखालीन्हा ॥ मन लगाइ हरि सुमिरन कीन्हा ॥  
 साधन की सेवानित करहीं ॥ मुख ते बचन सोठ उच्चारहीं ॥  
 दान करे सो हरि का अरंघ ॥ बोलै सत्य भूत नहिं जल धे ॥  
 करे भाँज सत सङ्गति जावैं ॥ अस नर ते वै कुराट सिधावैं ॥  
 तिन को धर्म तीर नहिं न्याऊ ॥ जे हरि भक्ति करे सति भाऊ ॥  
 या विधि धर्म राज के पासा ॥ जाइ नर को हरि का दासा ॥  
 पापिन को यम यहि विधि करहीं ॥ प्रथमैन के माहिं लै डरहीं ॥  
 बहुत काल लखि नरक भोगाई ॥ फिरि जग में जनमावत भाई ॥  
 पूरव जिन जस कीन्हें कर्म ॥ तैसा आइ लै जग जन्मा ॥  
 जो नर दाह राहत्या कीन्हा ॥ जन्म निपुची तेहि जग चीन्हा ॥

गऊपापते होइ मलेझा ॥ जो नहिं करै जीव की रक्षा ॥ ॥  
 जो काहू का सोन चोरावै ॥ जन्म पाय कुष्टी है जावै ॥ ॥  
 महिरा पीन्हें मेडुक होई ॥ मारे पथरोग युत सोई ॥ ॥  
 द्विज पुस्तक यदि नाहिं बिचारा ॥ बहुत रहे विषया की धारा ॥  
 हरि की भक्ति करे सो नाहीं ॥ तेई होत सर्प जग माहीं ॥ ॥  
 जिन गनिका की संगति रानी ॥ रास भंडात प्राइ सोइ प्रारति ॥  
 जो द्विज मास प्रहारी होई ॥ ताको दान देइ जो कोई ॥ ॥  
 दोनो गौदर कातनु पायें ॥ पर की निंद्या मुख करि गावैं ॥ ॥  
 जिन फल दान दीन अधिकारा ॥ यावैं वाघ सिंह प्रवतारा ॥  
 जो कोइ कन्या होती मारे ॥ सो गिर गिर को देही धारै ॥ ॥  
 भूरा बाद बिबाद बढ़ावै ॥ सो कच्छप की देही पावै ॥ ॥  
 देव योग्य दान नहिं कर ही ॥ सो सब गुला काव पुधर ही ॥  
 दान देत जो धर्ज कोई ॥ सो लौ लटुवा घोड़ा होई ॥ ॥  
 काजर चाइ कोई मरि जाई ॥ हैं कै बृषभ मारे सो प्राई ॥  
 जो साधुन की निंद्या कीन्हा ॥ शूकर केर जन्म तिन लीन्हा ॥  
 जो कोइ धरी धरो हरि नाटै ॥ प्ररुपक्षिन के पर जो काटै ॥  
 साधहिं दोष लगावैं जोई ॥ सोइ बिष्टा कर कीरा होई ॥  
 जो काहू कालोह चोरवैं ॥ होइ न हारु बहु दुख पावैं ॥  
 जो काहू को अन्न चोरवैं ॥ होवैं बहिरा सुनान जावैं ॥  
 दो० ब्राह्मण प्ररु हरि भक्त कहैं लातन मारे जोइ ॥  
 जन्म पाइ जग के बिषे सोई पंगुल होइ ॥ ॥  
 चौ० आपु होत गुरु गुरुन कीन्हा ॥ सोइ बिलार होत हम चीन्हा ॥  
 जो नित को धोहरावे नाहीं ॥ सोई होत न कुल जग माहीं ॥  
 देविश्वास करै दृष्टाई ॥ सो हो करंग बस बन जाई ॥ ॥  
 दान देइ पाछे पछितावै ॥ सो नर जन्म नैष कर पावै ॥



जिनकर पूरक पास चोराई॥ सो शुचा होवै सति भाई॥  
 वैलै बाधिया करै करावै॥ सोइ निपुंस लीवा है जावै॥ ॥  
 जो अपन होती करै लड़ाई॥ सो बन की मारवी है जाई॥ ॥  
 गुरु ब्राह्मण का अंश चोरावै॥ सो मरु देश भुवंग तनु पावै॥  
 नर तन पाइ करै पर पीरा॥ सो होवै मोहरी का कीरा॥ ॥  
 ज्ञान पाइ गुरु ते फिरि जावै॥ सो शरीर को दी का पावै॥  
 जो संतन की हांसी करई॥ जन्म पाय सिरी है मरई॥ ॥  
 भीतर कपल उपर ते प्रीता॥ सो पापी धारै तन चीता॥ ॥  
 पर प्रभु दन ते जो राति कर हीं॥ सो जग माहिं स्वान बधु धर हीं॥  
 देखि दोष जो प्राप्ति रखावै॥ सो नर गीध केर ननु पावै॥ ॥  
 पाप सहित जिन दीन्हो दाना॥ सोई होल द्विरह जग जाना॥  
 हरि जन माहिं कृति जिन मानी॥ होत छ छंदारि सो मल खानी॥  
 सो० बिना लगाये भोग। जिन रभोजन करत नित॥  
 होत ता सुतन रोग। जन्म मिलत तेहि काग कर॥  
 हो० जहं लगि खाटे कर्म हैं सो सब दुख की खानी॥  
 सोई करि नर परत हैं चौरासी में जानि॥ ॥  
 चौ० स्वर्गी पुराय क्षीरा है जावै॥ पुनि सो मृत्यु लोक को आवै॥  
 नर तन मिलै तिन्हें अति पावन॥ सुत बनिता धन धाम सो हावन॥  
 फिरि धर्म करै स्वर्ग सुख पावै॥ अधरस करै तौ न के सिधावै॥  
 हरि की भक्ति करै नहिं जब लौं॥ प्राधा गवन मिटै नहिं तब लौं॥  
 यहि भांति नयम लेखालीन्हा॥ जेहि जस चही ताहित सदीन्हा॥  
 पाछे यम गरा द्विजै दिखावा॥ लखि हरि तिन ते बचन सुनावा॥  
 रे दूतौ माति मन्द अनारी॥ प्राजुक सूद कि ह्यो तुम भारी॥  
 अस्य नाम द्विज प्रोदर हायो॥ ताको तजिया काले प्रायो॥  
 सुनिय मद् तन बचन बखाना॥ धोके नाय इन्हें हस प्राणा॥

तब धर्मराज द्विजैसन मान्यो ॥ मनमें निज प्रपरा धपि छान्यो  
 कैसे पापी होवै कोई ॥ बिना प्रवादे प्रावन सोई ॥ ॥  
 यह द्विज बिना प्रवादे प्रायो ॥ अस विचारिय सब वन सुनायो  
 दो० हे द्विज तो को देखि कैलासि दया प्रति मोहिं ॥  
 जा भाँवे सो माँगुबर प्राजु देहुं मैं तो हिं ॥

चौ० कह द्विज जो प्रभु किरपा कीजै ॥ तौ मृत्यु लोक जान मोहि दीजै  
 जेतनी मोरि प्रायु है बाकी ॥ ते तने दिवस चाहौ मोहि राखी ॥  
 अब लगि मैं कहु धर्म न किहे ऊँ ॥ भूद जगत माहि मन दिहे ऊँ  
 जब ते देख्यो पुरी तुम्हारी ॥ नरक निरखि लाग्यो डर भारी ॥  
 ताते प्रसमत मोसे कहिये ॥ जाते फिरित बधामन रेये ॥  
 कहय सपापी पुरायी दोऊ ॥ मोरे पुर प्रावत है सोऊ ॥  
 राम भक्ति जग करे जो कोई ॥ तिन पर मेरा दंड न होई ॥ ॥  
 चक्र एक दिशि रक्षा करई ॥ एक दिशि गरुड न कब हँदरई  
 एक प्रार सब पार्ष द दौरैं ॥ हरि रक्षा तिन पर सब ठौरैं ॥  
 तिन्हें बिरोधि कहौ कित रहऊँ ॥ मन कम बचन सत्य मैं कहऊँ  
 ताते द्विज अब जग में जाई ॥ सुख प्रद भक्ति करौ हर पाई  
 बिन हरि भक्ति इन्द्र सुख पावै ॥ पुराय क्षोणा मृत्यु लोकहि प्रावै  
 राम भक्त को पातन होई ॥ भक्ति बीज अज रास सोई ॥  
 सुनि द्विज धर्म हिंसी सनवायो ॥ तुरत पलटि मृत लोकहि प्रायो  
 मृतक शरीर माहिं पुनि जाये ॥ लखि गृहवासिन को दुख भाये  
 पर्याकुला हल नगर मंभारी ॥ सुनत चले देखन नर नारी ॥  
 मई भीर बहु विप्र निकेता ॥ प्राये चलि पुरवासी जेता ॥  
 पूछल लगे कहाँ तुम गयऊ ॥ केहि भाँति न फिरि प्रावत भयऊ  
 कहा साल मलय मगरा प्राये ॥ महा भयानक रूप बनाये ॥  
 मारि मोहिं यम लोक सिधाय ॥ प्रार ठौर मग दुख प्रति पाये



दीखि एक बेतरनी धारा ॥ तामें पीबरक्त कृमि छारा ॥ ॥  
 रायन यम पुरी दक्षिणा द्वारे ॥ तहौं हजार न नर्क निहारे ॥  
 तिनमें जीव पर कृत सारा ॥ देखत धीरज भाग्यो मोरा ॥ ॥  
 दूत हमें लै गेय मथासा ॥ तिन भीहि देखत बचन प्रकाशा  
 याके नाम और द्विज भाई ॥ तिहित जियहि दीन्हों दुख आई  
 मोस कहिन मांगि बरु लीजें ॥ मै कह बहुरि जान मोहि दीजें  
 और बात इक देहु बताई ॥ जांत फिर तब लोक न आई  
 तिन कह राम भक्ति करु जाई ॥ कबहुन नर्क परहु युनि भाई  
 जोहि बिधि गायन जयन बिधि प्रायन ॥ सो हम तुम तेवरनि सुनायन  
 जे नर चतुर सुजान मुकमी ॥ लागे करन भक्ति मिलि ममी ॥  
 आपु सल मल गुरुहि बोलाई ॥ राम मचने न्हो हरषाई ॥ ॥  
 हरिणीतिका छं ॥ लीन्हों हरषि द्विज मंत्र तारक  
 बहुत बिधि उत्तौ कियो ॥ पितु मातु सुत तिय बन्धु को उ  
 घर रहन साकत नहिं दिये करि नेम मुमिरे नाम पूजन  
 ध्यान नित हारे को करे ॥ सत सङ्ग साधन सेव हरि यश  
 कहै मुनि मन में धरे ॥

दो० यहि बिधि आपु पति भक्ति द्विज कोही प्रति अभिरामा ॥  
 अन्त समय सब कुटुम्ब लै वस्यो राम के धाम ॥  
 जन ग्युनाय बिचारि को सति करे सति भाय ॥  
 नातरु फिनि पति ताह गे नर तनवी तौ जाइ ॥  
 बहुत जन्म सुख तौ कियो नाको फल नर देह ॥  
 कहै रघुनाथ सो पाइ कै जन्म सुफल कारि लेह ॥  
 चोरा सील ख कोस में सक दरवाजा छोट ॥  
 ताही पाइ जाना कंद ता फिर भर में कोट ॥  
 काल सिचानो सिर खंडो ताहि डरै नहि नेक ॥

फूलोफिरे समुद्रमें करत कुकर्म अनेक॥

आखिर को फिरना रहे मरना तोहि विशेषि॥

ताते हारि भाजि लीजिये यही लाभ मन पेरि

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदा-

सराम सनेही कृत गृह धर्म कर्म विपाक बरी नौ नाम द्वाय्याः ॥ १ ॥

दो० सुमिरि राख सिय सन्त गुरु गराप गिरा सुख दानि॥

बरगी॥ मह भारथ की पुनि इतिहास बरवानि॥

कह सौ न क यह जगत् में कोउ धनी कोउ रंक॥

कोइ नोगी रोगी कोऊ भूपति भिक्षुक संक॥

कोउ निस दिन दुख ही सहन कोउ जनमत परिजास॥

कोउ जियत बहु काल तक कोउ बिन पुत्र लखास॥

काहू के जननी जनक मरत बाल पन माहिं॥

सो यह कारणा कोन है कहो नाथ मोहि पाहिं॥

चौ० सुनि नर सख बचन प्रसभाखा॥ लखि अधिकारी गुप्त न राखा

सैनिक जी तुम पूछे उभाई॥ सो सब कर्म प्रभाव लखाई॥

कर्म ते दुख सुख रोग प्ररोगी॥ कर्म ते भिक्षुक भूपति भोगी॥

कर्म ते मरि बाल पितु माता॥ और बात कहु नाहि न ताता॥

एक इतिहास कहौ प्रवगाई॥ जाहि सुनत बहु व्याधि न साई

एक द्विज गुणानिधि नाम सुजाना॥ सर्व शास्त्रन को जेहि जाना

तेहि के एक कन्या भे प्राई॥ नाम सुवर्ता छुबि अधिक आई॥

चरित्र स की भई कुमारी॥ तबहीं ता सुमरी महतारी॥

तब गुणानिधि निज मनहिं बिचारा॥ बिन विय भवन बस बधिकार

कन्या युत सोधन हिं सिधायो॥ तां में मुनि प्राम भवहु पायो॥

तिन के दिग एक कुटी बनाई॥ रहन लग्यो द्विज प्रतिदर्याई

करन लागि कन्याहि प्रतिपाला॥ विप्र जानिये बड़े दयाला



विविधिभांतिके चित्रबनावैं॥ लायखेलोना ताहि खेलै  
 राखै ताहि प्रसन्न सदा हीं॥ होइ उदास कभू सो नाहीं ॥ ॥  
 मातुहीन प्रबालक मारी॥ तेहि हित द्विज संन्यासन धारी  
 भई सुवर्ता जवै सयानी॥ तब द्विज आह करन मन प्रानी  
 इतने माहि काल धारिखायो॥ मन इच्छा सो करन न पायो  
 मृतक पिता हिलनि कन्या रोवै॥ आकुल अधिक धीर नहि होवै  
 कहै सुवर्ता बहु विधि बानी॥ पिता पिता कहि रोदन बानी ॥

दो० मोकोत जिकित को गयो॥ प्रहो पिता परबीन॥  
 दया बन्त सब भांतितु ममै कन्या प्रतिदीन॥

चौ० अब इस तरह कौन हमारा॥ मात पिता प्रात नहि प्यारा  
 हाय हाय यें का कर्म कीन्हा॥ ऐसा दुख दयी मोहि दीन्हा ॥  
 जरो अग्नि की जल में बहि हों॥ कीच दिगिरि अहि मरि जै हों  
 पट कै दोउ कर सिंभू माहीं॥ बिन पितु मा मम जीवन नाहीं ॥  
 मुनि कन्या का रोदन भारी॥ उठि दीरै ऋषि संपुत नारी ॥ ॥

श्लो० आये सब तेहि तीर॥ समझावैं बहु भांतिकरि॥  
 धीरे न मन में धीर॥ तात्मात कहि सिरधुनै॥

चौ० बर धियतनी बहु करे प्रबोधा॥ नहि उपजै ताके उर बोधा  
 लखिय मके मन करुणा आई॥ तत क्षणा द्विज का रूप बनाई  
 यहंचे आइ सुवर्ता तीरा॥ कह्यो बचन मृदु सुखद गंभीरा  
 दो० हे कन्या माति रुदन करु धरु धीर ज मन माहिं ॥

अपने कर्मन के फल जाय कहैं सो नाहिं ॥

चौ० आगे करै सो अब भुगतावैं॥ अब जो करै सो आगे पावैं  
 कल्प कीट तक घटै न सोई॥ अवशिमेव भोगव कहैं होई  
 कर्म बीज होनी फल अन्ता॥ तेहि निरवंत होत कोइ सन्ता  
 ताते कुंवरिन रोदन कीजै॥ पाछिल कर्म किह्यो तसलीजै

कहकन्यामाथी प्रभुतौना ॥ पूरवकर्मकीन्ह हम कौना ॥  
 विप्रलहा सुनु सुता सयानी ॥ प्रथम जन्मतव कहों बखानी  
 पूर्वजन्म गोरिका तैं प्रहरी ॥ उजयन नगर माहिं धर रहई ॥  
 सुन्दर रूप नयन चपलाई ॥ जेहि चितवै तेहि लेइ सो भाई  
 पुर के लोग बहुत बसतैरे ॥ जो तुम कहौ करै यहि वरे ॥ ॥  
 तेहि पुर विप्रहंस्क जानौ ॥ पुचता सुविद्वान पिछानौ ॥ ॥  
 पूजा करै धर्म शुभ साधे ॥ पाप कर्म नहिं कहु प्रचराधे ॥  
 एक दिवस सो सहज सुभाई ॥ तव द्वारे रहै निकसो अरि ॥  
 देखितु मंह भूल्यो बुधि जाना ॥ रह्यो दाढ़ तहं मनौ देवाना  
 तब तू जानिताहि बाल धावा ॥ आदर करि निज दिग बैठावा  
 वाकी प्रीति तुम्ही से लागी ॥ मातृ पिता वनितानि जत्यानी  
 तेरे बिषे वसै दिन राती ॥ चलत फिर स हिय तोहिं सोहाती  
 इक दिन तेरे भवन मंभारा ॥ दूसर कामी प्राइ पधारा ॥ ॥  
 विप्र शुद्र ते भई जौ रारी ॥ शूद्र द्विजै तहं डास्यो मारी ॥  
 दो० यम किं कर तेहि लै गये डारे निन के अधार ॥  
 शूद्र तुरजै भागत बभई न ग्रम हँ शोर ॥  
 चौ० काहु द्विज गृह प्राइ युकारा ॥ तव सुत गागरिका घर मारा  
 सुनि पितु मातु नारि दुख पाई ॥ रोदन करत धाम तव प्राई ॥  
 पुत्र बिलोकि अधिक दुख पागे ॥ तौ को शाप देन तब लागे ॥  
 तासु मातु बोली प्रसि बानी ॥ पुत्र विप्रागन धरिज आनी ॥  
 हे बेइया तैं सुत बस कीन्हा ॥ यंत्र मंत्र कारे धन हरि लीन्हा ॥  
 फिर ताको डार मर पाई ॥ हम कहें दुख दारुणा दिल बाई  
 पुत्र विच्छेद कराये मोहीं ॥ मातु हीन होई दुख तोहीं ॥ ॥  
 दो० पिता तासु ऐसे कह्यो बाल अवस्था माहि ॥  
 पिता तोर मरि जाइ है जहों हितु को उनाहि ॥



कह्यो भार्या पति बिना मोहिं कियै तै जैस॥

रह्यो कुंवारी नाह बिन सह्यो कष्ट तुम तैस॥

संसतो को शाप जो दई तिहूँ मिलि जानि॥

ताते दुख यहि उमिरि में भयो कर्म गति प्राणि॥

सो० भले बुरे जो कर्म बिन भोगे कूटत नही॥

धरे जो को दिन जन्म संग न काइत एक क्षिणा॥

चौ० सुनत सुबर्त्ता बोली बानी॥ द्विज तुम कहा सत्य मैं जानी

जन्म पाछिलो तुम कहि गाया॥ जेहि कर्म ते मैं प्रसदुख पाया

इक सन्देह होत मन मेरे॥ सो प्रब दूख तहों कर जोरे॥ ॥

में दारिक प्रति प्रधम अपावनि॥ बहु नाह तेने हल गायनि

विधे मनोरथ नित प्रसिपालि॥ बहु मनुष्य के घर में धाले॥

जनीन जनक कुल धर्म सो त्यागे॥ जे मेरे संग ने कह पागे॥

कहों कथा सब पापै कीन्हा॥ भलो कर्म स्वपने नहिं चीन्हा

द्विज कुल जन्म कवनि विधि पायों॥ सब दिन सो दे कर्म क मायों

प्ररु तुम दरश दियो किमि प्राई॥ सुनि भूखु बोला सुख पाई

दो० जौन कर्म ते बिप्र की सुता भई तू प्राइ॥

दीन दरश मैं पुराय जेहि सुनु सो कहों बुझाय॥

चौ० एक बिप्र हरि भक्त सुजाना॥ सम दरशी पुरा ज्ञान निधाना

गोगज स्थान बिप्र चंडाला॥ सब में इक दीरे देन न्द लाला॥

जयत प आदि धर्म जो ठाने॥ तेहि कर फल अपरै भगवाने

इंद्री जीत धोरि मन राखे॥ भूठ बचन सुख ते नहिं भारखे॥

काम रुकोध मोह मद त्यागी॥ रहित लोस हरि यह प्रसुरागी

मैं प्ररु मोरिते निहिं जाने॥ दुख सुख को सामान्य पिछाने

नहिं काहु आश्रम बंधन तांकि॥ कुल कुटुम्ब कर मोहन जाके

जित चाहै तित ही बसि रहई॥ हर्म शोक नहिं बिसमय गहई॥

एकदिवस पुरवासा लेवै॥ दूजे दिन तहें ते चलि देंवै ॥ ॥  
 विचरत सहज सुभाय सो हायै॥ एक दिन नगर तुम्हारे आयै  
 देखि स्वै तब द्वारि माहीं॥ बस्यो सन्त निशि खोर पन नाहीं  
 मैले वसन शरीर कसाना॥ त्यागि विधे भोग जो नाना ॥ ॥  
 आधी रात भई निशि नासा॥ बड़े भजन करैं हरि दासा ॥ ॥  
 दो० तेही समय कुतवाल की फेरी पहुँची आइ॥

कह्यो सन्त सो कोन तू सो तो मोन रहाइ ॥

चौ० तिन्हें उतर कुछ हियो न जबहीं॥ चोर कर्य कहे तावहीं॥  
 द्विज कछु साँच वचन समुभायै॥ दुष्ट मन विद्वान् मन आयै  
 खैंचि न चले लै अपने साथै॥ नहिं कछु दुख मान्यो द्विज नाथा  
 तैं जागै अपने घर माहीं॥ सार सुनत आइ तिन पाहीं ॥ ॥  
 हीरव मंगाइ द्विजें दिखरायो॥ तब तुम तिन तें वचन सुनायो  
 जो यह चार होइ सुनि लीजै॥ तौ चाहै सो हम को कीजै ॥  
 सुनि तव वचन दिहि न छुटकाई॥ करगहि तूने जमंदिर लाई  
 चरण परवारि पलंग बेंठावा॥ धूप दीप करि पद सिर नावा ॥  
 कह्यो कछु क दिन मम गृह रहऊ॥ पहिगौ वसन जौन विधि चहऊ  
 षट् सभोजन करौ बनाई॥ जाते देह पुष्ट ह्वै जाई ॥ ॥

सुनत सन्त धैर्यो शुभवानी॥ ज्ञान विराग भक्ति रस सानो  
 दो० धन्य मात तव भाव को मोहिं चही कछु नाहिं ॥ ॥

ब्रह्मा सकल सुख जगल के बिन सिजात क्षरा माहिं  
 बुधा तपा सुख भोग को कछु इच्छा नहिं मोहिं॥

सहज आइ निकस्यो इहाँ सत्य सुनायो तोहिं॥

चौ० तुम समान मैं और न चीन्हा॥ पर उपकार आजु तैं कीन्हा  
 परे उपकारी धनि नर नारी॥ भव सागर सो होवै पारि ॥ ॥  
 तुम पर तुष्ट होइ भगवाना॥ भैंदे जग कर आवन जाना ॥



मोको कहु चहि ने नहि माई ॥ कहुं सेन निज से जदि जाई ॥  
 यहि बिधि संत पाह्यो समुझाई ॥ तब ते पुनि बोली सिरुनाई ॥  
 महाराज मै धनि हो ॥ आज ॥ दरशन पाइ सरे सब काज ॥  
 पाप चारिणी मै अति गरी ॥ जेहि भवतरो सो कहो विचारी ॥  
 कह्यो सत्त भवतरो जो चाहै ॥ तो हरि शरणा आइ कै गाहै ॥  
 काम को धमद मोह निवारे ॥ निर अभिमान दंभ परहारे ॥  
 लुपा लोभ मकर ता दहई ॥ इन्द्र के भाग नहि बहई ॥  
 पिर सुभाव कान्त निवासी ॥ दुख सुख समचित धर्म प्रकाशी ॥  
 उपज्यो न ताहि भूत क पहिवाँ ॥ मिले न हर्ष शोक गय ॥ आने  
 ना सब न्त सब जग को देखै ॥ आनम अचल गुरं वडित पेरै ॥  
 सम दम शील दया उर रारै ॥ गुरु ते गवित बचन न भावै ॥  
 पर दुख देखि ता सु दुख हरई ॥ हरि जन की सेवा करई ॥  
 राम नाम सुमिरै मन लाई ॥ राम छानि चित अन्त न जाई ॥  
 उदत बंदत भोजन पावत ॥ स्वास स्वास प्रति नां मै ध्यावत ॥  
 आन उपाय सकल परहरई ॥ केवल राम नाम रहत करई ॥  
 सो संसार तरे सति मानो ॥ यामे कहु संदेह न आनो ॥ ॥  
 मुक्त होइ भव बंधन छूटै ॥ फिर तेहि यम किं कर नहि कूटै ॥  
 ताते तुमहं येही कीजै ॥ नर तन पाइ सुकल करि लीजै ॥  
 भय निद्रा मै दुन आहारा ॥ सब योनि न म मिलत निहारा ॥  
 हरि सुमिरा पाही ते होई ॥ सब योनि न सम ताहि नखाई ॥  
 दो० ऐसे तोहि उपदेश ही करत भयो भिनसार ॥  
 साधु उरि मतो भयो धरि हरि पद उरसार ॥  
 चौ० तब तोहि उद्दे भयो वैरागा ॥ बिषै बिलास व मन सम त्याग ॥  
 धमे रुनि हरि दे मह धार्यो ॥ कंचन मृत्तिका सरिस निहायो ॥  
 ताजे घर बन मै बासा कीन्हो ॥ राम चरण पकज चित दोन्हो ॥

द्विजरसाकरिहरिको ध्याये॥ जन्मविप्रकुलतेहि पुनि पाये  
 प्रथमे द्विजन आप जो दयऊ॥ तेहि ते तोहिंदुःख यह भयऊ  
 संत कृपायम जालन परेऊ॥ संत कृपा सब पातक जरेऊ ॥  
 संत कृपा ते न के न लहेऊ॥ बौरासी बिच नाहिन बहेऊ ॥ ॥  
 संत कृपा में दर्शन दीन्हो॥ पूर्व कर्म तब वरगान कीन्हो ॥  
 यह मैं भेद सकल कहि गावा॥ जो तुम पूब कर्म कसावा  
 इति श्री विश्रामसागर सवमत प्रागर्घ्य उजागर श्री राघुनाथदास  
 राम सनेही कृत सुवर्ती कथावरी नाना मंत्रि दर्शो ॥ अध्याय १३ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गरा पगिरा सुख दानि॥

कहौं मिमासा शास्त्र मत सोइ इतिहास बखानि॥

चौ० सुवत सुवर्ती बचन उवारा॥ नाथ शोक तुम मार निवारा  
 तदपि सुनि करि दुख ह्वे प्रावत॥ मोह विवस मन बोध न पावत  
 ताते बात कहौं प्रब सोई॥ जाले फिर मोहिंदुःख न होई॥  
 कह द्विज सुनु कन्या मन लाई॥ तहंदुःख जहं सनेह सर साई  
 बिन सनेह दुख होय न कैसै॥ शुक मूषक सुत सेद ज जैसे॥  
 सब जीवन में समता ग्रानै॥ शत्रु मित्र मध्यस्त न मानै॥  
 बपु धरिहानि लाभ जो होई॥ कर्म के सिर सारैं सोई॥  
 जैसे नारि गौतमी कीन्हा॥ पुत्र शोक तेहि भयो न चीन्हा॥  
 कह कन्या सुनिये द्विज राई॥ कथा गौतमी की जो चलाई  
 में अज्ञान न ऐसे जानौ॥ ताते कर बिस्तार बखानौ ॥ ॥  
 बोला विप्र कुंवरि मुनि लेह॥ कहौं कथा तामे मन देह ॥

दो० ज्ञान वन्त धीरज बही दया हृदय बैराग ॥

नारि गौतमी जानिये हरि पद में प्रनुराग ॥

चौ० कैतप स्या बन के माहीं॥ परम कठिन कहि जात सो नहीं  
 तां के रहै पुत्र एक जानौ॥ खलै तहं निभै पहि चानौ ॥ ॥



एक दिन एक तरुत शिशु गायक ॥ काठे सो सूर्य तुरत मरि गयक ॥  
 तहैं एक बांधक दीरि खयहु हाला ॥ डारि को सपक सो सो ब्याला ॥  
 लायो जहां गौतमी रहई ॥ तासों बांधक वचन सब कहई ॥  
 अहु भुजंगी छं ॥ बालक तिहारी ॥ सर्प ने संहारी ॥ बड़ो दु  
 रु जान्यो ॥ पकरिताहि अन्यो ॥ तजो नाहिं पाको ॥ बल ले  
 बवाको चही जाहि पोषी ॥ भयो ब्रह्म दोषी ॥  
 चौ० ऐसे वचन सुने भैंकारी ॥ बोलत भई गौतमी नारी ॥  
 अहो बांधक मैं कहों सो कीजै ॥ अबही छं डि सर्प को दीजै ॥  
 यहि हते मुत जीवै नाहीं ॥ ब्याधे कैयों अघ शिर पाहीं ॥  
 कह्यो कीरहि संकट ग कैई ॥ ताहि बंधे कहु पाप न होई ॥  
 बालक दोषी सर्प अनारी ॥ मैं तौ याहि डारि हों मारी ॥  
 सुनि गौतमी कही अस बात ॥ मुखे कहा करै तू धाता ॥  
 कामी को धोहिं सक रोगी ॥ अथ श्री कृपण दरिद्री सोगी ॥  
 बूढ़ भूढ़ तत्त्वा के जरै ॥ राज अग्नि जल सिंह विदारै ॥  
 राम विमुख निन्दक अभिमानी ॥ पापी को लाल बस जानै ॥  
 वेद विदूष कह रिजन दोही ॥ भुजंग भूत तन पोष कहोई ॥  
 बसब जीव मृतक सम जानौ ॥ मुरदैं कहा मार नोठानौ ॥  
 अपने कर्म ते मर्यो कुमार ॥ अपने कर्म तुम जाय निहार ॥  
 अपने कर्म सर्प बांध जाया ॥ जस कीन्है सितै सा कल पावा ॥  
 परको दुख देखै जो कोई ॥ सोई दुख ताहू कह होई ॥ ॥  
 बोलै गिरा कृप को जैसी ॥ बाही सजय मिलै तोह तैसी ॥  
 जो दरपन का धाप उठावै ॥ तैसी थाप ताहि बनि आवै ॥  
 बिछिले जन्म समै किय जैसी ॥ भोग देह धारिकै तैसी ॥  
 बाजक नहीं सर्प ने मार्यो ॥ बाँके कर्म बाहि संहार्यो ॥  
 तेहि ते बांधक छं डि देह ॥ दोष भुजंगहि नाहक देह ॥

सुनिगौतमीकेर असबैना ॥ बोला उरा पाय उर बैना ॥ ॥  
 यामे है कछु दोष न मेरा ॥ मैं तो फिरो मृत्यु का भेरा ॥ ॥  
 बालक मोते कइयो वारा ॥ भई भेट इहि बिपिनि मंभारा ॥ ॥  
 उख्यो न मैं तेहि सहज सुभाये ॥ बिना मृत्यु की आज्ञा पाये  
 अस सुनि मृत्यु तहाँ चलि आई ॥ बोली बचन सत्य मुख दाई  
 सो ॥ हौ नहिं खाये बाल ॥ नहीं बधोय हि सर्प ने ॥

हई जो आज्ञा काल ॥ सोइ करों मैं आइ के ॥

चौ ॥ मैं हौं काल राय की चेरी ॥ आज्ञा होइ ग्रसों वा बेरी ॥ ॥  
 काल कहता की मैं खा हूं ॥ बिना निदेशन कद नहिं जाऊं  
 भुजंग प्रयात छूं ॥ सुनै वैन ऐसे जंबे काल राया ॥ धरी देह  
 छिपै उसी ठौर आया ॥ कह्यो सर्प नाहीं नहिं मृत्यु माख्यो ॥  
 नहीं रोग कोई जु मैं नाश धाख्यो ॥ कोई कर्म जो जैस तैस हि  
 पावै ॥ बिना भेद जाने हं भेदी बलावै ॥ मरे ओ जियै बडु बाल  
 क जवाना ॥ सो तो कर्म ही तेस ही ॥ और ग्राना ॥ कोई कर्म  
 के के बहुत काल राहै ॥ कोई कर्म के के अगिनि में न दहै ॥ कोई  
 कर्म कीन्हो हं मे जीतिलीन्हो ॥ बस्यो विष्णु के धाम विश्राम चीन्हो  
 दो ॥ कोई कर्म करि नीच ते भये ऊंच कोई गर्ती ॥

कोइ बोरत तारत कोई सिरजत पालत हर्त ॥

कोइ जल डूबै तरु गिरै अगिनि जरै बिष खाय ॥

कोइ सहस्र न रोग के उ सर्प डसे मरि जाय ॥

चौ ॥ काहुइ सिंह भीड़ियारवाँ ॥ कर्म किहि नित सि मृत्यु हि पावै  
 चित्र केतु मुत्त गज वै जनमा ॥ रानी सकल गिंजाई बनसा ॥  
 पगतर पीसि गई मरि जाई ॥ बिष दै बदला लीन्हि न सोई  
 कीर बिछोह जानु की कीन्हो ॥ हूँ सोइ झक निंदिबन दीन्हो  
 दारुण दुख अंधन का दयऊ ॥ पुत्र शोक तनु त्यागत भयऊ



चतुरानन कन्या को धायो ॥ तेहि क्रम ते शिव शीश गिरायो  
 बालिहराम बान ते माख्यो ॥ द्वापर में सो इब हल बिचार्यो  
 कीर भयो द्वापर महं सोई ॥ कृष्ण चरण माख्यो सर जोई ॥  
 गांधारी सुत शत वेसारे ॥ कमठ ग्रंठ रुज हेत बिदारे ॥  
 कर्म ते इन्द्र भाल भग पाई ॥ कर्म ते नृपवर भयो जटाई ॥ ॥  
 कर्म ते भेनृगन हुष कुजंतू ॥ कर्म ते रवि राशि राहु प्रसंतू ॥ ॥  
 हरि विन्याते जो छल कीन्हो ॥ तेहि क्रम आय जन्म जगलीन्हो  
 नारद आप विष्णु कहं दयऊ ॥ कर्म ते शंभु लिङ्ग गिरि गयऊ  
 कहं लग कहों कर्म जस कीन्हो ॥ तस सब हिन मिलि भोगे लीन्हो  
 तेहि ते कर्म प्रधान जग प्रहई ॥ दुख सुख जीव कर्म करि लहई  
 सो ॥ सम्यति विपति कलेशो ॥ उत्पति पालन यश प्रयश ॥  
 होत कर्म ते तैस ॥ यामें दोष न मोर कछु ॥  
 सुनत काल के बैन ॥ बुद्धि फिरी तब बाधिक की ॥  
 भाविराग उर ऐन ॥ छंडि दिहिसि तेहि सदैव कहै ॥  
 सय मृत्यु अकाल ॥ जित ते आये तित गये ॥  
 भयो बाधिक उर साल ॥ कर्म पाछिले सुरति करि ॥  
 दो ॥ बाधिक गौतमी के चरण पुनि रशीसन वाय ॥  
 लग्यो योग जप तप करन कुल कीरीति गवाय ॥  
 बाधिक गौतमी की कथा भई जौन बिधि जानि ॥  
 सो कन्या तो सो कहि में संक्षेप बखानि ॥  
 अस ब्राह्मण के बचन मुनि मन में कीन्ह विचार ॥  
 पुनि कन्या बोलत भई बचन महा मुख सार ॥  
 मरे मन को दुख हस्यो कस्यो बोध बहु भांति ॥  
 गयो मोह प्रज्ञान प्रबह दय में आई शांति ॥  
 सो ॥ योगी जानत भेव अगिले पीछे ले जन्म वार ॥

सोमोसो कहि देव। हैं स्वामी तुम कौन हो ॥

चौ० कह्यो विप्र सुन कन्या याता ॥ मैं हों यम पापिन दुरव दाता ॥  
 माको दोन दुरयो प्रतिदेखा ॥ कीन्हों बोध प्राय द्विज भेषा ॥  
 भांगी बर भावै जो तो हीं ॥ प्रतिप्रसन्न जिय जानहुं मो हीं ॥  
 कह कन्या पितु मात हमार ॥ सुहृद बंधु सगरो परिवार ॥  
 वसैं स्वर्ग जब लगि शशिभान् ॥ यही सोहिं दीजै बर दान् ॥ ॥  
 एवमस्तु कहि यम बलि भयऊ ॥ तुरत सुवर्ती यह दृष्टि लयऊ ॥  
 जपत पंलागी करण उदारा ॥ कन्द मूल भस्म भोग बिसारा ॥  
 गीतिका ठुं ॥ बिसराय तन सुख भोग जग के तुच्छ मन में जा-  
 निके ॥ लागी करण हरि भक्ति सुमिरा ॥ ध्यान ज्ञान पिछानि-  
 के ॥ सब कर्म बन्धन काटि के श्री राम के धामे गई ॥ सुर सि-  
 धि सुनिगत जौन दुर्लभ भजन करि पायत भई ॥

दो० आठ पहर चौंसठ घरो तिन में भजिये राम ॥

जन रघुनाथ न भूलिये यही सयाना काम ॥

यह इतिहास पुनीत में बरों मति प्रनुसार ॥

कहैं रघुनाथ जो उर धरै भवसागर है पार ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत प्रागर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास  
 राम सनेही कृत गौतमो सुवर्ती धर्म प्रसङ्ग बरों नाम चतुर्दशो-

॥ अध्याय ३४ ॥

दो० सुनिराम सिय सन्त गुरु गणपति सुख दानि ॥

कहों भार्य की कथा कछु अथ बिलास बरानि ॥

सो० पुनि सोनक सुनि पाहिं ॥ प्रहरी दोउ कर जोरि के ॥

दान तप स्या माहिं ॥ अधिक कहा सो धरनिये ॥

चौ० सुनत सत बेलि हर वाई ॥ सुनि सोनक में कहों बुझाई ॥

तप ते दान अधिक है जानी ॥ न्यहा सहित करै जो प्रानी ॥



बहुत कष्ट करि द्रविकमावै ॥ तहि पारमारथ माहिल गावै ॥  
 ताको यशविभुवन महं होई ॥ बसै स्वामी महं निश्चय सोई ॥ ॥  
 जो सुधर्म करि फल नहिं चहई ॥ तो हरि भक्ति परस पद लहई ॥  
 ता पर सक इतिहास बखानो ॥ सुन्दर महा पुरातन जानो ॥ ॥  
 मुद्गल विप्र एक सुत नारी ॥ बसत रहे कुरुक्षेत्र में भारी ॥  
 शीलादीनि बिरति अहिगई ॥ पारस एक तक जोर तरई ॥  
 डेढ़ सेर जव दूकटे होई ॥ पीसि बनावै भोजन सोई ॥ ॥  
 साधु विप्र प्रथमै भुगतावै ॥ पाछे अचना सब मिश्रियावै ॥  
 यहि भांति नवीते बहु काला ॥ द्विज निज धर्म पारे प्रतिपाला ॥  
 अमृत तीतिका एक दिन सकल विदुषासा ॥ सुनि विमल  
 बड़ाई तासा ॥ तेलैन परिदा आये ॥ हरिजन का भेष बनाये  
 मधुभार छं ॥ अरु देह छीन ॥ तन वसन हीन ॥ द्विज द्वार  
 आय ॥ तप को छियाय ॥ लखि विप्र सोपे ॥ अति मगन होय  
 दशदशत कीन ॥ पद धोय लीन ॥ आसन पधारि ॥ आरति उ-  
 तारि ॥ दोउ पारि ॥ जोरि ॥ बाल्यौ निहारि ॥  
 चौ ॥ महाराज धनि भाग हमारे ॥ जो निकेत तुम आइ पधारै ॥  
 जेहि गृह सन्त चरण नहिं जावै ॥ अस्नान सहै भूत रहावै ॥  
 तब दरशन निर्मल मन भयजू ॥ संचित कर्म सकल जरायजू ॥  
 भोजन रहै सो आगे राख्यौ ॥ दीन बचन बहु सुख ते भाख्यौ ॥  
 सुनि द्विज वचन गूढ़ सुख दाई ॥ पावन लग्यौ संत हर पाई ॥  
 जेइ चुक्यो कहु जूड निरहेऊ ॥ सो अरु बियांधि बगल में गहेऊ ॥  
 एको आसन तिन को वंच्यौ ॥ विप्र प्रसन्न भयो मत सांच्यौ ॥  
 दुर्वासा चलि भेनि जगला ॥ मुद्गल मन नहिं आये मैला ॥  
 पद परख्यारै ऐसे हिकरेऊ ॥ खाइ जाइ द्विज दोष न धरेऊ ॥  
 और भाव दिन दिन अधिकाई ॥ नेक रुप राता मन हिन आई ॥

लखि दुर्वासा दूगुन भाया ॥ भीतर बाहिर एक सम पाया ॥ ॥  
 बोलत भये विप्र ते वानी ॥ हर्ष सहित निर्मल सुख दानी ॥  
 तो मर छुं ॥ धन्य तुम जग माहिं ॥ प्रसदानि दूसर नाहिं ॥ नि-  
 ज असन हम को दीना बड़ दान तुम ने कीन ॥ तिहुं लाक में य-  
 श तोर ॥ होई वचन फुर मोर ॥ अरु विश्वा के पुर जाइ ॥ बसि हो-  
 त हो सुख पाइ ॥ जो मुनिन दुर्लभ भक्ति ॥ मिलि है तुम्हें सो श-  
 क्ति ॥ प्रस वचन मुनि द्विज राय ॥ बोल्यो वचन शिर नाय ॥  
 सो ॥ अहो सन्त सुख भौन ॥ तुम किरया जा पर करौ ॥

मोक्ष प्रादि सुख जौन ॥ मिलत सहज में ॥ प्राइ तेहि ॥

बरवै छुं ॥ यहि विधि करत बत कही विप्र सुजान ॥ स्वर्ग लोक  
 तै लाये दूत विमान ॥ सुर बिमान की उपमा कही न जाय ॥ सा-  
 त स्वर्ग को विभव जु माहिं लखाय ॥ रतन जड़ित अति उ-  
 ज्जल शोभावान ॥ उत्तम्यो न भते मानों चन्द समान ॥  
 सुप्रिया छुं ॥ सुर दूत पुनि बन्दन कही ॥ इन्द्रादि देवन की स-  
 हीत व हेत जिय ॥ प्राये भलो ॥ चहुं स्वर्ग को ॥ प्रबहीं चलो ॥  
 प्रसबेन दूतन के सुने ॥ मन माहिं द्विज मुदगत गुने ॥ बोल्यो  
 बहुरि हर पाइ कै ॥ दूतों सुनौ मन लाइ कै ॥

सो ॥ सुर पुर दर सुख कीन ॥ गुरा ॥ अवगुरा तोम कहा ॥  
 कही रुपा करितौ न ॥ हौं प्रभु जाते जानिये ॥

चौ ॥ कह्यो गगन हे सन्त रुपाला ॥ तुम को सब मालुम है हाला  
 दोन जानि प्रभु दाया करेऊ ॥ हम ते प्रभु ऐसे उचरेऊ ॥  
 सुनौ स्वर्ग सुख बरनौ सोई ॥ जन्म मरणा की व्याधि न होई ॥  
 भैंन कले शलेन नहिं देना ॥ दुष्ठा तपानहिं व्यापत जेना ॥  
 कल्प विटय मन साका परा ॥ कौह वेंसे होवे दुरय दूरा ॥ ॥  
 रतन जड़ित हे मालय बन ऊ ॥ सुभग संज पट भूषण धनेऊ ॥



दिव्यरूपहै धासा पावे ॥ सेवा करन प्रपूजना ॥ आये ॥ ॥  
 स्वर्ग माहिं अस सुख है भाई ॥ सो हम तुम का दीन बताई ॥  
 दुख प्रवृत्त के सुनो चटखी प्रा ॥ कहों सोई जो और खिन दीश  
 इक तौ कहु करत व्यन होवै ॥ जाते पुराय बदे अध खावै ॥  
 करै कमाई जो फल खावै ॥ खात खात कम तो है जावै ॥  
 पर की पुराय अधि कलखि सोई ॥ तै वै ईर्ष्या मन में होई ॥  
 पुराय कनाश सद्य है जावै ॥ फिर तो मृत्यु लोक को आवै  
 जयत पयस न ते सुर लोका ॥ मिलत दुमपि ना हमें शोका  
 देव दूत की ऐसी धानी ॥ सुनि मुद गल बोल्यो सुख मानी  
 काम जोध मद्मात्सर आदी ॥ जहं प्रति तहों के सुख सब वादी  
 स्वर्ग माहिं है दुःख अपारा ॥ तेहि मन चाहत नाहिं हमारा ॥  
 निश्चल धाम होइ जो कोई ॥ हम ते वरियो सुनावौ सोई ॥

दी० कह गन स्वर्ग पताल ये सब नाश कये जनि ॥  
 सुर लोक विधि लोक लों सब की होवै हानि ॥  
 विष्णु लोक नित धिर है उस पति पर लै नाहिं  
 सुख तित बहुत प्रकार के वसत मना तेहि माहिं ॥  
 जन्म मरणा तो भेन ही अक स ईर्ष्या व्याधि ॥  
 आनन्दे आनन्द है राम धाम आनादि ॥

तो मर कुं० तह रहत हैं हरि राय ॥ ऐस्य व्ये कहु कहों गाव ॥  
 जो हि राज सब ब्रह्म राड ॥ चौदा भुवन नवर राड ॥ वैकुण्ठ गढ़ अ-  
 जो ता चाकर सकल सुर मीत ॥ विरंचि जा सुदेवाना है फौज-  
 दार दीशान ॥ मातङ्ग बसु दिग पान्न ॥ पानी भरे धन माल ॥  
 कोत बाल है यम राज ॥ नाक्षत्र मान है वाज ॥ सुस्तौ फी चित्र  
 गोपित्र लब्धो हर मुंशी तित्र ॥ पुर देव कानो गोइ ॥ ओजी-  
 र प्रहिल्ल सोइ ॥

सरूपिका छं० अरु सुबाशेष बिचारी ॥ कूवेर जासु भंडारी  
 बहु खानि लारव चौ रासी ॥ तेहें सब करि खन बासी ॥ कैं परा-  
 ख्य कर भोगा ॥ रहै सब पर कर्म दरोणा ॥ ग्रह दी ग्रह रोग ॥ अनन्ता  
 जागीर तगीर करन्ता ॥ यम दूत पिया दाफिर हीं जे राम विमुख  
 ते धर हीं ॥ महि पेश लोक बंदि खाना बहु नर्क भाय सी जाना  
 हरि धर्म पोत विन दीन्हे ॥ तहें परत आइ सब चीन्हे ॥ बिन बेद  
 पति ग्रह धारी ॥ ते जान हूं सब बेगारी ॥ परवी पच ग्रह जानी ॥  
 तह सील दार यह मानो ॥ जयत पञ्चत दान हि कर हीं ॥ ते नर ज-  
 नु पोत हि भर हीं मद काम कोथ ॥ ग्रहं कारा ॥ डक हत लूटत सं-  
 सारा ॥ सत संगन कीवत यारा ॥ सो करत फिरत दुष्टि यारा ॥  
 है ॥ प्रन्न पूरा ॥ सो दी ॥ दे सवै ॥ ग्रहारे सो दी ॥ वै काल बीर हनु  
 माना ॥ जय बिजय रहत दर बाना ॥ शुचि सेवक भक्त पियारे  
 जिन के हित नर तन धारे ॥ सुर लोक सकल जागीरा ॥ सर सह-  
 ना जासु समीरा ॥ अरु धर्म नवीन करारा ॥ है भक्ति बडी सर-  
 कारा ॥ नौ बसि है ॥ अनहद तासा ॥ चौ पद बारहु मासा ॥ भूलोक  
 जासु बाजारा ॥ तहें होत कर्म वै पारा ॥ मेराइ दीप ॥ अरु खरादा ॥  
 धनु काल मृत्यु कर चराडा ॥ बन बाग ॥ ग्रहारे बागा ॥ है सांते सिं-  
 धत डागा ॥ पर बत सब बली जाना ॥ तें बून भदोर घताना ॥ ब-  
 न्दी गरा बेद कहैं ॥ जे नैति नैति यश गावैं ॥ जिन की प्रिय ल-  
 इ सी रानी ॥ साहेली गिरा भवानी ॥ दे भक्ति मुक्ति दोदाना तेहि  
 धेक्षक संत सुजाना ॥ है अट्टि सिद्धि जेहि दासी ॥ सो निस  
 दिन करै खदासी ॥

हो० कोदि० ब्रह्माण्ड है रोम रोम प्रति जासु ॥ ॥  
 कैं हेर धुनाय बखानि कोउ पार किया वैतासु ॥  
 सुनि प्रभाव ॥ प्रसविणु को मन हरण्यो महि देव ॥



पूछ्यो दीपपुर किमिनि लैता को कहिये भवे ॥

मिले जो बह पद भक्ति ते जो गज्ञान मन लाय ॥

जो उपाय करे किते बिषा लो क नहिं जाय ॥

सो० देव दूत के बैन। सुनि बोल्यो मुद गल बहुरि ॥

जाहु प्रापने ऐन। कह्यो बन्दना सुरन ते ॥

दो० देव दूत भेजे स्वरग प्राप्ति भक्ति मन लाय ॥

करणी बल निजु कुदु स्य युत बस्यो बिषा पुर जाय ॥

सो० तप ते अधिकी दान सह श्रद्धा के जो करे ॥

होय भुवन विख्यात। भक्ति मिले पुनि द्विज सरिस ॥

इति श्री विश्रामसागर स्वमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास  
राय सने ही कृत मुद गल प्रसंग वरीनो नाम पंच दशोऽध्यायः १५ ॥

दो० सुमिरि रास सिय सन्त गुरु गराप गिरा सुख दानि ॥

हरि धाम्मे नर ग्रंथ की कहों इति हास बरवानि ॥

सो० सुनि सौन क सुख पाइ। नाइ शी स बोल्यो बहुरि ॥

नाथ कहों समुभाइ। पुराय बढत केहि दिविते ॥

चौ० कहा सत सुनि कहों बुभाई। जेहि धन धर्म बढे अधिक आई ॥

मुकूत करि जो दर्वि कमावै ॥ तेहि परमारथ माहि लगावै ॥

बाढ़े पुराय पाय है नासा ॥ सो नर लहे स्वर्ग में बासा ॥ ॥

अधरम करि जो दर्वि कमावै ॥ धर्म माहि पुनि ताहि लगावै ॥

ता की पुराय ब्याही जानौ ॥ मुनौ एक इति हास बरवानौ ॥

नृप एक बीर भद्र प्रसनामा ॥ सो रदन ग्र माहि तेहि धामा ॥

करे पुराय बहु भौति न राजा ॥ गजरथ भूमि पाल की बाजा ॥

सो० सुबरगा सींग मदाय। मुक्ता पूछे रजत खुर ॥

पीताम्बर द्योढ़ बाया देइ धेनु इमि द्विज न कहै ॥

चौ० शय्या दान करे पद दाना ॥ यज्ञ महोत्सव बहु विधि दाना ॥

तेहिपर एकवार विधियोगा ॥ नय एक चढ़्यो संग लै लोगा  
 निशाग्रदान कनगर लुटायो ॥ कैद कीन जे हिय करे पायो ॥  
 रानी नृपति अतिथि के भेषा ॥ भागि वचै काहू नहिं येथा ॥ ॥  
 आयो एक नगर के नाहीं ॥ देबु का भाचर है डिगना हीं ॥ ॥  
 कर मुद्रिका एक नृप कीन्ह ॥ बौध कछु क दिन भोजन कीन्ह  
 नाते दार रहैं पितु मामा ॥ रानी सहित गयो तेहि धामा ॥ ॥  
 तहो नही कछु आदर पायो ॥ बहुरि भूप भगनी घर आयो ॥  
 जानि अभाव जन कलछु भाई ॥ तिन के निकट गयो चलिराई

सो० रहे तहां कछु काल पुनिलगे अनखान सब ॥  
 चलि भेतुरत सुवाल ॥ समुक्ति कर्म गति मन दिव ॥

दो० जा के भवनै जाइ चलि वातन पूछै कोइ ॥  
 विपति परे हरि बिन कोइ काहू को नहिं होइ ॥

कुराड लिया कमल केर पितु सरित पति गरल मुधारशि  
 भाय ॥ मित्र भानु ब्रह्मा तनै विश्व भरा जेहि माय ॥ विश्व भ-  
 रा जेहि माइ श्रीरम्भा दोउ भगनी ॥ बह नोई हरि इंद्र नाति  
 शिव सुन्दर भगनी ॥ अस परिवार सुसार जड़ जारि दिओ  
 निशि जाम ॥ विपति परे रघु नाथ बिन कोइ न आयो काम ॥  
 चौ० भूपरा भराल गन्य रानी ॥ भिक्षा कैर युक्ति तबानी  
 घर ॥ भिक्षा कैर भुवारा ॥ तन पर बसन न जुरै प्रहारा ॥  
 कछु क काल या विधि चलि गयऊ ॥ नय रानी सें बोलत भयऊ  
 संभरि गढ़ इक साहु मुजाना ॥ मानिक नाम बिदित धनवान  
 बैचन पुराय जात जो कोइ ॥ मानिक साहु लेत है सोई ॥ ॥  
 कागद पर लिखितु लावड़ावै ॥ ताहि चराबर सोन देवावै ॥ ॥  
 रानी कहा सुनो नय राई ॥ तुमहू कीन्ह पुराय अधिकाई ॥  
 तमि कछु बौचलै आवो ॥ पहिरो बसन पेट भरि खावो ॥



जो जगमें तनु रही हमारा ॥ करब दान पुनि बहु परकारा ॥  
 कह राजा रानी सुनि लेह ॥ मारग को खरचा कहु देह ॥  
 सुनि रानी तुरतै उठि आई ॥ गृह २ ते भिक्षा करि लाई ॥ ॥  
 नृप के बसन बाँधि सोइ दीन्हा ॥ गरापति सुभिरि पयाना कीन्हा  
 तेहि वासर निशि भैतरु पाई ॥ रत्नो सुनिय विन भोजन राई ॥  
 दुसरे दिन बलिसरइ क पाये ॥ करि मज्जन नृप भौरी लाये  
 सँकि तूर्ज हरि भोग लगावा ॥ तेहि क्षण इक अभ्यागत आवा  
 सुधावंत बोला हर आई ॥ सुनि नृप के मन करुणा आई ॥  
 दो० होय धनी कंगाल जात धरि रहे उदार ॥

जन्म दरिद्री धन लेहै करि न सके उपकार ॥

है भौरी अभ्यागत हि दोही करि सनमान ॥

हुइ पुनि अपना खाय के कीन्हें बहुरि पयान ॥

चौ० तिसरे दिवस साहु यह आये ॥ आइ करि राजा बैठाये ॥  
 पूछ्यो बनि क कहाँ ते आये ॥ कोहौ कोने काज सिधाये ॥  
 सुनि नरेश प्रसन्न बचन प्रकाशा ॥ सोइ ते आयन तब यासा  
 बेचन पुराय हेतु यह ताता ॥ तुम है लेत सुनी हम बाता ॥ ॥  
 अस सुनि साहु उतरु तब दीन्हा ॥ बेचहु पुराय जवन कहु कीन्हा  
 लिखि कागद पर तुला चढ़ावो ॥ सोची लिखी दीर्घ जेहि पावो ॥  
 दश सहस्र मरद कीन्हें राई ॥ सो लिखि मानिक तुला उदाई ॥  
 पलरा दोऊ रहे समाना ॥ रत्नीन चढ़ा मही पल जाना ॥ ॥  
 बोला साहु और लिखि धरह ॥ सोची लिखी भूठ परिहरह ॥  
 सो० हेम गज गज वाजि ॥ दीन्हा कन्या दान जो ॥

तुला चढ़ाये राज ॥ सोऊ सब विरया भये ॥

चौ० जहँ लगि लाग रहे तेहि दामा ॥ हित गुमास्ता चार गुलामा  
 सबन कही भूठ तुम अहऊ ॥ दगही करि सुख सम्यति वहऊ ॥

जो तुम करते दान रु धरमा ॥ कंचन चढ़त न कौने मरमा ॥ ॥  
 स्तखि रुख बोला साह सुजाना ॥ कौने समय कीन्ह तुम दाना ॥  
 वीर भद्र कह सुनिये साह ॥ जब हम थे सोख के नाह ॥ ॥  
 गजरथ तुरंगपाल की जानो ॥ भृत्य मृता वह चमूख जाना ॥  
 तब यह दान दीन्ह हम भाई ॥ तुम ते सौंची कहा बुभाई ॥ ॥  
 बोला बितका चढ़े भुवाला ॥ यह प्रधर्म कर धर्म तुम्हारा ॥  
 लूटि बांधि पर जै दुरव दिहेऊ ॥ बनि तन कह बिन वस्त्र किहेऊ  
 बछराग ऊँवे दिले प्रायो ॥ हरियर नृसु प्रनेक कटायो ॥  
 आवाको उफिरि यादी दीन्हों ॥ लै धन सौ चन्यावनहिं कान्हों  
 सो धन अनिधर्म तुम दाना ॥ ताते कौन पुराय पर माना ॥  
 जब ते रडू भयो तुम राई ॥ तब ते पुराय किहे उ कछु भाई ॥  
 दो० कहो मही पति वचन मृदु सुनिये साह सुजान ॥

भिक्षा करि भोजन मिलै काहे मकी जै दान ॥

कुराडु लिया कीन्ह पमाना यहाँ को सुमिरि हृदय गगा राय ॥ ते  
 हिम गडक सर के निकट भौरी चारिल गाथ ॥ भौरी चारिल गाथ  
 अपि हरि ग्राम उठावा ॥ तेहि समय मम निकट एक प्रभ्या  
 गत आघा ॥ सुधित देखि मैं ता सुकाउ भै मधु करी दीन्ह ॥  
 रडू भयन तब ते सुनहु यही पुराय जग कीन्ह ॥  
 चौ० सुनि मानिक लिखि तुला चढ़ायौ ॥ डाँडी गाँहि धरि हेम उठाये  
 तब ही पला गरु है गयऊ ॥ पुनि लै पुरट चढ़ावत भयऊ ॥  
 ज्यों ज्यों कंचन अनि चढ़ावै ॥ त्यों त्यों पला अधिक गरु वावै  
 जहँ लगि सुवरा साइनि केता ॥ द्वै भौरी सम भयो न तेता ॥  
 बोला मानिक सुनहु नरेशा ॥ अब नहिं हेम हमारे लेशा ॥  
 तेहि ते जो कछु है सोइ लीजै ॥ अपने नगर पयाना कीजै ॥  
 सुनि नृप महिषा ऊँट माग्यो ॥ सकल कनक तिन माहि लदायो



लीन्हें सङ्ग सिपाही नाना ॥ जिनसे रह क है कीन्ह पयाना ॥  
 पहुँचे दिन तिसरे घर आई ॥ लखि रानिहि भा सुख श्रीधर आई  
 बहु रीसे न नृपमाजि अनेका ॥ चतुर्दिनी एक ते एका ॥  
 दो० दैडंका अरिभूष परचढ़ा चमू लै जाय ॥  
 राम कृपा तेहि जीति कै लीन्हो राज छिनाय  
 चौ० प्रादुनिकेत महोत्सव कीन्ह ॥ विप्रनदान विविधि विधी दीन्ह  
 करन लाग पुनि राज भुवारा ॥ पालै प्रजा अनेक प्रकारा ॥ ॥  
 अधरस इपद होन नहि पावै ॥ करै ताहि नृपदराद देवा वै ॥  
 लागेहु करन भक्ति युत्तरानी ॥ छौदि अनीतिकर्म मनवानी ॥  
 आवै साधुनगर माकोई ॥ मिलै पुरः चलि भूपति सोई ॥  
 करि प्रणाम मन्दिर लै आवै ॥ पद परवारि निज शीस चढ़ावै  
 बाइ शमांति पूजि मान लौ ॥ मन्त्र जोगवतर है भूपति रानी ॥  
 सुने कथा हरि कीरति गावै ॥ तजि सत संग अनत नहि जावै  
 सेवक सचिव कोरै पुर काजा ॥ बिष्णु चरणा सेवै नित राजा ॥  
 भवन बनाय सुबस्तु भराई ॥ मुदित देखि महि देवन राई ॥ ॥  
 सुमन बाटिका बाग लगायै ॥ वापी कूप तडागर खनाये ॥ ॥  
 करै जो धर्म कर्म सुभजानी ॥ बामुदेव प्रपै नृप जानी ॥  
 सहित नेम सुमिरै हरि नामा ॥ जौ धन लोभ मोह मद कामा  
 युक्ति सहित करि भोग विलासा ॥ समय पाय तनु तजि अनयासा  
 हरि गीतिका अनयासनि जव पुत्पागि भो हरि रूप कर-  
 आयु धरै ॥ भुज चारि उर पट मुकुट कुराडल तिलक शिर  
 माला गरे ॥ आरूढ़ सुभग बिवान लखि सुर सुमन बहु बर-  
 लाय ह ॥ जपयोग तपते अगम सोपद भक्ति करि नृप पाय ह ॥  
 दो० कह पुनाय प्रधर्म करि पुनि हरि सुमिरन कीन्ह ॥  
 कर्म बन्ध ते छोटे कै मोक्ष सरूपी लीन्ह ॥ + ॥

तजिकु कर्मिभुभकेर्मकरिहीर्कमायजोकोर  
ताहिलगावैधर्मिमेंतपतेअधिकी होइ॥

इति श्रीविद्यामसागर सब मत अगार ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदा-  
स रामसनेही कृत वीरभद्र प्रसंग बरीनीनाम षोडशोऽध्यायः १६॥

दो० सुमिरिरामसियसंतगुरुगणपतिरामसुखदामि॥

महाभार्यसद ग्रन्थकोकहोंइतिहासवखानि॥

सो० सौनकसहितहुलास। पूछ्यो कैपेदधर्मके॥

कितउत्तपतिकितनाश। कितस्थितिबिस्तारवित॥

कुराडलियाकह्योसतसुनिधर्मकेचारिचरणापहि-  
चान। प्रथमसत्यपनिदयाहै। औरतपस्यादान॥ औरत-

पस्याशनसत्यतेउत्तपतिसोई॥ दयातहोंबिस्तारदानते

स्थिरहोई॥ नाशहोतहैलोभकरिक्रोधीतिहरीरघो॥

तयुगचहुंपुनितीनिफिरिदुइकलिइकबेदनकह्यो॥

दो० सुनसौनकजेहिभाँसिजिनधर्मकिहिनितनुधारि॥

लिखेपुराणानमेंकहोंतिनमेंतेदुइचारि॥

भूपत्रसंकटतुभुजबलीमहिमराडलरिपुकीति॥

दीन्ह्योसुखगोद्विजप्रजनसहितबेदकोरीति॥

चौ० चन्द्रप्रभारहैतिनकीबाला॥ जिनजायेहरिचन्दनपाला

बदनाबतिहरिचन्दकिरानी॥ जासुसुपशत्रिभुवनमेंजानी

तासुतनयरोहिणीकुमारा॥ इन्द्रावतीबधमुकुमारा॥

कौंराज्यहरिचन्दनरेम्पू॥ धनअधर्मकरलेहनलेम्पू॥

तासुराज्यकोउदुरदीनरहई॥ चारोंबरीधर्मनिजगहई॥

सबनुद्धसबविरुजशरीरा॥ सबगुणासुखपरिहृतधीरा

तेहिपुराणभक्तनरनारी॥ संतसदागमरुचिअधिकारी

विशदिनभूप्रीतिहरिचरणा॥ सुमिरनपूजनबन्दनकरना



सो० बायीकूपतड़ाग। खनबायिसागविधि॥

लगवायेबहवान। खनबायिहरिहरभवन॥

दो० बिटपफूलफलसहितगिरिप्रकटभईगलियाच॥॥

कामधेनुभूमिजलकहेदेहिधनग्रानि॥

धर्मबचनमनजोकरैसोअरपैभगवान॥

भक्तिवंतभूपालवरहरितजिरत्निनहिंआन॥

चौ० प्रति संवत्सबमालखजाना॥ देइलुटाइनरवैदान॥

नृपकीरति सबजगमाछाई॥ जहाँतहाँमुनिकेरैबडाई॥

कहैंकिनृपहरिचन्दसमाना॥ हैंनअवधरमज्ञजहाना॥

मुनिकौशिकमुनिकहारिसाई॥ अबहींनृपसतदेहुडिगाई॥

तुरतैअवधपुरीबलिआयो॥ कोलककुनपविशालकनयो॥

प्रविसिवाटिकाचौड़नलगे॥ धुरुधुरातरखवारेभागे॥

तेभूपतिपहंजायपुकारे॥ सुवरदेतइकबागउजारि॥॥

मुनिनोरपटयेभटभूरी॥ आयिसबजहंकोलगरूरी॥

दो० करिउपायहारिसकलकोलसोनिकस्योनाहि॥

मुनिहरिचन्दतुरंगनदिपहुंचेतोहिकेपाहि॥

चौ० भागवराहदापमुनियावा॥ देखिताहिभूपतिपटावा॥

कहुंलखिपरतकबहुंदुरिजाई॥ सघनविपिनिइमिगयउलैजाई॥

आगेबढिमुनियुक्तिउपायो॥ एकपुत्रीएकपुत्रबनायो॥

आपुभयेपंडिततेहिवेरा॥ लागेकरनव्याहतिनकेरा॥

अग्रवराहदीखनहिंजबही॥ आयिनृपतिनकेढिगतबही॥

लखिसितिपतिबोलादिजसाई॥ यहिकन्याकेहैनहिंकोई॥

पायंपूजियाकेनृपदेहु॥ तुमधरमज्ञजगतपशलेहु॥

कहुहरिचन्दविपिनिकेमाही॥ हेकहुप्रभुभेरेदिगमाही॥

नगरमाहिंजोचलतेदेवा॥ सबविधितेतहंकरतिउंहेवा॥

विप्र कहा कछु सगुन करिजै ॥ गृह लेयाइ पुनि चहौ सो दीजै ॥  
 है लगाम कुंजी तब तीरा ॥ तेहि ते पद पूजौ रणधीरा ॥ ॥  
 तुरतै नृप पद पूजै लीन्हा ॥ विश्वामित्र स्वास्त्र पुनि कीन्हा ॥  
 मै तुम्हार पंडित हों राजा ॥ मोको कछु दीजै मह राजा ॥ ॥  
 भूपति कहा मांगि द्विज लेह ॥ कनक तीनि मन राजन देह ॥  
 कह हरि चन्द दीन द्विज राई ॥ चलहु भवन मन लेहु भराई ॥  
 कन्या कुंवर गुप्त है गयऊ ॥ मुनि नृप संग प्रवध चलि भयऊ ॥  
 राजा बाजि चढन तब लागा ॥ छीनि लीन मुनि गहिकर बागा ॥  
 दो० कह नृपि कन्यहि देइ कै पुनि नृप फेरै लेत ॥  
 अस प्रधर्म नहिं चाहिये तन कबस्तु कै हेत ॥  
 जौ० अस कहि प्रापु भये प्रमवारा ॥ पौड पिया देचले सुवारा ॥  
 पहुंचे नहीं प्रवध के साथ ॥ प्रागे बढि देखे नृपि नाथा ॥ ॥  
 नृप मुकुमार बहुत श्रम पायौ ॥ कछु दिन रहे प्रवध पुर प्रायौ ॥  
 लखि नृप वृषी मये नर नारी ॥ गये भूपनि ज भवन मंकारी ॥  
 सुभग गली चा एक बिछायौ ॥ करि सनमान मुनिहि बैठा यो ॥  
 चरण पधारि बारि मुख नाई ॥ भोजन कहें पूछा पुनिराई ॥  
 पुनि मुनि कहा हेम मम दीजै ॥ पीछे प्रपर बात कछु कीजै ॥  
 तब नृप कनक भराइ मंगावा ॥ कहे उलेहु मुनि बचन सुनाव ॥  
 कुंजी दान दिह्यो मोहि राई ॥ दर्विस कल तेहि भीतर आई ॥  
 जहं लगि टाप घाड़ की बाजी ॥ तहं लगु भई हमारी राजी ॥  
 मोरि दर्वि मोसे कहै लेह ॥ प्रैरे कनक प्राणि कै देह ॥ ॥  
 नाहिं त कहैं दीन नहिं राई ॥ हम अपने प्राश्रम का जाई ॥  
 कह नृप शिर काटै जो कोई ॥ ऐसि बात हम ते नहिं होई ॥  
 दो० सुनि सुत रानी भूपति हुं कह्यो शीश धारि माया ॥  
 मनु मनु सोने पर हमें वैचिली जिये नाथ ॥



चौ० प्रससुनिनिहैं लीन अगुवाई ॥ बेचन रहत चले करषिराई ॥  
 प्रकनि प्रजाले हें मसिधायें ॥ राजें माल लैन बहु प्राये ॥ ॥  
 विश्रामिन्न कह्यो तिन हेरी ॥ प्रजा कि दनि हें वै नृप केरी ॥ ॥  
 आन देशत हें बिकहु नरेश ॥ चले बनारस सहत कलेश ॥  
 आगे मुनि पाछे नृप रानी ॥ नहि पाछे सुत रोहिणी जानी ॥  
 मुनि दूसर द्विज देह बनाई ॥ वैठ्यो पुरह कूप पर जाई ॥ ॥  
 राजा हे देखि ससौ पबो लाये ॥ पूछ्यो हाल मही पबताये ॥  
 दोला विप्र भूप मुनि लीजें ॥ गाहि जदूरियान जल कीजें ॥  
 कह नृप द्विजहि दिये विन भाई ॥ पिय धन पाय प्राण वरु जाई ॥  
 दो० प्रस कहि प्रब नृप चलि दियो रानी यहूं ची आइ ॥  
 कह्यो विप्र जल पीजिये पेड़ गये हैं राइ ॥  
 चौ० राजिहु वै सै चन मुनाये ॥ पाछे पुत्र रोहिणी प्राये ॥  
 ब्राह्मण कहा पिय उ सुत पानी ॥ आगे पाइ गये नृप रानी ॥  
 कुंवर कह्यो वै नृहु बिचारे ॥ ठाड़िनि धर्म प्यास के मारे ॥  
 हम तो द्विजहि दिहे विन हेसा ॥ घूट बनहीं लार यह नैमा ॥  
 प्रति धर मज्जहि ये हम जाने ॥ गाधि सुवन मन माहिल जाने ॥  
 चलन आशी महें प्राये ॥ मुनि ले बीच हाट बैठाये ॥ ॥  
 विप्र एक रानि हिलै गयऊ ॥ मनु भारि हे सदेइ सो दयऊ ॥  
 मालाकार कुंवर कहली न्हा ॥ फल बारी मह डेरा ही न्हा ॥  
 राजाहि लिहि सिंदो म एक प्राई ॥ पाइ पुरट चलि भे करषिराई ॥  
 नृप त कह्यो सुपच प्रसिबानी ॥ भरा करेनादन महें पानी ॥  
 मुनि नृप नीर भरन तब लारयो ॥ कह मुनि भूप सत्य नहिं त्याग्यो ॥  
 जो जल भरे चले मुनि प्रावे ॥ फेरै नाद पाय बहि जावे ॥ ॥  
 देखि सुपच त्रियतिन तेल रई ॥ बैठ रहत कहु काम न करई ॥  
 मुनि कह्यो मभूप सुनुवाता ॥ हम तुम वीचई श जग वाता ॥

वाचाबन्धनपतितोकिहेऊ॥सरघटनिकटबासतबदिहेऊ॥  
 लेसबयहो॥जोअवेकोई॥दगाबलिहेबिनदाहनहोई॥॥  
 निशाआइहमकाधनदेऊ॥भोजनमात्रतातनुपलेऊ॥॥

दो० यहिविधिबसतममाननृपबहुतदोनधनआइ॥

सुरवीडोमनायकपरमहितकारीजनपाइ॥

चौ०कछुककालयहिविधचलिगयऊ॥तबमुनिरूपसर्पकोलप  
 हरिशशिसुतहिडस्यासोइजार्द॥दीन्होताहिरविहिमोंपाई  
 रानीजवैखबरयहपाई॥रोदनकरतकुंवरपहंआई॥॥॥

लैलहासंगगाकेतीरा॥गेजेहिघाटरहतनृपधीरा॥॥

नारिविलापकरतविधिनाना॥सुतसबदेखिभूपदुरवमाना  
 पुनिधरिधीरमहीपतिकहई॥ईशरजायशीशपरअहई॥

दुरवसुखदेहपाइसंगलागे॥मिलनविछेहस्वप्रजिमिजोगे  
 जलप्रकाशक्षितिपावकवाता॥मिलैकीनपरपंचविधाता  
 नश्वररूपमोहबसशेषा॥परधनगयेकरैदुरवपोचा॥॥

दो० प्रकटभयोतनुजानियेसोंसेवततबतीरा॥

जीवननाशतनित्यहैप्रसविचारिधरुधीरा॥

चौ०नटमरकटगतिंदेखिनिहगि॥हरिआधानसकलतनुधारि  
 चाककुलालफिरतहेतौलौ॥अधआधारलकरियाजौलौ॥

सबसंसारकालकरभोगा॥आपुनदेखतआनहिसेगा॥

अस्थिमोंसविष्टातनक्यऊ॥चमेलपेटिसहायनभयऊ

तेहिपरकहतनमोहिंसमआना॥कछुदिनगयेरहीनहिंमाना

अल्पआयुबहुकरतउपाई॥मृत्युसिरवडीनताहिडाई

बलिपसुपाइघासजिमिचरई॥बूढ़तआपुआनकीधरई

दो० जगत्बिकटवनकुरगामनमायाजालपसारि॥

कालसिकारीबिनखबरिलीनप्रचानकमारि॥



चौ० दारुनारितनममताडोरी॥ कर्मनचावतहै चहुँ दोरी॥ ॥

दशडन्दीसुरविज २ बोरा॥ खैचतजहाँ तहोबरजोरा॥ ॥

मूसतपांचचोरकरिदंगा॥ रहतहितहै निशदिनसंगा॥

जीवकुशलकैसेकहिजाई॥ जिमिरेखीहरवाहैखाई॥

शोकसमाजदेरिखसवपरई॥ सुखीसोजोहरिपदमनुधरई॥

दुरखकरपूलमोहहैयनी॥ सातजिसपदिमानुममबानी॥

दंडघाटकरहमकहदीजै॥ पाछेपुत्रदाहनिजुकीजै॥ ॥

रानीकहासुनोनरपान्ता॥ तुमतेकछछिपानहिंहाला॥

कहौदीबकहैवामिपाई॥ जोलैतुम्हेंदीजियेआई॥ ॥

दो० कहनरूपकरलीन्हेंबिनाहोंनहिंदाहनदेहं॥

स्वामीकेरनिदेशतजिनाहकप्रधमलेहु

सो० तेहितेमैंप्रवजाय॥ पैकौप्रभुतेहालयहु॥

जोवैदेहिबतायासोदकरबपुनिआयकै॥

चौ० प्रसकहिहरिचन्दनगरसिधायि॥ गाधिसुननगरपरतहंप्रिय

रानीतेप्रसबचनउचारा॥ बैठिलिहेकतमृतककुमारा॥

रानीसकलहालकहिदयेऊ॥ पुनिमुनियेसेबोलतभयऊ॥

जोदुर्बत्तनहिंकरिदिनेशा॥ तौतोहिंदहननदेइनरेशा॥

तेहितेमैंतोहैंदेउंजताई॥ भस्मसकलतनलेहुलगाई॥

बालकएकप्राकर्षिजोलीन्हा॥ सोरानीकहमुनिबरदीन्हा॥

कह्योकिलैमठबैठोजाई॥ सैतुम्हारसुनदेउंजराई॥ ॥

मुनिरानीगैमंडफजबहों॥ कैशिकमुनिपुरप्रायेतबहीं॥

जहंतहंप्रसदीन्होंगोहराई॥ नगरतुम्हारेडाइनिआई॥

पूछिनिकहांहवैमठमाहीं॥ यामेंमूठकहतहमनाहीं॥

गईप्रबैपुरतैसहमोदा॥ लीन्हैएकबालकसबगोदा॥

चौविंसाछं० सुनिसवधायि॥ तेहिदिगप्रायेरूपनिहारी॥

अतिभैकारी। बालकचीन्हा॥ गहि कल कीन्हा॥ नृप यहै ल्याये।  
 कहि समुभायो॥ भूपरिसाई। दिहै सिद्धगई। कहै उकिधावै।  
 सुखहि लावै। गरदनमरो। करनवावै॥ हिंसक ल्याये। भलनहि॥ प्रागे॥  
 दो० गाहूक धायन डोम गृह कहैं प्राहाल समुभाइ॥  
 तेहि पठवा हरिचन्द कहैं चलि॥ प्रायतहै राइ॥  
 चौ० राजा निजराजी यहि दानै॥ तनको सोहन मनमें॥ प्राय्यो  
 कतातुरत उठायो राई॥ मारों शीश बिलगहैं जाई॥ ॥  
 आइतबै हरिकर गहि लीन्हा॥ जयति॥ नभदेवन कीन्हा  
 धनिरानी धनि नृपति महाला॥ तज्यो न धर्म सह्यो दुखनाना  
 सुदिन सकल धरमज कहैंये॥ कुदिन कसौटी परिलुति जावै  
 घनप्रहार बिन संचे हीरा॥ अंगे किलकै काँच कर रबीरा॥  
 अस्त्रशस्त्रजिमिसब कोइ बोधै॥ मूरसेइ जो समरन काँधै  
 मुनि ते कह्यो रि साइ खरारी॥ तुमरे मद सरता अति भारी  
 जपतपसंयम करते भयऊ॥ आदि सुभाषत दपिनहि गयऊ  
 अस धरमज नृपहि दुखदोन्ह्यो॥ यमिकै होला भका चीन्ह्यो  
 धर्म छोड़ावन इनकर आयो॥ हुकन चहत सुमेरु उडायो  
 तपकारतुमैं बहत अभिमानू॥ सोनहिं रही सच्य यह जानू  
 सुनि मुनि चरगा परेहै दीना॥ प्रभु॥ प्रपराध बहतमें कीन्हा  
 करहु सोक्षमा जानि॥ अज्ञानी॥ नृप यह परहु कह्यो प्रभुवानी  
 सुनि मुनि गहे चरगा तजि माना॥ लरिय नृप को न सकुचि सनमाना  
 तुरतै पुत्रदीन मंगवाई॥ जो प्रथमै रविकों सों पाई॥ ॥  
 दो० नृप हरिचंदहि जानि कै पुरवासी सब लोग॥  
 भूप सहित बिनती करो भये दरश विधियोग॥  
 सो० बोलै बिरगु बहैरि। जो भावै सो सांगिये॥  
 कह नृप दोउ कर जोरि। नोको कछु न चाहिये॥



चौ० राजा ते बूझउ सुरराई ॥ मांगी जो कहु बाको भाई ॥  
 रामा नाथ राजी ते भाषा ॥ मांगहु वर जो मन अभिलाषा ॥  
 राजी कहानाथ मुनि लीजै ॥ प्रथमै भक्ति आपनी दीजै ॥ ॥  
 जहँ जहँ जन्म धरबहु सजाई ॥ तहँ तहँ हरि चन्दै पनि पाई ॥  
 पुत्र मिलै रोहिणी समाना ॥ राजकाज धन धाम खजाना ॥  
 यहि विधि मुनि सों गेतहँ आई ॥ जाते नाथ दरशतव पाई ॥  
 यह वरदान देहु मोहिं स्वामी ॥ और न चाहिये अन्तर यासी ॥  
 मुनि हरि सजलन अन होइ प्राये ॥ प्रेम सहित निज हृदय लगाये ॥  
 तुम समान चिय जासु अगारा ॥ कसन होइ तहँ धर्म अपारा ॥  
 चलहु अवध निज राज करीजै ॥ प्रजा अनाथ लिन्हें सुरव दीजै ॥  
 मुनि हार वन्द अवध चलि प्राये ॥ पुरवासी लखित लुटाये ॥  
 सिंहासन भूषति बैठारै ॥ जग निवास बैकुराठ पधारै ॥ ॥  
 नहु रि सकल संशे करि बरी ॥ रानी सहित किहिनि सुरव भरी ॥  
 याति काहुं ॥ सुरव भूरि करि नृपगनि परजन विविधि विधि ॥  
 पालत भये ॥ तजि अन्त समय शरीर विन पै सर्म हरि पुरका ॥  
 गये ॥ यह कथा नृप हरि चन्द की तुम ते कही समुझाई कै ॥  
 अब और एक इतिहास भाषी ॥ सुनहुं मुनि मन लाइ कै ॥  
 सो० हंस ध्वज नृपतापु ॥ तनै सुधन्वा हरि भगत ॥  
 निज बपु दीन्हें ॥ आसु संखलि रित खल द्विजनहित ॥  
 रत्न देव नृप आन ॥ बहु दिन में भोजन लहे ॥  
 विप्र षड् शठ स्वान ॥ सनमाने तब मिले हरि ॥  
 इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरधुनाथदास  
 राम सनेही कृत हरि चन्द्र सुधन्वा रत्न देव असंग वर्गीनो नाम सप्तश्लो ॥ अथ १५ ॥  
 दौ० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु गापगिरा सुख दानि ॥  
 बरणी भारव की कथा कहु दालभ्य वरपानि ॥

मो० सौनक मनमें गुण्य । पूछ्यों पद शिर नाइ कै ॥

जिद रक्षा कृत पुण्य । होत कहा सो वरनिये ॥ ॥

चौ० सुनि मुमंच बोले हर पाता ॥ नीक प्रभ कीन्हें तुम ताता ॥

धर्म मूल जिव रक्षा जानौ ॥ सुनौता सुकृत पुण्य वरवानौ ॥

जहँ तक सब तीरथ करि आवै ॥ गया माहिँ नित पिराड परावै ॥

गोग जहय पटमारि कहै मा ॥ देहि विप्र कहँ करि नित नेमा ॥

यत्त सुसकल करै ब्रत दाना ॥ संयम नेम तप स्या दाना ॥ ॥

ये सब पुण्य जो तुला चढ़ावै ॥ जिव रक्षा सम सो उन पावै ॥ ॥

राजा सिब की कथा बखानौ ॥ जिव रक्षा तिन कीन्हौ जानौ ॥

भूपति यत्त करत दुख बारा ॥ रहैं तहाँ माहिँ देव अपारा ॥ ॥

इंद्र अग्नि सिवियश सुनियायो ॥ लेन परीक्षा दोऊ सिधायो ॥

अग्नि कपोत वपुष नब कीन्हा ॥ बाजरूप बासव धरिली हा ॥

भाज कपोत बाजर पटाबा ॥ नृप जहँ यत्त करत तहँ प्रावा ॥

दो० बैठे सिधिलखि गोद में दुख्यो कपोत डेराय ॥

धरि बाज बोलत भयो नृप तैव चन बनाय ॥

अहो भूप धर मत्त तुम महँ सुनी यह बात ॥

मोह कृपणा ताहँ नहीँ तन को तुम्हरे गात ॥

चौ० तैं सब को पालै महि पाला ॥ सन्त अमन्त कहा तरवाला ॥

आगुरा देखि छिपावै जानी ॥ गुरा को सदा धरत उर प्राणी ॥

द्वारे प्रतिथि जो कोई आवै ॥ तुम ते बिमुख जान नहिँ पावै ॥

अब जनि धर्म छाड़ियो राई ॥ यश ते रहै अयश जग छाई ॥

भोजन घोर कपोत रह्यो ॥ ताको तैं क्यों गोद छिपायो ॥

भूखो होँ बहु दिन को राई ॥ आको माहिँ देहु पकराई ॥ ॥

राजा कहा सेन सुनि लीजै ॥ याकी आश कौं डिअब दीजै ॥

सही डर पिशारन मम लीन्हा ॥ तजौ न बाहि पुरा दह कीन्हा ॥



शरणागत जाये जो त्यागी ॥ ब्रह्महत्या ताके शिर लागे ॥

दो० लोभकोधवशपरिहरै करै नरसा जासु ॥

सो नरपापी नीच खल मुख नहि देखिय तासु ॥

चौ० मुख देखे सुकृत धदि जाई ॥ धर्मवान लखि मुख अधिक आई

तेहि ते यहित जेहो नहि भाई ॥ शीसहु जो कोउ काटे आई ॥

बोला सेन सुनत असियाता ॥ मैं तोहि सुनारहै बड़ दाता ॥ ॥

धर्म टेक सो छाडि भुवाला ॥ ले प्रबधश जो हो के काला ॥ ॥

दिये अहार होइ जिव रक्षा ॥ तजि हठ लेहु मानि सो शिखा ॥

किये अहार प्राण धिर रहई ॥ नाहित ननु तजि मारग रहई ॥

मेरे मुये बहुत करनाशा ॥ जननि जनक सुत नारि विनाशा ॥

एक जीव की रक्षा करहु ॥ बहु तेन को शिर हत्या धरहु ॥ ॥

बिन विवेक धरमहु कार कोई ॥ पाछे तेहि पछिताइ कहोई ॥

क सेन की गति भागी रहई ॥ पुराय करत पात कहै जाई ॥ ॥

तेहि ते नृपति मानि प्रबली जे ॥ मार अहार होइ मोहिं दी जे ॥

सा० कहसि वि सुनहु सिचान शरणागतरक्षा करै ॥

अहितम धर्म न ग्रान ॥ सो मैं निज हिरदै धर्यो ॥

दो० सोइ परि डत धर्म ज सोइ सति बादी नति धीर ॥

शील बन्त जानीश जो हरे पराई पीर ॥ ॥

चौ० मोहिं इच्छा क कुखग किनाही ॥ नहि बैकुण्ठ जान के माही

मुक्ति भुक्ति की चाहन करहु ॥ नरक परन को मैं नहि डरहु ॥ ॥

इक अभिलाष यहै मन माहो ॥ आवै शरणा तजौ तेहिं नाहो

जो सो पर प्रसन्न भगवाना ॥ देहि टेक हिय यही न ग्राना ॥

तन धन धाम बाम सुन जावे ॥ तजौ न ताहि शरणा जो आवै ॥

मोहि कपोत परमाप्रिय भाई ॥ ताको कहौ न जा किमि जाई ॥

और बहो सो लीजे मागी ॥ सुनि सचन बोला मैं त्यागी ॥

भूमिधामधनअन्नअपारा॥लिहेसरीनीहैकाजहमारा॥  
 ममधनरापहीहैयेह॥सोनहिंदेउतोग्रवसुनिलेह॥  
 आपनमासरववायोमोही॥दयावन्ततबजानोंतोही॥  
 तुलाचढ़ावकपोतहिदीजै॥तेहिप्रमथरहुदेरमतकीजै॥  
 कुराडलिआसुनिसिधिमनहरपतभयोकहैं॥धन्यम-  
 नभाग॥असदअस्वच्छशरीरअहपरस्वारथमेलारा॥  
 परस्वारथमेलाराधन्यजननीजिनजायो॥दीन्हैंजातज-  
 रायकहौकेहिकामेंआयो॥हरिसुभिराअरुक्रमशुभस-  
 धैपाइनरदेहुनि॥जीवनताहीकोसफलबोलीबहुरिस-  
 चानसुनि॥

चौ०व्याकौरेकतबाहुवारा॥शुधितजानहैधानहमारा॥  
 राजातुरततुलामागवायो॥पलरापरकपोतबैठायो॥  
 दूजैपलामासनिजधरेऊ॥आपनगरुकपोतैकोरऊ॥  
 तबराजाफिरिकादिचढ़ाया॥विहंगपलानहिंसमसरिआय  
 काटि२कैयोदेहाख्यो॥उठ्योनभूतेनेकुनिहाख्यो॥  
 चढ़िबैठ्योनृपतबहरवाई॥देखिअग्निहरिरहेलजाई॥  
 सुरदेखैनभचंदेबिमाना॥कहैंकिअसप्रणकहैनठाना॥  
 जयजयधन्यअनृपकरहौ॥सुमनवरपिनिजअपूरफिरहौ  
 दो० अग्निपुरन्दरअपटनजिप्रकट्योआपनरूप॥

हैप्रसन्नबोलतअध्वन्यतुमभूष॥  
 विश्वमाहितुमसमैनृपतिहैनहिंकोईऔर॥  
 प्रणकीन्होमलहोइहैतेरेयशसचंडोर॥  
 मेघनदीजलभूमिहुनमलजन्मजालेत॥  
 केवलविधिपरगतकियेपरअर्थकेहेत॥

चौ०तुमसमानराजाजेआही॥तेउजानियेकलनयाही॥



इतनेनकीजोनिंदा करहीं॥रीशेनकेसाहिसोपरहीं॥ ॥  
 तेरेतनकीजायबुढ़ाई॥होइनवीनसुभगसुखदाई॥ ॥  
 हमशहहठवसकुकरमकीन्हा॥नाहकप्रायतुम्हेंदुखदीन्हा  
 सोअपराधझमोकरिदाया॥असकहिसुरपतिस्वर्गसिधाया  
 यत्तजबैपूराहैगयऊ॥तबभूपतिमनहरषतभयऊ॥ ॥  
 गगविमानलायेहरपाई॥विषालोकतहेंसरिनजाई॥  
 जायहकथासुनेअरुगावै॥यमकिंकरतेहिनाहिसतावै॥  
 सिबिकाकथाकहीजोजानि॥ओरमुनौएककहौबरवानी  
 केकीनगरहैएकसाहू॥बुढ़िवानघरदाविअथाहू॥ ॥  
 देवदत्तअसताकरनामा॥सुजसानामजासुकीबामा॥  
 एकबारपतिपदशिरनाई॥बोलीमधुरवचनसुखदाई॥  
 सुनहुंनाथनिगमागमगावै॥नरतनबड़ेभागतेपावै॥ ॥  
 तेहिलहिजोहरिभजननकरहीं॥जगतभारशिरऊपरधरही  
 सोयाँछेपछितातअभागी॥जिमिनगवालअमोलिकत्यागी  
 तातेपतिहरिभक्तिहिकीजै॥नरतनपाइसफलकरिलीजै  
 धनतेधर्मकरहुअनलाई॥अरिवरअन्तसङ्गनाहिनजाई  
 ऐसेवचननारिजबकहेऊ॥मुनिमुचिसाहपरमसुखलहेऊ  
 दो० धर्मकरनलागेललकितनसनधनतेदोउ॥  
 जोसांगेतैहिदेइसोइबिसुखनजावैकोउ॥  
 चौ० नौधाभक्तिकरैनितनेमा॥विप्रवेशोपदअतिप्रेमा॥  
 यहिभोतिनबहुदिवसबिताये॥लेनपरीक्षाधर्मसिधायै॥  
 रूपअघोरीकाधरिलीन्हा॥साहदुबारस्वालआकीन्हा॥  
 देखिवयसभीतरलैगयऊ॥मुदितमनोरथपूततथयऊ  
 कह्योअघोरीमुनुअनुरागी॥मेकोआजुमुधाबहुजागी  
 पुत्रतुम्हारबर्षषटकेरा॥तेहिआमिधमनचाहतपेरा॥

दोउप्राणी मिलि सुतबधकीजै ॥ शोभनतनको मनमें लीजै ॥  
 निजनिजकर मोहिं देउखवाई ॥ नाहै सँकै तौ ग्रन्तै जाई ॥ ॥  
 सुनतसाहसाहुनि प्रसंबेना ॥ खेलतसुतै बोलायो ऐना ॥  
 मारनलगे दोऊ मिलिजबहीं ॥ बालकबचन कहतभातबहीं ॥  
 मारुनमातुघोरमहँरहैं ॥ प्रबहों दरि नरेखलनजेहों ॥ ॥  
 सो० ग्रहो सुवनतवकर्म ॥ होतजोखेलनकोलिखा ॥  
 तौकतलेत्यो जन्म ॥ प्राइहमारेजठरमहँ ॥  
 चौ० प्रसकहिघातकीनहरषाई ॥ बोटी खिलगबनाई ॥ ॥  
 कह्यो प्रघेरी सों प्रभुलीजै ॥ देरभई यहि भोजनकीजै ॥ ॥  
 सुनितेहिकहा किसेनहिं रैंहैं ॥ इतनेमैंतनकोन प्रघेहैं ॥  
 निज० ग्रामिष दीजै धारा ॥ जेहितेजाइ उदरभरि सोरा ॥  
 स्वपलजंबैकाटनकहँकीन्हा ॥ तुरतैधर्महाथगहिलीन्हा ॥  
 खुशहैं प्रापनवपुप्रगटायो ॥ देवदत्तसोबचनसुनायो ॥  
 ग्रहोसाहसुनुमैंहैं धरमा ॥ प्रायोंलेनतुमारोपरमा ॥ ॥  
 धन्य० तुमधनिहोताता ॥ धर्महेतसुतकीन्हैंघाता ॥ ॥  
 तुम्हरीपुण्यघटीनहिंभाई ॥ दिन० अधिक० अधिकारि ॥  
 विशाल्लोकबसिहोतिहंप्रानी ॥ जन्म मरनकीहोईहानी ॥  
 पुत्रतुम्हारबालकनमाहीं ॥ खेलतहंवैप्रमिथ्यानाहीं ॥ ॥  
 सुनिरकसेवकसाहपटायो ॥ तेहिंकेसगकुँवरचलिआयो ॥  
 देखिमातुपितुहरषितभयऊ ॥ हृदयलगायसाइभरिलयऊ ॥  
 दो० भयेविदातवधर्मकरिदेवदत्तसनमान ॥  
 हरिपुरतैप्रावतभयोताहीसमयबिमान ॥  
 गीतिकाहुं० प्रायोविमाननिकेतनिर्मलरत्नसागरम-  
 रीमयो ॥ लयौधायगरानबढायतिनकाविशुपुरबासाद-  
 यो ॥ लखिदेवजय० जयतिकहि कहिसुमनबहुवरषायह ॥



खुनाथ गुर पदमाय धरियह कथा सक्षम गाय हू ॥

दो० धन्य पुत्र हरि भक्त जो धन्य पति व्रत नारि ॥

जासों परभार थबनै धन्य सो दर्बिनिहारि ॥

इति श्री विश्वामसागर सव मत आगर ग्रंथ उजागर श्री खुनाथ दास  
गम सेनेही कृत सिविवा देव दत्त प्रसङ्ग बरगानो नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥

दो० सुमिरि गम सिय सन्त गुरु गराप गिरा मुख दानि ॥

बरगो भारथ ग्रन्थ की पुनि इतिहास बरवानि ॥

अग्नि देव कर पुत्र एक ता सु सुदर्शन नाम ॥

धर्मवान गो जीत वर समाशील तप धाम ॥

बोधवान नृपनिज सुता दीन्ही द्विजै बिबहि ॥

दोउ प्रारी मिलि बसे कुरु क्षेत्र सहै जाहि ॥

चौ० निश दिन धर्म सुदर्शन भावै ॥ अति धरते बिमुख न जावै ॥

मन कम करै साधु की सेवा ॥ सन्तै स्वासी सन्तै देवा ॥ ॥

यहि विधि कछु काल चलि गयऊ ॥ इक दिन द्विज मन शोचत भयऊ ॥

साधु नैनै नहि प्रिय को भावा ॥ अरध अंग तेहि बेद बतावा ॥

मैन हौ उगृह हरि जन आवै ॥ बनित ते सच मान न पावै ॥ ॥

तौ सम धर्म होइ सब नासा ॥ जो आदर नहि पावहि दासा ॥

नारि पुरुष दोउ इक मत होई ॥ तेहि कर धर्म डिगै नहि कोई ॥

दो० अस बिचारि निज बधू ते बोली विप्र सुजान ॥

सन्त सेव हिरे धरौ जाते होय कल्याण ॥ ॥

सन्त सेव हरि सेव सेशत गुरा अधि की जानि ॥

निज मुख प्रभु वरीन कियो धर्मोत्तर में मानि ॥

पुरह धरत नै बेद्य तेहिं शुद्ध करौ मैं देखि ॥ ॥

स्वाद लेत मुख दास के कह हरि बिसेते पति ॥

सर्व राधन में परे हरि प्रवराधन आहि ॥ ॥

जनसेवातेहितेअधिक कहदिवआगममाहिं॥

गोविन्दपदपूजनकरैसत्तहिसेवेनाहिं ॥

तेनहिंप्रीतमविष्णुकहेंदुभिकभाजनआहिं॥

आवेबैशोंजासुधरपावै नहिंसनमान ॥

नयेपुरायसौजन्यकीकहैअसकंधपुराण॥

यमनक्षेत्रनिश्चेतहोंजहोंनसंतस्थान ॥ ॥

बसैजयहरिक्षेत्रसेबदबाराहपुरान ॥ ॥

साधुभजेभजिजातहरिजिनिशिशुगर्भभंकार॥

बिनजननीतोषेनहींदुभिकहअमृतसार॥

अद्यायुतहरिभक्तकहैअन्नखववैकोइ ॥

सोईसोमपरवत्सरिसदिनदिनअधकीहोइ ॥

साधुसेवकीन्होंनहींजिननरतनकोपाय ॥

तेनरपणुतेअधिकहैंपेटभरनकोचाय ॥

पचि२मत्थौकुटुम्बहितपरमारथनहिंकीन॥

धृग२ताकीबुद्धिकोतजिअमृतविषपीन॥

चौ२नातेसुमुखिमानुममवाता॥जातेमेरितोरिकुशलात्ता

तनमनधनसंतनकहदीजै॥हैंअधीनचरगोदकलीजै॥

गृहसाधमकोधर्महैयाही॥हरिजनआइबिमुखनहिंजाही

जोकरहुसंतकहैंसोकीजै॥सुखप्रदवचनमानिमनलीजै॥

जोत्रियकहोकरैपतिकेरा॥सोपावैसतिलोकबसेरा॥ ॥

सुनिपतिवचननारिसुखपाई॥बालीवचनकपदनहिंराई

अतीनाथमोहिंधर्मदिदायो॥सुनितववचनमोहिंअतिभायो

तनमनधनकरिसंतहिपोषिहैं॥हेपतिपरगातुहारोरखिहैं

पतकोसोजोअनीसम्हारै॥बिमुखकरैसोशठनिरै॥ ॥

पतिभाजोत्रियकीपतिरावै॥निजपतिबिनतेहिंकोपतिभावै



ऐसे बचन कहे जब नारी ॥ सुनत विप्र उर भा सुरव भारी ॥ ॥

दो० दोउ धर्म लागे करन तन धन सो तजि नेह ॥

विविध भोगि से वाकैं सन्त जो आवै गेह ॥

अहि भोगि न बहु काल गेरह्यौ सुयश जग काय ॥

मृत्यु द्वारे प्राइ कै मुह मुहर फिरि जाय ॥ ॥

चौ० कबहुँ धर्म घटती नहिं होई ॥ ताते मारि सकैं नहिं सोई ॥

एक दिन मुनौ सुदर्शन कानन ॥ गेय रहैं तहं समधी आनन ॥

धर्म परीक्षा लेन सिधाये ॥ भेष बैरागी कर बनाये ॥ ॥ ॥

जहं द्विज भवन तहां चलि गयऊ ॥ बोधवती ते बोलत भयऊ ॥

है धरमज्ञ सुनामैं तोही ॥ मन मथ्य आजु सतावत मोहीं ॥

तेहि ते प्रपने तन का दीजै ॥ जैहि ते प्रदू सङ्ग करि लीजै ॥

सुनि कर जोरि कह्यौ दिज वामा ॥ लीजै प्रसन बसन बहु दामा ॥

ऐसी बात न कह्यौ गोसाई ॥ बोलै धर्म और कहु नाहीं ॥ ॥

केवल चही शरीर तुम्हारा ॥ जासों लाओ चित्त हमारा ॥ ॥

जो न देहु तो मारग लीजै ॥ द्वै मा एक बात कहि दीजै ॥ ॥

सुनि प्रसबचन नारि शिद नाई ॥ मन में शोच कीन प्रधिक दि ॥

नादौ तौ प्रगा कीन सो जाई ॥ सङ्ग करों पतिवर्तन साई ॥ ॥

दो० शोचत ही श्रुति के बचन है आये तब प्रादि ॥

पति आज्ञा त्रिय करै तौ पति ब्रत जाइन वादि ॥

चौ० तब हरि जन ते बोली नारी ॥ किरपा हम पर कीनि मुरारी ॥

यह तन धन सब तुम्हरे स्वामी ॥ हम सेवक सब बिधि अनुगामी ॥

सुनि हरि कुटी कपाट लगायो ॥ ताही समय सुदर्शन आयौ ॥

साङ्ग सुनत त्रिय सकुचि न बोली ॥ दीन्हा भेद प्रतिपत्त बखोली ॥

मोर मनोरथ पुरवत नारी ॥ खड़े रहौ तले द्वार मैं भारी ॥ ॥

सुनत सुदर्शन प्रतिपत्ति सुख पावा ॥ धन्य अब दि बचन सुनावा ॥

धन्यपियातवपितुः प्रहसाई ॥ पूज्यो सन्तहि हेतबड़ाई ॥  
 अखिरतनुनहि रहत तुम्हारा ॥ हे जातो कर्म बिष्टा कारा ॥  
 सोवपुबैषो हेत लगायो ॥ राख्यो धर्म मोहिं प्रति भायो ॥  
 अहो सन्त मन निह चल होई ॥ मति शङ्क मान्यो तुम कोई ॥  
 धाम बामतन धन जो हेरो ॥ सो सब जानो साधुन केरो ॥ ॥  
 में सब विधि सन्तन को दासा ॥ और न मेरे प्राण उपासा ॥ ॥  
 पुराय हमारि उदै भै प्राजू ॥ जो घर सख्यो तुम्हारे काजू ॥  
 बचन सुदर्शन के सुनि प्यारे ॥ धर्म निकरि आये तब द्वारे ॥  
 धन्य तुम धनित बवाला ॥ प्रणाम प्रापन कीन्हें प्रति पास्ना ॥  
 दो० अहो सन्त में धर्म होय हयतिव्रती नारि ॥

लेन परीक्षा आयऊ नहिं कछु दोष बिचारि ॥

तुम सम पुराय सलोक नहिं तीरि लोक महं कोइ ॥

जस कीन्ह्यो तस जगत में काहुं ते नहिं होइ ॥

देव दनु जन नाग मुनि गणिका तजि जग माहिं ॥

नारि दोष को देखि वं के रोष करे को नाहिं ॥

चौ० तुम्हरे जो धभयो नहिं राई ॥ ऊपर ते बहु कह्यो बड़ाई  
 नहीं कपराता मानन मोहा ॥ सम चित इन्द्री जीतन कोहा  
 विष्णु लोक तहें बसि हो जाई ॥ प्राजुइ लेन विमान जो आई  
 अर्द्ध झीत बधाधे प्रदू ॥ सदा रही सो तुम्हरे सङ्गा ॥ ॥  
 अर्द्ध अर्द्ध ते सरिता होई ॥ बोधवती कहवाई सोई ॥ ॥  
 जा कोइ मज्जी याहि मँभारा ॥ ता सुपाप सब है हे कारा ॥  
 अस कहि धर्म भे अन्तर ध्याना ॥ गणाले आये सुभग विमाना  
 धोड़ा सहस त्रगे तेहि माहीं ॥ पवन समान उडत जे जाहीं ॥  
 पति पत्नी तेहि माहिं चढ़ायो ॥ लखि सुरहर्षि सुमनवर सायो  
 अपने पुराय प्रताप ते दोऊ ॥ गे हरि पुर जाँनै सब कोऊ ॥ ॥



दो० द्वारे मृत्युबेटी रहे सत देरवन के काज ॥

प्ररांछूँ दे तो मार हूँ ज्यों तीतर के बाज ॥

सो० प्रराज बछूँ द्योनाहिं चली तुरत खिसियाइ के ॥

जातिनि मृत्युघर माहिं है मुनि पुराय प्रतापने ॥

पढ़े सुनै नर को इयह इतिहास जो नित प्रति ॥

मृत्यु प्रकाल न होइ भाषत भीषम पर्वटुमि ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत प्रागर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम-  
सनेही कृत सुदर्शन कथा वर्णनो नाम उलबिंशः अध्यायः १६ ॥ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणपति रासुर्य दानि ॥

बरौं भारथ ग्रंथ की पुनि इतिहास बरवानि ॥

चौ० और सुनौ मैं करौ प्रकाशा ॥ बहुला गऊ केर इतिहासा ॥ ॥

चंद्रावती धुरी सक प्रहई ॥ चन्द्र सेन राजा तहै रहई ॥ ॥

द्विज हरि भक्त बसै तेहि ग्रामा ॥ बहुला गऊ तासु के धामा ॥ ॥

उज्ज्वल प्रहृ हैंस की नाहीं ॥ बिचरै सदा अभै बन माहीं ॥ ॥

रोहत गिरि अमुना तट एका ॥ गुफन माहिं है जीव प्रनेका ॥

रुक्ष सधन बेली उर भानो ॥ चारो तरफ भरा तेहि पानी ॥ ॥

एक दिन बहुला सङ्ग बिहाई ॥ चरत चरत परवत पर आई ॥

सिंह एक निकसा प्रतिभारी ॥ बड़े रदन बदन भयकारी ॥

बहुलै देखि सामने धावा ॥ निकट जाइ प्रसब चन सुनावा ॥

जीवन कठिन जानु निजु गाई ॥ लेहौं तोहिं आजु मैं खाई ॥

जो प्राबेइ हिवन के माहीं ॥ मोसै तो उबरत है नाहीं ॥ ॥

मुनि हरि वचन गऊ बिलखानी ॥ बछरा छोट प्रापनो जानी ॥

के हरि कह रोवै केहि काजू ॥ बचि हौं नहिं हम ते तुम आजू ॥

बद बहुला सुनु के हरि भाई ॥ आपन शोच मोहिं नहिं गाई ॥ ॥

जो उपजै सो निश्चय नाशै ॥ जो नाशै सो पुनः प्रकाशै ॥ ॥

प्रीतिपुत्रकी हृदयमें गाढी ॥ तेहिते मोह अग्नि मोहिं बाढी  
प्रथम पुत्र जावामें याही ॥ पियत अमै पय तरानहिं खाही  
सो० बच्छें सीर पिछाड़ ॥ फिरि में इह नै आइ हों ॥

तब तुम लीन्हों खाइ ॥ सुनि बोलीं मगराज हैं सि ॥  
दो० जो कोउ सली चढ़त पर लगन लिख विधाय ॥  
तैसे तैं मृत्यु भूलि कै बछरा के दिग जाय ॥

चौ० मेरे फन्द आइ जी परेऊ ॥ सो जानौ जग जन्म न धरेऊ ॥  
तैं बाहें निज पुर की जाना ॥ मोहि बनाये निपट दिवाना ॥ ॥  
घर में जाय पुष को पै हों ॥ प्राण देन फिरि काहे करे हों ॥ ॥  
ततैं हों नहिं देहों जाई ॥ सुनि बहुला बोली अकुलाई ॥  
विप्र गऊ पितु मातैं मारै ॥ बनित बालक गुरु संहारै ॥ ॥  
कन्या व्याहि और को देखे ॥ दोउ जनन ते पैसाले वै ॥ ॥  
साधुन की निन्दा मुख गावै ॥ हरि हरत ज जो आनहिं ध्यावै  
इन कर मन का पाप जो जागै ॥ नहिं आवैं तो मम शिर लागै  
भूँठी सारिब सभा महं बोलै ॥ अतिथि निराश बास ते डोलै ॥  
तुला चढ़ाइ घाटि फिरि देखै ॥ माफिन में पुनि पातहि लेवै ॥  
कथा होत जो दुन्द मचावै ॥ बिघ्न करे होने नहिं पावै ॥ ॥  
चेरी ज्वारी रत पर नारी ॥ हरि हि सक मद मास अहारी ॥ ॥  
येने कर्म किहे जो पापू ॥ नहिं आवैं तो मम शिर छापू ॥ ॥

दो० हरि बिमुखन ते मित्र तारा मजनन ते रोष ॥

जो नहिं आवैं तो परे मेरे शिर ग्रह दोष ॥

चौ० मात पितैं जे सेव नाहीं ॥ भली वस्तु भैं छिपि कै खाहीं ॥  
देविश्वास दगा करि जावैं ॥ साधु गुरू सें दोष लगावैं ॥ ॥  
हरि हरि जन गुरा कहें सुनई ॥ पर अपकार लागि शिर धुनई  
ज्यौं रो पाप कर्म जो होहीं ॥ नहिं आवैं तो लागै मोहीं ॥ ॥



सुनतसिंहबोलाहेयाई॥सपथनारमेरिमनभाई॥॥  
 हमेरिमनविश्वासतिहारा॥जितचोहोतितदेगिसिधारी  
 प्रायेप्रातुरक्षीरपियाई॥असजनिजानेदोहरयोंबनाई  
 दो० अहोसिंहतपठगानकीसमरथकाकोआहि॥  
 दगाचहेजोअपोरकोसोईशठठगिजाहि॥॥  
 चौ०असकहिआससुहरिकोयाई॥हुंकरतबहुलातुतसिधाई  
 पहंचोजबबछराकेतीरा॥बालबिलोकिगईसबपीरा॥॥  
 अंगजजननिदेखिदिगआवा॥चूमिचाटिमादधपिकावा  
 चितउदासअम्बाकरिजानी॥बोलाबरबअशहैबानी॥  
 मातुबिकलदेखोंमेंतोही॥कारराकौनबनायोसोही॥॥  
 बहुलाकहापियहुसुतक्षीरा॥जेहिकारराआइतवतीरा  
 आजुनिहारिलेहुमोहिबेदा॥कल्हितेनाहैहोईपुनिमेंदा  
 बनमेंहरिखेखोकहिखैंहों॥सोहैदेआइउफिरिजैंहों॥  
 बोलाबरबजाउंमेंमाई॥तेरेबदलेमोहिहरिखाई॥॥  
 धर्मवानमातातैंआही॥तवसेवामोहिंकरनोचाही॥॥  
 जातेममहोवैउद्वारा॥मुनिबहुलाअसबचनउच्चार॥  
 दो० हेसुतआईमृत्युममतेरीआईनाहि॥  
 मेरीबदित्कौनबिधिजैहैहरिसुखमाहि॥  
 सो० मुनुसुतममउपदेशानखीजातिरूपशुद्ध॥  
 सरिसुशस्त्रअकुलेश॥इनविश्वासनकीजिये॥  
 चौ०असकहिचलिगोवनदिगआई॥देखिलोसुभीसबभाई  
 पृथनलीकुशलकितरहेऊ॥गिरियरगइनुसिंहतहंगहेऊ  
 खायेलेतरहैमगराजा॥सोहदेइआइनुसुतकाजा॥॥  
 सबसोंबिनयकरोंकरजोर॥हमाकीजियेअंगुनमेरि॥  
 होंअबजातसिंहकेपासा॥सुनतसखीसबभईउदासा॥



बोलीबिलख श्राव्य अस कहई ॥ भूतै कहिय प्रारा जो रहई ॥  
 तेहिने बहुला तुम मति जावो ॥ घर धेवनिज प्रारा वचावो ॥  
 बहुला कहा सखी सुनिलेह ॥ अस उपदेश हमें अनिदेह ॥  
 प्रापन प्रारा वचन के हेता ॥ भूत कहै तेहि जानो प्रेता ॥  
 पर के प्रारा भूत कहि बोंचै ॥ भूत नहीं सा जानहु सांचै ॥  
 जाकी मृत्यु मरी नर सोई ॥ प्रापु प्रकेलो संगन कोई ॥  
 सत्य समान धर्म कोइ नाही ॥ पापन भूत सरिस जग नाही ॥  
 शिव ते भूत कह्यो चतुरानन ॥ जग महं पूज्य नहीं तेहि कारन ॥  
 सिध ते भूत नदी गो कहै ऊ ॥ भय्य प्रभय्य गुह्य है बहे ऊ ॥  
 हरि प्रतिनिन्दा भूत धर बानी ॥ भये बाध सोइ पातक जानी ॥  
 उमाशंभु ते भूत उचारा ॥ तेहि कारणा दुख लहो ॥ प्रपारा ॥  
 नर बाकु म्भार धर्म बर बाना ॥ तेहि अध भयो प्रंगुष्ट परवाना ॥  
 तेहि से सत्य तजब हम नाही ॥ अस कहि चली केशरी पाहीं ॥  
 नमस्कार सब गोवन कीन्हा ॥ सत्य हेत जीवत तनु दीन्हा ॥  
 चलत बहुला तहें आई ॥ बैठो रहै जहौ भूग राई ॥  
 बोलत भई सिंह मोहिं खावो ॥ हों आई निज सुधामियावो ॥  
 देखि व्याघ्र कह बैठो माई ॥ प्रबन खाव तोहिं चहै मरि जाई ॥  
 सति बादी कहें दुख को पावै ॥ तिमिर कतहुं दिन मरिहि मिशवे ॥  
 कीन्हों सत्य जौन कछु कहै ऊ ॥ तब प्रावन मोहिं प्रचर जभय ऊ ॥  
 दो० सत्य माहिं सब लोक है सत्य माहिं सब धर्म  
 ज्ञान मुक्ति है सत्य मैं सत्य माहिं शुभ कर्म ॥  
 धन्य धाम तव धन्य पुर धन्य चरन तरा जौन ॥  
 धन्य धरणि जहें पग धरो धनि कि सान है तौन ॥  
 चौ० धनि तव क्षीर धन्य जिन पीन्हा ॥ धन्य तुम्हार दर्रा जेहि कीन्हा ॥  
 मैं निज भागि धन्य करि चीन्हों ॥ जब ते दर्रा प्रापु को कीन्हों ॥



अबबहुलासो दीजे ज्ञान ॥ जो हते होय मोर कल्याण ॥  
 बहुला कहा मिह मुनिलेह ॥ हिसा करन छाड़ि अब देह ॥  
 हरि सुमिरां सें तन मन दीजे ॥ यह उपदेश मानि मम लीजे  
 को तुम हो सो कहहु बरवानी ॥ मुनि कराठीर वबोलाधानी ॥  
 हे स्वामिनि मैं हों गंधर्वी ॥ विद्या रूप केर उरगर्वी ॥ ॥  
 देव आपदा पीतनु पायों ॥ यहितन ते बहु पाप कमायों ॥  
 तुमरे दरग भये अधनाश ॥ कूटी आपहृदय परकाश ॥  
 मैं प्रसन्न हों तुम घर जाई ॥ मम अपराध क्षिप्तो देखे माई ॥  
 अस कहि हरि सुमिरन सें लाग्यो ॥ भोजन नीर देह मुख त्याग्यो  
 कछु दिन सें तनु कूटत भयऊ ॥ चढ़ि विमान सुरपुर कहें गयऊ  
 बहुला जब आई निज धामा ॥ पुत्र सरिवन पायो बिष्णु नामा ॥  
 सत्यवृत्ति सबहिन उरधारी ॥ बरख सहित भये धेनु सुखारी  
 हरि गीतिका मुख सायरहि कछु काल चलत विमान लेन  
 जो आग्रह ॥ नृप सहित पुरनारि नारि दुमपशु आदि सबनि  
 चढ़ायह ॥ लै उड़ै गगलखि देववरं वै सुमन घनजयजय  
 कियो ॥ गयो लोधि सातों स्वर्ग परगालोक सें बासालियो ॥  
 दो० बहुला हरि सम्बादनित कहै सुनै जो कोइ ॥  
 हे सदा प्रानन्द मैं मृत्यु अकाल भोइ ॥  
 छुप्ये धाम माहिं जो पंदे सुख बालक का होई ॥ गऊ खरि  
 क जो पंदे बृद्धि गोवन की सोई ॥ दुखी होइ सो पंदे नहीं तो  
 अब गान करई ॥ होइ सकल दुखनाश और तन रंगै हरई ॥  
 बहुत महातम भाषमें कह्यो ॥ कछु कमें गायकै ॥ मुक्ति चहै  
 रघुनाथ भजु राम नाम मनु लाइ कै ॥  
 इति श्री बिष्णुसामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुना  
 थदासराम सनेही कृत सुदर्शन बहुला कथा बरानी नाम



विंशोऽध्यायः २० ॥

दो० सुमिरिगमसिधुसन्तगुरुगणपयोगसुखदानि॥  
चरणौजौनिनकीकथाकछुअसकंदवरवानि॥

सो० मौरध्वजनपदकधर्मधुरंधरनीतिरत॥  
रामभक्तिकीदेकबधूपिङ्गलापतिव्रता॥

चो० तासुराजकोइदुखानरहई॥ धनअधर्मकरभूपनलहई॥  
बालबृद्धयौवननरनारी॥ वरै जौनतेहिचगरमंभारी॥ ॥  
सबमिलिकरैभक्तिहरिकेरी॥ नृपगनिउरप्रीतिघनेरी॥ ॥  
मालातिलकसहितजोआवै॥ सुनतैनृपआगेउठिधावै॥  
भवनलायकेचरणपरवारे॥ चरणोदकसोइमुखमेंहारे॥

दो० गंगनहाइसहस्रद्वारावतिशालजान॥ ॥  
सन्तचरणजलजोपियेतुलैनतेहिसमजान॥

सो० सिंहासनबैदाय। षोडशविधिपूजनकरै॥ ॥  
नितनबनेहबदाय। सैवैनृपसुतनारियुत॥

चो० जेहिदिनसन्तनकोईआवै॥ तेहिदिनप्रापुनभोजनपावै॥  
चोरसातमिलिकीन्हबिचारा॥ हरिजनकेआधीनधुवारा॥  
साधुनकेरभेधधरिलेह॥ सबचलियेमौरध्वजगेह॥ ॥  
नृपतेप्रथमसेवकराई॥ आतपायमूसनधनआई॥ ॥  
असकहिसुन्दरभेषबनाये॥ सातौंहरिराजागृहआये॥  
देखिदराडवतकीन्हमहोपा॥ मानौलह्योस्वातिजलसीया॥  
पदपरवारिआसनबैदार्यो॥ धूपदीपआरतीउतार्यो॥  
अंतहपुरमेंआसनदीन्हो॥ सुतबनितासबसेवाकीन्हो॥  
एकदिवसराजामनआई॥ बनकीशोभादेखियजाई॥  
छुप्येअसविचारिकसबाइ॥ अश्वचढिचलेभूपजब॥  
चमचारअसवारअनुगपाहेलागेसब॥ सघनविपिनमें



गये फिर जह मृग करि हरिसंग। बोलत विविध विहंग फू-  
 ल फूल नानारंग ॥ बिहरत दीप्ता दिवस निशि पाय कीन्ह वि-  
 धाम तहें। शुभत डाय पुर इन कमल करत भंवर गुञ्जार जहें ॥  
 इहो देखि घर सन चार मूसन मन लाये। हीरा हेमनिकारि भ-  
 वन बाहिर धरि आयो ॥ दोबत बीती रैन लोभ बस कछु न जा-  
 न्यो। रानि हिं डार्यो मारि बांधि बसुं बेगिय रान्यो ॥ इत ते सा-  
 ली जान हरि उत ते प्रावत राज। देखि बहिये संशय कस्यो प-  
 र्यो चरण तजि बाज ॥ बोल्यो दोउ कर जोरि क्षमो प्रभु गुन ह-  
 र्यो रानी नारि सुभाव प्रबला। किहि सितुं म्हारी। चलिये व-  
 हरि निकेत चेत हमरे न बहोई। सुनिग गये सुखाइ राय ते  
 बोलि सोई साधन हीं हम चार हैं धन मूसा सोलै ह। है दयाल  
 हम सबन पर जीव दान प्रबदेहु ॥ कह्यो भूप धन धाम बाम  
 सुत देहु हमारी हंवे सकल तव नाथ बुधा कत होत दुरवारी ॥  
 ऐस बचन जनिक हो लोग सुनिकरि हैं सोरा। कहि हैं पर गढ़  
 गुप्त संवे हीर जन हैं चोरा ॥ गहिकर लाये भयन को सिंहासन  
 बैठाइ। रानि हिं मृतक निहारि के बोचन मन में प्राय ॥  
 कुराड लिखा लाग्यो पुनि सेवा करन नृप संतन की प्राइ  
 कनक थार सात हुन के धोये चरणा बनाइ ॥ धोये चरणा बना-  
 इ मृतक रानी तहें लायो। कुराड हि कुराड मिलाइ राम कर  
 ध्यान लगायो ॥ सींच्यो चरणा मृतहि प्राण बट माहीं जाय्यो।  
 उदीत रत हरषाइ भूपलखि भागवत लाग्यो ॥  
 दो० आजु तुम्हें निद्रा बडुत कहों की घेरी प्राइ ॥  
 सन चले जब रुठि कै राख्यो क्यों न मनाइ ॥  
 हाथ जोरि रानी कह्यो सुनों प्राण पति वात ॥  
 सोइ गई मैं आजु प्रति इन्हें न जान्यो जात ॥

कह नृप पद प्रबते गहौ गहे रानि मुख भेरि ॥

मन मै भयौ न मैल कहु लागे सेवन केरि ॥ ॥

प्रतिमा तीरथ मंत्र गुरु भेरव जे बेषाव कोइ ॥

जाकी जैसी भावना ताहि तैस फल होइ ॥ ॥

चौ० तब हरि पुनि २० प्राय सुमाँगा ॥ बोले भूप सहित अनुरागा ॥

जोधन चहौ सो हम ते लीजै ॥ चोरी कर्म छाँडि प्रभु दीजै ॥ ॥

जन्म भरे कहें सम्पत्ति दीन्हें ॥ हरष समेत विदा तब कीन्हें ॥

ऐसी भक्ति देखि भगवाना ॥ मन बचक्रम ते निज जन जाना ॥

मोर ध्व परदाया कीन्हें ॥ चक्र सुदर्शन रक्षक दीन्हें ॥ ॥

ईति भीति दुख दालि द ० प्राँवै ॥ नृप के नगर न बैठन पाँवै ॥ ॥

एक दिवस यम दूत जो आये ॥ चक्र सुदर्शन लखि रप टाये ॥

भागत यम पहुँ पहुँचे जाई ॥ दराइ फाँस सब दिहिनि चलाई

लखि हरि कहाँ वै का भाई ॥ सुनि गरा बोले बचन रिसाई ॥ ॥

दराइ हमार तिहूँ पुर माहीं ॥ ऊँच नीच को उँछाँड़ जन नहीं ॥ ॥

मोर ध्वज पुर जानन पायनु ॥ रेवे देहु चक्र इहाँ भगि ० प्रायनु ॥

यह अनुचित देखी महाराजा ॥ हम ते यह सपरी नहिं काजा ॥ ॥

सुनि रवि सुत मन क्रोध बढाये ॥ दूतन सहित विष्णु पहुँ ० प्राये

शीशनाइ कह ० प्रज हमारी ॥ सुनहुँ नाथ विभुवन मुख कारी ॥

तब आज्ञाते जगत मभारा ॥ सब पर रहत है दराइ हमारा ॥ ॥

मोर ध्वज पुर दूत हमारे ॥ गेत है रेवे द्यौ चक्र तुम्हारे ॥ ॥

दो० दूतन कर प्रपमान भा दीन्हिनि फाँस चलाय ॥

सोइह कारणा को न है नाथ कहौ समुभाय ॥

हैंसि बोले हरि सुनहु यम नृप सम भक्तन कोइ ॥

तेहि ते दीन्हें चक्र निज रखवारी कहें सोइ ॥

कैहि बिधि जावैं दूत तब मेरे जन के पास ॥



मुनतपित्रपतिजोरिकरकीन्होंवचनप्रकास॥

छुप्ये भूपकौकेहिभाँतियज्ञसोकहियेमोहों॥ कहप्रभुकहेन  
वनीचलौदिरवगवोंतोहों॥ यमहि सिंहकरि प्रापुसाधुकर  
पवनायो॥ आयेनृपदरबारदेरिवउठिपहधिरनायो॥ सिंहासन  
पधरायकेबोड़सर्वाधपूजनकरी॥ भोजनकोपूछतभयोतव  
नृपतेबोलेहरी॥ सिंहएकममसायप्रथमभोजनतेहिदीजे॥ क  
ह्योभूपकाचहीतवनिततवीरहिकौजे॥ सुतकोमांसजुदेहुआ  
नसाउजनाहिरवाई॥ किंतौभक्तिप्रयातजहुकिंतौशिशुलेहुबो  
लाई॥ भक्तितुम्हारीनातजौकोटिबिघनकिनहोइ॥ सुतबनिता  
धनधामतनसङ्गजाँयनहिँकोइ॥

च्यौ॥ हरषसहितइकदासबोलाई॥ कह्योकिआनहुसुतहिलेवाई  
आज्ञासानिकुंवरदिगगयऊ॥ खेलतबोलिलयावतभयऊ॥  
पुत्रहिलरिवनृपवचनप्रकासा॥ हमरेइकआयेहरिदासा॥ ॥  
तिनकेसङ्गइकनाहरआहई॥ तुम्हरेमांसखानसोकहई॥ ॥  
सोकसआज्ञाअहेतुम्हारी॥ भेटहुसंशयआजुहमारी॥ ॥  
सुनिताम्रध्वजकहशिरनाई॥ धन्यसोतनपरस्वारथआई॥  
धन्यधामजहंप्रतिथकिसेवा॥ धन्यशिष्यजानैगुरुदेवा॥ ॥  
धन्यनारिपतिवतअनुसरई॥ धन्यपुत्रपितुआज्ञाकरई॥ ॥  
धन्यग्रामजोसुरसरतीरा॥ धन्यतपीतामसबिनधीरा॥ ॥  
धन्यसोनगरजहारजधानी॥ राजाधन्यधर्ममतिसानी॥ ॥  
धन्यदासजोआयसुमानै॥ धनिस्वामीसेवापहिचानै॥ ॥  
धन्यज्वानजोइन्दीजीतै॥ धन्यसोप्रीतिनयाँचैमीतै॥ ॥  
धन्यसभाजहंपरिउतहोई॥ परिउतधन्यक्रियायुतसोई॥  
धनिधनपाइजोन्यागनकरई॥ धन्यदरिद्रीपापनचरई॥ ॥  
धन्यसुरीजोबिषयनिवारै॥ धन्यसाधुजोमानसमारे॥ ॥

धन्यसो क्षमासमरमहः प्रानै ॥ धनिदाता नहि दानवरवानै ॥  
 धन्यसो द्रव्यदानमहं लामै ॥ धनिप्रभुतामहमाननजागै ॥  
 धन्यकर्मजो भगवतहेता ॥ धन्यज्ञानवैराग्यसमेता ॥ ॥  
 धन्यविरतिजोरनिभगवानै ॥ धन्यसोकविहरिचारेनवरगानै ॥  
 धनिरपरः प्रोगुनै छिपावै ॥ धनिविद्याविकारमिटि जावै ॥

दो० दयावानसो देशधनिकहतथेदबुधलोड ॥  
 रामभक्तजहं रूपजै धन्यजातिकुलसोड ॥  
 धन्यधरीरघुनाथतबजबहोवैसतसंग ॥ ॥  
 जन्मतासुकोसफलजोरंगैरामकेसंग ॥ ॥

चौ० अहोपितामोहिंभासुखभारी ॥ जोहरिमागीदेहहंमारी ॥  
 अबयहपरस्वारथमें प्रायो ॥ धनिजननीऐसीतनजायो ॥ ॥  
 रोगदोषबसछूटेकाया ॥ स्वारथशास्त्ररजाइकदाया ॥ ॥  
 विष्ठाकर्मखाकहोइजाई ॥ कहौकौनस्वारथफिरि प्राई ॥ ॥  
 मातामारमुईदशमासा ॥ सहीअनेकभांतितेहिचासा ॥ ॥  
 सोतनलग्योनपरहितमाही ॥ जीवनजन्मधरगहैताही ॥ ॥

दो० भजनपदारथकर्मशुभसधैपायनरदेह ॥  
 जीवनताकोसफलहै अरुसबकेमुखरेवह ॥  
 असकहिपितैनवायशिरचलिभेकुंवरप्रवीन ॥  
 प्रायेकेहरिसंतजहं कहेवचनहै दीन ॥ ॥

चौ० अबभोजनहमकाकरिलीजै ॥ अहोसिंहतुमदेरनकीजै ॥  
 बारबारऐसेजबकहेऊ ॥ सुनियमनिजतनप्रगटतभयऊ ॥  
 रूपचतुर्भुजहरिकरिलीन्हा ॥ प्रगटनृपतिकहंदर्शनदीन्हा ॥  
 धन्यस्तुमधन्यमुबारा ॥ आपुसराहतसिर्जनहारा ॥ ॥  
 कहरवितनयधन्यहोराई ॥ सुततुम्हारतुमतेअधिकारई ॥  
 जसिशीपतितबकीनबड़ाई ॥ सोनिजनैननदेख्यो प्राई ॥



बोले प्रभुवरुमागनरेशा॥ प्रगात पालमैरोयह पेशा॥ ५  
 मोरध्वज कह सब सुख दादनि॥ आपनि भक्ति देहु प्रनपाइनि  
 एवामस्तु कहि कृपानिधाना॥ बोले पुनि सुनु भूपसुजाना॥  
 करौ भक्ति जब लगु यह देही॥ प्रन्त समय मस धाम सनेही॥  
 अस कहि हरिय मतुरत सिधायो॥ अपने मन्दिर आये॥ ॥  
 धर्म गगान ते कथा बरवानी॥ भई प्रीति मन मिटी गलानी॥ ॥  
 जो जन चरित सुनै नित येहा॥ होइ सन्त पद पावन नेहा॥ ॥  
 इति श्री विश्रामसागर सव मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीधुनाथदासराम सने-  
 ही कृत मोरध्वज बरानिनाम एक विशेषः अध्यायः २१ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गरापगिरा सुख दानि॥  
 बर नौ हरि प्रसूति मत कह सोइ कथा बरवनि॥  
 रानिहि मास्यो हरि नलरिव तदपि न भयो प्रभाव॥  
 पुनै दीन्हों द्वापि जनहित मोरध्वज राव ॥ ॥

चौ० यहि विधि भक्ति करै नरनाहा॥ दिन प्रति बाँदै अधिक उछाहा  
 भूपधर्म जो बेदन गाये॥ सो सकलौ क्षिति पतिकरवाये ॥ ॥  
 सुरभूसुरसुरभिन प्रति मानै॥ बेशोको बिषाहि सम जानै ॥ ॥  
 श्रीपति चरणा लीन मन जासू॥ लुब्ध मधुप जिमित जैन पासू ॥  
 बहुत काल यहि विधि चलि गयऊ॥ प्रेर सुनौ जो कसनी लयऊ ॥  
 कीन धर्म सुत यज्ञ कसाजा॥ पत्र बाँधि छाड़्यो बरवाजा ॥ ॥

दो० कृपा बिजै बभूवहन नीलध्वज वृषकेतु॥  
 हंसध्वज प्रेरौ सुभट संगार साके हेतु ॥ ॥  
 चलत बाजि प्रायो सोई मोरध्वज के ग्राम॥  
 तास्रध्वज गहि बाँचि पट बाँध्यो लैन जधाम॥

चौ० चदिराय प्रागे आप सिधायो॥ पछे इत प्रजुन दल आयो  
 होन लागि प्रति माह गंभीरा॥ सूरमगन कदरन मन पीरा ॥ ॥

सातदिवसभरिभई लराई ॥ मोरध्वजसुतजीतिनजाई ॥ ॥  
 अर्जुन आदिवीरजेरहेऊ ॥ दियेविडारिविकलसबभयऊ  
 लखिअचेतनिजमन्दिरआये ॥ बड़पराधभाभूमसुनाये ॥  
 भक्तिकरतजाकीनितरहिये ॥ तिनतेयुद्धकरनकोचहिये ॥  
 महिदुखहरनसुरनसुखकारी ॥ धस्योआयबपुकृशासुरारी ॥  
 सुनिताम्रध्वजकहीजुवाता ॥ अनजानेअनीतभैताता ॥ ॥  
 यहाँकृष्णपारयतेकहेऊ ॥ सातदिवसइहनैहैगयऊ ॥ ॥  
 मोरध्वजहैभक्तहमारा ॥ तेहितेलरेनपैहोपारा ॥ ॥ ॥  
 सुनिकपिध्वजकेभाअभिमाना ॥ हमतेबड़ाभक्तकोआना ॥  
 जिनकेवसनितरहतगोपालै ॥ धनुबंकेरिविद्याउरआलै ॥  
 यहअभिमानकृष्णप्रभुजाना ॥ लगेविचारनइमिभगवाना ॥  
 अष्टपदीकुं जायद्वैततेज्ञानजायकुलद्विजैसताये ॥  
 जायनीचसंगसुमतिजायसुधभोजनखाये ॥ जायक्रोधतेध-  
 र्मजायआदरनितमंगे ॥ जायनीतिबिनराजजायशूरापनभा-  
 गे ॥ जायज्ञानतेमोहजायअघहरिगुरागाये ॥ जायतिमिर-  
 रविउदैजायविद्यालसआये ॥ जाययतीवसकामजाययश-  
 लोभबहाये ॥ जायगृहीबिनकारजायसुखसबहिसताये ॥  
 जायकुमंतितेदर्विजायसंतोषतेममता ॥ जायकपटतेप्रीति-  
 जायरिसकीन्हेसमता ॥ जायसखातेशोचजायपातकतेशो-  
 भा ॥ जायसुपथतेरोगजायबैरागतेलोभा ॥ जायजन्मअरुमर-  
 गारामकेसुमिरनकीन्हे ॥ जायगुरूतेभर्मकर्मनिजरूपहिची-  
 न्हे ॥ शान्तिजायपरवर्तितेदोषजायदिहेदान ॥ कहेरघुनाथ-  
 योंजातहैभक्तिहिकेअभिमान ॥  
 चौ० तातेअबहीदेहुमिटार्ई ॥ नातरुबढ़तबढ़तबढ़िजाई ॥  
 कृष्णकहापारथसुनुमोहीं ॥ आबोभक्तदेखावोंतोहीं ॥ ॥



प्रापुबहु द्विजवपुधरि लीन्हा ॥ बालक रूप विजय कह कोन्हा ॥  
 प्राये चलै मोरध्वज द्वारा ॥ हरि पूजन सारहे भुवारा ॥ ॥ ॥  
 द्वारपाल जारखर जनार्द ॥ बोले नृप बेदारहु जाई ॥ ॥ ॥  
 कहत दोऊ जन चले रिसाई ॥ मुनि नृप परे चराम हँ धाई ॥  
 करि सनमान सु आसन दीन्हा ॥ हाथ जोरि दिसि पूछे लीन्हा ॥  
 कोन हेत प्रायो मह राजा ॥ आय सु होय कौंसो दुकाजा ॥  
 हम सारि खेत तेवन तन आना ॥ तुम्हरी सेवे ते कल्याणा ॥ ॥  
 दो० विप्र कही जो देन की करो प्रतिजाराइ ॥

तौ मै माँगौ जाहिते बचन ब्रह्मा नहिं जाइ ॥

चौ० कह नृप कीन्ह प्रतिजा माँग्यो ॥ तब तौ विप्र कहन अस लख्यो ॥  
 जात रहै नवन हरिय क मिलेऊ ॥ गहि सि आइ बालक मोहि दिलिऊ ॥  
 तब मै कह्यो छोड़िय हि दीजै ॥ याके बदले मो को लीजै ॥ ॥  
 सिंह कहा मोरध्वज राज ॥ ता सु अंग दाहि न ले आऊ ॥ ॥  
 तौ मै बालक देहु बचाई ॥ नाहि तौ याहि डारि होखाई ॥ ॥  
 होत ब्रह्म देन कह राई ॥ छाड़ि सतबदहु सोह करायै ॥ ॥  
 सोई लेन प्रायो तब द्वारा ॥ अथर हेत नहिं कछु हमारा ॥  
 मुनि रानी बोली हरषाई ॥ अर्धंगी चिय बेदन गायै ॥ ॥  
 ताते मोहिं के हरि को दीजै ॥ पुत्र कह्यो नहिं मो को लीजै ॥  
 बहुरि कृपा बोले मुनि लेहू ॥ के हरि बचन कहाय कयेहू ॥  
 स्त्री पुत्र हाथ गहि आरै ॥ चीरै हर्ष समेत भुवारे ॥ ॥  
 मुनि आरा नृप लीन मंगाई ॥ रानी पुत्र गह्यो तब प्राई ॥ ॥  
 सिरधर चीरन लागे कैसै ॥ बदर्द उभै शरु कहें जैसे ॥ ॥  
 चीरत प्रायो नासा तीरा ॥ बायें दृग भरि आया नीरा ॥ ॥  
 दो० निदि कहि नीर लरि बचले कृपा अनखाइ ॥  
 दोऊ करिये कि करोत नृप पूछ्यो बाहु कराइ ॥

चो० केहिकारणाप्रभुचल्योरिसाई॥ तौनिवातमोहिंकहौं बुझाई  
 देतझोभतोरैहैं॥ प्रावा॥ तौहितेयक॥ प्रस्वकजलछावा॥  
 कहनृपमोरेझोभनराई॥ वाम॥ प्रंगरोवतयाहिलराई॥ ॥  
 भिनलरयौपरमारथमाहौं॥ मोसमभाग्यहीनकोउनाहीं॥  
 तुम्हरेदहिनेतौनहिं॥ प्रावा॥ मुनतकृपालमहासुखपावा॥  
 फर्योसीसकमलकरजबहीं॥ भईनबीनदेहनृपतबहीं॥  
 सजलनयनप्रभुहृदयलगायो॥ जयकाहिदेवसुमनवरपायो  
 कह्योकिनृपमांगहुवरदाना॥ जोइछामनहोइसुजाता॥  
 कोटिभौतिजोदेहुंभुवारा॥ तुमतेतबहुनहौंउद्वारा॥ ॥  
 ऐसीभक्तिकीन्हितुममोरी॥ दृष्टिनसूधिहोतदिशितोरी॥  
 दो० भूपकहाजोइयदहूकरैतिहारेसाथ॥ ॥

ताकौतुमगिरिमेरुसमभानिलेतहौनाथ॥

चो० एकबातमांगतहौंस्वामी॥ सोमोहिंदीजैप्रंतरयामी॥  
 प्रागेजुगलारीकलिकाला॥ कुदिलप्रपावनरूपकराला॥  
 तामेकसनीभक्तनकेरी॥ लेहुननाथप्रजयहमेरी॥ ॥  
 कलिमेभक्तनामकी॥ प्राशा॥ कसनीलिहेनहोइप्रकासा॥  
 मुनतबचनकहविहंसिमुरारी॥ जोभाग्योसोदीन्ह्योहारी॥  
 प्रपनेवास्तेप्रबकहुकहिये॥ प्रभुपदप्रीतियहीमोहिंचहिये  
 कहप्रभुधन्यधन्यतुमराजा॥ धन्यपुत्रतियसहितसमाजा॥  
 प्रसकहिहयलैविदाजोभयऊ॥ देरिवदप्यारथकरगयऊ  
 गीतिकाकुं० जबदेखिनृपकीभक्तिकौ॥ अभिमानपारथकोग  
 यो॥ गिरिचरणाश्रीगोपालकेहोयदीनप्रसबोलतभयो॥ म-  
 हिसन्दमोसमकोउतुमतेनाथहौंसिवालई॥ धरगतेहुपरप्रहं  
 कारणावतभक्तमोसमनाहई॥ लोभवशगुरुमित्रभातापुत्र-  
 बहुजीवनहिन॥ समुक्तिकुलकरतूतिप्रपनेदोषजावैनहिं॥



ने ॥ पर पिता द्विज कानीन हमरे पिता गो लक गारजू । हम कुंड  
क दुःप्रगुज जुवारी हट्ट हारी नारिजू ॥ प्रतिकष्ट करि भो व्या  
हु सो प्रिया पंच भरतारी भई । गुराहीन हरि छल पीन पावर नि-  
धन निखल निर्दई । ऐसे पर नहिं जानियत धौं काहितेरी भयो  
हरी । बन बान विष अट्यारि पुन ते सब और तुम रक्षा करी ॥

छुप्ये दुरबल केवल भूप भूप केवल कोवल है । तस करि के  
बल राति धनिहि धन धाते कुल है ॥ मूरख केवल भौन मानिनी  
केवल रोदन । कंध केवल खल वयन मयन के बाम विनोद-  
न ॥ द्विज के श्रुति कवि बल वरारया के परसर कल है ॥

तेहि प्रकार यह नाथ तुम नाथ हमारे बल प्रहो ॥

दो० कहर बुनाथ सनेह नर यहि विधि विनती कीन्ह ॥

भार ध्वज की यह कथा यथा बुद्धि कहि दीन्ह ॥

भार ध्वज की यह कथा पढ़ै सुनै नित नैन ॥

होइ भाव भक्त न विषय बंदै राम वद प्रेम ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत प्रसार ग्रंथ उजागर श्री खुनाथ दास राम  
सनेही कृत भार ध्वज प्रारब्धान्तरी नो नाम द्वा विंशोऽध्यायः ॥

दो० सुभिर राम सिय सन्त गुरु गराय गिरा सुख दानि ॥

वर गोमहा पुराण को प्रवइति हास बरवानि ॥

सुनहु सुनिहु मनु लाइ के सुंदर कथा प्रनूप ॥

कही जो न मुक देव जी सुनी परीक्षित भूप ॥

चौ० सोई कथा मै कहौ बभाई ॥ राम चरणा जो हिरति अधिकारि  
सत युग भे मनु जग यश जासू ॥ नृप उत्तान पाइ सुत तासू ॥

सुखि सुनीति रहे दोउ रानी ॥ विधु बदनी गुरा रूप मयानी ॥

उत्तम नाम सुखि सुत जायो ॥ ध्रुव सुनीति के बेदन गायो ॥

सुखि मही पै प्रिय अधिकारि ॥ सो सुनीति के महल न जाई ॥

अन्नसेरभरिदेइ भुवारा ॥ ताही ते दोउ कोरें गुजारा ॥ ॥

पांचवर्ष के ध्रुव जब भयऊ ॥ खेनत नृप जहैं तहैं चलि गायऊ  
ठाढ़ भये आगे हरुगार्ड ॥ खरिख नृप रुख नृप लियो गोद उछार्ड  
दोरिख सुगवि सति उठीरि सार्ड ॥ दिहि सि उत्तारि गोद ते धार्ड ॥

दो० बैठन को नृप गोद जो लिखा होत तव कर्म ॥

तौ सुनीत के जठर में काहे कलेत्यो जन्म ॥

पूत प्रभा गिनिके रहै चढ़ो गोद नृप केर ॥

अन्न मिलत है सेर भरि सो उन मिलि है फेर ॥

छुट्ये तप बिन होइ किराज साज बिन होइ किराज ॥ गुण  
कि होइ बिन टहल बिना गुण होइ कि चारज ॥ धन बिन मित्र  
कि होइ मित्र बिन होइ किसद सुख ॥ सिद्धि कि बिन विश्वास  
दास बिन मिटै कि भव दुख ॥ अघ बिन होत कि अयश शुभ  
यश कि होइ बिन दान के ॥ होत भुक्ति युत मुक्ति कहें बिना भ-  
जे भगवान के ॥

चौ० अस कहि बांह पकरि ध्रुव केरी ॥ मंदिर बाहर दीन खंदेरी ॥

रोवत ध्रुव माता दिग आयी ॥ देखत जननी गोद उछायी ॥

केहि मास्यो सो कहिये मोसे ॥ का प्रपराध भयो मुत तोसे ॥

कह ध्रुव पिता गोद मोहिलो न्हा ॥ रानी छिनि डारि माहि दी न्हा ॥

दूरि कहि धरते काढ्यो ॥ सुनि दुख बचन म हिंदु ख बाढ्यो ॥

ऐसी विधि मो को दुख दियऊ ॥ राजा कहू मनेछो नहिं कि हेऊ ॥

ताते मैं पूछत हौं तो को ॥ का की शरणा अहे मुख मो की ॥

कह्यो मातु मुख निधि भगवान् ॥ सोइ पितु मातु बंधु सग जानू ॥

जेहि प्रभु राखि गरभ से लीन्ह्यो ॥ पानि के बुंद प्रगट बपु कीन्ह्यो ॥

गरभ मो चिपुनि बाहेर लायौ ॥ पमातु पयोधर सीर पियायौ ॥

यहि विधि पुष्ट कि हे सब अंग ॥ जनमत परत तजे नहिं संग ॥



जिय प्रपराधीताहि न जानै ॥ संकट परतें वेकहु मानै ॥  
 ताते संहै विपाति बहु भांती ॥ चोरा सील ख प्रावत जाती ॥  
 प्रसजिय जान भजहु भगवानै ॥ सुमिरत जाहि शंभु धरि ध्यानै ॥  
 सो प्रभु विश्वरूप श्रुतिक हर्द ॥ सुनौ तात जहि शंसै दहर्द ॥  
 चरपट कुं पद पताल मिर ब्रह्म धाम ॥ प्रपर लोक है संग-  
 गनाम ॥ नयन दिवा कर दिशा कान ॥ प्रम्वनी कुमार बाजा-  
 सुधान ॥ घन केश प्रभु पति जीह जानु ॥ निशि दिन निमेष  
 ग्रानन कृशानु ॥ दिगपाल बाहु हैं पवन स्वास ॥ रोमा बलि  
 विटप लघु दीर्घ धास ॥ नारी सरिता प्ररु अजा हांस ॥ प्रधर  
 लोभ यम दशन तासु ॥ अस्थि प्रद्विरस शब्द भोग ॥ जांने बि-  
 रला को उचतुर लोग ॥ शिष्य प्रजापति वीर्य तोल्य भृगु दी वि-  
 लास सोइ काल होय ॥ उदर सिंधु सांचो प्रसंग ईशूत दूत-  
 नाजु प्रंग ॥

सो० अहंकार विपु गरि ॥ चतुरानन सोइ बुद्धि बर ॥

मन द्विज राज विचारि ॥ चेतन रूप प्रनूप हरि ॥

दो० सो प्रभु मचरा चरा विधे प्रगाव्याम समान ॥

भजन विनाना हैं लखि परत ज्यों विनमय कृपान ॥

अस विचारि सब मोचत जिगम चरणा चित देहु ॥

मुरदुरल मतनु पाइ कै ताहि सफल करि लेहु ॥

चो० ऐसे बचन मुन ध्रुव जवहो ॥ हाथ जारि बोलै इमित बहो ॥

तुम कत दुखी सुखी बह गनी ॥ तौ न भेद मोहि कहो बखानी ॥

कह गनी प्रथमै तन माहो ॥ सपयौ दान दीन कहु नाहो ॥ ॥

साधु संग हरि भजन न भावा ॥ खर कृकर सम सति गावा ॥ ॥

जस कहु कर्म याच भल कीन्हा ॥ सोइ जन मन विधि मिरल सिरीहा ॥

नहिं जानी कहि मुकत तेरे ॥ भय प्राप्ति गुणा गोविंद केरे ॥ ॥

तेहि ते कोइ दुख नि कटन प्रावै ॥ पराख्य तेहि तनु भुगतो वै  
 दो० जो कहु लिखालि लाट में सो ही वरिनाम ॥  
 चहै पौ धरं क के चहै सही पति धाम ॥ ॥  
 तद्यपि हरि के भजन करि होत सुगते काट ॥  
 नरवर खनत है गई विधि बरधैं बाढ़ बाट ॥

चौ० नाते सुनतु मंसी कहू ॥ राम चरगा पंकज चित धरू ॥  
 भक्ति मुक्ति हरि दरशन पावै ॥ जानि कामना मलव लावै  
 यहि विधि मातु दीन जब जाना ॥ सुनि धुव के प्रतिशे मम माना  
 पूरव का कहु सुकृत जागा ॥ ध्रुव के भयो विमल बेरागा ॥ ॥  
 उठि जन नीते प्राज्ञा भांगी ॥ करि हों भजन विपिनि गृह त्यागी  
 बोली मातु प्रबैतू धारो ॥ सत सम्वत् जनि वन पगु धारो ॥  
 सुधा लया जब प्राणिस ताई ॥ केहि ते भोजन मगि हो जाई ॥  
 शीत उषा वरषा दुख पै हो ॥ का वन बोदि हो काह दशै हो ॥  
 बाघ सिंह बक शूकर प्राई ॥ धौरो जीव बहुत दुख दाई ॥  
 बालक देखि देखैं दुख भारा ॥ का उपाउत बचली तुम्हारा  
 दो० सुनि ध्रुव कह माता तुरत गयो ज्ञान का तोर ॥  
 प्रबहीतै हम ते कहै हरि रक्षक सब दौर ॥  
 गरभ माहि रक्षा करी जहो हित नहि कोइ ॥  
 प्रबका परखिन पालि है विपिनि गये महे सोइ ॥

चौ० अस कहि ध्रुव चलि भै हर पाई ॥ मंत्रिन भन्यो भूयते धाई  
 ध्रुव बालक वन जात तुम्हारा ॥ कानि देश नव है यहि वारा ॥  
 कह नृप सोन सेर जुग देहू ॥ प्रबही ध्रुवै करि तुम लेहू ॥ ॥  
 मंत्री सुनि प्राये ध्रुव पासा ॥ प्रस्थिर करि अस बचन प्रकाशा  
 सेर भरे कर दुइ सेर खाहू ॥ लउदि चलौ धर वन नहि जाहू ॥  
 जहि प्रभु कीन सेर ते दूना ॥ तेहि के भवन प्रवर का सूना ॥



हरिमारगते पितृवनभाई ॥ करे जो कोई कोटि उपाई ॥ ॥  
 मंत्रिन प्राइ कहान पयाही ॥ चले जात ध्रुव प्रावत नाही ॥  
 राजा कह्यो गोव एक दीजे ॥ माने तबै फेरि ध्रुव लीजे ॥ ॥  
 सचिवन ध्रुव को ग्राम सुनायो ॥ तब ध्रुव अधिक सनेह बढ़ायो  
 मन में प्रभे मनोरथ जागा ॥ तुरतै मिलन गोंद इक लागा ॥  
 नाम जपे ते धौं का होई ॥ मोर मन प्रतीति प्रसि सोई ॥ ॥  
 ताते हम प्रबलौ दब नाही ॥ मंत्रिन जाइ कहौ न पयाही  
 तब राजा प्रापु दुखलि आयो ॥ चौधौ कहि प्रार्थ सुनायो  
 बहुरि कह्यो सब राजहि लीजे ॥ नाना भौति भोग चलि कीजे  
 मुनि पितु बचन कहत ध्रुव भयऊ ॥ प्रथमै सेर अन्न नहि द्यऊ  
 जेहि न कोइ ताकर प्रभु सोई ॥ प्रभु जाके ताके सब कोई ॥  
 जब मै राम चरदा ॥ चित दीन्हा ॥ तब तुम नाम राज्य कर लीन्हा  
 हरि सन मुख ते जी फेरि प्रावौ ॥ सती स्वाग करिता हिल जावौ  
 दो० रानी जब ही गोद ते दीन्हां मोहि उत्तारि ॥ ॥  
 तब ही क्यौ न सम्हारेऊ मोह करत प्रबहारि ॥  
 चौ० जब लगि हरि के दर्शन पैहौ ॥ तब लग जग में मुख न देखेहौ  
 मंत्री नृप सब कहि हारे ॥ हठ करि के ध्रुव बने सिधारे ॥ ॥  
 मिले ध्रुवै नारद मग नाही ॥ पूछ्यो कित प्रायो कित जाहीं  
 जाननि जनक को कित तव ग्रामा ॥ हे सुत कहौ कहा तव नामा  
 बोलै ध्रुव पितु मात मुरारी ॥ भ्राता मित्र सोई सुख कारी ॥ ॥  
 सोइ कुल जाति कुटुम्ब परिवारा ॥ सब जीवन को शिव जन हाय  
 जब लग ऐसे पितै न जानै ॥ तब तक भूद संच करि मानै ॥  
 जग महं जेहि विधि बह सब कोऊ ॥ तुम ते कहि समुझावौ सोऊ  
 नृप उ जान पाद पितु प्रहृ ॥ माता उ भे नाम ध्रुव कहई ॥  
 पिता गोद लखि दुखारि माता ॥ दिहि सि उत्तारि कहि सि कडवाता



दे० रोवतजननीपहंगयांतिहिंमोहिंदेहोजान॥

हेसुतमुखसपन्योनहींबिनाभजेभगवान॥

चौ० तबमेवनकाचल्योसिपाई॥सचिवनकहाभूपतेजाई

राजातबबहुलोभदिरवाये॥सबतजिहोहरिशरणातकाये

मुमकोहोनिजनामबरबानी॥मैंबालकनहिंरेदेजानी॥

कहअरविनारदनामहमारा॥गोदाहनबिचरोसंसार॥

सुनिध्रुवगिरेचरगाहरषाई॥अरविउठाइलियेगोदलगई

चलुध्रुवतोहिंफेरिलेजावै॥राजातंसन्मानकरावै॥

राजकरोचलिआहकरीजै॥बालकएकहोइसुनिलीजै॥

सुतेराजदेबनैसिधारे॥सबराजनकीसाखिबिचारे॥

काननसिंहवाद्यबहुगहई॥भालुभेडियादेखतगहई॥

निशिचरविपुलफिरतदुखहई॥बड़ेभयमाततभाई॥

तहंबालककोकौनउधारा॥तातेमानोबचनहमारा॥

सीतउद्यावरयादुखपावै॥सुधातृयाजबअधिकसतावै

तबकेहितेदुखकहिहौराई॥तहंनहिंमातपितानुजकोई

करणीकठिननकीन्हीजावै॥बिपिनजाइकतप्रारागवावै

दे० कहेरघुनाथअनेकविधिसुनिभयहंदेखाय॥

ध्रुवकेतनकनशंकभयगमकृपादृढ़ताय॥

चौ० कहध्रुवहरिदृष्टकसबदावा॥घरबनफिरतचलतबिचगावै

जैसीकर्मभावतीहोई॥तेसीमृत्युपावसबकोई॥

आखिरयहतनएकदिनकीजै॥तेहितेहरिसुभिरगाकरिलीजै

मातापितानारिसुतनाती॥कोकाकोसबपथिकलखाती

इनसबहिनतेसरतजोकाजा॥तोतजिक्योवनजातेराजा॥

राजपाइकेमदहोइआवै॥करैअनीतनरककोजावै॥

राजनरकदेउसंगैहई॥यहितेमोहिंनहिंभावतअहई॥



ततिमोहिं हरिभक्ति दृढावो ॥ कृपाकरो गुरुमंत्र सुनावो ॥

मैंवड भागीहों नर विराया ॥ यहि प्रवसर तव दर्शन पाया ॥

दो० लागत लय ज्यों वृष्टि में बूझत वोहित साय ॥

मरत धन नगर मिलै तिमि मोहिं मिलो तुम नाथ ॥

बन्धु वर पर नारि संग न्याय मकी जै देर ॥

मोजन दान मुकर्म मैं नाहिं लगार्द बेर ॥

चौ० जाते वेगि सुदीक्षा दीजै ॥ पतितै प्रभु पावन करि लीजै ॥

नारद ध्रुव के मन की जानौ ॥ भूत भविष्य वर्तमान पिछानौ ॥

तब ध्रुव का दीन्हों उपदेशा ॥ मूल मंत्र यहि जपत महेशा ॥

ग्यासन ध्यान कहे जपने सा ॥ नवधा भक्ति बतायो प्रेमा ॥

समदसमत संतोष पिचारू ॥ ज्ञान विराग दया उर धारू ॥

काम क्रोध मद मत्सर लोभा ॥ छांदो मान मोह छल कौभा ॥

सो० विद्या जाति महन्त ॥ योवन को मद रूप मद ॥

तजै यतन कर मन्त ॥ पांच कादिये भक्ति के ॥

चौ० प्रेरो विघन भजन में भाई ॥ रिद्धि सिद्धि सब धेरें प्राई ॥

दंढ डग पि प्रसरा पठावें ॥ छल बल करि सो ग्यानि डिगावें ॥

जापर कृपा करे प्रसुरी ॥ तेहिते सकल जाइ जिय हारी ॥

मुनि शिक्षा दै जबहि सिधाये ॥ तब ध्रुव चलि मधुवन में प्राये ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत प्रागर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दा-

सगाम सनेही कृत ध्रुव मधुवन प्रागमनो नाम त्रैविंशोऽध्यायः २३ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गराप गिरा सुख दानि ॥

राज नीति संयुत कहों सोइ इतिहास बखानि ॥

पांच वरय के वयस ध्रुव धर्क करी कहु नाहि ॥

मुनि माते उपदेश लहि प्राये मधुवन माहि ॥

चौ० एक पाँय भेठा दुजाना ॥ निश्चल मन करि हरि को ध्याना ॥

अन्नत्यागि फलमूलजोखायो ॥ फलहुतं जेतवपातचबायो  
 लहुछाँडि जलकीनअहारा ॥ जलपरिहरिभेपवनअधारा  
 यहचिंतवनिरहतचितछाँड ॥ कबदेखौंहरिपदमुखदाई ॥  
 दो० पवनतजतलागेजरनसुरसबशक्रडरान ॥

जैसेकेहरिकानिरखिअस्त्रालियेमुखस्वान ॥  
 चौ० मायादेवीतुरतबोलाई ॥ कहिनिकिधुवेडिगाबहुजाई  
 मैनाप्रोरउबसीसङ्गा ॥ आईजहंधुवसहितअनङ्गा  
 अतुबसन्तविरचिसअमराई ॥ नवपल्लवफलफूलसोहाई  
 गुञ्जतअनिगराकुजबिहङ्गा ॥ बाजतबाजनउठततरंगा ॥  
 नदहिंअमराभावबतावै ॥ ऊंचेस्वरकलकिन्नरगावै ॥ ॥  
 यहिविधि किहिनिउपायधनेरी ॥ छूटीनहिंसमाधिधुवकेरी  
 ऐसेधुवदिगाहै नहिंजाना ॥ तबदेवीमायाछलठाना ॥ ॥  
 रूपबनाइसुनीतिकलीन्हा ॥ पुत्रपुत्रकहिरोदनकीन्हा ॥  
 अयमेअंधीअनिचलाइसि ॥ परेउपलजलमलबरसाइसि  
 भीजेपटकटकटरदहोवै ॥ कोपैकुरापपुत्रकहिरोवै ॥ ॥  
 घरतेनृत्यमोहिंदीननिकारी ॥ जाधुवदिगाजाकीमहतारी  
 काहकीअबमेंशरनैजावौं ॥ बोलैलालबहुतदुरवपावौं ॥  
 शीसधुनेकरेदेदैमारै ॥ हायहायबदिवचनउचौरै ॥ ॥

दो० शोरसुनतरधुनाथतबधुवकीजगीसमाधि ॥

लगेबिचारनमनेमनहरिचरणानचितसाधि ॥

चौ० एकाएकीकाननमाहीं ॥ किमिरानीआवतमोहिंपाहीं  
 जोअस्नानहोततौप्रौती ॥ अथलंकृतमोहिवेनेपठौती ॥  
 जानियरतयहमायाअहई ॥ आईछलनमोहिंसुतकहई  
 नारदवचनआदिजबकांन्हा ॥ पुनिधुवरामचरणचितदीन्हा  
 रघुपतिरूपानभूलैसन्ता ॥ जिमिनदलहैजमूडाअन्ता ॥



बहुप्रकारसोसचिचिहारी॥ तबलजाइसुरलोकसिधारी  
 इंद्र-प्रादिसुरहैंहैंहीना॥ मधुसूदनकीविलतीकीन्हा॥  
 महाराजध्रुवतेज-प्रपारा॥ तेहिनेसुरपुरछूटहमारा॥ ॥  
 तिछनकौनदोरप्रभुपाई॥ जराविषुधजहंरचलिजाई  
 तातेहमेंराखिप्रभुलीजै॥ ध्रुवकोजायदरश-प्रवर्द्धि  
 व्याकुललखिसुररूपानिधाना॥ मनबचकर्मदासनिजजना  
 प्रायेहैंध्रुवनिकटमुरारी॥ लगिसमाधितनसुरतिविलारी  
 कशलखिशङ्खनादहरिकीन्है॥ खोलिनयनध्रुवतबहीदीन्है  
 आगेबड़ेदीखभगवानै॥ भक्तबसलशिवरूपनिधानै॥  
 दो० तडितविनिन्दिकपीतपटनीलजलहतनस्याम॥  
 इंदुवदनवारिजनयनकर॥ आयुधप्रभिराम॥  
 शीसमुकुटवनमालउरछविमनोजहरीभास॥  
 ध्रुवविलोकिलारोकरनप्रस्तुतसहितहुलास॥  
 प्रष्टुपदीछं० नमो रामसुरवधामनमोजगदीशदयाल॥  
 नमोप्रणेशप्रलेखनमोसुरमुनिप्रतिपाल॥ नमोप्रनाथ-  
 निनाथनमोसंतनहितकारी॥ नमोशंखप्रजईशानमोनि-  
 गुरागुराधारी॥ नमोप्रपारप्रगारनमोनिरकारनिशमप-  
 नमोप्रभेदप्रछेदनमोनिरखेदनिशमय॥ नमोप्रजीतप्र-  
 तीतनमोपरमात्मानन्दनमोनिकर्षनिर्भरनमोनिजप्रस-  
 मुछन्द॥ नमोप्ररूपप्रनूपनमोसुरभूपडुजागर॥ नमोवी-  
 ररसाधीरनमोताखाभवसागर॥ नमोशरसादुरखहराकर-  
 राततकालनिहाल॥ नमोतुमेकप्रनेकनमोकालहुकेका-  
 ल॥ नमोकृयातोहिंकृयातोहिरामंबलराम॥ तुहीदेशो  
 अवतारतुहीसारसबकाम॥ नमोनमोजयजयतिजय  
 अधमउधारराप्रधहररा॥ खुनाथदामयहिभातिध्रुवस्तु-



निकीन्हीमहि चरसा ॥

हो० सजलनयन प्रभु० प्रहृष्टभरिलीन्द्री हृदयलगाय ॥

कह्यो पुत्रवरमंगिये जो तरे मन भाय ॥

मधुमार छं० सुनि॥ गुनि॥ ध्रुव॥ ध्रुव ॥

चो० मोंगों कहा जगत पति देवा ॥ सवन स्वर बिन तुम्हरी सेवा

आर्विखर्विलगा दार्वि जो होई ॥ विभुवन राज पाव जो कोई ॥

जो पै भरा करण सुख के सो ॥ सपने की सम्पति ध्रुम जै सो ॥

तेहि तेनाय कृपा जो कीजे ॥ प्रेम भक्ति आपनि मोहिं दीजे

जोगय जजप जान विरागा ॥ क्रिया कराइ बहु मोति विभागा

भक्ति बिना गुहा सोहत कैसे ॥ जीव बिना तन भूषण जै सो ॥

सत सङ्गति भवनि धिजल जाला ॥ देव दया करि सो भगवाना ॥

सुनि ध्रुव वचन सल्लुल हीना ॥ बोलि प्रभु भंजन दुरव दीना

सौची बात कही तुम ऐसी ॥ मेरे भक्त कहत हैं जै सी ॥ ॥

सुरनरनाग लोक बिधि हुंका ॥ मोचिन भक्त गरात सब फीके

परतव मानु बहुत दुरव पायो ॥ राज हेत तै बन को प्रायो ॥

जो निज पुर प्रवहीं ले जावों ॥ जग में जाहिर नाहिं करावों ॥

तौ सब जनि हैं ध्रुव मरि गायऊ ॥ कीबन खाइ जनावर लयऊ

जो जग में प्रप कीरति होई ॥ तौ केहि काम धाम सम सोई ॥

ताते प्रथम राज चलि कीजे ॥ छत्ति सम सहस वरय लगली जे ॥

पुनि मम लोकहि प्रायो ताता ॥ चढि बिमान सम नीन्हें माता

तब ध्रुव कह्यो जोरि युग पानी ॥ राज ते नर्क होत श्रुति वानी ॥

कह भगवान प्रधर्म जो करई ॥ सो नृप जाय नर्क महं परई ॥

धर्म दान बंधों नर के जावे ॥ राज नीति रत दोष न प्रावे ॥ ॥

बोलि ध्रुव सम नीति न जानी ॥ कह हरि मुनूं मैं कहों बरवानी

प्रभु पदी छं० कहै न मिथ्या वचन मूढ मंत्री नहिं राखे ॥



दइ कै लेइ न फेरि अजाने असनन चारैवे ॥ मित्रे देइ न दुः  
 ख अमित्रे ना पति आवै ॥ सव ते राखै हेत विप्रना भूलि स-  
 तावे ॥ इंदु न बिरथा करै पुत्र सम परजै पाले ॥ जूला चोरी सा-  
 सम धाहिं साये टाले ॥ पर त्रिय मानु समान द्रव्य पर बिम-  
 सम जानै ॥ तजे कोह मद मोह द्रोह न कोहन अनै ॥ करै  
 सदा सत सङ्ग भक्त भगवत सम लेखै ॥ मंदराखै हरि चरा  
 करग सुनि कथा बिशेष ॥ रिपु ते दाने समर गूढ निज मंत्र न-  
 खांले ॥ मानै कवि बंधु वेद गिरा कदु कभी न बोलै लोभी ल-  
 म्य दाहि जन धर्म अधिकारी करही ॥ दान देइ लख पात्र पात्र  
 पूजा अनुसरही ॥ जप तप संध्या व्रत करित जे स्वजाना कोय  
 कहै रघुनाथ से न पैरती न लागे दोष ॥

दो० कृश सोचै कोटे जवर भुके न माहि देटेक ॥  
 फूल फल सोइ लेइ न पचि रंजीव माली एक ॥  
 ज्ञान चले यहि गति न प्य प्रवसि न क सो जाय ॥  
 अव सुनु परजन को धरम जाते दोष न साय ॥  
 कृषी बनिज व्यापार में न फा मिले जो जान ॥  
 दशा प्रशदे विप्र कहें दोष न लागे हानि ॥  
 जोहि जपावे और कहें चौथाई दे सोइ ॥  
 लेइ देइ विश्वास करि दोष नाश तब होइ ॥  
 सेवा करि धन जो लहै यथा शक्ति दे दान ॥  
 तो नहिं लागे दोष कहु कुकर मकोरे न्यान ॥

चौ० नाते ध्रुव तुमा जिहि कहू ॥ जो में कह्यो सो मारग धरहु ॥  
 मम आज्ञा माने जो कोई ॥ ताहि कि कहु दुरब सपनेइ होई ॥  
 मोरी सीख करों तुम राजू ॥ भुक्ति मुक्ति दे सारों काजू ॥ ॥  
 यो कहि राज काज सब साजे ॥ विविधि प्रकार बाजने बाजे ॥



सैन्यप्रपारप्रकटप्रभुकीन्हों॥तंबूसेजबिछोनाहीन्हों॥  
 गजरथबाजिपालकीयाना॥चोपदारदरबानीनाना॥ ॥  
 बड़ियाबजाजसराफसोनारा॥हलवार्दुजौहरीचमारा॥  
 जहलसुभूपनकेरसमाजा॥सोसबप्रकटकीनमहराजा॥  
 मत्तबहुलप्रभुकिरिपाकीन्हों॥चक्रवतीध्रुवकीकरिहीन्हों॥  
 शङ्खदिकबहुभांतिधजाई॥चलीकटकप्रतिबरनिनजाई॥  
 दो० हरिकीप्राज्ञामानिकैध्रुवचढ़िचलेगयरा॥  
 जनराघोहरिकृपातेमिटिगेसबदुरवफन्द॥  
 चौ० देशकेनृपसुधिपाई॥लैलैभेंटमिलेतेप्राई॥ ॥  
 करिसनमानसुत्तानिजुदेही॥दायजुअमितकहांतकलेही॥  
 यहिभांतिननिजुपुरनियरायो॥नारदतबनृपकेदिगप्रायो॥  
 कहेपुत्रध्रुवआवततेरो॥हरिदीन्होंतेहिराजघनेरो॥ ॥  
 राजाकहाबिपिनिगासोई॥प्रवध्रुवकेसेजीवतहोई॥  
 जलबहिगयोकिअग्निजरायो॥सिंहसूर्यधौबाघनखायो॥  
 ययभमहियहैअजाहेराई॥सकलकामतजिदुदुनजाई॥  
 भैं०अपराधीबालकत्याग्यों॥चल्योगहनउठिसङ्गनलार्यों॥  
 नारदकहाशेचजनिकरहू॥बेगिहिआवतधीरजधरहू॥  
 मुनिमुनीतिउरभासुखभारी॥मुनिअसत्यक्योंकहतबिचरी॥  
 तेहीसमयध्रुवदूतपरायो॥नृपउत्तानपाददिगप्रायो॥  
 सबवृत्तान्तकहातेहिंगाई॥सुनतैभूपउदाहरपाई॥ ॥  
 रानीसहितसचिवपुरवासी॥ध्रुवदिगचलेबिहायउदासी॥  
 ध्रुवकेडेरैनृपजबप्रायो॥पितहिदेरिवध्रुवउठिशिरनायो॥  
 लीनमहीपतिगोदलगार्ड॥गइमरिामनहुंनागफिरिपाई॥  
 अंकमालभरिभेटीमाता॥प्रेमासुनतेसींच्योगाता॥ ॥  
 दो० पुरलोगनकहैंभेंटिकैपूछिकुशलबहुभांति॥



आसन दीन्हें सबन कहें यथा योग सब जाति ॥

चौ० राजा ध्रुव की कल बड़ाई ॥ धन्य २ तुम धनि तुव माई ॥

जो हरि भक्ति हृदय महं धार्यो ॥ सो पीढ़ी त क पितर उधार्यो ॥  
सुर नर मुनि सब करत बिचारा ॥ पुत्र बिना मिथ्या संसारा ॥

एक पुत्र ज्यों २ प्रसन्न ॥ शत पीढ़ी दे न क पड़ाई ॥ ॥

एक सुवन सुर पुर पहुँचावै ॥ निर्वास यम काँस छोड़ावै ॥

मोसम भाग्य बन्त नहिं प्राणा ॥ पुत्र मिला हरि भक्त सुजाना ॥  
मुनि कर जोरि बिने ध्रुव की नहीं ॥ तुम्हरी रूपा भक्ति प्रभु दीही ॥

विविधि भोगि जेवनार कराई ॥ वासर गयो निशात ब ॥ प्राई ॥

हरि विप्र कर में आशा दी नहीं ॥ कंचन पुरी छिनक महं की नहीं ॥

मणि मय मन्दिर प्रभु रचिलि हेऊ ॥ तेहि महं ध्रुव कहें बासा दिहेऊ ॥

लगेर हन सकल हरयाई ॥ भाव भक्ति दिन दिन ॥ अधिकाई ॥

प्रतिन जोति विप्र रा सुर दीही ॥ भुज बल सकल विश्व बस कीही ॥

पुत्र समान प्रजन कहें सैवै ॥ प्रधरम कर धन क बहूँ न लेवै ॥

कथा की रत्न ध्यान कराहीं ॥ सुमिरन करत याम चलि जाहीं ॥

ध्रुव राजा की आज्ञा मानै ॥ राजा ध्रुव हि बड़ा करि जोने ॥ ॥

एक दिन करि विचार बन गायऊ ॥ हरि सुमिरा करि हरि पद लयऊ ॥

दो० ज्यों पङ्कज जल में रहत ॥ प्रसून ने हृदय माहिं ॥

त्यों ध्रुव बगै राज सुर बलि होइ कहें नाहिं ॥

यहाँ विधि छुति स सहस वर्ष कीन्हें ॥ भोग बिलास ॥

कहु दिन वाकी रहे जब तब मन भयो उदास ॥

कमल छं० साधु विप्र जो लिखि ॥ पूछि काम दीन दाम ॥

गीतिका छं० दियो राज काज सुपुत्र कहें पुनि ॥ प्रापु बनहिं ॥

सिधा यह ॥ जहं कीन्ह प्रथम ॥ प्राय तहं हरि के ध्यान लगाय ॥

हू ॥ कहु काल कीते बिषा के विमान दिग ॥ प्रायो भलो ॥ गगा ॥

लिहिनिधुवैचडाइतापरहर्षिबैकुरांटेचलौ॥धुवकह्योति-  
नतेमातुहभरीरहततेहिलेलीजिये।बहजातचढीबिमान  
अंगेदेरिबःप्रानन्दभीजिये॥याहिभांतिपहुंवेजाइधुवका-  
अचलहरिपदवीदई।रघुनाथसकलनक्षत्रजहं करत  
परिकर्माहई ॥

दो० ऐसीहरिकीभक्तिहैताहिकरतजेनाहिं॥ ॥

तिन्हेंजानियेपथूसमसीपाहुंरुबिनःआहिं

धुवचरित्ररघुनाथजनकहंसक्षेपवरवनि॥

पढैमुनेकरिनेमतेहिहोयदेवदुरबहानि

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरबंधउजागरश्रीरघुनाथदास

रामसनेहीकृतधुवचरित्रवरीनोभामचतुर्विंशोऽध्यायः२४॥

दो० सुमिरिगमसिधसन्तगुरुगणपतिसुखदानि॥

अवनरसिंहपुराणकीकहोंइतिहासवरवनि॥

जगतविदितबैकुराठहैजहांवसतभगवान॥

द्वारपालजैविजेंदोउःप्रतिभुजबलीमुजान॥

एकवारसनकादितहंआयेजउचहुंवेह॥

ब्रह्मानन्दभगवाननवालसरूपप्रभेद॥

चौ० रमानाथकेदरशनहेता॥लगेजानउरपिहरखिनिकेता

जयरुविजयदोउरोकिबरवाना॥बिनःआयसुनहिंपैहोजाना

मुनिमुनिदीनआपकरिकोहू॥तीनिजन्मतकराकसहोहू॥

भयोसोरमुनिसबहिनजाना॥श्रीसहितआयेभगवाना॥

कहहरिइनबहुकीन्होंपाया॥मुनिभलकिह्योदिह्योजोआया

तबबोलेसनकादिविचारी॥अभुअपराधकीन्हहमभारी॥

इनआपनधर्मपालनकीन्हा॥बिनःअपराधआपहमदीन्हा॥

कहजयविजयसुनौगोसाई॥इहोंतुम्हारदोषकहुनाहीं॥



निजकृतदुरवसुरवसबकोइलहई॥समुझेबिनसोआनहिंकहई  
 जोतुमनाथदंडमोहिंदीन्हा॥सोहममानिअनुग्रहलीन्हा॥  
 सुरहेलनप्रभुआजाहानी॥उपज्योमहापापदुरवदानी॥  
 सोसबअधमकीह्योनाशा॥कृपासिंधुसमदृशहरिदासा  
 दो० अबकरिकरुणादेहुहमजहंजनसीजाय॥

तहंतहंप्रभुकेनामकोसुमिरनबिलरिनजाय॥

चौ० मन्दजोनिकरासनकोई॥केहुमांतिहरिसुमिरनहोई  
 सुनितिनकेरिसाधुतादेखी॥सहितलाजदुरवभयोविशेषी  
 कहहरितुमकतशोचहिकरहु॥ममइच्छासोइसनमेंधरहु॥  
 अबसबमिलिसोकरहुउपकारा॥जहितेहोइनकरउद्धारा॥

दो० एकजन्मलक्ष्मीकह्योसनकादिकइकबार

एकजन्मभगवानकहहमकरिहैंउद्धार॥

असकहिसनकादिकसहितहरिगृहबलसिधाय॥

कछुदिनवीतेजयविजयभेदितकेसुतआय॥

दीपककुं० कनककसिपहाटकनयनंदैत्यबलीदोउभा-

यदैत्यबलीदोउभायकीनिइन्द्रासनलीन्ह्यो॥निरजरदिये

निकारिहुकुमअपनोहीकीन्ह्यो॥एकबारहरनाक्षधराले

गयोपराई॥धरिवराहअवतारताहिहरिमास्त्रोआई॥हरना-

कुसतपकोगयोइन्द्रसूनसुनपाइ॥लैलीन्ह्योपुत्रआपनो

त्रियदइकोदकराइ॥दुरितजानिनारदतहोआयदियोउप-

देश॥आयदियोउपदेशशोकतेहिकछुकमिटायो॥गर्मरहैं

अहलादज्ञानसबतांमेंपांयो॥रहेतहोबहुकालमातुबोदर

केमाहीं॥कौरेभजनमनमुदितकछुतनव्यापैनाहीं॥हरना-

कुशकोसिद्धभोतपविधिराख्योआइ॥अहोपुत्रवरमांगि-

येशिधिसिधजोमनभाइ॥जोमोपरपरमनप्रभुतौरीजेवरुयेहतौ-

दीजै बरु येह हंमै जो सरसितु मारी। मंगौ न काहु हाथ बाज  
 मोको यह प्यारी॥ राति दिवस नहिं मंगौ गगन महि जल हथि-  
 यारा। दै कै बरु बिधि गयो भयो तेहि हरि प्रपारा॥ गरजि चले  
 घर प्रापने सुनो देख्यो आइ। कोपि चक्यो फिरि इन्द्र ते सुर प्र-  
 लीन छिड़ाइ॥ घर लायो त्रिय प्रापनी जन्म लीन प्रह्लाद ज-  
 न्म लीन प्रह्लाद भयो तेहि प्रानन्द मारी। दिये दान राज बाज-  
 या चकन किये सुरवारी॥ करै राजि मन मगन विप्र गौवन कह सा-  
 नै। हरि देवन ते द्रोह प्रापनो बैरी जानै॥ यह भांति न बीतत भये भो-  
 ग करत कहु काल। बड़े भये प्रह्लाद तब बैलें जहं कहु बाल॥  
 मनो हरि कहु० सुनो एक हाल तेहि नगर कुम्हार बसे धोर खेत-  
 बिलारी बच्चा। प्रावों में लगायो है। पाँछे सुधि प्राई शीस धुने  
 पछिताई तहाँ प्राये प्रह्लाद बात कहि समुझायो है॥ जपो रा-  
 म नाम जासे सरे सब काम निशि बीती चारिया मराम राम रह ला-  
 यो है। होत ही प्रभात खोल्यो लाग्यो सब रंगन को मिदि गयो शो-  
 क प्रह्लाद मन मायो है॥

चनु यदी कहु० एक दिवस सुरारी मनहिं विचारी पढ़न योग  
 प्रह्लाद भयो। कवि गुरु के लरका सराडा मरका बोलितिन्हें सुत  
 सोंपि दियो। लैगे चट सारा तहं बैठा बाल प्रपारा जहाँ रह्यो  
 पाटी कर लिङ्ग प्रानम सिङ्ग पदों द्विजन यहि भांति कह्यो॥  
 तेहि प्रथम लगायो पोति बहायो निख वस्त्रां मै राम लिख्यो।  
 लखि विप्र मुजानी कहि सुदुबानी प्रे पुर यह काह सिख्यो॥  
 तव पितु मुनि पै है बहुत रिसे है मरि है धरि है सिर खारी। ताते य-  
 हि वारी डारु बिगारी मानहुं सुत बानी मोरी॥

पादा कुलक कहु० कह प्रह्लादा। युत प्रह्लाद  
 विप्र मुनी जे। सत्य भनी जे॥ विद्या नामा। उभै जुतासा॥



अधिक को प्राही। यहाँ में ताही ॥

तो एक सुनिये सुत वेद पुराण कहै। विद्या सम ना धन और ॥  
है ॥ नहिं चोर चोराय सके न जौरे। सुख देश प्रदेश न भूपहरे ॥ गु-  
ण रूप पराक्रम बुद्धि धनी। सुत सेवक बंधु प्रनेक धनी ॥ वि-  
न विद्या सो नर सोहत यों। बहु हंसन में एक बाग लज्यों ॥ तेहि-  
ते सुत विद्या नित्य यदो। जोहि याबहु रा जग यन्द चंदो ॥ प्रम-  
दैन सुने द्विज के जवहीं। प्रह्लाद जु बालिक होत वही ॥

दो० विद्या धन कुल रूप मद प्रभुता ये बन नारि ॥

ये बाधक हरि भक्ति के कह बुध वेद विचारि ॥

वर ये कुं० तेहि ते में यह विद्या पढ़वन नाथ। सुनि महि सुर-  
प्रह्लाद के गहि दोउ हाथ ॥ लाये जहं हरना कुश कहि निरिसा-  
इ ॥ पढ़ै न तब सुतरा जन हमहि सिरवाइ ॥

कहु पा कुं० विहंसि प्रह्लाद को गोद बैठा रिके कही मुख चू-  
मि सुत पदो काहा ॥ राम ही नाम सब पढ़न में सार है पदा हम  
सोई सुनि हृदय दाहा ॥ बहत बुध वेद यह दुसु की रीति है श्रीति  
आधर्म में अधिक लावै ॥ जान बैराग्य हरि भक्ति भव भय-  
दहन नाम गुरा ग्राम जोहि नाहि भावै ॥ कही हंसि देव सब कू-  
र एयो बड़े आइ कोइ बाल मुखाय दीन्हा ॥ बहुरि प्रह्लाद-  
ते कहत सुनि लीजिये शत्रु की नाम नहिं चही लीन्हा ॥ सक-  
ल जगई स सब जीव को पोषता ता सुते तात का बिर की जै-  
छांडिस दमन शमन नहिं दै धौ कौ चरि मजन जग-  
मुख श लीजै ॥

दो० रात्रुन काहू केर हरि मिचहु नाहिन तात ॥

जो सोदरे वै मुकु में ते सो ताहि लरकात ॥

सुने बचन प्रसा प्रगु पतिरि सखस निहि उतारि ॥

कहिसिद्धिजनतेयाहिलैजाहुपढावोमारि॥

हाकालिकाहुं० मुनिपुनिद्विजलायेचटसारहि। लि-  
खिदीन्हिनिसुतपढोपहारहि॥ प्रापुणयेपुरकहंकहुका-  
माहिं। पोतिलिरव्योप्रह्लादश्रीरामहिं॥

शांशिवदनीहुं० लखिबालकसब। दिगप्रापेतब॥  
मखातेजैसे। बोलिऐसे॥

हो० कहाशिसुनप्रह्लादतेहदसुमकरतेकाहि॥  
मातपितागुरुजाकहैप्रसुरितकीजैताहि॥  
सुनिबोलेप्रह्लादतबमातपितागुरुसोइ॥  
कौजोसनमुखरामकेजहंलगनिजबलहोइ॥  
अमृतपलटदेइविषपारसबदलैकांच॥  
जानिबूझतेहिसेइकोउकहैसरखोसबसांच॥  
पढ़नसुननसोइसफलजोराखचरारतिहोइ॥  
नातरुतिरिखुरखबलाबाहनडानैकोइ॥

चौ० सुनहुतातयहिजगकेमाही॥ दुखनिशिदिनमुखसपनेहुनही॥  
देखहुतुमनिजहृदयविचारी॥ उपजनचारिखानितनुधारी॥  
अंडजजोअंडातिहोई॥ पिंडजप्रगटगर्भतेसोई॥ ॥  
सैइजअमतीकरतेजानौ॥ उडिजसंगवाीकरमानौ॥ ॥  
अमृतजीवसबयेनितमाही॥ दुखबहुभांतिवरिगानहिंजाही॥  
पापपुण्यजबसमदोउहोई॥ ईशकृपानरतनलहैसोई॥ ॥  
अथमजीवजलमाही॥ प्रांचै॥ जलतेबहुरिअन्नमेंजावै॥ ॥  
जाकेभवनजन्मभाचहई॥ सोईअन्नखातवहअहई॥ ॥  
अजतेस्मरसतेसुखकारी॥ रुधिरवीर्ययकमासनिहारी॥  
अथपुवतीरतिदानहिंपांचै॥ तबसोइजीवगर्भमेंप्रांचै॥ ॥  
रजबीरजयकदिनमहंमिलई॥ पंचयंदिनबुदउदिरिलई॥



दो० सतयेदिनफेनाउठतदसयेपिराडपलबीसा॥  
 मासदिवसजबहोततबनिकसनलागतशीस॥  
 चौ० उभैमासभुजजांघलखाई॥तिसरेपेटबिलगाहेजाई॥  
 वेदमासअगुरीकचरोमा॥हाइमांससरतुचाजुछेमा॥  
 दूरागागर्भसातयेमासा॥अदयेवाकसहितचलस्वासा॥  
 नवयेमासचेतभाभाई॥पूर्वजन्मसतकीसुधिआई॥  
 विष्टाभूचउपरहैबाहे॥चौदतकीदअनलतनदाहे॥  
 पीड़ितसदाअधोमुखरहई॥तहंनमातपितुकेहिदुखकहई॥  
 तबभगवानकेरिसुधिकीन्हा॥बौलतभयोवचनहैदाना॥  
 दीनदयालकृपालभुरी॥अशरणाशरणाहरणादुखभारी॥  
 प्रभुजहिबारमाहिनिखाँरी॥कर्मक्षेत्रमेंलैतनुडोरी॥  
 तहतवचरणाकमलदितलायाँ॥जातेगर्भवासनाहिपावों॥

दो० चारिदोरसबनरनकेकरुपेरागचहन्त॥  
 गर्भमाहिंसबकेनिकदकथासुनतरतिअन्त॥  
 बिनयभुनीतबकृपानिधियवनचलाईएक॥  
 येनिछाँडिबाहेरभयोमूल्योज्ञानविवेक॥  
 पिताशुक्रबहुतेकुंवरमारजअधिककुमारी॥  
 राजवीरजदोउसमतहोहोतनपुंसकधारि॥  
 कर्महोतजैसेकछूतैसाहीफलहोइ॥  
 तैसाईदुखसुखकोभोगकरतनरसोइ॥  
 कर्मसाँझेविधिसंचितप्रालब्धिप्रियमान॥  
 भरेधरेवपुकरैजसतसभोगेतनअग्रान॥

चौ० यहिविधितीनजन्मजगआई॥छिनयकबचनबोलीनाहिजाई॥  
 पुनिमाकहुकचेततबजाग्यो॥कहाकहाकहिरोवनलाग्यो॥  
 सुतउत्तपतिसुनिपितुमहतारी॥हरितगानकोमिलिनारी॥

छठीभई पुनिबरहो कीन्हा ॥ नाम करगशिगुमुखमें दीन्हा  
 करत मृत विद्या जहं परिया ॥ स्वस्वा स्वप्न गनत नहिं करिया ॥  
 माताहु कछु भेदन जानै ॥ सुत धौं कहिं हित रोदन जानै ॥ ॥  
 मन प्रनेरूपित करै उपाई ॥ जे हित अधिक होत दुरव ग्रह ॥  
 पांचबरयवाला पन गयऊ ॥ पुनि यवगंड प्रवस्था भयऊ ॥  
 यदि मुनि खेल कूद के माहीं ॥ नद संज्यत गत ये त्यों नाहीं ॥  
 जननी कहत पुत्र बहु भयऊ ॥ यह नहिं जानत सुत यदि गयऊ  
 बहुरि कुमार प्रवस्था आई ॥ कसब करन लाग्यो हरयाई ॥  
 भाविदाह बरभा भिन पाई ॥ प्रमुदित बौड सबरय बिताई ॥  
 तब तहें तरुणा प्रवस्था लागी ॥ कास अग्निनिहि दे विच जगि  
 वनितन ते प्रति हेतु बदाये ॥ आपन सुखतिन में लरि बपाये ॥

**दो०** यथा गृहपत्य काशतलै चपि चावत सह प्रीति ॥

निजतालुगत तनुज भविमान ततोय अभिनी ॥

तनहैं केरे नयन बयन बंदे मद्माध ॥ ॥

हिंसारत निजमत चले मल्ले भोळु दोउ हाथ ॥

**चौ०** चालिस बरय लोग तरुणाई ॥ रही बहुरि आई बिरधाई ॥

भये पुत्र उपपुत्र घनेरे ॥ होत दुरवीतिन के दुरव तेरे ॥ ॥

निशि दिन चिन्ता करत प्रयारा ॥ सबन केर मोसे प्रतिपारा ॥

कहु शर कुशवारी के जीवें ॥ कोतेहि चारा देत सदीवें ॥ ॥

तिन के हेत कंद अधनाना ॥ नहिं जानै मरिय मप्रजाना ॥

भजे न हरि हरि जन गुणालीला ॥ कहै न मुने मुदित मन शीला ॥

बात नही बिरधापन गयऊ ॥ जरा प्रवस्था आयत भयऊ ॥

तन बल गयो गिरे सदाता ॥ दुगमग चलत मुनत नहिं बाता ॥

हरा जख बहत अकाम विचारी ॥ दोन्हो खाद दुबारे डारी ॥

परे पवरि पारदा मताये ॥ मंगल कहै कहै कोउ पाये ॥ ॥



तृयालागिजलदेतनकोई ॥ बकततहोंमुखप्रावतजोई ॥  
 धरकेकहैं मरिउनहिंजाही ॥ कायमराजबिसरिगेयाही ॥  
 जिनकेहितपरलोकबिगारा ॥ तेसबजियंतैकिहिनिकिनारा  
 इकदिनयमगालीन्हिनभारी ॥ सुतनदीनपुरबाहेरडारी  
 लैजबगयेदूतयमपासा ॥ देखतदिहिनिनर्कमहंवासा ॥  
 प्रथमैदुखदनर्कभुगतायौ ॥ पुनिचौरासीमेंजनमायौ ॥

दो० जीवतनानादुखसंह्यौ ॥ बिनाभजेभगवन्त ॥

अबचौरासीकेबिषेभोगोकशुअनन्त ॥

धुगधुगताकीबुद्धिकोनरतनबोहितपाइ ॥

तरेनजोजगः लधिसेंआतमहतगतिजाइ ॥

चौ० तेहितेताततर्कपरिहरहू ॥ रामभक्तिहिरदेमहंधरहू ॥

अवैअम्बुभुककुशरसपाइ ॥ उवैदिवाकरपश्रिमआइ ॥

मृगजलनिररिवतृषावरुजावै ॥ रामबिमुखमुखजीवनपावै ॥

सुनिसबबालकबोलेसेई ॥ इकसंगेहमरमनहोई ॥

हमतुमजन्मलीनइकसंगा ॥ खेलतरहेनुबिहंगतुरंगा ॥

तुमहरिभक्तिकहायहपाइ ॥ मुनिदुर्लभपुराणश्रुतिगाई ॥

दोधककुं० मुनिप्रह्लादकह्योहरनाक्षजव ॥ मारोग-

योपितयातपकोतब ॥ इन्द्रसकोपिदैत्यपुरछेकिकै ॥ मा-

तुहमारीसगर्भहिदेखिकै ॥

मुजंगप्रयातकुं० बिचास्योहियेमेंतवैपर्वतारी ॥ अ-

सुरशुकतेगर्भयाकेमभारी ॥ धेयाहिनीकोनतौशत्रुहोई ॥

करीरारिअगोखलीदुष्टमोई ॥

दो० तेहिअवसरनारदतहोंआइकहीअसिबात ॥

यहिकेउरहरिभक्तहैंसुरमुखदायकतात ॥

सुनिकेनारदकेवचनतबचलिभयेसुरेश ॥

दुरिबत देरिब मुनि मातुकहैं लगे देन उपदेश ॥  
 सचेया तजि शोचहि ये हरि नाम धरो जो हैं वे सुखदायक  
 दुःख प्रहारी ॥ जे हि ध्यावत शशांगो शदिने श ऋषीसनका-  
 दि उमाविपुरारी ॥ सुतबन्धु सरवात्रिय मातुपिता धन धामस-  
 बेरविको भवधारी ॥ ताविच धावत है शृगज्योंन जंपै जगपाल  
 कसिन्धु मुरारी ॥

दो० यहि विधि मुनि मम मातुकहैं उपदेश्यादिन सात ॥  
 में सचेत जननी जठर मुन्यों कहें सोइ तात ॥

चौ० मुनि प्रह्लाद बचन प्रनुरोगे ॥ दराउ प्रणाम करन सब लोगे  
 भल उपदेश हमें तुम दीना ॥ मातुपिता स्वार्थ रत चीन्हा ॥  
 प्रस कहि बैठे निज उठामा ॥ लागे लिखन राम ही रामा ॥ ॥  
 तोह प्रोसर दोउ महि सुर प्रीये ॥ प्रह्लाद लखि बचन मुनाये  
 विद्यापदों छेड़ि शर ताई ॥ हठ कीन्हें कहु नाहिं भलाई ॥  
 हाठ कनयन बहुत हठ ठाना ॥ मारे गये हवें तब जाना ॥ ॥  
 भक्ति पक्ष कर हठ है नीका ॥ शठता का हठ दुख प्रद जीका  
 मुनिरिस करि द्विज धरि दोउ हाथा ॥ लायेत हैं जहं निशि चरनाथा  
 महाराज तब सुत यह कैसा ॥ काल कूट हरि घट महें जैसा ॥  
 राम राम जय राम पुकारे ॥ पद तन विद्या हम पचि हारे ॥ ॥  
 विप्र बचन मुनि गोइ उठाई ॥ बोला प्रधिक सनेह बढ़ाई ॥  
 तुम सुत जेठ सब सुखकारी ॥ तुम ही राज के रू प्रधिकारी ॥  
 ताते विद्यापदों सचेता ॥ सुख दी सरवा बचन सुत तब हेता ॥  
 निशिपालिका छं० यदपि तुम तात यह बात हित की  
 कही ॥ तदपि मोहिं नीकि नहिं लागित न को सही ॥ लोक में  
 सुख दप लोक में प्रकाज को ताते होन पदों तात को नहिं राज को  
 राशि बदनो छं० मुनि प्रसिधानी ॥ प्रतिरिस दानी ॥



प्रबनिगिराये॥ गजहिमंगाये॥ कह्यहि लीजे। पगतर  
दीजे॥ बड़दुखदाई। बधे भलाई॥

मधुमार कुं० प्रह्लाद की मात। सुनी यह बात॥ गई प-  
तितीर। कह्यो धरि धीर॥

मालिका कुं० नाथ बात मानि मोरि। पुत्र बधे बड़ी रेवारि॥  
दास नीच की समान। परार ही रह जान॥ छोड़ पुत्र प्राहि लेहु  
राज काज ताहि देहु॥ ऐस ज्ञान नारि दीन। कह सुने कुमा कीन॥

इति श्री विश्रामसागर सच मत प्रागर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास  
राम सने हो कृत प्रह्लाद चरित्र बराने नाम पंच विंशोऽध्यायः २५॥

दो० सुधिरिराम सिय सन्त गुरु गराय गिरा मुख दानि॥

बरांगो श्री प्रह्लाद को पुनि इतिहास बरवानि॥

तब निज साचै पढायो। आयो जह प्रह्लाद॥

बोले सो सुत विद्यापदौ तजि हठ बाद विवाद॥

पद चेटक कुं० न्यनि दे ते तनुराखिलेह। तुम मुक्त करो ह-  
रि पद सनेह॥ मल मांस मूत्र क कहै प्रथान। ऐसे तन काशोचै  
प्रथान॥ कोइ प्रसन्न काल कोइ कल्प माहि॥ अरुना विशेषि  
कछु रहन नाहि॥ अब ही चाहौ डोरै सो मराइ। पर राम नाम  
नाहि तजव भाइ॥

दो० प्रसन्न काल जीवन धलाराम भक्त जो होइ॥

भक्ति हीन सत कल्प तक जीवै विरथा सोइ॥

कहै रघुनाथ अनेक विधित चित रह्यो समुद्राय॥

मान्यो नहि प्रह्लाद जब न बडि गयो रिसाइ॥

तारक कुं० ताहि समय पुलोग जु प्राये। आरत है अस नैन सु-  
नाये॥ नाथ सुनो बड़ मोच हयारे। बाल सवे प्रह्लाद बिगारे॥

तोरक कुं० तिन कै दिखाना नहि जात कही। कह्यो पत हो स-

तहालसही॥ कहं नाचतगावतगोपरहै। पुलकांगविलोच  
ननीरबहै॥ हरिनामनिशंकरैं मुखते। किनयेउपिऊरख-  
कहै हमते॥ धृगजीवनहै जगमेतिनको॥ मनलागनयासमेंजिनको  
दो० सुनौनाथप्रह्लादजोफिरिजैहैं चटसार॥

तौहमधसिवेअनतकहं त्यागवनगरतुहार॥  
तारकहं० पाविधिके सुनिवैनसुगरी। मुखक एकभवाइ  
केसारीविप्रनते पुनिबोलेरिसाई। खायहुबालकभक्तिपदाई  
दो० गुरुनन्दनतुमबन्धुदोउतांतकरियनरोष॥

भयोकालबशबालयहविप्रनुहारनदोष॥

चौ० असकहिपुनिखुतकेदिशिडोला॥ रामनामसुमितलखिवोला  
अबनेमानिलेहुममबानी॥ नाहितहोतप्राणाकीहानी॥ ॥

सुनौतातसंतनकीटेका॥ छूटनजोदुरखपरैअनेका॥ ॥

सुनिप्रह्लादबचनकरिकोधा॥ बांधोंअधमप्रचारिसियोधा  
राजकुमारसकैकोबांधी॥ सुभटसमूहहैचुपसाधी॥ ॥

चतुर्थदीकुं० तबआपुइधावाबांधिवनावागिरितेदी-  
न्हैसिडारी। उपरैहरिलीन्होंभूधरिदीन्होंलागिनतातिवया-  
री॥ पुनिजकड़जजीरननीरगंभीरनदिहिसिदुष्टबोरवाई॥

सांकरकहतोरीभक्तहिछोरीकिहिनिकिनोरैआई॥ तबगजम-  
गवायोतरेडरायोदेखतकुंजरभाग्यो। महिखोदिगड़ायोअ-  
हिलपदायोतिहिक्षराविषतिनत्याग्यो॥ तुपकैबहुदाग्यो

धावनलाग्योपुनिकेस्योसिरआरा॥ दोउचरगाबंधायोउर-  
धटंगायोतीरनतकितकिमारा॥ उरचुभ्योनएकातापअनेका  
नामप्रतापनव्यापी। सबकरोविबादूयहिदिगजादूतेहिवल

वचनप्रलापी॥ सुनिताकीभगनीहरवरभगनीनामदूदला  
आई। उरलैप्रह्लादेंप्रतिअहलादेंबेदिअगिनिलगवाई



निशि चरहरषानेजरतपिछुनेकाठकपाटलैआवैं। डारैं  
तेहिं माहीं छुप्परदाही चरखकरकजोपावैं॥ वल्लनकीमा-  
लानरभखवाला गुहि गुहि आइ चलायो। जपिये मनुलाई  
हेरैं ठगई बड़हरिभक्त कहायो॥ भोरहि प्रह्लादाशुतप्र-  
ह्लादाबैठ धूरि उड़ावैं। जरि गैतमचरि दुष्टिनि नारी नभनि-  
जर गरियावैं॥ भाषतरघुनाथा यह सबवात्ता भइ सत युगके  
माहीं॥ करि माधुसेद्रोहाहै बस मोहा प्रबल गुजरी जाही॥

दो० देखि सखा प्रह्लाद के हरि मित्र सब धाय॥

दनु जगदबीलत भयो पुनि निज दिगि बैठाय॥

सुन्दरी छं० हौं बहूनास दई सुत तो कहं। तद्यपि तू न डरे क-  
कुमो कहं॥ तात सुनौ जिनके उर हैं हरि। तेनि भैं कोउ काह-  
सकें बारी। तौ लग संश्रित शोक सतावन। जौ लग राम क ना-  
म न ध्यावत॥ हें सब ताप प्रनाशन को गढ़। देखु समीप ग्रंथ पुत हर॥  
मधुभार छं० मुनि वचन ऐस। सरलाग जैसे। गहि खम्भ धा-  
दु। बांधि सिरिसाइ॥ तब आशा हरी। मै कीन परी॥ कर खणि  
कादि। जनु तड़ित गादि॥ बोला कठोर। कहं सम तौर॥  
जेहि रहै सुधेदु। प्रबराखिलेदु॥

विजय छं० राम हमार हवै सचराचर मैं नहि मान तो यों ल-  
खिला जे। नाम के प्रसर चौगुण के पुनि पांचमि लाह के दू-  
गुन कीजै॥ ग्राह का भाग रिंहरघुनाथ बचै युग प्रकत हो-  
मनु दीजै॥ मोहूं मेराम है तो हूं मेराम है खड्ग मेराम है खम्भ सुनी जे  
प्री छं० खम्भा। माहैं। भाय्यो। जैसे॥

दराडक छं० गगड गडगडान्यो खम्भ फाहें। चर चर बरा-  
ड निकस्यो नरनाहर को रूप प्रति भयानो है॥ ककट फाट  
कटावै दाढ़ै दसन लपलपावै जीभ प्रधर फरफरावै मोक्ष

धोसव्याप्य माने है ॥ भभरिभरभरने लो गड डरि डर पराने  
 धास थथरि थर धराने ॥ प्रग चिते बहत खाने है ॥ कहत  
 रघुनाथ को पिगर्जे नर सिंह जे वै प्रले को पयोधि मा-  
 नी तड़पितड़तड़ाने है ॥

गीतिका छं० गर्जो महाधुनिघोर शब्दक सोरतिहु पुरख  
 भयो ॥ चौके बिगंचि डेरान बासब ध्यान शंकर तजि दया ॥  
 लेल रघरत दिग्गज को लकूरम कल मल्यौ ॥ अहि महि ह-  
 ली ॥ नरनाग सुरसे विकल उकस्यो सिंधु जल मारुत चली ॥  
 चौ० दनुज राज हेरवानर हरी ॥ बोला बचन सकोध पुकारी ॥  
 रहरि कह कतोरि में जाना ॥ छल करि बध्यौ बंधु बलवाना  
 तासु बैर लेने हित तोही ॥ खिजि फिरीं कहुं मिल्यो न मोही  
 ॥ अब नर हरितनु धरि ममनेरे ॥ ॥ प्रयो कदिन काल के पेरे ॥  
 ॥ अम कहि कीन्ह सिगहा प्रहारा ॥ गहि नर सिंह धरनि दे मारा  
 पुनि उठिल रत धरत हरि धाई ॥ बहुत काल इमि भई लराई  
 विकल जानि सुररमानि वासू ॥ उरु धरि उदर बिदास्यो तासू  
 लरि वसुर हरि वसु मन वरयायौ ॥ जय ॥ कहि दुंदभी बजायौ  
 ॥ औते कादि पहिरि उर हारा ॥ तदपिन निघटत क्रोध अपारा  
 नारदादि मन कादि मुनीश ॥ सहित शक्र कमला जगदीश ॥  
 डरहिं सकल कोइ निकट न जावैं ॥ दूरहिं ते सब बिनय सुनावैं ॥  
 कह बिधिक मलाते तुम जाहू ॥ निकट बासिनी हरि की ॥ आहू  
 सुनि कमला कर कानन धारा ॥ हम अस रूप न कबहुं निहारा  
 दो० तब सुर सब प्रह्लाद की बिनय कीहि निदिग आय ॥  
 चतुरानन बहु प्रीति ते बोले हृदय लगाय ॥  
 निकट जाहु प्रह्लाद तुम हम सब देव उरात ॥  
 सुनत गये नर सिंह पहं हरष शाक नहि गात ॥



चौ० दीनदयालनमकिउरलाया॥ बिरुखनबालकुजबुपायों  
 हासुततोहिनीचदुखदीन्हा॥ पायसिफलखलप्रापनकीन्हा  
 प्रबमोहि॥ प्रतिप्रसन्नजियजानू॥ मागुतातअधिपतवरदान  
 सुनहुनाथतवभक्तिजेकरहीं॥ मनमेंकछूकामनाधरहीं॥  
 तेवैवनिकनप्रसिकजानी॥ कृतउदयोगनफाअनुमानी  
 हमेंनकछुचहियेकिरयाला॥ सुकृतसुभक्तिहिदेहुदयाला  
 यहवरदानमितेप्रभुमोका॥ विमुखपितापावैपरलोका-  
 सुनिनरसिंहकह्योहरवाई॥ सुनहुतातमभभक्तिबवाई॥  
 कुराडलियाजाकेकुलमेंभक्तममनामलिझाडीहाय॥ एक  
 एकशतप्रापनीपीडीतारतसोय॥ पीडीतारतसायपिताकी  
 चौबिसजानै॥ माताकीगनिदीसवामकीपोडसजानै॥ हा  
 दशपुत्रीऔरएकदशभगनीताके॥ दशभूषाकीऔर  
 आठमोसीगेजाके॥

दो० कुलपविप्रजननीसफलभागवतीमहिनास॥  
 स्वर्गस्थितपितरोपिधनुजेपुवंसममरास॥

चौ० जबजगपतिप्रसवचनसुनये॥ जनप्रह्लादद्विषेप्रतिज्ये  
 जामेंजासुप्रमपरतीती॥ सातेहिप्रियलागतयहरीती॥  
 पुनिनरसिंहकहीप्रसिवाता॥ बचनहमारमानियेनाता॥  
 यद्यपितुमैंइच्छाककुनाहीं॥ तदपिमन्वंतरराजिकराहीं॥  
 गीतिकाकुं० करियेमन्वंतरमेंककीसुतराज्यप्रबमारेक  
 हे॥ होंडरतमायातेतुम्हारीविनैकरिहरिपदगंहे॥ समतेरया  
 हिचरित्रनितसहमोदसुनिहेंजेगाइहैं॥ रघुनाथतेनिहृष-  
 कहीकर्मबधतेछुटिजाइहैं॥

दो० यहचरित्रप्रह्लादकरखरायोजनरघुनाथ॥  
 श्रीगुरुदेवादासकेचरणकमलधरिमाथ॥

इति श्रीविश्रामसागरसुबमत्तः प्रागरग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास  
रामसनेहीकृत प्रहलादचरित्रवर्णनोत्तमपटविंशोऽध्यायः २६ ॥

दे० सुनिरामसियसंतगुरुगणपतिगिरासुखदानि ॥  
मारकराडेयपुराणकरुभोगलकहोंबरवानि ॥  
रघुपतिइच्छाप्रकृतिसोरचब्रह्माराडप्रनेक ॥  
विधिहरिहरगुणायपिबहुकबहुकबहुहैरक ॥  
पुनिंसौनकबोलतभयेनाथकहोयहिवार ॥  
प्रवधपुरीभूलोकमहेंआईकैहपरकार ॥

चो० कहासूतसुनिंयमुनिजानी ॥ यंहोभेदमेंकहोंबरवानी ॥  
एकवारजलबाढ़तभयज ॥ सबब्रह्माराडबूडितहंगयज ॥  
लैजीवनकीतत्वभवानी ॥ आदिबिषांमहेंआइसमानी ॥  
हरितवर्षीनशायपरकीन्हों ॥ मोह्योमायाजगननदीन्हों ॥  
विश्वस्वास्तेभेचहुबेदा ॥ आदिप्रतजवरगातभेदा ॥  
माभितएककमलतहेंनिकस्यो ॥ सोपंकजजलऊपरबिकस्यो ॥  
तबतामिब्रह्माभेआई ॥ चारिभुजासुखचारिलखाई ॥ ॥  
कलबिलोकिविधिहृदयविचार ॥ कहेंमाताकहपिताहमार ॥  
कमलनासगहितरकागयज ॥ पुनिऊपरकहेंआबतभयज ॥  
पिपुलबारप्रधऊरधआया ॥ यहमनाभकरप्रतनरायो ॥  
तबनभतेभेगिरसोहाई ॥ मिलीनप्रभुबिनतपसेवकाई ॥  
मुनिअजचितध्यानमेंदयज ॥ बहुतकालपरदरशनभयज ॥  
संयुताहुं० तहेंविषांकेश्रुतिमेलंस ॥ प्रगटेप्रसुरपुगसेल ॥  
से। लखिकैतिन्हेंब्रह्माडस्योतबदेवकीबिनतीकस्यो ॥  
शशिवदनीहुं० जयजयमाता। सबसुखदाता ॥ जग-  
तकहावे। तबउपजावे ॥  
मोयराजीहुं० तोहींआदिमाया। निगमनेतिगाया ॥



तो हीं कर्निहरी तो हीं विश्वभरणी ॥ जलजमाहि मोहीं ।  
 प्रगाढकीन्ह तो हीं जगतवसितुहारे । तरुणा बड्ढ बोर ॥  
 यादाकुलकहुं ॥ हरिवसतोर । सेवतभोर ॥ देहुजगाई ।  
 करे लराई । असुरसंहार । हमै उबार । सुनितवमाया । हरिहिजगाया ।  
 चौ ॥ मधुकैटभदेख्यो हरिजागे ॥ दोउ ब्रह्मा कहं मारन लागे ॥  
 तो हीं विशाहि दिये जगाई ॥ तब ब्रह्मा अतिशोर मचाई ॥ ॥  
 केशोदीरबड्ढ कहं प्राये ॥ क्रोधाधत है असुरन परधाये ॥  
 होन लागि जलमाहिं लराई ॥ जीतिन जाइ बली दोउ भाई ॥  
 पांच सहस्र वरपचलि गयऊ ॥ मधुकैटभतबबोलन भयऊ ॥  
 हम प्रसन्न तुम पर भगवान्मा ॥ लखि सूरता प्रहो बलवान्मा ॥  
 तति बरु भावै सोली जे ॥ कह हरि शीत प्रापने दी जे ॥ ॥  
 दो ॥ हंसि बोले दोउ दीन हम जो तुम मांग्यो नाथ ॥  
 पर जलमें जनि मारिये बाहर काटौ माथ ॥  
 हरिहुं ॥ तब हरि उरु धरि ॥ जल पर बध करि ॥  
 लोलाहुं ॥ मरन लागे जंबे । वचन बोले तंबे ॥ भूमित-  
 नकी सचौ । सृष्टितां पै रचौ ॥  
 चौ ॥ तब हरि असुर हते निज पानी ॥ तासु ज्योति प्रभु माहिं समानी ॥  
 तब ते मधुसूदन कहवाये ॥ कैटभारि गुरा प्रागम गाये ॥  
 भूमि भई विनतन की जानौ ॥ नाम मेदिनी ताहि बरवानौ ॥  
 जल के ऊपर ही सो छाई ॥ जिमि नलनी सर पर उतराई ॥  
 जल कर पारावार सो नाहीं ॥ कच्छ पर कर रहत तोहि माहीं ॥  
 मस्तक कुक्ष चरण दृग हैरे ॥ कैयो कैयो यो जन केरे ॥ ॥  
 दो ॥ सप्त सहस्र शत कोटियक प्रब्योजन परमान ॥  
 कूरम मुख पूरव दिशाया प्रिम पृष्ठ बरवान ॥  
 चौ ॥ ता पर शेष नाग इमि रहई ॥ जैसे मूत मेरु पर ग्रहई ॥

फन हजार ताके श्रुतिकाहा ॥ एक फन पर एक रहत बराहा ॥  
 मसक समान जानिनिहि पाया ॥ असतनु शेष सो प्रागमगावा  
 वसुधा दशन बराह के धारी ॥ तिल समगने कोल प्रसभारी  
 कुराडालिया प्रागे दिशि दिगाजर हैं महिरसा हित दुंद  
 ऐरावत पुनि पुंडरि क बाधन चौथ मकुंद ॥ बावन चौथ म-  
 कुंद पराजित यम सार भकुज ॥ हेमदंत परमान प्रठारह-  
 योजन के दुज ॥ दुज हैं योजन केर सुंडि बें योजन वध्या ॥ ब-  
 टषट योजन ऊंच बली प्रतिदिगाज प्रावा ॥

दो० यहि विधि धिर करि भूमि प्रभु विधिका प्राजादीन ॥  
 सृष्टि रसौ यहि धरिण पर सुनि विधिसि र धरि लीन ॥

चौ० ब्रह्मा सृष्टि रचन ज बथापी ॥ पचास कोटि योजन भूनापी  
 मन ते विधि जगर चने लागे ॥ दूकैं ते बहु सुन उपरागे ॥ ॥  
 मन का दिक प्रादिक जे भयऊ ॥ मायारहित सकल वन गयऊ  
 तब बाँये भुजते सतरूपा ॥ दहिने उपजाये मनु भूपा ॥ ॥  
 तिनहुं वन का कीन पमाना ॥ लखि ब्रह्मा तब रोदन डाना ॥  
 ताते रुद्र प्रगट भोगरा ॥ कत रोवत हमर चव घनेरा ॥ ॥  
 कोई छीन कोइ पीन बिषाला ॥ कोइ बिनसि कोइ बिपुल कपला ॥  
 कोइ बिनकर मुख दग पग काना ॥ कुटिल कराल केहू के नाना ॥  
 यहि विधि भूत बहुत उपजाये ॥ एकहिं एक लेहिं मोखाये ॥  
 तब विधितिनै बराज सौ पाये ॥ रुद्र न सहित बिशाप हें जाये ॥  
 प्रभु ते सब निज हाल निरूपा ॥ मुनि मिलिगे जहं मनु सतरूपा  
 बोले सुवन राज्य चलि करहू ॥ बचन हमार हृदय मह धरहू ॥  
 सम संतोष दया सुबिचारी ॥ जहं तहं अहं सुरबद व्योहारी ॥  
 कह मनु हमें पुरोहित दीजे ॥ बोले विधिवशिष्ट कहूं लीजे ॥  
 सुनत वशिष्ट वचन प्रसभाया ॥ दसकू कर समचकी राखा ॥



दशचकीसमधुजयकहोई ॥ दशधुजसरिस नायकासोई ॥  
 दशगणिकासमन्ययकगावा ॥ दशनृपसमउपरहितरहावा ॥  
 ऐसा मन्द कर्म मोहिं देहू ॥ ग्रहोपितामै लेवन रहू ॥ ॥  
 मुनिबशिष्टके बचन पितामा ॥ कह सुतलाभ अग्रतोहियामा  
 परमात्मा ब्रह्मवर देहा ॥ धीरें हें रविकुलान के गेहा ॥ ॥  
 तिन कहें तुम देखि हैं भरिनयना ॥ मुनि हें बशिष्ट विधिबयना  
 पुनि मनुक ह्यो ध्यान मोहिं दीजै ॥ विशदराज्य धानी जहें कीजै ॥

दो० सुनत विद्या वै कुराव ते दीन प्रयोध्या जानि ॥  
 मनु लाये महि लोक महं श्रीपति को तनु जानि ॥  
 कठि कौली पग बंति काना भिद्वारि का सोध ॥  
 हृदमाया के दमधु पुरी काणी धारा सिर औध ॥  
 चोरा सी योजन विषे बसी कनक मय भारि ॥  
 शैशत छत्तिस को सकर धरा ता सुनिहारि ॥

चौ० एक इस अर्ध पांच से कोरी ॥ लाख बौद्ध तरि द्विज वर जोरी  
 चौदा लाख यकोतर धामा ॥ तपसिन के रहें अरवितामा ॥  
 एक से अर्ध यकासी कोरी ॥ चारि लाख दुइ सत पुनि ओरी ॥  
 चारि हजार प्रपर फिरि हेरी ॥ यत्तनी बखरी सत्रिन केरी ॥ ॥  
 चौदा पदुम एक से प्रवा ॥ एते बैसन के गृह सर्वा ॥ ॥  
 चारि पदुम गृह शूद्रन के ॥ नामन्न रुद्र कहत इमि टेरे ॥  
 बारा प्रस्थ और सन्यासी ॥ रहें प्रसरव्य प्रसरव्य उदासी  
 यहि विधि प्रजन सहित मनु राजा ॥ करे राज सब सुखी समाजा  
 हे सुत भे मनु के अभिरामा ॥ प्रिय ब्रत पद उत्तान सुतामा ॥  
 दो० बहु रिनी निकन्या भई सकल सुलक्षणा खानि ॥  
 देव दुती अवकूती परसूती ये जानि ॥ ॥

चौ० मनु ते भे मनु मुनि गया ॥ तेहि ते मानुष्य नाम कहा

राज्यकरतवीतेबहुकाला॥यकदिनकीनबिचारभुवाला॥  
 विषयकरतचारिउपनगयऊ॥तदपिनइंद्रीतिरिपितभयऊ  
 भक्तिविमुखमुखदुःखसमाना॥असविचारिधनकीनपयाना  
 नारिसहितन्यपनैमिखप्राये॥हर्षिगोमतीमाहिंनहाये॥  
 तहांविप्रहरिदेवप्रवीना॥कनकलतायुतनारिनवीना॥  
 करहिंतपस्याभगवतहेता॥असनबसनतजिअवधीनकेता  
 लागेकरनतहेतपआपू॥द्वादशवरीमंत्रकरजापू॥  
 गोरश्यामसियरामस्वरूपा॥धरैअहर्निशध्यानअनूपा॥  
 कन्दमूलफलकछुदिनखाये॥पुनिसबन्यागिनीरपरआये  
 षटसहस्रसम्मतजलपीनो॥पुनिभरिबत्तसोउतजिदीन्हों  
 बर्यसहसदशभरख्यौसमीरा॥पुनिसोउतजिदीन्होंमतिधीरा  
 मनअभिलाषयहैदिनराती॥अभुकहंदेरिबजुड़ाइयछाती  
 निरगुणानिराकारनिरखेदा॥नेतिनैतिजेहिगावतबेदा॥  
 ब्रह्माविष्णुमहेशसुभेषा॥जासुअंशतेहोतअलेखा॥  
 दो० सोइअभुसेवाबसरहतकहतनिगमअसगाय॥  
 जोयहसत्यतौपूजिहैममअभिलाषाआय॥  
 तोमरहुं०इमिबर्षदशहज्जार॥रहेदोउबिनआधार॥  
 कृशगातनातनवारि॥नहिंनेकमानीहारि॥  
 हंसमात्ताहुं०लखितपप्रतिभारी॥हरिअजविपुरा-  
 री॥चलिमनुदिगप्राये॥मृदुबचनसुनाये॥  
 युक्ताहुं०मौगहुबरसुतसोई॥जोइच्छामनुहोई॥मनु  
 कछुकहतनभयऊ॥पुनिअफिरिफिरिगयऊ॥  
 चौधंसाहुं०अभुजगस्वामी॥अन्तर्यामी॥निजजन-  
 जान्यो॥नन्यपिछान्यो॥  
 चतुर्थदीहुं०तबभैतभवानी॥सुनुअपरानीमौगहुजो



मनभावे। सुनिगिरासोहाई उदे मोटाई जिमिघरतेकोइ-  
 आवै॥ बोले हर्षाई प्रेमबढ़ाई सुनुसेवक सुरधेनु। बिधिह-  
 रिहरनायक सुरनसहायक प्रगातपाल सुरबदेनु॥ जोशम्भु-  
 इभावे सुनिजन ध्यावै कागभसुराडसुरेवेना। सोइ रामप्र-  
 नूपाश्यामस्वरूपादेरवोंमें भरिनयना॥ प्रसवचनविनी-  
 तापरम पुनीता सुनिप्रगटे भगवाना। शुभतनवनश्यामल-  
 रिवसत्तकामंलाजतनीरजयाना॥ शशिमुखकुबिसीबांदि-  
 म्बुक ग्रीवा प्रधर प्ररुणा सुकनाशा। नवअंबुजलोचनरि-  
 धुमद मोचनरदकपोलहरिहासा॥ भूषण मरिाजालाउर  
 बनमालाभालतिलकउरभारी। श्रुतिकुराडललोला मुकुट  
 अमोलाभृगुटीधनु प्रनुहारी॥ कटिकसेनिषंगाकर सारं-  
 गायीतबसनलपटाये। करिकंधजनेऊकच शुभतेह विवि-  
 धिसुगंध लगाये॥ नखनखत कुबीरानामगंभीराउदरेरख-  
 जैराजै। राजिवदोउचरण सुनिसनहरण जिन ध्यावत प्रस-  
 भाजै॥ जोसबजगमोहै बाँयें सोहै प्रादिशक्ति सुरव रानी जे  
 हिअंशते प्रघटैं प्र गरीतप्रगटैं उमारना ब्रह्मानी॥ दोउ  
 रूप प्रनूपा मनुसत्तरूपायकटकरहे निहारी॥ यगगिरिसुजा-  
 नादराडसमानावपुकीदशाबिसारी॥ प्रभुतुरतउदायोहद  
 धनगायोफेर्यासिरनिजहाया। मांगहुबरसोई जोमनहो-  
 ई सुनिबोलेनरनायापदपदुमनुहारेदेखिहमारेसबपूजे  
 मनकामा। लालसाजुएकाहै मंगियेकाकहतलगतभय-  
 तामा॥ जानतनुमस्वामी अंतरायामी पुरबहुमन अभिला-  
 या। सबसकुचबिहाई मांगहुराई नहिं अदेवप्रभुभाषा॥  
 बोलेमहिपालक तुमसमबालक इनसमचहों पतोह॥  
 बिषइकदू वजानोई शानमानोदेवयहै करिछोहू॥

दो० एवमस्तु कहि कृपानिधि पुनि बोले सुनुराय ॥

आपु सरिसं पै हीं कहों महीं होव सुत प्राय ॥

चौ० सतरूपाते कह्यो बहोरी ॥ देवि मांगु बर जो रुचि तोरी ॥

जो पति मांगा सो इ प्रिय मोहीं ॥ मानों में ईश्वर कर तोहीं ॥ ॥

सुनि मृदु गूढ बचन कूल हीना ॥ कह प्रभु जो माग्यो सो दीना ॥

प्रबतु मंदो उमम प्राय सुमानी ॥ बसौ जाय सुरपति रजधानी ॥

तहें कछु काल रहे उ सुख पाई ॥ युग त्रेता जब लगि है प्राई ॥

तब तुम है हो प्रवध भुवारा ॥ तहें हो बमें तनै तुझारा ॥ ॥

इच्छामय नर देह बनाई ॥ प्रवतरि हों प्रशान युत प्राई ॥

करि हों चरित अनेक प्रकारा ॥ जो सुनि नर हैं हैं भव पारा ॥

अस कहि पुनि प्रभु द्विज यहें प्राये ॥ मांगु बर बचन सुनाये ॥

नारिसं मेत विप्र प्रसभाया ॥ देहु नाथ बर यह प्रभिलाया ॥

दो० इन समान कन्या मिलै तुम समान जामात ॥

यह बर दीजे कृपा करि और न चाहिय तात ॥

चौ० एवमस्तु कहि कृपानिधाना ॥ बोलत भे सुनु विप्र सुजाना ॥

चेता जन कहो बतुम सोई ॥ नाम सुनै ना इन कर होई ॥ ॥

तब तब तनया शक्ति हमारी ॥ हैं हैं प्रशान संयुत नारी ॥ ॥

मैं जामात्र मिल बस है जाना ॥ अस कहि भे प्रभु अंतर ध्याना ॥

मनु सतरूपा द्विज द्विज नारी ॥ बसै जाय चहुँ स्वर्ग मैं भारी ॥

जब महि प्रवतरि हैं बर लागे ॥ सो चरित्र बराव पुनि प्रागे ॥

हिरराय कं० यह इतिहास जो न मैं कही ॥ लोम सरामाय राम

हैं सही ॥ पदुम पुराणा सारि पुनि भारी ॥ सुनिकर कोइ संदेह न करी ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत प्रागर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ

दास राम सनेही कृत ब्रह्मा की उत्पत्ति प्रयोध्या की उत्पत्ति शंभू

मन कथा बरी नो नाम सप्तविंशोऽध्यायः ३७ ॥



दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपतिगिरासुरबहनि॥

बरगोंसुरखसंहिताकछुबिषापुराणावर्यानि॥

चौ० कहसौनकशंभूमनुपाछे॥कीनराजकेहिकहियेआछे॥

बोलेमुनिजबन्टपबनगयऊ॥तबउत्तानपादपतिभयऊ॥

तिनतेध्रुवस्तेसुतदूना॥कछुदिनपाछेहैगासूना॥ ॥

लखिबिरचिप्रियब्रतैलयाये॥कीनराजिभलिप्रजारिकाये॥

सातपुत्रातनकेभेचीन्हे॥तातेसातदीपकरिदीन्हे॥ ॥

दो० जंबूऔरपलाक्षहैसालीमलकुधाचारि॥

कौंचसंकलादीपघटपुष्करिसातबिचारि॥

सागरअंतरजानियेइनदीपनभेतात॥

छारछारदधिमधुमदिरइछुजलसागरसात॥

चौ० जंबूदीपतासुबिस्तारा॥येजनलक्षकेरनिरधारा॥ ॥

जंबूफलतहैनदीबहावै॥तातेजंबूदीपकहावै॥ ॥ ॥

मेरुदादिदैगिरिबहुरहई॥गंगादिकसरिताबहुबहई॥

नृपअगनीततहोभेचंडा॥नवसुतकरिदीन्हेनवरंबडा॥ ॥

दो० ईलारमनकहिरगिरिकुरहरिश्यकिंपुरुषाल॥

भरथमाहिंउपदीपबहुभद्रासंधुजमाल॥ ॥

चौ० सौयेजनकादेशबनावा॥सबैदेशकामंडलगावा॥ ॥

त्रैसतमंडलकायकरवराडा॥बिषाउपासीबसतअबंडा॥

तामेंचहुंवरानकेनामा॥द्विजन्टपबगिकशरभिरामा॥

जंबुदीपकेचहुंदिशहेरा॥छारसिंधुलखंधाजकेरा॥ ॥

ताकेअंगेदीपपलाक्षा॥उभयलारवयेजनकरअक्षा॥

तामेंपाकरिबिटपसोहावै॥तातेदीपपलाक्षकहावै॥ ॥

इदिमबाहुतहैंकेनृपहरे॥भयोसातबालकतिनकरे॥ ॥

जंबेशुभद्रसातशिवरासा॥समअभैअमृतहरिदासा॥ ॥

तातेसातखंडकरि दीन्हें ॥ सरिबहुगिरिद्रुममधिधरिहीन्हें

दो० तामेंविषैहंसकहिछविहिकहतपतंग ॥

वैसेबुधशुद्धैवदतत्यागप्रपरबहुअंग ॥

ताकेचौरौतरफहेंसागरदरसकेर ॥

हैलखयेजनमेंतहोतरगिउपासकदेर ॥

चौ० ताकेअग्रसालिमलदीपा ॥ चारिलक्षयोजनकरहीपा ॥

रुद्रसहस्रयोजनकरतामें ॥ शोभनतरुखगपतिरहैजामें

दीपसालमलतेहिकहवावा ॥ यज्ञबाहुनृपतहोहावा ॥ ॥

सातसुवनतिनकेपेचीन्हें ॥ तिनहितसातखंडकरि दीन्हें ॥

रेयायनअभिज्ञानसुरोचन ॥ समरसोमपरिभद्रदिमोचन ॥

दो० तहेविषैवदसुत्रधरनृपबीजधरभाव ॥

वैसेबोलनतवशधरगुह्रिहदुखधरगाव ॥

तेहिकेचौरौतरफहेंसागरमदिगकेर ॥ ॥

चारिलक्षयोजनतहोचंद्रउपासीदेर ॥

चौ० तेहिअग्रेकुशदीपजुअर्हई ॥ आठलखयोजनश्रुतिकहई

तेहिमधिकुशकरविटपसोहावा ॥ रुद्रसहस्रयोजनकरगावा ॥

भूपहिरायरेतकहेंकेर ॥ सातपुत्रमेंतिनकेहैं ॥ ॥ ॥

नाभिगुप्तदृढरुचिबसुमाना ॥ बसुविवक्तकस्तुतव्रतजाना ॥

तेहिनेसातखंडकरि दीन्हें ॥ सरिगिरिमर्मादाकेलीन्हें ॥ ॥

दो० तहंब्राह्मणाकोबुशलकहिसविहिकोविदकाम ॥

वयसेअभिजितवदनुहैशुद्धिकोकिलनाम ॥

तेहिकेचौरौदिशिरहोधृतकोसागरधूरि ॥

आठलखयोजनतहोअग्निनिउपासीधूरि ॥

चौ० कौंचदीपतेहिअग्रेअहैं ॥ सारहलखयोजनतहैंराहैं ॥

कौंचविहंगरवितेजसोहावा ॥ कौंचदीपतेहितेकहवावा ॥ ॥



धृत कूरट तहं के नृप जाना ॥ तिन के भेषु त सात सु जाना ॥ ॥  
 भेष बृष्ट भाजीष्ट सु धामा ॥ मधुरु हलोहित वन यति जामा ॥  
 सात खंड करि तेहि ते बाँदै ॥ मर्यादा हित गिरित रु पाँदै ॥ ॥

दो० तहं बिप्रे पुरया कहत छत्रिहि उर बिबा राय ॥

बैसै भद्रा भनतु है शूँद्रे देवक गाय ॥

ताँके चारो तरफ है खोइ स योजन केर ॥

क्षीर सिंधु तहं के मनुष उदक उपासी देर ॥

चौ० साक दीप तेहि अगि सोहा ॥ बत्ति सलख योजन कर जोहा ॥

तहं साको न केर तरु अहई ॥ साक दीप तेहि ते सब कहई ॥ ॥

मोक्ष तिथ नहं के नृप धीरा ॥ सात पुत्र तिन के भय बीरा ॥ ॥

चित्र रेफ पवमान पुरोजय ॥ धसु बिश्व बहुरूप मनोजय ॥ ॥

तिन हिन सात खराड करि दियऊ ॥ सोई नाम खराड न कर भयऊ ॥

दो० तहं बिप्रे बदवाल जीक्षत्रिहि कहत अमीर ॥

बैसै भायन बिरुज कर शूँद्रे धारक धीर ॥ ॥

ताँके चारो तरफ है दीध कर सागर नीक ॥ ॥

बत्ति सलख योजन तहां पवन उपासी रीक ॥

चौ० ताँके अगि पुष्कर दीपा ॥ चौंसठ योजन केर समीपा ॥ ॥

पुह कर कातरु तहां रहैं ॥ ताते पुह कर दीप कहाँ वै ॥ ॥

इन्द्र दवन राजा तहं केरे ॥ रमन धातु की सुत युग हेरे ॥ ॥

तिन हिन उभे खराड करि नारैं ॥ गिरित रु मर्यादा हित राखैं ॥

दो० तहं बिप्रे पारस कहत छत्रिहि भनत भुजङ्ग ॥

बैसै बालत भरथरी शूँद्रे भनत कुरङ्ग ॥ ॥

ताँके चारो तरफ है सिंधु शुद्ध जल केर ॥ ॥

चौंसठ लख योजन तहां ब्रह्म उपासक देर ॥

चिंता मरिा छं० ताँके अगि पैं धूमि ॥ गनी मारी के रिभूमि ॥

पौने सोरह लख हेरि। ताके अंगे हेम केरि ॥

गोपाल कुं० आठ कोरि वंतालि सलख। योजन जानहुं ए-  
क पारव ॥ लोकालो की आदि अद्र। ओरहु विसन आहि भद्र  
वीर कुं० अब तान। सुनुवात ॥ नभ केरि। सुख हेरि ॥

दो० जामूमइ सुमेसक लख योजन परमान ॥

तामधि एक इस लोक हैं सो सब करौं बरवान ॥

कुराड लिया बासुकि भूत कयम सुयस किन्नर ब्रह्म गहस  
राकस काल रुचित गुपित योगिनि गंधुव देश ॥ योगिनि गंधु-  
व देश सुप्रजम महत तप मुजन। सत्य सुदिव्य सुनाग देव पि-  
प्लविसु कर्मन ॥ विसु कर्मादिक छंदि अहं औं रो नाना पुर  
पावक पवन पुरारि ब्रह्म बै कुराठ दिबा सुर ॥ इक लख योजन  
भूमि ते हैं ऊंचार विलोक। सहस बहत्तर योजन में तेहि वेवान  
करवोक ॥ तेहि वेवान करवोक उदै कृत इंद्र पुरी जहं। धर्म पुरी  
मध्यान अस्त भव बरुणा पुरी महं ॥ अर्ध लख योजन रहै धन-  
द पुरी उत्तरेक। एक इस सहस योजन कुंसे चलै पलक विच-  
यक ॥ एक लख योजन भानु ते हैं शशिलोक उछार। योजन  
अरतालिस सहस में ताको बिस्तार ॥ में ताको बिस्तार एक ल-  
ख परमंगर पुर। तेतालिस सहज्जार माहि बिस्तार तस्य पुर ॥  
यहि विधि इक इक लख परबैं ग्रहन रवत अनेक। बरौं ज  
नरघुनाथ किमि सबन अहं द्वै एक ॥

चो० यह इतिहास कहें जसि जानी ॥ अस पूछे सो कहें बरवानी  
मुनि सौनक बोले हर्याई ॥ हाथ जोरि चरणान शिर नाई ॥

दीन दयाल बचन सुनि तोरे ॥ प्रति आनन्द भई उर मेरे ॥

नृप न हेत अब राम मस्वामी ॥ सरित समूह सिंधु जिमि गामी  
तेहि ने मोहि निज कि कर जानी ॥ अब सरयू की कथा बरवानी ॥



प्रगटी किमिधूलोकमः प्राई ॥ कोलायि सो कहौ बुभाई ॥  
 सुने सूत मुनि बचन बिनीना ॥ राम कथा पर प्रीति पुनोता ॥  
 धन्य २ कहि बारहिं बारा ॥ बर प्रीति में तुम्हें निहारा ॥ ॥  
 सुनोता स सरयू जिमि प्राई ॥ उलयति भैं सो कहौ बुभाई ॥  
 ब्रह्मा कह जानत संसारा ॥ जिन शिर ज्यों जग कर विस्तारा ॥  
 तिन के भवन तीनि रहे इहो ॥ सच्चा स्वस्ति और सा विधी ॥  
 तिन के तनै मरीची भयऊ ॥ नाम प्रेम जा प्रिय विधि दयऊ ॥  
 सुत मरीच के कश्यप जानौ ॥ दश प्रियतिन के नाम बखानौ  
 गोला कुं ० प्रथमै प्रादितो प्रमर कोटि तें तिस जिन जाये।  
 दिति के दत्य प्रपार नाग कहुम के गाये ॥ विनता सुत खग  
 नाथ चंद्र सोमावति केरे। सुरावती के सूर्य रहत जग जा सु  
 उजरे ॥ पादवती जो सवावल सपरवत की माता दमावती  
 सुत अरुं ० प्रमोघा खग संजाता ॥ इराते तून वृक्ष जो न लग  
 त परका जे। नखरेखा सुत मेघ कोटि छप्यन उपराजै ॥ ति  
 न के प्रमृत वृष्टि किहे सब जग सुख पावत। कश्यप ते भैं स  
 ष्टि सकल प्रीति से गावत ॥  
 तोमर कुं ० श्री कश्यप के मुन भानु ॥ होय नारितिन के जानु  
 छाया प्रभा प्रसनाम। विस कर्म जा अभिराम ॥ युग पुत्र का  
 या जाय ॥ यम राज सनि दुख दाय ॥ सनि बहिनिय मुनानाम  
 यम भय हरिण प्रद काम ॥ प्रभा के अस्वनी कुमार। प्रकट हरण  
 रुज भार ॥ तिन के तनै मनु भूप। सुचि रेखानारि प्रनूप तिन के  
 तनै इस्वाकु। जिन कीन प्रजा बिस्वाकु ॥ सरयू नदी तिन आ  
 नि। मूपर बहाई जान ॥ केहि भौं तिल पिनाथ। विस्तार बरणी  
 गाथ ॥ कह सूत प्रवध भुवाल। इस्वाकु भैं जेहि काल ॥ बेंदे  
 भवन एकवार। नृप की निस्वतः विचार ॥ पुरपास सरिता होइ

मौलहीसुखसबकोइ

दो० ग्रहज्ञानसोअप्रथमहेमध्यकूपकरहोइ॥

उत्तमसरप्रवतीकरेउत्तमउत्तमसोइ॥॥

सो० असननमभुमिनृपाल।गुरुवशिष्टपहंआयह॥

नाइकसलपदभाल।कहतभयेनिजकामना॥

चौ० मुनिवशिष्टहियहपतभयऊ॥दोउमिलिंशकन्यादिगगयऊ

बोलतभयेनदीएकचहिये॥कहोसोमिलेकृपाकरिकहिये॥

कहनंदनीसुनहुमुनिजानी॥धुनीएकहैंकहोंबरवानी॥

एकसमर्थबैकुरादमभारी॥बैठेनारायणायुननारी॥॥॥

महादेवहरिहरशनहेता॥आयेतहंगिरिसुतासमेता॥

नारदादिसनकादिमुनीषा॥चतुराननसुमनससुरईशा॥

सबहिनआइआइशिरनायो॥अमुआदरकरिबैठायो॥

सभादेखिशंकरअनुरागे॥लागेकरननृत्यहरिआगे॥

मारदबीनाताहिबजावैं॥ब्रह्मादिकसुरसंगगवावैं॥

हैंयोरागरागिनीकृतिस॥समगुराग्रामसप्तस्वरबजिस॥

तालमृदङ्गतंषूरसितारा॥बाजतबद्धोबिनोदअपारा॥

देखिनृत्यदीभेभगवाना॥बोलिहरिसौगहुबरदाना॥॥

कहपशुपतिजोदायाकीजे॥तौमोहिभक्तिआपनीदीजे॥

मुनिशंकरकेबचनभुगी॥बोलेदीनिनयनभरिबारी॥॥

सोइजलपातभयोमुनिगई॥लीनकमराइलमहविधिधई

तीरथभयोगुप्तसोरहई॥लाबहुजाइब्रह्मपहंअहई॥॥

दो० मुनिवशिष्टहरपतभयगयेपिताकेलोक॥

सुखशाभातहंकरनिरयिभेमुनिबिगतविशोक॥

चौ० ब्रह्मभवनपुनिदेख्योजाई॥कहिनजातकहुतासुनिकाई

चतुराननकेदरशनकीन्हें॥भालतिलककरवेदजुलीन्हें॥



धरे कमराडल प्रग्रसाहायो ॥ लखि बशिष्ठ चरा शिरनायो ॥  
 विधि रहें ध्यान माहिल वलीना ॥ बेदि गये तहं मुनि परबीना ॥  
 नव सहस्र सम्बत चलि गयऊ ॥ तब प्रज ध्यान केव मत भयऊ ॥  
 सुत बिले किहें सिह दय लगायो ॥ कह्यो तात केहि कारणा आयो ॥  
 तब बशिष्ठ मृदु वचन उचारे ॥ नृप इच्छा कुय जमान हमारि ॥  
 तिन के पुरदिग मरिताना ही ॥ तेहि तेहो आयो नुम पाही ॥ ॥  
 अथ महाराज मया करि सोई ॥ दीजै जेहि मोकाय होई ॥ ॥  
 मुनि विधि हरि क मराडल नायो ॥ चल्यो प्रवाह संग मुनि धार्यो ॥  
 गगन ते गिरी भहुं आकाश ॥ गिरि मुमेरु महं कीन्हें वासा ॥  
 रारावत के रद दोउ लागे ॥ फरद पहाड़ चली बहि आगे ॥ ॥  
 साज ल गिर्यो भूसि परजाना ॥ तेहि ते सरयू नाम बरवाना ॥  
 मुनि जल मान सरोवर प्रावा ॥ गे समाइ मुनि लखि दुरव पावा ॥  
 मान सरोवर विधि मन तेरे ॥ भयो धाम हरिका तेहि नरे ॥ ॥  
 जाय बशिष्ठ टाढ़ भेदारे ॥ लगे करन तप तन मन चारे ॥ ॥  
 विपुल काल ले गित हंत पकीन्हा ॥ तज्यो प्रहार भयो तन हीन ॥  
 तब हरि द्वारपाल हंकराई ॥ कह्यो बशिष्ठ तेहि बोल्लाई ॥  
 द्वारपाल तहं बोलि लगायो ॥ आइ बशिष्ठ चरा शिर नायो ॥  
 कह भगवान मुजो मुनि प्यारा ॥ कवन हेतु तप कियो अपारा ॥  
 कह बशिष्ठ इच्छा कुय जमाना ॥ भूप प्रयोध्या के जग जाना ॥  
 तिन प्रस कहन दोय कहोई ॥ मे विधि पास गयो मुनि सोई ॥  
 तहां एक सरिता प्रभु पाई ॥ सो सरवर महं आइ समाई ॥ ॥  
 बोलै हरि हल कोहु पाथा ॥ अबहीं निकरि चले तब साथा ॥ ॥  
 तब बशिष्ठ जल जाय हलोरा ॥ चली निकसि सरयू बरजा रा ॥  
 गिरि परगाम धाम करि पावन ॥ बहीं अवधतर आइ सोहावन ॥  
 दो० मुनि नृप पुरवासिन महित आयो प्रपगातर ॥

पूजनकीन्हें विविधिविधि दीन दान भयभीर ॥  
 प्रायः प्रायः सुखधुन युत कीन्हें नित हो प्रसन्न ॥  
 नामधरे त्रय नयन जा सरयु बसि ठी जान ॥  
 हर सपरस मंजन करत हरत पाप श्रुति गाय ॥  
 अन्तकाल हरि पुरबसे रबिसुत भयामिदि जाय ॥  
 सरयु की उत्पत्ति इमि सुनिन कहि रघुनाथ ॥  
 केहु पुराण में बत बुध हेर घुपति यह पाथ ॥

कामाकुं० बायें। पायें॥ केरो। हेरो॥

तोटक दोउ भौति मंगल मूल। मोहि देहु है अनकूल ॥ सि-  
 यराम नाम अधीर। सुभिरों सदा तबतीर ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत अगार ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम  
 सेनेही कृत सातौ द्वीप नव खराड प्रमारा श्री सरयु की उत्पत्ति बरोनो नाम अ-  
 ष्ट विंशोऽध्यायः २८ ॥

दे० सुभिरि राम सिय सन्त गुरु गराप गिरा सुख दानि ॥

पिक कृत अगिनि पुराण मत्त कहौ भागवत बखानि ॥

चौ० सुनिशोन कबोले शिर नशि। गंगा कौन भौति महि प्राई ॥

केहि विधि उत्पत्ति भै सो गावो। प्रभु प्रभाव कहु वरिणि सुनावो  
 कह्यो मृत नृप सगर जो भयक ॥ जिन बहु भौति प्रजहि सुख दय उ-  
 तिन के केशि सुमति हेनारी ॥ पुत्र बिना नित रहे दुरवारी ॥ ॥

इक दिन वृष देउ चियन समेता ॥ वनत पकरन गये सुत हेता ॥

कीन कदिन तपतीनिहु प्राणी ॥ बरं ब्रूहि बोले भृगु बानी ॥ ॥

केशी कहा पुत्र इक दीजि ॥ एवमस्तु प्रति सुन्दर लीजै ॥ ॥

मांगहु कहन सुमति ते लागी ॥ साहि सहस्र सुवन तिन मांगे ॥

बरं दे भृगु प्राश्य मै सिधाये ॥ विधुन समेत भवन नृप प्राये ॥ ॥

असम अजस सुत केशी जाये ॥ सिसुन के मिस सो बिपिनि सिधायै ॥



सुमतिके भेसुत साविहजारा॥ घृतघटमें कीन्हें प्रीतिपारा॥

वीरमहारागाधीरसक्रोधी॥ भारे प्रसुर सकल जिन शोधी॥

एक बार नृपमख कर साजा॥ कीन्हें तहें लिरिबछाड़ो बाजा॥

दो० इन्द्रताहि गहिकपिलकपोछे बांध्यो जाइ॥

खबोर नहिं दीरि वतव कहिन भूपति आइ॥

चौ० सुनि सुत रहे सुमतिके जेरा॥ चले सकल दुंदन के हेता॥

सात द्वीप नवरखराइ मफायो॥ श्यामकरा के खोजन पायो॥

तब लागे महिरोदन सोई॥ तीनि दिशा दिशि डारिनि जोई॥

पुनि दुंदत उत्तर दिश आये॥ तहां कपिल मुनि ध्यान लमाये॥

पाछे प्रस्वबंधालखि सानी॥ बोलै सागर सुवन कटु बानी॥

यकरितुरंग आइ में आना॥ हमें बिलौकि धरि सिव कध्याना॥

सुनि सुनीश करि क्रोध निहारा॥ सबइक सङ्ग भये जरि हारा॥

समृद्धि वृद्धि बिषयान जो करई॥ कहो तात सो काहे न मरई॥

इहां शोच मन कीन्ह भुवारा॥ भेबहु दिन नाहिं फिर कुमारा॥

दो० तव प्रसम अजस के तनय अंशुमान कहें बोलि॥

कह्यो खबरि लय विपिन की लारि विहय लावहु खोलि॥

सो० सुनत चले हरयाइ॥ जहें तहें खोजत नगरवन॥

मिले गरुड मग आइ॥ कही कथा सब जमि जेरा॥

काहल्लहुं० प्रसिखवरियाइ॥ जलनिधिन हाइ॥ तिल उ-

द कदीन॥ पुनि गवन कीन॥

संयुताहुं० खगनाथ युत तहें प्रायहू॥ मुनि चररा शीस

नवायहू॥ करि बिनै प्राशिय पाइ कै॥ हयेल दुचले हरयाइ कै॥

लोमरहुं० बहूने ते सुनुतात॥ परमार्थ की इक बात॥ जोग-

इ० आवै भाया॥ तब हों पितर कृतार्थ॥ सुनि अंशुमान नि-

होरि॥ कह गरुड ते कर जेरि॥ प्रवगइ की उत्पत्ति॥ कहि

ये कथा करि सति ॥ प्राये मही पर जासु । तीरि हें पितर मम आ-  
सु ॥ बोलै गरुड हर्षाड ॥ उत पति सुनु कहौ गाड ॥

चौ० वेता युग में बलि मख डयऊ ॥ इन्द्र लोक लैं सो मनु भयऊ  
तब हरि हिय विचार प्रसकीन्हा ॥ प्रहलादें मै यह पद दीन्हा  
सो बलिलेन चहत करिया गा ॥ तेहि हित बावन तनु अनु राग  
बावन आंगुर के केहि कारा ॥ भि प्रभु सो कहिये प्रहि चार रा  
मागन के रहै तु हरि जाना ॥ तेहि ते बावन भे भगवाना ॥ ॥  
मागन मरगा उभय सम ग्रहई ॥ मान बड़ थन नेहन रहई ॥

सो० तृणानिल धुत्लाड ॥ धूलहु ते लघु यांच कह ॥

कलन उड़ावत बाड ॥ मागन कर भय मानि कर ॥

चौ० याते हरि बावन तनु भयऊ ॥ अदित के जे दरज्म प्रालयऊ  
यज्ञोपवीत भयो जब जाना ॥ भिक्षा हेत बले भगवाना ॥ ॥  
बड दानी सुनि बलि यहें प्रायो ॥ बहु प्रभुता मुख बरारि सुनयो  
बलि बिलोकि इकटक रहि गयऊ ॥ असव पुकबहुन देर बत भयऊ  
कहें बलि मांगु जो भावै तोही ॥ पयगतीनि पृथ्वी दे मोही ॥ ॥  
मम समान दानी लहि तुम ते ॥ मागत बनान मागहु अब ते ॥

बावन कही सुनहु नरपाला ॥ द्विजें तोष चाही सब काला ॥

दो० अस तोष द्विज दोष युत संतोषी नृपचारि ॥

सहलज्जा गरि का अधम निरलज्जा कुलनारि ॥

कहा शुक्रमहिपाल सुनये हैं श्री भगवान ॥

कुलने हेत प्राये तुमैं देहु नइन कहें दान ॥

दोध कछु० जो भगवान कहौ तुम यहैं ॥ होन देहों बलि के-  
नहि लेहें ॥ ताते यहें हित हिते दीजो ॥ नाम चली धन ले कहौ जी ॥

चौ० शुक्रमहायुनि सुनहु भुवारा ॥ अब ते मानहु बचन हमारा ॥  
दांविहीन नर व्याकुल रहई ॥ सर्व गौर मदादर लहई ॥ ॥ ॥ ॥



बिनापराधमित्रजनमारंवे॥ त्रियसनेहकरिबचननभाषे॥  
 तेहितधवकोरदागानहु॥ दर्वेतेसंबेबत्तमानहु॥ ॥  
 दो० धकठुं० कहबलिदेनकहोइनकाअबजानहिदेहुतौ  
 धर्मनशेसच॥ भूठसमाननपातकअनजु॥ बोलतभे  
 धनिशुक्रमुजानजु॥

बीरठुं० श्रोतुवो॥ पांचवोर॥ भूठकहोहोयनही॥  
 दो० निजत्रियतेपुनिव्याहमंधनहितशंकटप्राण॥  
 गोद्विजहिंसामेकहीभूठनदोयप्रमाण॥  
 जिनकररक्षकलोकसबअसुरहतेजिनहाय॥  
 तेहिकरमागतभीखअबकिनपिनदीजेनाथ॥

चौ० अबनिरबनिधनतनसगसबही॥ पुनिअसिसमोमिलीनहिकवही  
 असकहिकरनसंकल्पलागे॥ प्रविसेकबिकरधाहमअगे  
 रुक्मिणीनारहरिडाभचलायौ॥ फूटिअरिवसंकल्पकरायौ॥  
 तबगावननिजदेहबडाई॥ यगभूजंघलोकध्रुवजाई॥  
 स्वर्गभयौकटशिवपुरपेडू॥ रविमुतलोकहृदयजामेडू॥  
 कंदप्रायतपजोकहिभयऊ॥ अननसत्यलोकमहायऊ॥

येसोदीधिरूपहरिकीन्हा॥ पुनिपृथ्वीनापनमनदीन्हा  
 दो० तलअतलवितलतलातलगसातलवाताल॥  
 सप्तपतालनएकपगतिनापेकधाकृपाल॥

प्रथमैभूदसरभुवरतीसरसरजनचारि॥  
 पंचमसत्यछुडामहतमुनिविदिलोकनिहारि॥

चौ० सातस्वर्गयेजोमैबरगा॥ सोसबनापेदहिनेचरगा॥  
 प्रथमलोकजबहरिपदगयऊ॥ चीन्हचलांकद्योइसोलयऊ॥  
 धर्यो० कमडलमहंचतुरानन॥ गंगाभईरहतजगजानन॥  
 तपजोकरहुगंगमहिअविं॥ तबतुह्यारपुरुषागतिपाविं॥

गंगाकीउतपतिइमिजानों॥वावनकृतअवसुनतुबरवनों  
 द्वेपगसकललोकजबभयऊ॥एकैपगवाकीरहिगयऊ॥  
 बलिबावनपगपोठिनपाई॥रीभिकहामागोबरपाई॥॥  
 जोप्रभुमोपरकिरपाकीजै॥यहीरूपनिजदरशनदीजै॥  
 एवमस्तुकहिबलिहिलवाई॥राज्यसुतलकोदीनैजाई  
 द्वारपालहैश्रीभावाना॥रहतसदातहंसबजगजाना॥  
 याहीतेहरिसनमुखरीका॥कृपाकोपकूलतिनकरनीचा  
 दो० बड़ेबड़ेनतेकूलकरहिंजन्मकनैइहोय॥

एन्दाश्रीपतिशिरलसैगतिवावनबलिजोय॥

चौ० यहसबचरितगरुडजबगावा॥अंशुमानसुनिअतिदुखपावा  
 पुनिखगनाथगयेहरियासा॥आयेअंशुमाननिजवासा॥  
 देखिसगरउरलीनलगाई॥खवरिसकलपुवनकैपाई॥  
 यज्ञकीन्हभूसुरसनमाने॥कछुदिनरहिगृहपुनिअकुताने  
 राज्यसुअंशुमानकहंदयऊ॥आपुतपनहितसरिबनगयऊ  
 अंशुमानकेभयेदलीपा॥तिन्हैथापिबनगेनरधीपा॥॥  
 भागीरथदलीपकेसूवन॥भेजेहिनामचारिदशभूवन॥  
 तिन्हैराजदेवनअनुराग्यो॥करितपकठिनतहैतनुत्याग्यो  
 भागीरथसुतकाकुथभयऊ॥हेतैहिंराजआपुवनगयऊ॥  
 लागेतपगंगाहितकरना॥रविसन्मुखगोहेइकचरणा॥  
 सहस्रवर्षबीतेविधिआये॥मोगुतातबरबचनसुनाये॥  
 कहनपजोकिरपाप्रभुकीजै॥तौगंगामहिआवनदीजै॥  
 बोलेअजहमछाड़बजबही॥जाईगंगरसातलतवही॥  
 तेहितैअवशंभुअबराधी॥मोगहुबरतेरविहैसाधी॥  
 सुनिवृपदिव्यवर्षशिवध्याये॥मोगहुबरहरआइसुनाये  
 गंगारोकिलेहुकरिदाया॥कीनकबूलगंगसुनिपाया॥



दो० जाडरमातानसहितप्रिय जयबद्धवोईश॥  
 छुईजो अजइकवर्षलोरहीमुनानीगीश॥  
 धायो नयगात्योजवा यदधारातहंतीन॥  
 सुरपुरगईयलालइकरहीमहीपरपीन॥  
 सुरपुरमंहाकिनिकहसपरमावतीयताला॥  
 गंगकहार्हअवनिलरिबबोलेमलिननृपाल॥  
 हेसुरसरिहरिमक्तजेरहिसमस्तवेकार॥  
 लिनकेतनअस्यशीसेनाभीपापतुम्हार॥

चौ० मुनिसमोदनृपसंगसिधार्ह॥ स्वच्छकरतपुरसागरअर्ह  
 तेरपितरभागीरथकेरे॥ अजहुँउधारतयतितघनेरे॥ ॥  
 यहिविधिमुनिगंगा यहिआई॥ जाहुमहातमवरिगानजाई  
 दशसहस्रसंबततपकरई॥ नखब्रतदाननेमआचरई॥ ॥  
 सकलपुण्यलैतुलाचढ़वै॥ गंगमहातमसमनहिं पावै॥  
 सुरमुनिमनुजसिद्धबहुजाना॥ गंगाकेब्रतसबहिनगाना॥  
 हरिजनभावबहुतविधिराखै॥ प्रभुकापादोदकश्रुतिभाषै  
 जिमिघनसोयावोशातमखैवै॥ तिमिगंगाकलिपातकंधैवै

दो० दृष्ट्वाअथसतजन्मकेपीत्वाअथसतदोय॥  
 मज्जनजन्मसहस्रकेहतंगंकलिजोय॥

चौ० जोयेंहुँजरशीचनहोई॥ तौहरिधामबसेनरसोई॥  
 बयसकेरवालकएकमोरऊ॥ कपकनकीरजमुखमेंपरेऊ॥  
 भयो नभूतगयोसुरधामा॥ देखिसिद्धि कीन्होंपरिनामा॥  
 विप्रएकगनिकारतजाना॥ अन्तकालिनिकसैनहिंप्राणा  
 बारमुखीमुखधुकेयोआई॥ तजितनुबस्योबिबुधपुजाई  
 पक्षीगिल्योमृतकंहेनीरा॥ मिदिगोतासुसकलभवभीरा  
 गंगमहातमअहंप्रपार॥ धककहतमुखशेषहजार॥

गीतिकाहुं कहिषं कैंशेष सहस्र मुख में एक का बरसान करी  
निज बुद्धि माफिक कह्यो कहु तब हेतु हरि पद उर धरौ ॥ ते ध  
न्य सुरसर तीर रहि लहि नाम नित्य नहावहीं ॥ खुनाथ ते तनु  
त्यागि कै परधाम निश्चय जावहीं ॥

सोरठा माथ नाइर खुनाथ ॥ मांगत ही जे जननि मोहिं ॥

जन्म जन्म तप पाथ ॥ पावें गाविराम गुरा ॥

इति श्री विश्वामसागर सब मत ॥ प्रागर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दास रा-  
म सनेही कृत गंगा की उत्पत्ति बराना नौ नाम द्वन विंशोऽध्यायः २६ ॥

दो० सुभिराम सिय सन्त गुरु गारा पगिरा सुख दानि ॥

बरौ गोबुद्ध पुराणा के ॥ अब इतिहास बरवानि ॥

सुरसरि माहिमा ॥ अगम सुनि बावन कथार साल ॥

पुनि शौनक बोले त भये नाइ सूत पदमाल ॥

चौ० प्रभु ॥ आनन्द भयो ॥ अति मोरे ॥ सुनि इतिहास सुधार सबारे ॥

इक लालसा ॥ और उर जामी ॥ सो अब पुराणा की जे स्वामी ॥ ॥

एकादशी की उत्पत्ति कै से ॥ भइ जग माहि बरवानौ तै से ॥ ॥

सुनत सूत बोले सुख पाई ॥ मली प्रश्न कीन्हें ॥ ऋष राई ॥ ॥

सब सुख करिग हरिग ॥ अघ भारी ॥ पार होव भव सुनि नर नारी ॥

सो इतिहास सुनवां तोहीं ॥ जस कहु समुझि परो उर मोही ॥

सत युग माहिं ॥ असुर इक भयऊ ॥ सुर ॥ असनाम सब निदुर दयऊ

शंखा सुर सुत पितु बध जान्यो ॥ तब बन जाइ महा तप ठान्यो ॥

पदमासन किग ॥ आइ बखाना ॥ मागु सुख मनि जरु चिवर दाना ॥

बोला सुनि सुर मुनि मनु जादा ॥ श्रीधर हर लोक पसह पादा ॥

जहलगु सुखि रची ते महीऊ ॥ हम ते समरन जी तै कोऊ ॥ ॥

एवमस्तु कहि बह्य सिधायो ॥ सुरवर पाइ वेस्म निज ॥ प्रायो ॥

भुजबल जीति सकल महि पाला ॥ पुनि दल साजि सुरन पर चाला ॥



भयायुद्ध प्रतिखेचरहारे ॥ शक्रसहितभागेभयमारे ॥ ॥  
 दनुजराजलखि प्रतिहरयाना ॥ वैद्योरेतहं प्रापनयाना ॥  
 दिगपालनपरबहुरिसिधारा ॥ जहाँतहाँ भयमारु अपारा  
 बरुगा ॥ कुँवरकालयमराई ॥ लैलैजियसवगये पराई ॥ ॥  
 सकललोकतपबलवसर्काहे ॥ निजसेवकनबासतहँदीहे  
 तबसुरमहितइंद्रशिवपासा ॥ प्राइनाइशिरहालप्रकाशा  
 नाथ ॥ प्रसुरभयदेषदुखारी ॥ बूहिउपाइमिटैदुखभारी ॥  
 कहहरसेतदीपनुमजावा ॥ कमलनाभकहँविपतिमुनाबी  
 शंभुबचनमुनिसुरसुरईशा ॥ आयितुरतजहाँजगदीशा ॥  
 सन्मुखहँलोचनभरिबारी ॥ हाथजोरिअस्तुतिअनुसारी ॥  
 तोटककुं ॥ जयजयजगदीश ॥ प्रजीशपति ॥ करुणारसमा  
 गरशुभ्रमति ॥ जयदीनदयालकृपालप्रभो ॥ तबधूरिरह्यो ज  
 गमाहिं विभो ॥ जबहीं जबदुखहँमैजुपरह्यो ॥ तुमहींतबसंकट  
 नाथहँह्यो ॥ अबनिधूरएकभयोसुरहँ ॥ सुरदीननिकारिलि  
 योपुरहँ ॥ दिगपालसंवेमिलिदेवहरी ॥ भयत्रासितप्राइपुका  
 रकरी ॥ तोहिते ॥ अबनाथकृपाकरिये ॥ दनुजेंदलिमोदुखकोह  
 रिये ॥ मुनिदीनगिराबदविगातबै ॥ करिहँकलिकोपननाश  
 संवे ॥ कहियाबिधिसाजिचलेदलका ॥ दिगपालनदेवनकेह  
 लका ॥ यहमुद्रितमीचरपाइबली ॥ लैसैनसुसन्मुख ॥ प्राइली  
 नभधूरिरहीरजोरकरै ॥ परप्रापनबाचनबूझिपेरै ॥  
 चामरहुं ॥ इतउमबीरेंजेतिजेंपुकारिधावहीं ॥ चक्रधानश  
 क्तिशूलभिंडलैचलाथहीं ॥ शीखपाशापायभूमिखराडख  
 राडहँगिरें ॥ उष्टिउष्टिरुराडदौरिमारुमारुकैभिरे ॥  
 तोनरकुं ॥ पुनियल्योमरबलवान ॥ करिक्रोधकालसमान ॥  
 करधनुयसरभरलाया ॥ सबचलेदेवपराय ॥ सुरनाथजृम्भन

लाग। रगाश्रित इन्द्रभाग॥ हरिकाग्रस्थौ मुरभूप। भयविशु  
 क्रोधसरूप॥ इति च कथा स्याताहि। नहिं कीन्हिं तनकौ आहि।  
 तरज्योतमी चरधाइ। सठहरिहि मारिसि आइ॥ यहि भौति यु-  
 द्धकरंत। भइ सहसवर पै गत॥ मुनि सिद्ध हाहा कीन। तजि-  
 समर विशुहि दीन॥ भागत निशा चरनाथ॥ धावत भयौ हरि-  
 साथ॥ अम विपुल बद्धी आइ। प्रविसे गुहा महं धाइ॥ रह सिं-  
 धवत प्रसनाम। योजन तरणि बड़ताम॥ एक द्वारता माधिता-  
 त। मुर दीख विशुहि जात॥ लय संग निज भटसर्व। प्रविस्थौ  
 गुहा युत गर्व॥ दानव वधन के लाय। प्रभु कीन एक उपाय। भ-  
 य आ पुनि द्वाबस्य। कन्या भई उरतस्य॥ बल विपुल तेज अपा-  
 र। हे जगत जेहि आधार॥ तन दिव्य पट भुज चारि। अस्त्रकार प्र-  
 युधधारि॥ प्रकटी जे माया आदि। जेहि उरत शिव ब्रह्मादि॥  
 लखि दनुज करि कै कुड्ड। लागी करणा तहं युद्ध॥ प्रगटी दशौ  
 दिशि आगि। कित जाहि दानव भागि। दुमि भये सब जरी छार। निक-  
 सी सुगन्ध अपार॥ भाश कुन इन्द्रहि नीक। आये गुहा सामीक॥  
 कियो कंदरा पर देश। मुर नारदादि गरोश॥ देरबो सबे जग माता  
 बैठी प्रफुल्लित गात॥ या सब सहित अनुगा। प्रस्तुति कनत बलगा  
 मदन मोदक दंडक जयति जग जननि प्रध हरणि मनम-  
 गनिकर प्रयुधवर चक्र प्रसि शूल धरणी। सर्व गुरा भवनि दुख  
 दवनि दानव सुर भिव्याध जन पद्म हरि विश्व कर्णी॥ रोग तम-  
 तरणि भय हरणि कलिकालिका सालिका शत्रु पर चंड रूपी॥  
 भूत ग्रह प्रेत वय साकिनी डाकनी विहंगहितं जाल दुर्गे अनूपी॥  
 दो० याहि विधि प्रस्तुति इन्द्र करि देवन हने निशान॥  
 वर वि सु मन जय जयति कृतत बजोग भगवान॥  
 सुर सुर पति दृगपाल मुनि विनय किहि नि सब भौति॥



देखिअसुरबधविष्णुतबबोलैमनहरयाति।

भुजंग प्रयातहुं० किहौदेविकन्यारादेवन्यकेरो। बरेमों-  
गियेजोचहैचित्ततेरो॥ कहाशक्तिप्रकटीमैतनतेतुम्हारे।

असुरदुष्टअबतलखेसर्वभारे॥ सुनौनाथमोकेनहींयांचि  
अवै। कृपाकेसोरांजैतुम्हेंजोनभावे॥ वद्योबिष्णुचलनो

कमेरेमेंराहो। एकादशिसरीरिनुभैनामलाहो॥ नवोनिह-  
संसिद्धफलतुर्तदाता। जुहोवोसदाभयहिरायाक्षघाता॥

रहेवर्तपूजैतुम्हेंनेमधारी। मनोकामनायाइहैनरुनारी॥

दो० यहिप्रकारवरदानदेहरिभेअंतरधान॥

उतपतिएकादशीकीइमिमैकीनिबरवान॥

चौ० कहसोनकयहकहौबरवानी॥ कौनीभांतिरहेव्रतशरीणी

मुनिमुनिवचनसूतसुखमाना॥ तातसुनोअबवरतविधाना॥

एकादशीव्रतकीनजोचहै॥ दशमीतेअसनेमनिबाहै॥ ॥

मसुरीमासकांसत्रियसंगा॥ कोदवचगाकशयनपरयंगा॥

अत्यप्रहारबारइककरई॥ मधुअरुशाकदंशीपरिहरई॥

उठैएकादशिहोतबिहाना॥ सुचिकरिमध्यदिवसअसनाना

केशवकीपूजापुनिठाने॥ बोड्याभांतिभजैभगवाने॥ ॥

कामक्रोधमदलोभरुमाया॥ तप्तलौयमदमैथुनजाया॥ ॥

निद्राहास्यमदर्शतबोलै॥ तजिरदधावनभूठनबोलै॥ ॥

रातिजागराकरैसुजाना॥ सुनैकथाहरिकीरतिगाना॥ ॥

प्रातक्रियाकरिविप्रबोलाई॥ यथाशक्तिसनमानैभाई॥ ॥

तेलासिरवपरान्नपुनिभोजन॥ मैथुनादितजिह्वादशसेजन

यहिप्रकारजोकरैविधाना॥ ताकरफलसुनियेदेकाना॥ ॥

दो० काशीसेवैअदशतअचंबैवारिकेदार॥

उमैसहसगोदानदेतीरथअंदैअपार॥

होमयज्ञकरिशतसहस्रविप्रजैर्मावैकोय॥

एकादशीव्रतके रहै समनहिं कोई होय॥

सो० जोव्रतसहितविधान। रहै राखि विश्वास उर॥

अविप्रतबैमान। बैसे बिष्णु पुरजाइ सो॥

रोला छं० निराहार फल पूर्ण दुग्ध ते आधार हई। फल प्र-

हार चतुरांश कंद ते प्रदया लहई॥ करै उदर भरि असन अं-

शसत का फल पावै। उभे वार ते सहस्र अंश फल निगम बता-

वै॥ एकादशी के दिवस अन्न खावै जो कोई। अथवा दैवै का-

हु दोख ताका बहु हेई॥ व्रत करण परि हरै रहै बिषयार स-

लीना। ग्रास ग्रास पर परत ब्रह्म इत्या तेहि चीन्हा॥

दो० दशमी वेधी नारही करी द्वादशी वर्त॥

पंचालि सतक चाहिये सवियानी पुनि हर्त॥

सो० बरष एक के माहि। एकादशी चौविश परै॥

सुनौ सबन के नौय। फल समेत वर्णन करै॥

चौ० अगहन अक्षित एकादशिके रा॥ शयन बोधनी नाम निवेरा

विप्रकोटि सत न्याति जेवावै॥ यहि व्रत सम फल सो नहिं पावै

मार्ग यज्ञ तिस मो हृद नामा॥ जे राति पुंस पाव हरि धामा॥

तेहि पर एक वृत्ति हास बखानौ॥ ब्रह्म पुराण के रतु मजानौ॥

गोकुल नगर रहे एक राजा॥ बैरवान स प्रसनाम बिराजा॥

नर्क परा पितु स्व प्रदेखा॥ जागत भाउ रवेद बिशेखा॥

राज काज सुख नीक न लागै॥ मन बिचारि केहि विधि दुख भोगै

पुस्काजा सु अंधोगत होई॥ जीवत ब्रथा पुत्र जग सोई॥

अस कहि मुनि अत्रा अत्रा आये॥ करि प्रणाम निज शोच सुनाये

कहि अक्षित वपितु तेइ कवारा॥ रितु बंती प्रिय भोग बिचारा॥

सुनि रति दान दीन नहिं राई॥ तेहि अध पखौ अधो मुख जाई



दो० मार्गशीर्षसितपक्षकोएकादशीव्रतस्वप्न॥  
 करिदीजेफलदानतेहिलहैपितातबमोक्ष॥  
 सो० सुनिनृपमन्दिरप्राद। करिव्रतदीन्हेंप्रदानतेहि॥  
 पुरायपरमगतिपाद। जयकहिसुरवर्धसुमन॥  
 रहेजोव्रतजसिरीति। पावेअंतविमोक्षसुख॥  
 यदेसुनैकरिप्रीति। बाजपेदफलसोउल्लेहै॥  
 सत्यभूठकीबात। जानैनिगमकिरामजी॥  
 मोहिहरिहेतसोहात। अधिकनामकलिकामतर॥

इति श्रीविश्वामसागरसबमतः प्रागरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसने-  
 हीकृतएकादशीउत्पत्तिमार्गशीर्षकृष्णपक्षशुक्लपक्षसयनबोधनी-  
 मोक्षदाकथावरीनोनामचिंशोऽध्यायः ३० ॥

दो० सुभिरिरामसियसंतगुरुगरापगिरासुखदानि॥  
 कहौंथावनपोरागामतब्रह्मवैवर्तबरवानि॥

चौ० कहसौनककहियेअपिराऊ॥ पूसप्रसितव्रतकेरप्रभाऊ॥  
 कहानामकिनपूजरकीन्हा॥ सुनिसुमंत्रप्रसबोलैलीन्हा॥  
 सुफलानामअहैयहिताता॥ जानिअजानिकिहेफलदाता॥  
 करैसहसजोकन्यादाना॥ तुलैनइहिवतरहेसमाना॥  
 यहिपरएकसुनोइतिहासा॥ महिषमनृपचंद्राबालिबासा॥  
 रासुपुत्रबहुंभयोअधर्मी॥ लंपटचोरमदपहतकर्मी॥  
 सुनिनरेशवनदीननिकारी॥ करैनिवाहबिहंगमृगमारी॥  
 योपकृशाहरिबासरबारा॥ मिलानकछुतेहिदिवसअहारा॥  
 दुधितरह्योचलदलतरसोई॥ निद्रालब्धभईनहिंकोई॥  
 व्रतप्रसादतेभामनपावन॥ जान्योआपुहिबंसलजावन॥  
 आइभवनपितुपदस्तिनायो॥ समयसनेहराजपदपायो॥  
 अनजानेव्रतकरफलऐसा॥ जानिकिहेनहिंजानीकैसा॥

जोयह कथा सुनैया गावै ॥ कन्यादान दिहे फल पावै ॥ ॥

इति श्री पौषकृष्ण एकादशी महात्म्य संपूर्ण

सो० कह सौनक शिरनाइ ॥ पौष शुक्ल ही ब्रत कथा ॥

अब मोहिं देउ सुनाइ ॥ सुनि सुमंत्र बोलै हरषि ॥

चो० यहि कर नाम पुत्रदा कहिये ॥ अवशिष्ट पुत्र फल धारै लहि ये

लक्ष्मी नारायण हित सदैव ॥ संयम नियम पूर्व लखि लैवै ॥ ॥

यहि पर एक कहौ इतिहास ॥ केतु मान नृप भाद्र निवासा ॥

तेहि केतनै न एकहु भयऊ ॥ एक दिन करि विचार बन गायऊ ॥

देखत हंखग मृगत रुनाना ॥ मटत मिले मुमिसोम मुजाना ॥

करि बिनती निज दरवसक कहैऊ ॥ सुनि सुनि मब्रवीत जस चहैऊ

पौष शुक्ल ब्रत पुत्रद नामा ॥ करहु जाइ पूजी मन कामा ॥ ॥

भवन प्राइ ब्रत कीन्है उभूपा ॥ हरि प्रसाद सुत लह्यो अनुपा

जोयह कथा सुनै ॥ अरु गावै ॥ सुख संपति नाना विधि पावै ॥

इति श्री पौष शुक्ल एकादशी महात्म्य संपूर्ण ॥

सो० कह सौनक शिरनाइ ॥ माघ कृष्ण हरि ब्रत कथा ॥

अब मोहिं देह सुनाइ ॥ सुनि सुमंत्र बोलै हरषि ॥

चो० यहि कर नाम खट तिला अहई ॥ करि ब्रत नेमनिकर अथ अहई

तिल पिराडन में हरि हि पधारै ॥ विविधि भांति पूजा अनुसारे ॥

तिल पावै तिल विषे देवै ॥ तासु पुण्य सुर पुर मुख लैवै ॥ ॥

यहि पर एक इतिहास बरवानों ॥ रहै पुर शशि ब्राह्मणि जानों ॥

नाना नेम बरत साठानै ॥ दान देन भिच्छान हिं आने ॥ ॥ ॥

करि चिन्ता हरि जाये अरि ॥ दीन्ही मृत्तिका द्विजै रिसाई ॥ ॥

अंत काल तेहि पुण्य प्रताप ॥ लहा स्वर्ग शुचि मंदिर प्रापू ॥

तहं धन धान्य कछु नहिं देख्यो ॥ आपुहि महामन्द करि लेख्यो

हरि मत देव बधुन ते भागी ॥ यकर खट तिला पुण्य दुरि मागी ॥



दरशहेतव्रतकाहृदयऊ ॥ ऋद्विसिद्धिसबताकेभयऊ ॥ ॥

जायहकथासुनैबागावै ॥ तस्यअवश्वपुरायसरसावै ॥

इतिश्रीमाधुकृशाएकादशीमहात्म्यसंपूर्णा ॥

सो० कहसौनकशिरनाइ। माघशुक्लहरिव्रतकथा ॥

अवमोहिंदेहुसुनाइ। सुनिमुमंत्रबोलेहरायि ॥

चौ० माघशुक्लहरिबासरकेरा ॥ जयानामअघहरतसबेरा ॥

यहिपरथकबरौं। आख्याना ॥ ईदूअश्वाराहेछुबिबाना ॥

निर्गतसोहरिअगिजानी ॥ मालवगंधवदेखिलोभानी ॥

निरयिनिलज्जआपलुषदयऊ ॥ होउपिशाचजायदोउभयऊ ॥

वनमेंरहैंसहेंदुखनाना ॥ माघशुक्लव्रतकिहिनिअजाना ॥

हरिप्रसादगेस्वर्गयानचदि ॥ इमिभबिष्यवोतरभावतपदि ॥

जायहकथासुनीवाकही ॥ करीरुपातेहिपरप्रमुसही ॥ ॥

इतिश्रीमाधुकृशाएकादशीमहात्म्यसंपूर्णा ॥

सो० कहसौनकशिरनाय। फालगुनकृशाहरिव्रतकथा ॥

अवमोहिंदेहुसुनाय। सुनिमुमंत्रबोलेहरायि ॥

चौ० बिजयानामयाहिश्रुतिगावै ॥ याकेहैंबिजयनरपावै ॥ ॥

अवधनगरनृपदशरथकेसुत ॥ पितुवचवनगतबंधुबधूयुत ॥

तहेंजानकीहरीदशकंधर ॥ मिलिरबिसुतहिचंदैलैबन्दर ॥

दधि तटप्रापुअनुजमतदयऊ ॥ बकदालयदिगडूछनगपऊ ॥

नाथकहोंकेहिबिधिरिपुजीती ॥ सुनिमुनिवरबोलेकरप्रीती ॥

दो० फालगुनाकृशाबिजयाअसनामएकादशिकेर ॥

करहुजायतेहिरुपातेजितिहौशत्रुघनेर ॥

सो० आयकीनव्रतराम। रणचदिमास्योदशमुखहि ॥

सियसोदरयुतधाम। यहचतपायोरजपद ॥

कल्पभेदयहबात। वदअसकंधपुरानइमि ॥

पढ़ें सुनै जो तात । सोन सहै यम त्रास पुनि ॥

इति श्री कालगुन कृपा एका दशी माहात्म्य संपूर्ण

सो० कह सौन क सिर नाय । फाल्गुन सित हरि ब्रत कथा ॥

अब मोहि देहु सुनाइ । मुनि सुमंत्र बोले हरिधि ॥

चौ० आमर्द की नाम यहि जानौ ॥ गोशत दिये अधिक फल मानौ ॥

धात्री तरु पूजै मनु लाई ॥ देइ दान वह विप्र जे बाई ॥ ॥ ॥

हरि सुमिरन जन भजन प्रकाशै ॥ प्राधिव्याधि दुरव दारिद नाशै ॥

याही ब्रत कीन्ह्यो सुग्रीवा ॥ तस्य प्रसाद लह्यो सुख सीवा ॥

राजा नल दमयन्ती रानी ॥ यहि ब्रत करि भइ विपदा हानी ॥

आमर्द की प्रात दुरबाशा ॥ नृप परतम करि भये निरासा ॥ ॥

जो यह कथा सुनै या गावै ॥ पुष्कर मज्जन कृत फल पावै ॥ ॥

इति श्री कालगुन शुक्ल आमर्द की माहात्म्य संपूर्ण ॥

सो० कह सौन क सिर नाइ । चैत्र कृपा हरि ब्रत कथा ॥

अब मोहि देहु सुनाइ । मुनि सुमंत्र बोले हरिधि ॥

चौ० पाप मोचनी यहि कर नामा ॥ शुभ गति लहै किहे विश्रामा ॥

यहि परब क इतिहास बखानौ ॥ भविष्यो तर पुराण को जानौ ॥

व्यवन पुत्र मेधावी मामा ॥ करै तपस्या विपिन प्रकामा ॥

इन्द्र डराय अशरा पठायो ॥ हावभाव करि प्राइ डिगायो ॥ ॥

रमत बरष बीत्यो पञ्चासी ॥ बौली अहं जावन भवामी ॥ ॥

कह मुनिय क कृपा जनि डोली ॥ होत प्रात जायौ मुनि बौली ॥

कै बरष की तब राति प्रमाना ॥ मुनि हिंचै तब भादुख माना ॥

दीन आपते हि हे अघ चरणी ॥ होहि पिशाची तप क्षय करनी ॥

मुनि कम्पित है चरन नई ॥ कीजै कृपा भूल बड़ि भई ॥ ॥

कह ऋषि चैत कृपा उपवांशै ॥ करु हरि बासर ते अघ नाशै ॥

मुनि अशरा की न ब्रत भारी ॥ है पावन सुरलोक सिधारी ॥ ॥



जायहकथासुनैवागावै॥ चन्द्रायनव्रतकृतफलपावै॥ ॥

इतिश्रीचैत्रकृष्णपापमोचनीमहात्म्यसंपूर्णा॥

सो० कहसौनकसिरनाइ॥ चैत्रशुक्लहरिव्रतकथा॥

अबमोहिदेहुसुनाइ॥ सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ० कामदनामएकादशिएहा॥ करतहरतजेहिकलुषसनेहा

यहिपरएकसुनौइतिहासा॥ पुराडरीकनृषसुतलनिवासा

गंधर्वीललिनातेहितीरा॥ कीइतकरीनपतितेहिंभीरा॥ ॥

मदनातुरहेगानबिगारा॥ दीनश्रापनिशचरबपुधारा॥ ॥

पतिगातिलरिखलज्जितबिलखानी॥ किंकरोमिकोगच्छकदानी

यकदिनकाननकीनपयाना॥ विद्यासिरवरमिलैमुनिनाना॥

पूछेतेनिजविपतिमुनाई॥ तिनकहकामदव्रतकरुजाई

सुनिव्रतदानताहिकरिदयऊ॥ राक्षसत्वगतगंधुबभयऊ॥

चदिबिमाननिजपुरपगुधारा॥ सुनतकहतअघदहतअपारा

इतिश्रीचैत्रशुक्लकामदमहात्म्यसंपूर्णा॥

सो० कहसौनकसिरनाइ॥ वैशाखसितहरिवरत॥

अबमोहिदेहुसुनाइ॥ सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ० नामवरूथिनियाहिमुनिगाइनि॥ सबसुखरामभक्तिबरदाइनि

विप्रमुंचएकयहव्रतकरेऊ॥ जातजागराहरिमगधरेऊ॥

बोलाद्विजलौटनमोहिंखायो॥ सपथखाइहरिमंदिरआयो

करिजागराघाततहंगयऊ॥ व्रतप्रसादमृगपतितजिदयऊ

अन्नसंभेहरिपुरगासोई॥ कहतसुनतगोशतफलहोई॥

इतिश्रीवैशाखकृष्णवरूथिनिमहात्म्यसंपूर्णा॥

सो० कहसौनकसिरनाइ॥ वैशाखशुक्लहरिव्रतकथा॥

अबमोहिदेहुसुनाइ॥ सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ० मोहनिनामकामफलदाई॥ विष्णुवरारसेवैचितुलाई

बोड़सभांति सहित अभिलारैये ॥ कैरे प्रदक्षिराजय श्रुति भांये  
 बिशुहि चारि अर्ध हरिकाहीं ॥ रबिहि सात चंद्रै यक चाहौ ॥  
 हरिदिग भूठ विवादन गनै ॥ गरभालै पादुकान अग्नै ॥ ॥  
 अग्रेष्टे उपदिसि वामा ॥ कैरे न जपत पही म प्रनामा ॥ ॥  
 यहि विधि द्वादश दोष बरार्ड ॥ हरिहि भजै सब पाप न सार्ड ॥  
 यहि परयक इतिहास बखानौ ॥ कूर्म पुराण केर तुम जानौ ॥  
 दो० श्रीरघुनाथ बधिष्ठिते कह्यो स्वप्न के माहिं ॥

देखत हो मैं दश मुखे भय वश सूतत नाहिं ॥

चौ० कहौ सो ब्रत जेहि करि अर्घ जाहीं ॥ सुनि बशिष्ठ बोले प्रभु पाहीं  
 राम नाम तव धारण करई ॥ कैसे कलुखी भव निधित रई ॥ ॥  
 प्रप्लोक हित किहे उरुपाकर सित बैशाख हो हरि वासर ॥  
 सब दुख दोष दैत करि हानी ॥ सुनौ एक इतिहास पुरानी ॥ ॥  
 सरस्वती तट सोमवती पुर ॥ वैसे वैसे धन पालनाम चुर ॥ ॥  
 ता सुत नै बड़ पापी भयऊ ॥ तस कर जानिका दिते हि दयऊ ॥  
 धूर्त कर्म करि दिवस बितौवै ॥ जचत प्रगहि पीटो जावै ॥ ॥  
 नृप भय बहुरि बसावन जाई ॥ खग मृगत हंके बध करि खाई ॥  
 एक दिन जान्हवी चलि न्हायो ॥ कौडित्या अमल रिसिर नायो  
 महापतित मैं किमि अघ नाशौ ॥ कह मुनि करु मोहनी मुपासौ  
 मुनि ब्रतरहत दहत अघ भयऊ ॥ दिव्य देह है हरि पुर गयऊ ॥  
 जायह कथा कहै बागावै ॥ सो ब्रत अर्घ केर फल पावै ॥ ॥

इति श्री बैशाख शुक्ल मोहनी महात्म्य संपूर्ण ॥

सो० कह सौनक शिरनाइ ॥ ज्येष्ठ कृष्ण हरि प्रत कथा ॥  
 अब मोहिं देहु सुनाइ ॥ सुनि सुमंत्र बोले हरधि ॥

चौ० जेठ असित ब्रत अपरानामा ॥ दोष दल निदायक मन कामा  
 एक इतिहास सुनौ श्रुति कहई ॥ सत्यवती एक ब्राह्मणी रहई ॥



हरिमिलनेहितजेहितेहिहृच्छे॥केहिलोवेंतजिआमदबुद्धे  
 लखिलाससातासुलालचमुनि॥बोलेसत्यवतीमोतेसुनि॥  
 जेवृकृष्ण॥अपरावतरहऊ॥भिलीसोइपतिजेहितुमचहऊ  
 करालागिब्रतसहितविधाना॥हिजनिजेबाइदेइबहुदाना  
 तनुतजिअन्तकाललहिजेई॥भईआइसतिधामासोई॥  
 कृष्णकंततेपुरायएकदिन॥बूझसिआपनियहीकहीतिन  
 असअपरावतभूधृतगावै॥पढतसुनतगोशातफलपावै॥

इतिश्रीज्येष्ठकृष्णअपरामहात्म्यसंपूर्ण॥

सो० कहसौनकशिरनाइ॥ज्येष्ठशुक्लहरिव्रतकथा॥

अबमोहिंदेहुसुनाइ॥सुनिसुमंत्रबोलेहरवि॥

चौ० यहिव्रतनामनिजलासेवै॥हरिपदधेनुविप्रकहंदेवै॥

दुवादशीदिनपारनकरई॥सोनरथमजातनानभरई॥

वरणयोव्यासभीमतेयाही॥अन्नअसननहिंअनदिनचाही॥

यहितनसोचंराडालसमाना॥मरेलेंहेदुगतिदुरवानना॥

बोलेभीमकरियकसताता॥वृषभवोदरव्रतहानजाता॥

तौतुमएकनिरजलाकीजै॥बारोसासंकरफललीजै॥

सुनिविधिकरणावृकोदरलागे॥जातभयेहरिपुरतनुत्यागे॥

जोयहकथामुनेयागावै॥गयापिराइदीन्हैफलपावै॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास

रामसनेहीकृतचतुर्दशएकादशीमाहात्म्यवर्णनीनामएकविंशोऽध्यायः॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगरायगिरासुरवदानि॥

वरसो०विविधिपुराणकीपुनिइतिहासवरवानि॥

सो० कहसौनकशिरनाइ॥असितअबाढहरिव्रतकथा॥

अबमोहिंदेहुसुनाइ॥सुनिसुमंत्रबोलेहरवि॥

चौ० महापुनीतयोगिनीनामा॥यहिव्रतचरेहोइसिधिकासा॥

यहि पररुक् इति हास बखानौ ॥ विधि वैवर्त केर तुम जानौ ॥  
 अलका पुरीय ह्यपति पाली ॥ बटुक हे मरहति न कर माली ॥  
 तस्यांगना मृगाक्षी नामा ॥ प्रीत्या शक्ति है बस कामा ॥ ॥  
 शिव पूजन कुवेर नित जाही ॥ एक दिन स्त्रक पहुँचाय स नाही  
 तब धनपति निज अनुग पठावा ॥ रमत हे रित हं प्राय सुनावा  
 मुनि कुवेर बोले करि रोसा ॥ सुरहे लन कृत देइ भरोसा ॥ ॥  
 यहि अथ कुष्ट होइ अष्टादसा ॥ कहंते भयो गंया कानन तस ॥  
 सहै कष्ट तब मन पछिताई ॥ मार करा डिय लखि विपति मुनाई  
 कह मुनि योगिन्या मुपवासे ॥ कुरु जेहि पुराय कुष्ट तब नासे  
 मुनि व्रत करत भयो बपु नीता ॥ कहत सुनत सुख प्रद सब ही का  
 इति श्री प्रवाढ कथा योगिनी महात्म्य संपूर्णा ॥  
**दो०** कह सैन क शिरुनाइ ॥ सित प्रधाद हरि व्रत कथा ॥  
 अब मोहिं देहु सुनाइ ॥ मुनि सुमंत्र बोले हरिधि ॥  
**चौ०** सुशयनी यहि नाम प्रवृत्ता ॥ जेहि धरि हृदय तरिय भव कृपा  
 मिथुन स्ते अविहरिहि सौ वांवे ॥ तुलारासि गत बहुरि जगावै  
 तस्य पुरः चतुराब्द किमासा ॥ करै नेम रहि बरत उपासा ॥ ॥  
 मृदु बादी होवै गुड त्यागी ॥ पुष्य तेल गंध वसौ भागी ॥ ॥  
 कटुक कषाय तजे कुबिवंता ॥ रवि गत भय हरि सुमिरा संता  
 रक्त कराठ ताँ बूल नै वार ॥ पदाभ्यांग बस बाहन द्वारे ॥ ॥  
 महिं सापि नृप होय विशोका ॥ पय दधित जे जाय गो लोका  
 तजे अन्न सो मुर पुरवासे ॥ लोन ते त्रैतन के अघ नासे ॥  
 हरि मंदिर मार्जनी जो करई ॥ दीपदान लेपन अनुसरई ॥  
 काम क्रोध मद लोभ गवांवे ॥ सो सायु ज्य मुक्ति नर पावे ॥ ॥  
 जेहि तेहि भोति देइ जो दाना ॥ सो प्रणी होवै धन बाना ॥ ॥  
 नृत्य गान कृपालै करई ॥ सो नर भक्ति लहै बर बरई ॥ ॥



चंचरोपपतनीपद्मावति ॥ पुरहरहीहरिमंदिरगावति ॥  
 दीनलगाय चूननिजपानी ॥ तेहिफलभई अवधकीरानी  
 करिहरिभक्ति गई प्रभुधाभा ॥ बहुपुसनकरसाख्यो कामा ॥  
 कहत सुनत तो हे प्रभुनिजजानै ॥ इमिनारही पुगरा बखानै ॥  
 इति श्री अथाठ शुद्धदेवशयनी महात्म्य संपूर्णा ॥  
 सो० कहसौनकशिरनाइ ॥ आवरातमहरिब्रतकथा ॥  
 अवमोहिदेहु सुनाइ ॥ मुनिभुमंत्रबोलैहरायि ॥  
 चौ० आवराकथाकामिकामामा ॥ सेवनदोउलोक विश्रामा  
 पूजेविष्णुचरणचितुलाई ॥ तासुपरायककुवरगानजाई ॥  
 गंगागयागोदावरिपुष्कर ॥ वाराणासी प्रागंमज्जेनर ॥ ॥  
 अन्नपदादिदानदेसाई ॥ यहिब्रतसरिसतदपिनाहिं होई ॥  
 उरापबदावनिस्वर्गनिसेनी ॥ यकइतिहासमुनो सुखदेवी ॥  
 शुभगमुमनरुक्मंगदवागा ॥ आवैलेनमुरी सह रागा ॥ ॥  
 यकदिनकरहिगई धूमा ॥ बृन्तताककरलारग्यो धूमा ॥ ॥  
 मुनिनृपमालीतेतहें प्राधा ॥ दिहु पडाइ स्वर्गमेहि भावा ॥  
 केहि विधितवसुकृत सरसाई ॥ कामदब्रतदीजेयकराई ॥  
 कहचूपयहानजानै कोई ॥ कीनअजानलयावो सोई ॥ ॥  
 तबनृपनगरपिटाई डौंडी ॥ मुनिआई यकबनिककीलौंडी  
 दीनदानब्रतलहिसुरनारी ॥ चढ़िबेवाननिजलोकपधारी ॥  
 देखिअभावकरननृपलाग्यो ॥ सुतत्रियप्रजबसहितअनुराग्यो  
 कलिमोहनीकठिनबरुजाचा ॥ तद्यपितज्यौनहरिब्रतलाचा  
 प्रगाविलोकिहरिदरशनदीन्ह्यो ॥ खलमोहनिहिधुंकेलोकान्दो  
 इमिब्रह्माराहपुगराबखानै ॥ कहत सुनतअवनासनमांनै ॥

इति श्री आवराकथाकामिकामहात्म्य संपूर्णा

सो० कहसौनकशिरनाइ ॥ आवरासितहरिब्रतकथा ॥

अब मोहिं देह सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० आचरण शुक्ल पुत्रदाना मा॥ लहे पुत्र येहि करि प्रभग मा  
याह परये कइत हास भनीता॥ माहि प्रपुरहनृप महि जीता-  
पुत्र हीन कछु रुचै न तेका॥ दिजनि बृम्भवन गादिन एका  
तहां मिले लोमस कालीना॥ पूछै तबो लाहे दीना॥ ॥  
तनु लहि कुपय नय गहम धारे॥ कहि प्रध भयौ न पुत्र हमारे  
कह मुनि पूर्व बनि कतु मरहेऊ॥ धर्मवान यक दिन जल चहेऊ  
वृषित सब क्षपेत रहे गाई॥ पीन ताहि तुम मारि भगाई॥ ॥  
तेहि प्रध प्रगज मिल्यो न धीजै॥ अब पुत्र दाइ कादशि कीजै  
होई अचरण सुनत ग्रह प्राये॥ कीन्हो ब्रत प्रताप सुत पाये॥  
जायह कथा सुने या गावे॥ गंग स्नान किहे फल पावे॥ ॥

इति श्री आचरण शुक्ल पुत्र दामहात्म्य संपूर्ण॥

सो० कह सोन कसिरुनाइ। भाद्र असित हरि ब्रत कथा॥

अब मोहिं देह सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० अजिता नाम अस्य प्रदत्त मा॥ हृषीकेश पूजै युत प्रेमा॥  
यहि परमुन एक कथा पुरानी॥ नृप हरि चंद्र रहे बड़रानी॥  
विधि बसरा ज भ्रष्ट भैता की॥ सुनतिय देह गई विवि जाकी  
दुर्व्रत जन मृत चैल प्रहारी॥ बोले लखि गौतम दुख भारी॥  
अजिता वरत करी हरि चंदा॥ मिदें सकल दुख होइ अनन्दा  
मुनि महि पालतें ब्रत कीन्हा॥ सुनतिय राज्य बहुरि हरि दीन्हा  
जायह कथा सुने वा गावे॥ अशोदान दिहे फल पावे॥ ॥

इति श्री भाद्र कथ अजिता महात्म्य संपूर्ण॥

सो० कह सोन कसिरुनाइ। भाद्र असित हरि ब्रत कथा॥

अब मोहिं देह सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० यहि हरि वासर पदमा मा॥ सब दुख हरि कीरि सुखि धामा॥



याह पर एक कहें इतिहासा ॥ मान्धाता नृप प्रवधने वासा  
 धर्मवान गो जीत प्रमानी ॥ प्रजा अंतक बसेत हं जानी ॥  
 तीनि बये जल मे वन देहा ॥ मयि लोग सब सुख से हीना ॥  
 नृपहु दुखित हे कसमि धाया ॥ निलि अंगिरहि सुकर सुनावा  
 कह सुनिय कबू यलीत पुकरही ॥ तेहि अघ महि जल हीन परदे  
 करुहत ताहि आजु जल बसे ॥ हिंसा कर धन बरु जग भर से  
 तेहि तं देहु धर्म उपदेसा ॥ नमसित हरि ब्रत करौ नरे सा ॥ ॥  
 भले नाथ कहि कीन्हो ॥ आई ॥ प्रज जन हित भे बृष्टि प्रवाई  
 सह संसित सुख लह्यो नरे सा ॥ कहत सुनत तोहि मिदत कलेषा  
 इति श्री माद्रपद शुक्ल पद्या महात्म्य संपूर्ण ॥

सो० कह सौन कशिर नाइ ॥ आश्वनिरुषा हरि ब्रत कथा ॥  
 अब मोहि देहु सुनाइ ॥ सुनि सुमंत्र बोले हरिषि ॥

चौ० नाम इन्द्राय हि सुख देनी ॥ नर्क नवारि ॥ स्वर्ग निसेनी ॥  
 ता पर एक कहें इतिहासा ॥ इन्द्र जीत नृप महि पुरवासा ॥ ॥  
 सविता तस्य अधो मुख रहेऊ ॥ नारद प्राय भूपते कहेऊ ॥  
 कह नृप किमि होवे निस्तारा ॥ बरत इन्द्रिय हो भुवारा ॥ ॥  
 देहु ताहि फल करि नृप दयऊ ॥ त्यागि अधो मुख हरि पुरगयऊ  
 जो यह कथा सुने वागावे ॥ नैमिष क्षेत्र अट फल पावे ॥ ॥  
 इति श्री आश्विन कशा इरि रामहात्म्य संपूर्ण ॥

सो० कह सौन कशिर नाइ ॥ आश्वनिसित हरि ब्रत कथा ॥  
 अब मोहि देहु सुनाइ ॥ सुनि सुमंत्र बोले हरिषि ॥

चौ० पापां कुशा नाम यहि जानी ॥ अशुभ कर्म नासनि सुख दानी  
 सुनि इतिहास कथा जिमि कहेऊ ॥ चेतन नाम विप्र एकरहेऊ  
 विद्यावित गर्वित नाहि धूर्त ॥ आपसमान न आनहि बूझै ॥  
 हो० विद्यावाद प्रमाद धन शक्ति पर दुख हंत ॥

खलसुसाधुविपरीतकरिज्ञानदानमुखदेत॥

विद्याविद्याहरणाहितपढतहातरखलदूढ॥

चह्यौनिकासनमीनपीधुसिआयोग्रहजेठ॥

**सो०** एकदिनसोबतमाहिं। कहुँमनुष्यकनगरमें॥

भूपरह्योहैनाहिं। बलुतहंमिलिहेंरजतोहिं॥

चल्योहराधिवसमोहा। मगनदलखिलायोहलन॥

मध्यमगारसहकीध॥ चाबतजाग्योसहितदुख॥

**चौ०** करिविचारकुभजपहंगयऊ॥ निनउपदेशयथाचितरथऊ॥

पदेसुनेकाफलमुतयेही॥ कारविंवकहरिपदचितदेही॥ ॥

**दो०** दशमन्दननन्दनचरणकमलअमलअनुराग॥

जोनबढ्योवादिहियढ्योमढ्योमोहमददाग॥

**चौ०** भवनदकालमगरतुमदेखा॥ मध्यवयसमहखावविशेखा॥

पापसंकुलाकरिअधजोरि॥ हरिपदभजिपरलोकसुधारि॥

कीनआइब्रतबुद्धिप्रकासी॥ सुमिरणाकरिभाहरिपुरवासी॥

जोयहकथासुनेयागावै॥ ब्रतफलचतुरअंससोइपावे॥

इतिश्रीआश्विनसुक्लपापांकुशामहात्म्यसंपूर्ण॥

**सो०** कहसोनकधिरनाइ। कातिककृष्णहरिव्रतकथा॥

अबमोहिंदेहुसुनाइ। सुनिसुमंत्रबोलेहरिषि॥

**चौ०** रमनीनामरहैजोकाई॥ सोनरइन्द्रसर्मापीहोई॥ ॥

यहिपरएकसुनेअख्याने॥ नृपमुचुकुन्दभलैब्रतठानै॥ ॥

सुनातस्यशशिभागानामा॥ शाभनपतिआवापितुधामा॥

सुधितअसननिजनारितेमोंगा॥ सुनतकह्योपतितशशिभागा॥

आजुअहेहरिवासरनाथा॥ पशुपक्षीकोइलेहैनपाथा॥ ॥

होतहंसगतिकौनअकाजू॥ बड़ेभागमृत्युपाईआजू॥ ॥

भावीबसत्यागेतेहिप्रणा॥ हरिपुरगाचदिशुभगाविमाना॥



बहुतकहाकहियेविस्तारी॥ब्रतप्रभावसबपुरीउधारी॥ ॥

जोयहकथासुनैवागावे॥अन्नदानदेहेफलपावे॥ ॥

इतिश्रीकार्तिककृष्णामरीमहात्म्यसंपूर्ण॥

सो० कहसौनकाशिरनाइ॥कार्तिकसितहरीब्रतकथा॥

अवमोहिंदेहसुनाइ॥सुनिसुमंत्रबोलेहरायि॥

चौ० यवोधनीनामयहनीकी॥दायकसकलकामनाजीकी॥

यहब्रतसरिसप्रवरब्रतनाहीं॥अथतमजिमिबिलोकिरपिनाही

जनकनगरएकसुपारहेऊ॥हरिनिशिजागिमित्रमगचहेऊ॥

तेहिप्रसादमनभईगिलानो॥तजिसिंदहभजिसांगपानी॥

बितदत्तारखिलभयसुखात्मा॥नृत्यगानब्रतकरैरशात्मा॥

साहितसनेहजंघेहरिनामा॥ब्रह्मचर्यप्रस्थितहरिकामा॥

ब्रतप्रसादसोदगोपकुमारी॥भईअधिकगिरधरेपियारी॥

बृन्दावनबिहारजगजाना॥इंधबदतिस्कन्धपुराना॥ ॥

कार्तिकमेंसुनिसुमनचढ़ावे॥हरिहितासुफलवरिगानजावे

देवोस्थानीहरिब्रतगीता॥सुनतकहतफललहतसुनीता॥

यचौबीसोनामबरवाने॥एकादशीकेजोममजाने॥ ॥ ॥

विधिवतचरिहरिसुमिरणकरई॥गोपदइवभवसागरतरई॥

गीतिकाछं०भवतैरेगोपदसरिसजोसुचिनेमकरिब्रतदान-

ई॥पावैवरतबटअंसफलजेकथासुनैवरवानई॥कलिकाल

पापयोधिजपतपयोगमखअश्रैतजै॥रघुनाथदासप्रतीत

तेसतसंगकरिरामेभजै॥

दो० रामभजनबिनकर्मजोसोसबतुच्छखराज॥

यथासुल्लदशगुल्लबिनअंकगनेनाहिंजात॥

एकादशीवरदानितोहिमातुजांचिसबकोइ॥

लहैलोकामफलदेहमाहिंरामचरणारतिहेइ॥

इति श्री विश्रामसागरस्य मत आगरग्रन्थ उजागर श्री गुरुनाथदास  
राम सनेही कृत चौबीसो एकादशी माहात्म्य वर्णनो नाम द्वाविंशोऽध्यायः ३२

दो० सुमिरिरामसियसनगुरुगणपतिगामुखदानी॥

कार्तिक महात्मकी कथा कहैं इति हासवरवानी॥

चौ० पुनि सोनक बोले मृदुवानो॥ केहि विधि भई तुलसिकाजानी॥

विशु शीशधारी केहि हेता॥ यंहो कहैं प्रभु कृपानिकेता॥

कह्यो सुत सुनिये अटविराई॥ विशु पुराण कहत इमि गाई॥

तुलसी नाम रहै यक नारी॥ तेहि हरि हेत कीन्हत पभारी॥

हे प्रसन्न प्राये भगवाना॥ बोले सुमुखि मांगु वरदाना॥

देखि रूप बोली करजोरे॥ पति है सदा रहैं उध मोरे॥

सुनिलक्ष्मी लापर करि कोहू॥ दीन्हो आप बिटप जड़ होहू॥

कमलहि आप दीन तेहि रहू॥ वसैं जाइ तुम नीच न गेहू॥

सुनत विशु तुलसी से कहैं ऊ॥ बिटप होतु मम प्रिय रहैं ऊ॥

में धरि शाल ग्राम शरीरा॥ रहैं हो सुमुखि सदा तव तीरा॥

प्रथम गराड की कानिनि एक चुरा॥ तपु करि मांगि सिबैं सौ सदा उर

में कह सारित होत यहि मोरे॥ शिलारूप बसि हैं उर तोरे॥

एक कल्प इत्यं श्रुति गाई॥ दूसरि विधि प्रवसुं नो सुनाई॥

गीतिका हूँ० एक बार शिव मग जात सुमिरत नाम तहं बास

बरह्यो॥ लखि कहैं उयो गीत होहू ठाढ़े चितैं भव मार गगह्यो॥

तब दृढ़ दारि तधाइ प्राइ रि साइ प्रसबोलन भयौ॥ माने क-

हान हि मोर तैं सठ हेरि हम तन चलि दयो॥ सुनि वक्र बचन-

महेश को धित नयन तीसर ते तहो॥ प्रकटो प्रग्निकी ज्वाल

नी क्षण जरन हरि लाग्यो महा॥ हाथ बिकल बासव गिर्यो

चरणान त्रहि त्रहि पुकारेहु॥ लखि दीन प्रभु कपाल पाव

कलौय निधि महं डारेहे॥ तेहि बृहद ते तहं मयौ बालक



सिंधुसुतकरिपालेऊ ॥ विधिआइकीन्है० कर्मनामहु धरिजलं-  
धरचालेऊ ॥ गतकालकहु भातरावृन्दानामनारीपायऊ ॥

सो कालनेम किसुतामनवचकर्मपतिपदध्यायऊ ॥ ॥

**दो०** अयोजलंधरप्रबल० प्रतिजीतिजगतवशकीन्ह ॥

निशिचरपतिहै० निशिचरगिबासजहांतहैदीन्ह ॥

**चौ०** एकदिनसभाबैठरहै० सोई ॥ सकलसमाज० प्रापनीजोई ॥

राहुकबंधंदरिय० असकहई ॥ शीशमेरकेहिकाटा० ग्रहई ॥ ॥

**शैलाहं०** सुनोनाथएकसमयदेवदानों० सब० प्राये० यथों० सिं-

धुगिरि० डारिस्त्रचौदातहै० पाये ॥ कामधेनुगज० अश्वकल्पतरु

विषशशिजनों० धनुकधन्य० नारक० वुस्मारंभापहिचानी० ॥ कौ-

स्तुभ० मरिगावारुणी० सुधाये० चोदा० कहेऊ ॥ दियेबाँट० हरिसुखासा-

समधु० अश्नभयऊ ॥ गोहिहित० श्रीभगवानमोहनीरूपबनाये०

निकट० आइसुर० असुर० उभे० पाँतिन० बैठाये ॥ बादनलोग० प्रापुसु-

राहेत्यजकहदीन्हों ॥ देवनिपाये० पियुषतहों० उदिमेहू० धीन्हों ॥

रविशशिदिहिनिबताइ० विशुकाद्यों० धिरमेरा ॥ देवासुरसंग्राम

भयों० सागरतट० घेरा ॥ एरावतसुरधेनु० कल्पतरु० रंभा० चारी ॥ लै-

गेवाशवस्वर्गसंपदा० सकलतुहारी ॥ सुनिनिश्चर० पतिदूनसूत-

दिगतुरतपढायों ॥ जाइकही० चरदेह० बस्तु० जो० दीधि० की० लाये ॥

दूतवचन० सुनिशक्र० कह्यो० जानिज० पतितीरा ॥ लेइ० आइ० अबब-

स्तुहोइ० जो० प्रतिबल० बीरा ॥ करिमहि० मराडल० राजजीति० नरभा-

बरबराडा ॥ अब० आंवे० चदि० समर० करोंते० हितन० सतरबराडा ॥ दू-

तजलंधर० पास० आइ० सबहाल० सुनावा ॥ जातु० धान० सुनि० को० पि-

कट० कलै० आतुर० धावा ॥ अमरावती० गेरि० इन्द्र० बहु० की० निलगई ॥

मैरेन० मोरे० असुर० सुल० युत० गये० पराई ॥ तब० हरि० सन्मुख० जाइ० धि० वि-

धि० विधि० विगय० सुनाई ॥ दुरि० वित० जानि० भगवान० इ० पु० ज० ते० की० नि-

लड़ाई। भेद्यतीत कहु काल समर लखि रोभि सुरारी। कह्यो  
 जलंधर मांगु होइ रुचि जो न तुम्हारी॥ जो मो पै पर सन्न नाथ  
 दीजै वर येहा कमला के संयुक्त वसैं तुम हमै रेगेहा॥ एव मस्तु  
 कहि रुषा की न तेहि गुहानि बासू॥ शोभातिहुं पुर के रिआइ  
 तहैं कीन प्रकासू॥ तब वासव है बिकल गये चतुरानन तीरा॥  
 कह्यो। सकल दुख रोइ सुनत विधि दीन्हो धीरा॥ नारद ते तव  
 कह्यो जलंधर बली प्रपारा॥ मरणा ता सुशिव हाथ प्रपर ते-  
 मरी न मारा॥ जो शंकर ते बयह करै तौ सुर सुख लहई। सुनि ना-  
 रद पितु बचन दनुज जहं प्राये तहें ई॥ लखि मुनि दीनि अ-  
 शीश नाइ शिर नृप बैधारा। बोली दीरा धरारा प्राजु कित ते पगु धारा  
 च्यौ॥ सुनि नारद बोले निज काजू। हुम कैलास गये रहै प्राजू॥  
 तहो करत त्रिपुरारि विहास॥ शीश जटा उर नर शिर हारा॥  
 नागिन प्रम झल रह्यो वंशेयी॥ तहो नारद एक सुन्दर देखी॥  
 इंदु बदन मृगनयनि बिराजै॥ रति शत कोटि देखि बिलजै  
 जेहि के थर ऐसो त्रिय होई॥ तेहि समान जग में नहिं कोई॥  
 सुनि नारद के बचन सुरारी॥ लीन राहु कातुर तहें कारी॥  
 बोला शर शंकर यहें जाऊ॥ कह्यो देह त्रिय जो भल चहऊ॥  
 क्षिप्र राहु शंकर यहें प्रावा॥ निज पति कर संदेस सुनावा॥  
 सुनि महेश कियो क्रोध कराला॥ कीरति मुख प्रगट्यो तत काल  
 गदा पारिा द्रग प्रतिभय कारी॥ डर पिराहु बहु बिने उचारी॥  
 सुनि पशुपति तब दीन बचाई॥ प्रावा जहां निशाचर राई॥  
 सब बिरतान्त तहो कर कहैऊ॥ सुनि सागर सुत उर प्रतिदेऊ  
 गीतिका कूं॥ उर देहो तुरतै सयन संग प्रपार लै सर धायहु  
 बहु होत प्रसगुन गुन तनहिं सीश भुसंमुख प्रायहु॥ ख-  
 टवदन प्रादि गरीश भूत पिशाच भिरे प्रचारि कै॥ हुम प्र-



स्वशस्त्रचलाइ एकहि एक डारत मारिके । कोउ परे कहरत  
घाउबस कोइ शीशबिन जहं तहं फिरे । कोउ मारु पुकार को  
ऊ एक बारा लागत महि गिरें ॥ यहि भान्तिकीन्हें युहु शिवश-  
शिमासत बहह स्यो हिया है अमित गिर जानाय हरि को ध्या-  
न समैं में कियो ॥

चौ० नाथ हरो मम संकट भारी ॥ तुरैं ते प्राटि तैं हें सुरारी ॥ ॥  
बोले हरि तुम सुनौ पुरारी ॥ यति ब्रता है याकी नारी ॥ ॥  
तेहि प्रभाव खल जीति न जाई ॥ करहु कि काहे न कोटि उपाई  
तति यहि आडौ कहु बेरा ॥ मैं ब्रत भंग करौ तेहि केरा ॥ ॥  
अस कहियती स्वरूप बनायो ॥ गुहानि कट बृन्दा के आयौ ॥  
उदित भूमित रुदोरे पाई ॥ बिठे आसन रुचिर बनाई ॥ ॥  
तेहि रजनी रजनि शिचर नारी ॥ देख्यो स्वप्रभयं कर भारी ॥  
मनौ जलंधर खर आरूढ़ा ॥ मुंडित सिरगा दक्षिणा मूढ़ा ॥  
चौंकि परो व्याकुल अति सोचा ॥ प्रात भये गृह काजन रोचा  
छिन दोर छिनि भीतर जाई ॥ जती बिलोकि बिषाय हें आई  
सीसनाइ निज स्वप्न सुनावा ॥ कह हरि सुरहित अब सरपावा  
सुनु बृन्दा पुरारा ॥ अस कहई ॥ अस सप्तादुख दायक अहई ॥  
तव यतिसमरं शंभुकर आचू ॥ मरी अनन्द करी सुराचू ॥  
तेहि क्षिरा माया कर धर शीशा ॥ गिरा आइ अंगि तेहि दीशा  
बिबिध विलाप किहि सिपति चीन्हा ॥ जगिहों संग चितारि चलीन्हा  
कह हरि बचन मानुय क मोरा ॥ तौ अब ही पति जीवै तोरा ॥  
रुड मुंड धरि बसन बोढ़ाई ॥ सुमिरौ निज सत धरी अढ़ाई ॥  
यह उपाय करि मुनि तेहि किहू ॥ बान अर्ध धरि द्वापट दिहेज  
उंछौ जलंधर माया केरा ॥ बृन्दा हित बसुख भयो घनेरा ॥  
माया धीश चरणा शिरु नाई ॥ गई तुरत निज निलै लवाई ॥

कादिऽप्रसनकहुताहिस्वार्इ ॥ योदेदोउपरयंकविछार्इ ॥ ॥  
 कीनविहारहुटव्रततासू ॥ मयोतेजहतदनुजउदासू ॥ ॥  
 तवशिवसमरजलंधरमार्यो ॥ सिरभुजजहं वृन्दातहडास्यो  
 मायाकापतिगयो बिलाई ॥ मरमजानितवहरिदिगउगार्इ ॥  
 घरीकुं० विषगुलीरदेरिधिदि ॥ जेधकीसि। आपदीसि ॥  
 वरवैकुं० छल्योमोहितुमधिरिकैजतीस्वरूप। होउमनुजअ-  
 वजायचराचरभूय ॥ तहोभोरपतिहोई प्रवलसुरारि। यही  
 रूपधरिहरिहैनारितुम्हारि ॥

दो० असकहिचित्तसर्वारिबरबैदिजरीपतिसंग ॥

तासुभस्मलेरमायनिलपटाईनिजउंग ॥

सो० इहोशक्रसुखपाइ। सुरगरामुनिदिगशालविलि ॥

उमानाथपहंउगार्इ। लागिसबअस्तुतिकरन ॥

तोटककुं० प्रणाशामिभवंभयभयसमनं। करुणाश्रुतसिं-  
 धुकलिनंदमनं ॥ निरपुरायगुरा ॥ अमकंकरां। जयश्रीशिव-  
 संकटकेहरां ॥ अविकल्पकलानिधिदेदविभुं। सरबज्ञ  
 सदापरमीशप्रभुं ॥ चिदकाशकनित्यनिरावरणं। जयश्री-  
 शिवसंकटकेहरां ॥ निरवधनिराश्रमसावपुरवं। अचला  
 रवंडयारअजाअदुरवं ॥ सतशीलगुणाकरकंजरणं। जय-  
 श्रीशिवसंकटकेहरां ॥ अतुलितबलवीर्यविरक्तवरं। गु-  
 णाज्ञानविरागोनीतपरं ॥ मदमोहनिशादरणांतरणं। जयश्री  
 शिवसंकटकेहरां ॥ हरिकुंदकपूरसमासुतरां। सबभस्म-  
 विभूषितभूरिगरां ॥ कृबिकंद्रपकोटिदेवाकरां। जयश्री-  
 शिवसंकटकेहरां ॥ मृदुमौलिजटामधिरंगबसे। खरबाल  
 छयाकरभाललसे ॥ त्रयअंबकशूलकरंधरां। जयश्रीशि-  
 वसंकटकेहरां ॥ उरमुंडश्रकाम्बरव्यालत्रमं। अतिकुंडल



लोलकपोलधुमं॥ सुकधानशराननमिंदुवरां॥ जयश्रीशिव  
संकटकेहरां॥ डमरुकरकंदमुजंगहजै॥ चरणांभुजचिंत  
तदुःखभजै॥ भवआरांतारांककरां॥ जयश्रीशिवसंक  
टकेहरां॥ सुरसंतकबंधजगोपलनं॥ भवभाववनागहरि  
दलनं॥ भुजदंडप्रचराडछयंकरां॥ जयश्रीशिवसंकटकेह  
रां॥ वृषभव्बरवाहनभूतमिसं॥ गिरिनन्दिनिराजतवामदि  
सं॥ प्रणापालकपालकदुष्टजनं॥ जयश्रीशिवसंकटकेहरां॥  
नाहंभ्यावतजीवतुंमैजबलौ॥ दुखपावतजावतहैंतबलौ॥

जगज्योदहरदानिउमारमां॥ जयश्रीशिवसंकटकेहरां॥  
रघुनाथकहैमुनिकेधगयौ॥ तुरंतैगवरीशप्रसन्नभ  
यो॥ मिदरुद्रएकादशजोपिपंदे॥ दुखदैन्यनशेसु  
खभूरिबंदे॥

चौ॥ यहिविधिविनैकीन्हप्रसुरागि॥ तबतिननेबोलेचिपुरारि॥  
मुनहुसकलसुखचनहमारा॥ बिशुकृपांमैनिशिचरमारा॥  
चलौचलीप्रवतिनकेपासा॥ प्रायेचलिजहैरसानिवासा  
प्रमरगायतीरूपप्रभंदेखी॥ पृथककरिबिनयविशेषी॥  
रहेप्रधोमुखतबभगवाना॥ मनहिंमाहिदेवनिसनमाना॥  
हरिगतिदेखिसुरनदुखपायो॥ तबमहेशविधियुक्तिउपायो  
बोलिउमापद्माब्रह्मानी॥ कह्योप्रसन्नकरहुहरिजानी॥  
सो॥ प्रभुप्रनुसासनमानि॥ गईंतिहैंभगवानपहें॥

लैआरतिनिजुपानि॥ कीन्होंहरिगुरागानकहु॥

चौ॥ पुनिभारतीभस्मजललयऊ॥ धर्योमहीतरुधात्रीभयऊ  
देखिसवानीवैसैठाना॥ यतीबेलउपजीजगजाना॥  
कोनइंदिरासोइउपावा॥ प्रजगन्धातुलसीतरुपावा॥  
सीतलछाहसुगंधलहीजब॥ हैप्रसन्नहरिखालेदृगतब॥

वृन्दातनुतुलसी भैः प्राई ॥ हरिषि विष्णुनिजशीशचढ़ाई ॥  
 अधमनिशाचरि पतिव्रतकीन्हा ॥ हरिछलितेहि उत्तमपरदीन्हा  
 देखि देवछबिहने निशाना ॥ तुलसीहि अतुल पूज्य अनुमाना  
 विष्णुप्रिया कलिकलुष्यनिकंदनि ॥ जयजयजय तुलसी जगबंधनि  
 तव प्रभु सब देवन ते कहै ॥ परम प्रीति वृन्दावस मयज ॥ ॥  
 तेहि तनु पाइ तुलसि कर रूपा ॥ गयो विरह सुख भयो अनूपा ॥  
 लक्ष्मीवास हृदय मम ग्रहई ॥ तुलसी सदाशीश पर रहई ॥ ॥  
 जोसनक्रम यहि सेवन करि है ॥ सो कृतांत पुर पावन धरि है ॥ ॥  
 दल करि प्रीति जो मम शिर राखी ॥ तुलसी मिश्रित भोजन चारही  
 दीपदान देई जो कोई ॥ कोटि यज्ञ फल तिनका होई ॥ ॥  
 कंदल गन जो तुलसी धारी ॥ सो सब काल शुद्ध बिन धारी ॥  
 तस्य दरश भेजानहु मेरो ॥ करौ सदा हो जत उर देरो ॥ ॥  
 तुलसी धारिकरी शुभ कर्मा ॥ बड़ी सो अधिक कोटि गुण धर्मा  
 नरवानारि जो मम व्रत धारी ॥ सो तुलसी स्वक करि अधिकारी  
 तुलसी दास नाम मम ध्यावै ॥ तासु पुराय कहि कापै जावै ॥ ॥

दो० तुलसी धारक माच जो होई भक्ति बिहीन ॥

सोऊ पूज्य है बिप्र कहें और कहान रदीन ॥

कुराडलिया तिलक दाम धरि देखि कै करी जो निंदा तासु ।  
 सो न लेख जाता अस क त्यागी संगति तासु ॥ त्यागी संगति ता-  
 सु दीय न तलागी भारी ॥ ज्यों हर हट के संग जाइ कपिला गो मा-  
 री ॥ मारी गो जिमि जात तिमिय मगरा देहें दुरवदिलक प्रमु-  
 दित है जो सुने सो उ जान्यो दुष्टन को तिलक ॥

दो० तुलसी श्रद्धा धरे बिना करी जो भाजन अन्न ॥

परम प्रपाव निपाय सो लह्यो न जनु नर तन्न ॥

जेहि प्रादर मैं देउ जग तेहि निदरे अस कौन ॥



भूपबचनपरिहरिप्रजाबंसेकिसोसुखभीन॥

श्रीमुखबानीशीशधरिगेसबनिजअधान॥

कार्तिकमहात्मकीकथायहमेंकीनिबरवान॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतअगरअथउजागरश्रीरघुनाथदास  
रामसनेहीरुतश्रीतुलसीमाहात्म्यवरीनोनामत्रयःत्रिंशोऽध्यायः३३॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपतिरामसुखदानि॥

बरांभीभारतकीकथाकहुकहुतान्तबरवानि॥

चौ० सुनिसोनकबोलेमृदुबानी॥ राखधुधिष्ठिरमखजबबानी

तानेंअचरजभयौजुकोनू॥ मोकहनाथसुनावोतौनू॥ ॥

करहंसकुं० हंसिकह्योसूतजबधर्मपूत॥ कृतकराला

ग॥ दयबलिबिभाग॥

चौ० तबसबमिलिबालेअसिबानी॥ पूरामखभयकेहिबिधिजानी

घंटएकतबकृणाबंधाये॥ भोजनकहद्विजबिपुलबोलाये

जेंदुबिप्रवरिकाजबलयऊ॥ घंटबिबेकहुशब्दनभयऊ॥

बोलेकृणाप्रणातहितकारी॥ यज्ञहीनभयभूपतुहारी॥ ॥

ताहीसमयनकुलइकअवा॥ लौंयोतहंजहंदिजनअंचाया-

मयोनसर्वधपुरखहरितासू॥ तबतौमनकरिलीनउदासू॥

बहुरिपुकारिसभामहंकहई॥ मिथ्यायज्ञभूपतबअहई॥

विप्रएकसतुवामखकीन्हों॥ तेहिसमअपरयज्ञनहिंचोन्हों

दो० सुनतसभाकेलोगसबनकुलैनिकटबोलाय॥

पूछ्योद्विजमखकिमिकरीसोअबकहौबुभाय॥

चौ० तनतबअचरजरूपलखाई॥ सुनिन्योराबोलाहरपाई॥

सेतुवायज्ञभईजेहिरीती॥ कहोंसुनोनृपसुनिकरशीती॥

विप्रएककुरुक्षेत्रमहरहई॥ नामशिलोचनतेहिसबकहई॥

पूतपतोहूअपनानारी॥ चरिहुनकाहरिभक्तिपियारी॥

शीलाकीबुतिकरितनपोंये॥प्रथमैसाधुविप्रकहेंलौये॥  
 यहिविधकरतगयेबहुकाला॥एकबारतहैपर्योडुकाला॥  
 पशुपक्षीसबभयेदुरवारी॥लंघनकरैनिकरनरनारी॥  
 कठिनविप्रहूकोप्रतिजोवै॥बितानजाइअन्ननहिंपाये॥  
 चुनिचुनिधरतमासयुगगायऊ॥तीनिपावतबयकठमयऊ  
 सोइभुजाइसेतुवावनवायो॥तमिंचारिउभागलगायो॥  
 धर्मबैशोरूपबनाई॥आयेतुरतजहांहिजरार्इ॥  
 देखिशिलोचनपदशिरनायो॥आदरकरिआसनबैठाया  
 चरणधोयसेतुवाधरेआगे॥हिततेधर्मखानतबलागे॥  
 आपनभागजेइजबलीन्हा॥सुधानमिटीद्विजहंनिजदीन्हा  
 सोउपायपरचपितनभयऊ॥तबद्विजशीशनाइनिजलयऊ  
 चतुरनारिपतिकीगतिजानी॥बोलीबचनधर्मनयसानी॥  
 हेपतिभागमोरलैदीजै॥सुधितनजाइबातसोकीजै॥  
 दो० सांचीप्रीतिपिछुनिकैसोऊभागद्विजदीन॥

भयोनपूरणसन्तलरिबोलापुत्रप्रवीन॥

रोलाकुं०अहोपिताअबभागमोरलैसंतैदेह॥करहुपर-  
 गायहपूरजाइबहतनधनगेह॥सुतयद्यपितुमबड़ेतदपिमो-  
 हिंपालनयोग॥भयौबृद्धमैतुम्हैअबैकरनासुखभाग॥ता-  
 तेयोषहुदेहजियेबहुबर्धलगेजेहि॥धर्मबिनाजोजियेपि-  
 ताजगमृतकजानितेहि॥संधैधर्मतनगयेताहिजीवतप-  
 हिचानो॥असकहिदीन्होंभागभक्तखायेनअधानो॥पुत्रब-  
 धूजियजानिदीननिजभागमगनहोय॥भयौतृप्ततबसंतब-  
 चनबोल्योऐसेसोय॥हेद्विजमैंहोंधर्मलेनआयोतबअ-  
 न्तादेखिगयौहियहारिनहींकोउतुमसमसंता॥अबतजि-  
 कैमृतलोकबसोंचलिहरिपुरमाई॥घटीनतुम्हरीपुण्य-



और दिन दिन अधिक आई ॥ ताही समय बिधान देव गरातें  
हलै आयि ॥ जय जय कहि सुर सुमन सुमन द्विज पर वर पायो ॥  
लीन्हों बहुत चढ़ाय जाय हरि पुर महं राख्यो ॥ देख्यो धर्म प्र-  
ताप किं हे ऐसा फल चारख्यो ॥ जित अचचार है अतिथ तहो  
में निकस्यो आई ॥ भयो अर्थ तनु स्वर्गो सर्व जल रहान गई ॥  
गीतिका कहं हमरी उमिर महं और दूसरी यज्ञ वैसी ना भई ॥  
जहं हो लह्यो फल अक्षत आधी देह हरि की है गई ॥ तब ते फि-  
रै बहुत तीर्थ यज्ञन सर्व काहू ना किया ॥ इह नो यही उर धारि लो-  
ख्यो मदि नहिं खो ट पल दियो ॥

दो० सुनि न्यौर के बचन नृप शोच कीन्ह मन माहिं ॥

पूछिनि प्रभु ते यज्ञ यह पूरा अभय कत नाहिं ॥

चौ० सुनत कथा बोले हर याई ॥ यही भेद में कहों बुझाई ॥ ॥

यहि समाज वेष्टो नहिं आयो ॥ अघिस मूह मिलि जहंत हंसायो ॥  
जातु सक हो भक्त ये नहीं ॥ हैं पर जाति गभे इन माहीं ॥ ॥

कुल विद्या महत्य कृ विजानी ॥ पांच कांठ ये भक्त के जानी ॥

इन ते भक्ति नरे प्रावत ॥ अति सुकुमारि देखि डर पावत ॥

तेहि ते निरग्र भिमान जो होई ॥ पूरा चहौ जे बाधो सोई ॥ ॥

ऐसे भक्त कहा हम याई ॥ तब पुर होतौ देहु बताई ॥ ॥

बालमीक सुपचा बड़ साधू ॥ लाबहु जाइ सहित अहलाधू ॥

सुनि प्रभु बचन युधिष्ठिर धायो ॥ करि सनमान भवन लै आयो ॥

परसे असन दुर्घ दीनाना ॥ सो सब भक्त एक मह साना ॥ ॥

पंचाली लखि कृत अनुमाने ॥ सूप चरस स्वादे का जानै ॥

तेहिं जेवत कंधं बाजा ॥ एकै बार खुसी भाराजा ॥ ॥

वासुदेव मन विस्में प्रावा ॥ बारक बार शब्द सुनियावा ॥ ॥

यास ग्रास परचाहिये बाजा ॥ अस बिचारि बोले यदुराजा ॥

सभालोगसबसत्यहिभारख्यो॥ यहिप्रबसरदुरावजनिरख्यो  
 सोमकीनकेहिहृदयविशेषी॥ यदिमान्यताभक्तकेदेखी।  
 निजउरवातदुर्पदीकहेऊ॥ सुनिहरिउचहुदोषबडगहेऊ  
 चलहतद्रोनपुरीबतेहोई॥ सुरनरमुनिभूजतसबकोई।  
 तुलसीस्वच्छचैंतहैंजामे॥ तिमिममजनयावनसबठामे  
 बरतबाभहरिबासरप्रहई॥ नदीबांभसुरसरिश्रुतिकहई  
 देवबांभजिमिरसानिवासा॥ बरगाबांभतिमिमेरहासा॥  
 च्युतकुलनिजजन्मनिरिखा॥ मावयोनिजनुलीनपरिखा  
 ततिरेसीकभूनकीजै॥ चल्योभक्ततेपूछैलीजै॥ ॥ ॥  
 सबमिलिप्राइकहीप्रसिवानी॥ डार्योवंपोएकहिमहसानी  
 बोलेभक्तभोगभगवाना॥ लागिगयोसबभयोसमाना  
 पावतपरतस्वादप्रनुमानी॥ यहितेमेंसबडारिसानी॥ ॥  
 सुनिजनबचनहर्षउरछुयऊ॥ भक्तजेइजबप्रचबतभयऊ  
 नकुलजायपरसादसोपाया॥ सकलशरीरस्वर्गाकरभावा  
 सकलसमाजदेरिवप्रसकहई॥ अमितप्रभावभक्तिकरप्रहई  
 द्वादशकोटिरहेदिजभूरी॥ सुपचभक्ततेभैमरवपूरी॥ ॥  
 बहुमुनिधेपंपाशरकसा॥ सेबरीपदरजतेभास्वसा॥ ॥  
 कुम्भजव्यासप्रादिमुनिनाना॥ हरिभजिकोनहिंभयौमहाना  
 तबसुजातरिपुपूछैलीन्हा॥ केहिगुराइनतुमकहबसकीन्हा  
 सुनहुधर्मनन्दनकरिनेहा॥ मोहिंजनसमनहिंप्रियनिजदेहा  
 तबपुरपरमभक्तयहेंछमा॥ सुनोतासुवरगोजपनेमा॥ ॥  
 गीतिकाछुजपनेमसंयमकरहिध्यानप्रमानसदारहा-  
 वही॥ समशीलनसतसंतोषदयाविचारिद्वामागहावही॥ छ-  
 लहीनइन्द्रीजीतिउरबैरागमदमोहेंतजे॥ गतकामक्रोधरु-  
 लोभभयमोहिंछाडिअनिनहिंभजे॥



दे० ममगुरागावतपुलाकेतनममजनसोअतिशीति॥

नेहितेमेंयाहिवसरहतअथासुगकीरीति॥

यहिप्रकाररघुनाथहरिभारवोभक्तप्रभाव॥

मुनतयुधिष्ठिरकेभयोतवभक्तनमेंभाव॥

सो० युनिबोलिकरजोरि। वरणाअमकेधर्मप्रभु॥

मुननेकीरुविनारे। भक्तिमहितसोवरगोये॥

वीरहं० मुनिप्रभावदकशा॥ द्विजधर्म। करजर्म॥

दे० संध्यामंजनहोमजयश्रुतिपठनार्जनदेव॥

क्षमातोयद्विजधर्मयहअध्यामनकीसेव॥

क्षमातेजबलअचलकालिअतिउदारद्विजदास॥

येगुराक्षर्चीकेरफुरउमैरोविश्वास॥ ॥

अस्तिकबुद्धिविनीतव्रतदानेद्यमआरम्भ॥

येलक्षणाबरवैश्यकेविप्रभक्तनिरदम्भ॥

तिहंवरणाकीसेवकरिजोपावेसोलेइ॥

सतसन्तोषीकपटबिनशुद्धधर्महेइ॥

मिथ्याबादअशोचअरिनास्तिककुटिलकोर॥

एलक्षणानरनीचकेकामीकोधीचोर॥ ॥

सत्यक्षमापरस्वार्थरतगतमदभारकुर्म॥

तृप्ताबिनचहुंवरणाकेरसाधारणधर्म॥

अपनेअपनेधर्मकरिअन्तअमरपुरजाइ॥

वरणाभ्रयभोगेनर्कअबसुनुआश्रमराइ॥

ब्राह्मणाक्षर्त्रीवैश्यइनतिनहुंनकीविधिरक॥

गर्भाधानादिकसकलसंस्कारकरनेक॥

कुगडलियाजनोंभयेगुरुपासरहिपदैवेदपदसेइ। द-

राडकमराडलमृगचरममालमेंखलालेइ॥ मालमेंखला

लेइ केशनख बिन्दु न त्यागै। संध्यो पास न सौच काल तीनों-  
 अनु रंगै॥ रंगै नहि जग माहि लख प्रसन करै दृढ़ आसनो।  
 ब्रह्म चर्य के धर्म ये मम सम मनो गुरजनो॥ ब्रह्म लोक जो चहै  
 तोरै याही पथ माहि। कामी कामिनि केर संग भूले हुगने-  
 नाहि॥ भूले हुगने नाहि चहै जो हो न स कामा। तौ श्रुति यहि  
 धरः प्राइ करै युवती प्ररुधाया॥ धाम मा क ज प दान नख कर  
 तर है श्रुति धर्म। यज्ञ करावन दत्त ग्रहा वेद पढावै ब्रह्म परिये ती-  
 नो प्राइ इमि जिमि पावक को नीर। ब्रह्म तेज नहि रहत है तेहि-  
 त्यागत मत धीर॥ तेहि त्यागत मति धीर सिनै करित न निरबां है।  
 मम सुमिरता मम ध्यान अन्त मेव पद लाहै॥ लाहै क्षत्री यह क-  
 रै पालन सब को वरि। रगा सन्मुख मरि जाय नहि धर धर उपरि॥  
 गृह बासी को धर्म तिन करै पांच मुख मेव। प्रथम पाठ करि ऋषि-  
 ज जय बहुरि होम करि देव॥ बहुरि होम करि देव भूत बलि प्राइ  
 ते पीतर॥ अन्त नीर ते अतिथ कहा शत्रू कह सीतर॥ मित्र मानि  
 सब काहु समुक्ति काहु इन दुख बावै। मिथ्या जाँने जगत कुटुंब  
 पंथी दह रावै॥ मिलेन मुदगत शोच रहै पाहुन समता सी। व-  
 करै सदा मम भजन तरै सावसि गृह बासी॥ जब जाको विपदा  
 परे बैश्य विरति से लेइ। जब मिट जावै प्रापदा तब प्रापनि ग-  
 हिलेइ॥ तब प्रापनि गहिलेइ एक सुत भवन जावै। चहौ रहै ध-  
 र माहि मुक्ति प्रसंगे ही पावै॥ पावै सोइ तम द्वार होय जो जग-  
 आशक्ता। मेमे करि कुल संजे भजै नहि मेरो सक्ता॥ भक्ता के गु-  
 रानाहि शहि उर खल लक्ष्मी सब। अन्त समय पद्धिता तजा-  
 त किरता त तीर जब यहि विधि बख पचासर हितव जावै दन-  
 नाहि। ऋतु ऋतु को तप करै तहँ कच नख नाखे नाहि॥ कच-  
 नख नाखे नाहि निरस हूँ मोग विसारे। कन्द मूल फल खाइ यो



स प्रणामयधारे ॥ धारे बलकलबसनरसनहित आर्वैरि-  
धिसिधि । कुंवेनवानप्रस्तकेरलक्षणां हेयहिविधि । बन्-  
वसिहोइपवित्रमनतबलेवै संन्यास । इराड कमराडलधारि  
के कोरे एकांतनिवास ॥ कोरे एकांतनिवास सुधाहितपुर-  
भं आर्वै । द्विजधर चुटकी सातमागिसरि शरतद जावै ॥ जा  
इ कोरे तंहाक प्रथमक कुभागनिकोरे । कीद्वैलखिपशुइ  
कितौतीह जलमाडोरे ॥ डोरे पगमगाहेरिब कोरे मम सुमिरन  
मुचितन । यहलक्षणा संन्यासनहीतौ भेषवहतवन ॥

दा० परमधरमसंन्यास करिलह परमपदहन्स ॥

परदशविधिके विप्रलखिलेइ तीन करअंस ॥

कुराडालिथा तत्वज्ञानजबहोत तब छूटि जात सबमान ।  
जदपि हृदय अतिबुधितदपिवरतै बालसमान ॥ बरतै बाल  
समान ध्यानमोगमनमाही । सुधातृपालपसीततिन्हें ककु-  
व्यापेनाही ॥ नहिमदमायामोहमयरङ्गरिदमत्व जीव  
तमृतकसमान यह परमहन्स करतत्व ॥

दा० परपददायक धर्मयह परमहन्सपदअष्ट ॥

जोअलक्षणाहोइनतौ भयौ जानियेभ्रष्ट ॥

हेनृयजेममभक्तहैं रहितवासनाचित्त ॥

तदपिकोरे शुभकर्म किंजगकल्याणनिमित्त ॥

जैसेसबिताके बियेअंधकारनहिलेक्ष ॥

तदपिकरतप्रकाशजगपरमुखहितउपदेश ॥

चौ० कहनृपभक्तनके शुभकर्मा ॥ बहहुंदेवसर्बोपरिधर्मा ॥

मुनिगिरिधरबोलेलखिप्रीती ॥ मुनहुभूपभक्तनकीरीती ॥

मेरीकथा सुनेअरु कहई ॥ सहितसेनहनामभमगहई ॥ ॥

पूजामेंअतिनिष्ठाधारे ॥ विविधिभौतिअस्तुतिविस्तारे ॥



बदनकोरे प्रहसिरादेई ॥ सांख्यचरणा मृत लेई ॥ ॥ ॥  
 सबभूतनमें मोको जनि ॥ समजलतेहि मेरोतनमाने ॥ ॥ ॥  
 मेरेहेतकोरे सोकोरे ॥ मोबिनजोनताहि परिहारे ॥ ॥ ॥  
 मेरेहेतग्रथ सबत्यागे ॥ ग्राहभोगनत बेरागे ॥ ॥ ॥  
 योगयज्ञ जपतपव्रतदाना ॥ शयनासनभोजनजलपाना  
 इत्यादिक सबममहितकरहीं ॥ जातेअन्तरसोपरिहरहीं ॥  
 सहाआपको मोहिनिदेई ॥ प्रेमशस्त्रनेग्रथिहिछेदे ॥ ॥ ॥  
 मुक्तिभुक्तिकीकोरेनग्रासा ॥ तिनकेहृदयकरोमैंबासा ॥ ॥ ॥  
 ऐसीजबममभक्तिलहेऊ ॥ तबअवशयनकदुरहिगयऊ ॥  
 मेरीभक्तिहृदयजेहिवाहीं ॥ तेसबधर्मअधर्मकराहीं ॥ ॥ ॥  
 भक्तिसुतंत्रचारिफलइता ॥ सकलजीवसुखप्रदजिमिमाना  
 बिरतिबिबेकज्ञानबिज्ञाना ॥ होततुरतेतेहिकलसुजाना ॥ ॥ ॥  
 मोइसुचिसाधुसुधरवरसाई ॥ यस्यभक्तिसमकिंचितहोई ॥  
 जिनजमभक्तिहृदयमहंधारी ॥ सबसुधर्मकेतेअधिकारी ॥

दो० बरणाश्रमकरनानयदितबतकश्रुतिकरदास ॥  
 बरणाश्रमतेत्यक्तजे श्रुतिअपरतेहिवास ॥  
 जेहिकारिहोलप्रसन्नमेंबिनहोअमअलिहास ॥  
 सोभारख्योनिजभक्तिसुनिपुनिबोलिमहिपाल ॥  
 हेप्रभुजोसबधर्ममयहैंतबभक्तअखेद ॥  
 कर्मउपासनज्ञानकतकियेजिकांडीबेद ॥

चौ० एकेकससिद्धान्तनराखा ॥ सोऊभेदसुनियेप्रमुभाषा  
 जाकोयशदेख्योअधिकारी ॥ तेहिहिततेसीबानबिचारी ॥  
 जिनजगजालभूठकरिजान्यो ॥ ब्रह्मलोकतकदुखप्रमुखायो  
 बहुरिहुताकेउद्यमत्यायो ॥ विधीनिषेधबिनयोहिप्रनुराग्यो  
 तिनकोज्ञानयोगअधिकारी ॥ अस्थिरहैममकोरेविचार ॥



अरुजिनके समता दृढ़ नाही॥ राजतकछु प्रवृत्तिके माहीं॥  
 परममगुरासुनिके सुख माने॥ मेरो भजन सत्य करि जांने॥  
 तिन कहं भक्तियोग सुख कारी॥ तरे प्राप्ता तरे संसारी॥  
 अरु जे विषयन के आधीना॥ तिनके उद्यम मंलवलीना॥  
 कथा सुनन के नहिं सब कासा॥ नहिं मम भजन के अभ्यासा॥  
 तिनको कर्मयोग सुख दाई॥ गंहे न भूलिनि धै भाई॥  
 जो शुभ कर्म तजे प्रसंगे ही॥ सो सम सुपचन छुइये ते ही॥  
 तन में जो रन घर में दाना॥ नृप सरि करि किल है कल्याणा॥  
 जेत त पर तिनहुन माही ही॥ ते अति से उत्तम प्रिय मोही॥  
 फल इच्छा सो सकल मिटावै॥ अन्त समय मम लोक सिधौ वै  
 दो० बहुत जन्म जप योग तप धर्म ज्ञान रत होइ॥  
 होय हृदय जब शुद्ध तब भक्ति लहे मम सोइ॥  
 कोरे कृपा मम सन्त जब तब नहिं दूजे और॥  
 गुरु सो मेरो रूप है सर्व देव शिर मोर॥  
 दशकर्म में ब्रत बंध में तीरथ होम सराध॥  
 स्वटस्थान गुरु विप्र है दिक्षा गुरु मम साध॥  
 मुनि गिरधर के बचन बर हर्यो भूष सुजान॥  
 एकादश अस कथ्य मत यह में कीन बखानि॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदासरा-  
 म सनेही कृत्युधिष्ठिर यज्ञ वर्णाश्रम धर्म हरि भक्ति साधन वर्णानो नाम चतु-

स्तिंशोऽध्यायः ३४॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणपति सुख दानि॥  
 स्वसन स मुच्य आदि बहु सत मत कहीं बावनि॥  
 सो० पुनि सोन क शिर नाइ बोलै द्विज पद नाइ सिर॥  
 नाथ कहौ समुझाइ सत संगति महि मा कहु क॥

चौ० सुनतसूतबोलेसुखपाई॥ सतसंगतिसमकहुनहिंभाई  
 सोसहस्रसंबततपकरहीं॥ प्रयुतयजनितउठिअनुसरहीं॥  
 चंद्रायनवनप्रादिअपारा॥ करैयोगजपदाननिहारा॥ ॥  
 जहंलगहैंतीरथफिरिप्रांवे॥ छिनसतसंगसरिसनहिंपांवे॥  
 सातस्वर्गसुखमोक्षहंकरा॥ धरैतुलापरएकहिंबेरा॥ ॥  
 सतसंगतिलवभरिंकरैकोई॥ तेहिंसमसुखदूसरनहिंहोई॥  
 निहसंप्रायजानहुयहभाई॥ सत्यमहातमरामहोहाई॥ ॥  
 गंगापापतापप्राशिहरहीं॥ दालिदूरिकल्यतरुकरहीं॥ ॥  
 साधसंगमाजोमनलावे॥ ततकालंतिहुंतापनसावे॥ ॥  
 दोइघरीयकघरीसोहाई॥ हरिकेजनतिछजहंआई॥ ॥  
 तीरथसकलतहोईजानो॥ महीतपोवनसोइपिछानो॥ ॥  
 दो० संतनकीबानीसुनैप्रेमसहितजोकोई॥  
 गंगादिकसबतीर्थफलबिनस्तानहिहोई॥

चौ० अन्नकालहूजकेपासा॥ भक्तप्रकामीकरैनेवासा॥ ॥  
 ब्रह्महत्यामयपापीहोई॥ भगवतधामपाइहैंसोई॥ ॥  
 सतसंगतिभवनिधिमहनावा॥ चेदेसोपारहोइसतिभावा॥  
 साधसंगतेसीतलहोई॥ जन्ममरणाछिनमेंजाइखाई॥  
 साधसंगतेपातकजावे॥ ज्योंपावकतेसीतनसावे॥ ॥  
 सतसंगतिगतिपलटैऐस॥ पारसतेलोहाहरिजैसे॥ ॥  
 अधमहुसाधसंगजोआंये॥ पावनहोइवेदअसगावे॥ ॥  
 ज्योंअपवित्रनीरमधुसंगा॥ गंगामिलतपावनहैगंगा॥ ॥  
 तिलसंगफूलफुल्लकहायो॥ साभरिभयोखेतजोआयो  
 नीरछारकीसंगतिपाई॥ बरनमित्योसोइमोलधिकारि॥ ॥  
 रसअनेकभातिकेकोई॥ मलयागिरिसगचंदनहोई॥  
 बेनकरीलहोतनहिंजानो॥ सारहीनहतभाग्यपिछानो॥



ऐसे जे नर भृष्ट अभागी ॥ वैरे साधन दिग अनुरागी ॥ ॥  
 संगति फल लागत नहिं कैसे ॥ लागे सि विचार सर जैस ॥  
 जिन के भक्ति बीज उर छाये ॥ सत संगति जल न बही पाये ॥  
 उगत नुरन सुनहु मुनि तमि ॥ ॥ नीष्ट धिते न भनहिं जानै ॥  
 उदय दिने सा सब हिल रिष धर ही ॥ पै उलूक गी दर निधि चर ही ॥  
 नाते सन संगति का कर ही ॥ जोग बचन हृदय नहिं धर ही ॥  
 गिन जिन वचन सन्त करि माना ॥ निज तिन का हे गा कल्याणा ॥  
 सो सब परनि को न पे जा ही ॥ तदपि कहु कवर लौ सु मया ही ॥  
 भजा मेल सद पातक धामा ॥ साध संग मिलि लहे सि अरामा ॥  
 बाल भीक मुनि भे मुनि राई ॥ सप्त उर धिन की संगति पाई ॥ ॥  
 हिज दुंदभी प्रेत एक भय ऊ ॥ लहि गो करन संगारिण यऊ ॥  
 दो० महादेव का संग करि कीर अंड सुनि भेध ॥  
 चेतन है मुनि उडि गयो भयो आइ शुक्ल देव ॥  
 चौ० व्यास संग नारद का कान्हा ॥ तपनि मिटी भेरी तल बीन्हा ॥  
 भीम संग चिमन का पाये ॥ भरवन सहित सुर लोक सिधायी ॥  
 व्यास पुत्र के संग सभाजा ॥ भेभव पार परीक्षित राजा ॥ ॥  
 पाच हजार यज्ञ सुत ज बंता ॥ नारद संग जाइ वन गवने ॥ ॥  
 विप्र एक ग्रह दुरवध सदीन्हा ॥ मिष्टा हेत जात तन छीना ॥  
 वैश्य एक निकस्यो मद भरेऊ ॥ रघु काध कालाग हिज गिरेऊ ॥  
 भरन लागा तापर करि कोधा ॥ मातलि देन चले तब बोधा ॥  
 तुरने धरौ सिधार शरीरा ॥ आयि चलि ब्राह्मरा के तीरा ॥ ॥  
 बाले विप्र शोक परि हरहु ॥ नेक विचार हृदय मह करहु ॥ ॥  
 दुख सुख हानि लाभ संयोगा ॥ कर्म न ले पावत सब लो गा ॥  
 जाजस करै सोत सफल पावे ॥ आनहिं विरथा शेष लगावे ॥  
 यद्यपि हम पशु योनि माकारी ॥ ऐसा बोध करहिं नहिं भारी ॥



कराथहीननशेसेगने॥ जोकहुहोइभावई सानो॥ ॥  
 यद्यपिहमकहुधर्मनकरहो॥ तद्यपिप्रराधातनहिंचरही  
 जीवबधेबडुधातकजाना॥ ततिविप्रदेहुजनिप्राना॥ ॥  
 देखोतुमविचारिसनमाही॥ नरतनसमतनदूसरनाही॥  
 जासुविवससचराचरसोहा॥ नरकस्वर्गअपवर्गअरोहा॥  
 ततिहरिसुमिरनकरलेह॥ कोहकुबुद्धियाहितजिदेह॥  
 तनछूटेपरबडुदुरवपावे॥ नहिंजानीकेहिजोनि समोवे॥ ॥  
 ब्राह्मणतनतैउत्तमपायो॥ जगतसुखनलगिबादिगवांयो  
 खानपानहितहिजनहिंआयो॥ तपकेकारनईसपरायो॥ ॥

दो० सुनिजंबुककेबचनहिजकरनलख्योतयजाइ॥

मिटिगेसबदुरवअंतमहंवरयोस्वरासुरपाइ॥

चौ० अससतसंगअहेमुनिराई॥ गईतुलहिजव्याधिनसाई  
 अबरमुनहुंविधिसुतरकभयऊ॥ जाजुलअरुषितपहितवनगयऊ  
 कीन्हतपस्यातनमुधटारी॥ खगनकीनवरजटासंभारी॥  
 अंडादेपकिफूटिउड़ाने॥ शिरतेनिकसतजाजुलजाने॥ ॥  
 तबअरुषिकेउपज्योअभिसाता॥ मोहिंसमानतपकियोनअवा  
 तुरितभईनभवानीदेरो॥ तुलाधारसमतपनहिंतेरो॥ ॥  
 समताभाक्तेजासुउरअआई॥ रहतवनारसदेखोजाई॥ ॥  
 सुनिजाजुलअरुषितुलसिधायो॥ तुलाधारबनियाधरअयो  
 देखिकीनसनमानअपारा॥ चरगाधोइआसनबेठारा॥ ॥  
 पूछ्योकेहिहितआयहुअजु॥ अज्ञाहोइकरोंसोइकाजु॥  
 कहअरुषियशतुम्हारसुनिमोही॥ भासुखअवकहुपूछवतोही  
 मैबनतपवधुकालकमाचा॥ तुम्हरीसमसरिनासुनिपाचा॥  
 कौनधर्मतुमसाधतअहऊ॥ सोहमतेकिरपाकरिकहऊ॥  
 तुलाधारकहरामहिंध्यावो॥ रामहिकेगुरामुखतेगावो॥ ॥



कायबचन मनसंतहिंसेवों॥ विप्रजेवाइ दानबहु देवों॥ ॥  
 नाकर फलतनको नहिं चाहें॥ अर्यों हरिहि सुमार गगहें॥  
 चारि॥ जनि जहं लगितन धारी॥ सबमहं व्यापक एक मुरारी  
 यह बिचारि सब को सिरनायों॥ ऊंचनीच नहिं मनमें लावों॥ ॥  
 दुखी दरिद्री होइ जो कोई॥ सेवों ताहि नरायन जोई॥ ॥ ॥  
 डांड़ी पकरि धादि नहिं देहें॥ भूदन कहों पराशन लेहें॥ ॥  
 काहुइ शत्रु मित्र नहिं मानें॥ मैं मेरी तेरी नहिं जानें॥ ॥  
 आपे हर्षनगये विधादा॥ दुख सुख सम नहिं करों विवादा  
 गोमन के लाग नहिं बहऊं॥ पाँचहु बिषय प्रहारे प्रहऊं॥ ॥  
 करि हरि मीन कुरंग पतंगा॥ एक एक बस विसरत प्रगा॥ ॥  
 सब को बस सो किमि सुख पावै॥ तेहि नमो मन दूर हावै॥ ॥  
 काहुइ दुख देवों नहिं पावें॥ राम नाम निशि वासर धावें॥ ॥  
 याति शांति वसी उरु प्राई॥ दुरमति भ्रम सब गयो नसाई॥ ॥  
 निज दुख निज गुरा कहान चाहीं॥ तुम पूछो मैं बरन्यो ताहीं  
 कह सुनि शांति कवन बिधि आवै॥ सुनहुं निगम यह भंति बतौवै  
 दो॥ सात भूमिका ज्ञान कीति न विन होइ न ज्ञान॥  
 ज्ञान विना नहिं शांति सुख सो प्रब कौं बखान॥  
 कुकुभाऊं॥ प्रथम भूमिका है शुभ इच्छा दूसरि जल बिबा-  
 रै॥ नित्य वस्तु हिरदय लेखैं॥ और अनित्य निवारै॥ तीसरि त-  
 न मानसा कहवै तन मन इंद्री रोके॥ चौथी सत्या युत सब  
 जगमें प्राप्त एक बिलोके॥ पंचम अंश शक्त निज रूपे ता-  
 में निश्चय जानै॥ छहई नाव पदारथ तेरे होत बुद्धि लगु होनै॥  
 सतई तुरीस भूमिका जानी मैं तैं जहां रहई॥ सप्त भूमिका ये  
 कहवावैं विन गुरु नाकोइ लहई॥  
 चौ॥ ये सातों साधन बनि पावैं॥ उपजे ज्ञान शान्ति सब पावैं॥

जबतेशान्तिबैसेउरग्राई ॥ कामक्रोधमदजाहिंनशाई ॥  
 उरबासनारहै नहिंकोई ॥ मयकलेशसंशयजाइखोई ॥  
 समचितरंकरावबड़छोटा ॥ समचितधरबनसज्जनखोटा ॥  
 समचितशीतउष्णबरवाना ॥ कंचनमृतिकानारियरवाना ॥  
 समचितमातुबंधुसुतदारा ॥ समअरिमित्रहुअपनपरारा ॥  
 ब्रह्मानन्दमगननितरहई ॥ जीवनमुक्तसेईनरअहई ॥ ॥  
 प्रमहंसीयहज्ञानकहावत ॥ रामकृपातेकोइकोइपावत ॥  
 अतिदुस्तरमारागयहभाई ॥ बरनंतसुलभकरतकठिनाई  
 तातेजौनचतुरनरअहई ॥ तजिसबरामभक्तियकगहई ॥  
 ज्ञानविरागअपुहीअवै ॥ गोसङ्गज्यौघृतबधुहुपावै ॥  
 तातेमुनितुमहेंअसकरहु ॥ ज्ञानभक्तिहिरदैमहंधरहु ॥  
 सो ॥ जेकोइभक्तिबिहाइ ॥ ज्ञानहेतबहुअमकरहिं ॥  
 मानहुंतजिसुरगाइ ॥ आकदुहैपयलागिशह ॥

### महारासायरीश्लोक

येकेबलांहैतमतानुरक्ताः श्रीराममूर्तिविमलांविहाय ॥ तेबैम-  
 दान्धाहृदयेस्वमूर्तिप्रत्कायजन्तिप्रतिबिम्बकुम्भे ॥ १ ॥  
 येरामभक्तिममलांसुविहायरम्या ॥ ज्ञानेरताप्रतिदिनपरि-  
 क्रिष्टमार्गे ॥ आरांमहेंद्रसुरभीपरिहृत्यमूर्खा ॥ अर्कभजं-  
 तिसुभगंसुखदुग्धहेतुम् ॥ २ ॥

सो ॥ ज्ञानतेपरपदजाइ ॥ कैरेनिराहरहरिचरणा ॥  
 गिरैसोपुनितमअगइ ॥ प्रभुरक्षितनहिंजनकबहुं ॥

### भगवतेब्रह्मस्तुतिश्लोक

येन्येविन्दासविमुक्तमानिनस्त्वयस्तभावादविशुद्धदुह-  
 यः ॥ आरुह्यकुक्षेरापरंपदततः पतंत्यधो नारुतयुस्मदंघ्र-  
 यः ॥ तथानतेमाधवतावकाः क्वचित्प्रस्यंतिमार्गास्व-



पिवद्वसौ हृदाः । त्वयाभिगुह्याविचरंति निर्भया विनायका-  
नीकपमूर्द्धसुप्रभो ॥ १ ॥

दो० नसो पुरातानसंहितानसो काव्यइतिहास ॥  
नसो शास्त्रतीरथ ब्रतजहानहरिहरिदास ॥  
योगकुयोग मखागिगुराः अवगुराजलाजित ॥  
विद्याधिपतिमुखजहं नरामरतिमान ॥  
नारदादिसनकादिमुनिः प्रजशंकरशुकरदेव ॥  
लोमसभृगुसबजानविधिभक्तिकरतहंतेव ॥

चौ० सुनिजाजुलकरापिहरवतभयज ॥ ज्ञानभाक्तहिरैधोरनयज  
तुलाधारकहंगुहकारजान्यो ॥ जैसे गरुडमुमुडहिमान्यो ॥  
वसीशांतिउरभनननायो ॥ तवनभवानीकासिरनायो ॥ ॥  
ऋषिसवजगमें ब्रह्मनिहारो ॥ असमनसंगप्रभाषप्रपारो ॥

दो० ब्रह्मजीवजगच्छहै सतसंगसिफलसार ॥  
चरचाऽप्रमृतरसभराबीजहुतासुखकार ॥  
बीजहुतासुमभारहै इमिभायतवेदांग ॥  
जोचाहै हरिदरससो करै सदा सतसंग ॥  
पियुषपतालनपाइए पियुषनचंद्रसंकार ॥  
पियुषमिलनतसतसंगमें इमिकहै प्रभुतसार ॥  
ताते जनरघुनाथनितकरु सतसंगविचारि ॥  
प्रभुपदबंदे सनेहजेहि जनम सराजापहारि ॥

इति श्रीविष्णुसामसागरसबमन्त्रागारग्रंथउजागरश्रीपुनाथदासरा-  
मसनेहीरुतजाजुलतुलाधारप्रसंगवर्णनोनामपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

दो० सुमिरितामसिपसन्तगुरगारायोगरासुखदानि ॥  
कहोंसमुच्चैकीकथाकहुकरकादशजानि ॥

चौ० वदुरिसूतबोलिहेताता ॥ जाजुलकरिकहीमेंवाता ॥ ॥

अपरसुनहंयकनहयभुवारा॥भयोइंद्रपदलेनविचारा॥  
 सोयजनकरिचदोबिमाना॥इन्द्रलोकसूतोमुनिकाना॥  
 वृत्तासुरमारुसुरइशा॥तेहिहत्यातेडरेनदीसा॥ ॥ ॥  
 नहयजाइसिहासनबैठो॥प्रभुतापाइआइमहयैयो॥ ॥  
 सहस्रवरषकीन्ह्योसुखगई॥इन्द्राणीदिगकभूनआई॥  
 तवन्यतासोवचनमुनावा॥अपमोहिइंद्रजानुसतिभावा  
 सुनतशचीप्रतिसेदुरवपायो॥आयोगुरुहितुरतदिगाआयो  
 शीसनाइनिजविपतिमुनाई॥दीनदेखिमुनियुक्तिपताई॥  
 नृपतेतुमअसजाइमुनावो॥आवाहनचदिममदिगाआवो  
 शचीआइनरपातितेकहेज॥सुनतनहुषअतिशयसुखलोह  
 घटजआदिदिजलीनलगाई॥चदियालकीचल्योहरवाई  
 कामातुरहैकदेसिरिसाई॥सर्षसर्षचलिधेअपिगई॥  
 सुनिप्रगस्तनबदीह्योआपा॥होहुसर्षतुमअपनेवापा॥  
 दो० तेहिछिनउतरिपस्थोपदकस्थोवचनयकास॥  
 शापदूरिकबहोइहैकहोजानिनिजहास॥

चो० कहप्रगस्तहायरकेप्रन्ता॥प्रगटीधर्मतनययकसंता  
 सोआईतुम्हरेदिगकवही॥चरगाहुवतनिस्तरिहोतवहीं  
 कोनभांतिजानबहयताही॥कुंभजकह्योबिन्हइकआई  
 पृच्छ्योशानउतरुजबपायो॥जानितासुपदशीसधरायो  
 असकहिमुनिपुनिचलेसिधाई॥भयेसर्षनाहुषतवआई  
 गिरिकंदराहेबहुकाला॥हिरदैउठेअगिनिकीज्वाला॥  
 बड़ेकष्टकरिहापरपायो॥बनौवासपांडवजबआयो॥  
 दुषहस्वयस्वरच्योअनूपा॥जुरतहोदिशिहिशिकेभूपा॥  
 तवरखगपतितेकह्योगोपाला॥पंडनकहलावहुततकाला  
 आज्ञाशिरधरिगरुइसिधायि॥कुंसीयुतयांचौजनलायि॥



सोइ गुरु तीरति नैं बैठाई ॥ कृपायास अये खग राई ॥ ॥  
 राजै तूया लागित हं जानौ ॥ भीम ते कह्यो जाइ जल प्राणौ  
 देखित डाग निकट चलि गयऊ ॥ चौपयाइ अहि निकसत भयऊ  
 योजन एक कुनय विकराला ॥ उरगन हीं जनु मूरति काला ॥  
 पूछ्यो यास भीम के आई ॥ कहु जगमहं जीवत को भाई ॥  
 जो कोइ मनुस होइ बलवाना ॥ सुनि अहिल ह्यो नयहि अज्ञाना  
 रैं चिस्वांस लीन्ह्यो मुख डारी ॥ यहां युधिष्ठिर जानि अवारी  
 पठ्यो नरहि सरहि चलि आयै ॥ देखि सर्प अस्वचन सुनाये  
 को जीवत जगमान रसोई ॥ सरविद्या जाके कर होई ॥ ॥  
 समुझि सुजान हीन धरिखायो ॥ तब नकुलै महिपाल पठायो  
 समानिका कुं० ताल तीरगे जेबै ॥ नाग बोलियो तंबे ॥ जीव  
 धन्य को नहै ॥ रूपवान जौ नहै ॥  
 बीर कुं० सुनि सर्प ॥ करि दूर्य ॥ मुख वाइ गयो खाइ ॥  
 चौ० यहां युधिष्ठिर के सहं देऊ ॥ लेउ जाइ भाइन कर भेऊ ॥  
 गयेली निजन एक न आयो ॥ नहिं जानी कौने बिल मायो ॥  
 तब सहं देव निकट सर गयऊ ॥ अजगर देखि कहत अस भयऊ  
 जीवत जगमं काहि पिछानी ॥ विद्यावान होइ जो प्राणी ॥  
 भक्ति बिहीन ज्ञान बिन चीन्ह्यो ॥ तुरत निगल सहं देवै लीन्ह्यो  
 बहुरि युधिष्ठिर आ पुइ आयै ॥ चक्षु अवालखि बचन सुनाये  
 किंवात्तो अचरज का भारी ॥ पंचकौ निमोदित नर नारी ॥  
 चहुं प्रश्न का उत्तर दीजे ॥ तेहि पाछे नृपनीरहि पीजे ॥ ॥  
 धर्म जनय बोले हर्याई ॥ सुनो यथा मतिकहौं बुभाई ॥  
 दो० भट्टी मोह कृष्णानुरविध वनि स्वास मद दारु ॥  
 लिशि दिन घन दरबी बरयक्रम कुट काल लोहारु ॥  
 चौ० जीव सरसम कूटत जाई ॥ यहै बारता मो मन भाई ॥

सुनिपन्नगप्रसन्नप्रतिभयऊ॥तत क्षणाउगिलभीसकहंरूप  
 चारिवानिजहंलगुननुधारी॥जलचरथलचरनभचरनारी॥  
 मराएकदिनसबकरहोई॥शेखरहेप्रचरजहंसेई॥ ॥  
 सुनीभुजंगबातयहजबही॥उगिलिदिहिसिपारथकातवही  
 पंथसोजाहिमहाजनथांवे॥नकुलेउगिलिदिहिसितषचांवे  
 दुसरेदिनचहुंभोजनपांवे॥परबसहोइनप्ररगारहवै॥  
 भजैरामतजिकामकुकर्मी॥सोइनरमुदिनसंगशयभर्मी॥  
 कृपाबहिर्मुखसबसमप्रानी॥होइनकसविधिसमगुणखानी  
 अससुनिपुनिसहंदेवैदयऊ॥बहुरिरावतेबोलनभयऊ॥ ॥  
 महाराजबचनमृततेरे॥सुनिप्रानंदभयोप्रतिभेरे॥ ॥  
 प्रबनिजचरगाशीशममधरहू॥दीनदयालकनारथकरहू॥  
 कारगाकौनभालयगारबी॥हमतेभेदकहोसोभारबी॥ ॥  
 पूरबभेदनहुषसबबरना॥विप्रप्रायजेहिबिधिनिस्तारना॥  
 सुनिनृपअहिशिरचरगाकुवावा॥भेप्रघहानिदिव्यवपुपावा  
 प्रायेतुरतबिमानसमीपा॥चदिहरिपुरकागयोमहीपा॥ ॥  
 अससतसंगप्रभावघनेरा॥जेहिलहिगादुरवनाहुषकेरा॥  
 औरसुनोयकमक्कीसाहू॥रहधनहोनदीनसबकाहू॥ ॥  
 धनहितउद्यमकिहिसिप्रपारा॥होइनफानहिंघटानिहारा  
 करजुकादिपुगव्यभहिलाया॥नहिंकैजोतनखेतसिधाया  
 मगमाव्यभकीनिमचलाई॥भागतपरेऊंटपरजाई॥ ॥  
 माचिबीचगरदनिकेउरभी॥उनमदऊंटउईपीनहिंसुरभी॥  
 दो० चलेघंसीटतव्यभदोउभरमृतककरपिराई॥  
 तरिवमक्कीशोचनलायोमहितनशीसनवाइ॥  
 चौ०ताहीक्षणादत्ताउफप्रये॥दुरिवतंदरिवप्रसबचनसुनाये  
 अहांतातमनधीरजगाहो॥वृथाशोचकरिक्योंतनुदाहो॥ ॥



दुखसुखकर्मभावई हाथा ॥ कैसे भिदै लगी सो साया ॥ ॥ ॥  
 तेहि ते चतुरशोचनहिं करहीं ॥ होनहार सो इहिरै धरहीं ॥ ॥  
 बिन दात व्यद्वय नहिं पावै ॥ देश विदेश चहौ फिरि आवै ॥ ॥  
 पूरव पूरा पनोइ जो भाई ॥ बिन प्रारंभ मिले धन आवै ॥ ॥  
 बहुर उद्यम हीन हयाना ॥ ते धन वन्त दुखी बुधिवाना ॥ ॥  
 पाँकुल धर्म जानिये प्राप्ता ॥ ओरता सुजो नै लीवाता ॥  
 प्रादौ हान दिह्यो नहिं पै सो ॥ प्रबचाहत धन मिली न के सो  
 तेहि ते उर संतोषे धारौ ॥ लया डाइ निदुष्ट निवारौ ॥ ॥ ॥  
 नहिं मुख कहु संतोष समाना ॥ चौबिस गुरु करि हम यह जाना  
 दो० सुनिमकी बोलत भयो ॥ मुनि पद सीसन वाइ ॥  
 कौन कौन गुरु किहे उपभुसे सोहिं देहु सुनाइ ॥  
 बीरकुं० सुनिदत्त निजु मत्त ॥ मृदु बोलि कह्यो रबालि ॥ ॥  
 तौटककुं० प्रथम गुरु जानहुं भूमि किह्यो ॥ तेहि ते जुझा  
 अरु शांति लिह्यो ॥ जल दूसर सर्व पवित्र करे ॥ जमि सज्जन  
 जीव के पाव हौ ॥ गुरु तीसर वायु अमेल ग्रहे ॥ ममत्यां गति स  
 गसमान बंदे ॥ मृग बिदेह गुरु सुनितान परे ॥ तेहि भांति विषय  
 सुख चित्त हौ ॥ शशिपंचम प्रात पज्यो हरहीं ॥ हरि के जु नरी  
 तल त्यों करहीं ॥ छठ्यें रवि ज्यौं रस सर्व ग्रहे ॥ नलि पेरि त्यों  
 जग संतरहे ॥ भभकै समता गिनि आज्य परे ॥ निघटे तिमिका  
 मन भोग करे नभ अष्टम पूरा ब्रह्म तथा ॥ नवमान द्वाद जन  
 वृक्ष यथा ॥ दशमो दधि प्राप घटे न बंदे ॥ जन त्यों दुख  
 सुख समान बंदे ॥  
 चौ० भंवर द्वादश विरति सुपासू ॥ पुहुप की लेहि सुवासू ॥  
 नाहिं वृक्ष का दोष बिचारे ॥ करहिं संत तेहि विरति प्रहारे ॥  
 कीट हि शब्द सुनावत ऐसे ॥ सेहै जात भूझै जैसे ॥ ॥



द्वादशग्रहिनहिंमौनबनावै ॥ तेसहिभक्तिबसहिजहं पावै ॥  
 तेरहोगुरुहाथीकहंकीन्हा ॥ कामविवसपरबसभाचीन्हा ॥  
 तबतेकामनेवारतभयऊ ॥ रामचरणपंकजचितदयऊ ॥ ॥  
 मकरचौदहारसनाखादा ॥ ग्रामियगह्यौसहितग्रहलादा  
 सुखनहिंभयौगंयौपुनिप्राराणा ॥ तज्यौसकलरसदुखदपिछाना  
 दशसरससमदियाकीजोती ॥ देखतजरतसतीज्यौहोती ॥  
 तेसेनरत्रियलखिफसिजाहीं ॥ सोविचारिहौदेखतनाहीं ॥  
 जेहिदेखतेहिआतमजाने ॥ औरनदूसरभेदहिआनौ ॥ ॥  
 घोडसचौल्हएकलैमासू ॥ उडतभईसहमोदप्रकासू ॥  
 बहुतबिहंगताहिपहुआयौ ॥ हीनह्यौछाड़ितवैसुखपायो ॥  
 तबतेवितग्रहगानहिकरहु ॥ जहांतहानिरद्वन्द्विचरहु ॥ ॥  
 सप्तदसौगुरुअजगरभावै ॥ निरालंबप्रोवैसोदुरयावै ॥ ॥  
 अष्टादशगुरुवेण्याएका ॥ बैठीकरिसिंगारअनेका ॥ ॥  
 एकदिवसव्यसनीएकआवा ॥ दइधरिजगथलेनसिधावा  
 तुरतपिंगलासिजसंवारी ॥ मगदेखतनिधिरदकवोनारी ॥  
 अगुलयाभरजनीचलिगयऊ ॥ वेण्याहृदयबोधतबभयऊ ॥  
 आसात्यागिभजिसिभगवाना ॥ बहीज्ञानमेंहिरदयआना  
 दो० गुरुवोंनेसमवानकरदीखबनावतलीर ॥

भूषणयोतेहिअग्रहैसहितशब्दप्रतिभीर ॥

चौ० वहुधायपूजायहिऔरा ॥ नृपगामैनसुनीकहुशोरा ॥  
 तहंमेंसिरेहुंध्यानकाभेदा ॥ रहौलीनतजिजगकेखेदा ॥  
 विश्राममिथुनकपोताभयऊ ॥ विपिनकपोतीअंडादयऊ ॥  
 फारेसेइबडेशिशुभयऊ ॥ एकदिनबीधकदेखिगहिलयऊ  
 प्रायेहोउलिहैमुखचारा ॥ पुत्रबिनाघरसूननिहारा ॥ ॥  
 बीधकतीरदेखअकुलाई ॥ गिरीकपोतिनिजारहिजाई ॥



देरिवशोच अति कीन बिहंगा ॥ फसा आपुह सब के संग  
 अति बल मोह देरिव में जाना ॥ तब ते तज्यो भज्यो भगवाना  
 गुरु एकै सम मकरी भाई ॥ पूरत तारु निगलि फिरि जाई ॥  
 ऐसे ईश जगत करि सोई ॥ अन्त आपुम हं लेत समोई ॥  
 उभय विंस जानहु मधुमारवी ॥ रसरस आपुनि डकड़े राखी ॥  
 खाइनि नहिं निज काजन कीन्हें ॥ आइ छोडाइ आन हीलीन्हें  
 ते सहि कृपिगा दरविको पाई ॥ पुरायन करहि सकहि नहिं वाई  
 विविधि भांति राखे महि गोई ॥ करहि भोग तेहि आनहिं कोई  
 तेहि ते संग्रह करौ न दासा ॥ नृप भय चोर बधत ठग तासा ॥  
 गुरु ते ईशवां कन्या जानहु ॥ तासु चरित अवसुनहु बखानहु  
 करन सगाई युगजन आय ॥ सात पिता तेहि घर नहिं पाये ॥  
 कन्या तब कीन्हें उ सन्माना ॥ आपलगी पुनि कूटन धाना ॥  
 चुरी खटकत भई गिलानी ॥ डारे सिफोरि कछु कनिज पानी  
 द्वैल गरही खटकनहिं जाई ॥ एकराखि कूटि सिहर घाई ॥  
 तब ते सोई सीख धरि चित्ता ॥ एकाएक रहौं मैं निता ॥  
 बहुतन संग कलहैं है आवैं ॥ एकाएक परम फल पावैं ॥  
 चौबिसवां गुरु किहैं उ शरीरा ॥ जिहिल गि सब नर साहत पीरा  
 दो० पालन तषट् सस्वादें दे बिबिध बसन पहिराई ॥  
 तेल फुलेल लगाइ नित सेवा करी बनाई ॥  
 सो० अन्त समय की बार ॥ सङ्ग न चालै एक पग ॥  
 और सकल परिवार ॥ सो आपन किमि होई है ॥  
 चौ० आपन तन जान्यो नहिं जब ते ॥ कान लय्यो निज स्वारथ तब ते  
 निज स्वारथ सोई कहवो वै ॥ जो कछु राम भजन बनि आवैं ॥  
 भजन बिना जीवहि मुख नाहीं ॥ बिधि हरि हर समीप चहुं जाहीं  
 चौबिस गुरु करि जो मत पायें ॥ सो मैं तुम कह सकल सुनायें ॥

मुनिमकी उर उपज्यो जाना ॥ जगत भूठ करित बहि पिछाना  
मुनि पद शीशना इबन गयेऊ ॥ जपत पकरित न त्यागत भयऊ  
हरि पुरबसे उजाइ दुरखीसा ॥ अस सत संग प्रभाव मुनीसा  
कह सैनक इक संशय मोरे ॥ दत्ता त्रयी पुत्र किन केरे ॥ ॥ ॥  
ये हो भेद प्रभु देहु बताई ॥ सुनत सूत बोले हवाई ॥ ॥

सो० अत्र पञ्चदशिकी नारि ॥ त्रै देवन कर अंश लप ॥

कीन्ह्यो पुत्र विचारि ॥ नाम धर्यो दत्ता त्रयी ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दास राम  
सनेही कृत मकी दत्ता त्रयी सम्बाद चौबिस गुरु बरानो नाम पटविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

दो० सुनिराम सिय सन्त गुह गराप गिरा सुख दानि ॥

कहौ समुच्चै चरित कहु कहु जै भिनमत आनि ॥

चौ० बहुरि सूत बोले कहिये हा ॥ धन्य सैनक तब नेहा ॥ ॥

जा पूछ्यो सो बरिग सुनावा ॥ और सुनौ सत संग प्रभावा ॥ ॥

सब ते अधिक ज्ञान यह पावन ॥ पुत्र पिता सम्बाद सो हावन ॥

विप्र एक कश्यप प्रसनामा ॥ मेधावी सुत अति अभिरामा ॥

ज्ञान बन्त ममता उर नाही ॥ एक दिन प्रस्न किहि सिपितु पाहि ॥

पिता कहो का करत पकरिये ॥ जाते भव सागर को तरिये ॥ ॥

कह कश्यप सुत वेद पदीजे ॥ ब्रह्म चर्य करि ग्रह सुख कीजे ॥

बान प्रस्थ बहुरि संन्यासा ॥ धारणा करि कीन्ह्यो बन वासा ॥ ॥

जपत पयोग यज्ञ तहं दान्यो ॥ यह कर्तव्य है तुम्हें बरवान्यो ॥

मुनि में धावी उत्तर दीन्हा ॥ मृत्यु विवश हम सब कहं चीन्हा ॥

जब चाहै तब हीं संहारे ॥ बाल एट्ट न हित रुरा विचारे ॥ ॥

तो केहि विधि चहु आश्रम कर्द ॥ प्रमर होइ सो हिरदै धरई ॥

लोम शादि मुनि चिर जिव आही ॥ दूत रोम कलप के माही ॥

जिऊ उरत मृत्यु ते भायि ॥ लोह डारहत शीश औ धायि ॥ ॥



५॥  
 और सुनो पांडव मरव साजा ॥ कीन्हो जब तब क्राड्यो बाजा  
 अरजुन रुषा हंस वृष के तू ॥ चले सकल रक्षा के हेतू ॥ ॥  
 दंड त सिंधु पार जव गय ऊ ॥ दीप एक बन देव त भय ऊ ॥  
 नह बक दाल भ ध्यान लगाये ॥ सब न जाइ मुनि पद सिर नाये ॥  
 चरगा कुवत बक दाल भ जाना ॥ नयन खोलि कीन्हो सनमाना  
 लागे कहन चरित हरि केरे ॥ बहु विधि जो निजन यवन हेरे ॥  
 दो० चित्र कोटि चत्र लारव पुनि उभय सहस प्रवतार ॥  
 भये दशरथी राम के मेरी दृष्टि अगार ॥ ॥

चौ० सुनि अरजुन बोलेति न हीतो तुम्हें इहां कितने दिन बीते ॥  
 कह मुनि सुनहु तात मन लाई ॥ आदि हिते सब कहों इभाई ॥  
 निमिषि अवारह काया जानौ ॥ तीस कष्ट की कला पिछानौ ॥  
 तोस कला की होत महरति ॥ तीस महरति का दिन पूरति ॥ ॥  
 पंद्रह दिवस केर परवारा ॥ उभय पारव का मास विचारा ॥ ॥  
 बारह मास विगत जब होई ॥ तिहि का वरष कहत सब कोई ॥ ॥  
 सत्रालारव अष्टादस वरषा ॥ सत युगरहत सकल सुर हर्षा ॥  
 बारालारव छानवे हजार ॥ जेतारहत सुरबी संसारा ॥ ॥ ॥  
 दो० आठ लारव चौसठ सहस द्वापर रहत समान ॥  
 चारि लारव बतिस सहस बर्ष रहत कलि जान ॥

चौ० चारि सहस युग बीतत जोई ॥ तब ब्रह्मा का इक दिन होई  
 रातिते तन हीत व विधि स्वावै ॥ सृष्टि धरे उर कल्प कहावै ॥  
 तोस कल्प बीतत अजमासा ॥ बारामास वरष परकाशा ॥  
 ऐसे वरष एक शत जाई ॥ तब लगि ब्रह्मा जीवत भाई ॥ ॥  
 मेरे पितहि परलै है जावै ॥ ब्रह्म कल्प सोई कहवावै ॥ ॥  
 मोहि देव त ऐसे दिन भयऊ ॥ ब्रह्मा बीस नाश है गयऊ ॥ ॥  
 एकवार ब्रह्मा इक अयि ॥ चारि भुजा मुख चारि सोहाये ॥ ॥

करतलचारिवेदतनपीना ॥ रामचरितगावतलवलीना ॥  
 मोतेकहिनिध्यानतजिदीजै ॥ हमतेकहुकचतुरताकीजै ॥  
 तेहीसमयबौंडरइकआई ॥ हमेंबाहिलेचलाउड़ाई ॥ ॥

उलटतपलटतनाघतरंवाडा ॥ देखाजाइआनबहुराडा ॥  
 तहंविधिबैठिआठमुखसोहा ॥ आठमुजाबमुदेवहुजोहा  
 कोभवानिविधितेविधिभाषा ॥ ब्रह्मअहंइत्यंमुनिमारवा ॥

दो० अबतककह्योसोकह्योपरअवनकह्योअजनाम ॥

ब्रह्मोयमयआठमुखजहिआतलसबकाम ॥

चौ० इतनीकहतपवनपुनिपुनिधूमी ॥ उभयलेयैटिल्लीनभभूमी  
 उहांतेउड़ेनआनमहंगयनू ॥ सोरमुखविधिदेखतभयनू  
 पुनिवत्तिसंचौसठिछानाघा ॥ दुगुन२मुखकाविधिपावा  
 जिहिदेखासोऊउड़िजाई ॥ गगनपारसबनिकसेजाई ॥ ॥

दो० तहोपुरुषइंकदीखबरजेहितनअतिबिस्तार ॥ ॥

बदनअनन्तअनन्तभुजवेदअनन्तअपार ॥

चौ० कीनबन्दनातिनसनमाना ॥ सबब्रह्मराकागाअभिमाना  
 कहुकबाररहिआयुसुपाये ॥ फिरिनिजनिजआश्रमकहंप्रिया  
 सुनिअरजुनअसिंशेमुखपावा ॥ बहुरिजोरिकरबचनसुनावा  
 हेषभुक्तउजारमहरहऊ ॥ सीतउषाबरषाशिरसहऊ ॥ ॥  
 लेत्योइकमंदिरवनवाई ॥ सुनतबचनबोलिअरधिराई ॥  
 लघुजीवनजगकौनेहेता ॥ धनसंचौअरुकरिनिकेता ॥  
 मृत्युखडीसिरसन्मुखहरे ॥ जबचाहैतबहीमुखगरे ॥ ॥  
 जोकादूसुरीचढावाजावे ॥ क्षरारहिगयेकौनमुखपावे ॥  
 सुनोपिताऐसेजेअहई ॥ तेऊडरतमृत्युतेरहई ॥ ॥ ॥  
 औरेनकीअबकौनचलावे ॥ जोनितजनमि२मरिजावे ॥  
 तेहितेतातमोहतजिदेह ॥ करहुरामपदपडूजतेह ॥ ॥



निशिलासरजरतुजेहिबिधिजावे॥ त्योंतुम्हरीनितप्रायुतिरावे  
देवतजातसचेतनहोवे॥ ढहतेमहलमाहिंकतसोवे॥ ॥  
प्राणाग्रन्तकहुबनेनभाई॥ उदीडाठजिसिबलुनयाई॥ ॥  
स्नोक यावतस्वस्थसिंदेहंयावन्मृत्युश्चदूरतः॥

तावदात्महितकुर्यात्प्राणान्तेकिङ्कुरिष्यति॥ १७॥

गीतिका० सुनिपुत्रकेअसबचनविमलविमलकअपके  
भयो॥ दोउत्यागितृणारामधामधनसुतवासवचकाचलिहि-  
यो॥ जपयोगसंयमसहितकरिहरिभक्तितनसनजीतिकै॥  
गयअन्तसमयविमानचदिप्रभुधामवस्योप्रसीतकै॥

सो० ऐसाहैसतसंगा॥ जाकेकरतैअधनशत॥

लागतहरिकारक॥ भागतसंशयशोकभ्रम॥

चौ० औरसुनोबिस्वायसुनागा॥ मन्दालसासुतासुविभागा॥  
तालकेतुल्यगाहरिनाही॥ जरतुध्वजगालवमदगतचाही॥  
बधकरिताहिसुतासोदुलोही॥ विश्वावसुहिआडपुविरीही॥  
आहपुक्तिनिननृपतेदानी॥ गहिपइबोलीकुप्रारसयानी॥  
नीनिबचनमोहिंदेवेनाहू॥ ताकेसङ्ककरवहोआहू॥ ॥  
इकतोजीममद्वारेअवे॥ भेङ्गनविमुरवजाननहिपावे॥ ॥  
दूसरमोहिजीवतनरनाहा॥ करेनअपररचनिसङ्कआहा॥  
तीतरजोबालकहोनाही॥ द्वादशसम्यतमहीखेलाही॥ ॥  
असप्रणाकठिनसमुक्तिमनमाही॥ अवतकमोहिबरीकहनाही॥  
रतिध्वजवचनदेइतहंपरणी॥ धूमसहितलायेघरघरणी॥  
कहुककालबीतेयुतभयऊ॥ चेरिउकानहिंकबहूदयऊ॥  
आपुंरवलावेदिनअरुताती॥ देइजानतनुजेपाहिभाती॥ ॥  
स्नोक गुडेसिबुदेसिनिरंजनोसिसंसारभायापरिचजि-  
तो॥ सि॥ संसारस्वप्रत्यजमोहनिद्रामन्दालसावाअमुवाचपुत्रमा॥



चो० बड़े भाग सो नरतन पाये ॥ सुरदुर्लभ पुराण युति पाये ॥  
 ताहि पाइ निज राम न ध्यावा ॥ धृग जो धन जग बाहि गवांवा ॥  
 ताते सुत हरि सुमिरा करहु ॥ ज्ञान बिराग हृदय मह धरहु ॥  
 सुचातुवा सुख दुख प्रप हारी ॥ काम को ह म द मोह ने वारी ॥  
 सुत पितु मातु बन्धु प्रर धर्न ॥ ये सब हैं स्वारथ के सङ्ग ॥ ॥  
 अन्त समय के उ काम न प्रावे ॥ बोचहि मिले बाच रहि जावे ॥  
 तिन्है त्यागि वन गधन हिं कीजै ॥ अह निशि राम राय न पाजै ॥  
 क्षिना क्षित तैरी आय सिरावे ॥ ज्यों करतल जल निघटत जावे ॥  
 काल अचानक सब कामोरे ॥ बाल बूढ़ नहिं तरा बिचारे ॥  
 ताते बाल नहिं ते चेतो ॥ बेगिल गावो हरि पद हंतो ॥ ॥ ॥

दो० बहु प्रकार मंदा लसा दीन सुते उपदेश ॥ ॥

नयो ज्ञान हिरे दिव मल गांषा बिधि न मुनि भेष ॥

सो० यहि भौति न घट बाल पद ये वन उपदेश करि ॥

सप्तम भये भुवाल आइ निकट बोले बिलसि ॥

चो० जे भामिनि सुनिये मम वानी ॥ भयनु बूढ़ ह म तुम दोउ जानो ॥  
 बाल कवन पद यो सब प्रांके ॥ करी राज को हमरे पांके ॥ ॥ ॥  
 तेहि ते यहि राखे गृह माहीं ॥ बार बार बिन वं तोहिं पाहीं ॥ ॥  
 सुनि पति वचन पुत्र घर गारंघो ॥ ता सो ज्ञान कछु नहिं भारंघो ॥  
 परनि तशो चहिं करे प्रपारा ॥ परी न कय ह पुत्र ह मारा ॥ ॥  
 न बय क जंत्र बांधि भुज दीन्ह्यो ॥ बिपति होइ यामे सोइ कीन्ह्यो ॥  
 कछु दिन दीते दोऊ मरि गयऊ ॥ पांके अलर क राजा भयऊ ॥  
 सुनि वन बंधु गये ते प्राये ॥ तजहु राज बड़ दोष सुनाये ॥ ॥  
 सो मही पमानि नहिं गई ॥ बरखरा भागन दीन रेवाई ॥ ॥

दो० तबत काशी राज पहं फिरि आदी भजाय ॥

निज ही रादिन कहि लांय ताहि चदाय ॥



चो० कहुकदिवस अलरक नृपलोक ॥ भयो प्रसित तब सपरिहरेऊ  
गयो भागिबन विपति बिचार्यो ॥ खोलि मुद्रिका ताहि निहार्यो ॥

दो० जगत जाल में मति परे केवल दुख यहि माहि ॥  
सत्य कहो सति कहो सुत सुख सयन्यो नाहि ॥

सो० राम विमुख न जौन ॥ किह्यो न संगति ना मुकी ॥  
साधु संग सुख भौन ॥ मिलत ज्ञान हरि भक्ति जह ॥

दो० खग भृग किन्नर नाग नर दै त्या भुरस मुदाइ ॥ ॥ ॥  
युग युग में जे तेरे ते सकत साधु संग पाइ ॥ ॥

चो० प्रस मुद्रिका माफ जव देख्यो ॥ खोज न द प्रांने कालिख्यो  
पह्यो चरणानि ज विपति मुनायो ॥ सुनिबखहु विधि ज्ञान सिख्यो  
गयो मोह सुख भयो अपारा ॥ करि हरि भक्ति भयो भव पारा ॥  
अस सत संग ग्रहे अये राई ॥ गइ क्षण में नव व्याधिन साई ॥  
तांते साधु संग नित कीजै ॥ मन कम व्यागि कु संगति दीजै ॥ ॥

कुराड लिया भदिलता सत संग जल सर धापल्लव पाइ ॥  
सार ज्ञान बिराग गुरु लक्ष्म मादिस मुदाइ ॥ लक्ष्म मादिस  
समुदाइ प्रेम सा मुनन सोहावन ॥ हरि प्रापति फल भधुरम  
हादुख दोष न सावन ॥ प्रथम प्रजाति राक्षिये बडे भये न हि श-  
क्ति ॥ बंधे रहै करइ मिकहे कल्यलता हरि भक्ति ॥ ॥

दो० जन में कन्या जन कते रहै जनक के गोद ॥  
होइ पुत्र तब विवि सुख दइ मिकहे भक्ति बिनाद ॥  
प्रभु पयोधि धन संत है हरि जन पोमान ॥  
सुस किल तेर धुनायइ मिकरत साधु आसान ॥

इति विश्रामसागर सब मत आगर अथ उजागर श्रीरघुनाथदासरामसने-  
हीरुत पुत्र पिता संवाद अलरक प्रसंग वर्णनो नाम सप्तविंशोऽध्यायः ३७

दो० सुमिरि राम सिप संत गुरु गरा पीरा सुख दानि ॥



सारं शास्त्रमत कहौं कछु वेदांत बखानि॥

चौ० सुनि सौन कबो ले हर थाई ॥ सत संगति माहिं साक कुगई  
 और एक बरसौ इतिहासा ॥ जेहि ते होइ ज्ञान पर काला ॥ ॥  
 सयन जीतय कभूपति राई ॥ नीति बान बरं जे पढ़ चोई ॥ ॥  
 तेहि के पुत्र बरष दश केरा ॥ भयो मृतक सो कर मन धेरा ॥ ॥  
 राजा शिच कीन प्रति भारी ॥ प्राण तजन की बात विचारी ॥  
 तेहि प्रत्तर लोमस कृषि प्राये ॥ नृपहि दुखित लखि कपल सुगये  
 हेनृप शोक करै सूका के ॥ तेरो सुनत हि ते पितु बाके ॥ ॥ ॥  
 पुत्र शरीर परात ब आगे ॥ रोवत मृग्य जीव के लाये ॥ ॥ ॥  
 जनमे मरेन भयो मंदोई ॥ नित्य प्ररूप प्रचल है सोई ॥ ॥  
 सस्तर काटि सकै नहि ताही ॥ पावक जारि सकै नहि जाही ॥ ॥  
 नीर भिजोय सकै नहि बाके ॥ मारुत सो कि सकै नहि ताके ॥  
 ऐसा यहि प्रातम कह जाने ॥ मन महं ना सुघोच मति प्राणे  
 या के मृतक कहै जो कोई ॥ महं मृदु प्रज्ञानी सोई ॥ ॥ ॥  
 नासवन्त हं देह पिछाने ॥ जीवात्मा प्रविना सो जाने ॥ ॥  
 दो० देह अंगन्यार करे जहंत क होत विनास ॥  
 उतयति भय जेहि भांति ते करत नरक कोवास ॥  
 चौ० प्रथम प्रहस प्रज प्रयंड प्रमाया ॥ इच्छा करि पुरुष उपजाया  
 पुरुष इच्छा ते प्रकृति प्रभेवा ॥ प्रकृति ते भयो महान्त देवा ॥  
 महातत्त्व ते भोति रंकारा ॥ निरंकार ते प्रभाव निहारा ॥ ॥  
 प्रभाव ते भये तीनि गुराराऊ ॥ सतरजतामस प्रगट प्रभाऊ ॥  
 त्रैगुणा की भांति ओलादी ॥ जिन ते भातनु प्रनिन उपाधी ॥  
 संत ते वास देव चित जाने ॥ और चंद हौ देव पिछाने ॥ ॥  
 रजगुण ते ब्रह्मा बुधि भयऊ ॥ दशौ वाइ इंद्री दश जयऊ ॥ ॥  
 तामस ते शिव जानो रई ॥ प्राहं प्रंतह करन लखाई ॥ ॥



अहंतेमात्रकाशलहियोला॥ उपजेअवरा सुनतजेबोला  
नभतेभईपवनअस्पसी॥ तासोंभुकदगपहिहसो॥ ॥  
अरितेजलरसनारसचाहे॥ जलंतपूषयोगधजालाहे॥  
एकतेएकप्रकटहैअई॥ जवसिमिटैसबजाइसमाई  
दो० सतरजतमबुधिचितअहंशब्दअस्परसरूप॥

रसनगंधमिलिगोंडिपरितवउपज्योमनभूय॥  
तोहितेअन्नाहकरानूपगनेजातहैआरि॥  
मनबुधिचितअहंकारअवविरतीकहोंविचारि॥

चौ० ज्ञानविचारिशीलविस्वासा॥ धीरजनिअचेमतिरतिभासा  
चुरतिचपललाअगिनउमंगा॥ रागअादिचितवृत्तिप्रसंगा॥  
मैलैमानमलिनतादोषा॥ अहंकारकीविरनिसरोया॥ ॥ ॥

दुखसुखभयसकल्यविकल्या॥ लाजउम्राटनमनवृत्तिथल्या  
सकवस्तुचहुनामकहाये॥ अन्नचूनजिमिरोटीगाये॥ ॥  
अवडनकेइन्द्रिनकेदेवा॥ जेजेहैबरगोंसोभेवा॥ ॥ ॥

कुकुभाछ० मनकेदेवचन्द्रबुधिब्रह्मावासंदेवचितकैरा  
अहंकारशिवदिसाकराकेनयनभानुसुरहरे॥ रसनाबर  
सातुचाकमारुतनासाअश्वनिजानो॥ मुखकेअग्निइन्द्र  
हाथनकेदेवगुदायममनो॥ लिंगदेवपरजापतिसिरजत  
चरणनबिराबिराजै॥ चौदहदेवरहतयहितनसंगनितनि  
रभेहैगाजै॥ ॥

दो० नारीचौदहसहसंहेंयहिशरीरकेमाहिं॥  
तिनमांचौबिसमुखहैंसबकोइजानतजाहिं॥  
कमलनाभितेदशउरखदेसंगईअधजान॥  
पुगदक्षिणाउत्तरउभयतिनमादशपरधान॥  
चौ० तिनदशहूनकेनामबरवानो॥ जहेंबसैसोऊतुमजानो॥

बाँये इड़ा पिंगला दाये ॥ मध्यसुरबमनातीनिगनाये ॥ ॥  
 वामचक्षुगधारी रहई ॥ हस्ती जिह्वा दाहिने ग्रहई ॥ ॥  
 पृष्ठा कर्णा दाहिने ग्रहई ॥ पुनियसाशिनी बाये लसई ॥ ॥  
 नाभिमाहिं प्रालंबकराजै ॥ कहुलिनासिकामाहि विराजै ॥  
 मुखप्रस्थान संखिनी केरा ॥ येनाडिन के नाम निवेरा ॥ ॥  
 दशयवनों हैं यहितन माहीं ॥ निजनिज थलमें सो उर हाहीं ॥  
 प्राणायवन हिंदै में बासा ॥ जेहिते निशदिन निकसत स्वासा ॥  
 गुदाप्रयान नाभिसामाना ॥ कंठ उदान सर्वतन व्याना ॥ ॥  
 नागवायुते उठै डकारै ॥ कूरमनयननयलक उधारै ॥ ॥  
 देवदत्त आवै जमुहाई ॥ किरिकिल छीकल गावै भाई ॥  
 मुये धनंजय देह कुलवैं ॥ येदशयोन शरीर रहवैं ॥ ॥  
 दो० इन्द्रिय दशतत्त्व पांचते प्रकट भई यह जानि ॥

उभै उभै सो प्रीति है सोऊ कहों बरवानि ॥

चौ० मुखते प्रवरा कहत थक सुनई ॥ त्वचापानि अस परसे गुनई  
 नयन चरणाते प्रीति रहवैं ॥ नयन कंसे पद लय पहुंचावैं ॥ ॥  
 रसन उपस्थ भोग दो उचावैं ॥ गुहनासिकाने हनिचावैं ॥ ॥  
 मन इन इन्द्रिन के सुख लागी ॥ भूल्यो ब्रह्म क्रांति सय भारी ॥  
 ताते भयो दीन भतिहीना ॥ मन बासा प्रव कहों प्रवीना ॥ ॥  
 हिरदेवी चक्रमलयक ग्रहई ॥ परबुरी प्राट केरत हरहई ॥  
 जेहि दल परमन बैठत धाई ॥ तब नहं तैसी बिरत तरबाई ॥  
 पूरव दल परज बचलि जावैं ॥ दयाधर्म धीरज उपजावैं ॥ ॥  
 दल अगनेय माहिं पग धरतै ॥ सुधातृयानि द्राक्षस बरतै ॥  
 दक्षिण मंद मत्सर छल केहा ॥ अहंकार उपजै अरु कोहा ॥  
 नय जटवि दले माह हठ माया ॥ आशा लृषा संकगनाया ॥  
 पक्षिम दल समता उपजावैं ॥ अजिह्व निरभै चित रहवैं ॥



बायवउच्चादनसंतापा ॥ मयलज्जावरतैरपापा ॥ ॥ ॥  
 उत्तरदलपरजबमनदिष्टा ॥ हसीपिनोदकानकीचिष्टा ॥  
 ईशानिसुधिबुधिसंतापा ॥ क्षमाशीलसत्त्रिरतिग्रहेष्टा ॥  
 मनग्रंथोपरपुरिजपरधवि ॥ यवनसमानवारनहिंलावे ॥  
 तेहिमनका रोकतकोइसन्ता ॥ यकरिलगावतचरणाग्रनन्ता  
 नातरुजगतसिंधमहंभंगा ॥ बाहतकर्मबीचिकनसंगा ॥ ॥  
 कुराडलिया औसुनोतत्वपांचतेजोप्रगटितनमाहि का  
 मकोहमदमोहभेयबोलननभतेग्राहि ॥ बोलननभतेग्रा  
 हिवायुनेबाँदेकाया ॥ बलकरनासुनिचलनपरसिसंकोचव  
 ताया ॥ पावकतेग्रा लससुधातृपानीदसगव्यौर ॥ जल  
 तेमेदरुक्ककफबिन्दपसीनागौर ॥

दो० महीतत्वलेजानियेअस्तिमांसअरुचाम ॥

नारीरोमासर्वमिलिभाशरीरवेकाम ॥ ॥

तनभूढाभूढाकरतभूढासबसंसार ॥ ॥

तनसच्चासच्चाजगतसच्चाकर्मविकार ॥

चौ० तनमेंतुर्जदेहहैमूला ॥ व्यापकसूक्ष्मलिंगअस्थूला  
 तिनकीचारिअवस्थाकुरिया ॥ जागतस्वप्रसुबोधतितुरिअ  
 बानिहुचारिभांतिकीकरी ॥ परापसन्तीमध्यवैरबरी ॥ ॥  
 दशइन्द्रीअरुपांचौतत्त ॥ तिनतेसनअस्थूलअनित  
 बालयुवाबुद्धापनरोगा ॥ सोवनजागतसीततयोगा ॥ ॥  
 मलडारननवहारनिहारा ॥ धूलसंगथेलगेविकारा ॥ ॥  
 जाग्रततासुअवस्थाजानी ॥ देखतजोकहुकरतपिछानी

दो० दसोवायुअरुतीनगुरापांचमातराभास ॥

चौदहस्वरअंतहकरायामेंकरतबिलास ॥

पांचतत्त्वइन्द्रीदशोअौरपाचसंगवाय ॥ ॥

१ सतगुराहृदशदेवतासोइहसुखपाय॥  
 चौ० सोवतस्वप्नदेखयतजोई॥लिंगदेहतुमजानोसोई॥  
 लिंगदेहजैतत्वनकेरा॥सोमैंतुमंतकरौनिधेरा॥ ॥ ॥  
 प्राराअप्रयानसमानउदना॥ब्यानबायुसरजतमजाना॥  
 अन्तहकराचारिस्वरचरो॥यांचमातरासोउनिहारो॥  
 बीसतत्वंतलिंगशरीरा॥स्वपनअवस्थातासंगवीरा॥ ॥  
 जीवनामताहीकोपरही॥लिपेमनासोईअबतरही॥ ॥  
 कर्मकरततसभोगतभाई॥स्वर्गनर्कमहिंसंडलअई॥ ॥  
 सो० जन्ममरणासुखशोरासुधापिपासाजानिये॥  
 येष्टउरसोरोगजीवसंगलगिरहत॥ ॥  
 चौ० लिंगशरीरनामलवपीवै॥जबनरअजधामेंमनलावै  
 अजयाकिंजोस्मंसउसासा॥सुमिरेनाम सहितविस्थासा  
 स्वातलेतरातजलमकारै॥जागतसोवतनाहिंसिरै॥  
 होइवासनातवसबनाशा॥मिलैब्रह्ममंहजिमिजलबासा  
 आनदप्रारामनोमयकोसा॥तिहुनकेरतनुसुखमपोसा  
 अधिकनीदसोवैजबप्रारणी॥रहेनताकोकछूपिकानी॥ ॥  
 सुजातमाप्रकासितभोपति॥तस्यअवस्थाअहिमुखोपति  
 तानिअवस्थान्तसतचीन्हा॥सवसंगनुरियानितनवीना  
 ईश्वरजीवभेदमिदिजोवै॥तुरिअवस्थासोइकहायै॥ ॥  
 कोइकोइसन्तलहतहैंयाको॥लहरासुनोवतावोताको  
 प्रेमविवसतनकीसुधिभूली॥गदअकंठरामरहैफूली॥ ॥  
 कहुंउठिचलतबैठिकहुंजाई॥कहुंनाचनकरतालबजाई॥  
 बोलतनचनअोरकोप्रौरा॥समुक्तिपरतमानहुमतिबौरा  
 नईवदनतनचदतनमासू॥नहिंलागतजेहिंसुधापिवासू  
 ब्रह्मपरतनहिंपरवतगांऊं॥कोहमकहांजातकेहिदाऊं



समचित शत्रु मित्र नर नारी ॥ समचित पुत्र पिता महतारी ।  
 होंतू बंधु गर्इ सब खाई ॥ त्याग अत्यागत हों नहिं कोई ।  
 दोष अदोष मिटी भ्रम काई ॥ निज स्वरूप सुख रहे समार्इ  
 मनचित अहंकार नहिं जावे ॥ बुधि पहंचत पहंचत न सि जावे

दो० जैसे पुतरी लोन की दधि घ्राहत गलिजाइ ॥  
 त्यों आत्म के स्वाज ने सुधि बुधि जात हेराइ ॥  
 ज्यों सूरज के तेज ने देखि परत रवि जात ॥  
 त्यों आत्म के तेज ने आत्म रूप लखात ॥  
 ऐसा मन जिनका मिल्यो ते नर जीवन मोष ॥  
 ज्यों चाहे त्यों ही रहै तिन्है न दोष अदोष ॥

चौ० चारि अवस्था बरिणि सुनार ॥ जहं जहं वसें कहीं सो गार  
 जाग्रत को चक्षुन में बासा ॥ लिंग देह कर कंठ नै बासा ॥  
 कारणा तनु हिरदय महं राजै ॥ तुरी अवस्था गंगन विराजै  
 परमात्मा ब्रह्म की जानै ॥ सब ते प्रथक जो आदि पिछानै

दो० पुरुष प्रकृति महत नुनि रंज्यो गुण अंतर्कर्म ॥  
 इंद्रि सुबलत वायु तन इनते पोर जो ब्रह्म ॥ ॥  
 परकासक चर अचर का परमात्मा सो एक ॥  
 जैसे बहु जल कुम्भ में रविलखि परत अनेक ॥  
 आदि अन्त मधि मोष सोइ पश्यति जे मति धीर ॥  
 जिमि मृति पात्र अनेक विधि बसन तनु गोक्षीर ॥

श्लोक एक अमृत्पात्र मनेक रूप क्षीर चमक बहु बरी धेनु ॥  
 सुषरी में कं बहु भूषणानि परमात्मे कं च शरीर भिन्नः ॥

दो० सो शरीर आनित्य है नित्य आत्म ब्रह्म ॥  
 तूताही को अंश है भूल्यो द्वै के भर्म ॥  
 जैसे मंदिर कांब के जात भयो कोइ खान ॥

आपनि कूई देखि कै भूकत भांहे रान ॥  
 जैसे मूरख सिंह ने आपन रूप निहारि ॥  
 कूटि पखौ जल कूप में दूजो भर्म सहारि ॥  
 यथा सिचान उड़ान नभ निकसा जहंगु कांच ॥  
 निज तन कूह विलोकि जड़ दूट भय भय कांच ॥  
 तेरे ही अज्ञान ते दूजो भांसन आइ ॥  
 ज्यों बिब फूटी आरसी मुख बहु परत लखाइ ॥  
 अपने ही अज्ञान सों सब से कीन्हों बेर ॥  
 तेरो दुख तो को भयो और न दूजो गेर ॥  
 ताते तो ही एक है नित्य अखंड अदृष ॥  
 जीव ग्रंथि को कूडि कै लखौ आपनारूप ॥  
 काम को ह मद मोह भय राग दोष अभिमान ॥  
 में तैं हिंसा सोक श्रम जीव लक्ष परमान ॥  
 जब तक इनके बसर रहेगा है गोमन नाहिं ॥  
 तब तक सपनेहु नामिले निज स्वरूप के माहिं ॥  
 जीव आतमें कर्म है परमात्मा विसोरा ॥  
 जन राघो यहि भेद का जानत ज्ञानी लोग ॥  
 कर्म उपासन ज्ञान मत तीनि बेद के माहि ॥  
 जो तत पर तिन बिषे कहियत ज्ञानी ताहि ॥  
 ज्ञान भानु हरि भक्ति चरक कर्म सुकरलै हाथ ॥  
 देखि परे निज रूप तब कहत दास रघुनाथ ॥

गीतिका छं० शुभकर्म ज्ञातरु भक्ति तिहुं बिन जन्म मरीन  
 कूई चहु जाइ सुर पुर नाग पुर महि गिरत यम गरा कू-  
 टई ॥ मुनि भूप ऋषि के वचन छिपे पुत्र शोक विहाइ कै ला-  
 ग करन जप योग संयम ज्ञान मुक्ति हि पाइ कै ॥



दो० कह्योसूतसोनक मुनो ऐसा है सत संग ॥  
 सयन जीत नृप ब्रह्म में भयो लीन तजि अङ्ग ॥  
 सत्य दृढावन मोक्ष पद कुमति हरन वैशूल ॥  
 सत सङ्गति अस जानि नरक लन करै सुख मूल ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास  
 रास सनेही कृत सयन जी त प्रसंग बरानो नाम अष्टविंशोऽध्यायः

दो० सुमिरि राससिय सनत गुरु गराप गिरा सुख दानि ॥  
 श्री हरि बंस पुराणा की कहौ अब कथा बरानि ॥  
 पुनि सोनक बोलत भये नाइ सूत पद भाल ॥  
 सत सङ्गति महिमा कहु कहु कहिये और कपाल ॥

चो० कह्योसूत सत सङ्ग समाना ॥ और न दूसर वस्तु जहाना ॥  
 जो सत सङ्ग करै मनु लाई ॥ उपजे ज्ञान मिटे भ्रम काई ॥  
 मोक्ष आदि सुख चाहे कोई ॥ सत सङ्गति करि पावे सोई ॥  
 जप तप योग करै ब्रत दाना ॥ सत सङ्गति बिन लघु फल जाना ॥  
 सत सङ्गति क्षणमात्र हु होई ॥ तेहिं सम तुलै न तप लख कोई ॥  
 मुनो एक इतिहास पुरानी ॥ जाति परे महातम जानी ॥ ॥  
 मुनि बसिष्ट एक बार सुभाये ॥ गाधि सुवन के आश्रम आये ॥  
 बिश्वामित्र बहुत सनमाना ॥ रहै तहौ कहु दिन सुखमाना ॥  
 चलन लगे जब बिधि सुत गेहा ॥ कीन बिचार गाधि सुत येहा ॥  
 पूजा इन्हें दीजिये काहा ॥ जेहि ते खुसी जाय ऋषि नाहा ॥  
 लाय बरष जो तप मय साधा ॥ तेहिं मा मुनिहिं देव प्रवसाधा ॥  
 करि संकल्प दीन ऋषि राई ॥ पाइ बसिष्ट चले हर याई ॥

दो० इक दिन बिश्वामित्र हू गे बसिष्ट के भौन ॥  
 तिन दीन्हो सत संग फल उभै घरी कजौन ॥

चो० गाधि सुवन मुनि कह्यो रिसाई ॥ मै तो हिन पदोन्हो आधिकारी ॥



तेहिं सम युगुल घरी किमि कीन्हो ॥ न्याव चुकावन होउ चलि दीन्हो ॥  
 अपाये शंभु तीर केला सा ॥ तिन पठयो ब्रह्मा के पासा ॥  
 तब दोउ ऋषे ब्रह्म पहंगयऊ ॥ सब बिर्तानि सुनावत भयऊ  
 चतुरानन अस कहा विचरि ॥ जाहु दोऊ हरि पास सिधारी  
 सुनि विधि बचन दोऊ मुनि नाथा ॥ जाइ बिष्णु पद नाथो माथा  
 गाधिसुवन बेलि हरवाई ॥ नाथ न्याव इक देहु चुकाई ॥  
 हमरे भवन गवन इन कीन्हा ॥ जस कहु बना सो आदर दीन्हा  
 विदा होत तप सहस पचासा ॥ इन्ह दीन्हो मैं सहित हुलासा  
 हो चलि आयो इनके धामा ॥ कहु क हिस कीन्हो विश्राम  
 हो ॥ चारि घरी सत सङ्ग इन कीन्हो स्वप्न भकार ॥

तेहि माते युग दंड मोहिं दीन्हो चलतीया ॥

चौ० दुइ माते कोहें अधिकारि ॥ यहै न्याव प्रभु देउ चुकाई  
 सुनि सुनि बचन बिष्णु अनुमाना ॥ ऋषि सत सङ्ग प्रभु न जाना  
 जो मैं बहु विधि कहव बुझाई ॥ तब हुन इनकी संशय जाई ॥  
 अस मन समुझि कह्यो श्रीनाह ॥ दुइ मा एक शेष यह जाह ॥  
 तिन काला वह इहो लवाई ॥ पुनि प्रभु सहित बले हरवाई ॥  
 जाइ शेष यह भारयो हाला ॥ कह अनन जो तुम यह काला  
 धरहु धरनि दुइ माते कोई ॥ देहु चुकाई न्याव में मोई ॥  
 कह ऋषि लख बरष तप कीन्हो ॥ तेहि मा अर्द्ध बसि रह्यो दीन्हो  
 आधार हाहमार पाही ॥ तेहि तप तेज मही राह जाही ॥  
 धार्यो श्रीस शेष सिर टाला ॥ सधी नहिंति ऋषि भय विहाला  
 तब विधि तेहरि कह्यो बुझाई ॥ सुनि वसिष्ठ बेलि हरवाई ॥  
 चारि घरी स्वप्न के माहीं ॥ साधु सङ्ग कीन्हो बहु नाहीं ॥  
 दो० उभय घरी ऋषि कादिहो रही उभय मम पास ॥  
 ताके फल बल भूमि यह घट पर करौ प्रकास ॥



चो सुनिशिरैचिजीनः प्रहिराऊ महरिहिं सतसङ्ग ॥  
 सङ्ग प्रताप देवि अधिकारु ॥ गाधि सुवन तवरहे लजाई ॥  
 योगतयस्या त्यागन कीन्हों ॥ सतसङ्ग निमें तन मन दीन्हों ॥  
 अस सतसङ्ग अहे नर थिराई ॥ जीर सुनो अब कहों बुझाई ॥  
 द्विज इकरहा बड़ा प्रविचारी ॥ तस कर कर्म करै सहि गारी ॥  
 सोइ कहि वसन मंदापासा ॥ गयो तहां निबंघो हारे दासा ॥  
 लिन की चोरी करि बेहेता ॥ बसत भयो निशिसन्त निकेना ॥  
 कथा भई कछु चारत हाहीं ॥ अनमन बैरि रहाति न पाहीं ॥  
 जब रजनी बीसी युग जामा ॥ तब हरिजन कीन्हि निविश्रामा ॥  
 सो वत जानि विप्र प्रसगाई ॥ चोरी करन लाग हरयाई ॥  
 लखिय मराज को धप्रति कीन्हा ॥ चोलि दूत प्रसभायै लोन्हा ॥  
 यहि भक्तन की कीन्हि सिंचरी ॥ लावहुं बगिन कर्म हं बोरी ॥  
 वह द्विज है सन्तन के राई ॥ ताहि लेन कोनी विधि जाई ॥  
 कह्यो धर्म जीनी विधि पावो ॥ तौनी मांति यहाँ तक लावो ॥  
 सुनत दूत यकन सक भयऊ ॥ हरिजन धाम तहां चलि गयऊ ॥  
 मन्दिर निकट रहाल गिवाढा ॥ निकसा द्विज चोराय प्रहिकाय ॥  
 जलथत जान सन्त सब धायै ॥ चरगोदक तुलसी सुरयनयै ॥  
 राम राम कहुराम बखाना ॥ इतने माहिं मुक्त भेजाना ॥  
 मुगद रमारि डारि गर फांसा ॥ दूत लेयाये यम के पास ॥  
 लखि द्विज धर्म ते लोन्हायो ॥ बलकराह मां भडारवायो ॥  
 भयो सनेह सुरभिस मलाही ॥ करै अनन्द परनिहिं माहीं ॥  
 बहुरि बरत रसमा भेदवायो ॥ सीतल भा गोला औदायो ॥  
 पेत शीश भा प्रमोदमाना ॥ प्रमिय नाग भेद लिल कसायो ॥  
 लोहा कांठ सुनन सन भयऊ ॥ तब तौ डारि लई महं भयऊ ॥  
 विशापीव कीट सब भागा ॥ धर्म राज लखि ॥ राजल ॥

करतविचारमनहिंमनलाये ॥ तेही समय ऋषि नारद आये  
 बोले वैवस्वत करजोरे ॥ नाथ ऐक बडि संशय मोरे ॥ ॥ ॥  
 यह पापी प्रति चोर लवारी ॥ ताहि दीन हम सांसाति भारी ॥ ॥  
 याके दुख कहु भयो न राई ॥ सो कारणा मुनि जानि न जाई ॥ ॥

दो० धर्म राज के बचन मुनि बोले ऋषि हर बाइ ॥

याहि मगायौ कहौ ते सो मोहि देहु बताइ ॥

चौ० तब रवि सुत सब हाल बखाना ॥ जिहि विधि संत न दिगति आता  
 मुनिय सब चन कहा ऋषि आजू ॥ बड़ प्रपराध की न तुम आजू ॥  
 सन्त महात्म तुम नहि जाना ॥ जिन्हें बखानत वेद पुराना ॥ ॥  
 जग महं नहि कोइ सन्त समाना ॥ जिन वस सदा रहत भगवाना  
 दासी शिशु में पाइ उच्छिष्टा ॥ विधि सुत भयौ ऋषि न महं सिष्टा  
 बूझ्यो हीरते संग प्रभावा ॥ तिन मोहि जल चर पास परावा ॥  
 देव तम स्यो धस्यो बपु आना ॥ पुनि शुक्र पहं पर्यो भगवाना ॥  
 सो जानि ज शरीर तजि दयऊ ॥ तब नृप सुत ते बूझत भयऊ ॥  
 देव त आवा दिव्य विमाना ॥ तेहि चदि बोले सुवन सुजाना

दो० प्रथम मैं जल चर ह्यौ जहौ दरश तुम दीन ॥

तेहि फल पायौ कीरत नुत हौ कृपा तुम कीन ॥

शुक तनु तजि नृप सुत भयौ पुनि भेद स्या तुम्हारा ॥

अब न भजाल विमान चदि इत नालखा हमारा ॥

सो० संभाषण प्रस्यसि कैरे धरै जे सेव उर ॥ ॥

तस्य सुकृत फल ससी कहि न सकत युति सहस मुख ॥

चौ० मुनि मोरे मन आनंद छावा ॥ सत प्रभाव अमित लखि पावा  
 हि विप्र यह तिन के पासा ॥ तुम अहि बन कत कीन्हो ग्रासा ॥

साधु न राम राम जबे दरा ॥ काहे न कंठि दिह्यो तेहि बेरा ॥ ॥

अब ते कहा मानि मम लीजे ॥ याको पठे धाम हरि दीजे ॥ ॥



अससौनकसतसंगप्रभावा॥बड़पापीपरधामसिधावा॥  
 वायुपुराणकेरइतिहासा॥यहमेंतुमतेकीनप्रकासा॥ ॥  
 नलिनीदलगतजललवजैसे॥नरजीवनहैचंचलतेसे॥ ॥  
 छिनहींसज्जनसंगतिकरई॥तेहिनीकाचदिभयनिधितरई॥  
 चहुंयुगचहुंश्रुतिकहैबुधलोई॥बिनसतसंगतिनरेनकोई॥  
 हरिगीतिकाछं॥सतसंगबिननहितैरेभयनिधिदानत्र-  
 तवरुबहुकैरेप्रसजानिजेनरचतुरकरिसतसंगहरिनामै-  
 रै॥जगअाइनरतनपाइसपनेहुंसावकेदिगनगयो॥  
 तेहिजानियैपशुसरिसमानुषदेहभयतौकाभयो॥

दा० साधनकेसतसंगकीमहिमाअगमअपार॥

बरनीजनरघुनाथकहुनिजमत्याअनुसार॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीखुनाथदासगमसनेही  
 कृतसतसंगमाहात्म्यबर्नानोनामएकानचत्वारिंशतमोऽध्यायः३६॥

दा० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगराणगिरामुरखदनि॥

कहौनवमप्रसकन्धमतकहुब्रह्माडबरबनि॥

चौ० बहुरिसूतबोलेमृदुबानी॥सुनौकथाअरबिकहोंबरबानी

एकबारयमराजप्रवीना॥आपनदूतबोलिसबलीना॥ ॥

कह्योकिमृत्युलोककेमाही॥तुम्हराकोईदुसरिहानाही॥

एकबातयहजानेरहियो॥साधुनकोकरकभूनगहियो॥

वैतोहंपरमेश्वरप्यारे॥रहैरामकरबानाधारे॥ ॥ ॥

बैशावसठवोपूज्यसदाही॥स्वर्गरसानलभूतलमाही॥

स्वर्गदेवअहितलअनुसरही॥मनुजपूज्यमहिनिजहितकही

तेहितेजेतुमहूलरिवायो॥तुरतदूरितेशीशनवायो॥ ॥

जोममआपनिचह्योभलाई॥तौनसतायोसंतहिजाई॥ ॥

साधुदुखावैवैकलयवि॥तलधनकुडुबनासहैजावै॥ ॥

जिनजिन बरमरुत सीठाना॥ पाइनि दुख बहु सुनो प्रमाना-  
 दे० हरनाकुसुम हस्तादते दुरयोधन पंचालि॥  
 कंस उग्र रावरा अनुज भै सुकंठ प्ररुवालि॥  
 चो० दुरवासा अरि बह दुख पायो॥ अम्बरीष ते वर बदायो  
 नृप नृग भै गिरि गिरि जग जाना॥ सुपचमरु को मर द्यौ माना  
 धृष्ट बुद्धि गा प्रापुद मारा॥ चंद्रहास कामरुन बिचारा॥ ॥  
 सुरति सुधन्वा ते गसठानी॥ शंखलिरिक्त मुख कृषि भै हानी  
 पुनत दूत बोले वर जोरी॥ कहौ नाथ विस्तारि बहोरी॥ ॥  
 केहि विधि दुरवासागे जोरि॥ धृष्ट बुद्धि जे केहि विधि मारे॥ ॥  
 नृग गिरि गिरि भै केहि विधि आई॥ प्रथक सब कहौ बुझाई॥ ॥  
 कह गवित नै कहों मति यथा॥ प्रथमै अम्बरीष की कथा॥ ॥  
 राजा अम्बरीष बड़ साधु॥ तिनके उरमें समा अगाधु॥ ॥ ॥  
 सब मन कृपा चरण भै राखे॥ मुख ते राम कथानित भारे॥ ॥  
 कर सों हरि मंदिर वर भारे॥ नयन नते प्रभु रूप निहारै॥ ॥ ॥  
 सिर सिंघा मपद करत प्रनामा॥ रसनय प्रिय प्रसाद प्रभु नासा  
 धवन नि सुनै चरित हरि केरे॥ अथ राज के जात न नेरे॥ ॥  
 कहं लगि कहौ चरित भै तिनके॥ व्यंजन हीरि हिंडो लायो जिनके  
 तिनके भवन गये दुर्वास॥ ता दिन रत नृप रहे उड़ीसा॥  
 अरि हिंदे रिब भूयति सुख पायो॥ दीन निमंत्रा सबे टिकाय  
 रैन जागरन करि उत्तसाह॥ होत बिहान उदे नर नाह॥ ॥  
 प्रात क्रिया करि आइ महीसा॥ जान्यो दुवाद सी पल तीशा॥  
 बूझा गुरै बोलिका कीजै॥ पारन हम प्रव केहि विधि लीजै॥  
 मुनि की पूजा है युग जामा॥ होत बिरोध किं हे दोउ कामा॥ ॥  
 भगु मुनि कइ मिला हरि घेई॥ कदहु पान कहु दोष न होई॥ ॥  
 दे० गुरु की आज्ञा पाई के नृप चर सोदक लीन॥



दुखसागरविजानितहैं आदिको धप्रतिकीन ॥  
 चौ० रत्नपहमें निमंचनदीन्हें ॥ तोही प्रथम पान जल कीन्हें ॥  
 क्राभ अग्निनि ते तब कुल जेता ॥ करहुं मस्य सब तोहिं समेता ॥  
 अस कहि पटक्यो जटा बिसाला ॥ प्रगदी तुरत अग्निनि कीज्याला ॥  
 सन मुख चली भूयंक जवहीं ॥ नरपति रामहिं सुमिसोतवहीं ॥  
 चल्यो सुदर्शन चक्र कराला ॥ अग्निनि रवाक करि मुनि तन चाला ॥  
 भागे चर्यो गे अज शरनाई ॥ तेहि क्षरा बृहद्ब्रह्म पूरकाई ॥  
 कीन बिदा ब्रह्मा बरि आई ॥ हरि दोही के सके बचाई ॥ ॥  
 तब गे अरु धिं कैं कासा ॥ देखि शंभु अख बचन प्रकासा ॥  
 पढ़्यो पुराण सहस सब वेदा ॥ जान्यो नहिं भक्तन कर भेदा ॥  
 महा अलय महं बचन न कोई ॥ तबहुन नाश भक्त कर होई ॥  
 अचल धाम साकै तबिहारी ॥ निवसत तहां दिव्य बपुधारी ॥  
 स्नाक मार्कण्डेय पुराणो सदा विवाक्य दुर्वासा प्रति ॥ महति निल-  
 ये ब्रह्म न ब्रह्मा रडि जल पुतः न तत्र नाशो भक्तानां सर्वेषां च विनियते ॥  
 चौ० ताते जाहु यहां ते भागी ॥ नाहित जरी नगर सम अगामी ॥  
 तब बैकुण्ठ गये दुरवासा ॥ व्याकुल गात बचन परकासा ॥  
 हे ब्रह्म राय देव आरति हर ॥ शरणापाल पूरा करुणा कर ॥  
 हाइ हाइ प्रभु लेहु बचाई ॥ चक्र सुदर्शन देह जराई ॥ ॥  
 सुनु द्विज कहार भापति देरी ॥ मोहिं नहिं शक्ति बचावन केरी ॥  
 है यहि विधि अगारि त गुरा मोरे ॥ भक्त बसल ताके सब चेरे ॥  
 यथा तमारि तेज के कासा ॥ दीपो गरानहिं करत प्रकासा ॥  
 भक्तन पराधीन हो कैंसे ॥ पक्षी वंध्यो डोरि महं जैंसे ॥ ॥  
 साधुन मेरो उर अमगं हेऊ ॥ तिन तजि छिन हू जात न रहेऊ ॥  
 दासगार पुत्र अयताना ॥ तन धन मोह मानि कल्याना ॥  
 सकल त्यागि सम शरणा आवे ॥ तेह मते कैंसे तजि जावे ॥

प्रारतिअधिकभक्तप्रियमोहिं॥दुरवासासमुकायोंतोहीं॥  
 तिनतेबैरकीन्हतुमजाई॥भांगीयहोनरहेभलाई॥ ॥  
 होतकसूरमोरकहुभाई॥नौममकहेमाफहैजाई॥ ॥  
 सदादासममकीरखबारी॥फिरहिंचक्रकोसंकेउवारी॥ ॥  
 तातेजोनिजचहौउवारा॥नौफिरिजाउभूपदरवारा॥ ॥  
 वडेदयालदीनदुरवहारी॥देखततुमकहेंलेहैंउवारी॥ ॥ ॥  
 ऐसंबचनकहेजगहीसा॥सुनिअधिचलेकाटिजनसीशा  
 अंबरीषदिगपहुंचेजाई॥मेसीतलनृपलीनबचाई॥ ॥  
 पदपरवारिभोजनकरवाये॥तिनपाँछेउठिअपहुपाये॥ ॥  
 दो० लज्जितहैअविराजतबकीन्होंतपवनजाइ॥  
 भाँवेसाबरमांगियेकहेंगोरमापतिआइ॥  
 दुरवासाबोलेबिहंसियहबरदीजैमोहिं॥  
 दशसहस्रअंबरीषहीजन्मधरनकहेंहोहिं॥  
 सो० सुनिबोलेभगवान॥अंबरीषममभक्तहै॥  
 सोनधरीतनुअनानदिनकहेंगोसोलेहुतुम॥  
 चौ० जन्महजारअनकेजाई॥ममअवतारएकसमहोई  
 तातेअंबरीषहितलागे॥दशअवतारधरबहमअगरे॥  
 सहजसुभावप्ररातअनुरागी॥नरतनुधर्यादासहितलागी  
 असप्रभुप्ररातपालकोआही॥भजिवेयोगभजियजगजाही  
 अपरदेवअपेवरदेवै॥अपेमरामांगिसुदनेवै॥ ॥  
 रामभक्तिबिनकेवलज्ञाना॥सोऊनिरसध्रमसाधननाना॥  
 जैसेबिनापुरुषकीनारी॥केहितेदुखनिजकहैबिचारी॥  
 मन्दबेलन्दपरेजोपाऊं॥तौलोकौपरलोकनराऊं॥ ॥  
 सोभागिनीकरैक्रमखोरा॥तउताहिबड़ियतिकीघोरा॥  
 गोपीगोपपंडुसुतपाँचा॥कौनकुकर्मकरततिनबाँचा॥ ॥



कृष्णरूपारावगंजय पाई ॥ यज्ञकरवमनिजदेहजराई ॥

दो० भगवतगीतामेंकह्यो अर्जुनलेगोहराय ॥ ॥ ॥

अक्षियोगरुजिनेहीसबदिनबहुतजाइ ॥

भ्रष्टभयेपंथीसरिसकीनपंथमेंबास ॥ ॥

भोरसयेपुनिचलिमिल्योतिमिमोकोममदास ॥

दैवीमाथागुराक्षीमहादुरत्ययतात ॥ ॥ ॥

ममआश्रयहैअसमसोबिनप्रयासतरिजात ॥

इतिश्रीविश्वामसागरसबमतप्रागर ग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामस-  
नेहीकतअम्बरीषकथाबरीनोनामचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

दो० सुमिरामसियसन्तगुरुगणपतिगुरुखदानि ॥

बरगोंजेंमिनकीकथाकहुदृषनीतिबरवानि ॥

चौ० पुनियमराजकह्योमृदुबानी ॥ अम्बरीषकीकथाबरवानी

अबसुनुदूसरकथामुनाऊं ॥ भूयएककेरलयतिनाऊं ॥ ॥

तिनकेतनयभयेचंद्रहांसू ॥ मूलनक्षत्रजन्मभातासू ॥ ॥

कहुदिनबादिविपतिअसिजागी ॥ अशिहांसैधाहीलयभागी

कुन्तलपुरकुन्तलयनरेशा ॥ जेहिनृपसबकरुदेइहमेसा ॥

तस्यदेवानधृष्टबुधिनामा ॥ रहीअइधाहीतेहिधामा ॥ ॥

करिकंकरयालनसुतसेई ॥ तिनकरभेदनजानतकोई ॥ ॥

यहिविधिभयेबरवयष्टकेरे ॥ बुद्धिवानअतिरूपघनरे ॥ ॥

तेहियकदिनब्रह्मभोजप्रकाशा ॥ जुरेअरुषपतहंगेशशिहासा

विषयानामसुतानिजलीन्हें ॥ बैठदेवानचिन्हहिजबोन्हें ॥

यहिकन्याकायाहीबालक ॥ बरीविशेषिकह्योउहालक ॥

अहंसुतापतियहिविधिचाहीं ॥ दुष्टबोलिबनपढ्योताहीं ॥

जाइदुरन्तरबोलेसेई ॥ लेउधाइजोतुमेरहोई ॥ ॥ ॥

पितामातपायेइतआयें ॥ तिनहमकाबधहेतपदाये ॥

है एक गोली सुख हइ गरी ॥ भजिली जे पुनि डारौ मारी ॥ ॥

है गराड की सुत नुख बीचा ॥ पूज्यो मान सशिर करि नीचा ॥

सो० तदाकार है हतन हित दई नयन की सैन ॥

लखि जल्लादन के कठिन मई दया उर ऐन ॥

हरि प्रेरित रघुनाथ थल बोले आधुस माहि ॥

ऐसा सुन्दर बाल यह बधन योग्य है नाहि ॥

छठी आंगुरी कबि है काटिलिहि नि सोइ चीन्ह ॥

शशि हांसे बन छाड़ि कै जाइ देवाने दीन्ह ॥ ॥

सो० चाहि हे स्वगमाल ॥ चहुं दिसि बँधे धरि मृग ॥

आयो इ कमहि पाल ॥ नाम कुलिन्द्र अपुन सैइ ॥

चौ० चन्द्र हास लखिली न उठार्इ ॥ प्रमुदित मन हुं रंक निधि पाई ॥

गाले भवन की न उत साहा ॥ दिहि सिदान जाके जस चाहा ॥ ॥

निज सुत समुक्ति पदावत भयइ ॥ पुनि नृपराज तिलक सोइ यज

लागे करन राज हर पाई ॥ पालहि प्रजहि सुखी सब भाई ॥ ॥

मन कम करे भक्ति हरि केरी ॥ सन्त समागम प्रीति धनेरी ॥ ॥

गृह गृह प्रति हरि गुरागरा हेई ॥ राम नाम सुमिरत सब कोई ॥

जाके इ भक्त भवन चलि आवैं ॥ करि प्रणाम आसन वेठावैं ॥

बोड़ राभांति पूजि सनमानैं ॥ हरि हरि जनमं भेदन आनैं ॥ ॥

एक बार निज कटक बनाई ॥ सुदिन साधन पचदाव जाई ॥ ॥

जहें तहें परी मारु नृप जीति ॥ कोइ कोइ प्राहु मिले भय भीति ॥ ॥

सब सों राम भक्ति कबुलाई ॥ करण कहैं तब देवें जाई ॥ ॥ ॥

यहि प्रकार नृप जीति बसाये ॥ पुनि निज पुर चंदनावति आवे ॥

पितै पूछि प्ररुमानि बड़ाई ॥ नृप कुन्तल पैवैं थिपवाई ॥ ॥

पहुंचे भूत्य भूप दरबारा ॥ दीन देवान खजाने डारा ॥ ॥ ॥

सो० उतरे ताही धाम ॥ हरि वासर तेहि दिन रहै ॥



रामरामसियराम। कहिनिशिकीन्हीनाससबा॥

चौ० भोरभयेजागेसबप्रारी॥ प्राइदेवानकहीकटुबारी॥

काकुलिंदराजातबपायो॥ हाइहाइकरिसतिबितायो॥

बोलिसेवकराजैकोई॥ मराकहीमरिगासोइहोई॥

हमरेनृपकरसुतप्रसभयऊ॥ सबभूपनतेकरुनिजलयऊ॥

इन्हेंजानिजनबोधिपराई॥ सुनिदेवानमनसंशयप्राई॥

सुतकुलिन्दकरहैनकोई॥ भयोकबैसुनिबोलैसोई॥

भूपशिकारगयोएकबारा॥ मिल्योतहांएकसुभाकुमारा॥

प्रानिभवनसुतमानिपदायो॥ दीनराजतिनभक्तिबदायो॥

सुनिदेवानधिसमयपेजा॥ सोइनहोइजेहिमारनभेजा॥

तुरतैगयोमहापतिपासा॥ हाथजोरिप्रसबचनप्रकासा॥

नाथसुताममयईसथानी॥ नृपसुतइकबहस्तबरजानी॥

जोराउरकीप्राप्तापावो॥ महुंदेखिनिजनयननप्रावो॥

सो० सुनिनृपप्रापसुदीन॥ तुरतभवननिजप्रायहू॥

बोलिगहनसुतलीन॥ कहिसिजावबरखोजहित॥

चौ० हैतयारचंदनावतिगयऊ॥ चन्द्रहासलखिआदरदयऊ॥

धरबुद्धिसोइयालकहेखा॥ बहुरिबिचार्योमरराविशेखा॥

दुखददुखप्रहिमंजाधीना॥ खलबसहितविधिककूनकीना॥

ऊपरहितप्रन्तरकुटिलाई॥ बोलाबचननिकटवयगई॥

खरबुभूरितुहरेलसुताभा॥ बहुरिचहतमुहिदेवैकाभा॥

जोइहवांप्रावेमसबस्ता॥ तौकरिदेहुतुम्हेंमसस्ता॥

कहचन्द्रहासकोनविधिप्रावे॥ तुमबिनउहांनकोऊपावे॥

तातेतुमहीजाइरिवाई॥ चीन्हतउहांतुम्हेंसबभाई॥

चामरकुं० जोएककामधामलोगवागयोकहीं॥ जातचं-

द्रहासकोपडाइदीजियोसही॥ देखिवेकिलालसादेखाइ

देइ आइये करही मदन तेजु बेगि मांगिलाइये ॥

चौ० अस कहि रत्न इकरी कीन्हौ ॥ लोभै यह स्नेह कलि सिरीन्हौ ॥

स्नेह क विषम स्नेह प्रहान व्यं त्वया मदन शत्रवे ॥ काय्यी का ॥

र्य न कर्तव्ये ॥ कर्तव्य किल मे प्रियम् ॥ १ ॥

चौ० लेखत चंद्रहास बलि भयऊ ॥ मारत हय कुन्तल पुराण ऊ ॥

भूप बाटिका देखि सोहाई ॥ उतरि नहान्यौ सर सुख पाई ॥ ॥

हरि पूजन करि बसन बिछावा ॥ बाँधि अश्व सो धेने हि ठावा ॥

नाही समय मही पकुमारी ॥ सरिन सहित आई फुल बारी ॥

चम्पक मालिनि नाम सुधन्या ॥ बिषयानाम देवान की कन्या ॥

चंद्रहास को देखि लोभानी ॥ पाग पत्र खोल्यो निज पानी ॥

बाँचि पितहि रबी भीम न माही ॥ मारन योग कुँवर ये नाही ॥ ॥

काजरु पोछि हृगन ते लीन्हौ ॥ बिष जहंत है बिषया लिरि दीन्हौ ॥

शंभु शिवा बारे ते सेई ॥ होहु प्रसन्न मिलैं बरयेई ॥ ॥ ॥

कवि मय मूरति हृदय बसाई ॥ नृपजा सहित भवन निज आई ॥

चंद्रहास जागेल रिब वारा ॥ आँखि प्रदेवान दुवारा ॥ ॥ ॥

भटि मदन करि पाती दीन्हौ ॥ बाँचि बेमि बड़ आदर कीन्हौ ॥

तुरत पुराहित लीन्हो लाई ॥ दई ब्याह विषया सुख पाई ॥ ॥

हरयेत युवनि न मेगल गाये ॥ बिप्र न दान विविधि विधि पाये ॥

बाँजैं वाजन राग मिलवैं ॥ नाचैं नटी चटपटी लावैं ॥ ॥ ॥

दुसरे दिवस देउान मिधावा ॥ वेगवन्त निज पुरका आवा ॥ ॥

भाटन कीरनि बिचि सुनाऊ ॥ अवरग सुनत जनु लागत घाऊ ॥

भयन जाइ मुन दूलह देख्यो ॥ रागरङ्ग बहु भांति परे देख्यो ॥ ॥

जेरु अङ्ग मुन बोलि रिसाना ॥ किहे कहाय शत बरवाना ॥ ॥

बाँचि पत्र शिर पीटन लागी ॥ लिरव्यो कहाँ मी मन्द अभागी ॥

जुनि मारन हित रचि उपवा ॥ सुता प्रनाथ रहे मोहि भावा ॥



चन्द्रहासयद्यपि यगपरेऊ ॥ तद्यपि दुष्टदयानहिं करेऊ ॥ ॥

हो० दुष्टनछाडत दुष्टताकै सो होइ प्रधीन ॥

ज्यौं जलको मल में चले जे कवक गति लीन ॥

चौ० पुत्रै नृपदरवार पदायो ॥ आयु उभे जल्ना दबुलायो ॥ ॥

बोला जाउ शक्ति मठ होऊ ॥ डार्यो मारि जो आवै कोऊ ॥ ॥

तब सब चंद्रहास ते बोला ॥ आवहु पूजि देविकुल मेला ॥

सुनत चले करतल धरि थारा ॥ तेही समय कुन्तल पमुवारा ॥

बोला गुरुने शीशनवाई ॥ होइ सुगति जेहि कहौ उपाई ॥ ॥

कह गाल बजरथि सिरव सुनि लीजै ॥ राजसुता चन्द्रहास दीजै ॥

सब सोने हंगेहत जि राई ॥ सीता पति सुमिरा बन जाई ॥ ॥

सुनि नृप कहा प्रवे को उजावे ॥ चन्द्रहास मम पास लै आवै ॥

मदन बिचारि तुरत उरि धायौ ॥ पूजल जात पन्थ मपायौ ॥ ॥

बोला चलौ धूप बोलवाया ॥ देई राजकाज निज प्राया ॥ ॥

शिष्या हं० देवी पूजै हों जावो ॥ राजा पै कै से आवो ॥ चरि मी-

कोलाचोजू ॥ राजा तीरा जावोजू ॥

चौ० देवी पूजै मदन सिधायै ॥ चन्द्रहास राजा दिग प्राये ॥

देखत व्याहि सुता निज हयऊ ॥ राजतिलक करि बन कागयऊ

इहो मदन गे शक्ति निकेता ॥ दुष्टन मारी खड्ग सचेता ॥ ॥

धरत पुराड बिलग करि दीन्हें ॥ असफल खल सङ्ग तिके कीन्हें

हो० दुष्ट संग सित जो करे ताहू को दुख होइ ॥

देह जीवर वेरिया घरी सिर सना मति जोइ ॥

देखि बहाल काहु कही धृष्ट बुद्धि सो जाय ॥

आय निरव सुत सिला सिर पर कि मरा कहि हाय ॥

जो जनका प्रनमल तै के सोइ जाय सठ खीस ॥

ज्यौं रजते मारी रविहि उलाटे परे निज ग्रीस ॥

चौ० चन्द्रहाससुनियहसबहाला॥ निर्वेरीसमसत्तरुपाला  
 आयोचलिदेवीकेधामा॥ कीनशक्तिलखिबृत्त्यप्रणामा॥  
 बोलीयेदोउशत्रुतुहारे॥ महीक्रोधकरिआजुसंहारि॥ ॥  
 मागहुवरजोतुमैसोहाई॥ देहुमातुफिरिइन्हेंजिपाई॥  
 छुयेछुं० तसकरकेतुकधर्मदुष्टकेकुतगमखाना॥ किर-  
 पिनिकेकुतदानमृदुकेकुतविज्ञाना॥ कसवीकेकुतलाज  
 शान्तिकुतनरकामिनके॥ विसनीकेकुतद्रव्यधामकुतस्व-  
 लभामिनके॥ हिंसककेकुतदयाहिलकपटीकेकुतमित्रस-  
 ग॥ कहैरघुनाथसनाधइमिहरिजनकेकुतशत्रुजग॥  
 दो० दुर्जनतजैनुष्टतासज्जनजैनेहेत॥

कज्जलतजैनश्यामतामेतीतजैनरेखत॥

चौ० सुनिजियायेहीरोउदीन्हों॥ सत्तसतायेकरफलचोन्हों॥  
 कीनराजजलपङ्कजनार्इ॥ दीनिभक्तिभुवमेंकैलाई॥ ॥  
 हयनजैनेवृषद्वजलजोर॥ यथाभूपतसप्रजाप्रचारै॥ ॥  
 जोयहकथासुनैवाकहई॥ धनवृद्धहोयहरखमेंरहई॥ ॥  
 फलजैमिनमेंबहुविधिराखा॥ तातेहोंसंक्षेपेभाखा॥ ॥  
 देखौहरिजनतेकरिद्रोहा॥ आपुइदुखपायोबसमोहा॥  
 असिहरिभक्तिमुखदकुलत्यागी॥ तनुधरिकरैसोईबड़भागी  
 दो० यस्यनविद्यादानतपजपनशीलगुराधर्म॥

तेमनुष्यमहिभारहितप्रकटेनाहकब्रह्म॥

इति श्री विश्रामसागरसबमतप्रणारग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासराम-  
 सनेहीकृतचन्द्रहासप्रारव्यानवरीनानामएकवत्वारिंशोऽध्यायः ३१॥

दो० सुमिररामसियसत्तगुरगशाधनिरासुखदानि॥

कहौंउत्तराअईमतककुधर्मोत्तरजानि॥ ॥

दो० पुनिरखियुतदूतनतेकहेऊ॥ चंद्रहासगुहासुनिगुमलहेऊ॥



और सुनौयक भयो सुवारा ॥ नाम निरग जानत संसारा ॥ ॥  
 चक्रवती नृपनीति निधाना ॥ दानै धर्म प्रनेक विधाना ॥ ॥  
 हरिबुधान गुरुरजत मदाई ॥ जलजलूम गुहिवसन बोदाई ॥  
 सुरभी सहस विप्र कहें देवै ॥ तेह पाछे जल प्रनहिं सेवै ॥ ॥  
 तेहि पुर मुपच भक्त य कहई ॥ देवक नाम ताहि सब कहई ॥  
 सुजत जान हरि दाया कीन्हो ॥ काम धेनु तेहि का प्रभु दीन्हो ॥  
 पुरासी विप्र न लखि याई ॥ प्राइ भूप ते बात चलाई ॥ ॥  
 मुजंगा प्रयात छुं ॥ महाराज है डोम के एक गाई ॥ नहीं दूसरी  
 तास मा भूल खाई ॥ सुनी स्वर्ग के साहि है धेनु रेसी ॥ न जानी सु  
 यचने लही भांति कैसी ॥ भली भांति ते जोइ से दान देवै ॥ मखे-  
 कोटि हू ते परे पुन्य लेवै ॥ सो ताते गऊ प्राणि विप्राहि दीजे ॥  
 अमित्यु न्य को फल इसी द्यौ सलीजै ॥ मही पाल मुने हिये लो-  
 म कीन्हो ॥ कही मोल लावे प्रभी दाम दीन्हो ॥ गये विप्र बोले वि-  
 कत धेनु तेरी ॥ जुबै चों कहा हों नहीं गाइ मरी ॥ प्रभु की प्रह भोग  
 पे को लखावै ॥ बचै जौ निज उन्महूं ताहि पावै ॥ भयो को धवि प्रे  
 गयो भूप पारी ॥ कह्यो नाथ सूप च करै मान मारी ॥ गऊ को दुई  
 क्षीर घृत प्रापुखावै ॥ तुम्हें लेत जानी प्रभु की बतवै ॥ पशु पशु  
 द्रनारी सरंढोल जावत बिना दग डरीन्हें नहीं रीक आवत ॥  
 हो ॥ कह मही पविप्र हु मुनौ सूप चहे हरि दास ॥  
 ताहि सतवै सोइ जो चहै निरै को वास ॥ ॥  
 चौ ॥ तते हों न सतावब साधू ॥ पुराय करत होई प्रपराधू ॥  
 बोलै विप्र बहुरि हरयाता ॥ स्वारथ रत प्रधर्म की बाता ॥ ॥  
 मुनहु भूप यहै चराडाला ॥ कहा मयी पहिरे गरमाला ॥ ॥  
 स्वान खाल गंगा जल होई ॥ ताहि पविप्र कहै नहिं कोई ॥ ॥  
 क्षीर धरै मद भाजन माहीं ॥ होत कबहुं सो पावन नाहीं ॥ ॥



तैसेभक्ति युद्धकी राजा ॥ ताहि सताये कहुन प्रकजा ॥ ॥  
 मानहुं पितरविप्रसुरगई ॥ हात महाफलजिनसेवकाई ॥  
 यहि विधि द्विजन कहा समुकाई ॥ सुनि नृपके मनहु रमति आई ॥  
 बुद्धिवान कैसे होइ कोई ॥ कहे सुने ले मति प्रम होई ॥ ॥ ॥  
 तब नृपसेवक ते प्रनमावा ॥ लावहु कोरि धेनु करि भावा ॥  
 आय सुयाइ तुरत जन बाये ॥ वरदस सुरभि भक्त की ल्याये ॥  
 भक्त दोह लखि श्रीपति प्राप्ता ॥ द्विज मुख नृप देवायो आवा ॥  
 निज प्रपराध प्रभुजात वराई ॥ भक्त दोष सो नहिं सहि जाई ॥  
 सोइ सुरभी प्रहम जह जारा ॥ दुई विप्र कहं एके वारा ॥ ॥  
 मुहित मही सुरलयायो धावा ॥ फिरि आई सुरभी तिहि रामा ॥  
 दूजे दिन नृपदान जो कीन्हों ॥ सहस संग ताहू को दीन्हों ॥  
 हांकि विप्र निज भवन सिधावा ॥ हेरत फिरत प्रथम जेहि पावा ॥  
 बोला प्रथम योरियह गाई ॥ दूसर कहै प्राजुं में पाई ॥ ॥ ॥  
 भगवत योगे देउ नृपपासा ॥ कैथित है प्रसव चन प्रकासा ॥  
 रे नृपतू प्रति है प्रन्याई ॥ धेनु देसि फिरि लेसि फिराई ॥ ॥  
 बोलै भूप को धजनि कीजै ॥ सहस धेनु यहि बदले लीजै ॥ ॥  
 बोला प्रथम विप्र सुनुराई ॥ मैं तो लेब यहै निजु गाई ॥ ॥ ॥  
 अपर देउ तुम को टिस साजा ॥ तदपि हेतु नहिं यहि सम राजा ॥  
 दूसर कह्यो मोहिं का कहई ॥ दै कै दान लीन प्रवचहई ॥ ॥  
 दुविधा परि नृप शोच बदावा ॥ मूढ़ हलावत वचन न प्रावा ॥  
 शीस तोर गिरिगिट सम कांपा ॥ गिरिगिट होउ हमारे शापा ॥  
 कह नृप वचन प्रमोघ तुहारा ॥ होई किमि उद्धार हमारा ॥  
 करुणा करि सो देउ बताई ॥ सुनि विनती बोले द्विज राई ॥  
 दापर युग यदु बंस मफारा ॥ रुशा चन्द्र लेहें प्रवतारा ॥ ॥  
 सुन नृपति न के चरणा सनेहा ॥ कूटीत बगिरिगिट की देहा ॥



अरु कहि द्विजमिजमंदिरगयऊ ॥ कालपाइयमगारागहिलयऊ  
 लेंगेदूतधर्महरबारा ॥ पापपुरायकाकीनबिचारा ॥ ॥ ॥  
 दुरायनेपापभयोअधीकाई ॥ प्रथमेंकहाभुगितिहोराई  
 बोलिभूषणदुतजोहोई ॥ प्रथमेंसोहभोगावोसोई ॥ ॥ ॥  
 इतनाकहतनलागीवारा ॥ गिरगीटकातनुधर्योभुवारा ॥  
 हारावसीनिकटडूककूपा ॥ लाग्योरहनतहांनरभूपा ॥ ॥  
 दिव्यवरधरातजबचलिगयऊ ॥ तबअवताररुशाकसभयऊ  
 बालचरितकरकेसैमारी ॥ बसेआइद्वारकामभारी ॥ ॥  
 महँदूकरिजप्रभुयदुनसमेता ॥ अयेवनशिकारकेहेता ॥  
 लागिरासबभयेदुरवारी ॥ हँदहुजलअसकह्योमुरारी  
 खोजकरतपावोसोडूकूपा ॥ किरकिलदेहधरेजहँभूपा ॥  
 लागेसबकादनयदुबीरा ॥ तबहुननिकसेअधमशरीरा  
 बिप्रआपअरुहरिजनकोपा ॥ निकसेकिमिपापनतेतोपा  
 यदुनआइतबहरितेकहेऊ ॥ सुनिअयेजहँनरनृपहँऊ  
 वामचरणाअसपार्योजबहीं ॥ दिव्यस्वरूपभयोनृपतबहीं  
 देरिजचरितबोलेयदुराई ॥ कोतुमअहोकह्योसोगाई ॥ ॥  
 कहनृपमेंहोंनिरगनेरशा ॥ जाकरदानबिदितसबदेशा ॥  
 महिराजजलकननमउडजाना ॥ गनिनजातजिमितिमिमपाना  
 कहहरिकीन्होंदानअपारा ॥ कौनहेतगिरगिटतनुधारा ॥  
 तबनृपसबवृत्तान्तसुनावो ॥ जेहिकारणागिरगिटतनुपावो  
 दो० दानबिभूषणलोकमेंदानस्वर्गसोपान॥  
 दानदलेदुरखदोवनहिंदानसरिसहितुआन॥  
 चौ० सुनिबोलगिरिधरकरिछोहा ॥ अबजनिकस्योभक्ततेद्रोहा  
 ममजनमोहिप्राणतेप्यारे ॥ सदारहतजेशरराहमारे ॥ ॥  
 करहुंसदांमैतिनकीरक्षा ॥ संगसंगफिरौंयथागोबक्षा ॥

ममजनदिशि तिरेछलखेकोऊ ॥ लेहुं निकारिता सुदृगदौऊ ॥  
 जोममजनहि चलावै हाथा ॥ डारै काटिता सुकरमाथा ॥ ॥  
 जोममजनते बैरबदावै ॥ देहुं मिटाइ रहन नहि पावै ॥ ॥ ॥  
 पारवमास संवत वैयाँचा ॥ मद्धि बिनाश बचन ममसाँचा ॥  
 तेहियाहे यमदुखचौरासी ॥ खरकूकरसूकरतनुपासी ॥ ॥  
 जोममजनकी सेवाकरई ॥ मानहुं ममसेवा प्रनुसरई ॥ ॥  
 यद्यपि हौं स्वतंत्र सबभाँती ॥ तदपिरहत जनबसा दिनराती ॥  
 भक्तहमारे बांधवप्यारे ॥ हमभक्तनके बंधु पियारे ॥ ॥ ॥  
 मेरे भक्तगुरु हैं मेरे ॥ होंगुरु उनकरवै ममचेरे ॥ ॥ ॥  
 जहंममभक्त सकल मुखतहवौ ॥ गंगादि कतीरय सबजहवौ ॥  
 मेरे भक्त लगत जेहि प्यारे ॥ तेबल्लभ हैं परमहमारे ॥ ॥ ॥  
 बिषयि भक्त होइ जो कोई ॥ ग्रहे पवित्रत बहुजन सोई ॥  
 जिमि माशिशुहि सँवारिसभीती ॥ देत दिदोना तिमिमरीती ॥  
 भक्त दोष जो मनमें लावै ॥ सो नरनीच नरै दुख पावै ॥ ॥  
 कीट पतंग प्रादि जो कोई ॥ मुक्ति क्षेत्र सबकी गति होई ॥  
 बैशो द्रोही सुगति न पावै ॥ प्रागमशास्त्र बचन प्रसगावै ॥  
 स्त्रोत्र मुक्ति कीट पतंगारा ॥ सर्वथा मिह देहि ना ॥ मुक्ति क्षेत्र  
 त्रिमिदं प्राप्य वैशाख द्वे विंशति विना ॥ १ ॥  
 चौ० भक्तनकी निन्दा जो करई ॥ सो नरप्रगट कोल लखि परई ॥  
 निन्दा विद्या उदर न भरई ॥ साधुनको पावन सित करई ॥ ॥  
 जो वैशाख की करै बड़ाई ॥ निश्चय सो भवनिधितरि जाई ॥  
 वैशाख परम धर्म मै जानौ ॥ परम धर्म मय वैशो मानौ ॥ ॥  
 वैशाख परमाराधन होरे ॥ परमशस्त्र वैशाख सब करै ॥ ॥ ॥  
 वैशाख संगति करै जो भोजन ॥ विमल होइ कलिमल ते सो जन ॥  
 वैशाख कर चरणामृत पावै ॥ कीटि जन्म कर पावन शावै ॥



सन्त उद्धिष्ट सहित जोरवाही ॥ ब्रह्महत्यादियापन शिजाही ॥  
 सुयच होइ मम भक्तिहि करई ॥ सोइ उत म सोइ भवनि धितरई ॥  
 जाको हीजे ता सो लीजे ॥ मोहि सतता की पुजन कीजे ॥ ॥  
 भक्तिहीन जो होइ कुलीना ॥ पराडित जपत पज्ञान प्रवीना ॥  
 बाके सब गुण जानहु ऐसे ॥ मृतक देह के मगडन जैसे ॥ ॥

हो ॥ विरचत सन्त जो प्रवनि पत्नीर पयावलहेत ॥  
 देखि डरे ज जगत को निन्हें परम सुख देत ॥

सो ॥ संसृत सिन्धु प्रपार ॥ तामांध बूडत जीव सब ॥  
 तिन्हें उतारन हार ॥ वेदित सन्त स्वरूप सम ॥

सो ॥ भयो सन्त सन्त को जानी ॥ सन्त सद् भयो करि पानो ॥ ॥  
 हेनृप में ग्रह वेद नही ॥ मेही हीं सन्तन के माही ॥ ॥ ॥  
 काहुइ अमृतनु धरि उडारी ॥ काहुइ सन्त रूप देखै तारी ॥ ॥  
 सन्तान के चरण कीरे नृ ॥ मुक्ति मुक्ति दायक सुरधेनू ॥ ॥  
 भक्त कहै सोई मैं करहु ॥ सन्तान के हित नरतन धरहु ॥ ॥ ॥  
 भक्त मोहि हैं परम पिपारे ॥ सुनि नरेश सब बचन उचारे ॥ ॥  
 प्रभु तुम जोहि प्रपन जन कहउ ॥ जिन के विष सखि मन निधि ॥  
 तिन के लक्षरा मोहि सुनायो ॥ जिन की महिमा निज मुखवायो ॥  
 है प्रसन्न बोले प्रभु तत् क्षरा ॥ सुनहु भूप सन्तान के लक्षरा ॥  
 परम रूपाल शोहन हिं जानी ॥ हमावन्त अकसत्य धरवाने ॥  
 निंदा रहित दूह उर समता ॥ पर उपकारी सुहृद नम मता ॥ ॥  
 अथिका मबुद्धि थिर रहई ॥ इंद्री जीतिन सता रहई ॥ ॥ ॥  
 अल्प प्रसन एकान्त निवासी ॥ सदाचार संग्रह जमें बासी ॥  
 सीतल चित युत विरति विचारा ॥ धर्म सहित निज रहित बिकरा ॥  
 दयावन्त बट उर सी जीता ॥ मोहमान अय कान अतीता ॥ ॥  
 ज्ञानमान प्रद परम प्रवीना ॥ पर सुख सुख लखि पर दुख दीना ॥



मित्रमित्रहितमित्रहिखोंवे॥ तेहिप्रकार नितमोको ध्यावे॥  
 चारिप्रकारमुक्तिनहिंलेही॥ सबतजिममसेवाभनदेही॥  
 दृढविश्वासनलोभनरोषा॥ यथालाभतामंसलोषा॥  
 जोकोउचलिशरणागतप्रवे॥ ज्योंत्योंकरितेहिज्ञानउपावे॥  
 ग्यनवज्रजातिप्रशनुप्रचाही॥ आसनत्रासनसहगुणग्राही॥  
 प्रेमनेसहृदशान्तिसरूपा॥ समचित्तसुखदुखनिरधनभूषा॥  
 दृष्टिपूतकरिमहियगुधरही॥ बस्त्रपूतजलपानहिंकरही॥  
 सत्यपूतकरिवचनउचारे॥ मनसिपूतकरिकारजसारे॥  
 यद्यपिबेदरूपमयगाये॥ बरणाश्रमकेधर्मदृढाये॥  
 सोउशुभाशुभतेसबतजही॥ कायवचनभनमोकहंभजही॥  
 ममअधीनसदाहीरहई॥ साधनकोबलभूलिनगहई॥  
 मोहीकोकरनाकरिमाने॥ सपनेहुंउरुप्रापानहिंअने॥

दो० दैरेजहंजबसन्तमिलिसातपांचस्कठौरा॥

तहंममबातचलावहीकरेनचरचाओर॥

चौ० कोउकहदशअवतारपुराणी॥ धरेसकलसुन्दरसुरप्रकारी॥  
 मोनपरहकमउपहिचानी॥ नरहरिवाचनभूगुपतिजानी॥  
 रामचंद्रनहनहल्लेनि॥ नवययोधनिकलइहीने॥

दशनांहेअवतारविशाला॥ मनमोहनरघुपतिनंदलाला॥

इतपुगलकोवडसुखरामी॥ चोलेनवरधुनाथउपासी॥

दो० एनहमारेबडेहैंलघुतुहारेकान्ह॥

कैहिबिधिजानैजाइनिजप्रभुपकैबखान॥

प्रथमसोमकुलकृशांतवरा॥ रामतेजप्रकाश॥

मानुष्यंश्रीरामजीरबिसबाहुतिपास॥

जन्मसमयश्रीरामकेभयो॥ प्रह्लादप्रानन्द॥

तबबसुदेवदुराडकैडारिगये॥ गृहनन्द॥



रामहमारेभूषहैं रयेततुम्हरेलाल ॥ ॥ ॥  
 यद्युपतिसुतनाथेयुषमरामअस्थिअकृताल॥  
 बकीनमोहीदेतवियअसुरनमोहीकोइ॥  
 मातुनमोहीबांधतीमोहीयुवतिनलोइ॥  
 युवतिनकीयहरीतिपुरुषमनोहरदेखिकै॥  
 करहिंकामबसप्रीतिबहुरिबजाईबांसुरी॥  
 मोहनहमारेरामहैंकछूनकरतबकीन॥ ॥  
 देवदनुजमुनिनागनरमोहिविलोकतलीन॥  
 जोकहोंकैकैदीनवनतासुभेदघटजात॥  
 कह्योसंहितामेंसुनौएकसमयसुरचात॥  
 बचनबन्धकरिमातुतेकह्योचतुर्दशवर्ष॥  
 राजसमयमोहिदिह्योवनसोइकीन्ह्योतजिह्वे॥  
 कंसहिमार्योहृत्मतबसोनरपतिदुरवदाय॥  
 रावराबिशचुरनरअसुरताहिनध्योरघुराय॥  
 वेदवतीदशसीसतेकह्योहैंमेंतोहिं॥ ॥  
 तबपुरंपैदिविनाशिहैंहेतुगईतेहिंसंहिं॥  
 कृष्णदेवायेमातुपितुनिजस्कासबलोग॥  
 रामनेवाजेदेवमुनिमनुजअज्ञतजिभोग॥  
 प्रथमखबरिलगवाइकेकूबरदीनसुधामि॥  
 चरगपरसियावनकरीरघुपतिगोतमनामि॥  
 जगसिन्धुकेसमरमाग्येभानिगोपाल॥ ॥  
 पीदिनदीन्हारराबियेकाहुइरामकृपाल॥  
 चेरीकीन्हीकृष्णनवपरभामिनिर्तंजीति॥  
 रामनबोलेभूठकछुभूलिनचलेयनीति॥  
 ब्रजपतिविधिवृषभेयकरहस्योमानयवधेश

सो०

हो०

विसुप्रगभृगुनापहृकीन्हेंसुबसविशेष॥  
 कृष्णागोवर्धन करधर्योयहसेवककोताम॥  
 सोइकारजसबकपिनतेकरवायोश्रीराम॥  
 कृष्णापीनहायानलहिनाय्यो कालीनाग॥  
 रामसेतुकरिअरिसमरअमितनिवारनाग॥  
 विप्रसुदामामित्रतेतंदुललैधनदीन॥ ॥  
 रामकपीशविभीषणाहिंदुरदिनमेंनृपकीन॥  
 सबसहीन्ह्योगोपिकनतदपितज्योयदुराउ॥  
 जराभीयेहनुमानकेअसरधुबीरसुमाउ॥  
 कृष्णाशरराउडुवभयेपुनिपवयेतपहेत॥  
 तिन्हैहमारेरामजीराजपरमपदहेत॥ ॥  
 दशसहस्रदशशैबरयकीनिअवधबसिराज॥  
 फिरियादीबकस्वानद्वैभेइततोदिशिसमाज॥  
 अहिमहिअंशसुअनुजसियरीन्ह्योजगदितन्यापि॥  
 आपुस्वपुरगेजानसदिकृष्णसकृतसरलागि॥

चौ०असंहैरामहमारेस्वामी॥अखिलरूपकेकाररानामी॥  
 अपरकहैसिद्धान्तहमारा॥पूराहैंसकलैअवतारा॥ ॥ ॥  
 समभक्तमेंसबएकैअहई॥रूपधरेचौबिसश्रुतिकहंई॥  
 हैंसबएककनकजिमियद्यपि॥हेतनरासिरतीसमतद्यपि॥  
 बोलेअपरसकलश्रुतिसारा॥रामनामहैइष्टहमारा॥ ॥ ॥  
 सुखदायकदुखपातकहरता॥सबइष्टनकोपूराकरता॥  
 अहमवहाबिनरामाहोई॥राबिनरघुपतिकहंनकोई॥ ॥  
 माबिनमहादेवहाकहिये॥रेफविन्दुबिनप्रणावतलहिये॥  
 कृष्णारहितराकसनकहोवै॥महावीरबिनमानरहावै॥  
 राबिनराधाधारहिजावै॥अबिनसीतासीतकहावै॥



दुर्गारमासारदाभयों॥ गवेरिगरोश आदिहरिगयों॥ ॥  
 करिविवारिदेखेबुधकोई॥ स्वयंमंचनमहं प्रहारदाई॥ ॥  
 जीवयथालघुंतहिबलजाने॥ दिवसरिसफलदेतजोभागे॥  
 जेहिजानेबिनकहुनजाने॥ पशुसमानतहिबेदबखाने॥  
 नामविवसंहरूपसदाही॥ रूपनामबिनआवतनाही॥ ॥  
 विनानामपुरधामनपावे॥ जानतनामकहतमिलिजावे॥  
 अगुनसगुनयुगब्रह्मकहावे॥ सुखप्रदपरितामेनहिपावे॥

दे० ब्रह्मसाध्यापकसकलघटआनन्दप्रमलप्रखराइ॥  
 तदापित्रशितजगजीवसबसहतविविधविधिदराइ॥  
 प्रीतिसहितजोनामकहं देराखिविश्वास॥  
 यहाँसदासुखमेंरहै॥ प्रनारायणपुरवास॥ ॥  
 निरगुनतेबड़नामयशसेमोंकह्योबुभाइ॥  
 अवसरगुनतेकहतहोसुनोसुजनमनलाइ॥

चौ० रामरूपधरिप्रसुरसंहार॥ सुनरमुनिसबकियेसुखारि  
 नामजपततेसुखीसदाही॥ औरनकेदुखदेखिमिदाही॥  
 कृष्णकुनपधरिगिरिकरिलीन्हें॥ ब्रजवासिनकीसाकीन्हें॥  
 नामजपतअहिपतिमहिलीन्हें॥ भुवनचारिदशरजसबतीन्हें॥  
 रामकासप्ररिकरधनुभंजा॥ भृगुपतिमहितनृपनमदगंजा॥  
 नामरसिकनृगामसमसंसार॥ तोरहिकनिरिसिआइविचार॥  
 कृष्णएकदावानस्तपीन्हा॥ बालबालसबबाहेरकीन्हा॥  
 नामसुमिरिशिवविषकियोपाना॥ जडरूजीवजेहिसबजगजावा॥  
 रामगीधसेवरीमुनिनारी॥ हेप्रसन्नभवभयतेतारी॥ ॥ ॥  
 नामसुमिरिसदतरेप्रपारा॥ प्रजहूंजपतहोतभवपारा॥  
 दे० रामसुकंदविभीषनेदीन्हिराजिनिजकाज॥  
 नामसुमिरिसज्जनतजहिबातसरिसज्जसाज॥

रामसिन्धुभासेतुकरिभयेवारलै सैन ॥ ॥

नाममुमिरिहनुमानगेहृदिपियोधदजै ॥

रामरावणाहिरगानिधनिकीन्हिराजिबसिधास ॥

नामजपतयुतमोहदलहोतबिनयश्रमनास ॥

रामकामकरिअनघडकअवधजातलैधाम ॥

नामउधारततिहुभुवनजोसुमिरैसहसाम ॥

॥ हनुमत्संहितायां हनुमानबचनश्रीरायप्रतिश्रेयक ॥

रामत्वतोधिकं नामं इति मे निश्चितं मतिः ॥

त्वमेकं तारते यो ध्यानाच्चाच भुवनत्रयं ॥ ॥

चौ० असहै इह हमारमहाना ॥ सिरधरिसबहिनकीनप्रमाना

जोअबूकतेबाहबदावै ॥ जाननहारमहासुरवपावै ॥ ॥ ॥

एककहैसबहैअभिरामा ॥ नामरूपअरुलीलाधामा ॥ ॥

यहिप्रकारकीबातेंकरहीं ॥ भेरहितअपुसमहैलरहीं ॥

सोबातेंमाकहैअलिमावै ॥ सुनौजायमैतिनकेदामै ॥ ॥

जैसेबिपुलसुतनकीवानी ॥ सुनिहरयतपितुनिजसबजानी

तैसेमैसुनिसुनिहरयाऊं ॥ जाइजहांजहंतहंचलिजाऊं

दो० प्रेमप्रशंसाबिनययुतबेगबचनयेअहिं ॥

तेहितेहोतअनन्दचुरफुरउरलागतनाहिं ॥

भक्तनकेलक्षणासकलसुरबदसुनायेतोहिं ॥

जिनकरिकेपक्षीसरिसनिजबसकीन्हिनियोहिं ॥

चौ० सुनिनेशअतिशेसुरवपायो ॥ संतनपदयुक्तिशिरनायो

देवदूततेहिअवसरबीरा ॥ लैबिषाअप्रायेनपतीरा ॥ ॥ ॥

कृपाचरणाशिरनाइनेशा ॥ चदिबिष्मनगवन्योसुरदेशा ॥

गीतिकाकुं० सुरलाकगवन्योभूपनगतमकूपकेदुखना

शेह ॥ लखिदेवबराधिअसूनप्रभुतबयदुनतेपरकाशेहू ॥



करिदानबसअभिमानकेनृपद्रोहहरिजनसेदयोतिहिण-  
 यपायोतापहिजकीशापदरशननेगयो॥असजानिमनअ-  
 नुमानिकबहूसंतकोनसताइयो॥बनिपरेकीजंशेवनहिंव-  
 निपरेतौशिरनाइये॥यहिभांतिकेसुनिबचनयमके-  
 गगानप्रतिमुरवपायहू॥शिरनाइदराइउठाइतवस-  
 बभृत्युलोकसिधायहू॥

दो० संतनकोउतकर्मजोकहैसुनेनितनम॥॥

बदैभावभक्तनविषेकहरघुनायमुझम॥

इति श्री विश्वामसागरसबमतअगारग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदसरा-  
 मसनेहीरुतनृगप्रसंगसंतलहरावर्गानोनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगतापविरासुखदानि॥

धर्मशास्त्रमतकहौंकछुमनुअस्मृतिजुबवानि॥

चौ० सुनिसंतनकीबिपुलबड़ाई॥पुनिसौनकबोलेशिरनाई  
 नाथकहौअसिकौनउपाई॥जोकरिजीवसुखीहोइजाई॥

कौनदेवकेसुमिरनजूटे॥जोहितेपितरनकतेछूटे॥॥॥

कौनदेवहैसबफलदानी॥सुनतसूतबोलेमृदुवानी॥

सौनकसुनीसत्यमेहिपाही॥रामसमानअनसुरनाही

जिनकेसुमिरातेसुरसार॥बिनप्रयासहीहोतसुखारे॥

जिमितरुमूलनिखेचनमाही॥डारपातफलसबहरिप्राही

असजियजानिसकलनिधिदासा॥रामहिभजहिंतजहिसबअशा

तीनिप्रकारभजनहरिकेरा॥व्याससुवनसुकरदेवनिवेरा॥

निष्कामीजो रामेभ्यावे॥तासुबिवसप्रभुअपुनहावे॥॥॥

मोक्षकामकरिकोईसंबे॥ताकोराममोक्षपददेवे॥॥॥

सर्वकामकरिसंबेदासा॥ताकीहरिपूजहिंसबअसा॥

ऐसप्रभुकशरंगोअर्पाई॥जासुकृपाअनुकृपाभलाई॥



अपर देवसें वे करि दुकवा ॥ होइ प्रसन्न देहि जग सुकवा ॥  
 जैसे बाधि धवन न कोई ॥ कोपि बिनाश ता सु करे सोई ॥ ॥  
 तति नारायण सम देवा ॥ नहिं तिहु काल सत्य यह भेवा ॥  
 हो ॥ सर्व शास्त्र अवलोकिके पुनि स्वीन विचार ॥

ध्यान योग मंगल करन हेरा मै तत सार ॥

चौ० जेनि जपित रहै निस्तार ॥ तो हीर भक्ति करे बिस्तार ॥  
 जैसे क्वास मही पतितारे ॥ सुनि सोन क पुनि बचन उचारे ॥  
 हे प्रभु केहि प्रकार न रहती ॥ सोरे पितर कहैं बिस्तारी ॥ ॥  
 केहि बिधि भक्ति करे हरि केरी ॥ बोले सुत मुनो मनु फेरी ॥  
 शम्बर पुर एक वस्ती कहै ऊ ॥ क्वास नाम तामें नृप रहे ऊ ॥ ॥  
 अन्त समय यम गगा चलि प्राये ॥ मारि बाधि निज लोक सिधये ॥  
 देखि भानु सुत लेखालीन्हा ॥ पुनि दूत न कहैं प्राय सुदीन्हा ॥  
 डोरों जाय न के नृप एहू ॥ चौदह लख वर दुरव देहू ॥ ॥  
 प्राय सुपाइ न के दिग लाये ॥ पीवर क्त जा में कमि छाये ॥  
 चाकल योइ स यो जन केरा ॥ सोरा यो जन गहिर निवेरा ॥  
 बरे जीव बूड़े उत्तराहीं ॥ एको पन सुपास जहें नाहीं ॥ ॥  
 तरे कीदत न को बँहाला ॥ जारहिं मध्य अग्नि की ज्वाला ॥  
 ऊपर यम गगा सारहिं नाना ॥ देखि त्राशन नृप क्वास डेराना ॥  
 ताही न के मा कहै नृप केरे ॥ पुरि पारहें एको तरि हेरे ॥ ॥ ॥  
 भूय हिल रिरोदन तिन दाना ॥ सुनि मही पत्र सब वचन वखाना ॥  
 कोतुम हो जोह महिं निहारी ॥ लोग हुरोदन करन पुकारी ॥  
 हे नृप हम हैं पितर तुहारे ॥ तुम हो पुत्र हमारे प्यारे ॥ ॥  
 बोले भूप बहुरि तिन पाहीं ॥ कहि परे उ न के के माहीं ॥ ॥  
 कीतुम दान कबहु नहिं कीन्हा ॥ कीतुम विप्र न कहें दुख दीन्हा ॥  
 की सन्तहि बोलेहु कटु बानी ॥ बोले बहुरि पितर सुत जानी ॥



दीन्हपुत्रसज्जादिकदानी ॥ गजरत्नबाजपालकीनानी ॥  
 पूजेदेवविपुलबहुभांती ॥ विप्रंजवायेदिनप्ररुगती ॥ ॥  
 येसबकीन्हदविपरग्रानी ॥ ततिभईपुरायकीहानी ॥ ॥  
 जीवजाविबहुकीन्हप्रहारा ॥ ततिपावानकप्रपारा ॥ ॥  
 जीवबधेकरपालकभारी ॥ मादनकविकेबिदधुतिवारी ॥  
 पुनिगुरुतेहरिमंत्रनलीन्हा ॥ ततिनकबासयमदीन्हा ॥  
 जेहिप्रभुनखसिखदेहसंवारी ॥ जहेनहंरक्षाकीन्हिहमांरी ॥  
 तासुभजनहमकीन्हनपूली ॥ कहिनपुत्रप्रधोमुखभूली ॥  
 अवलगरहीतुझारीआसा ॥ कबहुकहेहैहरिकेदासा ॥  
 तबहुमारहेईनिस्तारी ॥ बसबजाइसुरलोकमकारा ॥ ॥  
 सातुमहुहरिभक्तिनकीन्ह्यौं ॥ आइनिरेमहंबासालीन्ह्यौं  
 कहचपजोअबहुदुनपावहु ॥ तौतुमकासुरलोकपरावहु ॥  
 हैहरिभक्तभजहुभगवानहिं ॥ जतिपावहुपदनिर्वाणाहिं ॥  
 सुनिबोलेयमगारारेवंगा ॥ प्रथमैक्योनरगेहुहरिरंगा ॥ ॥  
 अबयमजालपरहुजबभाई ॥ तबहरिभजनकेरिसुधिआई  
 जेमेकोइगृहपावकलागे ॥ कूपखनावतअतिप्रनुरागे ॥  
 परतधारजिमिबबुरदवाँवै ॥ होतयुद्धगदनीवडरावै ॥ ॥  
 नधातुम्हारमनोरथकारन ॥ असकहिलगेनरकमहंडारन  
 तेहिअवसरइकहरिजनअयि ॥ तिन्हैदेखियनकेगनधायि  
 पदशिरनाइकीन्हअतिआह ॥ लायेवैवसतदिगसाह  
 देखिकृतान्तउठेहरयाई ॥ करिदंडवतलीन्हउरआई ॥ ॥  
 कनकसिंहासनआसनदीन्हा ॥ पदपसारिपादोदकलीन्हा  
 धूपदीपकरिदोउकरिजेरी ॥ लागेअस्तुतिकरनबहेरी ॥  
 देखिबप्रभावनपहुदिगआवा ॥ गमभक्तसोबिनतीलावा ॥  
 नमानमोतुमपतितनतारन ॥ नमोनमोप्रभुविपतिनिवारन ॥

नमोनमोतुमपरउपकारी॥मोहिंनरकतेलेहुउचारी॥ ॥  
 मुनिबिनतीभेसन्तदयाला॥रबिसुततेबोलेततकाला॥  
 याकोछाड़िकांसतेदीजै॥इतनाकहाहमारोकीजै॥ ॥  
 करहिजाइहरिभक्तिनरेशा॥मिटहिजाहिसेसकलकलेशा  
 सन्तककहासानियमलीन्हा॥तुरतहिछाड़िनरेशहिदीन्हा  
 ऐसेहैंहरिभक्तकपाला॥सहजनिकसिनरकरहिनिहाला  
 छूटभूपमृतलोकहिप्रावा॥मृतकदेहनिजप्रानसमावा  
 उठतनृपतिभेलोगसुरबारे॥सकलकहैंबड़भागहमारै  
 दो० तबमहीपयमलोककीकथाकहीसबगाइ॥

जेहिबिधिदेखेपितरनिजदीन्हासन्तछोड़ाइ॥

चौ० यमपुरहमनिजनैननदेखा॥बिनहरिभक्तिमहादुरबपेखा  
 तातेभक्तिकरबअबहमहं॥जातेनर्कनजाईकबहं॥ ॥  
 विप्रबोलिशुभधंरीसोधाई॥केहिदिनशरगारासकीजाई  
 पञ्चालखिहिजबचनउचारा॥प्रातहिगुरुमुखहोहुभुवारा  
 असमुनिभूपदानबहुदीन्हा॥करिसनमानबिदातबकीन्हा  
 जबतेनृपहरिशरगाबिचारी॥तबतेभेसबपितरसुखारी॥  
 बंदेनिकरिनरककेपासा॥कहैंकिसुतहोईहरिदासा॥ ॥  
 कबहमजावअपरपुरभाई॥असकहिहुलसहिहसिंहउगई

दो० तावतभरमतपित्रजगपिराडहेतहरिवार॥

यावतकुलमेंकृशाकरभक्तनहोतकुमार॥

**षट्मपुगारोश्लोक**

तावत्प्रमलिससारेपितरःपिराडतत्पराः।

यावत्कुलेसुतःकृशाभक्तियुक्तोनजायते॥१॥

**स्कंदपुगारो**

पंचतिनरकेपितःनृपतेचमुहुर्मुहु॥



महं शेषैशावोजानांसमेज्जातामविध्यति ॥२॥

चौ० इहां पुराहित कीन्ह बिचारा ॥ सब विधि गारो जिहार हमारा  
जब राजा हरिका जन होई ॥ जेयाति धर्म न मानी कोई ॥  
नहिं प्रबधे नु बेदाई कबहीं ॥ पांच सात काहेई हमहीं ॥ ॥  
सुनी जान जब सन्न न केरा ॥ भाई नही बचन तब मेरा ॥ ॥  
हरि सेवा में मन चित देई ॥ प्रान देव को नाम न लेई ॥ ॥  
ताते सो प्रब करौ उपाई ॥ जाते हो न बैशाव राई ॥ ॥ ॥  
सुनि बोली द्विज मामि नित बहीं ॥ नृप के भवन जाहु तुम प्रबहीं  
रानी ते प्रस कह उबु भाई ॥ सज्या निकट राउ नहिं प्राई ॥  
सुनि द्विज लै पंचाङ्ग सिधाये ॥ तिमरे पहर भूप गुह प्राये ॥  
रानी लखि उरि माधन वावा ॥ आशिर्वाद दीन बैठावा ॥ ॥  
पत्रारखालि कही द्विजवाता ॥ फेर्यो बिधितुम्हार अहिवाता  
सब विधि वनारहे तव साजा ॥ ये प्रब चाहत हो न प्रकाजा  
कोन प्रकाज भूप जो कालही ॥ लेई गुरु दिक्षा प्रन पालही ॥  
तब तुम्हार सब भाति प्रकाजा ॥ राजि पादि सब छोडी राजा  
भक्ति जान में मन चित लाई ॥ घर को काम सकल बिसराई  
तुम्हरे निकट न प्राई कबहीं ॥ चलि होई तीरथ जब तबहीं  
ताते करहु यतन तुम सोई ॥ जाते भूप न बैशाव होई ॥ ॥  
कोनिय तन कीजे सो गावहु ॥ रूप मोहनी केर बनावहु ॥ ॥  
करि कटाक्ष मोह्यो नृप प्राजू ॥ काम बिबसल खि कीन्ह्यो राजू  
विप्रहि बिदा दर्विदै कीन्हा ॥ अपनारूप रचन मन दीन्हा  
जहं लगु वियन केर शृङ्गारा ॥ प्रदू प्रतिसकल संवारा  
निशा पाइ पतिते जसि धाई ॥ हास विलास कीन्ह सुख पाई  
जब प्रन दूबस भूपहि जाना ॥ पकरि खूट करि बचन बरवाना  
स्वर्ग लोक ते तुम फिरि आयहु ॥ हमहि न कहु हीन्हें उख पायहु



बोलै नरयनि मांगहु प्यारी ॥ जो कहतु इच्छा होइ तुम्हारी ॥ ॥  
 विधि हरि हर को सांची दीजै ॥ तौ हम कन्त मांगु बरु लीजै ॥  
 तब मही पत्रै देवन केरी ॥ रवाई सो ह हरि बिबहु तेरी ॥ ॥  
 सुनि बोली पतिय ह बर दीजै ॥ जहां राजत हं भक्ति न कीजै  
 भक्ति कि हे बड़े होत प्रकाजा ॥ ताते में बरजत हों राजा ॥ ॥  
 दान पुराय भल करहु भुवाला ॥ जाकर फल पावहु तत काला  
 सुनि मही पबोले प्रकुलाई ॥ बनेहु न मांगत बर दुख दाई  
 जपत पयज्ञ दान बहु करहीं ॥ भक्ति जान बिन जीवन तरहीं  
 किहि निदान निज भक्ति बिहारि ॥ ते गिर गिट प्रहि गज भेग आई  
 ताते प्रब मोहिं प्राय सुदेह ॥ कीजै भक्ति परम फल येह ॥  
 रानी सुनि धुनि बचन उचारा ॥ प्रथमैं कौं वाचा तुम हारा ॥  
 देखहु शिव दधीचक मकीन्हा ॥ बाचा बस प्रापन तन दीन्हा  
 नृप हरि चन्द बड़े राजधानी ॥ वात्ता भरि निडो मघर पानी ॥ ॥  
 मधुं कैटम जिन की माहि माटी ॥ बाचा बस दीन्हि निशिरकारी  
 प्रमुर गया सुरदान व प्रहर्दु ॥ बाचा बस प्रधो मुख रहई  
 दशरथ देन कहै उबर दाना ॥ बचन नत जे हुत जेहु सुत प्राणा  
 विशु बचन चपलाम ते हारा ॥ तेहि ते प्रापुन दधि सुत मारा  
 सो तुम छांडत निज मुख माधी ॥ ब्रह्मा विशु शिव हिकरि सारी  
 परेहु भूप दुविधाम हं कैसे ॥ गहि मुख साप कूं दरिजे मे ॥  
 तजहुं भक्ति तौ नर कहि जे हों ॥ बाचा तजे अधिक दुख पै हों  
 यहि विधि निज मन कीजो प्राणी ॥ दीन्हि सिंहांडि भक्ति प्रजानी  
 दो० कल्पलता तजि मृद जिमि किं शुक्ल वेंकोर ॥  
 सोइ कीन्ही नृप कास हू समुके बहु भल होर ॥

इति श्री विश्रामसागर सवमत आगर प्रथम उजागर श्रीरघुनाथदास राम  
 सेवे दीन राजा कास प्रारब्धानवरीनो नाम विचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥



दो० मुनिरिशभसिबसन्तगुरुगणपतिगणेश्वरानि॥

बसों॥भारतकीकथाकुचितान्योमत॥प्रानि॥

चौ० तजतहिं भक्ति दूतयमकेरी॥पुखाबहुनिनरकसहगेरी॥

ऊपरसेभोगदरशिरदयऊ॥बिबिसनयोजनभीतरगयऊ॥

जबउछरततबभारतधाई॥कहैंकिअबक्योंउछरत॥धाई

जेहिसुनकीतुमआशलगई॥इजगनीतेहिठुलाबनई॥

दो० जानिबूझनृपगमकीदीन्हिसिमक्तिबिहार॥

आपुहिपारहगन्धमतिथहीनकमो॥धाई॥

चौ० यहमुनिनरकीकराहंपुकारा॥केहिखलभुर्योपुत्रहनरा

हिजहत्याताकेशिरदीन्हा॥बैशाबहोनमनेजेहिकीन्हा॥

तेहिसमयायीअथरनपावा॥हरयमाहिंजेहिहंमैराधावा॥

ऐसेबचनसकलमिलिबोलहि॥उछरहिकवहुंशिरबोलहि

तेहिअबसरनहंनारह॥प्राने॥नरकिननेअसबचनसुनाये

परेअधोमुखपतितअपारा॥तुमकाहेबहुकरतपुकारा॥

हेमुनिहमेरकुलनृपकासा॥होनचहतरोहेहरिदासा॥

दीन्होबरजिताहिअबकोई॥तेहिनेहंमैमहादुखहोई॥

अजहूजोताकासमुभावे॥कोटियजकीन्हेफलपावे॥

मुनिनारदकेलागीदाया॥नरकिनतेअसबचनसुनाया॥

जोमैसुतसमुभावेतोरा॥सत्यबचननहिंमानीमोरा॥

जेजइजीवहवैजगमाहीं॥सन्नकहातेमानतनाहीं॥

कहैंकिधनहितकरहिप्रबोधा॥समुझैनहिंभक्तनकाबोधा

नरकिनकहामुनहुमहराजा॥ऐसेबचननबोलीराजा॥

प्रथमदर्शवगादशाहमारी॥सुनतैअस्तुतिकरीतुमारी॥

जोकुजातिनहिंमानहिंवाता॥गगनखोदिदेखायहुसाता॥

गाडेबीचअजिरकेसाहीं॥मोहरभरेनृपजानतनाहीं॥

इतना मुनि मुनि तुरत सिधये ॥ वेगि भूप के मन्दिर प्राये ॥ ॥  
 मुनि हि बिलोकि दरा डवत करे ॥ हाथ जो रिश्त स्तुति अनुसरे ॥  
 मन्त्र आजह न धन्य मुनी सा ॥ तुमरो दरश दीन जगदीश ॥ ॥  
 जावाह सुरलभ वस्तु अनका ॥ इरलभ सन्त सपागम एका ॥  
 अब भी जनका कहिये भेवा ॥ केहि विधि बने सौई देवा ॥ ॥  
 कहना रह प्रादि हित केरा ॥ मसि बिद्या सम जल मधु हेरा ॥  
 शास्त्र न कानि केहू की राखै ॥ पदुम पुराणा बचन अस भारखै ॥

### गौरी नंत्र श्लोक।

कृष्ण मंत्र विहीन स्यापिष्टस्य दुरात्मनः ॥  
 स्वान बिद्या समं चानं जलं च महिरात्मनः ॥ १ ॥

### पद्म पुराण

अवैशावास्तु ये विद्या प्राडालां यथा स्मृतः ॥  
 तेषां सभावरास्यर्शसामधाना हि वर्जयेत् ॥ २ ॥

### स्कंद पुराण

आवैशाव गृहे भुक्ता पीत्वा वा ज्ञान तोषका ॥  
 शुद्धिश्चाद्रायणे प्राक्ता इष्टा पूतं दृष्टा सदा ॥ ३ ॥

चौ० राम मंत्र तु भुजान काना ॥ प्राज्ञा भागत कोने जाना ॥  
 नरत न लहि हरि भक्ति न कीन्ह्यो ॥ भूदे जगन माहि मन दीन्ह्यो ॥  
 देर्यो तु मन्त्र पयम पुरसासि ॥ तदपि दृश्य नहिं प्राई दृष्ट सति ॥  
 बडे भाग ते छूटन पायौ ॥ इहां प्राइ पुनि ज्ञान गवायौ ॥ ॥  
 प्रसव समय जिमि त्रिय दतित्यो ॥ दुख बीते फिरता सो पागे ॥  
 तेहि प्रकार तव मति भइ राजा ॥ जानि वीर निज किहे उअ काज ॥  
 पुरिया ईरि वन रक महं प्रायहु ॥ भक्ति को लकरि सुधि बिसरायहु ॥  
 बोले भूपसु नहु मुनि जानी ॥ रूप रांवारि कुलामोहि रानी ॥  
 मागि सिवर करि कोल कराग ॥ कहि सिकतौ जनि भक्ति भुवारा ॥



नबमेंताहिबहुतसमुझावा॥वाकेसनतनकहुनहिंआवा  
 वाचाकीसुनिकानिविचारी॥तेहितेहमहरिभक्तिविसारी॥  
 कहनारदसुनियेनृपभेदा॥नारिसुभावकहतप्रसवेदा  
 रहितप्रचारविचारविहीना॥परमभयाकुलकुलबलपीना  
 चंचलबुद्धियलप्रबगाही॥सदाप्रककलागिसुखसाही  
 प्रयशानासिकाभेदप्रभंगा॥विगतप्रसाहमलिनसकंपा  
 इतनेप्रवगुणानारिमकारा॥कसनकरैनृपतवप्रपकार  
 दुष्टनारिमतमानैसोई॥तबसमाजनीचेरजोहोई॥  
 जेजेभेभामिनिबसराजा॥तिनसबहिनकामयउप्रकाज  
 शिशुईनृविधिधिसुराई॥अपरप्रसंगसुखैननलाई  
 कुंडलनामरहैदिजएका॥उप्रबुद्धिधरद्विननेका॥  
 निरधनजानितासुकानारी॥निजउरिदेहिहजानबगारी  
 इकदिनहिजनिजपुस्तकलीना॥उठियरेशपयानाकीना  
 ताहिमाइकतड़ागलविपावा॥कारिमज्जनयिरिलकलादा  
 पुनिहरिकथाकहनाहजलगा॥वाचामध्यरहइकनामा॥  
 तेहिहरिकथासुनीसुखमाना॥तपनिमिटीकहुहरयजुषा  
 लागेकरनविसरजनजबहो॥आवानिकटनिकसिअहितवो  
 मोहरएकधरिबोलावानी॥कोसुमप्रहउकहउसुखदानी  
 कुंडलकहाविप्रहमहोई॥विद्याधरजानतसबकोई॥  
 विधिअनरुपापरमदुखपायनु॥अवधनहिलपरेशसिधाय  
 बोलासपदूरिजनजावो॥हमकाहरिकीकथासुनावो॥  
 मोहरएकदेवनिततोही॥काहुईपेनबतायहुमोही॥  
 यहसुनिद्विजमनहरयतभयऊ॥निकरहिगमलभकरिदयऊ  
 लागसुनावनविविधिपुराना॥यादहिरकमोहरनितदाना॥  
 भाधनवानमहलवनवावा॥शुभावाजिनिजद्वारंधावा॥



भूषणावसनअनेकप्रकारा॥ यहिरै प्राप्सहितसुतदारा॥  
 एकदिनभवनपरासिनिआई॥ बोलीकरकलैतहृगाई॥  
 तुमतौरहिउदुरिवनधनहीना॥ किनतुमवायहसम्पतिदीना॥  
 बोलीविप्रबधूसुनुमाई॥ कोजाँनैकहंवायतिपाई॥ ॥ ॥  
 जोतुमनेपतिभेदनगावा॥ तौकैहिकामधामधनपावा॥  
 पुरुषनारितेअन्तरकरई॥ तौसम्पतिपावकसहपरई॥ ॥  
 तेहितेपूछेहुआजुसंभारी॥ असकाहिलीगईसोनारी॥  
 द्विजभामिनितवरहीरिसाई॥ दीन्हैसिअभरणसकलचलाई॥  
 द्विजपुस्तकयदिधरजबप्रावा॥ दुरिवनदेखिअसबचनसुनावा॥  
 कोनिविधातेरेमनमाहीं॥ सोसबकहउप्रियामोहिंपाहीं॥  
 कैयोवारविप्रजबबूझा॥ बोलीतबतुमकानहिंसूझा॥  
 रहेउरंकअबसम्पतिलहेऊ॥ कितसोहमतेभेदनकहेऊ॥  
 सुनिबोलाद्विजशिरकरधारी॥ याहीहितकीन्हैउरिसभारी॥  
 भूषणासजहुतजहुमनखेदा॥ सुनोकहउंमैंधनकरभेदा॥  
 पुरदक्षिणाहैएकतड़ागा॥ तेहितटरहृतहंवैयकनागा॥ ॥  
 दिनप्रतिताहिपुगारासुनावों॥ मोहरएकतहंवाँमैंयावों॥  
 इतनासुनिउठिभोजनकीन्हा॥ पतिसुततिन्हेंजवावैलीन्हा॥  
 निशापाइद्विजसोवनलागा॥ बोलीसुततेकारिअनुरागा॥ ॥  
 सरकेनिकटआजुतुमजावो॥ सरपहिमारिद्रव्यखनिलावो॥  
 सुनियोथीकुदारिसाहिलयऊ॥ भोरहोतसरकेतदगयऊ॥  
 तक्षकदीखविप्रसुतप्रावा॥ लखिकुदारिमनशोचबदावा॥  
 कीन्हिविप्रजबकथाप्रसंगा॥ निजबांवीतेसुनहिभुजंगा॥  
 तबद्विजविबिधिरागिनीफेरी॥ तदपिनलागिघाततेहिकेरी॥  
 दो० करनबिसरजनलागजबतबनिकसासोबाल॥  
 मोहरएकचड़ाईकैबहुरिफिरावतकाल॥



चौ० भनिरभवनहलमनहिपावा॥ ऊपरदृष्टकुहारिचलावा  
 ककुकपूंकुकाटिगैप्रहिकेरी॥ काटिसिधुमरिमरानेहिवेरी  
 इहाविप्रजागैपरभाता॥ सुतकितगापूढीयहवाता॥ ॥  
 बोलीत्रियककुकामहिगयऊ॥ सुनिब्राह्मणांकेबिसमथभयऊ  
 उठातुरताहिजप्रहिदिगआवा॥ मृतकनहांनिजबालकयावा  
 रोदनकीन्हिलीनउरलाई॥ कीन्हिक्रियाविधिवतधरआई  
 ककुदिनवाहिसर्पदिगआयौ॥ धरिधीरजप्रसबचनसुनायौ  
 आइपुराणासुनहुजजमाना॥ केहिकारणाहमतेदुखमाना॥  
 बोलाप्रहिप्रवसौरसगयऊ॥ जवतेतुमबवितहिकहिदयऊ  
 तुहारेसुतकरशोचअपारा॥ हमरेतूमकेरदुखभारा॥ ॥ ॥  
 तेहिजेजाहुधूमिनिजधामा॥ प्रबहमतेतुमतेनहिंकामा॥  
 यहसुनिविप्रपलटिगृहआवा॥ सुतकरदुखककुधनदुखयावा  
 हेरवहुभूपनारिबसभयऊ॥ द्रव्यलाभसुतदूनहुगयऊ॥  
 जेसेविप्रकीन्हनिजहानी॥ तेहिप्रकारतवमतिदौरानी॥  
 दो० भगवतभजनछोड़ाइनिजधर्मदिदोवैकोइ॥  
 ताहित्यागियेशत्रुसमपरमहितूकिनहोइ॥  
 तज्योपितैप्रहत्नादमाभरतविभीषनभाइ॥  
 गुरुबलिब्रजबनितावरनिभेसबमंगलदाइ॥

इतिश्रीविश्रामसागरसुबमतप्रगणग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरायस  
 नेहीकृतकासनारदसम्बादकुराडलप्रसंगबरानोनामच-  
 त्वारिंशोऽध्यायः॥४४॥

दो० सुमिरिगमसिबसन्तगुरुगणपतिगामुखदानि॥  
 महभारतसदृश्यकीकहौंरनिहासवरवानि॥

चौ० अपरसुनोपरसंगसुनावों॥ जनीचेरकारूपलखावों॥ ॥  
 जबभारतकरभाअप्रारमा॥ चलेपांडुसुतगाइनखंभा॥ ॥

दी० बोलितबसहदेवतेप्रमुदितचोरोभाइ ॥

होइजीतजेहिभांतिसेंसाइतिदेहुबताइ ॥

चौ० कहसहदेवसुनहुबलवाना॥प्रथमैउनतेकीन्हवरवाना॥

अबतुमकाकेहिभांतिबताइ॥तेहिनेसगुनसुनहुयकभाई

इस्त्रीचेरिपुरुषजोपावो॥ताहिअनि कुरुक्षेत्रगडावो॥ ॥

एहेंचलिजंबुकतहेंदिनते॥सकलभेदतुमपेहोतिनते॥ ॥

यहसुनिदूदनभीमसिधाये॥धूमतएकनगरमहेंप्राये॥ ॥

तेहिपुररहतरहैइकतेली॥सुनहुतासुकीरीतिनवेली॥ ॥

बैठोपलंगतासकीबामा॥अपनाकरहिंधामकरकामा॥ ॥

भारिपोतिघरजलभरिलंबे॥कूटिपीसिधुनिअसनबनोवे

ताहिपवाइस्वायतवअपना॥बहुरिकैसबटहलअलपना

एकदिवसगैअगिबुभाई॥रविदिनमांगिफिरानहिपाई

तवबनिताबोलीताकेरी॥हैपगलागमहाउरमेरी॥ ॥

जोतुमकन्धचदावोंमोहो॥अनिदेउमेंपावकतोही॥ ॥

सुनतहिलीन्हसिकन्धचदाई॥चलामुदितमनलाजबिहाई

मांगेजाइअगिनिजेहिद्वारे॥तासबजाबहिंबालकसारे॥

प्रमदासमहंसिहंसिअसबोले॥भलेअगियिमंगतडोले

कोउनिलज्जकहिदेवैगारी॥कोउकंहैनीचडारिदेनारी॥

करहिंकुबुधिनीइहिविधिवाता॥हंमैनअसबरदीन्हविधाता

पुरुषदेरिबपुरुषनतैकहई॥येदोऊनिलज्जबडअहई॥ ॥

जोइमिहोतीनारिहमारी॥डरतेनुताहिजानतेमारी॥ ॥

एककंहैअसदइउनकरई॥दुष्टनारिनरपालैयरई॥ ॥

दो० दुष्टभार्यामित्रमदउत्तरदायकमृत्यु॥

सर्पसहितगृहवासरिपुसबलसेजीवतमृत्यु॥

चौ० यहसबचरितभीमजबदेखा॥जनीचेरिनिधयकरिलेखा



नारिउतारिताहि धरिलायौ ॥ कुरुक्षेत्रके माहि गढ़ाये ॥ ॥  
 आपुरहे छिपिचढ़ि तरुडारा ॥ प्रायेत हंत बबहुन सियारा ॥  
 दो० नेहिते लीके अंग सब संधे पेक सियारा ॥

बोला मांस प्रशुद्ध है हम नहि करव प्रहारा ॥

चौ० जो हम याको भक्षणा करिबे ॥ कोटिन बरय नरक महं परिवे  
 त बजं बुक सब पूछन लागे ॥ है प्रशुद्ध केहि कारणा पागे ॥ ॥  
 सुनिज बुक तब उत्तर दीन्हा ॥ यहि कबहुं शुभ करम न कीन्हा  
 नारिहि के डर डर तरहावा ॥ हरि गुरु जन पद शीशन नावा ॥  
 तेहिते शिर प्रशुद्ध है भाई ॥ जानिबूझि हम केहि बिधि खाई  
 श्रुति प्रशुद्ध गुरु मेत्र न लीनेहि ॥ हृगमलीन जन दरशन कीनेहि  
 मुख प्रशुद्ध हरि नाम न देखेहि ॥ गर प्रशुद्ध तुलसी नहि गोरि  
 कर प्रशुद्ध कछु किहि सिनि दना ॥ उर प्रशुद्ध दराइ वतन दाना  
 उर प्रशुद्ध प्रसादन खाइसि ॥ पग प्रशुद्ध तीरथ न सिधाइसि  
 सुनि सियार सुत बोला ताता ॥ कीन्हां तुम प्रशुद्ध सब गाता ॥  
 हमें लामिं हे भूष अपारा ॥ कहो काहि प्रबकरी प्रहारा ॥  
 तब ज बुक सब भिसुन प्रबोधा ॥ आजु के दिन सुत करहु समोधा  
 काल्हि युद्ध होई यह बाँवे ॥ रवाय हु पल जितना मन भाँवे ॥ ॥  
 बलि हैं प्रस्रस्र बिधि नाजा ॥ जु भिं है बडे बडे धर्मवाना ॥  
 भक्षणा कीने जिन करमासा ॥ होई हमहि देव पुर बासा ॥ ॥  
 पुनि सियार सुत बोले बाना ॥ को जीतो को हारी ताता ॥ ॥  
 जं बुक कहा जीति हैं सोई ॥ प्रथम ध्वजारोपि हैं जोई ॥ ॥ ॥  
 लखिय हस गुन भीम धर प्राये ॥ बलकन सहित सियार सिधोये  
 देखहु नृपत्रिय के बस भयऊ ॥ डरि करि राम भक्ति तजि दयऊ ॥  
 जं बुक हू नहि खाइनि ताही ॥ तैसी गति नृप तुम्हरी प्राही ॥  
 श्रुति प्रकाज रानी तब कीन्हा ॥ भक्ति माहि बाधा करि दोन्हा

करै कहा प्रवलाकर सोई ॥ तेहि समान पतिन जो होई ॥  
 यह सुनि राजा बहु न लजाना ॥ माघनाइ प्रसब चन वराना  
 सो न वहुं मैं निज कीन्ह प्रकाजू ॥ प्रस प्रभु नाम सुनावहुं प्रजु  
 नारद कहा तयारी कीजै ॥ तब तो राम मंत्र हम दीजै ॥ ॥ ॥  
 यह सुनि नृप मंत्री हक रावा ॥ भीतर बाहर भवन लिपावा ॥  
 कुम्भपुराणा सकल करि दूरी ॥ नूतन कलस धरे जल पूरी ॥  
 विप्र वैष्णवन सकल बोलाये ॥ गुरु मुख होन जानि सब आयै  
 भई भीर नृप द्वार प्रपारा ॥ बाजहिं ताल मृदंग सितारा ॥ ॥  
 गन्धर्व करहिं राम गुरागाना ॥ लखि समाज भूपति हरषाना  
 तब बोले ऋषि ते कर जोरी ॥ अब का आय सु होत बहेरी ॥  
 कह नारद रानी दिगज बो ॥ ताहुं ले आय सु लै आवो ॥ ॥ ॥  
 जो न मुदित मन प्राज्ञा देही ॥ लाग्यो भारन नुर लै तेही ॥ ॥  
 दो० भले नाथ कहि भूपत बगेरानी के पास ॥ ॥  
 बोले आय सु देहु प्रव होई हरि के दास ॥ ॥

चौ० सुनिरानी प्रसब चन उचारा ॥ नृप हरि गि है ज्ञान तुझारा  
 हम तुम का बहु विधिस युभावा ॥ तदपि तुम्हारे मन नहिं आवै  
 इतना सुनि नृप मारन लागा ॥ बोली तुरत सहित प्रनुरागा ॥  
 हे पति मैं यहि विधि यरकासा ॥ हम हूँ तुम होई हरि दासा ॥ ॥  
 वैष्णव कंथ प्रवेष्णव नारी ॥ ऊँट बैल कर जोत बिचारी ॥ ॥  
 पुरे के लोग सुनत डर पाये ॥ गुरु दिक्षा हित सब चलि आयै ॥  
 तब नारद प्रतिकरुणा कीन्हा ॥ बाहु मूल रामायुध दीन्हा ॥  
 ऊर्ध्व पुराड पुनि तिल कल गाँयो ॥ द्वादश मंत्रन सहित सो हाँयो  
 धर्यो बहुरि हरि मिश्रित नामा ॥ पहिराई तुलसी की दामा ॥  
 तेहि पाँछे कहुं प्राहुनि कीन्हो ॥ राम मंत्र महि पालहि दीन्हो  
 दो० राम मंत्र गुरु बदन तेजे हि उर करै प्रवेश ॥



होत शुद्ध सो तुरत इमि कहत संहिता शेष ॥

सर्व मंत्र ते अधिक हैं वैष्णव मंत्र प्रवेद ॥

विष्णु मंत्र हुने अधिक राम मंत्र बदेवेद ॥

ब्रह्म हत्या गुरु तल्प गा स्वरी चौर मदि राय ॥

सर्व न्ये वा बिहंसि अध राम मंत्र को जाप ॥

चौ ॥ जब हरि मंत्र सुना नृप काना ॥ पुरि पास बच दिगये वेवाना ॥

मुनि गनी काम मंत्र सुनावा ॥ तोहि पाहु आवा सो दु पावा ॥ ॥

तब नृप हि जन दास गाना दीन्हा ॥ मंत्र विधितो वसवन कर कीन्हा ॥

सो शोभा सुख परनि न जाई ॥ रही भक्ति सब पुरमा छाई ॥

जहें तहें होहि चरित हरि कैरे ॥ जपे नाम सब सांभ सवेरे ॥ ॥

कह नारद हमें देखें जाई ॥ तब पुरि धन के सो गति पाई ॥ ॥

मुनि मुनि बचन बिदानी नृप कीन्हा ॥ तब सातौ गगरा कहि दीन्हा ॥

तब पितर नहें मोहि बलाये ॥ अस कहि करषिय मलोकहि प्रये ॥

दूत नते अस पूछा जाई ॥ नर की वै कित गये सिधाई ॥ ॥

मुनि दीन्हि निउत्तर यम दूता ॥ राम दास भाउन कर पूता ॥ ॥

तोहि ते वै सुख लोक पधारे ॥ छूछे परें हैं नरक हमारे ॥ ॥ ॥

मुनि नारद के भासुख भारी ॥ आयि चलि बैकुंठ मभारी ॥ ॥

वैदेह ते होय मराजा ॥ दूत न सहित आपने काजा ॥ ॥

जब मुनीश हरि पद शिर नावा ॥ तब प्रभु करषिते बचन सुनावा ॥

आयि हैं रबिसुत फिरिया दी ॥ कहें कि हमें वैदेह नुबादा ॥

नारद भक्ति दिदाइ तुम्हारी ॥ खाली कीन्हि निपुरी हमारी ॥

जगमहें सब होइ है तब दासा ॥ को आई फिरि हमरे पासा ॥

तोहि ते अब हम जावन तहें ॥ पापी सब आवतें हैं जहें ॥

केन नो भेदन कास मुभावा ॥ तदपिन मानत मोर मनावा ॥

कह नारद हम कीजे काहा ॥ जोहि ते मानि जाइय मनाहा ॥

बोले धर्मराज तुम जाहू ॥ जगमें भरमावो सब काहू ॥ ॥ ॥  
 अहिले गम भक्ति तजि सारे ॥ अब हि कस सब लोक हमारे ॥  
 कहना देह हम ते नहिं हीरे ॥ कोटि उपाइ करहु किन कोई ॥ ॥  
 तुम बही भरमावो जाई ॥ हरि हू कहा भला है माई ॥ ॥ ॥  
 जे होइ हैं देह भक्ति हमारे ॥ ते न हिल गिं हैं कहे तुम्हारे ॥ ॥  
 तजि हैं भक्ति मोरि नहिं कबहीं ॥ सुनि चलि भेर बिं क सुत तबहीं ॥  
 अयि भूपकास के ग्रामा ॥ नाउतर रूप बना एक तामा ॥ ॥ ॥  
 लाग हलावन दोउ कर शोशा ॥ अपर बजावहिं बाजन बीसा ॥  
 कोतुक देखि वलोग जुरि अये ॥ माथ नाइ अस बचन सुनाये ॥  
 किमि होइ हमारे कुशालाता ॥ देहु बलाइ कृपा करि दाता ॥  
 बोला जो चाहौ कल्याणा ॥ तो तुम सेवहु वीर मसाना ॥ ॥  
 पूजहु शक्ति भक्ति करि भारी ॥ पावहु तुरत पुत्र धन नारी ॥  
 की भैंरों मरही कासेवा ॥ अजया पुत्र महिष बलि देवा ॥  
 इन ते मन बांछित फल पैं हो ॥ जेहि को पैं हो तेहि तुरत नैं हो ॥  
 क्षतर पालहि पूजहु कोई ॥ तेहि के विघन न कबहू होई ॥  
 पांचहु पीर नमें मन देहु ॥ जिन ते मन बांछित फल लेहु ॥  
 महावीर हैं शंकर देवा ॥ मिलहि न कहु फल इन की सेवा ॥  
 दान बर्चि बहू हैं जगमाही ॥ को जानहिं फल मिलै कि नाही ॥  
 राज भक्ति जो वेद नगार्इ ॥ सो तो हैं प्रतिशे दुख दार्इ ॥ ॥  
 जानर हरि की भक्ति प्रकाशे ॥ सुत वित नारिता सुकी नाशे ॥  
 हो गोग बहु भानि सतावै ॥ जहू निकसै तहू हंसी करावै ॥  
 यहि विषक बू सैं बहु काला ॥ तब कबहू हरि होइ दयाला ॥  
 तेहि परताहि कहु नहिं देही ॥ मूरख यहि मत काम न देही ॥  
 सुनि सुनि दूत न की असि बानी ॥ हरि ते बिमुख भये बहु प्रानी ॥  
 राय भक्त जे रहैं सुजाना ॥ तिन तन को विश्वास न अजाना ॥



जेमतिमन्दविधेरसपगो ॥ नेप्रभुकातजिपूजनलागे ॥ ॥  
 बनितनकादेनेयोंइमिसीखा ॥ गलिनइमिलिमांगहुभीखा  
 लूटिबजारभक्तिकहपूजे ॥ मिदहिसकलदुरवसुखनितभूये  
 काहुइयंत्रमंत्रसिरवराये ॥ काहुइभूतचदाइहुइये ॥  
 काहुइदिहिनिमुतासुतनाती ॥ काहुइदीहिनिधनबहुभांती  
 एकहुवालकबहुंफुरहोई ॥ सकलसत्यकरिमानहिंसोई ॥  
 दो० यहिनिधिजगभरमाइकेंगेयेमपुरयमदूता ॥  
 सोईरीतिसंसारमेंप्रजहूंहेकहसूत ॥ ॥

चुन्द कहसूतप्रजहूंरीतिसोईरहीजगमेंछाडकें ॥ सचमा-  
 निनरसबकरतजेहितपरतप्रघमेंप्राइकें ॥ मतिधोरजेग-  
 भीरजननेभूटमनमेंजानिकें ॥ तजिभर्मनानाधर्महरिकी-  
 शरणभेसुखमानिकें ॥

दो० रामभक्तिदृढकरनहितहरनभर्मतमरूप ॥  
 वरणीजनरघुनाथतेहिइहइतिहासप्रनूप ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतप्रागरग्रंथउजागरधीरघुनाथदासराससौ-  
 हीकृतराजाकासकथावरीनानामपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि ॥  
 भक्तिरत्नमतकहौंकहुपातांजलजुवरवानि ॥  
 कहासौनकनोधाभगतिकहौयोगयुतमोहिं ॥  
 जोवरगयौअधिकसतेसोइसुनावोंतेहिं ॥

चौ० भाजवशिधिनारदकरराजा ॥ बोलातबहितसहितसमाज  
 नाथभयेसबशरणासुहमारी ॥ विनगुरुहोतनदृढताभारी ॥  
 जिमिशिशुग्रंथदूधविनपीहें ॥ मरेनभरेछीनतालीन्हें ॥ ॥  
 कहनारदसुनुधूपप्रसंगा ॥ हैहरिभक्तिकेरनवअंग ॥ ॥  
 दो० अवरार्कीमतनअसरायदसेवतप्रचन्य ॥

बंदनदाशयसखात्मनयवेदननवेयगन्य ॥

चौ० दशईप्रेमलहराजनी॥ प्रथक् प्रसक्तलबरबानी  
जोहरिकयासुनेमनलाई॥ तासुप्रप्रणामगहरिउरग्राई॥  
वसिपंकजप्रधनाशेकैसे॥ सरदकालजलमलहैजैसे॥  
विषईविरतविमुक्तउमाहीं॥ हरिगुरासुननसबनकहेंचाहीं  
बीतरागहरिचरिततेकोभा॥ हूँकरिकोइकिलेहैंकहेंशोभा  
अजगिरीसयोगेश्वरग्रादी॥ अपरभयेजेमुनिमुनिबादी॥  
रामचरितसुनिकौउनहुंकदा॥ अवनरुचैतेहिजानहुंसदा॥  
जोनरहरिगुरासुनेनकाना॥ सोखरऊंटकोलसमरवाना॥  
भयोनिरादरमाजनभारी॥ तेहितैखानकहैंनिरधारी॥  
असदबातबहुविधिकेपरना॥ चरतऊंटसमततैवरना॥  
वहैभारग्रहकोदिनराती॥ तेहितैखरसमकहोंकुजाती  
अमितअनन्दकथाकेमाहीं॥ अथरासमेतसुनेकौनाहीं  
दो० प्रवराचात्रिकहंससुकमीनमच्छिकावयल॥

आताद्वादशभांतिकेभधुवृक्ततमधुरसयल॥

चौ० द्वादशभेंपटउत्तमजानी॥ अपरअधमअवदोषवरानी  
अन्यमानद्रगलेमाअधीरा॥ यदहेदकअसमजरातीरा॥  
बाहरसिकनिद्रावसमानी॥ बिनविस्वासअहितअजानी  
रुद्रदोषबिनआताहोई॥ चरितामृततबपावैसोई॥ ॥  
ततेभूपदोषतजिसारे॥ सुनौकथाहरिकीनिरवारे॥ ॥

दो० कथाप्रीतितेसफलहैमोहोहेतुकोकर्म॥

कथारहितजोफुलतकरैसोकेवलथयसर्म॥

चौ० अथरापरीक्षितभलकरिजाना॥ अबसुनुकीर्तनभक्तिसुजाना  
प्रभुकेजन्मकर्मबहुतिर॥ मंगलप्रदजेअहैंघनेरे॥ ॥ ॥  
लज्जारहिततिन्हेंजोगावै॥ सोनिअथअभिमतफलपावै



नारददि ऋषिजहंलगुहेऊ॥ मनुहरिहरिगुणसबहिनकहेऊ  
 रामचरितवरणयोमोडबानी॥ शुभगमत्यसुचिमंगलरखानी  
 हरिविनविषमवादिसबधंधा॥ इमपिप्रोक्तद्वादशप्रस्कंधा  
 वक्तापांचप्रकृतिकेजाना॥ रविशशिउडमशिदीपसमाना  
 वक्ताहमेंदोइकहोही॥ तजिवेयोगसुनावेंनोही॥ ॥ ॥  
 पक्षपातधनचाहप्रधीना॥ श्रोतानहिंसमुभैपरखीना॥  
 प्रश्नकरेंतेहिउत्तरनदेवै॥ सारवस्तुसुनितकनलेवै॥ ॥ ॥  
 मूर्तिवैधीधकैबचनउचारे॥ मूरखसोकेलेउरधारे॥ ॥ ॥  
 प्रेमप्रतीतप्रीतिविनतोषा॥ पूछतजातकोरेप्रतिरेखा॥ ॥  
 बहुतपापश्रोताजबकरही॥ तबसेसबकताक्षिरपरही॥ ॥

दे० यदिगुरावेदपुराणहरिमक्तिनदीहोसार॥

ज्योंपशुचन्दनभारधरिभरमतजेहिनेहिद्वार॥

**श्लोकप्रदिपुराणो**

यथाखं चंदनभारवाहीभारस्यवेतानतचंदनस्य॥

तथाचविप्राश्रुतिशास्त्रयुक्तं मज्जुक्तिहीनारखरवत्सहंति

दे० ज्योंविधवाकेशीशमेंसोहेनहिंसेंदूर॥ ॥

गुराचतुर्गईरामविनत्योंहींजानोकर॥

गांवैविधवाप्रपनकहिवनरादुलहिनकेर॥

यतिमुखलहैनस्वप्रहूतिमिहरिजनविनभेद॥

विद्यागोपनवेदचहुंभक्तिदूधजनभक्ष॥

यावैबरतावैतनुजलहैकिलनविनअक्ष॥

तेहितेरसिकअनन्यहैकहैराप्रगुणप्रान॥

तबपावैशोभायथाबलितचन्द्रनिशियाम॥

चो० कीर्तनशुकमुनिभक्तकरजाना॥ अखतुनुसुमितभक्तिसुजाना॥

प्रीपतिकोसुमिरनजोकरई॥ गोपदइवसोभननिधतरई॥

गगिकायमनगायन्दप्रजामिल॥ कीरप्रदिकविकटुधरेकिल  
 विषडुनिभंजै विषयकोपावै॥ रामे सुमिरिरामदिगजावै॥ ॥  
 विधिहरिहरगगापतिप्रहिराई॥ सुमिरनतेपाई प्रभुताई॥  
 हरिसुमिरनसबमुखकोमूला॥ हरिसुमिरनांशेसबसूला॥  
 हरिसुमिरनकीजैजिमिगाई॥ चरतफिरतसिसुबिसिरनजाई  
 हरिसुमिरनकीजैजिमिकामी॥ तजिहिय होतनारिअनुगामी  
 हरिसुमिरनकीजैजिमिलोभी॥ निसुहिनरहेद्वयहितकोभी  
 हरिसुमिरनकीजैजिमिचानृक॥ गौननहानिलाभनिजमातृक  
 रामनामजिनसुमिरनकीन्देयां॥ तिनजनुसकलधर्मकरिनीन्देयां  
 रामनामजिनहिरदेधारा॥ तिनकाकहाकोरेसंसारा॥ ॥  
 रामनामकरसुमिरनसोचा॥ जेहियांचेजगहिइअयांचा॥  
 बहुतजन्मकोपुरायबिहीना॥ रामनाममुखजातनलीन्हा  
 दंभोतेजेनाउउचौरै॥ पावकसमअधतूलहिजोरै॥  
 शत्रुभावकरिजाकोइध्यावै॥ सोऊहोइमुक्तश्रुतिगावै॥ ॥  
 दो० भुङ्गीभयतेकीटज्योंहोतभुङ्गनअंत॥  
 तैसेअरिअधत्यागिबधुधरतरूपभगवंत॥  
 रामनामकेबीचमेंमनकादेइमिलाइ॥ ॥  
 करिहरिसमरघुनाथसोसहजमाहिंकुटिजाइ॥  
 कलिकेकलुपीनरननहिअनधर्मअधिकार॥  
 रामनामइतिबरायुगजपिहैंहैंभवपार॥  
 तोबडभार्गीजीबजेकलियुगमेंहरिनाम॥  
 सुमिरैसुमिरावैसुखदसकलरुतारथधाम॥  
 पापदहनहरिनाममेंइतनीशक्तीआहि॥  
 जितनीपापीनरनकोपापकरनकीनाहि॥  
 चंडालीजोरामइतिरसनाकोरेबरवान॥



तासंगयौदियेबोलियेभोहिमिभुतिपरिदल ॥

यच्चाडलनराभेतिवाचंबदूतन ॥ ॥ ॥

सहसंबसेतेनसहसंबदेतेनसहसंबुंजीयात् ॥

दो०

रामनामकलिकाभलरुकहतसुकलभुतिसाध ॥

लहेकामफलजोधेउरतजिदशप्रपराध ॥

सो०

दशप्रपराधसेकोननायकपाकरिवीसिये ॥

सुनोकहौमयलीनमनकसंहितामहिंस ॥

कराडलियागुरुअबजाएकहरिजनहरनिद्याताप ॥

मनेब्रह्ममंभेदभुनिकैरेनामवलयाप ॥ बरैनामवलयापन

मपरतापनजाने ॥ दिनसराधउपदेशदोखिभुतिशास्त्रमा

ने ॥ मानेदगिरधुनाथमंजेनिजइन्नीकहुउरयेदशतजि

अपराधजंपेतबनामकलेगुर ॥

दो० तेहितेतुमहूंदोयतजिजपहुनामनिरांक ॥

ब्रह्मलोकसुरवनहिंलंचेओरकहादपरंक ॥

सहितदोषनिदोषहूरामनामजोलेइ ॥

तबहुताकीभायकीकोअसउपमादेइ ॥

चौ० सुमिरनभलेकीनप्रह्लादा ॥ अबसुनुसेवनभक्तिमया

सेवनभक्तिकीनश्रीनीके ॥ तेहितेवसीविशदउरपीके ॥

दो० देवबहागधर्मनरप्रसुरइतरकोइहोइ ॥

जोसेवेहरिपदकमलसहसुरवपायेहोइ ॥

हरिपदसेवनविनमसुजजहोअलिजात ॥

तहांतहांभयभुतरहतमृगुनहोइतरवात ॥

चौ० तेहितेरागचरननितसेवे ॥ अचनभक्तिहूरीसुनिलेवो

परमानन्दहानिहरिपूजा ॥ इहितेसुगमउपाइनहूजा ॥ ॥

केवलहरिअर्चनकेकीहे ॥ लहततापसुरसकलप्रवीने



जिमि सींचे जर सब तरु तोयै ॥ हरित न होइ पात जो पोयै ॥ ॥  
 मुख ते असन जान हीं खावैं ॥ सब इन्द्रीति रिपित है जावैं  
 प्रभु आनन्द सिंधु मुख धामा ॥ करुणा कर परि पूरन कामा ॥  
 सो निज पूजा चाहै न कबहीं ॥ निज कल्याण हेत करै सबहीं  
 सोहि पूजि पूजित है येहू ॥ पावैं मुख संपति निज गेहू ॥  
 ज्यों निज मुख तिल कादिल गावैं ॥ सोइ दरपन प्रतिविम्ब सोहावैं  
 श्री गति मान दिहे विन शर्मा ॥ लोहै न कतहुं मान अज्ञानी ॥  
 प्रभु कर मान करै न रजवहीं ॥ हरिहु ताहि सन मानत तबहीं ॥  
 प्रभु आदर्यो धन्य नर सोई ॥ तोहि सम बड भागी नहिं कोई  
 मुकुल देव मुनि ताहि मराहैं ॥ चरणारेनु तोहि पावन चाहैं ॥  
 ऐसी है हरि पूजन ताता ॥ पुनि पै सरि कैरि नहिं बाता ॥ ॥  
 दंभ सहित मद दुष्ट धनादी ॥ करहिं यतन सो अम सब बादी  
 जर अंकुर दल दूब चढावैं ॥ विन मद सो उत्तम गाति पावैं  
 दो० मारु दारु हरि चित्र पावि पुरट मनो मय रत्न ॥

ये प्रभु प्रतिमा आठ विधि पूजै जन करियत्न ॥

तोटक हूं ॥ हरि पूजन षोडश भांति कही ॥ प्रथमै आवा-  
 हन कीन चही ॥ पुनि आसन पाद रघा चमना असनान प-  
 टाहुति सूत्र तन ॥ सुचि चन्दन पुष्प मुधूप दिपं ॥ निवेदत  
 बूल विनै अधिपं ॥ पर दक्षिणो षोडश भांति इयं ॥ चर-  
 णा मृत नासत कोटि बिपं ॥

दो० जल दल चन्दन चक्र दर घंट सिला हरिताव ॥  
 अष्ट वस्तु मिलि होत है चरणा मृत मुख दाव ॥  
 फल चरनोदक लिहे कर कहं तक करौ बखान ॥  
 भूमि परे पातक तथा अब सुनु दीप विधान ॥  
 चारि चरण युग देश कटि मुख मंडल इव वार ॥



सप्त चक्र सर बांग पर इमि आरतौ उतारि ॥  
 श्री हरि पूजा अमित फल परम पुराख सुख दानि ॥  
 ताते संतत कीजिये प्राप्ति सहित हित मानि ॥  
 अब सुनु दूसरि विधि कहौ जाहि करत सनकादि ॥  
 अग जग रूप अनूप हरि आसन देइ अनादि ॥  
 पाद पुष्टता अरध अपि सुचि सनेह अस्त्रान ॥  
 वसन विनय मख सूत्र गुण चित चन्दन सिक्क जान ॥  
 धूप बासना दीप निज जोध हरै अविचेक ॥  
 अशुभा शुभ तूलास धून गोवर्तिका अनेक ॥  
 विरति बन्धि करि अर्पिये विविधि भावनै वेद ॥  
 प्रेम तांबूल सुगंध पन पाइ मिदत भव भेद ॥  
 सदन साथ पर्यंक पर रामहिं प्रायन कराइ ॥  
 क्षमा दया परचारिका तत्र मुदेइ लगाइ ॥  
 ग्रहि विधि जो पूजन करै हरै सकल संताप ॥  
 निर वरती की रीति यह केवल हरि का जाप ॥

चौ० पूजन भले कीन्हि पृथुराजा ॥ पूरव पश्चिम सनक समाजा ॥  
 कुरई बंदन शक्ति अनूपा ॥ प्रभु बंदन सब का सुरख रूपा ॥ ॥ ॥  
 बंदन करै जोरि कर जबहीं ॥ मंगल सो तर पावत तबहीं ॥ ॥ ॥  
 सकल जीव हरि सत्पुख आवै ॥ मन बचक म करि शील नषावै ॥  
 सो हरि धाम मोक्ष मुख लहई ॥ इमि भागवत माहिं विधिकहई ॥  
 सकल प्रनाम प्रभु कर कोई ॥ तेहि सम दश अश्वमेध न होई ॥  
 दश अश्व मेधी पुनि जग जावै ॥ कल प्रनामी वहरि आवै ॥ ॥  
 यग रवमि गिरे विद्या बश परई ॥ निवस नाम हरि बंदन करई ॥ ॥  
 तामु महा अब संचित नाशे ॥ प्रीति सहित फल कोन प्रकाशे ॥  
 बंदन की निदान पति आछे ॥ यथा भये बहु आगे पाछे ॥ ॥

दो० हरि प्रनाम महि मा अमित को करि सकै बरधान ॥

तेहि ते बंदन राम की करहु मानि कल्याण ॥ ॥

चौ० सतये भक्ति दास्य असनामा ॥ दास भाव है सैवै रामा ॥ ॥ ॥

जासु नाम मुमिस्त अघ जरई ॥ जासु चरणा जल भव रुज हरई ॥

जासु कटाक्ष चहै विधि ईशा ॥ भजे जाहि सन कादि मुनीशा ॥

तेहि प्रभु केर दास जब भयऊ ॥ कौन कर्म बाकी रहि गयऊ ॥ ॥

तिनका कछु न चाही कबहीं ॥ दास भये पुर स्वारथ सबहीं ॥ ॥

दास भाव बिन जरनि न जाई ॥ इमि दुबीसा कर्यो बुझाई ॥ ॥ ॥

जो जावत हरि जन नहिं तावत ॥ सुकृत सुधन रागादि चोरावत ॥

दास भये धन हरता जेते ॥ लगहिं भक्ति साधन महं तेते ॥ ॥ ॥

भगवत होत सकल औ पारा ॥ होत सुखद सुचि मिरत बिकारा ॥

दास सरिस प्रिय प्रभु ब्रुन कोई ॥ रघुपति तिलक सांफ हम जोई ॥

बैठे जहं सब सब विधि चीन्हा ॥ तिलक दास हनु मानै दीन्हा ॥

दो० काय बचन मन कर्म करि सो अरुं भगवान ॥

विधि निबेध नहिं नाथ बश दास भाव सो जान ॥

नारायण को दास जो भयो न लहि वरवृत्ति ॥

जियत सो सब सम कहत इमि पागसर असमृत्ति ॥

चौ० अष्टम भक्ति सरवत्व कहवि ॥ रघुपति सखा परम सुख पावे ॥

नंद गोपिका अरु ब्रज बासी ॥ भये मित्रता करि सुख रासी ॥ ॥ ॥

निशि चर पति मुग्धीव निषादा ॥ भये सखा करि सहित विषादा ॥

अपर मित्र प्रति स्वारथ चाहै ॥ राम सखा सुखते सुख लाहै ॥ ॥

अपर सखा कोउ जाइ बिदेशा ॥ तेहि बियोग दुख होइ अंदेशा ॥

अंतर यामी राम कृपाला ॥ निकट रहत सन्तत सब काला ॥ ॥

अपर मित्र में अस गुण नाही ॥ जस गुण हैं रघुनन्दन माहीं ॥ ॥

बहि ते सब सुख तुच्छ बिचारी ॥ श्याम सुंदर ते कीजै यारी ॥ ॥



मन मल्लीन पूरव कृत दोषा ॥ पुनि तमिं डारन करि रोषा ॥ ॥ ॥  
 ताते सं श्रुति पुनि पुनि लहरै ॥ किमि उडार होइ श्रुति कहई ॥  
 जिमि कोइ फेनु पकरि नद बहेऊ ॥ किमि उत्तरे फिरि फेनुइ गहेऊ ॥  
 वासु देव बोहित सुख धासा ॥ सकल विश्व दायक विश्रामा ॥  
 नब लगति न में प्रीति न करई ॥ तब लग कर्म सिंधु नहिं तरई ॥  
 दो० प्रभु पद प्रीति सो होत ही भिटत विविध सुख दोषा ॥

सकल सुसाधन केर फल यतनै करिय न मोष ॥

चौ० नवई भक्ति सुनौ मोहिं पाहीं ॥ आतम अर्पन सम कोइ नाहीं ॥  
 जो निज देहा दिक प्रभु पासा ॥ करै समर्पन तजि सब आसा ॥ ॥  
 सो निह चिन्त रहत सब काला ॥ तासु फिकिरि प्रभु करत कृपा ला ॥  
 जिमि कोइ दृष्य अश्व निज बैबै ॥ तासु यत्न हित रहत निशोषै ॥  
 राम मया भाजन सो अहई ॥ हरि ऐश्वर्य प्रोक्ष ते लहरै ॥ ॥ ॥  
 तर्क शास्त्र अरु नय विधि चारी ॥ अहै जीव कहं सब सुख कारी ॥  
 ते सब निगन नीति अनुकूला ॥ करैं भली विधि नहिं प्रति कूला ॥  
 परम पुरुष श्री पति गुरा सागर ॥ अन्तर यामी एम उजागर ॥ ॥ ॥  
 तिन का आतम करै निवेदन ॥ तौ सब सौच जानिये खेदन ॥ ॥  
 तन मन हरि हिहि अर्पन कीना ॥ तौ धर्मा दिक फल पर वीना ॥  
 गुणातीत सोइ अहै विवेकी ॥ नृप बलि केरि देक निज देकी ॥

दो० तेहि ते सर्वसु अर्पि कै निर्भय हरि गुरा गाव ॥

आखिर इक दिन कूरि है अब सुनु शरणा प्रभाव ॥

देव पितर ऋषि भूत कर ऋणी अहै सब कोइ ॥

हवन आहुति अध्ययन बलि कर नित तब पुच होय ॥

नाहित सब विधि कर्म तजि गहै शरणा हरि कैरि ॥

तब कूटे ऋणा पाप कोइ तेहि तन सकै नहेरि ॥

अथवा ऋणा दीन्हे बिना रहै व्योहर आधीन ॥

सो नर इमि दिन भौं जिमि जरणी धनिक बस दीन ॥

याते कल कपाल के युगपद सब सुख दानि ॥

परम कृपा लै जानि के शरण गहौ प्रण दानि ॥

चौ० जे नर राम चरण सुख कारी ॥ शरण गहौ जब दृढ़ ब्रत धारी ॥

प्रबल काल तेहि लखि इमि कहई ॥ यह अब हमरे बश नहिं अहई ॥

दो० देखो मुरार असुर अहि किलर खग गंधर्व ॥

काल कलेवा है रहै ब्रह्मा दिक जग सर्व ॥

वचन न कोई काल ते जहैं तक आवत दृष्ट ॥

करत घास बड़ वाग्नि ज्यों यों कह योग बशिव ॥

ऐसो काल कराल सो उरत जासु दिशि देखि ॥

जे हरि शरण गहैं ते शठ सम पशु के लखि ॥

प्रेम लच्छना प्रेम करि रहत न देख संभार ॥

दृष्टा भक्ति कहा बसो यह सब ते अधिकार ॥

दृष्टा भक्ति न महै एक हू जिन राखी उर धारि ॥

सोइ बल्लभ श्री राम कहै कहा पुरुष कहै नारि ॥

सान्त् दास अरु शिष्य ता पुनि बात्सल्य सिंगारि ॥

जल महिं यहु मुक नम सुये भक्ति पंच रस सार ॥

श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि साध ॥

कहे भक्ति के अङ्ग सब सुख प्रद जन रघुनाथ ॥

इति श्री विश्वामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास-

राम सनेही कृत नौधा भक्ति बरीनी नाम षष्ठ चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ६॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गराप गिरा सुख दानि ॥

योग शास्त्र मत कहौं कछु हंसो पनि सद जानि ॥

चौ० बोले भूप बहुत सुख पाई ॥ बिन गुरु को सद पथ बताई ॥ ॥

पाता जलि शास्त्र के माहीं ॥ कहौ योग किमि सो मोहिं पाहीं ॥ ॥



कह मुनि भले सुनो मनु लाई ॥ सवन स्वल्प करि कहों बुकाई ॥

दो० आठ अङ्ग हैं योग के यम नेमासन साधि ॥

प्रणायाम प्रत्याहार अरु धारणा ध्यान समाधि

**प्रथम यम अंग**

सत्य अहिंसा दुराग्र धृत क्षमा अचाह असद्व ॥

ब्रह्मचर्य निरभे भवन गुणामुक धिराग्र सद् ॥

**द्वितीय नेम अंग**

शौच धर्म जप तप अतिथि हरि गुरु सेव संतोष ॥

सोम तोष उपकार परनिर्हल नेम अपदोष ॥

**तृतीय आसन अंग**

चौरासी आसन कहे तिनमा उभा विशाल ॥

एक पदुम दृग शुद्ध जनि सोला धै शशिसाल ॥

**चतुर्थ प्रणायाम अंग**

चतुर्थ प्रणामें करे षट् चक्र को साधि ॥

एक अधार स्वाधिष्ठान पुनि मनि पूरक को बोधि ॥

चौथा अग्रह चक्र कहि पचवाना भवि शुद्ध ॥

छठवा आज्ञा समुक्ति कै जपे मंत्र रा शुद्ध ॥

पूरक में षोडश जपे कुंभक में चौसट्टि ॥

रेचक में बत्तिस कहै हरे हरे जनि हट्टि ॥

ज्यों ज्यों ठहरै पवन उर त्यों त्यों मंत्र बढाय ॥

कुम्भक आठ प्रकार की सुनो कहों अवगाय ॥

प्रथम सूरज भेदनी पूरे पिंगल बात ॥ ॥

रेचै बाये रोंकि करु हरै वाय रुज गात ॥

उभै उजाई पवन की पूरि धरै उर माहि ॥

ईडा तरे चन करै कफ रुज ले धर जाहि ॥

तीसरि सीत जो कारणी भय ध्यान ते यौन ॥  
 श्रीश्री कहि सुख ते तजै भजै कृधातिर यौन ॥  
 चौथि सीतली पूरई जीह बदन ते प्राव ॥  
 रोकि नेवारै नाक तेहि करै बहू ते ज्वान ॥  
 पचई भास्त्रिक स्वास ते मरे तजै अति शिष्ट ॥  
 एके करै रवि शशि वृहरी मिटे विविध रुज विष्ट ॥  
 छडी धाभरी भंग धुनि मरे स्वास ते वाइ ॥  
 रेचै ताही शब्द ते मन चंचल रह राइ ॥  
 सतई मूछी नाम को सुमिरे सास उसास ॥  
 प्रभुइ मिलावै दुख हरै करै पैद दुख नाश ॥  
 अठई केवल जो कही प्रथम मंत्र गनाय ॥  
 सो कुम्भक मो सिद्ध है जिमि मनु बन में राय ॥

### पंचम प्रत्याहार अंग

पंचमा प्रत्याहार जो बिषे वार मनु जाइ ॥  
 धरि लगावै ध्यान में ज्यों निज सुत को माइ ॥  
 तब अपा पुइ बस होइ है जिमि बनि आकर भूत ॥  
 तदपि सजगर हिये सहारि पुत मजानि कपूत ॥

### षष्ठ धारणा अंग

षष्ठम धारै धारणा पाँचो तत्त्व न करे ॥  
 प्रथमै गुरु गोविन्द की आराधन हि य हेरि ॥  
 काल ज्ञान तेहि नरेवे जो अरयो विविध प्रकार ॥  
 चक्षु बक छाया पुरुष दीप गांधि ध्रुव तार ॥  
 मूत्र दिहिलो दिव जपे धारा अल लहिर सात ॥  
 तालू लों पित पान दिन रक्त मन सुख बात ॥  
 अथ य विविध प्रकार की हैं सुरही में लेखि



जो सब समुझा चहे तो लेइ मरि देइ हरि ॥

### सप्तम ध्यान अंग

सत्यों अंग है ध्यान का सोउ चारि विधि सीत ॥  
 पदस्थ पिराड स्थ रूप स्थ बाँधो या रूप अतीत ॥  
 पदस्थ सो जो श्री राम के चरण कमल उर लेइ ॥  
 नख शिखलों कवि निरखि पुनि पावन मर्म मनु देइ ॥  
 करते करते ध्यान यह हरि को प्रापति होइ ॥  
 की कुम्भक करि प्रणव युत जाप ल पावे सोइ ॥  
 दूजा ध्यान पिराड स्थ है सो धी पिराड सरोज ॥  
 भमर गुफा चदि युक्ति ते वली कोल है खोज ॥  
 रूप स्थ ध्यान तो सर सदा चित वे भु कदी बोर ॥  
 लखे जोति उडमाला शिखरि प्रकार सब बोर ॥  
 चौथा रूप अतीत सो ध्यान शून्य का होय ॥  
 करत शून्य है आप हर है न भव रुज कोय ॥

### अष्टम समाधि अंग

अठवाँ किह समाधि के आपा जात न साइ ॥  
 ध्याता ध्यान जु ये कहै मिले तुरी में जाइ ॥  
 अष्टांग योग जो मैं कहौ सो तुम समझौ तत ॥  
 अब सुनु जो षट् करम में प्रथम कोहे जात ॥  
 प्रथम मैं नेती नाक ते डारि दुहे मुख बोर ॥  
 दूजा धोती भीन पट निगलिति करै कोर ॥  
 तीजा बस्ती गुदा ते नीर खेंचित जि देइ ॥  
 चौथा गजजल पुक्ति युत रोचि उदरि भरि देइ ॥  
 पंचवाँ न्यौली कर्म ते न ले बिलोइ जाहि ॥  
 छठवाँ जाद कद्गान की पलक लगावे नाहि ॥

अब मुनु मुद्रा पंच विधि प्रथम रवेचरी होय ॥  
 सुख में तासु निवास है बहवें जीभ बिलोय ॥  
 दुसरी मुद्रा भूचरी नासा जासु निवास ॥ ॥  
 प्राणा अपान जुही जुही करि है वै एक पास ॥  
 तीजी मुद्रा नाचरी बसें हगन विच सोपि ॥  
 नासा आगे हृदि धरि है वै अचरज गोपि ॥  
 चौथी मुद्रा गोचरी करत अवशा में बास ॥  
 ज्ञान सुरति एक होत है अनहद शब्द प्रकाश ॥  
 पचई मुद्रा उन मुनी बसें सो दृश्ये द्वार ॥  
 पावें सिद्ध समाधित हैं होइ बासना छार ॥  
 बंधन चारि प्रकार मुनु महा बंध पुनि मूल ॥  
 जालंधर उड्यान चहुं हरे हृदय की मूल ॥  
 योग क्रियार घुनाथ सब बरणी मति अनुसारि ॥  
 गुरु विन सधतन समुक्ति तोहि कीन्हों नहिं विस्तार ॥  
 योग तपस्या कि किहे मिले अरु सिद्धि अरु सिद्धि ॥  
 तिन में बहै न चतुर सोइ अब मुनि तिन की रूढ़ि ॥  
 प्रथमैं अनिमालघु करे दूसरी माहे मा मोद ॥  
 तीसरी लघिमातूल सम गारिमा करे बडोर ॥  
 पचई प्रापति चहुं तहों फिरे आवे प्रतिहाल ॥  
 छटी प्रकाम सुव पुधरे सतई सता जाल ॥  
 बसी करल सिद्धि आठवीं करे चहे तेहि बस्म ॥  
 राम भजन विन वादि अब मुनयक कम निधि दस्म ॥  
 महा पद्म अरु पद्म पुनिक क्षाप मकर मुकुन्द ॥  
 शङ्ख रवर्ष नीला रये नवई निधि जु कुन्द ॥  
 शिखि सिंधु भई तो क्या भयौ जो न भज्यो रघुवीर ॥



खगबहु उड़त प्रकाशमें कृपिबहुनां घतनीर ॥  
 लोक रिभाये हानि बडिला भुक्त सनमान ॥  
 वाहवाह कहि भाड के सप डसन गेशान ॥  
 तेहि तें चै विधि को जिये हरिको सुमिरन सार ॥  
 सत्य मिति नाथ फिरि कहैं सहित विस्तार ॥

चौ बोला कूं ॥ सुनु सुमिरन की बात कहैं अब लोहिरे ॥ जोहि-  
 ते इति न सहित प्रचल मन होहिरे ॥ यद मासन को करे न तो-  
 सिध जानिके ॥ मेरु दगाड समरा विचि बुक उर प्राणिके ॥ ना-  
 सा पर करि हृष्टि के दी राम को ॥ सुमिरे भांस उसा सराम ही  
 नाम को ॥ रदता मिले मिठास प्रास प्रागे पौरे ॥ अगिन फूल से  
 प्रथम पुर हलायत करे ॥ कछु दिन में लखि पौरे दीप की जोति  
 जू ॥ पुनितारन की माहं बिंदु दुति होति जू ॥ सनदूर सनदूर सो-  
 म सूर बहू देर बई ॥ सहसकमल पर परम प्रात महि पेर बई ॥  
 बड़ी बिरह की लाय पाय सुख राम ही ॥ मिल मिल मिल मिल  
 जगत तेज में भाव ही ॥ ज्यों जल निधि में बूडि वलों के माहि जू ॥  
 दश दिश दरंशे जलें प्रोर कछु नाहि जू ॥ बाजें अनहद नाद  
 तहो दश भांति जे ॥ बरनोति न कीरीति रहनि है जात जो ॥ प्रथ-  
 म भंवर गुञ्जार अङ्ग पुलकावई ॥ पुनि सुनि ने परनाद सु प्रा-  
 लस प्रावई ॥ तीसरे धुनि सुनि शङ्ख प्रेम पीड़ा जंगे ॥ चंदे अ-  
 मल सुनि घंट शीस घूमन लगे ॥ पंचम वावाज तताल अमी  
 बरसाव ही ॥ षष्ठम मुरलितजिकराह तरे सोइ पाव ही ॥ सप्त-  
 म भरी सुनत बंदे छवि मार की ॥ अन्तर्यामी होय लखै गति दू-  
 र की ॥ अष्टम प्रकनि मृदु नाद अनहद सुनै ॥ अपरन जा-  
 नै कोइ काल यहति है गुनै ॥ नवमन फीरी सुनत अगोचर हो-  
 यजू ॥ चंहेत हां बलि जाय न देखै कोय जू ॥ पुनि होवै अस्थूल

दशा सब देवकी। दस ई के हरिनाद सुनत अहमेवकी। गोंठि-  
 कठिन खुलि जाय होय सो अहही। सतचित्त आनन्द रूप मि-  
 टै सब कर्म हो॥ जिमि हीम मलि मिलि उद्दि कहां वै उद्दि  
 ही। होय बहि संग बहि दहत जो संग ही॥ करै सहाय ह ध्यान  
 वै ठि ए कांत में। अल्य असन अनुरक्त रहै सतांत में॥  
 नाहित निज पग पानि मूदि नव द्वार को। सुने सुरति तै शब्द अ-  
 नेक प्रकार को॥ भायत जन धुनाय सने ही राम के॥ भयि य-  
 ही करि सन्त निवासी धाम के॥ जाचै है हरि भक्ति भजे अवता-  
 र में॥ करै ध्यान सब अह सुभक्ति गुरु द्वार में॥ जपे इष्ट को नाम  
 प्रेम मन ठानि कै। सदा सर्वगत ईश सर्व को जानि कै॥ सुंदर स्था-  
 म स्वरूप इष्ट उर आव ही। ब्रह्म लोक का सुख नत बतै हि भा-  
 व ही॥ अन्त भावना सरि सलै है भगवन्त के। प्रभुता कर प्रभु  
 पुनि प्रतिपालक संत के॥ अल्प इष्ट को अल्प भूरी को-  
 भूरी है। चाहवन्त के निकट चाह विन दूरि है॥ कहत उपनिष-  
 द वेद सोई सो पार है। जो जन करी। करै करि ही सार है॥ क-  
 रनी ही है करु करि ही सिद्धि है। विन करनी नहिं होत किसी-  
 की वृद्धि है॥ ताते जन धुनाय सुकरनी की जिये। असन बि-  
 नानहि होत तृपित सुनि जो जिये॥

दो० सिपत करै को खंड की धरेन मुख अमिराम॥  
 लै है स्वादर धुनार्थ किमिति मि सुमिरन विन नाम॥  
 हरि सुमिरन कीन्हों नहीं कै से मुख सरसाय॥  
 हर दी जर दी तब बंदै जब मर दी भल जाय॥  
 सुमिरन विन जानै कहा कै हारि नाम प्रभाव॥  
 जिमि मानिक के माल को मानिक परे बैपाव॥  
 कुटिल कृत घनी कूरे राम तत्व जनि गाय॥



अथेकरहीरापरीदेईदूरिचलाइ ॥ ॥ ॥  
 रामतत्वगुरुभक्तकेहिहियेजानिकुतत्र  
 पदिक पारखीसेइगोहोइनकोकरअन  
 वेदरुशास्त्रपुगगाकरकह्यो जौआपकमत्व ॥  
 अबसुनुभायों स्वत्यंमंतिनमबहिनकोतत्व ॥

कुराहुलिन्याचारिवेदकेअंगवदग्राह्यसुत्रव्याकर्गा।  
 शिक्षाज्योतिषइंदविधिधुनिनिरुक्त निजवर्गा ॥ धुनिनिरु-  
 क्तनिजवर्गवेदकेहु उपवेदा। त्रिगुकाअउरतस्थचिकित्साशा-  
 स्त्रअपरेवदा ॥ यजुर्वेदकाधनुषेदततसुहृशास्त्रकहि ॥  
 सामकेरगंधर्वतस्थसंगीतशास्त्रसहि ॥ सहीअथर्वगाको-  
 अथसित्यशास्त्रयुतधारि। अपरमिमांसाआदिहैहैध-  
 दशास्त्रविचारि ॥

चर्यदहं० तत्त्वमसीकहैश्यामवेद। ब्रह्मजीवहैप्रकृति  
 मेह ॥ अज्ञानहैरिगुवेदबयन। शीवस्वयंज्ञानहैअयन ॥  
 ब्रह्मअस्मिपदयजुर्भारि। चैतनसबमेहैभरतसारि ॥ अं  
 ज्ञातमाअथर्वनआह। मेरीसबकोहुभरतचाह ॥ सकलवा-  
 क्यकोयहीअर्थ ॥ ब्रह्मजीवमायाअनर्थ ॥ अपसुश-  
 स्त्रमतसुदुसुजान। जेहिविधिधुनिवरकरतगान ॥

हो० प्रथममिमांसाशास्त्रकेजैमिनिधुनिआचार्य ॥  
 धर्मविधेरधुनाथभनिस्वर्गादिकफलकार्य ॥  
 इतिरैवैशेषिकशास्त्रतस्याचार्यकनाह ॥  
 शून्यपहारथज्ञानफलभावाभावविवाद ॥  
 न्यायशास्त्रंगौतमरिखैभाष्योतर्कविशेषि ॥  
 प्रामानादियोडसअर्थबोधप्रयोजनलेसि ॥  
 चतुरथपातंजलसियोयोगशास्त्रसुखसूत्र ॥

विद्येनिरोधनचित्तविरतिनासकसंस्त्रितसूल॥  
 पचदोशास्त्रजुसारव्यके कर्त्तीकपिलयोगीस॥  
 प्रकृतिपुरुषनिरणो विद्येहेतुत्रिविधदुखरबीस॥  
 यद्यमशास्त्रवेदांतकेऽप्राचारजमुनिव्यास॥  
 ब्रह्मजीवकीयेकताविद्येभोक्षफलतास॥

सो० सर्गविसर्गऽप्रस्थान। पोषनउक्तिमनोतरपि॥

मुक्तिनिरोधदूसान। प्राश्रयदशपुराणामत॥

दो० वेदस्मृतिधुनिसंहिताऽप्रागमनिगमपुराण॥

एकवाक्यातासवनकैवेद्यएकभगवान॥

एकनगरकेबहुतपथसखसूधचलिजात॥

अंतप्राप्तिरेकै नगरत्योशास्त्रनकीबात॥

वेदशास्त्रनसहितजालरेवेकाव्यकीरिति॥

तौनहोयसंदेहकहुज्योपुत्रनकीप्रीति॥

परिलक्ष० चोहटहाटसमानबेदचहुंजानिये। विविधि  
 भौतिकीबस्तुविकततहंमानिये॥ जोजेहिरुचैसोलेइदेइ  
 धनधामको। परिहांलीन्ह्यो जनरघुनाथरत्नहरिनामको  
 पावनपरवतसरिसंवेदऽप्ररुशास्त्रहै। विविधिभौतिकीधा  
 तुरहततिनमाश्रुहै॥ जोजेहिरुचैसोलेइभलैहितमानिजू  
 परिहांसन्तनलीन्हीभक्तिमनिनकीखानिजू॥

दो० वेदविपिनिबूटीवचनहरिजनकिमिश्राकार॥

खरीजरीतिनकेकनेरेवाटीगहतगंवार॥

श्रीगुरुदेवाहासकेचरनकमलधरिमाथ॥

इतिहासायनग्रन्थयहपूरकीनरघुनाथ॥

गीतिकाछंरघुनाथगुरुपदमाथधरिकह्योरामयश  
 हितमानिकै। करन्यानकरतापुरायमतो पापहर्त्ताजा-



निके ॥ कहि हैं जे सुनि हैं सहित नेह विदेह गति पै हैं सही ॥  
मन काम करुणा धाम को शुचि नाथ सो दृढ़ करि गही ॥ ॥

दो० रास चरित गावन सुनत बिषन करत जो कोइ ॥

जन्म अतिहि उदर में रोग जलंधर होइ ॥ ॥

विश्रामोदधिकं ग्रंथ मंती निष्प्रयन है तात ॥

इति हास यन कृष्ण यन रामायण सुखदात ॥

चौ० प्रथमायरा परमान गनाई ॥ उनइ ससै सत्तर चौपाई ॥

दोहा छंसे पचास सो हाये ॥ उनइ त्तरि सो स्या गनाये ॥ ॥

कुराड लिय चौबिस पहि चारों ॥ तोटक छन्द अठारा जानों ॥

कुकुभा चारि मालिका दोई ॥ अष्टपदी तेरह हैं जोई ॥ ॥

नामर उनइ मचर पट साता ॥ हरियक अठ भुजंग प्रयाता ॥

मुनि मधुमार सरयिका बारा ॥ रोला मनु अष्टोक्त अठारा ॥

बारं देती निषवैया चारो ॥ युग पंकज बाटिका निहारी ॥ ॥

शशिसमानिका पद्म सुन्दरी ॥ दोधकती निमुप्रिया दुंदरी ॥

एकइ सछं पै तारक चारो ॥ हैं छविस गीतिका करारी ॥ ॥

हरि गीता कुकर हल मरासी ॥ चिन्ता मनि मधुहिर निगोपासी ॥

कामाकमल बिजे हरि लीला ॥ निसिपालिका मनोहर सीला ॥

श्री अमृत गति अमृत युक्ता ॥ एक एक ये छन्दे मुक्ता ॥ ॥

दो० अर्द्ध भुजंगी संयुता करयां द्वे द्वे धीर ॥ ॥

शशि मुख दीपक याद कटि चारि मुनि धीर ॥

वीस वनुष्यद हंस कल उभे अरि ह्न औत्तान ॥

चारि सहस पुनि पांच सत है अष्टोक्त प्रमत्त ॥

हरि प्रेरित रघुनाथ जन जो कहु कीन बाधान ॥

विश्रामोदधिके विषे सो जानी विद्वान ॥

विद्वन विन जानि कहा विद्वन को पैस मे ॥

जैसेयंभाइस्तिरोधसर्पारकोमर्म॥ ॥

दुर्जनहंवेदोषपरंपरेनहिं गुरासील॥

लक्षपुहरकेमहलमेंखोजतछिद्रथोला॥

संस्कृतशाकृतपारसीविविधिदेशकेबैन॥

भाषाताकोकहतकधितथाकीनमेंऐन॥

इति श्रीविद्यामहासागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीमज्जमज्ज  
तमिजवकजानकीरामस्यानुगानुगातुं श्रीरघुनाथदासरामसेने

हीनिमितायांसतचत्वारिंशोऽध्यायः

इतिहासायनखराहसमाप्तम्

इति



श्रीगणेशायनमः

## अथविश्रामसागर

श्रीरघुनाथदासरायसनेहीरुतकृष्णायना

॥ स्वराडप्रारम्भः ॥

### भुजगप्रयातछन्द

नमोशास्त्राक्षरदाज्ञानबुद्धिं । नमोगुरुगणेशंहरनिघ्नसिंहं ॥  
नमोगामधनश्यामकामस्वरूपं । नमोजानकीजक्तमाताअनू-  
पं ॥ नमोभारतंजयलक्षणाशत्रुप्रारी । नमोकेसरीनन्दनमुकव-  
कारी ॥ नमोदीनदानीसदाशिवभवानी । नमोविष्णुकमलन-  
मोब्रह्मवानी ॥ नमोमीनवाराहनरसिंहकूरस । नमोवायनं पर-  
शुरामातिसूरम् ॥ नमोकृष्णवलविध्यैभानंकिशोरी । नमोका-  
लिकेदेवैत्रेनोसकीरी ॥ नमोसारयूगगधूमानुधर्म । नमोवेदव्या-  
सनिगम्हरीभर्म ॥ नमोऋद्धिप्रार्थीसहस्रुद्धिराशी । नमोस-  
न्तप्रानन्तभुक्तिप्रकाशी ॥ कहतदासरघुनाथपुराहाथजो-  
रे । करेसर्वजगत्कृपाहृदिमोरे ॥

दो० जातेकृष्णरूपालकेकहैंचरितचित्रचोर ॥

अथैप्रमितप्रखरनमितहोइरमितलखिधर ॥

चौ० रामभक्तिकीमुनिप्रभुताई ॥ पुनिमौनकबोलेधिरनाई ॥  
नाथबचनतवप्रमीसजाना ॥ नृपनहोतउदाधममकाना ॥  
तेहितेप्रवकरुणाकरिगावो ॥ कृष्णचरितकहुमोहिंसुभांवा  
मुनिसुमंत्रबोलेहरवाता ॥ भस्मीप्रणाकीन्हेंगनुवताता  
सुनोकहैंहरिचरितमोहाय ॥ जोनपरीखेतनेथुकगावे ॥

सोसवकरिसंक्षेपवरवानों ॥ आदिहितेतामिमन आनो ॥  
 द्वापरकृष्णालीनप्रवतार ॥ कोन्हेंचरितअनकप्रकार ॥  
 कलिआवतगदनेनिजलोका ॥ सुनिपाडवनकोनप्रतिशेका  
 राज्यपरीक्षितकासोंपाई ॥ अपनाबलिहेवारैजाई ॥ ॥  
 विश्वराजजवतेनृपभयऊ ॥ परजनकहबहुविधिसुखदयऊ  
 एकदिवसकासुनोहेवाला ॥ बिजैहेतनिकसामहिपाला ॥  
 दो० एकदौरदेखतभयौबुधभएकएकगाय ॥ ॥

भयवसभागेजातहोउयकनरमारतजाय ॥

चौ० तेहिंकेचिन्हनृपनकेऐसे ॥ करतबकरतनीचजनजैसे ॥  
 तबलौभूपनिकटचलियऊ ॥ वृषभधेनुतेवृक्षतभयऊ ॥  
 कोतुमप्रहैजातकितभागे ॥ यहकोहिंमारतकेहिंलागे ॥  
 कह्यौबुधभभलनिश्चयनाहो ॥ बोलीतदसुरभीनृपपाही ॥  
 एहेंधर्मधरिओहमअनू ॥ कलिकेभयलेभागेजानू ॥ ॥  
 कलिमलमलिनकरिसवप्रारी ॥ बरगा ॥ समकेधर्मनजानी ॥  
 विप्रसुमागधगुनहिंदेहें ॥ बेचिहेंवेदधर्मदुहितेहें ॥ ॥  
 विबुधकुपंथनिरतदिटियारे ॥ किहिअवलंबहिअन्धविचारे  
 छत्रीछलमयकलिमलमूला ॥ वंचकविप्रवेदप्रतिकूला ॥  
 बनिकमहाजनसाहुसुनाभा ॥ बचनमधुरअलिकरतववाभा  
 गूढरहितनिजधर्मबिचारू ॥ अशुभजीवकाअशुभअहारू  
 धर्मसुतीरथसंचसभाजी ॥ तहेंविशेषिकलिकुटिलविगजी  
 काईसुरसरिविमलतड़ागा ॥ फूलबफलबसमयविनवागा  
 तिनकरफलपुनिदुरितडकाला ॥ विविधिव्याधिवसजीवविहाला  
 सुकृतीलघुजीवनखलनाना ॥ दाताविधनकपिनधनवाना  
 पाचकबहुजमकेहइकदानी ॥ होइहेंअगरिगतपाचकजानी  
 भूमिधीजबिनसटरसस्वाहा ॥ पाटपोरबडजाइबिवाहा ॥



नृपसरोषसबप्रजादुरवारी॥कबधौमियोदेवसबगारी॥ ॥  
 कालकर्ममहिपालअर्धना॥बरातबेदसोईमतिहीना॥  
 श्रीनिसकयदअकारणाकोहा॥करतमानुपितुगुरुतेद्रोहा  
 दोहगासुतियसाहागिानचेरो॥गुनबग्यातिअच्युतकुलको  
 बाकुरकूरसचिवमतिहीना॥होइहेंपुरुषनारिअधीना॥ ॥  
 धनीकुलानगुनागरसोई॥धनीसुसाधुपदपिखलहोई॥  
 साधुसुसीलसुजातिसुजाना॥धनविनसहिहेंदुरवअपमाना  
 बकताविपुलसुनीनहिंकोई॥गुरुशिष्यअन्धबधिरगतिहोई  
 उपदेशकअचारासलीना॥बेचिहेंधनहितनामनगीना  
 चतुरचोरभटजेबदवारी॥सबनरनारिसुमनरुचिकारी॥  
 गिरहीरंकयतीधनवाना॥अद्रुपारिकाविप्रकिसाना॥  
 निरबलसाधुसकलखलकासी॥दाससुजातनीचजनस्वामी  
 मृत्तिकापानअभूषणाकेसा॥परिकरबसनबिछोनासेसा  
 जादिलकुभक्षकसिद्धशरीरा॥परधनपचैवतेबड़धीरा॥  
 जीवनधोरदुराशाभारी॥सत्यकहवतेहोबलवारी॥ ॥  
 चलिहेंसुरुचिअनेकनपंचा॥होइहेंलुप्तसुभलसदग्रंथा॥  
 सोइसदग्रंथजहोहरिनामा॥धर्मविवेकभक्तिअभिरामा॥  
 सुतपितुदूषककरबिनव्यांह॥पुनिरिपुहोबनारिमुखचोइ  
 दो॥ तीसबरसकीआयुनरहोईकलिअधिअइ॥

अथअबदकीकामिनीजनमीसुतपतिपाइ॥

चौ॥सुरुचिकुसंगअरुचिसतसंगा॥तुलसिहिहंसवसाराहवभंग  
 यतिबिंधपरपतिरत्तनारी॥पण्डितबाजबपरमलवारी॥  
 कबिकारिसारवीशब्दबगवाना॥निदिहेंहरिहरवेदपुराना॥  
 तजिकुलकुटुम्बहोबबोरीगा॥तिनहुनमाहिंदरयनालागी॥  
 भेषविमदवातनमेंसूरा॥भक्तिभजनमेंकादरकूरा॥ ॥ ॥



जोकोइ हरि सुमिरन परकासी ॥ करिहैं सब मिलित न की हासी ॥  
 गांजा बरसत माल उड़ाई ॥ होई कलितेहि केरि बड़ाई ॥ ॥  
 जोतिहैं हरनहि केइ कबधी ॥ रही न नेकु धर्म की सधी ॥ ॥  
 विद्या बनिज कुरी सेवकाई ॥ होई फल लघु अथ मग्नि अधिकारि  
 दो० तरु बड़ भाऊ बिठपसम सुरभी प्रजा समान ॥

मेघ बरसिहैं सो सुसमबधेन जामिहैं धान ॥

चौ० कलिके दोष कहे कहु गार्ड ॥ सुनहु जे प्रहैं सुनौ सो राई ॥  
 कलियुग मन कर पात क नाही ॥ पुराय पुनीत मनोरथ माहीं ॥  
 बाचक पाप जाइ पछिताये ॥ सरयू सरि हरि पद जान्हाये ॥  
 कायाति पात क जो होई ॥ बिन भोगे छूटत नहिं सोई ॥ ॥  
 सत युग देश ग्राम चेतानी ॥ द्वापर कुल कलि में कर जाही ॥  
 कलि में राम भक्त न धरिहैं ॥ तेवहु जीव कृतारथ करिहैं ॥  
 राम भक्ति करि करि नर नारी ॥ भव सागर तरिहैं यह भारी ॥ ॥  
 काल कर्म गुण प्रकृति सुभाऊ ॥ भक्ति समीप जात नहिं काऊ ॥  
 कृत युग जो गति ध्यान किहेते ॥ चेतायुग मखदान दिहेते ॥  
 द्वापर युग हरि पूजन ठानी ॥ पावत रहैं जौ न गति प्राणी ॥ ॥  
 सौ गति कलि हरि के गुण गोये ॥ पैहैं नर जपि नाम सुमाये ॥  
 कलि के बल परमारथ हेतू ॥ राम नाम भव सागर सेतू ॥ ॥  
 साधन नाम सिद्ध कल नामा ॥ जेहि न प्रतीत नाहि विधि पाया ॥  
 धर्म चारि पद कलियक दाना ॥ जेहि नेहि भांति किहे कल्याण ॥  
 जब सुभयथ सकल मिटि जाई ॥ तब कहु हारि अब तरिहैं प्राई ॥  
 मुनि नृप को पि चलाव लिवोरा ॥ रखन नाम सुने नहिं सोरा ॥  
 तब कलि डेरि पचराग मं परऊ ॥ बहुत भांति अस्तुति अनुसरे ॥  
 जो कहु आय सुहोइ तुम्हारा ॥ सोइ मकांजे याही वारा ॥ ॥  
 जव लगुइ न जग राज करीजे ॥ तब तक आपन प्रमलन कीजे ॥



देहु माहिं प्रस्थान बताई ॥ जहं हस बसनु कटक युत जाई ॥  
 दूत चोर गरि का मद्याना ॥ कनक बसहु इतने प्रस्थाना  
 मुनि नृप मुकुट वेठ सुख पाई ॥ सुरमति निदी प्रसुरमति आई  
 बला भूपक कुतूया सतावा ॥ शृंगी जर थिके प्राश्म प्रावा  
 ध्यान दिखत लखि मन अनुमाना ॥ हेमैं देखि गानि सब कधाना  
 मृतक सर्प धनु कोर उठाई ॥ कंदल पेदि चलयो हर पाई ॥  
 सुन्यो सुवन शं गी जर थिके ॥ प्रावातुर तपित को नरे ॥ ॥  
 दो० पन्नग कंराठ बेलो कि कै ही न्हें सिखा परिसाई ॥

सतये दिन नरपाल का कोटि लक्षक जाई ॥ ॥

चो० कादि उगत वपित हि जगावा ॥ भूपति को बिरतान सुनावा  
 आप ही न मुनि प्रति रिसि योने ॥ कोन्हें निपट प्रकाज प्रयाने ॥  
 जेहि केवल त विविध सुख को जे ॥ ताहि किच ही दयाइ प्रसदी जे  
 सुचि सेवक कहु चूके कवहीं ॥ चतुर खा भिले हित जन नत वह  
 धर्मवान जाई नृप रेसा ॥ नहिं जानियल प्रब प्रावै केसा ॥ ॥  
 प्रसकहि जर थि चलि भंचित बेला ॥ भूपो ह्यो धंदे न केहेना  
 यहौ मही पति मुकट उतारा ॥ तब मन घोच कीन्हू अधिकारा  
 कोन कर्म कीन्हें ॥ में प्राजू ॥ हीडि कहु बड़ दोष प्रकाजू ॥  
 जोया कर फल मेहि विधाता ॥ दिहु प्रकृत तन तौ भलि वाता  
 तिहि प्रोसर जर थि पहुंचे प्राई ॥ लखि नृप पदो चरका प्रदुलाई  
 बाले चर थि भइ लुहें सरापू ॥ सजग होउ प्रब होत प्रापू ॥  
 कह नृप प्रति बड़ दोष हमारा ॥ थोर हो मात बतने निवारा ॥  
 नृप तुम कहु प्रय राधन कीन्हा ॥ होनहार हे परबल चीन्हा  
 सुग मुनि दनुज नागर भाही ॥ होनी दारि सकत को उनाही  
 हरया ॥ कुश दस कंधर कंशा ॥ श्री गे भये भूरि इति बंशा ॥ ॥  
 जीवनाहत बहु किहि निउपाई ॥ काल पाइ को उबने न राई



मरुड कपोतै चह्यो बचायो ॥ प्रजगर के मुख में धरि आयो ॥  
 होनहार जो सुन्दर होई ॥ लो जग मारि सके नहिं कोई ॥ ॥  
 कनक कसियु प्रह्लाद दे डाटा ॥ का करि सके बाट बहु डाटा ॥  
 बालि बधन सुग्रीवै चाहा ॥ कहों बैर करि कीन्हि निकाहा ॥  
 चन्द्र हास का सब जग जाना ॥ का कीन्हि सि करि यतन दिवाना ॥  
 अंबरीष पर रिस प्रति कीन्हो ॥ मुनि वर को निबड़ाई लीन्हो ॥  
 सखि बसुधन्वै चह्यो जरावा ॥ शंख लिखित फल आबु दुपावा ॥  
 मुकुचि बह्यो ध्रुव वरहि बिनाशा ॥ राम रूप अचि चल भयो रासा ॥  
 पाराडु सुत न कह बहत साइनि ॥ दुरोधन कहु कीन्हि पाइनि ॥  
 ब्रह्म अरु अतब ऊपर पैरा ॥ दोरा पुत्र का कीन्हि हितेरा ॥ ॥  
 जा की मोत नि कट जव आवै ॥ तेहि रसु के रस पै हें जावै ॥ ॥  
 तेहि ते होनहार है जेती ॥ नीकि जबूनि होति है तेती ॥ ॥ ॥  
 सन्त वहैं कहु देहिं मिटाई ॥ अपर न दारि सके कोइ राई ॥  
 अस कहि अर्था ने ज प्राश्रम आयी ॥ भूषतु रत मुनि सहज सुभायी ॥  
 राज का जतजि सकल प्रवास ॥ आइ की नंगान टबासा ॥  
 व्यास परासर आदि मुनीश ॥ जुरु आइत हें बहु प्रवनीश ॥  
 को उकहै करो भूप गोदाना ॥ काउ मुनि बरतवत वै नाना ॥  
 दो० तेहि प्रबसर शुक्र देव जी आयि ने गधरंग ॥

ताल बजावत बालन बहु डारत लै रज अंग ॥

चौ० शुक्र हि देखि जे रहे प्रखाड़े ॥ ज्ञान विरध लखि भे सब ढाड़े ॥  
 प्राप्त न दीन भूष सनमाना ॥ प्राप्त न जन्म धन्य करि जाना ॥  
 बोलै बहुरि जारि युग पानी ॥ कहों भद्र की बात बरबानी ॥ ॥  
 हे नरेश मन शोचन कीजै ॥ नृपखट्वांग बात चित दीजै ॥ ॥ ॥  
 उभय घरी भे भद्र गति जाकी ॥ तुम्हें सप्त दिन जीवन बाकी ॥ ॥  
 हरि चरिता मृत पान करई ॥ तुम्हें तारि देहों में राई ॥ ॥



असकहिकहनभागवतलोगे॥सांगेसुननभूपप्रदुरागे  
 प्रथमेककुकामनादेखाई॥पुनिप्रभुचरितकहेहरवाई॥  
 जगउत्तपतिप्रस्थितसंहारा॥ब्रह्मनिरूपनज्ञानउत्तरा  
 भक्तियोगबेरागविवेका॥भाअस्कन्धसमापतरका॥ ॥  
 तबदूजेमंलागलगावा॥पुनिकहुयोगरूपाकरिगावा॥ ॥  
 विधिनारदकीकथाबरवानी॥चौलीसोअवतारहिजानी  
 जगउद्धवकहिपूराकीन्हा॥लवअसकंधतीसंगेलीन्हा  
 ऊधोमिलनप्रभासविषादा॥कह्योविदुरमंत्रिसंवाहा॥  
 सप्तविकारसहितब्रह्मराडा॥रूपविराटकहतभेअराडा  
 सुक्ष्मथूलकालकीकरणी॥पुनिब्रह्माकीउत्तपतिवरणी  
 विधिहियायाक्षधराजिमिआनी॥वराणीकीउत्तपतिबरवानी  
 शंभूमनुसतरूपाकेरी॥कहीकथात्रैसुतानिवेरी॥ ॥  
 पुनिकरदमकाकह्योबिहारा॥नवकन्यननेसृष्टिअपारा  
 देबहुतीअरुकपिलकज्ञाना॥वरणीचौअअवकरतबरवानी  
 दत्तपत्तजेहिविधिभदंगी॥सनीमरणाकरकह्योअसंगा  
 ध्रुवचरित्रपुनितिनकरवंशा॥कहाकथापृथुकेरिप्रशंसा  
 पुनिप्राचीनमरवैजिमिकीन्ही॥कहिनसीपनारदजोदीर्घी  
 तूर्जपूजियंचमगाहियानी॥वरणीप्रियवृत्तकेरि कहानी  
 अष्टमकेरअरव्यानसुनावी॥अष्टमगुणीकरिजोदुखपावा  
 पुनिजडभरधरधूगगाज्ञाना॥कह्योभूपभानारिअजाना  
 दीपसिंधुगिरिसरिताधरणी॥रविशशिउडसरयादावरणी  
 जातिचक्रपातालप्रमाना॥वरणीनकेमहादुखनाना॥ ॥  
 परमअजामीलइतिहासा॥धर्मदूतसंवादप्रकाश॥ ॥  
 दो० सहस्रएकादशपुत्रवरदहाकेपउत्तपन्ना॥  
 नारदज्ञानसुनाइकैविपिनिपढायेधन्य॥

चौ० तब तिन साठि सुता उपजाई ॥ तिन ते सृष्टि भई प्रीति काई  
 कश्यप के जन्मे सुत नाना ॥ सुर गुरु हरि का बर वरवाना ॥ ॥  
 विसेश्र वैवध वासव कीन्हें ॥ हत्या लागि बांटे जिमि दीन्हें  
 इन्द्र बला सुर सुदूर बरवाना ॥ नहुष भये जिमि पन्नग जाना ॥  
 चित्रकेतु की कथा सुनाई ॥ भेउन चास पवन जिमि प्राई  
 सप्तम कहि प्रह्लाद चरित्रा ॥ वरना ॥ श्रम के धर्म पवित्रा ॥  
 अष्टम कहि मन्वन्तर बोझा ॥ गजनारद की कथा मसौदा  
 क्रूरमकर प्रवतार सुनाइनि ॥ सागर मथ तरल जिमि पाइनि  
 समर प्रसुर सुरमक्ष कहानी ॥ बलि बावन की कथा बरवानी  
 नवम साहि रवि वंश वरवाना ॥ नृप की कथा कीनि तहंगा ना  
 चिमन शंकु की कथा सुनाई ॥ अम्बरीष की कीनि बड़ाई ॥  
 सगर भगीरथ प्रतिमन भाये ॥ राम चरित प्रमुदित कहु गाये  
 निमि प्रसंग निरने जग केरी ॥ परशुराम की कथा निवेरी ॥ ॥

दो० रवि शाशि वंश मिलाप कहि इला बुद्ध संयोग ॥

वरणी सातन की कथा पुनिययाति कर भोग ॥

चौ० पुनिय दुवंश कहि बिस्तारी ॥ जामि प्रकट भये गिरिधारी  
 दशयें कहा कृष्ण प्रवतार ॥ वकी सकट तूणा वर्तन मार ॥  
 यमलार्जुन तिन का गति दीन्हें ॥ बल्लव का सुर जिमि बध कीन्हें  
 कंस निघन विद्या जिमि पाई ॥ जरा सिंधु की कही लड़ाई ॥  
 रुकुमिनि हरन द्वा रंके प्रोये ॥ ज्यौं रौ चरित दशम बहु गाये  
 गरहे कहाय दुन करना सा ॥ नव योगेश्वर जनक बिलासा  
 हरि उद्धव का ज्ञान सुनाये ॥ दत्तात्रे द्विज का यश गाये ॥ ॥  
 बहुरि भये प्रसु अंतर ध्याना ॥ सो चरित्र सब की न बरवाना ॥  
 द्वादशयें युगल द्वा गाये ॥ निकलन की प्रवतार बताये ॥  
 होई संभरगद अभिरामा ॥ विष्णु दत्त ब्राह्मण के धामा ॥



हस्तिमले कृष्णनिस्तयुगहोई ॥ कुमलिसवन की जाई खोई  
उत्पति तीनि तरा की भारवी ॥ परल्लय चारि भांति की राखी ॥

दो० इतनी कथा सुनाई कै शुक्ल मुनि की निपयात ॥

गुरैं ग्रहिका द्यौं नृपहि ग्रंथो दिव्य वेदान ॥

चौ० चरि नरेश हरि लोकहि गयऊ ॥ जय धुनि देव करत सब मयऊ  
तब सौन कले मुनि वरजानी ॥ जनम जय को यत्न बखानी ॥ ॥

बदन की सारवा उपसारयो ॥ सार कंठे की परल्ले भारवी ॥ ॥

द्वादशारवि की कथा सुनाई ॥ सूक्ष्म सकल भागवत गाई ॥

जानर पाठने न पुन करि हैं ॥ ता सु होम दुरव श्रीपति हरि हैं ॥

दो० श्रीगुरु देवादास के चरण कमल धरि माय ॥

अखिल भागवत के रमन बरायो जनर घुनाय ॥

चौ० पुनि सौन कबोले सिर नाई ॥ नाथ सकल भागवत सुनाई

अब प्रभिलाय एक उर प्राई ॥ कृष्ण कथा सुन्दर सुख दाई

दृश्य मय हरि कृपा करि गाओ ॥ करि बिस्तार पूर्वाई सुनाओ

जो उचाई नाथ तुम गावा ॥ इति हासन महं सो सुख पावा ॥

निहिने बाल कृष्णालीला अब ॥ कहौ मोहिं करि कृपानाथ सब

केहिकार सा प्रगटि गोपाला ॥ केहि विधि माहो कंस भुञ्जाला

बहुरि रुकमिनी मंगल गाओ ॥ भावि बाह केहि भांति वताओ

और हु किहि निचरित बहु तेरे ॥ सो सब बहहु देव हित मेरे ॥

बोले सुन सुनहुं मुनिजानी ॥ प्रथमैं ते सब कहौं बखानी

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रन्थ उजागर श्रीरघुनाथ-

दासराम सनेही कृत कृष्णायन प्रबन्ध दशो नौ नाम प्रथमो अध्यायः १ ॥

दो० सुभिरि राम सिय संत गुरु गराप गिरा सुख दानि ॥

भारथ मत कीरे कंस की उत्पति कहौं बखानि ॥

चौ० नगर एक मधुपुर प्रसनामा ॥ कालिं दीत रघुनि जामिनामा

उग्रसेन रहे तामें भूषा ॥ पवनरेखरमनीरतिरूपा ॥ ॥ ॥  
 देवकनाम उग्रको भ्राता ॥ तिन हें कि प्रिया मनोहर गाता  
 इक दिन उग्रसेन की नारी ॥ सकल सिंगार किहि सिद्ध बिभारी  
 मखिन संग लें उपवन देखन ॥ गई प्रथक हें लागी पेरवन ॥  
 तेहि अवसर दानव डक आवा ॥ भूष रूप धरि हाथ चलावा ॥  
 बोली पति रेखी मति को जे ॥ दिन राति किहे पुराय सब छे जे ॥  
 तेहि मानानहि ककु प्रययोगा ॥ बरवस किहि सिता सुसंग भोगा  
 तेहि पाछे निज वपु प्रगटावा ॥ नृप पत्नी लखि बचन सुनावा ॥  
 रखल नीच छले तैं मोहीं ॥ कोइ सि आष देत हों तोहीं ॥ ॥  
 बोला मै हों दनुज जुभारा ॥ काल नेम हें नाम हमारा ॥ ॥ ॥  
 सत युग समर बिणु ते ठाना ॥ आपन देहु लेहु बरदाना ॥ ॥  
 दो० तुम्हरे हमरे अंश ते हेई बालक एक ॥ ॥  
 महा प्रतापी भुजबली जीती भूष अनेक ॥  
 चौ० राखी असुर निकर बल भारे ॥ बिन भगवंत मरी नहिं मारे  
 सुनत प्रसन्न भई तब रानी ॥ आई जहं सब सखी सयानी ॥ ॥  
 हाँसि बोली बनिता तब ऐसे ॥ बिगलित भये बसन तव कैसे ॥  
 धावा कपि एक निकट हमारे ॥ आई नु भागिता सुभय मारे ॥  
 तेहिते अब चलिये निज धामा ॥ सुनि आई गृह निज आमा ॥  
 गर्भ अब धि सुख सहित चित आई ॥ माध शुक्ल कुज ते रिसि आई  
 जन्मा सोइ बालक प्रधराती ॥ भये उपद्रव नाना भांती ॥ ॥  
 उग्रसेन बहु द्रव्य लुटाई ॥ कंस नाम बुधरा खिनि आई ॥  
 भाज बबडा बालक न संग ॥ खेलन जाय करै तहें दंगा ॥ ॥  
 फौरे कूप भरत जल देखे ॥ भुजबल मस्तन काहुइ लेखे ॥ ॥  
 मगध देश यकरोज सिधाया ॥ जरा सिंध को जाइ हराया ॥ ॥  
 तिन करे सुता युग आछी ॥ लावा तिन्हें परणिसह सांछी



दो० नामप्रतिप्रापतिमनहुंमनमथकीकरवाल॥

लग्योकरासुखसदनवसितिनयुतकंसभुवाल॥

चौ० एकदिवसभूपतितेबोला॥ तोहीकरैगोराजिअडोला॥

असकहि कीन्हिसिकैदप्रभागा॥ अपनाकरनराज सुखलागा॥

असुरमयावीविपुलबटेरे॥ जेरिपुसमरसुरेनहिंमोर ॥ ॥

तिन्हैसंगलैयकदिनधावा॥ जीतिनिकरनृपपुरफिरिआवा॥

अपरसुनौदेवकीबारी॥ नामदेवकीरहैकुमारी ॥ ॥

तिनकोव्याहकरनकेकाजा॥ खोजवायेधरजहंतहंराजा॥

सुरसेनकेसुतबसुदेऊ॥ सबहिनकहीइन्हेंदरिदेऊ ॥ ॥

दो० तबनरेशबसुदेवकोदीन्हीसुसाबिवाहि॥

होउदिशभाउतसाहअतिसोकपिकहिजाहि॥

हैगजस्यन्दनहेमपटरतनअनेकनदीन॥

याचकसत्रपरतोषिकैबिदाबहिनिकरकीन॥

चौ० परवनचलाआपुसुखमानी॥ तेहिद्वाराभईगगनइमिवाणी

यहिकन्याकेबालकहोहीं॥ अठबांसुतमारीनृपतोहीं ॥ ॥

सुनिनृपउत्तरिकेशगहिलीन्हें॥ खड्गकादिमारणाकोकीन्हें

तबबोलेबसुदेवपुकारी॥ प्रमदाबधपानकहैभारी ॥ ॥

तेहितेयाहिछांडिनृपदीजै॥ बोलानुमकरुशोचनकीजै

आगेतरुबिषफलफलैकोई॥ डोरैताहिकादिभलसोई

यहिहतितुम्हेंपरिगहैंआना॥ सुनिबोलेबसुदेवसुजाना

नृपकरुतबभगनीनहिंघालक॥ रिपुतुम्हारहैंइनकरबालक

जबहींसुतप्रगटीजगआई॥ देहोंतुम्हेंतुरतमैलाई ॥ ॥

सुनिबिनतीदीन्हिसितबत्यागी॥ आपेदोउनिजगहअनुगामी

करुदिनगयेसमोजबआवा॥ प्रथमैपुत्रदेवकीजावा॥

लैबसुदेवगयेनृपपासा॥ जानिसिहैंसांवेहरिदासा॥

बालबिलोकिदयाउरुआई॥ कहिसिशोचनिजसुतलैजाई  
तेहिअवसरनारदतहंआये॥ छिप्रनिधनहितबचनमुनाये  
कंसकहालरिकाईकीन्हो॥ जानिबूझिनिजरिपुतजिहीन्हो॥  
मुनिमहीपअसबचनउचारा॥ अग्रमुनिहैकालहमारा॥

दो० तबनारदलिखिवक्रगरिासकलभयेवसुसोइ॥

कोजानैनृपशत्रुजोप्रथमेआवाहोइ॥ ॥

चौ० अमुनि कंसशिषुहिधरिमारो॥ याहेविधिबटबालकसंहारो॥  
तबदेवकीमहादुखपावा॥ मनहींमनश्रीपतिकोधावा॥ ॥

कंसवंशममकीन्हेसिषीशा॥ यहविपदाहारिहोकरबईशा॥

बदेयापृथ्वीगरुआनी॥ शिवविरंचितेचित्ततीठानी॥

सबमिलिगयेजहोभगवाना॥ अस्तुतिकरतभयेविधिनाना॥

मुनियोलेलखिदीनमुरारी॥ निरभयहोउदेवमुनिभारी॥

धरिहोमैंनरतनअबआई॥ हरिहोसकलभूमिगरुआई॥

करिहोपूरमनोरथसबके॥ भावविवसकारजजबतबके॥

आपसुमबहिदीनपुनियेहू॥ गोकुलजन्मजाइतुमलेहू॥

वेदत्रचनकादीनिरजाई॥ गोपीहोउसकलतुमजाई॥

पाथरजाइसबनसोइकीन्हा॥ आपुबोलिनिजमायहितीन्हा॥

दो० कह्योदेवकीकेगरभहैसतवांसमअंश॥

ताहिरोहिरीकेजठरकरिआवेनिरसंश॥

चौ० मुनिमोइकरतभईहरिहांशा॥ जानासवनगर्भभानाशा॥

अठयेबासआपुहरिलयऊ॥ बदनप्रकाशचंद्रसमभयऊ॥

अंगसुगंधवदतदुबिजाई॥ कंसदिहिसिलखिवंदिडगई॥

करहयकरीनिगढ़पगडारे॥ जदिकपाटपहरूबैठारे॥ ॥

निनतेकहेसिहोयसुतजबहीं॥ मुनितुमहमेंजनायोतवहीं॥

यहिविधिगयेककुददिनबीती॥ जोहिहरिप्रकटसुनहुंसोतीती



भाहें सासपक्षप्रधिपारा॥ उड़ परोहिरी॥ प्ररुबुधवारा॥ ॥  
 तिथिप्रयमीरैनिप्रधिपारी॥ भिमिकिअवर्षतबरवारी॥ ॥  
 प्रभुआगमनजानिसुरआये॥ करिबिनतीधुनिगमनसिधये  
 खुल्लिगेसकलपटलकेलारे॥ भेनिद्रावससबरखवारे॥ ॥  
 प्ररुबसुदेवदेवकीहोऊ॥ कूटिगयेबंधनतेसोऊ॥ ॥  
 जयप्रसीदिशिशाशिहरसाना॥ प्रकटभयेतबश्रीभगवाना  
 श्रीरसिंधुगोलोकनिवासी॥ शोभासदनसकलसुखरासी  
 श्रीशवसनश्रुतिकुंडललोला॥ उरविशालवनमालअमोला  
 शंखचक्रगदपद्मबिराजै॥ मरिणभुजचारिविषपदभुजै  
 दो० पीतवसनउपवीतउरराजतनयनसरोज॥  
 अंगअंगपररघुनाथजनवारतअमितमनोज॥  
 चौ० लखिवसुदेवब्रह्मकहंचीहों॥ अंजलिजोरिहाउबत्कीहों  
 पुनिउठिकहोंतुहेंमेंजाना॥ परमपुरुषहोंतेजनिधाना॥  
 परमजोतिप्रद्वैतप्रविकारी॥ निरगुणब्रह्मनिगुणातनुधारी  
 कंसासुरत्रासतनिशिभेरा॥ हरहनाथममसंकटधोरा॥ ॥  
 पुनिमुनिप्रभुदेवकीजानी॥ बंधत्रासयुतविनयेबरवानी  
 अंहोपुराणपुरुषप्रविनाशी॥ निजानन्दनिर्गुणगुणाराशी  
 कालब्यालतेमनुजडेरा॥ सर्वलोककहंजातपराने॥  
 तजतनमृत्युजहांचलिजाई॥ निरभयहातकतहुंसोनाही  
 तबपदपदुमप्राप्तजबहोई॥ पदरक्षासुखपावतसोई॥  
 मृत्युडेनलागीतबताही॥ सेवतचरणाकमलजोआही  
 ऐसेतुमममउदरनिवासी॥ हैनरलोकबडोउपहासी॥ ॥  
 बोलेतबश्रीपतिसुनुमाई॥ जेहितेतवमनसंशेजाई॥ ॥  
 पूरवजन्मसाहिंनुममोहीं॥ याचेहुवरतुमसमसुतहोहीं॥  
 भक्तबकुलमेंबिरदबिचारा॥ भयऊंआइतेहितेनैतुहारा॥

कंसमहारवलसुनते आई ॥ तो मोहिं गोकुल देहु पठाई ॥  
 यशुमतिके उपजीमममाया ॥ लावहु तेहि उठाइ करि दाया  
 कछु दिन नन्द भवन करि लीला ॥ मिलवतु म्हें पुनि वन्दुस मोला  
 अस कहि शिशु होइ रोवन लागे ॥ देखि मातु पितु प्रति अनुग  
 नारवै वारसमेत उठावा ॥ लै बसु देव चले तम छावा ॥ ॥ ॥  
 कालिंदी जब लगे मंभावन ॥ यमुना बदी छुवन पद पावन ॥  
 गुलफ जंघ कटि गारन कजाई ॥ शिर धरि ठाढ़ रहे डर पाई ॥ ॥  
 लखि प्रभु पाछे पाउँ पसारा ॥ परसि वहीं मुख नत कधारा  
 ऊपर शेष सहस फन छाये ॥ इत उत हरित रिगोकुल प्राये ॥  
 प्रविशे महरि भवन के माहीं ॥ प्रगटी सुता तिन्हें सुधि नाहीं ॥  
 शिशु सेवाइ तिन प्रागे दीन्हें ॥ लै बाल की गवन पुर कीन्हें  
 निवसतनि लै बहुरि पट लागे ॥ वन्दन परे पोरिया जागे ॥  
 सुनिकन्या कारोदन जाना ॥ भासुत नृपते जाइ बरवाना ॥  
 सुनत कंस आषुइ चलि आवा ॥ तब देव की बहुत ससुभावा  
 तदपिन खल मानि सिपरतीती ॥ लीन्हें सिद्धि नि सुता विपरीती  
 पटकन लाग शिला परनीचा ॥ करते तड़पि गड़न भबीचा ॥  
 बालन भई कंस तवहंता ॥ प्रगट होइ चुकां है कहूं प्रता ॥  
 सुनि नभ गिरा उठा अकुलाई ॥ गिरा देख की के यग धाई ॥ ॥  
 मैं प्रपराध की न सुत मारे ॥ होनहार सोटरत नटारे ॥ ॥ ॥  
 कंस ज्ञान उपदेशते कैसे ॥ दीप प्रकाशत आनहिं जैसे ॥ ॥  
 कह देव की सुनो हे भाई ॥ निज कृत कर्म न तो रिलगाई ॥  
 जो जस करै सो तस फल पावै ॥ बिन समुझे पर दोष लगवै  
 दुरव सुख प्रद जग में नहिं कोई ॥ मन माने कर संभ्रम होई ॥  
 यह सुनि उठि निज मंदिर गयऊ ॥ सचिव बोलि अस ब्रूकत भयऊ  
 कहौ कहा अब कोरे कहोई ॥ जन्मा कहूं प्रने प्ररि सोई ॥



बोले दुष्ट मुनो महाराजा ॥ या की तो है सहज इलाजा ॥ ॥

दो० एक बरय के बीच मांजो सुत जन में होइ ॥

डारह सकल मराइ तुम आ पुइ बची न सोइ ॥

चौ० सुनत बोलाइ सिसुर सभूहा ॥ कह्यो कि मारहु शिशु करि हूहा

चले जहां तहें आय मुपाई ॥ लागे करन पाप अधिक आई ॥ ॥

यह इतिहास कह्यो मन मानी ॥ अब गो कुल की सुनो कहानी ॥

रोदन तहें जब की न भुरारी ॥ जागी महारि सार सुनि भारी ॥ ॥

बालक देरि वपरम मुख पावा ॥ गोमय चन्दन भवन लिपावा

गोपुर कलस विचित्र धराये ॥ नवल बधुन मिलि भंग लगाये

धुजयता कतोर राग पुर छाये ॥ देवन हरषि सुमन बरयाये ॥ ॥

नंद सहस्र दश धेनु भेंगाई ॥ बिघ्न न कहें दोही हरयाई ॥ ॥

मुदित नारिन रबी धिन डोलैं ॥ जयति ॥ जय सुत की बोलैं ॥

उड़त गुलाल सकल तन सींचा ॥ मारग मध्यम ची दी धी की चा

वाज हिं बाजन नाच हिं नारी ॥ हंसि ॥ दोहि नन्द कहें गारी ॥ ॥

नारदादि सनू कादि मुनीश ॥ कौतुक लखत फिरत अजई शा

बहुत कहांत क कहैं उछाहू ॥ प्रगट भये जहें त्रिभुवन नाहू ॥

जात कर्म वेद विधि कीन्हा ॥ बहु विधि दान याचक न दीन्हा

पुनिलै नन्द क्षीर दीधे गू ॥ कंसै देन चले मिलि नेगू ॥ ॥ ॥

मधुपुर आइ चढ़ाइन भेंटा ॥ सबन कहाइन के भा बेटा ॥ ॥

बहुत नीक कहि भीतर तेरे ॥ तहें बैठाइ गयो उठि डेरे ॥ ॥

तुरत लिहि मिपूत नहिं बोलई ॥ आवहु मारि नन्द सुत जाई

दो० चली तुरत नवनारि बनि सजित न भूषण चीर ॥

जहर उरो जलगाइ कै आई यशु मति तीर ॥

पुरपतनी भौचकि रहीं रूपवान लखिता सु ॥

बिन दूभे आपस दंयी बरि भागि निज आपस

सो० लालहिलखिदुलराइदेरिदुचिनीमहरिके॥  
 लीन्हेंप्रोगोदलगाय।दीन्हेंप्रोगुखविषसहितकुच॥  
 चौ० लगेपियनकृपाकरिजोत॥भागीकरतछोड़ावनसोरा  
 लीन्हेंरेंचिप्रानपुरभासा॥योजनदेदमाहिबपुभासा॥॥  
 दीन्हेंयातिजननीकीताहीं॥कोकपालप्रसभजियेजाहीं  
 कोनिपुराययाकीन्हेंप्रभरी॥जातिपीन्हेंप्रदूधसुरारी॥॥  
 रतनदामदुहिताबलिकेरी॥बावनवपुछबिलारखबहुतेरी  
 मनमेंचहिसिपियावोंक्षीरा॥मोइइच्छापूजोयदुबीरा॥  
 कृपातासुकुचपरइमिराजें॥जिमिघनशिशुगिरिशृंगबिराजें  
 भयबसलौगनिकटनहिंजावें॥दूरहितेधाधाराचलावें॥  
 हाइहाइकरियशुमतिधार्इ॥लिहिनिललालहिलखिगोदउर्ध  
 भवनप्रानिदीन्हेंप्रबहुदाना॥कह्योबचायोहरिभगवाना  
 पुरबासीसुनिदेखनधावें॥बकिहिविलोकिविधिहिशिरनोवें  
 करिरक्षाभोहनतनकेरी॥कहेंकिकेहुइंदिहेंउभतिफेरी॥  
 यहाँनन्दनृपप्रायसुपार्इ॥मित्रैमिलनचलेहरघार्इ॥॥  
 कुशलप्रश्नकहिकरिसनमाना॥बेलिपुनिवसुदेवसुजाना  
 फालाधीनदेहनहिंनेमा॥बिछुरिमिलेसमप्रपरनहेमा  
 भलेकृपाकरिदरशनदयऊ॥अतिसुखमिलासुनासुतभयऊ  
 जाहुबेगिनिजमंदिरताता॥करतफिरततमबरउतपाता॥  
 रक्षाकरतसुतनकीरहियो॥करुणादृष्टिगमकीचहियो  
 गोकुलप्राइदीखसोइहाला॥लगेबतावनसवनरबाला  
 रण्डकरिताकरंगगा॥जारतकटीसुगंधप्रसंगा॥॥  
 एकदिपसकागासुरप्रवा॥पकरितासुशिरतोरिवहावा  
 पूर्वविप्रधाहीयहरहेऊ॥भट्टगुरुप्रापभुगतिगतलहेऊ  
 अन्यनक्षत्रपरापुनिप्रार्इ॥पूजनहितबदुरेकुलभार्इ॥॥



श्यामहिंसकटतरेथोदावा ॥ महरिकाममेंचित्तलगावा ॥  
 गर्दभूलिभोहिनिपटविसूरा ॥ मारीलातसकटभोचूरा ॥  
 सुनिलरिक्कनसुखपितुप्ररुभाता ॥ दोरिलगाइनिपुत्रहिगाता ॥  
 अचरजमानिकहैनरनारी ॥ टरीकान्हकीकरिवरभारी ॥  
 तूगावर्ततोहयाछिमेजा ॥ प्रभुइपरदेखासुदिसेजा ॥ ॥  
 गरुगायास्तहिलरियमहतारी ॥ जागतदिहिसिंहैतहंपरी ॥  
 बौड़हैकीन्देयाअंधियारा ॥ लीन्होगहिगागगनमभारा ॥  
 गरुभयेप्रभुसधानभारू ॥ गिरामहीतलभासंहारू ॥  
 दलचंभननृपयंडुरदेशा ॥ दुरबाशादतमिद्योंकलेशा ॥  
 छातोपरखलतसुतपाइनि ॥ नन्दमहरीनिजभागमनाइनि ॥  
 विप्रनबोलिदानबहुदीन्हा ॥ गोपबधुनतबलेतालीन्हा ॥  
 दइउदीनसबकंधरबारा ॥ तुम्हैकामेहैबहुतपियारा ॥  
 चौंधपनदेख्योसुतप्रारवी ॥ तदपिनप्रीतिप्राणसमराखी ॥  
 कहैरघुनाथनिरखिप्रभुवारी ॥ पकितहोहिजिमिचंदचकोरी ॥  
 इतिश्रीबिष्णुसामसागरसबमतप्राग्वंशपउजगरभीरुनाथसमरामस-  
 नेहीकृतभीरुणाजन्मउत्साहपूतनाकागासुररगावर्तबधवर्णनी

नामद्वितीयोऽध्यायः २॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपतिरासुखदानि ॥  
 कहोंदशमकीरहसिककुक्कषारखंडकीअनि ॥  
 कभूमहरीमुखचूमिकैबदनपयोधरदेत ॥  
 कभूभुलावतपेलनेकभूलाइउरलेत ॥ ॥

चौ० यहिसुखमेंककुकालवितथि ॥ अन्नपरासनकोदिनप्राये  
 नन्दबहुतसामामंगवाई ॥ मधुमेवापकवानभिराई ॥ ॥ ॥  
 साइतिसर्माश्यामसुखदीन्हें ॥ विप्रबंधुपुनिभोजनकीन्हें ॥  
 दिनादिनबदनलगेहरिकैसे ॥ शुक्लपक्षकरनिशिकरजैसे ॥ ॥

प्रगटीतन प्रतिचंचलताई ॥ गहैन एको छिन थिर ताई ॥ ॥  
 अग्निनीकीससुकनखीसिंगारण ॥ धरत करतत हंभरिनिचारण  
 बत्सपूछु गहिक भूभगावैं ॥ पुरजनपकरि मातुदिगलावैं ॥  
 एकदिवस आये द्विजएका ॥ किहिनिरसोई सहितविवेका  
 पुनितहं भोगलगाइनिवोटा ॥ पावतदीखन नकादोटा ॥  
 कह्योनहरिते बहुरिकराई ॥ भोगलगत पुनि यहुंचे प्राई  
 तवयशुमतिदवकी सुनिलेहू ॥ पुनि मोहि बोलावतयेहू ॥  
 दो० यहिभूंदे संसारको भावत भूठी भक्ति ॥ ॥

पुर प्रहिलखिरधुनाथजिमिभागहिनिशुशुक्ति ॥  
 चौ० कछुदिनगयेगर्ग करिप्रियो ॥ नामधरणाबसुदेवपराये  
 लखिब्रजपति पूज्यो सबभांती ॥ कहिनिजभागधन्यादिनगती  
 सुरसुरवदुरवप्रदतुममुददाता ॥ आजुगोददेखेदो उधाता  
 शंकरगणवलभद्ररामा ॥ कहेतीनि प्ररगजेकेनामा ॥  
 बासुदेवप्ररुकृष्णकन्हारै ॥ इनकेनाम प्रपरबदुराई ॥ ॥  
 मातुलरिपुपरतियरतचोरा ॥ होइहैं निलज निडरवरजोरा  
 साधुविपगोपालनकरिहैं ॥ अभिमानिनकी प्रहमितिहैं  
 मातपिताको आनंददेहैं ॥ नृपसुरवसहित जगतयशलेहैं  
 ज्योरोफलबहुकहेबुझाई ॥ आयिभवनदक्षिणापाई ॥ ॥  
 एकदिवसखाई हरिनाथी ॥ लरिकनकहामहरिसुनिडादी  
 मुखपसारिदेखरावतभयऊ ॥ उदराविलेकिविसरितनगयऊ  
 देखासकलविश्वसुरवतही ॥ कौनिसोबातजोवांनैताही ॥  
 सुरनरप्रसुरनागनभचारी ॥ रविशशिउडसरिसरदीधभारी  
 स्वगेनकयमकालनिहारा ॥ बिधिहरिहरबेकुराहबिहारा  
 इहिबिधिसकलवस्तुदिरवगई ॥ मृदिलिहिनिपुनिबदनकन्हारै  
 चक्रितभट्टस्वयनमेंदेखा ॥ सांचोसांचकिनयननपेरवा



भाविवेक सुत ईश्वर चीन्हा ॥ बहुरि रुल्ल माया बस कीन्हा  
 कहै रघुनाथ धन्यते प्रानी ॥ जे ऐसे प्रभु सों रति मानी ॥ ॥  
 एक दिन एक ग्वालिन धर जाई ॥ लागे मारवन खान चोराई ।  
 निज पर छाँह मुकर लखि बोलै ॥ तुमहु खात कहौ जनि खोलै  
 सुनि मृदु बचन हँसी सोइ बाला ॥ भीतर ते भागे नन्द लाला ।  
 एक दिन गये अपर घर बारा ॥ छाँके ते नव नीत उत्तारा ॥ ॥  
 तेहि क्षणा धनि आइनि चलि याई ॥ बोलै तासों बचन बनाई ।  
 कूदत रही एक मंजारी ॥ मैं उतारि कीन्ही रस वारी ॥ ॥  
 भले करत तुम दोष लगावा ॥ जानि पड़ा अबही कलि आवा  
 तेहि तब कहा खाइ तुम लेहू ॥ मोहिं नीक नहिं लागत येहू ॥  
 एक दिन गे एक भवन बहोरी ॥ सींके लखि दधि पेंदी फोरी ।  
 पावत तासु बचन सुनि चीन्हा ॥ निकसे तुरत पकरि तेहि लीन्हा  
 पूछत भइ कस भागे जाहू ॥ बोलै तब तेहि ते सुर नाहू ॥ ॥  
 कहिये कह दुख में दुख होई ॥ मैं नर मुरि डत की गति सोई ॥  
 दो० से दज दुख बिन कच भयो लग्यो धाम अकुलार ॥  
 धर्यो बाग सिर बेल फल गिह्यो अधिक दुख पाइ ॥  
 चौ० मैं या मोहिं उरि मारन धाई ॥ तेहि आयनु तब भवन लुकाई  
 तहें देखी दधि खात बिलारी ॥ सोइ डेरइ हों ते भागेन प्यारी  
 सुनि तेहि दीन तुरत ही छाँड़ी ॥ दोरि उतारि स आइ दुधाड़ी ।  
 एक दिन धाम अपर के गयऊ ॥ मारवन घटलै भागत भयऊ ।  
 ते सब दिन पति देहिं उरहना ॥ महारि न मानै तिन कर कहना  
 एक दिन गे कमला के धामहिं ॥ धाड़ धरि सि तेहि देखत श्यामहिं  
 गो की कहैं चलौ जहें माई ॥ तिनकी कसरि निकारी जाई ॥  
 बोलै श्याम मोहिं नहिं शंका ॥ बिन कीन्हे कहूं लगत कलंका ।  
 यशु मति निकट देखे खान लाई ॥ भये तासु पति तुरत कन्हाई ।

बोली महारि भई हंसि बोरी ॥ खम में पकरि देखावन दोरी ॥  
 पति मुख लखि लज्जित हैं भागी ॥ किहों कहा में मन्द अभागी ॥  
 एक दिन पकरि लयाई आना ॥ होंगे तामु तनय तब कान्हा ॥  
 खात खसम सुत सब के चीन्हा ॥ हमरें पुत्र निवल करि लीन्हा ॥  
 एक दिन प्रभु सब सखा बोलाये ॥ तिनते कौतुक बचन सुनाये ॥  
 अहो मित्र गोपिन घर चलिये ॥ खाइय दधि भाजन दलि मलिये ॥  
 जोवैं मिलि पकरैं बर जोरी ॥ तुम सहाइ हूज्यो तब मोरी ॥ ॥  
 एक मत लखि कोउ सकत नजूरी ॥ जिमि बुधि सेन बिहंगगा छूरी ॥  
 एक मते हैं पंगुल अंधा ॥ बंच्यो अग्नि ते चढ़ि पर कंधा ॥ ॥  
 अस कहि कृष्ण चले अभिलाषी ॥ लागे संग सखा भल भाषी ॥  
 बंदहिं परस्पर सुनिये मीता ॥ चलत मही पर लागत भीता ॥  
 एक कहैं तुम कादर भारी ॥ हम हरि हैं करि हैं कह नारी ॥ ॥  
 अपर कहैं भागव भय देखी ॥ शून्य सदन प्रविशे एक पेरवी ॥  
 सौज खाइ अरु कपिन लुटाई ॥ निकसि गये तब सो तिय आई ॥  
 देखि बिनाश करत भद्र शोरा ॥ दिनहीं में को आयो चोरा ॥  
 निकट जाइ बोली एक बाला ॥ में पैठत देख्यों नन्द लाला ॥  
 मन में भई पुकारों तोही ॥ गूंगी केहु करि दीन्ही मोही ॥ ॥  
 इतने में ताहू के धामा ॥ हलि गोरस खायो घन प्रयामा ॥  
 लगी पुकारन घर जब आई ॥ नाहक में तब भवन सिधआई ॥  
 जो कोइ बीच जबर के परई ॥ लोमड़ी सम दुख सोऊ भरई ॥  
 दधि माखन एकवान अनेका ॥ खाइ गयो राख्यो नहिं नेका ॥  
 पुनि काहू के मंदिर धसेऊ ॥ देखि लीन तेहि सब काग्रसेऊ ॥  
 कह हरि साधु हमारे आये ॥ बाबा भोजन हेत टिकाये ॥ ॥  
 मैया मोहिं पठयो तब तीरा ॥ मांगि लाव दधि माखन क्षीरा ॥  
 आये हमें भई बड़ि बारा ॥ मांगों कासों शून्य अगारा ॥ ॥ ॥



सरबा बुलावन आये अबहीं ॥ चलो चहोंते आई तबहीं ॥ ॥  
 जो चित चहै देहु अनुरागी ॥ धन्य भाग्य पर स्वारथ लागी ॥  
 साधु सिंह सम चरित रहावै ॥ भाव हीन लखि मृतक नखावै ॥  
 लाल बदन की सो सुनि बानी ॥ बोली हंसि मन में सकु चानी  
 प्यारे जो ऐसी है बाता ॥ तौ मेरो सो तुम्हरो ताता ॥ ॥ ॥  
 संचित धृत दाधि माखन क्षीरा ॥ हरि खित आनि धर्यो हरि तीरा  
 चले साखन के शीश धराई ॥ लागे सब भिलि चौहट खाई ॥  
 यह कौतुक सब गोपिन देखा ॥ बंचक धृत कुली आते लेखा ॥  
 बोली एक तामु घर आई ॥ आजु भली तू गई ठगाई ॥ ॥ ॥  
 सुनि सो कहत भई हे बाला ॥ मति बोराइ गयो लै लाला ॥  
 जाइ श्याम दिग बोली बानी ॥ भूठ बखानि बस्तुकत आनी  
 लाल कही हम भूठन भाया ॥ में महं तये सब शिखि साया  
 दीठ जानि सो मारन दौरी ॥ भागे दधि मुख मारि हथोरी ॥  
 इक दिन गये भवन में आना ॥ जड़िक पाद लागे दधि खाना  
 ताही क्षणा धनि आइनि आई ॥ टेरत बार बार अकुलाई ॥  
 कह्यो श्याम भल टेरन देहू ॥ निरभय बस्तु खाइ तुम लेहू ॥  
 तेहि जब द्वार खुलत नहिं जानी ॥ तब पर मांगि निसेनी आनी ॥  
 भीति लगाइ चढ़ी कृति जबहीं ॥ कल्ल खोलि पट भागे तबहीं ॥  
 नष्ट भ्रष्ट गृह देख्यो जाई ॥ लगी देखावन सखी बोलाई ॥  
 बाहेर कदत भयो यह दाहू ॥ कह्यो इहां किमि करिनि बाहू ॥  
 जो यशु मति ते जाइ पुकारैं ॥ लखि नंदान तहं हं महीं हारैं ॥  
**दो०** जिमि अबूझ नृप के रहै बात न केर निआउ ॥  
 जतिहि चढ़ावत सूरि पर चढ़्यो बात सुनि राउ ॥  
**चौ०** जो प्रथम मोहिं होतो जाना ॥ मेरे घर आयो है कान्हा ॥ ॥  
 तौ गहि भवन यशो दे लौती ॥ सुत की सब लीला देख रौती ॥ ॥

तब जानी मम साथिनिरामा ॥ बीते समय बुद्धि किस कामा ॥  
 एक दिन एक कर पकरि लुटावा ॥ मुनिजननी मृदु बचन सुनावा  
 तुम्हरी कृपा लहौं सुत मोहूं ॥ देहु अशीश करो सब छोड़ू ॥  
 मोहि प्राणा ते बहुत पियारे ॥ बिन अपराध जात नहिं मारो ॥  
 निज नयन न देखि हों जब वीरा ॥ देहों दगाड धरहु मन धीरा ॥  
 और दगाड तुम कछु न कीजै ॥ एक दुइ बरधम को दै दीजै ॥  
 नृप बिन नीति प्रीति बिन सारे ॥ बिगारि जात सुत बहुत दुलारे  
 नीति निपुन नर बात ते लाजै ॥ सूप बजाये सुत रन भाजै ॥

दो० एक दिन गे गृह एक के बैठे देख्यो ताहि ॥  
 पाछे ते मूंदे नयन सो सांगे को आहि ॥  
 दई सयन सब सरवन सो लै गोरस समुदाय ॥  
 गये निकरि जब दूर तब आपहु भगे बिराय ॥  
 जिनके घर नहिं जाइ ते विधिते कहें निहारि ॥  
 कब ऐहें हमरे भवन रवैहें मारवन चोरि ॥

चौ० तब ताही के मंदिर जाहीं ॥ प्रीति समुझि दीध मारवन खाहीं  
 खटक सुनत तुरतै भजि जावें ॥ उरहन के मिसि देखन आवें  
 सुनि सुनि श्याम बदन की बानी ॥ प्रमुदित होइ बात सोइ गानी  
 एक दिवस मिलि गोप लुगाई ॥ भवन आइ बोलीं सुनु माई ॥  
 अबै तो कान्ह बरष बट् केरे ॥ करत रहत छल बल बहु तेरे ॥  
 बड़े भये धौं करि हों काहा ॥ यही अंदेश बड़ो है राहा ॥ ॥  
 चिंतवत जेहि तन मृदु मुसक्याई ॥ सो बिन मोलै जात बिकाई  
 उटी बस्तु फिरि ताहि नि छोड़े ॥ मारवन हित सब के घर मांड़े ॥  
 करि जाने बहु भांति बहाना ॥ को धौं गुरू मिलानहि जाना ॥  
 बधे बच्छत जि धेनु पियाई ॥ सो बत लड़ि कन देत जगाई ॥  
 दो० कभू अंधेरे भवन में आपारहत दुराई ॥



पाछे दीपजगाइ कै भाजत तालबजाइ ॥  
 चौ० बोली महारि सुनो हे भैया ॥ तुम्हरे विधि दीन्ही बहूंगे या  
 दाधमार खन भौवे सोरवाहू ॥ परधर कत चोरन को जाहू ॥  
 मार खन चोर कहै सब नारी ॥ सुनितो को नहिं लागत रक्षा की  
 फिरत धरावत मेरो नामा ॥ मातुन देत होइ गोधामा ॥ ॥  
 परअपकाज कीन्है कायावत ॥ नाहक निरमल पितहि लज्जवत  
 मातु वचन करि श्रवण कर्हई ॥ बोलै तब न मुताजु नाई ॥ ॥  
 हे मइया मैं खेलन जाहू ॥ काहूँ कधर कछु नखाहूँ ॥ ॥ ॥  
 येई मोहिं पकरि लै जावैं ॥ नारि भेष करि संग पिसावैं ॥ ॥  
 कबहूँ गोमैं हेल धरावैं ॥ कबहूँ धर कीट हल करावैं ॥ ॥ ॥  
 कबहूँ कजुरि मिलि टादी होही ॥ गावैं आपुन चावैं मोही ॥  
 मारि गुलि चन मेहनति लेही ॥ तोहि परअप्राइ उरहना देही ॥  
 दो० सत्य कहत बुधवाम को पलटत लंगे नंदर ॥  
 तियइ लख्यो पतिकु यथ में पतिहि कस्यो तोहि जेर ॥  
 हमहूँ निरबल विप्रसम करै काल गुदगान ॥  
 आरि वरअहि रघुनाथ भनि है न भेक कस्यत ॥  
 चौ० ज्यौ रौ सुनो कर्म इन के ॥ मलैं सुअंग अंगामा मेरे ॥ ॥  
 कबहूँ कप करि मिजावैं पीठी ॥ कबहूँ तैं के तिरछी करि दीठी  
 कबहूँ कहैं द्वार बैठाई ॥ आपु सहित पतियों दैं जाई ॥  
 सुनि गोपी बोलीं मुसक्यातैं ॥ सुनो महारि निज सुत की बातैं ॥  
 कहती हो जानत कछु नाहीं ॥ भरे सकल गुन इन के माहीं ॥  
 तुम्हरे निकट साधु सेदी सैं ॥ हें रवैं अति दिस्वाबी सैं ॥ ॥  
 भूठ कि सांच सांच की भूठी ॥ करतरहत यह विद्या भूठी ॥ ॥  
 दो० सुनार है कोइ चतुनरूप की मेरि प्रमान ॥  
 बचि प्रायो घर वधत इन तेहू के कारे कान ॥

चौ० सुनियशुमतिकहसहितसनेहा॥ तुमजानोकीजानैयेहा  
 तुम्हरीइनकीबातप्रगृदी॥ बूभिनपरतमोहिमतिबूदी॥  
 एकदिनमहरिप्रणामकोलैंकै॥ परीपलंगपरतकियादैकै॥  
 लागीकहनकथासुखदाई॥ जिमिअवतारलीनरघुराई॥  
 बालविनोदाबवाहउछाहू॥ विपिनिगवनभूपतिकरदाहू॥  
 भर्तिसनेहलयगासेवकाई॥ कहिरवरदूषगाकेरिलडाई॥  
 कह्यो जानकीकेरहरगाजब॥ कहधनुसरकहिरुशाउठतब  
 यशुमतिदेरापिउछंगलगायो॥ बोलिसयांनेहिफूंकडरायो  
 कबहुंकरावैभोजननाना॥ कबहुंसिंगोरैरूपनिधाना॥  
 कबहुंबस्तुमांगैहठठानी॥ जेहितेहिभांतिदेतसागानी॥  
 कबहुंधेनुरविपसरुचरावै॥ कबहुंभूपबनिनीतिमिरबावै  
 दो० जकेकुलकीरोमिजसगहतशिशुहि सोइबाद॥

नृपसुतमुन्नीकेगयोतहंउठटेनृपठार॥

चौ० एकदिनकह्योमातुमोहिंदाऊ॥ राजसखनबिचबहुतरिबभाऊ  
 मोसेकहैंमोलकोलीन्हो॥ नंदबदलिबसुंदेवदीन्हो॥ ॥ ॥  
 मानपितागोरतैंकारो॥ वैसूधेतैंकुटिललवारो॥ ॥ ॥  
 मुनिमाहंसिप्रंचलनुरवगेरो॥ मैजननीतवतैंसुतभोगो॥  
 बहुरिकह्योमोहिंविपिनिलवाई॥ कहिहाऊप्रावतकुदलवाई  
 होडरिगदभगततवतीरा॥ सखहुननेकधरावतधीरा॥  
 जानीमातुबुरेतैंजानै॥ फिरिक्योखेलनतासुसंगठानै॥ ॥  
 अबतेकहोरहबपरमाहीं॥ तौमेंपकरिपिदावांताहीं॥  
 तबकछुकान्हनउत्तरदयऊ॥ कहैंरघुनाथहरपिउल्लयऊ  
 अहारादिकयशुमतिमुखदेरेवें॥ सर्वाशयधन्यकरिलेरेवें॥  
 कहनृपकोनधर्मइनकीन्हा॥ कृष्णबाललीलासुखदीन्हा  
 कहशुनबसुवसुद्रोणप्रधाना॥ धरासविपराधेभगवाना



विधि आयेति न ते इनकाहा॥ सर्वा राध्य होय शिशुनाहा॥  
 खमस्तुकहि विधितेहि भावा॥ नन्द मह रिमोई सुख पावा  
 प्रथम रहे दश सन्दन भाला॥ अब लीन्हो निखवर खमुख तात  
 इति श्री विश्राम सागर सच मत आगर ग्रंथ उजागर श्री भुनायदासा  
 मसने ही कृत कथा दीधर्वा वाका बिलास वरानो नाम तृतीयोऽध्यायः ३

दो० सुमिरि राम सिख सन्त गुरु गणपति रासुख शनि॥

कहौं दशम की रीति कछु ब्रह्म वैवर्तक जानि॥

चौ० एक दिन सुनौ नन्द की रानी॥ मथत रही दधिलिहे मथानी  
 प्रथुकटि अति उजम पट धरि॥ तापर किंकिरी जाल सवारि  
 सुत प्रनुराग अचत कुच क्षीरा॥ वरवर कुराडल लोल शरीरा  
 अमकन तन प्रकट अतिलसही॥ सुमन मालती सिर तेख सही  
 आइ कृष्ण तहें भोजन भोगि॥ मधिली जैत बदी जै लागे ॥ ॥  
 ताही समय दूध उतरना॥ दोरी नुरत उतारन जाना ॥ ॥ ॥  
 तब प्रभुनि जमन कीन्ह विचारा॥ हमते भापय बहुत पिआरा  
 गहि पाथरु भेदु की महें दयऊ॥ फूटि सकल गोर सबहि गयऊ  
 यशुमति देखि वक्रो भ्रुकियो भारी॥ अमकरि पकरत भई प्रचारी  
 ऊरवल में पुनि बांधन लागी॥ रंगी युग गुल लों पुनि मोरी  
 यहि प्रकार रसरी बहु जोरी॥ युग अंगुल घटि रही बहोरी ॥ ॥  
 गोपी खड़ी कहें सवतैर॥ देख्यो आजु चरित सुन कैर ॥ ॥  
 अब तक कहौं मोर सुन सुधा॥ कादत आजु कुरी कर दूधा ॥  
 जाना श्याम मातु रिख सिधानी॥ लीन बंधाय एक रजु मानी  
 दो० करन गढ़े अस जानत ब मह रि मुदिन मन होइ॥  
 यमलार्जुन की सुरति करि चले घसीटत सोइ॥  
 धनपति के सुत जानि धनल कूबर मणि कंठ ॥  
 नारद केरे प्रादत भंष देऊ तरु हरार ॥ ॥

जलविहारयुवतिनविषेदेरिवनगनमतवार

होउविठपकहिपुनिकहोहरिकरिहैंनिस्तार॥

चौ० निकसेप्रभुतिनतरमेजाई॥ जखलभिरतगिरअरराई॥

दिव्यपुरुषप्रकटेतहेंदोई॥ लागेकरनबिनेइमिसोई॥ ॥

रोलाछूं॥ जयतिजयतिजगदीशईशानवचरितअनन्ता॥

मुनतकहतअधदहतअहतइमिसबभुतिसन्ता॥ जयति

मच्छबधुधरासत्यव्रतप्रलैदेखावन॥ जयवराहबनिना

थकनकुदगदलिमहिलावन॥ जयकूरमगिरिधरतरतन

चोहाउद्वारन॥ जयनृसिंहहतिहिरण्यकशिपप्रह्लादउ

वारन॥ जयबावनबलिकूलनचरानखसुरसरिजावन॥

जयतिपरशुधरसहसबाहुअरिविप्ररिभावन॥ जयतिराम

सुरसुखदसन्तमुनिदशमुखगंजन॥ जयतिकृष्णकंसारि

असुरप्रतातारतरञ्जन॥ जयतिबोधभुतिदोषदनुजक

तपुरायकुड़ावन॥ जयतिकलंकीनिधननीचक्षितिकरि

होंपावन॥ जयतिव्यासवेदार्थसोधिकृतवीविधिपुराणे॥

जयएषुप्रथवीदहनपूजिप्रतिमासबठाने॥ जयतिहंसवि

धिसुतनप्रश्नकरउत्तरदीन्हों॥ जयशंभूसनुआदिअजै-

जिनपरछटकीन्हों॥ जयतिअरुणभअद्वैतमार्गजरिबुधन

देखाई॥ जयहयगरदरदनुजमारिनिगमान्छोराई॥ जयति

धनुप्रदकामप्रगटभेमुनिजनकाज॥ जयध्रुवकरिहरि

मजनअचलअस्थानविराजै॥ जयतिधन्वंतररूपजग

तअभिनिवारक॥ जयबद्धीपमिशक्रकेरमदमानप्रहार

क॥ जयतिकपिलसुतसगरदहनगंगादधिवासी॥ जय

दत्तात्रेयानभक्तिवैरागकेरासी॥ जयतिदेवअरुणिजानि

रमापतिइकाठाने॥ जयसनकादिकब्रह्मनिरतपुणसु-



नि सुख माने ॥ जय इति चौविम बधुष धस्यो निज भक्तन हे-  
ता ॥ औरों होत अमाप मापि को पावै तेता ॥ जय प्रभु याही रू-  
प मम हृदय बस्यो छवि सिंधु ॥ श्रीश नाइ रघुनाथ निज  
लोक गये दोउ बंधु ॥

दो० जासु नाम जग जाल ते देन विनय अम छोरि ॥  
सोइ प्रभु जन बस मातु की तजत न बाँधी डोरि ॥  
खग मृगादि शर आपु ते कीन्हें अधिक महान ॥  
अस प्रभु को निज ईशता तजि राखी जन मान ॥

चौ० मुनि यशु मति बिलखत दिग आई ॥ बंधन छोरि लिहिनि उल्लाई  
कीरति आदि लगी सब दूषण ॥ गोर सहित बाँधे ब्रज भूषण ॥  
धन गोर स अरु जन्म तुम्हारे ॥ जाति सफल ताहि तुम मारे ॥  
राम जननि कह्यु कह्यो न ते हू ॥ मैया इन बिच दरखल न देहू ॥  
ताही समय नन्द घर आयै ॥ मुनि यशु मति को बहुरि सिं बाये  
तब सब हिन मिलि कीन बिचारा ॥ इहाँ होत हैं बिचन अपारा ॥  
चलों बसी रुन्दा बन माहीं ॥ सकल सुपास सहित सों आहीं  
चले सकल रुन्दा बन आयै ॥ बसे सुथल जेहि का जो भाये ॥  
श्री वृषभानु खबरी यह पाई ॥ सहित समाज रहे तहें आई  
वृष रवि कुँवरि नन्द घर आवै ॥ नन्द लाल कीरति पुर जावै ॥  
बालक प्रीति परस्पर देखी ॥ तात मातु सुख लहै विशेषी ॥  
तहाँ एक दिन नन्द कन्हारै ॥ गये खरिक लग वावन गारै ॥  
आई तहें वृषभानु दुलारी ॥ नाम राधिका छवि अधिकारी ॥  
जासु जेठ ते भयो बिराटा ॥ दीन चलाइ कृष्ण तेहि डाटा ॥  
कह्यो न अब तुम्हरे सुत होई ॥ भली बात ब्रज बिहरत सोई ॥  
जाके नयनन मध्य निहारा ॥ चौदह रतन दशो अबतारा ॥  
चारि चारि खग मृग फल फूला ॥ लजत जासु बधु देखि समूला ॥

दो० भजत विविधि अवतार जब बहुत जन्म करियन्त ॥  
 तब राधा पद मिलत इमि कह हरि लीला तंत्र ॥  
 चौ० जे राधा राधा अरु कहई ॥ राम कृष्ण तिन के बसर कहई ॥  
 हरि ब्रह्माराड पुराण मंभारी ॥ कह्यो राध आराध हमारी ॥ ॥  
 तेहि प्यारी को जब हरि देखे ॥ भये मुदित इत प्यारि उयेरबा ॥  
 तेहि क्षणा फुकि अये धनकारा ॥ नन्द दीख जब अति अंधियारा ॥  
 राधाते बोले घर जाहू ॥ श्यामैं दिहौं सौं पि सब काहू ॥ ॥  
 कर गहि चलत मई धरि धीरा ॥ अये होउ यमुना के तीरा ॥ ॥  
 तहें लखि माया की प्रभु ताई ॥ मरिण मन्दिर शुचि सेज सो हाई ॥  
 श्याम सहित पर्यङ्ग पधारी ॥ परत पेरि तेहि तरुणा बिहारी ॥  
 कह्यो कृष्ण ऐसी जानि कीजै ॥ मानुष जन्म पालि सुख लीजै ॥  
 इतनी कहत स्वयं भू आये ॥ सुर समस्त सामग्री लाये ॥ ॥  
 मंगल मय मंडप तहें छाये ॥ वेद गीति सब कर्म कराये ॥ ॥  
 विधिवत ब्याह होत तब लागे ॥ गावैं सुरी सहित अनुरागे ॥  
 कन्या दान विधाता दीन्हा ॥ विधिवत कृष्ण चंद्र सो लीन्हा ॥  
 सब विधि ब्याहि चलन जब लागे ॥ दारह भूमि भार वर मांगे ॥  
 कहि जब गये भये प्रभु योवन ॥ पूज्यो प्रिया मनोरथ को मन ॥  
 बाल रूप है पुनि गृह आये ॥ श्री जय देव चरित ये गाये ॥ ॥  
 इक दिन कृष्ण वृष्णि दिन अच्छा ॥ ग्वालन साथ गये लै बच्छा ॥  
 लागे बिपिन चरावन जबहीं ॥ आये असुर बच्छ वन तबहीं ॥  
 कृष्ण पूछ गहि महि दे मारा ॥ मरिण जब तब सखन निहारा ॥  
 एक दिवस यमुना के कूला ॥ रहे चरावन बच्छ समूला ॥ ॥  
 धरि बक रूप बकासुर आवा ॥ लिहिसि लीलि श्यामहिं सहचावा ॥  
 दीनिसि उगलि अग्नि अजारी ॥ निकसे तुरत चोच गहि भारी ॥  
 बाल बिलोकि सकल हर बाने ॥ गावत गुरा निज धरन तुलाने ॥



इक दिन खिलत रहे सुरारी ॥ आवानिकद प्रलम्ब सुरारी ॥ ॥  
 खिलन लाग बालकन संगी ॥ जबतब करै सखन ते दया ॥ ॥  
 जानि गये बलदेव कुमारा ॥ पकरि ताहि पुह करत मारा ॥ ॥  
 दिव्य रूप है हरि पुर गयऊ ॥ मुनि दुरलभ कैसे पद भयऊ ॥  
 इनके पूर्व जन्म कर हाला ॥ कहों सोऊ तुम मुनी भुबाला ॥  
 बक प्रलम्ब केशी बत्सा सुर ॥ गंध मदन गन्धर्व के सुत फुर ॥  
 मुनि दुर्वासा शिष्य किये सब ॥ हित उप देश दियो तिनको तब ॥  
 पदुम सहस वारत तुम धारौ ॥ बिष्णु लोक में जाइ विहारौ ॥ ॥  
 लगे करन सोइ धरि उरमाही ॥ हरि में प्रीति जनन में नाही ॥ ॥  
 मिलेन तब शिव सर तेलाये ॥ दीन्हो प्राण उमालखि पाये ॥  
 होइ असुर तुम चारौ जाई ॥ पति मुख कृत मुनि करुणा आई ॥  
 बोली हरि कर मृत्युइ पैहौ ॥ असुर येनि तजि हरि पुर जैहौ ॥  
 तेई असुर हैं यह गति पाई ॥ अब मुन अपर कथा मुख दाई ॥  
 इक दिन सावन सहित नदनदा ॥ रहे बिपिनि फादत फर फन्दा ॥  
 तहं अहि रूप अघासुर आवा ॥ इक इक योजन अंग बनावा ॥  
 बदन पसारि रहा तिन तीरा ॥ करि बिचार ॥ विसे सब बीरा ॥  
 प्रथाम गये जब तब मुख चाँपा ॥ बादत भये कूल करि दापा ॥  
 उदर फारि पुनि बाहर निकसे ॥ सावन सहित बिषधर लखि विकसे ॥  
 दो० भूपवन्तिका पुरी को पुन्य कार मृग बड ॥  
 कीन देखि गौतम दियो प्राण होइ असुर ड ॥  
 की बीनती भौंति बहु बार तन धन शान ॥  
 दीन दुखित लखि लोल पुनि बोले ऋषे मुजान ॥  
 ऐहें जब गोलोक तेज जमें कल कुमार ॥ ॥  
 मृत्यु पाइ तिन हाथ ते होई तव उद्धार ॥  
 चौ० सोई भयो अघासुर आई ॥ अपर कथा सुनिये उपर आई ॥

एक दिवस गे पुलिन मँफारा ॥ निज निज भोजन सबन उतारा ।  
 लागे खान स्वाद मुख गार्इ ॥ सो सब चरित देखि बिधि आई  
 चहुँ दिशि उड़इ बाल अनन्ता ॥ मध्य विराजत शशि भगवन्ता  
 दैत प्रियाम सब का सब प्रियामै ॥ तब तो ब्रह्मा ॥ स्त्रौ दुविधामै ॥  
 जिमि भुशुराड संग खेलत गेहा ॥ भये भूमित तिमिरुत संदेहा  
 ये अवतार कवन बिधि आहीं ॥ सब हिन की जूरानि जे खाहीं ।  
 हमहुँ बिवाहि गयनु इक वारा ॥ अब कहु चही प्रभाव निहारा  
 अस बिचारि बहुरा हरि लैगे ॥ दूदन चले कूल सब हरि गे ॥  
 बालन हैं को तब हरि लीन्हा ॥ जाना प्रियाम चरित अज कीन्हा  
 तुरत बच्छ बालक रचि लीन्हें ॥ ज्यों का त्यों कहु जात न चीन्हें  
 माता करे अधिक अस नेहा ॥ धेनु पियावै तजि नव गेहा ॥  
 सन्तत करे चरित प्रभु सोई ॥ जाना राम अपर नाहिं कोई ॥  
 बरष एक यहि बिधि चलि गयऊ ॥ इल उत लखि अज बिस्मय भक्त  
 पुनि सब बाल लखे हरि रूपा ॥ सेवत पद बिधि भव सुर भूषा ।  
 ब्रज वासी सब विबुध समाजा ॥ बहुरि दीख प्रभु आप विराजा  
 वस्तु गई सो चिन्ता भारी ॥ लज्जित है अज हृदय बिचारी ।  
 देवो अति मेरो अज्ञाना ॥ त्रिभुवन पति तिन ते कूल ठाना  
 निकट आई शिर नाइ विधाता ॥ लागे करन वरणा पुलकाना  
 नमो नमो त्रिभुवन पति स्वामी ॥ नमो सकल उर अन्तर जा मी  
 प्रियाम शरीर पीत पद कौंधे ॥ गुञ्जा भूषणा होउ कर बौंधे ॥  
 विम्बा धर आनन कवि सीवा ॥ जलजमाल कौस्तुभ मणि ग्रीवा  
 शीश मुकुट युति कुंडल लोला ॥ अंग अंग प्रति बसन अमोला  
 अरुणा अंधि पद मास विशाला ॥ करि कर भुज तिलका चलि भाला  
 कुंचित कच नाशिका सोहाई ॥ बेरा बाद पर पालक गई ॥  
 अस स्वरूप मानुषी तुम्हारा ॥ भयो अनुग्रह हेतु हमारा ॥ ॥



अहे सोइच्छामयवपुमाही॥ पंचभूतकी रचना नाही॥ ॥  
 असिममर्थ्य नाहिं मोहिं मभारी॥ जानीमहिमा अगम तुम्हारी  
 जावत असवपुहृदय न धरही॥ आतम रूप विचारें करही॥ ॥  
 तावत ज्ञान परिश्रम आही॥ अस बिचारि बुधत्यागत ताही  
 सुनिय सदा यश विमल तुम्हारा॥ साधुन सुखानिक सत जो सारा  
 काय बचन मत तुमको ध्यावे॥ तुम्हरे जन मन में प्रतिभावे॥  
 जावन मुक्त अहे तेशानी॥ जेतव पद पक जरति मानी॥ ॥  
 यद्यपि ही तुम स्ववस अजीता॥ तदादि न तुम का प्रभु जीता  
 तावन है रागादिक चोरा॥ जावत गृह के बंधन चोरा॥ ॥  
 तावत मोह निगद परे सोई॥ जावत रुस्मन तब जन होई॥ ॥  
 भक्ति तुम्हारि सकल सुख दाइनि॥ है कल्याण करण मन भाषनि  
 तेहि तजि केवल बोध डूलागी॥ करत यत्न न अनुदिन अनुरागी  
 तिन कर रहत परिश्रम सेवा॥ तख अस्थुम सधन कम लेखा  
 ही सुतंत्र तुम अपनी माया॥ करि बिस्तारत भुवन निकाया॥  
 तुम ही शोभित हो जग भूषा॥ स्थि काल तह ब्रह्म स रूपा॥  
 तुम जग पालन काल सुरागी॥ संहारणाहित तुम त्रिपुरागी॥  
 भूजन कन भनख तजि आही॥ काल पाइ मापति होर जाही॥  
 हितकारी तुम्हरे अवतारा॥ तिन के चरितन केरन पारा॥ ॥  
 तेहिते करुणा दृष्टि तुम्हारी॥ है सब पर सामान्य सुरागी॥ ॥  
 आपत की न कर्म हे जैसे॥ अपनाया स भुंजत नर तैसे॥ ॥  
 नमस्कार तिन का बड़ भागी॥ जिन कर मन तव पद अनुरागी॥  
 ते अनित्य भव सागर एहा॥ तरत बत्स पद सरिस सनेहा॥ ॥  
 तुम अनादि में आदि उपजानी॥ माया पतिने माया रानी॥  
 तुम्हरे आगे कामें तनका॥ बृहद समूह केर जिमिक नका॥ ॥  
 कह मम सातविता की काया॥ कह तुम आगित अंड उपाया

सकलसृष्टि तव उदरमभारी॥ तेहिते क्षमिये गुनह हमारी॥  
 बालगरभगत चरणा चलावै॥ मातु शोचि अपराध नलावै॥  
 नहिं यह मिथ्या बात मुरारी॥ है तुम ते उत्तपत्ति हमारी॥ ॥ ॥  
 जब मैं नाभ कमल ते भयऊं॥ तब फिरिता के भीतर गयऊं॥  
 बरष एक सतर खोज्यों तो हीं॥ तब हूं नंदे रिव परे तुम मोहीं॥  
 तप करित है देख्यो तव रूपा॥ कोटि भानु समंते ज प्रनूपा॥  
 तम करि ग्रंथ चक्षुषी भिमाना॥ तुम ते पृथक् ईश मैं जाना॥ ॥  
 तुम मम नाथ दास मैं तोरा॥ क्षम दुदेव प्रब प्रौ गुण मोरा॥  
 दया योग्य मैं प्रहौं तुम्हारी॥ ईशान के तुम ईश खरारी॥ ॥ ॥  
 सुनिबिनती चतुरानन केरी॥ पोछे दृग प्रभु निज पट फेरी॥ ॥  
 जाहु धाम कह रूपानिधाना॥ तजि मद मोह तर्क विधिनाना॥  
 सुनि प्रज पदरज धरि शिर गयऊ॥ बछ बाल लै प्रावत भयऊ॥  
 जहं तहं धरि निज लोक सिधाये॥ बरष बटोरि कृष्ण तब आये॥  
 बोले बालक सुनिये ताता॥ तुम बिन नहिं खावा दधि भ्राता॥  
 लागे बहुरि सकल मिलि खाना॥ विधि छल बल काहू नहि जाना॥  
 गीतिका छ० जानान काहू मरम भोजन खाइ प्रसबो लत  
 मये। कल ताल लाग है सब सखामिलि खान के हित बलि गये॥ ध-  
 रिरूप रास भके धेनु क असुर यक तहें प्राय हू॥ यग पकरि पट-  
 केहु विटप पर बलिराम सबहुन पाय हू॥

सो० बलि सुत सहसिक नाम। हरि जन बन प्रपसग लखि॥

भामुनि थल बस काम। दीन आय उद्धार कहि॥

दो० सोई यह धेनु क असुर भयोग योगति पाइ॥

मातनंतर पुनाथ सब कही कथा घर प्राइ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत प्रागर ग्रंथ उजागर श्री पुनाथ दास राम सेने-  
 ही कृत कृष्ण बल बंधन यमलार्जुन उद्धार राधिका विवाह नवपद्मा बच्छ-  
 ह-



राधाधेनुकवधकरवाकथावर्णनोनामचतुर्थः अध्यायः ४॥

दो० सुमिरिरामसियसन्त गुरुगरापगिरासुखदावि॥

कहोंदशमकीरीतिकछुगर्गअदितमतअनि॥

चौ० बालचरितबरनेअतिपावन॥ अंतरमुनेजैहैंमनभावन

इकदिनरामैभवनबिहार्इ॥ अपनागयेचरावनगार्इ॥ ॥

यहुंचेजबकालीदहतीरा॥ यियतभयेगोबालकनीरा॥ ॥

मेरेतुरतपुनिरुद्धमजियाये॥ सुरीभननिजखच्छपियाये

लागेरेवलनगेंदकन्हार्इ॥ चेदेविटपशिथुमारिसिधार्इ॥

उछरिगेंदकालीदहगिरेऊ॥ ताहीसंगकूदिप्रमुपरेऊ॥ ॥

गंयसर्पादिकालीकेतीरा॥ निरखिचपटिगासकलशरीरा॥

निबुकिचंदेताकेसिरकूदी॥ गरुयेहैडारेफनरबूदी॥ ॥

चलाहीधरमुखचसुनंतरे॥ सिधिलअंगभेविनमदकेरे

नाथलीनदकृशाकृपाला॥ विनवतभईतासुकीबाला॥

नौमिरुद्धमभजनभयभारी॥ नटवरभेयसुभगसुखकारी

पतिअपराधक्षमियभगवाना॥ मोहबिवसमहिमानहिंजाना

मुनिबिनतीबोलेयदुगार्इ॥ रोनकदेशबसहुअबजार्इ॥ ॥

हेहमतेरवगपतितेगारी॥ अनतगंयेडरिहैंसौमारी॥ ॥

सबअहिंदेतहैंभोजनतेहि॥ वसरीपरहमदीननहितयहि

भिरतिभिरनुहमहंधरिधीरा॥ हारिपरादुदरेनुगहितीरा

इहोआपसौभरिअधिकेरी॥ तेहितेगरुडकरतनहिंफेरी

कबहुंबैठितरुउगिलीमांजमि॥ कहमुनिपुनिआवतजैहोजमि

मेरोचराचिन्हतवमाथा॥ लखिअबबोलीनहिंरवगनाथा

दो० पूर्वजन्मकोभूपतेंमदबसममपदमाथ॥

लिह्योदिह्योतजिसिरसितेहिभयोसर्पपदमाथ॥

चौ० इहानिकटवाढेब्रजलेगा॥ रोदनकरहिसकलबसशेगा

यणुमतिनन्दनधीरजधरही॥ संकरषण उपदेशहि करही॥  
 धरहुधीरगुरागुरामनमाही॥ कतहुंजाडूकृष्महिभयनाही॥  
 तेहिअवसर उछरेयदुनाथा॥ कालीसहितचढ़ेतहिमाथा  
 लागकरागानिरतपुनिकान्हा॥ हरयेसकलमिलेजनुजाना  
 उत्तरेजबतबअपहिसिरनावा॥ कुटुंबसहितरौनकहिसिधवा  
 कृष्महिंसबभैंसपुरवासी॥ तातभातप्रमुदितचरदासी॥  
 तेहिदिनरहैसकलतेहिघाटा॥ असुरएकधकैगैडाटा॥  
 चहौंदिशिफौरबरहूधिवनाई॥ तेहिबनदीन्हिसिआगिलगाई  
 भयैविकलसबशरणापुकारे॥ करिद्वयानतुरंतउकारे॥  
 रोहितचिन्हननेकुलखाना॥ आयेभवनकरतगुरागाना  
 तेहिअवसरवरयाअटुअई॥ सचराचरसबकेसुखदाई॥  
 निजअहसबछावनलागे॥ जिमिचेतहिंबुधजरपनआगे  
 उमड़िधुमड़िनभजलधरअये॥ दानदेनजनुसुधनिकधाये  
 बगुलपातिसोहतयहिभाती॥ जिमिशुक्रतिनउरटेकसोहाती  
 नितेहिंमेरमुदितघनपेरवी॥ गृहीविरक्तजिमिहरिजनपेरवी  
 वरषतजलथलअपलभयचीन्है॥ जिमिसंपतिरघुपतिकेहीन्है  
 भईकीचनरचलतनिहारी॥ जिमिसज्जनजगमाहिंचिचारी  
 बोलतदादुरनहिंअपलसाता॥ जिमिसठकरतअकारगावाता  
 तडितचमकिफिरिजातबिलाई॥ जिमजगतनधनसुत्ततिपभाई  
 बडुरिनीरआवतसरमाही॥ जिमिसदगुरासबसज्जनपार्ही  
 दो० जेतहिंबवहिंकिसानमहिअटुकरबीजप्रमान॥  
 जिमिशुभसाधनकरिकरहिंयुगकरधर्मसुजान॥  
 चौ० प्रविटपाइवनसंकुलजामा॥ बियैसंगजिमिबहुविधिकामा  
 बिबीधजीवप्रगटेमहिअई॥ प्रजाबदतजिमिनृपवरपाई॥  
 जरतजवासआपनेदोया॥ जिमिकुलनासहेतहिजरोया



फलफरिषिटयप्रचनिभुकिज्जये॥ जिमिमुखाधुमुखसम्पत्तिपये  
सागतमधुरवचनपिककेरे॥ जिमिहरेव रितसन्तमुखतेरे॥  
प्रगटतकबहुं छिपतइमिभानू॥ यथासुसंगसुसंगतेजानू॥

दो० वरप्यौ जलपरिनाजमपीऊसरसेनूनकोइ॥  
हतभागिनकेज्ञानजिमिकथो सुनेनहिहोर॥  
चली छुद्रसरिता उमडि जिमिथोरधननीच॥  
अचलहोत जलजलधिमहं यथाजीवहीबीव॥  
द्वैमहिनाकीरुधितेभयोअन्नसंपुष्ट॥ ॥  
रामनामकेरेटे जिमिहोत भक्तजबतुष्ट॥ ॥

चौ० यहिबिधिबरसा ऋतुकेमाही॥ बनबछरूतिनसमकुद्लाही  
कबहुंतो॥ फलरेखेंगोली॥ बोलेंकबहुं द्विजनकीबोली॥  
कबहुंकरेंषटपदगुंजारा॥ कबहुंकीसबनिकूदहिं डारा॥  
कबहुंबकहैंबेनुबजावैं॥ देवगारितनसुधिविसरावैं॥ ॥  
गोवृषभादिविपिनिपशुजेते॥ मुखतृणादाविसुनेंधुनितेते॥  
बत्सगहेमुखथनरहिजावैं॥ नचहिंभारमुदघोरनपावैं॥ ॥  
खगसबशब्दसुनेंअनुरागे॥ यमुनाजलबहिसकतनअपागे  
आतपतेपावसहैंजावैं॥ पावससेआतपदरशावैं॥ ॥ ॥  
उंदेफूलितरुसिलापसीजें॥ मुनिजनसकलप्रेमरसभीजें  
ब्रजबासीसबहैंनिहारी॥ फरकिउरहिंसिरधिवसिरधारी  
बन्दकरहिंजबतबसबजागें॥ प्रमुदितहैनिजकारजलायें  
एकदिनप्रथामसरवनयुतभाये॥ चलतअमुञ्जावनआये॥  
चहुंदिशितेरावानललागी॥ जाइकितैं॥ बालकभागी॥  
शरणाभयेतनयनमुदोये॥ देवेंसबदवबाहरआये॥ ॥  
मासदिवसभरिगोपकुमारी॥ देवीकीपूजाअनुसारी॥ ॥  
कात्याइनीरुपाअवकीजें॥ नन्दसुवनहमकापतिदजें॥

रत्नातपियत अरु सोवत जागत ॥ हरि परि हीर चित अंतन लगत ॥  
 अजहं जासु मन होइ मगन अस ॥ कृपा सिंधु हारे होइ ता सुवस ॥  
 दो० एक दिन सब करती रहैं यमुना में प्रसन्नान ॥  
 चीर होत है आइ कै औचट प्रयास मुजान ॥  
 चौ० लटकाये पटकदम कि डरी ॥ मंगाहिं सब मिलि गोप दुलारी ॥  
 चीर देव तुम्हरो हम तब ही ॥ जल ते बाहर रहैं हो जव ही ॥ ॥  
 निकसीं सब करत बकरि वारा ॥ बोलि बिहंसि नन्द के दोरा ॥  
 होउ कर जोरि बिनय रवि की जे ॥ करत भईं सब तब अवली जे ॥  
 पूजेहु तुम जेहि हेतु मानी ॥ सो हम प्रगट भय सुवर दानी ॥  
 जब तक जग की लाज न खोवै ॥ तब तक मोहिं न प्राप्त होवै ॥  
 अस कहि अमित वनये प्रगा ॥ कीन्हो केलि सबन के संग ॥  
 कमलाल ललिता विमल विशेष ॥ चहु बनी सुखमादिक शेष ॥  
 जब तब सब के सदन बिहारी ॥ जात कहत एक एक हि प्यारी ॥  
 सयन बसन मुनि गोपिन केरे ॥ करि ओदर आवहिं चलि नेरे ॥  
 बक दिन गेरा धिकानि केता ॥ बैठारि निनि जहि ग करि हेता ॥  
 प्रयास बदन लखि आपनि छाहीं ॥ अपर नारि जानी मन माहीं ॥  
 कीन मान हरि नेह जभावा ॥ दूती बलि बहु भालि मनावा ॥ ॥  
 कबहुं बैठें पनि घट जाई ॥ काहु को सिर धेरें उढाई ॥ ॥  
 काहु कर घट डोरें कोरी ॥ ते यशु मात ते कहैं निहोरी ॥ ॥  
 एक दिन दधि बेचन के हेता ॥ चलीं सकल ब्रज बधूस चेता ॥  
 खवन सहित यदु नन्दन हेरी ॥ मारग धी चलि हिनि सब धेरी ॥  
 दीजै दान जानत बपे हो ॥ हठ कीन्हो पाछे पाछे ते हो ॥ ॥  
 डग डग में चलहु कन्हाई ॥ समुझि न लागे बहु मोटाई ॥  
 धिर धर कंस कबहुं सुनि पाई ॥ सकल तुम्हें बंदि माहि डगई ॥  
 कंसहिं मारि मिलै हो छाया ॥ उग्रहि करि हो बहुरि भुवारा ॥ ॥



हरिहों सकल भूमि कर भारू ॥ याही हित भा मम अब तारू ॥  
 भूठ बात मति बोलो लाला ॥ धेनु चरावत फिर तबे हात्ता  
 लकुटी हाथ कमरि आकांधे ॥ मांगि स्वात दीध सब के रांधे  
 तलुमई शायन तहौ सोई ॥ बात न ते नहिं भूपति होई ॥ ॥  
 यक युवती पुनि अहिर गंवारी ॥ तुम का जानौ भूति हमारो ॥  
 ब्रह्माशिव ध्यावै नित हमहीं ॥ ऐसी दशा भई मिलि तुमहीं ॥  
 तुल्य चतुर्भुज रूप देखाया ॥ लखि विश्वास सब न के आया  
 बौली सब हमें तव दासी ॥ भावै सो कीजै अविनासी ॥ ॥  
 प्रसुहित कीन बिहार बिहारो ॥ फिरि आई निज भवन निहारी  
 हो ॥ एक सरणी उन मत है टरै सब के द्वार ॥ ॥

ले कोई रया मैं मोल दधि ली नहीं नन्द कुमार ॥

चौ० अति बहूँ केलि गोपिकन केरी ॥ संक्षेप मैं कछु कनिबरी  
 मुनहु एक दिन एक ठिकाने ॥ गये चरावन सखा भुखाने ॥  
 चौबे करत रहैं तहं जागा ॥ पठये लावहु मांगि बिभागा ॥ ॥  
 जाइ सरवन जब भोजन मांगे ॥ सुनिक दुबचन कहन सब लागे  
 आयै घूम कहिनि सब खोले ॥ अब तुम जाउ तिय न दिग खोले  
 द्विज बनि तन ते भाषिनि जाई ॥ बिपिनि भुखाने राम कनहाई  
 तुम्हरे दिग पठइनि है हमको ॥ सुनि आनन्द भयो अति सब को  
 बिधि धि भाति के भोजन कीन्ह ॥ छिं प्रेचली प्यार करलीन्ह  
 आइ रुख के आगे राख ॥ प्रेम सहित सब हिन मिलि चारै  
 एक कर पति रोकि सिधाई ॥ तनु तजि मिली प्रथम सो आई  
 दरशन पाइ छु कित भई सारी ॥ कहत भये तब विपिनि बिहारी  
 जाहु भवन अब डेर हुन काहू ॥ तव सेवा करि है तव नाहू ॥  
 सुनि समोद आई अस्थाना ॥ तब सब द्विज लागे पछिताना  
 हमरे सकल यज्ञ धर कारा ॥ धक हमरे बल बुद्धि बिचारा ॥

धृकविद्यापदिदोसबजानौ॥ धृकहमरेजपतपव्रतदानौ॥  
 धृककुलमदःप्रभिमाननिछयनू॥ हाइरुछमनेविमुखजोभयनू  
 धनिपत्नीयेहरिमनभावन॥ इन्हेंपरसिहमहैंहैंगावन॥  
 धेनुचराइजाइजबधामा॥ अबलोकाहिंछविभिलिसवबाधा  
 कार्तिकवदीचतुर्दशिअरई॥ घरघरअंजनकरहिंलोगाई  
 यशुमतिभोजनविविधवनाये॥ रुछमचंद्रलखिवचनसुनाये  
 अाजुकोनउत्साहतुहारै॥ सुरपतिकीपूजनहैंप्यारै॥  
 ब्रजवासिनकेइछुबिदोजा॥ जासुरुपासुखवादतरोजा॥  
 बरषतजलत्तनजामतजाले॥ चरतधेनुययप्रगटतताते॥  
 रहियोदूरिछुयोजनिलाला॥ रूसिरहैंगोदेवविशाला॥  
 बोलेमनमोहनसुनुआई॥ यामेंहरिकीकोनभलाई॥  
 ईशरजाइजाहिभइजोई॥ गिरधरिसहाकरतसबसोई॥  
 कोइसिरजैपालेंसहारै॥ कोइबरंयेकरंयेकोइजोरै॥  
 इन्द्रकहाकरिसकतविचारा॥ नीकजबूनहाथकरतारा॥  
 बहुदिनतेपूज्योसुराई॥ काहुइकबहुंदिहिसिकछुअरई  
 तेहितेअबछांडोसुरदूजा॥ गोवरधनकीठानहुंपूजा॥  
 जेहिंकेऊपरधेनुचराधत॥ सदांताहितुमसबबिसरावत  
 निकटरहतसबतेबड़देवा॥ तेहितजिकरतआनकीसेवा  
 जबहींतुमपुजिहोमनमाना॥ हेप्रसन्नदेइबरदाना॥  
 याहीबातचनुभुजिरूपा॥ कहीस्वप्नमेंपुरुषअनूपा॥  
 निजनिजकर्मवचनकाअक्षा॥ तातेतुमहैंचहीगोरक्षा॥  
 सबब्रजमेंयहबातप्रकाशी॥ कोंसलकरनलगोपुरवासी  
 सबकेमनअरईसुनिर्लीजे॥ जोकछुरुछमकहैंसोइकीजे  
 प्र्यामसमानहितूनहिंकोई॥ प्रभुताईनिजनयननजोई॥  
 सुनिसर्बनिजनिजआश्रमअरई॥ सकटनमेंसबसोजभराई



नानाविधिपकवानमिटाई ॥ विविंधमूलफलफूलखटई  
 सालनसाकअनेकसोहाये ॥ जोतिअसबसकटसिधाये ॥  
 बालचंद्रयोवननरनारी ॥ चलेसकलमनअनंदभागी ॥  
 बाजेबाजनविबिंधप्रकारा ॥ गावाहिंगीतबधूमलिसारा ॥  
 पहुंचेजबगोलईनपाही ॥ टिकेसप्तचैयोजनमाही ॥ ॥  
 मगचारसुनिजहैतहंतरे ॥ आयेंगीरौलागघनेरे ॥ ॥  
 कार्तिकशुदीप्रतिपदाकेदिनाबोलेकृष्मनन्दतेयहिछिन  
 प्रथमेतुमपूजहुगिरिराजा ॥ तेहिपाछेसबगोपसमाजा ॥  
 पूजतभयेनन्दसखागे ॥ पाछेसकलचढ़ावनलागे ॥ ॥  
 प्रकटैकृष्मरूपधरिदूजा ॥ थूलाबिशालअनेकनभूजा ॥  
 श्यामशरीरमुकटधिरनीका ॥ कुराडलमालमनोहरहीका ॥  
 पीतवसनपहिरेसुटिभांगा ॥ चक्षुचपलअलंकेंजनुरागा  
 लोगखानउठाइउठाई ॥ लखिहरयेसबलोगलुगाई ॥ ॥  
 तिनतेकृष्मकहतभेतवही ॥ देखेलुमंरसेसुरकबही ॥ ॥  
 जोत्रत्यक्षतवपूजनखाता ॥ तुम्हरीकृपामिलेअबतासा ॥  
 ललितासखीगईसबजानी ॥ राधातबोलीमृदुबानी ॥ ॥  
 देखोश्यामकेरिचतुराई ॥ आपुपुजावतआपुहिखाई ॥  
 दो० भलीबस्तुरघुनाथमोइजोलागेहितश्याम ॥  
 नतरुभईवादिहिगईज्योपानीकेदाम ॥ ॥  
 चौ० एकसखीगृहभोगलगावा ॥ करपसारिताहकरखावा  
 भोजनकरिबोलप्रभुयाही ॥ मांगहुबरजोभावैजाही ॥ ॥  
 जोजोहिरुचासोईतेहिमांगा ॥ बोलनन्दसहितअनुरागा ॥  
 नाथदेहुबरयहममकामा ॥ नीकरहैकृष्मबलरामा ॥ ॥  
 सुनहुनन्दतवपुत्रनकेरा ॥ सदाहोयकल्याणनिवेरा ॥ ॥  
 सहितरामाजरहोतुमआछि ॥ एकबातहोईयमपाछे ॥ ॥

ताको तुम तन को माते डरियो ॥ जो कहूँ कृष्ण कहें सो करियो ॥  
अस कहि दिहिनि बाँटे परसादा ॥ अंतर ध्यान भये सहलादा ॥  
हनुमत बचन लागिय दुगई ॥ परसि परबत जिदीन वडाई ॥

दो० सेतु करत भाषुर सुनि दीन्हें ॥ व्रज मे त्यागि ॥  
मिले न दृश न मोहिं तोहिं ॥ द्वापर में एक त्यागि ॥

चौ० ऐसे प्रभु निज जन की बानी ॥ करत सोच सुनि कोन प्रभानी ॥  
जयति कहि करत बडाई ॥ आये पुर लखिले गलुगई ॥  
तब बासो अति कोपत भयऊ ॥ बालि मध परलय के लयऊ ॥  
व्रज वासी सब गये मोटाई ॥ देहु बहाइ सहित गिरि जाई ॥ ॥  
टुकटावर के कहे हमारी ॥ दिहिनि त्यागि भगव गिरिहि जो हारी ॥  
कोनि वात बड़ि बरनि सिधाये ॥ वन वृत्त वात वचन व्रज आये ॥  
घेरि घुम रिजल छाड़न लागे ॥ सकल कोप हरि पद अंगुरांगे ॥  
तुरत गोबर्द्धन लीन उडाई ॥ व्रज पर दिहिनि छूच सम छाई ॥  
नख पर धरे देखि व्रज नारी ॥ एक एक को कहें बिचारी ॥ ॥  
चोरि चोरि तब भारवन स्वाये ॥ सो सरि विश्राम काम प्रब प्राये ॥  
यशु मति कहें निहारि निहारी ॥ सब परशक विपत्ति यह डारी ॥  
केहन हिं गारि राजहि धारा ॥ हमरे सुत भारू कह दहारा ॥ ॥  
लेहु लेहु अर्बत को डलेहु ॥ लालहि नेकु उसासी देहु ॥ ॥  
हो अर्हार को हे कहूँ दाया ॥ तब मोहन माते समुभाया ॥ ॥  
सप्रदिव समुदिर न बन पीटा ॥ काहू के तन परी न छाटा ॥ ॥  
विभुवन पति जिन कर रव वाग ॥ को करि सैं के तासु अपकार ॥  
वृत्त सब धन चरित भये लजाई ॥ सहस्र अक्ष सुनि उठा डराई ॥  
आयो तुरत कृष्ण के पासा ॥ चरणानाइ शिर बचन प्रकासा ॥  
नमो कृष्ण भंजन महि भारा ॥ अखिल लोक नायक कर्तारा ॥  
जगत पिता गुरु प्रज भगवान् ॥ रक्षक धर्म दलन खलमाना ॥



में प्रपराध कीन प्रतिभारी ॥ क्षमहुनाथ अबचूक हमारी  
 जानानहीं तुम्हें मैं ईशा ॥ तानेकरन चहौ बजखीशा ॥ ॥  
 जो जाते करु पावत होई ॥ भिलेन ताहि कोरिस सोई ॥ ॥  
 ह भतुम्हार सब भानि वसाये ॥ कामधेनु लीजै प्रभु ल्याये ॥ ॥  
 बोलै रुस्म तजहु सब शोका ॥ धेतु समेत जाहु निज लोका ॥  
 भोग्यो निज अधिकार सदा ही ॥ भूले नोहं बहुरि सुख नाही ॥  
 आपे सुर पुर आय सु मानो ॥ देखि प्रभाव सभा हर खानी ॥ ॥  
 सब मिलि कहैं रुस्म हं रासा ॥ इंदुहु जा सुकरत परनामा ॥ ॥  
 गावई न की आहि रुपारी ॥ भुज चूमति जसु मति महतारी ॥ ॥  
 कहै रघुनाथ चरित हरि के ॥ भवसागर के बौहत वेरे ॥ ॥ ॥  
 इति श्री विश्रामसागर सद्यत आण्ण्य उजागर श्री रघुनाथ दास राम सने-  
 होकरु रुपाय ने चतुर्मासा श्रीहर सादान लाला गोवर्द्धन लीला वरीनी  
 नाम चवसोऽध्यायः पू॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरे गराप गिरा सुख दानि ॥

कहा दशम दशम के धकी रहस्यो लिख कुजनि ॥

चौ० इंदुहि श्याम स्वर्ग पहंचायो ॥ बज बांसन लखि अति सुख पायो ॥

बंस बहुरि सब निज निज गेहा ॥ एक दिन तहो चरित भा एहा ॥

नन्दहि बरुणा दूत ले गयऊ ॥ रुस्म जाय पुनि लावत भयऊ ॥

सुनी सबन प्रभुता अमिरामा ॥ अब सुनिधे जिमि जो ल्यो कामा ॥

एक दिन देखि सरद उजयारी ॥ वन में आवत भये मुरारी ॥ ॥

हरि हित गुनि ऋतु गरात है अयो ॥ सफल बिदपनहि जाहि गयो ॥

डोलत त्रिविध पवन सुख दाई ॥ लखित है प्रभु दित है पद दाई ॥

तिर भंगे है बेरा बजाई ॥ सुनि गोपी सब आतुर धाई ॥ ॥ ॥

दो० कोइ सुत तजि कोइ सेज तजि कोइ भूषण कोइ चीर ॥

कोइ पय तजि कोइ पाक तजि आई जहं बल बरी ॥

बोले लरिद ब्रजराज तुमकी ननक का काम ॥

सासुससुरपितुमातुपतितजिआइउयहिदाम ॥

चौ० तेहिते अपबही जाहु पराई ॥ सुनि गोपो बाली अपकुलाई ॥

यहतौ दोष नाथे तेहि लागि ॥ अपर पुरुष तेजो अनु रागे ॥ ॥

हमरे पति तुमहीं महाराजा ॥ यामें कहौ कौन की लाजा ॥ ॥

विभुवन नाथ प्राण पति देवा ॥ फुरमिलित जिये भूँदी सेवा ॥

जोइ मिरि है हिंये निदुराई ॥ कैयों बंशी तुम फूँकि बजाई ॥ ॥

आवै कोइ आसरा लगाई ॥ लागे दोष देइ दुदलाई ॥ ॥

तेहिते नाथ रहस अपब कीजै ॥ सूधे सूध जवाब न दीजै ॥ ॥

बिलपतरु दत्त बद्ध मिवाला ॥ देख्यो कृपा सिंधु छु बिजाला ॥

माया ते सब कह्यो गोपाला ॥ रच हरहस मंडल तत काला ॥

योजन पाँच माहि अभिरामा ॥ रचत भई बंशी बट धामा ॥ ॥

गीतिका छं० छ बिधाम बंशी बट जहाँ मरि जाति कंच-

नकी मही ॥ तहँ रास मंडल रच्यो मोहन जात सो काँपे कही ॥

नव सात सहस्र जु गोपिका सजि साज सब ठाढ़ी भई ॥ यक एक

के मधि एक मुरतिका मकी शोभा मरे ॥ रघुनाथ तिन के बीच जोड़ी रा-

धिकानन्द लाल की ॥ बपु एक रूप अनेक की न्हे रव बरि नहि

यहि हाल की ॥ मिरदङ्ग ताल सितार बहु मुरचंग बेराग संगि

का ॥ सुरमन्द बाजत बाँसुरी गति मिलत उठत तरङ्गिका ॥ क-

जोरि निर्रत छोरि कहँ मुख मोरि सिरनीचे कैरें ॥ पग भूमि

पटकनि बाहु भटकनि ग्रीव लटकनि मनुहरें ॥ मृदु हंसहिं

हेराहिं घुमरि भुकि गति धूंधुरुन की लावहीं ॥ तत ताथेई तत-

ताथेई तत नाथेई कहि गावहीं ॥ कोइ डारिकर गरश्याम के-

मुरली छिनाइ बजावती ॥ कोइ तान पूरत कान्हू संग कोइ प-

करि उर चपटावती ॥ हंसिलेत गोद उठाय मोहन हाँथ अंग-



निपेधैरे। लखि देवनभपरसूनबरखैहरायिसवजैजैकरै॥  
 मरिाकंठउरबनमालनबरधिरमोरमुकुटविराजहीं॥ पपीत  
 किंकनिकाछनीकटिकानकुंडलछाजहीं॥ अंगअंगप्र-  
 तिबहुविधिबिभूषनअलकअमकनभलकहीं॥ पटक-  
 जनूपुरबेणुकरमुखयानभरछबिछलकहीं॥ यहिभांतिना-  
 चतगोपिकासबथकितहैभुकिभुकिरही॥ कहिमालपा-  
 यलचंद्रिकाखसिपरीनकबेसरिकहीं॥ प्रतिअमितलखि  
 नंदलालतिनपरसुपटपवनदुरावहीं॥ उरमेविभूषणाहा-  
 रबेनोकमलकरिसुरभावहीं॥ असप्रीतिकेबमश्यामल-  
 खिसुरप्रगरागमनमेंकहै॥ धनिधन्यगोपीधन्यजिनकेसं-  
 गहरिकीडतरहै॥ करजोरिहृदयनिहारिबिधितेकहैयहब-  
 दीजिये॥ हमहोहिदासीब्रजबधुनकीरुहमपदरतिकीजिये॥  
 दो॥ रुहमहिमारुतकरतजबदेरिवनसबब्रजवास॥  
 मनमेंभाअभमानतबहैहमरेवसश्याम॥  
 चौ॥ जानिगयेसोमदभगवाना॥ तुरतभयेतहैअंतरध्याना  
 जेहिपरहेतअधिकअनुकूला॥ दलततासुहरिमददुरवमूला  
 एकसरवीकाकरगहिलीन्हा॥ गोपीविषसंगवनकीन्हा॥  
 तेहितबनिजमनमांभबिवारी॥ मैंहोश्यामैवहुतपिआरी॥  
 बोलीपगतेचलानजाई॥ लेहुमोहिनिजकंधचढ़ाई॥  
 लीजैचढ़िबैठेमुसक्याई॥ चरगाउठावतगयेहेराई॥  
 बिनप्रभुबालबिकलमेंकैसे॥ जलचरबिनजलव्याकुलजैसे  
 शोचतहरिहिनपावतबामा॥ बिकलपुकारनआरतनामा  
 हेव्रजराजराजदुरवमोचन॥ हेगोपीपातिनारिजलोचन॥  
 चरगाशरगामेदासीतेरी॥ कृपासिंधुलीजेमुधिमेरी॥  
 यहिविधिरुदतपरीतरुवाला॥ पछिलिनकाअधसुनोहवाला



हँ दतफिरहिं सकल उनमति॥ जड़जीवनते दूभाहिं रस्ता॥  
 हेवटं हे पाकरी करीला॥ तुमदेरेवे मोहन गुन शीला॥ ॥ ॥  
 हे चलदल हे नीबपिथारी॥ तुमकत हँ देरेवन नारी॥ ॥ ॥  
 हेरसाल हे पनससुजानी॥ तुमआवत देरेवन कानी॥ ॥ ॥  
 हे जामुनि हे गूलरि नूना॥ तुमदेरेव्यायदुर्पात के पूता॥ ॥ ॥  
 हे दाडिम हे कुन्द चमेली॥ तुमदेरेवे गिरधर भल बेली॥ ॥ ॥  
 हे गुलाब बेली कचनारा॥ हे वट्टे हे हर सिंगारा॥ ॥ ॥  
 हे नीबू रुपमस्त सरीफा॥ तुमदेरेवे गोपाल हरीफा॥ ॥ ॥  
 मोमसिरी के कदमत माला॥ तुमदेरेवनर हरि नंद लाला॥ ॥ ॥  
 दो० हे कछमाउया॥ द्विजापथ्याक मुकाकन्द॥  
 हे वेस्वाल गूल अछ तुमदेरेवे नंद लन्द॥  
 चौ० यहि प्रकार सब ब्रह्मन तेरे॥ भेटि स्यूँ हँ हरि हरे॥ ॥ ॥  
 जवन कछ उत्तरत हँ पावैं॥ निदरिति हँ बांशहि गरी आवैं॥ ॥ ॥  
 हे बंशी तैं बड़ो गंवारी॥ अपने कुल की रीति बिगारी॥ ॥ ॥  
 संवैयावे मगदापग अन्धन को तुम चालि बो आछे नहू को  
 निवास्त्यो॥ वेजल थाह बतवत हँ तुम प्रेम अथाह के बारि-  
 द पास्त्यो॥ बेबरवास कसादू भले तुम बास छे डडु जारि भंडा-  
 स्त्यो॥ काहिये कहा हरि की बसुरी तुम आपन बंश के नाम बिगास्त्यो॥  
 दो० विरह बन्हितो मिं भरी है नू वंशी सांच॥  
 फूँकि फूँकि हागहत परित दीप आंगुरी नांच॥  
 चौ० जो तैं श्यामैं तेन सोरानी॥ तौ परपीर जाइ किमि जानी॥  
 आगे चलि सो सखी निहारी॥ भेटि कह्यो कित गये विहारी॥  
 तेहि नव आपन कथा बखानी॥ कित धों गये हमहु नहिं जानी॥  
 वोली नवल ललिता मुख जोई॥ श्याम सरिस सखि निदुरन कोई  
 कहगा धकाश्याम काकी ना॥ केहि अभिमान दुख नहिं दाना॥



विधिकरिगर्वविपुलविधिदेवे॥ शंकरभयेकामवसत्नेरेवे॥  
 लोभसत्नरिवसिमरीकीमाला॥ वसेविपिनिमैदशस्थलाला  
 नारदवानरकरमुखपावा॥ धीमिरकरहनुमानबंधाया॥ ॥  
 हरिके कहैकथानहिंमुनेऊ॥ गरुडभुसुराडपुरहगिरिधुनऊ  
 दशमुखदरापि॥ पराजैपाई॥ कुशतेनिजबलरामजुभाई॥  
 जानगर्वसनकादिककरेऊ॥ आपदेइजगमिंअवतरेऊ॥ ॥  
 गिरययातिस्वर्गतेभूमा॥ गजवसग्राहबहुतदिनभूमा॥ ॥  
 गिरिअरिगुरायोनमोसभदूजा॥ हरीतस्थगोचईनपूजा॥ ॥  
 तापसधरीशिलाशिरफेरे॥ जरेपंखसम्पातीकेरे॥ ॥ ॥  
 बसुधशिशुमुनितेमदकीन्हा॥ तेहिगांगेबमनुयतनलीन्हा  
 द्रुपदद्रोणातेअहमितिबानी॥ भद्रतेहिअईराजकीहानी॥  
 विद्यामदजबकीर्तिविमाते॥ रिसकरिरम्भजरायोताते॥ ॥  
 भुक्कुताअरुनृपातियऔडी॥ मदतेभद्रसरेमिश्रलौंडी॥  
 करिकन्दर्पदर्पतनुनरेऊजिन्हूपानगङ्गाकरकरेऊ॥ ॥  
 दो० प्रभुइदुरिवतलरिवलबरोकेभयौगर्वतेहिराम॥  
 विछुरतनारिसनेहवसजरतनिवाह्योराम॥  
 चौ० तेहितेश्यामहिंदोयनदेजै॥ जसमदकिह्योतैसफल्कीजै  
 बोलीअपरसरवीचलिंकेअव॥ रहसकरोपिलिहेंमोहनतब  
 आयसबनकीन्हीसोइरचना॥ विविधिभांतिकेबोलबचना  
 कोइरुद्रमवनीकोइप्यारी॥ अयादिहितेलीलाबिस्तारी॥ ॥  
 लार्गीप्रेमसहितजबगावन॥ तुरताहिप्रकटभयेमनभाषन॥  
 अपरकर्मतुष्टतचिरकाला॥ प्रेमतेप्रकटहोतततकाला॥  
 छविअनपारसंकेकोगाई॥ लखिब्रजबधूउठीहरयाई॥  
 काहूप्रीतिमकरगहिलीन्हा॥ काहूबाहुंकंधनिजदीन्हा॥  
 काहूकटिपटपटउरधारे॥ सप्रतहोयअसबचनउचारे॥



महाराज सुमध्यासर्वनोऽप्य॥ संशोचितहमप्रभुकरैः सब ॥  
 तीनिभोतिप्रानीजगवीचा॥ एक उत्तममध्यमयकनीचा ॥ ॥  
 विनसेवाजोकरैः मनेहू ॥ उत्तमप्रभुकरस्तद्वरायेहू ॥ ॥ ॥  
 सेवालखिजेप्रीतिबदावै ॥ तेसध्यासकीपदवीपावै ॥ ॥ ॥  
 अधमअनन्यदासबिसरावै ॥ विनसेवातेहि कौनचलावै ॥  
 इनकेलक्षणाकहोबुझाई ॥ जोहिसुखलेहैनसंशोजाई ॥ ॥  
 गूढ़गिसेपुनिगोपिनकेरी ॥ कृपासिंधुबोलेहंसिहेरी ॥ ॥ ॥  
 विनसेवाजिप्रीतिबदावै ॥ तेसुकृतीउत्तमगतिपावै ॥ ॥ ॥  
 उमेहियेजहंस्वारथजाने ॥ लहोनभ्रमसनेहपिछाने ॥  
 जोसेवाकरिवअसविनसेवा ॥ प्रीतिनकरैसुनोतिनभेवा ॥  
 तिममहजानह्यामिप्रकारा ॥ आतमसमयकनिरधारा ॥  
 दूसरजानहुपूराकामा ॥ लहेंवस्तुतद्विनिष्कामा ॥ ॥  
 नमोप्रीतिशेषद्वखाना ॥ मलअनमलजहिपरतनजाना ॥  
 चतुर्धगुरुदाहोहस्वयोये ॥ जोशुद्धतउपकारमिदाये ॥  
 तुजसुनतगोपीधुसवजानी ॥ समुंभस्यामबोलेमृदुबानी ॥  
 अहापियेतुमजसचित्तप्रान्यो ॥ तथामेहिं कबहंभतिजान्यो ॥  
 मोहिंसेवकाध्रियधारासमाना ॥ करोंवियोगतासुहितजाना ॥  
 लखतरहोसुखरुखजसतबहो ॥ तुमतेउत्तरानहोमैंकबहो ॥  
 तजिदुरजनगृहबन्धनधारी ॥ कीन्होप्रायभजनतुममोरा ॥  
 कोनवस्तुअसिंहंसारा ॥ जाहिदेयहोईउद्वारा ॥ ॥ ॥  
 दो० यहिप्रकारकेबचनसुनेपुनिगोपीहरबाये ॥  
 लागीसोइलीलाकरनकुहमसहितसुखपाये ॥  
 चौ० कीन्हीविविधभोतितकीडा ॥ सोबरातमोहिलागतकीडा ॥  
 भययाभिनिअरधावीधकेरी ॥ शिथलभईसपभाभिनिफेरी ॥  
 झाईभवनहोतभिनसारा ॥ वरणाकहुहैचरितअपास ॥



जो यह चरित सुने तजि मोहा ॥ लहे सो प्रेम भक्ति संदोहा ॥

इति श्री विश्रामसागर लवमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास  
रामसेने ही कृत कृष्ण रासलीला बरानो नाम पद्योऽध्यायः ६ ॥

दो० सुमिरिराम सिधसन गुरु गरापगिरा सुखदानी ॥

बरणों श्री भागवत की कथा मनोहर जानि ॥

रहस चरित सुनिकह्यो नृप श्रुति प्रवेहित यद्वान ॥

कही हरी परतिय बरी सत्य सुनो सो उतात ॥

समरथ को नहिं दोय कछु रविबुध गंग सजान ॥

जिमि विष कीन्हो पान हर पंचै सकल को उजात ॥

सो० भाववश्य भगवान रूप सिंधु निष्काम चित्त ॥

तजि कुतर्क मति मान ॥ सुनो चरित हरि के मुखद ॥

चौ० केहू भांति हरि पद चित लावे ॥ अयाम धाम सो निश्चये पावे ॥

यक दिन सुनो गोप मिलि सर्वा ॥ गये रहे हर पूजन कवी ॥ ॥

तहो एक आयो चलि नागा ॥ नन्दराय की लीलन लाता ॥ ॥

परी सोर हरि मारी लाला ॥ कृवत भयो बिद्या धर ताता ॥ ॥

करि दराड बन कथानिज भारवी ॥ गा सुर पुर उर मूरत राखी ॥ ॥

एक दिवस मोहन ब्रज बाला ॥ करहिं कैलि आवाते हि काला ॥

गंवर चूड़ धन पति कर दूता ॥ लै भागा एक सरवी अघूता ॥ ॥

बध करि हरि लै हि त्रिय सो लीन्ही ॥ छीनि सुभास निराम हि हीन्ही ॥

एक दिन कंस असुर यक पेरा ॥ आवा धरि वपु बिष भ केरा ॥

उहं कत फिरत उड़ावत छारा ॥ पकरि सींग तुरतै प्रभु मार ॥

पुनि केसी आवा हय रूपा ॥ देखि डरे ब्रज लोग कुरूपा ॥ ॥

घर बाहर निकंसे कोइ नाही ॥ तब गिरिधर आयो तोहि पाही ॥

दो० लाग चलावन चरणा दोउ पकरि लीज पग आस ॥

दिहिनि फेंकि शत धनुष पर गिरा जाइ जनु धाम ॥

चौ० पुनिरिसकरिधावामुखवाई ॥ कृष्णदीनिनिजबाहं चलाई  
 बाहीभुजातलफिमरिगयऊ ॥ लरिसवग्धालनकेसुरबभयऊ  
 यकदिनश्यामसरवनकेसंगा ॥ रेवलतरहेतहों धरिअंगा ॥  
 बालककरब्योमासुरआवा ॥ रिलनलागनजानेपावा ॥ ॥  
 वृकबनिशिषुयकयेकउठाई ॥ सबगिरिगुफादुराईसिजाई ॥  
 तबयदुनाथगयेजियजानी ॥ लरिमारातुरैतेअभिमानि ॥ ॥  
 सुनिसुनिबधसुभदनकरकाना ॥ तबसुभोजपतिअतिअकुलान  
 बोलासकलसभातेऐसा ॥ रिपुबधहितअवकरियेकैसा ॥ ॥  
 कहतभयेसबमहसंघाता ॥ लेउबोलाइयहांदोउधाता ॥ ॥  
 ऐहेंरंगभूमिचलिजबहीं ॥ मल्लयुद्धकरिमारबतबहीं ॥ ॥  
 सुनिवारताभूपमतभाई ॥ तुरतलिहिसिअक्रबोलाई ॥ ॥  
 मधुवनजाउतातममकामा ॥ लावहुबोलिकृष्णबलरामा ॥  
 धनुययजदेखनकेकाजा ॥ कह्योबोलाइनितुमकाराजा ॥  
 शपदसाजिनिजुस्यन्दनदीन्हा ॥ करिबहुबिनयबिदापुनिकीन्हा  
 कार्तिकबदीअपोदशिभोरा ॥ चदिअक्रचलेअजवोरा ॥ ॥  
 करतविचारआजुहरिचरणा ॥ देखिहोंजाइसकलदुरबहरणा  
 अंकुशकुलिशसहितधुजरेखा ॥ ध्यावतजिन्हेंशम्भुअजश्रेया  
 अगदशीशमेंनावबजाई ॥ लंबकिमोहिंउरलेंहैंलाई ॥ ॥  
 दहिनेमृगविलोकिहरधाने ॥ करतमनोरथबुजनियराने ॥ ॥  
 नित्यनिरामयनिरमलनीका ॥ परपदतेप्रियत्रिभुवनपीका ॥  
 उतरिपेररथतेनेहिंबारा ॥ स्नागेलोटनधूरिमंभारा ॥ ॥  
 शमेंपेरकृष्णपदपावत्र ॥ निकसैंहैंहेंधेनुचरावन ॥ ॥  
 भेंटहिंपादयअसजियजानी ॥ इनकेतरविहरेसुरबदानी ॥ ॥  
 चलिनसकततनसुधिनपरेखी ॥ दृगजलबहतचहतकवदेखी  
 प्रेमविचारिकृष्णबलरामा ॥ लैगोवेंआयेतेहिठामा ॥ ॥



परेचरगा अकूरनिहारी॥ उर लगाइतबलीनबिहारी॥  
 रूपनिहारीकुकितभयेनैना॥ अतिसुखदीनबोलिसुखेना  
 लायेभवनहरखयुतलीन्हा॥ नन्दमहरिखड्गपादकीन्हा  
 सेजबिछाडसुभगबैठाये॥ यदरसभोजनमहरिबनाये॥  
 जेवतभयेबैठिसबसंगा॥ अंचैबहुरिआयेपरयंगा॥ ॥  
 बोलेतवदंपतिहरधाता॥ गवनकवनहितकीन्होंताता  
 सकुचैकहनरहतनहिंराखा॥ पडवाभूपहमेंअसभाखा॥  
 सहितगोपनन्दहिलैआवे॥ दीधघृतक्षीरजहांतकपावे  
 पुनिधनुमखदेखनकेकाजा॥ हरिहलधरहिंबोलाइनिराजा  
 सुनिअसबचनवानसमलागे॥ यमुमतिदीखकालजनुअगे  
 बोलतभईविकलहेबानी॥ हेअकूरभूपभरखठानी॥ ॥  
 तहांकंहोममबालनकेरा॥ कोनकामहेजोनृपदेरा॥ ॥  
 वहांचहोभुजवलजिलनाही॥ तेहितेमोसुतजैहेंनाही॥  
 बोलेकृष्णजाबमेंमाई॥ धनुषयज्ञदेखीनहिंकाई॥ ॥  
 आवबैबगिबबाकेसाथा॥ असकहिनिठुरभयेयकुनाथा  
 विकलमहरिबहुबचनखराते॥ येकोअंकरहतनहिंजाने॥  
 वृजपतितेबोलीधिलखाई॥ लायोसंगफेरिदोउभाई॥ ॥  
 यहिविधिभईसकलनिप्रिनाशा॥ कृष्णपितातेबचनप्रकाशा  
 लैदीधदूधचलहुतुमअगे॥ गोपनसहितसखासंगलागे॥  
 चलेनन्दसकटेनचढ़िगोपा॥ बालबृन्दपथतेंकेंसचोपा॥  
 ककुकबारबीतेदोउभाता॥ रथपरभेसवारहरधाता॥ ॥  
 तेहिक्षराशोक रहापुरछाई॥ महरिदशाककुवररिअजई  
 ब्रजवनितनजबसुनाहवाला॥ धाईसबहैनिडरबिहाला॥  
 आइनिकटबोलींकितजाहू॥ चलहुधूमिजेनिजभलचाहू  
 सुफलसुखइनकाकाकहिये॥ नीतिबिचारिमधुहैरहिये

दो० कामदारकामीकृपिराकन्यामोंगनलोइ ॥

येपरपीरनयेखई होनीहोयसोहोय ॥ ॥

चौ० सुनिगोपिनकेबचनबिहारी ॥ संभोसाध्यसुरमुनिहितकारी  
बोलेबिहंसिबनजकरजोरी ॥ एकअरजअबसुनिधेमोरी ॥  
धनुषयज्ञकवहूँ नहिपेखी ॥ जोतुमकहौतौआईदेखी ॥  
सुनिसबकेमनकरुगाआई ॥ आदहुदेखिकहेनिअकुलाई  
चलेतुरतराहंकिबिहारी ॥ सकलचित्रसीरहींनिहारी ॥  
पादपवोटहोइरयजबही ॥ एकएकतेभायेंतबही ॥ ॥  
देखाबोहरिकेरथजाई ॥ कमलनयनकरपटफहराई ॥  
जबनभगरदयरीनहिंदेखी ॥ फिरींसकलमनशोचविशेखी  
पुनिरनिरावहिंदिशिबनमाली ॥ कहबयभानुसुतासुनुअली  
कबित्तपीछेहिकचिनवतनयनममवारआछेनपरतप-  
गकाहमनदीजिये ॥ पवननभईहोंपताकहूअवरनाहिर-  
थकेनभईअंगकेसीअबकीजिये ॥ धूरिहूनभईहरितनला-  
गिजातीसङ्गरवगहूनभईजोउड़ायदर्शलीजिये ॥ आई  
बिलरवातजिमिमारवीमधुजातछेरिजियोनहिंजातपै  
हरशआशजीजिये ॥

चौ० गोपिनिकीकहुबिरहबखानी ॥ अबसुफलककीसुनहुकहानी  
कृष्णहिंलरिवपुवत्तिनआधीन ॥ तबअक्रूरविचारहिकीन्हा  
इन्हेंसुनोहमहेंअवतारा ॥ गोपिनकेबसनिपटनिहारा ॥  
यहिप्रकारकीसंशयआनी ॥ जानिगयेप्रभुअन्तर्यानी ॥  
लागेजबअक्रूरनहाई ॥ यमुनामेंनिजमूर्तिदिरवाई ॥ ॥  
जलभीतरजबडुबीमारी ॥ देखिपेरतहंरामबिहारी ॥ ॥  
शिरनिकारिपुनिरथपरपेखा ॥ कैयीबारयहीविधिदेख ॥  
भयेनिमग्नदोऊकरजोरी ॥ दिव्यदरशतहंदीरिवबहारी ॥



संवत्सुरमुनिसिद्धविधाता ॥ लागेविनयकरनपुलकाता  
 भोमिकुलमज्जद्वैप्रतिनाथी ॥ व्यापकब्रह्मसकलघटवासी  
 मायाव्यक्तधिरजवागीश ॥ श्रुतिकहं सर्वधारिणपदशीशा  
 यहिविधिकीन्हविनयबहुजबही ॥ भयेअष्टशयबहुरिहरितवही  
 व्याकुलहैआयरथतीरा ॥ कहहरिकिह्योअस्नाना ॥ भोरा ॥  
 तबसुफलकसुतगहिदेउधरा ॥ बोलेप्रभुमेंतुम्हरीधारणा  
 तबप्रभावप्रथमेंनहिंजाना ॥ तेहितेमेंअभावमनआना ॥  
 करतनाथतुमलीलाकैसे ॥ बहुविधिस्वांगसन्काजैसे ॥  
 तबप्रभुदानपतिहिसमुभावा ॥ चलेआइमधुपुरनियरावा  
 सुफलकसुतबोलेकरजोरे ॥ प्रथमेंचलौनाथपहमारे ॥ ॥  
 आउबएकदिवसतबधामा ॥ असकहिउतरिपरेतेहिठामा  
 सहितसमाजरहेपुरपासा ॥ तेहिदिनतहांभईनिशिनाशा ॥  
 दो० भोरभयेप्रभुनन्दतेबोलेप्रमजनाथ ॥

मधुपुरआइदेरिवअबसरवनसहितदेउभाइ ॥

चो० आवहुदेखितातहरुगई ॥ काहतेजनिकह्योलाइ ॥  
 आयमुपाइचलेहरयाता ॥ श्रीदामादिसखासंगभाता ॥  
 नबलजारिसमपुरीनिहारी ॥ भयेमुदितनखशिखसिंगरी  
 जातरजकलेकहाकहाइ ॥ देउहमेंबरपटपहिराई ॥ ॥  
 बोलातिजसुरबदेखौतोरा ॥ भूपवसनतुमजातेअहीरा  
 मुनिबलभद्रविघ्नकरिडारा ॥ पहिरिनिपटसज्जअनुहारा  
 दरजीवायकनामबिलोकी ॥ बसनसाजितनभयोअशोकी  
 आगेमिलासुदामामाली ॥ रचिपहिरायसिहारसुजाली ॥  
 लीन्हिसिमांगिकमलपरप्रेमा ॥ ज्ञानविशुद्धभक्तिदृढ़नेमा  
 आंगलखीकूबरीजाता ॥ कंसहिरवस्लगावनगाता ॥ ॥  
 कहतभयेतेहितेयदुराई ॥ दिहुहमारेखवरिलगाई ॥ ॥

हाकिम भई कविदेसियोपालहि ॥ निरभयखवरिलगायसिभालहि  
 तब मोहन पगतेपगचापी ॥ चिबुक सुकरगहि ऊपर आपी ॥  
 मिटिगातुरतहि कूवरतासू ॥ भयो दिव्यतन विमलप्रकासू ॥  
 कोलोचलहु नाथममगेहा ॥ रोरियोग्यभयोबपुसहा ॥ ॥ ॥  
 पूरा प्रीतिदेखकरजोर ॥ कह्यो अपरदिव आउबतोर ॥ ॥  
 आगेचलेनगरकीनारी ॥ प्रवलोकहि छविचदीअटारी ॥  
 भूषणपदथहिरेबिपरीता ॥ कोइअंगअघटकोइअंगरीता ॥  
 एकएकतप्रमुदितकहई ॥ येदेखेयणुमत्तिसुतअहई ॥ ॥  
 इनसमसुभाजनकोउंससारा ॥ धनिगोपीसंगकिहिनिबिहारा ॥  
 कोइबसुंदरदेवकीकेरे ॥ कहतदुराइनियशुमत्तिसेरे ॥ ॥  
 बहूविधविधिपूजीनिजइच्छा ॥ अवराचिअरुस्वप्रप्रतिच्छा ॥  
 परकहैंअबकंसकुचाली ॥ मत्तयुइहितबोलेसिआली ॥  
 कहमुष्टिकचारपूरविशाला ॥ कहैंयेमृदलनन्दकेलाला ॥ ॥  
 अणकहैंबलमेंअनिभारी ॥ विपुलअसुरइनडारेमारी ॥ ॥  
 मलेप्राणाकंसहुकेहरही ॥ आपुराजिमधुपुरकीकरही ॥ ॥  
 यहिविधिआपुसमेबनलाही ॥ बरसैंसुभनजहांचलिजाही ॥  
 कोइलक्षणायाककेतूला ॥ दक्षिणाधृष्टसगअनुकूला ॥  
 द्वादशहावभावकोइकरही ॥ निजसरूपकोइरतिमदहरही ॥  
 सराजोरासिकसिरोमराके ॥ निरधर्हिंति यनभातिबहनेरे ॥  
 कुराडलियाकोइस्वकीयपरकीयकोइकोइसामान्याजा ॥  
 शिवियःसिन्धुमुरधाकोइमध्याप्रोदाचारि ॥ मध्याप्रोदा ॥  
 चारिकोइअप्रनअष्टा ॥ कोइज्ञाताअज्ञातकोइजेशाअजेशा ॥  
 कोइधीराअधीरलक्षिताकोइगुप्तायन ॥ मुदितविदग्धाको ॥  
 कोइकुलटाअनुसायना ॥ कोइउक्तास्वाधीनबातसज्या ॥  
 कोइदुरिबता ॥ कलहंतरीताकोइविप्रलब्धाकोइरुषिता ॥



कोइ खरिदता अभिसार का आगत पतिका होइ। आयेत प-  
निका धीन पति गविते देखे कोइ ॥

चौ० यहि बिंधल खियुपतिन के लहरा। आपु समें बतलाइ प्र-  
तहरा ॥ रङ्ग भूमि आयि बहुराया। आक्रधनुष गहि तोरि बहाया।  
मारनि कोरे रहै खबारे ॥ आयि बहु रिदिके जहं सोर ॥ नन्द गो-  
द ले असन कराये। पुनि सुनि दोउ भाइन समुभाये ॥ ॥ ॥

दो० करौ अच गरी मति इहां निरंदे नृप कागाउं ॥  
मलेता तरधुनाथ भरिा मुरव मन औरे दाउं ॥

इति श्री विश्रामसागर सवमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ रासराम स-  
नहो कृत श्री कृष्ण मथुरा आगमन बरानो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणपति गिरा मुख दानि ॥  
कहौ दशम अस्कन्ध की के सो कथा बरदानि ॥  
रज कनिषात न धनुदल न अपसुर सररा बजोर  
सुनि जहै तहै रघुनाथ जन वरी नगर में सोर ॥

चौ० यह सब खबरि कन्स ज बपाई ॥ तब तौ अधक उठा अकुलाई  
लीन्हि सिबो लिमल्ल बल धूरी ॥ आवेत वतु मडा हो चूरी ॥  
द्वार कुव लगा गज ठढ़ि प्राया ॥ अपयुत नाग बल तमि पावा ॥  
कहि सिमहा वत ते गोहराई ॥ अवि सत ते डोरें चपवाई ॥ ॥  
असुर सकल बेढाय ठिकाने ॥ आपु बेढ उत्तम मंचाने ॥ ॥ ॥  
तब बोलवाइ सिराम गोपाल ॥ नन्द सहित आवें सब बाल ॥  
कही चार मुनि सकल सिधारे ॥ आयि रङ्ग भूमि के द्वारे ॥ ॥ ॥  
बोले कृष्णारिले पीला ॥ सुनि तेहि दृष्टि सामने ढीला ॥ ॥  
लागे ताहि खेलावन दोऊ ॥ दूरि हितें देखत सब कोऊ ॥ ॥  
कबहूँ तर ऊपर चलि जावें ॥ कबहूँ क पाछे ताहि हटौवें ॥ ॥  
एक बार हनि मुष्टिक माश ॥ गिरा अच भिकरि धोर बिकाश ॥

मस्तकविषकि हंसगतभयऊ ॥ रामउपारिएकरदल्लयऊ ॥  
 गंगप्रवनि तबगंगे सुमेया ॥ जेहिजसभाउतैसतिनदेखा ॥  
 मल्लनमल्लतियनसरूपा ॥ गोपनसजननृपननरमूपा ॥ ॥  
 पित्रनशिसुकोविदनविराटा ॥ भोजराजनिजुकालहिडाटा ॥  
 योगिनतत्त्ववैद्याजिनइष्टा ॥ यामेंकहीभावनाश्रिष्टा ॥  
 बैठेसकलसुभासनपाई ॥ बोलातबमुष्टिकढिगअपाई ॥  
 हेबलरुद्रमअरणाइआवे ॥ भूपहिनिजकरतबदशरावे ॥  
 ममतबधर्मयहैहैताता ॥ भूपप्रसन्नकरीसोइबाता ॥ ॥  
 बोलिप्रभुजानतसबकोई ॥ मल्लयुद्धविनभेरनहोई ॥ ॥  
 जोबिचारबिनभूपकरावे ॥ अत्रधिराजिताकीमिटिजावे ॥  
 देखेताहिमहाअघलांगे ॥ देइछोड़ाइनतोउदिभांगे ॥ ॥  
 हमबालकतुमभेरुसमाना ॥ कुस्तीकरमर्मतबजाना ॥ ॥  
 पुलिगरीबगोचारनहारे ॥ केहिबिधिलरियेसङ्ग-तुम्हारे ॥ ॥  
 हमेंकहाभटकावतइतही ॥ खेलतरहतपुलिनमेंनितही ॥  
 सभाबीचकाहिकहराता ॥ ठाढ़येतबदूनौभ्राता ॥ ॥ ॥  
 हरिचारारभिरभुजगोंकी ॥ मुष्टिकसङ्ग-रामरिसरोकी ॥ ॥  
 लागेलरनपेचकरिनाना ॥ लचकतकटिहरिपदमुरभाना ॥  
 अतिसुकुमारदेखिपुरनारी ॥ कंसहिंदहिअनेकनगारी ॥  
 हाइदुष्टकेदयानआवत ॥ मृगसिंहनकरपुट्टकरावत ॥ ॥  
 सभामइंसाकोइनाहीं ॥ समुभावेकंसहिछुटिजाहीं ॥  
 इतनेमाहिकृष्णचाणूरहि ॥ पटकिदीनमहिमराहजूरहिं ॥  
 देखिराममुष्टिकाहिपछारा ॥ सलतोसलतबभयतयारा ॥  
 पटकिनितुरतनिन्हेंतीहलांगे ॥ अपरमल्लसबदेखतभांगे ॥  
 बोलाकंसनिरखिभयपाई ॥ करहुनगरबाहरदोउभाई ॥  
 दो० नन्दसंगजेगोपहैंलूटिलेउतुमभारि ॥



उग्रसेनबसुदेवको अबहीं डारों मारि ॥

चौ० पुनतकृष्णदिगपहुंचे जाई ॥ पकरि शिरवा सहिरीन्ह गिरि  
काहे प्राण घसीट घसीटी ॥ डारे सकल निशाचर पीटी ॥ ॥  
लखि सुरहराधिमुमनबरथीये ॥ कडिलावत यमुना तट ल्याये  
तहें विश्राम की नमनभावा ॥ सोइ विश्राम घाट कहवावा ॥  
पुनि पुरा आइ पिता ग्रहनाना ॥ हेरि बन्दि ते आति मनमाना ॥  
आपुआ पुंकाधृगता दीन्हों ॥ मात पिता की सवन कीन्हों ॥  
पुनि बसुदेव देवकी हरये ॥ गोद लगाइ सकल सुख करये ॥  
दीन्हों उग्रराज बहोरी ॥ तब यदुपति बोले कर जोरी ॥ ॥ ॥  
कीजै राजकृपा करि आपा ॥ हमरे हय ययातिकी आपा ॥ ॥  
तरुणा अबस्था पितहि न दयऊ ॥ तेहि ते यदुकुल महिबिन भयऊ  
कीजै तुमनि धरक सुख भारी ॥ लैंहों में सब काम सँभारी ॥ ॥  
बहुरि नन्द ते बोले आइ ॥ ग्वालन सहित आपु ब्रज जाई ॥  
हम कछु दिन रहैं के यहि ग्रामा ॥ आवब चले तुम्हारे धामा ॥  
निज सुत सरिस हूँ मैं तुम पाला ॥ तेहि ते नहिं विसरवति हुं काला  
जननी ते कहियो परनामा ॥ विसरि जाइ जनि गिरधर नामा ॥  
हमति न के बहु भांति रिझावा ॥ उनके कबहुं अभाव न थावा  
गोपिन ते कहियो कुशलाता ॥ कछु दिन में ऐहें दोउ भ्राता ॥  
पुनि अस बचन नन्द दुख पावा ॥ उगिसे रहे बचन नहिं आवा  
आदामा बोल्यो तब बानी ॥ कृष्ण कहा तब बुद्धि हेरानी ॥ ॥  
अपने मात पिता को त्यागी ॥ पर घर रहि होरो दिन लागी ॥ ॥  
कौनि वस्तु कमती घर तेरे ॥ जो नौ करी कर बचूँ पकरे ॥ ॥  
धरवैंहों निज पितु कर नामा ॥ तेहि ते बलौ आपने धामा ॥ ॥  
भल कीन्हों जो कंसे मार्यो ॥ उग्रसेन कर काज बिचार्यो ॥  
राज पराई देखि लुभान्यो ॥ यही एक अनरथ मन आन्यो ॥

जोसुखहै हमरे बज माहीं ॥ सोसुखतीनिलोकमें नाहीं ॥ ॥  
 तनधन जाइ जाइ बरु प्राना ॥ तबहूँ हों परबसनहिं रहना ॥ ॥  
 बोलेरुद्धमतात तुम भाषी ॥ सोइ सत्य हमहिं रदे राखी ॥ ॥  
 परियहराजनहै परकेरी ॥ सब प्रकार तुम जान्यो मेरी ॥ ॥  
 आगे बलहु सकल तुम पाछे ॥ सहित राम हमें आवत पाछे ॥  
 सुनत गोप व्याकुल भये कैसे ॥ गइ मरिा छीनि फरिा की जेसे ॥  
 यद्यपि घट पट बहु पहिराये ॥ तदपि बिरह बस एकन भाये ॥  
 तब प्रभु करि उच्चाटन दीन्हें ॥ चले सकल मन मानद कीन्हें ॥  
 आयि जब बन्दा बन माहीं ॥ यशुमति दीख कान्ह बल नाहीं ॥  
 लागी करन बिलाप घनेरा ॥ नन्द कह्यो कहु जोरन मेरा ॥ ॥  
 जो जोय दुमति कहा सो भावा ॥ तदपि न मनमें धीरज आवा ॥  
 दो० यहाँ रुद्धम बल राम कह्य दुपति दीन जनेउ ॥

पुनि पढ्ये दोउ पदन को पुरोवन्ति कामेउ

चौ० आयि चलि सँदीपन गेहा ॥ लगे पढ़ावन सहित सनेहा ॥  
 प्रथम वेद विधि दीन विचारी ॥ पुनि पढ़ाइ विद्या दश चारी ॥  
 कुराडलिया ब्रह्म ज्ञान यक जानिये उभै साधन कुर्यात्तो ॥  
 सरस्वरधारण निपुण वेद पाठ है तुर्य ॥ वेद पाठ है तुर्य पंच जो ॥  
 तिष पहि चानौ ॥ छठी कहत व्याकरणाधनुषी विधि सप्तम जा ॥  
 नौ ॥ जानौ बसुजल तरा नवम वेदिक हिशि कृषि पर ॥ रु ॥  
 द्रकोकर बिबाजि चढ़न ते रहों जु नृत्य कर ॥ बोध चतुर्ई चतु ॥  
 र दश विद्या पाइ अशर्म ॥ पदी रुद्धम राघु नाथ अब कहत क ॥  
 ला विधि ब्रह्म ॥

चामर कुं० बाद्य गीत नृत्य नाट्य लेख बच्च वेधन ॥ तंडुलामि ॥  
 पालि रंग कार्य परिधिकंधन ॥ पुष्प तल्म गंध कल्प दंत चपल ॥  
 रानजू ॥ दाम धारिण सेज कर्गि वारि याद्य वागजू ॥ नीरघात नि ॥



वजातमालइन्द्रजालजू॥ पदपानिभूषननिग्रंथकीटभा-  
 लजू॥ पाककारकोंचुमारबानबेराजोगजू॥ करणवैधनीसिं-  
 गारपानरसप्रयोगजू॥ सूचिकर्मधातुमर्मसुत्रकीडुनोलि-  
 जू॥ वाक्दक्षकबोललक्षदुष्टवंचकालिजू॥ ग्रंथपाठछिन्न  
 काठनृत्यज्ञानदायक॥ काव्यपूरकनेवाररज्जुरीतिनायक॥  
 तर्करीतिवास्तुप्रोतिस्वर्णकारकारजू॥ रंगज्ञानवृक्षवानमे-  
 खसुर्गमारजू॥ कीरसारिकाप्रलापशत्रुधीउचाटन॥ केस-  
 मार्जनमकर्थसुष्टिवस्तुडाटन॥ देशभारवनीमलेच्छफूल  
 सदनानिकैयंत्रमंत्रकाबिरोधमानसीपिछानिकैपिंगलावि-  
 धानकोसंशोसकार्यसाधन॥ छलउपाद्रक्षकायजयदेव  
 राधन॥ दूतरेवलबालभेलरेपारबैनतोयन॥ बासदादिकुत  
 बिचारसर्वसारकोसन॥ चौसठकलाकहीशुनीशआदिमा  
 शजू॥ सोलिरवीविश्रामसिंधुमध्यदेवदासजू॥  
 चौ० चौसठदिनमेंविद्यामार्ग॥ पढतभयेमोक्षमसुरारी॥  
 विद्यानिधिबिद्याप्रभिलारवी॥ संप्रदायकीसींवारवी॥  
 विदाहेतबोलैहारियेहू॥ गुरुदक्षिणामंगिप्रभुलेहू॥  
 कहतभईतबगुरुतियवानी॥ पुत्रहमारदीजियेआनी॥  
 बूढ़ोसुनिसागरमेंगयऊ॥ पंचजन्यकहमारतभयऊ॥  
 मिलानतबकीन्हेंपछितावा॥ चलेबहुरियमपुरमेंपावा॥  
 दीनआनिसोडूबालकश्यामालहिअशीसअयेविजधामा  
 मक्तबसलत्रिभुवनदुनिदीपति॥ सबउरअंतरयामोओपति॥  
 एकदिवसकुबिजाकेगयऊ॥ अनिअदुतग्रहदेखतभयऊ  
 विविधवस्तुसंयुक्तसोहावन॥ धूपदीपमंडितमनभावन॥  
 चंदवासनउपधानविप्राला॥ पानदानधुनिविपुलमसाला  
 श्यामहिंदोरिवउठीहयाई॥ सरिवनसहितसुदिसेजहिलाई

आपुसुतनपदभूषणसजिकै॥तकतरवड़ीयोइविधिभजिकै॥  
 प्रथमसमागमसमुभिलजानी॥अपरअलोगहिप्रभुपहंआनी  
 प्रसुदितकरितेहिसंगभगवाना॥रमेरुपाकरिकृपानिधाना॥  
 कोककलाकरिसरसबिहारी॥कामतपनितकेरिनेवारी॥  
 पुनिप्रसन्नहैवचनउचारे॥रसौककुकरिनसंगहमार॥  
 पभुप्रसासिकरूपनगुणाके॥वचनविचारिशीतियुतउनके  
 एवमस्तुकहिनिजगृहआये॥उद्वसहिततस्यगुणागाये॥  
 सुपनेखारमहिलरिवमोही॥कामसहितकुबरीभइसोही॥  
 कौनेउभाउप्रभुइजाध्यावे॥लहैसहीकलमृधानजावे॥

दो० जोकहुलीलाजगतमेंसोमबरधुपतिकेरि॥

कलाअंशकहैस्वयंवपुधारिकरतहियहेरि॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागर श्रीरघुनाथदाससामसने  
 हीकतलुशासुराडकुबरीएहआगामनोनामअष्टमोऽध्यायः८॥

दो० सुमिररामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥

भंवरगीतहरिमातमतभुककृतकहतबरवानि॥

चौ०हेनृपजानियदुनमेंअेश्ठा॥सखाश्यामकोभाग्यबरेछा॥

शिष्यरुहस्पतिकोबड़ज्ञानी॥रुपासिंधुब्रजकीसुधिआनी

तिनउद्वकहलीनबोलाई॥ज्ञानमातखावनमनआई॥

बोलेतातजाहृब्रजमाही॥लाबहुखवारीभिलीसुधनाही॥

नन्दबवाकेगहियौपाऊं॥बिसरिजाइंजनहमरोनाऊं॥

पालागनमेंयातेकहियौ॥रुपाकरतबलकनपररहियौ॥

गोपिनतेसुखियागसंदेसू॥बरायौतुमतजिसकलअंदेसू॥

जोबेकहैवचनपुनिसहवा॥करिविवाहपुनिजरीनदहवा॥

करापरसिचदिरयहिसिधायो॥ब्रजरविअस्नममयनलिआंय

रंजमरिडतपुरासुरभिनपाछे॥वयडोलनखगबोलतपाछे



राम कृष्ण गुणा गावैं पुर जन ॥ धूप दीप करि पूजित लखि वन ॥ ॥  
 प्रमुदित हैं प्रविशे पुर माहीं ॥ खबरि पाइ निज पुवन पाहीं ॥  
 पुर नरनारि परम सुख माना ॥ राम कृष्ण आवत हैं जाना ॥ ॥  
 वैसे स्यन्दन वृषभ विशाला ॥ वैसे मुकुट पीत पट माला ॥  
 निकट जाइ ऊधों की चीन्हा ॥ हरष शोक मनमें तब कीन्हा ॥  
 नन्द पवरि पहुँचे सुनि सबहीं ॥ निकसि महारि आई दिगत बहीं ॥  
 श्याम सरवा लखि चरा परबारे ॥ सुन्दर अछु शिला बेधारे ॥ ॥  
 मुदित बनाइ असन करवाये ॥ अचबन करि जव सनाहि आवे ॥  
 तब यशुमति बोली जल दारी ॥ हैं नीके बलकुञ्ज बिहारी ॥  
 पालि पोषि हम कीन्ह बड़ेरे ॥ बाजत पुत्र देवकी करे ॥ ॥  
 जवते गये सुधि उनहि लीन्ही ॥ धाड़ु के नाते तजि दीन्ही ॥  
 लीन्हे छीनि प्राणा बसुदेऊ ॥ तबते तात न आने कैऊ ॥ ॥  
 हमहीं जाइ ता सुघर रहती ॥ दासी हैं सुख देखन चहती ॥  
 बेरी भये कुदुम्बी मेरे ॥ जानन दीन्हिनि निरखिनि धैरे ॥  
 प्यूल होत नव नीत निहारी ॥ मोहन के सुख योग विचारी ॥  
 प्राते खात रहे दधि रोटी ॥ को अबदेत होइ गो ओटी ॥ ॥  
 कीन्हे चरित लाल मन जोई ॥ सुमिरि सुमिरि अब आवत रोई ॥  
 निशान नींद दिन लागन भूखा ॥ हन्त बदन ब्रज पतिकर रुखा ॥  
 गोन अवे पय नृणा नहिं चरहीं ॥ बछरन सहित सकल दुदुरहीं ॥  
 बालक तराण जग सब लोणा ॥ भये क्षीणा तन श्याम बियोगा ॥  
 हम आपनि किमि दशा बखानी ॥ दीन्हों कादि नयन निज पाजी ॥  
 ऐसे दुख देने को रहेऊ ॥ तोकत दावा ते निरबहेऊ ॥ ॥  
 इन्द्र कोपते नाहक राखा ॥ गिरिहि छौडि देते करि मारवा ॥  
 कठिन शोक निशि बासर केरा ॥ दीन लाल करि मधु पुर डेरा ॥  
 जीवत सकल दरश के लागे ॥ पुनि कबहुं देखब हरि आगे ॥

कह्यो तात कब ऐहै भैया ॥ कन मोहिं गोहरैहैं करि मैया ॥  
 कब गहिं कै दधि मथत मथानी ॥ कब भंगि हैं माखन हठ डानी ॥  
 एक दिवस में रिस बस बौधा ॥ सो मुधि करि दुख होत अगाधा ॥  
 कह्यो जाइ अविं घर अपने ॥ अब कबहुं नहिं बंधब सपने ॥ ॥  
 माखन खात नवर जब रोसी ॥ उरहन देत न सुनव परोसी ॥ ॥  
 जल सुत्तारि जापति कर जाना ॥ तासु मातु संग पठवव नाना ॥  
 भैं जानत मुख तिन्हें न होई ॥ हरि राखत है हैं सब कोई ॥ ॥  
 कहा कौं परबस भे ताता ॥ कहें कहें गुणाहु होत दुख ताता ॥  
 शुक्र सारिक जो पढ़ते नाहीं ॥ तौ कत परते पिंजर माहीं ॥ ॥  
 शब्द वेध शर जो न चलौते ॥ अंध आप कत दशरथ पौते ॥  
 रवि शशि जो करत न प्रकाशा ॥ तौ संत तकत फिरत अकाशा ॥  
 जो न होत एषु पति के दाया ॥ तौ बन दुख कत सहत निकाया ॥  
 जो न लाल को आवत जान्यों ॥ तब देखें ते बचन बरान्यों ॥  
 जो राखती हो हम पर नेह ॥ तौ सुत पढ़इ हमारे देख ॥ ॥  
 जो कोइ कोटिन लाइ लड़ावै ॥ तद्यपि लाल हमें संचु पावै ॥  
 तुमरै पुत्र सही सुनु माई ॥ एकवार मुख जाइ देखवाई ॥ ॥  
 यहि बिध बचन कहत बहु भाये ॥ तेहि छिन नन्द राखि ते आये ॥  
 भेटे उठि उड़व पुल काई ॥ लीन्हें निज आसन बैठाई ॥ ॥  
 लागे बूझन कुशल सप्रीके ॥ हैं बसु देव देवकी नीके ॥ ॥  
 नीके रहत कल बल रामा ॥ कछु आगवन कहिनि न धामा ॥  
 तोतल बचन बोलि मुख लागी ॥ बड़े भये दुख दीन्हि न त्यागी ॥  
 हम हू ते कछु बनान जाना ॥ जगत पिता बालक करि माना ॥  
 कोमल चरण खरस अधिकाई ॥ तहें उनते हम गोचरवाई ॥  
 उन बाहें में कस्यो नरोया ॥ गुण गहि जुख मछि पाये दोषा ॥  
 हरि की बात ही ते बनई ॥ थोरेहि में जरि उठते मनई ॥ ॥



दो० नाम लेइ जेहि युवति को नहिं सुहाइ सुनितायु॥

राम जानकी के कहे तुष्टततेहि पर आसु ॥

चौ० यहि विधि नन्द करत पछितावा॥ तब उद्वव अस बचन सुनावा  
अहो नन्द तुम यशुमति दोऊ॥ शील मुकूत की मूरति होऊ ।  
क्योंकि राम कृष्ण भगवन्ता ॥ प्रसात पाल दुष्टन के हन्ता ॥  
तिनके चरणा कमल चितु लायो॥ यहिने अधिकन कहु युति गाये  
हरिहिं आपु सुमिरत हो जैसे॥ तन मन धन वारणा करि तेसे ॥  
तुम ते तात नवाहर वोऊ ॥ बैचौं जहाँ बिकैं तहें दोऊ ॥ ॥  
जब तब बात तुम्हारी गावैं ॥ कहत कहत गद गद हँ जावैं ॥  
चलत कहिनि पालागन बाता ॥ उचरणा न हम तुम तें पितु माता  
प्रति पालन तुम की न हमारा ॥ होइ हैं युग युग सुयश तुम्हारा  
देखो त्रिभुवन पति गिरधारी ॥ चाहत करुणा दधि तुम्हारी ॥  
बात न होइ बोध केहि भौंती ॥ जाकी रहै सकल सुख जाती  
हरि गुन कहत भई निशि नासा ॥ बोले द्विज अलिली निमुबसा  
दीप जोरि गृह गोप लुगाई ॥ लगीं मथन दधि हरिगुण गाई  
दो० तब उद्वव वृषभानपुर चले राजा यमुपाइ ॥

भारग में अवलोकि रथ मिल्ती गोपिका आइ ॥

चौ० गिरधर की अनुहारि निहारी ॥ बोलीं तब गोपन की वारी ॥  
आप गवन इत कित ते कीन्हें ॥ जानि परत मोहन सुधि लीन्हें  
बोले तब उद्वव हम आये ॥ मधु पुर ते ब्रज नाथ पढाये ॥ ॥  
परम मित्र हैं कृष्ण हमारे ॥ हम हैं उनके बहुत पियारे ॥ ॥  
सुनि सब बैठि गईं तेहि ठौरा ॥ बोलीं कहौ कान्ह कर ब्योरा ॥  
उद्वव नन्द नंदन हैं नीके ॥ हम सब दिन के जीवन जीके ॥  
कब ऐहें कहु कहिनि बरवाती ॥ शोभा शील गुणान की खानी  
गिरिअरि सुतरि पुरी बिताई ॥ अजहें नहिं आये सुख साई ॥

उड़व हम सब श्याम बिहीना ॥ बिकल रहत जिमि जल बिन मति  
 निशि न नींद दिन असनन भावै ॥ नैन पलक समकल पदित आवै ॥  
 हरि बिन सेज भयानक लागै ॥ कारागार सरिस यह जागै ॥ ॥  
 शीतल मंद सुगंधित बाई ॥ लागत मनहुं आनि ते आई ॥ ॥  
 बिरह बन्धु सब अंग जरावत ॥ जरि न जात लोचन जल नावत ॥  
 हम ते श्याम करी है ऐसे ॥ बधिक कोरे पाक्षिन ते जैसे ॥ ॥  
 प्रथम प्रीति आपही जोरी ॥ पाछे नाव मांझ सरि बोरी ॥ ॥  
 तुम ऊधो आये भल कीन्हों ॥ हम सबका अवलंबन दीन्हों ॥  
 सुनि यत हैं संत पर मारथ ॥ करत रहत सोइ दीखयथारथ ॥

**दो०** सजन स्वारथी नरन की स्वारथ ही तक प्रीति ॥  
 खग मृग जार असार लखित जत मुखल सिखि रीति ॥  
 बहु रंगी जित तितहि सुख एक अंगी कर अंत ॥

जिमि गणिका निधरक रहत दहत सती बिन कंत ॥  
**चौ०** तिमि ऊधो हम हरि को जानै ॥ श्याम चहै मानै नहि मानै ॥  
 सुनि ऊधो गोपिन की बानी ॥ योग संदेशन सकत बरवानी ॥  
 सुफलक सुतै परी कठि नाई ॥ उत आज्ञा इत प्रेम अघाई ॥  
 धरि धीरज पुनि काटी प्राती ॥ बोलै बाँचि जुड़ावो छाती ॥  
 हम ते नाहिन बनी बनाई ॥ चितवत गली कुवत जरि जाई ॥  
 आपु कृपा करि बाँचि सुनावो ॥ श्याम मुख मृतवचन सुनावो ॥  
 सुनि ऊधो तब बाँचन लागे ॥ लागीं सुनत बढि सब आगे ॥  
 गोपी सकल सुनौ मम वचना ॥ भूलहु मति माया की रचना ॥  
 जो कहु गोरोचर में आवै ॥ माया कृत सो थिर रहायै ॥ ॥  
 कौंडि देउ तेहि ते अस नाई ॥ निर गुण ब्रह्म जपहु मन लाई ॥  
 पूरा है सब घर में सोई ॥ कौन सो गौर जहाँ नहि होई ॥ ॥  
 पाँच पचीस तीनि घर तेरे ॥ पृथक रहत पुनि बिमल बसेरे ॥



सो हम तुम तुमसे अरु मोसे ॥ छिनहू मावबियोग नहोसे ॥  
 आत्म आत्म से हम प्रगटावैं ॥ पालन करि पुनि नाश करावैं ॥  
 रचत सकल निज माया जाते ॥ कार्य अंत पुनि कारणा ताते ॥  
 कारज तजि कारणा मन लावो ॥ जेहि ते सकल परम पद पावो ॥  
 निरमल नीर मरा तब नेरे ॥ मरत पियासन तेहि बिन हरे ॥  
 तजि कुसंग ये कौत पसीजै ॥ द्वादश संयम नियम करीजै ॥  
 सूक्ष्म भोजन स्वल्प पियासा ॥ करहु त्यागि बसु भोग बिलासा ॥  
 पदुमासन निरमल करि मनका ॥ शोधत रहौ मदा निजतनका ॥  
 पूरक कुम्भकरेक कारहु ॥ उलटि ध्यान त्रिकुटी को धरहु ॥ ॥  
 सोहं शब्द माहिं चित राखै ॥ मनते सकल कामना नारखै ॥  
 दश प्रकार अनहद सुनि पावो ॥ कौतुक विविध देखि कुकि जावो ॥  
 यहि विधि योग ज्ञान जब गावा ॥ तब गोपिन अधिकौ दुख पावा ॥  
 दो० यथा वेद ओषधि कौ बिन यहि चाने रोग ॥  
 सो ओषधि लागे नहीं उलटि बंदे तेहि शोग ॥  
 तेहि अवसर इक मधुप तहें आयो करि गुंजार ॥  
 बैदि गयो राधिका के चरण कमल लखिसार ॥  
 चौ० तब सब गोपी मधुपरदारी ॥ लगीं कहन ऊधो ते सारी ॥  
 मधुकर तुम पगते उडि जाहु ॥ प्रियाम शरीर निदुर सब आहु ॥  
 पहुँचत तहाँ फूल जहँ फूले ॥ सूखी लतन जात नहिं भूले ॥  
 रूप रहसि सब गिरिधर केरी ॥ है रौरे मै गुप्तन हेरी ॥ ॥ ॥  
 आई बकी पिआवन क्षीरा ॥ डारिनि ताहि मारि बल वीरा ॥  
 सुप नेखा रघु पति पहें आई ॥ नाक कान तेहि लिहि निकर्यै ॥  
 बलि पावनहिं सुसर्व सुदीन्हा ॥ तबहुं तासु तन बंधन कीन्हा ॥  
 व्याहु किहि निहरी हरका गोसी ॥ पुनि आपुड मिलि गनिन होंसी ॥  
 कायल सुताहि काग प्रतिपालै ॥ ऋतु बसंत तेहि तजि उडि चालै ॥

उरों दूध प्रीति ते प्यावै ॥ उत्तरि अभी सो विष है जावै ॥ ॥  
 के बुलि त्यागि न मुधि फिरि लीन्ही ॥ ते से श्याम हमें तजि दीन्ही ।  
 यामें भूलन उन की भारी ॥ कारेन की करनी है कारी ॥ ॥  
 पर गट जिन की हे युग ताता ॥ क्यों न कहै यहि विधि की वाता  
 तथा तुमहुं कहु अध दित नाहीं ॥ रूप रुड़ाइ गहा वत छाहीं ॥  
 ऊधौ श्यामहिं लाज न आचत ॥ तेहि पर मुनि यत दस कहावत  
 हम का ज्ञान योग लिखि भेजा ॥ आपुरत कुवरी की सेजा ॥  
 जिमि गरीका निज कसबै मानै ॥ ओर ते वैराग बखानै ॥ ॥  
 तेहि के बचन कहौ को मानै ॥ ते से श्याम दैत है जानै ॥ ॥  
 एक तौ अंध कूप में डारी ॥ हेरत पंथ न परत निहारी ॥ ॥  
 तेहि पर तुम निज ज्ञान मुनावा ॥ मानहुं मुख ऊपर ते तावा ॥  
 ऊधौ तुम हो चतुर मुजानी ॥ देश काल लखि कहि ये बानी ।  
 जाके मलै अनल सम तावै ॥ तेहि के कहा गरल लग बावै ॥  
 हम बनितन को चाहिय भोगा ॥ तिनका आइ सिखावत योगा  
 धरत मराल न सुत शिर मेरू ॥ जिन ते चलै न पग भरि सेरू ॥  
 ऊधौ कहु तुम्हरी न लगाई ॥ संगति केर दोष लागि जाई ।  
 रस लम्पट गिरि धरन लवारा ॥ क्यों न होउ तिन संग खुबारा  
 कुराड लिया लम्पर की संगति किहे द्वादश गुरा नशि  
 जात । प्रथम सत्य पुनि स्वच्छता अरु संयम की बात ॥ अरु सं-  
 यम की बात मोन ब्रत माया जानौ । सम दम दया सुबुद्धि सह-  
 न शीतला पिछानौ ॥ प्रभुता यश नहिं रहत बसत हिरदय मह-  
 कम्पट । कपिल बचन बुधि जानि करत नहिं संगति लम्पर ॥  
**दो०** जो कहौ ऐसे पुरुष से क्यों तुम कीन्हों प्रीति ॥  
 कर्म लिखा तेहि का करै जौ सलभ की रीति ॥  
 प्रेमिहिं मरन न लखि पौ करै हरयितन अर्प ॥



जिमि गज कुरंग पतंग अलि भयपिक पारसासर्प॥

मित्रहि चैन न मित्र बिन कैसे कोरे बिगार ॥

जिमि गृह जोरे अग्नि पुनि होत अग्नि को पार॥

चौ० बोली अपर सरखी मुनिलेह ॥ नाहक दोष प्रयाम कर देह ॥

उनमें कछु लंपटता नाही ॥ प्रीति पाइ परबस है जाही ॥

तदपि रहत निरलिप्त विशेषा ॥ पथ लहि यमुना में तुम देखे

जो कहौ अब का प्रीति न हममें ॥ रहत न जो उड़कर सहर दम में

जो कोइ है प्रभुता श्रीवाने ॥ ते पर वेदन सुने न जाने ॥ ॥

देखो शेष धरे महि भारी ॥ सोये तेहि पर जाइ मुरारी ॥

अब नंद नन्द भये मह राजा ॥ जो कछु करें उन्हें सब छाजा

दिन प्रति पावक सरिस सोहावन ॥ बोली अपर सरखी परिभावन

प्रभुता की कछु लागन होई ॥ चेरी संग गई मति खोई ॥ ॥

कैसे चतुर होइ किन कोऊ ॥ नीच संग करि बिगारत सोऊ ।

परम प्रवीन के कयी रानी ॥ चेरी संग ते मति बोरानी ॥ ॥

गृह जल गद पद यवन समाना ॥ पाइ कुयोगिन को बिन माना

ऊधो ब्रह्म सबै तुम कहेऊ ॥ अबहीं भयो कि अगिड रहेऊ ।

कराडालिया ऊधो जब जब पापते उठत धरनि अकुलाइ । त-

ब तब क्यों सुर मुनि सकल हरिहि पुकारत जाइ ॥ हरिहि पुका-

रत जाइ आपु किन धरि धरि रूपा । हों बिश्व को भार होई जो

ब्रह्म सरूपा । तेहिते वाद विवाद त्यागि गहिये पथ सूधो । बिन-

प्रभु सेवक भावत स्यौ भव निधि को ऊधो ॥ माया बाद मदांधक

रि मूषित भयो जेहि ज्ञान ॥ सोहं जस्मि ब्रह्म सो पुनि पुनि करत

बरखान ॥ पुनि पुनि करत बखान कुत्र ऐश्वर्य मतीते । कुत बि-

भुता कुत भूति कुत्र सरवज गतीते ॥ तेहिते ब्रह्म न जीव अहौ तुम-

सुख बस काया । बुद्ध कहैं मैं सिंधु होइ किमि बिन हरि माया ॥ ।

दो० जो कहो पृथ्वी सम बरह घट सम जीव अनेक॥  
 ताहि लखौ बाना लखौ अन्त होब सब एक ॥  
 एक भयो तौ क्या भयो पुनि गहिं गदी कुरबाल॥  
 तेहि ते माया बाद तजि भजो नन्द को लाल॥  
 जया तस्कार कयद में परो कहै हो भूष॥  
 तौ काछूटे काम बस त्यों तुम ब्रह्म सरूप॥  
 ईश्वर आपु स्वतंत्र है नित चाहै लित जाइ॥  
 सर्व शक्ति जाके बिये भाव सारि सहर शाइ॥  
 सोहं सोहं जयत हैं जहं तक अग जग जीव॥  
 राम कल्ल सुमिरे बिना लहे न कोई पीव॥  
 जधौ तुम्हरी बात इमि जिमि रोगो हित माइ॥  
 जो जेवत हैं सर भरि सो किमि होवै चाइ॥  
 कर्म योग तब तक करै जब तक प्रेम न होइ॥  
 प्रेम पाठ यदि क्यो पढ़े कक्षा किंकी सोइ॥  
 जधौ तुम्हरी बात सुनि भयो न हरे रोष॥  
 अपनोइ खोदो दाम तौ परखैये का दोष॥

चौ० बोली अपर सुना हम ऐसा॥ कहत प्रियाम है अजधौं कैसा  
 गोपिन को सुनि नाम लजाहीं॥ चित्र धनु लखि सकुचत आही  
 भूलि गई माखन की चोरी॥ खात रहैं घर सकल दिदोरी॥  
 जो यह बात रहै मन माहीं॥ तौ कत किहि निरुहम हम पाही  
 प्रथमै ज्ञान विराग सिखावत॥ जेहि ते कहु मन हूं में आवत॥  
 जब हम रंगी प्रियाम के रंगा॥ तब लखि पढ़वा ज्ञान प्रसंगा॥॥  
 मधु कर को तजि मुर सारि बारी॥ रूप खोदि जल पीये खारी॥  
 मोतजि आक इहे को बोरा॥ कोनजि पारस मांगे कोरा॥॥  
 कोतजि प्रियाम सगुना मरिा चारु॥ खतत फिरै कलि अगुना पहारु॥



रूपरेखकछुजाकेनाही॥तौकाकरवशून्यकेमाही॥ ॥ ॥  
 अगुणसगुणयुगबल्लकहावत॥सोतेहिभजतजाहिजेभावन  
 दो० यथाविरोचनकुमुददोउहेबिरादकेनेन॥  
 काहुइभावतद्विषयपतिकाहुइशशिमेंवेन॥  
 चौ० तेहिप्रकारहमश्यामउपासी॥हेमबबिधिउनहींकीदासी॥  
 मुक्तिभुक्तिहमकोनहंचहिये॥प्रेमभक्तकियाकरिकहिये॥  
 जोकलज्ञानकहेबिननाही॥तौबलिजाउवनारसमाही॥ ॥  
 हमरेतोमनएकरहावा॥गंयउश्यामसंगबहुरिनआवा॥ ॥  
 कोअबअगुणदेशअवराधे॥कोएकान्तमेंआसनसाधे॥  
 तलफतदृगबिनलखकिशोर॥कोचिनेवेभूकुटीकीबोरा॥  
 जरतरहतनिशिबासरअंगा॥कीनेहंविनागिरिधरराप्रसंगा॥  
 तुमजोकहतहरिहिरदयमाही॥सीतनहंमेंवरतकलनाही॥  
 ब्रह्मअंशकैसेहंकांन्हा॥मानेभुवनबादरमेंनांन्हा॥ ॥ ॥  
 मुखपसारिदेवरावनभयऊ॥तबकाबृहन्नयकरहिगयेऊ॥  
 कारणातेकारजहंभीका॥यथाकंदतेदरसफोका॥ ॥  
 कारणाअगररहतहंसंगा॥कारजअंतरविकतसोमहंगा॥  
 तुमहाकारणमेंमनलावो॥हंमेश्याममेंप्रीतिदृढावो॥ ॥ ॥  
 जोहरितजिकरिधासहिचरही॥तौहमहंजगंयामहिकरही॥  
 भदाहिहंसमीनतजिमाती॥तौहमहंसबध्यायज्याती॥  
 जोरनसूरतंगतजिदेवें॥तौहमहंतुहयोपनलेवें॥ ॥  
 सडलबिहंगमहिबैठेहारी॥तौहमहंनिगुणमत्तधारी॥ ॥  
 जोचातकसरकरजलपावें॥तौहमब्रह्मश्यामनजिधारी॥ ॥  
 पशुपक्षीनिजदेकहिकरही॥हसमभुयकेमपरिहरही॥ ॥  
 ऊधौतुमबिरहीहोनाही॥नहोदामनहमित्रनमाही॥ ॥  
 बिहीनानजलहिअनुरागे॥विकृतप्रीतिमदेत्युगारा॥ ॥



दासभावपिहामेंजानै ॥ विनस्वातीजलकरैनपाना ॥ ५  
 मगजितराजिपविडारतमेहा ॥ तदपिबदतदिनप्रतिनधनेहा ॥  
 मित्रकप्रलविनलखेतमारी ॥ तुरतजातहैसंपुटमारी ॥ ॥  
 मधुकरहमदात्रिकसमअहर् ॥ बिनाश्यामकछुओरनचहर्द  
 शानतकोबिधिफेरिबनावै ॥ तवहूँमोहनमोहनलावै ॥ ॥ ॥  
 जोतुचकाडिदुंदभीसाजै ॥ सोऊलाललालकहिबाजै ॥ ॥  
 यदिदेइमुक्तिकाहैजामै ॥ तिरछफूलफलउचैरनामै ॥ ॥  
 मुखअंगकीहैयहरीती ॥ जीवनकिमिछूटतहैप्रीती ॥  
 कोलीअपरभलीविधिहेर ॥ कठिनलोगहैंमधुपुरकेर ॥  
 जिनकीसंगतिपरिनंदलाला ॥ सीखतभयोयोगकरहाला ॥  
 हमहूँकोआँखबहकावन ॥ झूकनचहतसुमेरुउड़ावन ॥  
 मधुकरआपनभोगादुरावै ॥ हबपूछैसोबरनिमुनावै ॥  
 ब्रजमेंकबहैंवनवारी ॥ कबहरिहैंचूनरीहमारी ॥ ॥  
 कबदाधदानमांगिहैंरोकी ॥ हमहूँअबहटकरवनकोकी  
 करिहैंरहसकेलिअवआई ॥ खैंहैंभारवतकदेचौराई ॥  
 कबबजायमुरलीमनसैंहैं ॥ कबदुरिकेहमरेघरसैंहैं ॥  
 जहिमुखहितदृषभइनुकनोडी ॥ सोमुखअबनूतहैलोरी  
 कीनिसकोनतपस्याभारी ॥ जहिनेपाइसिपातेगिरिधारी  
 कबअबमुनवहमारलागी ॥ दोन्होंश्यामकूबरीत्यागी ॥  
 कहियोमधुपश्यामतेजाई ॥ कहाँगईब्रजकीचतुराई ॥  
 किहेसनेहसथानपडुकवा ॥ रहतनसुमतिमथानपसुकवा  
 हमयुवतिनकहैंलिरवतविरागा ॥ आपपरचैरीकेरागा ॥  
 अपनागुरुअयेसयोगी ॥ केहिप्रकारहमहोईयोगी ॥ ॥  
 जोगुमहीनिजभइनचीन्हा ॥ तिनशिष्यनकोकबमुखदीन्हा  
 जोगुरुकुटम्बजालमेंबांधे ॥ तौशिष्यिकेकिमिकाटेफाँदे



जो गुरु काम क्रोध में जर्द ॥ तो शिषि को कब घीतल करई ॥  
 जो गुरु है नृणा बस लोभी ॥ सो शिषि को केमि करै अछोभी ॥  
 जो गुरु है पाथर की नाचा ॥ सो शिषि को कब पार नधावा ॥ ॥  
 जो गुरु को कछु पढ़ि नहि आवै ॥ तो शिषि को केहि भौति पढ़ावे ॥  
 तोहि ते अपु दशा पर आवै ॥ तब हम को लिख योग पढ़ावे ॥  
 जोहि ते कछु लागे उपदेशा ॥ करहि सकल योगी कर भेया ॥  
 जो जल जल आप ही लाये ॥ तो तजि भीत कहां को भाये ॥  
 लखि गोपिन को प्रेम प्रमाना ॥ बिसरि गयो उडव को जाना ॥  
 करत भयो गुरु गोपिन केहा ॥ पाइ नि एक अनन्य व्रत तेहा ॥  
 रहि मास बट तिनके पास ॥ देखत डोले कुञ्ज विलासा ॥ ॥  
 भैम धुवन की शीति बहोरी ॥ बोले गोपिन ते कर जरी ॥ ॥  
 तुम सब अपेहो प्रेम की खानी ॥ केहि बिधि हम उत कर्ष वरानी ॥  
 चातक मीन चकोर मृगाऊ ॥ धारणा किहिनि तुम्हार सुभाऊ ॥  
 हम ते जब तब प्रीति तुम्हारी ॥ बरन तरहे मुदित बन वारी ॥  
 उडव हम तन कोटि बनाई ॥ कोरे गोपिकन की सेव काई ॥  
 तबहं कछु उद्धारन मानी ॥ ऐसी मम सेवा उन ठानी ॥ ॥  
 ज्ञान के मिसि तिन मोहि पठाया ॥ भौंई तजि हरि रूपहि पावा ॥  
 अब करि कृपा देहु वर एहू ॥ बड़े कृष्ण पद तिन नवनेहू ॥  
 खग पशु बिटपलता तनु पाई ॥ जन्म जन्म ब्रज बसिये आई ॥  
 तुम्हरे चरण कमल की धूरी ॥ प्रापत होइ भाग ते मूरी ॥ ॥  
 दो० जो में कीन्ही दीठता हरि को अपाय सुमानि ॥  
 कोरेहु क्षमा अपराध सो अनुग आपनो जानि ॥  
 चौ० उडव तुम जानत सुख रायक ॥ हम हैं कौन बड़ाई लायक ॥  
 लोक वेद तजि करत बगना ॥ तोहि ते निन्दत सकल जहान ॥  
 तुम्हो तात सराहन योगा ॥ क्षमा वन्त सब भौति विसोपा ॥



हम अहीर बहु भांति न करे ॥ कह कठोर वचन बहु तेरे ॥  
मुम्हरे मारबन तन कहु आवा ॥ धन्य जननी जिन जावा  
उद्धव कृपा श्याम की चाही ॥ निकटहु दूरि उभै भल आही  
दो० वन वरही बारिद बियत लक्ष्मातर रवि पद्य ॥

तिलरव कुसुद शशि मुख लहत लखि मनेह निज मद्य ॥  
चो० बिन सनेह उप दूरि विषोयी ॥ युग अंगुल प्रति परत न देखी  
चिर जीव रहैं दोउ भाई ॥ मधुपुर कहि राम मुख पाई  
उद्धव हमरे दोउ कर लाडु ॥ मिले तो अनि भल हरि न जि आडु  
जोन मिलवत वह भल जानौ ॥ भयो सुयशतिहु लोक पिछानौ  
कह हम जालि बरगा कुल हीन ॥ प्रति मर्याद मोउ तजि दीन  
कहैं हार्यो पति पालक सगरे ॥ सो सब विधि कहवावत हमरे  
इन उत फिरि ब्रज ही भावै ॥ जिमि परिवार कतुरी पर आवै  
सत्य वचन तब भूँद न आही ॥ हरि निज जन बस मदा रहाही  
कह उद्धव अब आजा दीजै ॥ तौ हम गवन मधुपुरी कीजै  
तीनि दिवस कर आय सुययऊ ॥ तेहि के धीति मास पट गयऊ  
हमरी सुधि न विसारब देवी ॥ सब विधि जानि आपनो सेवी  
बिकुरन बिरह सबन के जागा ॥ कीन्हिन विदा सहित अनुगण  
रथ चढ़ि चलि निज आश्रम आयै ॥ समाचार यदुन नन्दन पायै ॥  
पदवत भये दूत यदुनाथा ॥ आवै भवन नुरित तोहि साथ ॥  
भेटे श्याम सखे मन लाई ॥ ब्रूत भे ब्रज की कुश लाई ॥  
सुनि उद्धव सब बात प्रकासी ॥ तुम बिन दुरित रहत ब्रजवामी  
यक दिन आग्रो दरश दिखवाई ॥ सुनत वचन बोले यदुराई  
गीतिकांठ ० यदुनाथ बोले सुनहु उद्धव घोष बासी जे  
अहैं ॥ तिन पास में तिन रहत हों बेने कुन्यारे नार हैं ॥ मम-  
स्वास वेदन की रिचाहें गोपिकन के दुख कहा ॥ सुनिहें जे-



कहिहैं चरिततिनके नाशिहैं संकटमहा ॥ जो कहौरहत-  
वियोगकेहि हित सुनहु सोउ निकासहु । यकदिन गया-  
यक सरबी घर हों द्वार राखि सिदामहूँ ॥ नहैं आइ प्यारी  
चहत प्रविशे। सरवा रोकत रिस भई । नहिं मिलहिं हरि श-  
त वर्ष तोहिं तेहुं कही सोइ सोई भई ॥

सो० यद्यपिहोंतिनतीर। तदपिन देखत आपबस ॥  
धरिहों विविध शरीर। करत चरितबहु भानिके ॥

दो० उद्धव गोपिनि केर कछु कह्यो जानहुदनेम ॥  
पढ़े सुने रघुनाथ तों बड़े दुष्ट पद प्रेम ॥  
प्रेम बिना पावे नहीं प्रीतम को दीदार ॥  
ततिजन रघुनाथ तें करु उद्यापन सार ॥  
प्रेम नवारी ऊपजें दिये न आवे दाम ॥  
प्रेम जगत रघुनाथ तब जब सुमिरे हरि नाम ॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दास-  
राम सनेही कृत कृष्णायन गोपी उद्धव सम्बाद वर्णनो नाम नवमोऽध्याय-

दो० सुमिर रामसिय सन्तगुरु गराप गिरा सुख दानि ॥  
दशमस्कन्ध भागवत की अब कहों कथा बरवानि ॥

चौ० गये कृष्ण सुफलक सुलयेहा ॥ पूजा लहिकहि सहित सनेहा  
चाचा तुम हस्तिनपुर जावो ॥ बोध देइ कुन्ती को आवो ॥  
असय पोर पांडु सुत छोट ॥ परबस परि सुख लहत न पीटे  
चले पांडु घर आये सोई ॥ देखि मिली कुन्ती उठि रोई ॥  
आसन देत भई अनुरागी ॥ पूछन गति नैहर की लागी ॥ ॥  
नैके हैं पितु मात हमारे ॥ भाभी भ्रात कृष्ण बल प्यारे ॥  
करत कबहुं सुधि भाइ निकेरी ॥ देत यास धन राज्य घनेरी ॥ ॥  
सुनि बोले अक्रूर बिहारी ॥ सुखी सकल सुधिकरत तिहारी ॥

कहिनि कृष्ण फूफू से कहियो ॥ चिन्ता कहु चितमें जनि गइयो  
 आवत हैं हम कहु दिन माहीं ॥ चली गय रितिन की तब नाहीं  
 पुनि धृतराष्ट्र पास बलि गय ऊ ॥ सुहृद बचन जस बोलत भय ऊ  
 पांडु भरो तुम गादी पाई ॥ पालहु सबहि एक सम भाई ॥  
 चले अनीति अयश जग पै हो ॥ देहत जे ध्रुव नरक सिधैं हो ॥  
 करे जो पाप सुमति भ्रम पाई ॥ तेहि फल होत ताहि दुख दई  
 अपर जे अंहें कुदुस्खी सार ॥ अन्तरहत हैं सबही न्यारि ॥  
 खल भल पाप परत सिख अपन ॥ तेहि ते पाप करेहु जनि सपने  
 इमि बहु कह्यो तासु हित बानी ॥ सुनि धृतराष्ट्र नाहिये समानी  
 बोला गवै अंध बेइ माना ॥ होई जो करिहें भगवाना ॥  
**दो०** यहि विधि सुनि समुभाय पुनि पंचहुन कर दुख हेरि ॥  
 विदा भये धृतराष्ट्र ते आयि मधु पुर केरि ॥

**चौ०** समाचार यदुपतिहि सुनाये ॥ तेहि छिन अपाविधन भुक्ति लाये  
 रथ चढ़ि उभैं कंस की बाना ॥ मगध देश आई पितु धामा ॥  
 विविधि भौति ते रोदन कीन्हा ॥ जरा सिंध सुनि धीरज दीन्हा  
 यदुन सहित सब हरि बल राखा ॥ पठवों कंस निकट तब नामा  
 अस कहि दल ते इस अक्षोनी ॥ लैं कैं बला प्रबल है होनी ॥  
 अक्षोनी द्वै भौति बरवानी ॥ लघु दीरघ सो उठी जे जानी ॥

**लघु अक्षोहिणी कुंकुभीकुं०**

एक इस सहस्र पाठ सो सत्तारि रथो होइ जह जानी ॥ तंत  
 नेही गजनाथ प्रश्व पाति कैं कटि सहस्र पिछानो ॥ एक  
 लावनव सहस्र तीनि शत सोठे पै दर जोई ॥ जनरघुना  
 थ विचारि कहत तब एक अक्षोहिणी होई ॥

**दो० अक्षोहिणी दो०**

अयुत नाग ते अयुत रथ यो धाला वद शलहा ॥



तुंग कीटि कुत्तिस कहन पद चर यहदिर घास ॥

चौ० आइम धुपुरी लीन्हि सिंधी ॥ सुनि पहुँचे ही बल तेहि वी  
देखते कहन लागी कहु आवा ॥ बंध बधिक सुनि वचन सुनावा  
तात् सुनहु तुम नीति निधाना ॥ हम समझमावन्त नहिं आना  
निज बहु बार कंस के दारे ॥ अपने पाप गये पुनि मारे ॥ ॥  
पर अपकार किहं दुख भारी ॥ खनत गाढ़ तेहि कूपत यारी ॥  
तेहि पर आपु चढ़े अति रोसी ॥ हानि कैंडिक कुलाभन दोसी  
हो० कीन्हि कुनह बिन गुनह जिन ति ॥ मुख सुनान पाव ॥

सहस बाहु सुरनाथ भूगु अत्रै सुत नगराव ॥

चौ० तेहि ते सुपुर जाहु फिरि खबते ॥ बोला मूढ़ साधु भय कबते  
मूर सुमुख नहिं सुयश सुनौवे ॥ पुर पारथ करि प्रगट देखौवे ॥  
जाना काल निकट तब आवा ॥ तनि बाध विपर्यये पावा ॥  
कह हल धर यह सब कोइ जानै ॥ लात कमनई बात नहिं मानै  
कुंडलिया सुरतुष्ट है भक्ति ते दिज तुष्ट लखि दान ॥ सुहृद तुष्ट उप  
कार लखि बल तुष्ट पदवान ॥ एल तुष्ट पदवान प्रीति ते तुष्ट नारी  
मेवा वस सुचि खसि साधु आहर वस भारी ॥ चप तुष्ट गुणान कथन रि  
तुष्ट भुज बल प्रचुर ॥ तेहि ते येहि पारोषिये समर युद्ध करि सुरे सुर ॥  
चौ० सुनत जरा सुत उगारि साई ॥ डारहु मारि सैन कहें राई  
चहुं दिशि घेरी लिहि निरिपु कैस ॥ राधिहि धूम धन पावक जेस  
लाग चलन विविधि हथियारा ॥ शक्ति शूल अस्त्र सिंघान कुरारा  
इन उत भिरत गिरत कोइ लाग ॥ कोइ भद भुरत चुरत को पावा  
चहौ अटारिन पुर नर नारी ॥ लखि शोच करे अति भागे  
कोइ क्षराइ मापि खेलाये योधा ॥ पुनि दोउ बंधु करत भेको  
क्षरा मेद लि सब सयन सोवाई ॥ जरा संध कहीन वचा ॥  
जेहि ते बहु मिलयावे पापी ॥ बही सीधर की सखि अपना पी



रथसुरेय भुजभीनसमाना॥ सिरकच्छपगजशाहप्रमाना॥  
 कचमेवारसमधनुकतरंगा॥ आयुधपरनिटपजनुभंगा॥  
 मंवरचर्ममनिकंकरभारी॥ प्रगटीसरिबलकलविहारी  
 देहै तालयोगिनीनाची॥ प्रथमनकीपरबीसीमाची॥ ॥  
 यहपगीधगोमायकलोलें॥ कूटतमंडुकपालीडोलें॥ ॥  
 इमिदलदलिप्रमुमधुरहिआये॥ सागधसूतविजैगुरागाये  
 वरषिसुमनसुरपुरनरनारी॥ बसुबलिकरिआरतीउतारी॥  
 मगधाधिपकीलूटिजोआई॥ सोसबयदुपतिपासपठाई  
 नृपजोजाहिंदीनसोलयऊ॥ सुरियामुखसमचहीसोभयऊ  
 जरासिन्धनिजनगरहिआवा॥ दलबटेरिपुनिलरनसिधावा  
 दो० तेइसतेइससोहनीलैले एकइसवार॥

आवाचढिबलकलसबकरतभयेसंहार॥

चौ० यहयशकालयमवसुनियावा॥ तीनिकरैरियमनलैधावा  
 तबबिसुकर्मातेयदुराई॥ सागरबीचपुरावनबाई॥ ॥ ॥  
 द्वादशयोजनमधिहेमलै॥ नृवीधबतासकालतिहुंचलै  
 चौहदहाटसुगंधनिछिरिकी॥ लागेजहंतहं फाटकखिक्की  
 दामिनिसेपताकफहराही॥ जलथलवरनिजातसेनाही  
 वनउपवनवाटिकाअनेका॥ रतनसुसर्वएकतेएका॥  
 सोवतयदुसवतहोपठाये॥ अपनारामयमनयहआये  
 कल्लेजबदेरिवसिनिजअगि॥ कादिरवडुधावाप्रभुभागे  
 धौलागिरिकंदरमेंजाई॥ मुचुकुन्दहिपटदीन्हप्रोढाई  
 आपुरेहेछिपिसोचलिआवा॥ पीताम्बरलखिचरराचलावा  
 दो० जोनहिंजानतजासुगुरासोशठनिदरतताहि॥

सबजगपूजहिजतिहिजिमिस्वानदेखिधरिखाहि॥

चौ० लागतलातसोलिहगदयऊ॥ काननेमनुरतहिजसियाऊ॥



दरश दीन तब यदुपनि आई ॥ जटित वसन भूषण छवि छई  
 अद्भुत रूप निरखि नृप बोला ॥ नाथ अहो तुम कौन अपमोला  
 की चंदेवन में कोइ होऊ ॥ कीर बिअमिन चन्द्रमा कोऊ ॥  
 पूजन के तुम योगी साई ॥ मैं हों निशि दिन तब शर नाई ॥  
 मोहि जगाइ जग कोइ प्रानी ॥ भयो हमार परम हित जानी ॥  
 कहें प्रभु हे नृप प्राव पियारे ॥ जन्म कर्म में बहुत बिस्तीर ॥  
 नाम अनन्य न संख्या कोई ॥ गनत थके बहुत कविता सोई  
 भेरि उगति गमने की नाही ॥ कहत सुनत अविभव तरि जाई  
 अब जनहित भजन महि भारा ॥ भयो आइ बसुदेव कुमारा  
 कंस आदि बहु शत्रु निपाते ॥ यमने शाहे लायो तोहि नाते ॥  
 रिपु जगाइ पुनि तुम्हें निहाख्यो ॥ एक पन्थ है कारज साख्यो  
 अब बर मागुरु चै जो तोहीं ॥ नाथ भक्ति दीजै निज मोहीं ॥  
 भै निद्रा विषया सन करिके ॥ बादि बयस रवाई अवतरिके  
 तब प्रभु भजन भाव समुभाई ॥ पुनि ब्रह्म बन दीन पढाई ॥  
 कह नृप कौन रह्यो बड़ भारी ॥ बाले व्यास सुवन अनुरागी ॥  
 नृप मुचकुन्द अवध के जानौ ॥ पर उपकारी एक हिमानौ ॥  
 कीन्हि देवतन केरि सहाई ॥ बहु दिन गये रहा कोइ नाई ॥  
 इन्द्र सुदित होय कह बर लीजै ॥ बाल्यो महि पमुक्ति मोहि दीजै  
 भूपति मोक्ष कहाँ हम पावै ॥ एतौ हरिके पास रहवै ॥ ॥ ॥  
 तो फिरि नीद घनेरी देह ॥ जौरे जगावै जो सुनिलेह ॥ ॥ ॥  
 सुनिति नख मस्तु कहि दीन्हा ॥ तब ते यहाँ शयन इन कीन्हा  
 दो० निद्रा हि कस सुख सेज महि त्रयित कह घट सुदि ॥  
 कामि हि कस भयलाज जग सुधित हि कस बल बुदि ॥  
 चौ० सावत काल यमन पग मारा ॥ तेहि अघ अधम भयो जीर हारा  
 पुनि प्रभुगे मधुपुर मिलि दोऊ ॥ मारे मुसल मान सब सोऊ ॥

तेहि क्षिण जरासंध चहि आवा ॥ राम रुदन सो इल लखि पाया  
 लरे कछु कपुनि भागत भयऊ ॥ गौतम गिरि ऊपर चढ़ि गयऊ  
 गेग योजन केर निहारी ॥ जरासिन्धु तब दीन प्रजारी ॥ ॥  
 निकरि द्वारि कै गे हो उभाई ॥ ह्वै गा भूधर भसम बनाई ॥ ॥  
 जरि गे जरासिंधु प्रसजाना ॥ आवा बहुरि भवन हर्याना ॥  
 इहाँ सकल यदुवंशिन काहा ॥ चही कीन हल धर कर व्याहा  
 शहर अरु गाती रे वत भूपा ॥ तासु सुतारे वती अनूपा ॥ ॥  
 ताके संग होत भाव्याहू ॥ विद विधान सहित उत साहू ॥ ॥  
 दो० संसकार जाकर जहाँ मिलत सो ताहि बिशेषि ॥  
 त्रेता की कन्या बरी द्वापर में बल लेखि ॥

इति श्री विश्राम सागर सब गत आगम ग्रंथ उजागर थीर धुनायदास गणसम-  
 ही कृत रुक्मायन जरासिन्धु समर वर्या नो नाम दशमोऽध्यायः १० ॥

दो० सुमिरै राम भिय सन्त गुरु गरा पगिरा सुख दानि ॥

नीति सहित रुकमिनि हर रा हरि कृत कहत बखानि ॥

चौ० अब बिबाह रुकमिनि कर सुनहू ॥ रगत सुभये कल हरि उनहू  
 कुरिडन पुर भीष्म नृप होरे ॥ जन सीख सुता तिन केरे ॥ ॥  
 रुकमिनि नाम ज्योतिषिन राखा ॥ सब गुरा धाम प्रयाग पति भाया  
 दिन दिन कन्या बहूत कैसे ॥ शुक्ल पक्ष कर चन्दा जैसे ॥  
 खेलन संग सरिबन के लागी ॥ इक दिन थक बोली अनुरागी  
 रुकमिनि तै नित खेल बिगारा ॥ लुकल किठौर करत उजियारा  
 सुनि हैं सि पृह गौनी मुख पांथ ॥ तेहि क्षिण तहं नारद वरि अग्रि  
 देखि रूप गुरा मन में जाने ॥ रुदन चन्द्र से आइ बखाने ॥  
 कुरिडन पुर मह भीष्म कुमारी ॥ रुकमिनि हे सो पाग तुम्हारी  
 तब ते वसी हृदय पति सुरकी ॥ सुनहुं कथा पुनि कुरिडन पुर की  
 इक दिन सुयश पाचक नवावा ॥ रुदन केर भूपति सुनि पावा ॥



लब निज भवन गया वत भयऊ ॥ सुनिरुक्मिनि निज अधरि लय  
 करत भई संकल्य अनंगा ॥ बरिहों में इनही के संग ॥ ॥ ॥  
 इक दिन भीषम देखि बिचारी ॥ भई विवाहन योग कुमारी  
 सब भाइ निते पूछे सिबोली ॥ बरिये काहि रुक्मिनी खोली  
 लब सब लोग भूष गजाये ॥ नाना देशन के नहिं भाये ॥ ॥  
 तब छोटा बालक नृप केरा ॥ रुक्म सेन बोला यहि वेरा ॥  
 तात रुक्मिनी कृष्णहिं दीजै ॥ नवल नात बसुदेव ते कीजै  
 सुनि नृप सहित सकल पुरवसी ॥ बोलि बात कही इन रवासी  
 सेवक सुन बड़ होरहु जानी ॥ हित की बात कहै सोमानी ॥  
 आदि पुरुष जिनके घर जनम ॥ आरि निकं सभ सुख बहुवनमें  
 को मिलि है इनते भल भाई ॥ सुनि बोला बड़ पुत्र रिसाई ॥  
 बोलहु बचन संभारि सुनीती ॥ जानत तुमन कृष्ण की रीती ॥  
 बोड़ सब बदनन्द के राहा ॥ तब अहीर सब काहू काहा ॥ ॥  
 बोढी कामरि गाय चलाई ॥ जानिहु ता सुन जानी जाई ॥ ॥  
 कोऊ नन्द केर सुत गावै ॥ कोई बडु पति केर बत्तावै ॥ ॥  
 अब तक भेदन काहू पावा ॥ यह धौं कृष्ण कोन को जावा ॥  
 प्रभुता वेसन लेश में बासी ॥ उग्र सेन की करत खवासी ॥ ॥  
 हो ॥ तिनके संग विवाह करि कहौ मिली फल कैम ॥  
 लायक ते कीन्हों बही बैर प्रीति प्ररुगोन ॥  
 चौ ॥ लोभ सो भल जहं फल अधिकाई ॥ चोद ओस पिया सन जाई  
 नगन नहाय सो काहू निचोवै ॥ जेहि धन ताहिं सो का को उखारै  
 तेहिते भूष चंदेली केरा ॥ है शिशु पाल प्रतापी हेरा ॥ ॥  
 जेहि धर परम पराते गादी ॥ आवत होत राज नहिं दादी ॥  
 ताको व्याहि रुक्मिणी दीजै ॥ कृष्ण केर अब नाम न लीजै  
 सुनि नृप सहित लोग पछि तनि ॥ रहे साधि सुय सकल इति

सबल शत्रु नृप नीच गोसाईं ॥ इन ते दह कीन्हे न भलाई ॥  
 मूरख ते न कहि हरि गाथा ॥ गिरि खेदि परे पाथर हाथा ॥  
 अस मन गुनि गवने कहि बीसा ॥ जबर कि राह कहत फुरशीसा ॥  
 तब तहं रुकुम बोलि बटु लीन्हा ॥ लगन सोधाइ पट्ट पुनि दीन्हा ॥  
 जाइ विप्र शिशुपाल हि दीन्हा ॥ दीका बड़े भाव ते लीन्हा ॥

दो० यदपि कह्यो ॥ बहु भीष्म नृप चह्यो कृष्ण को देन ॥

तदपि न बूझ्यो बैर थल लालच ग्रसित मुखेन ॥

चौ० तब शिशुपाल व्याह हित फूली ॥ लोक वेद विधि करी स पूली ॥  
 दैके भेट बिदा करिताही ॥ न्योत्यों बड़े बड़े नृप चाही ॥ ॥  
 आइ विप्र भीष्म मै सुनावा ॥ बड़ी धूम ते आवत ताचा ॥ ॥  
 बेगि व्याह की करहु तयारी ॥ तुरत गुनी जल लीवहं कारी ॥  
 अति विचित्र माँड़ो तनवावा ॥ मंगल गान सकल पुर छावा ॥  
 एक सरखी बोली मृदु बानी ॥ रुक्मिणी भई बड़ी तुम राणी ॥  
 अस मुनि कहत महीप कुमारी ॥ मन बच कर्म मम पति गिधाही ॥  
 क्षिप्रहि विप्र बोलि यक लीन्हा ॥ लिखि के पत्र तासु कर दीन्हा ॥  
 दीजै जाइ कृष्ण के हाथा ॥ बहुरि उन्हे लायौ निज साथा ॥  
 तौ में बड़ तुझार हित मानौ ॥ रौरे दीन कृष्ण पति जानौ ॥  
 यह मुनि चला द्वारि के आवा ॥ कृष्ण चंद्र को पत्र देखावा ॥  
 महाराज मुनि सय शनवीना ॥ तब ते मै तुमका पति कीन्हा ॥  
 मिलन केर आशा दह भावा ॥ वेदन हूं याही विधि गावा ॥  
 जाकर प्रेम सत्य है जामें ॥ सो तेहि मिलत न मंशे यामें ॥  
 अब मोहिं लेन चहत शिशुपाला ॥ जिमि मृग पतिव्रत भाग्यगाला ॥  
 तेहि ते सत्य बचन अविनाशी ॥ कीजै मोहि आपनी दासी ॥  
 जो नहि लेहो खबरि हमारी ॥ तौ तन त्यागव सपथ तुम्हारी ॥  
 दो० जिमि रघु रत्नी सुगमि बन रत्नी मृग पति भव



तेहि प्रकार मोहिं रहिये प्रगात पाल प्रभु लेख ॥

चौ० ऐसे बचन बाँचि बनवारी ॥ आवा भरि नय नन में वारी ॥

तुरत उग्रते आय दु लोहा ॥ रथ चढ़ि गवन सहित द्विज कीन्हा

पहुँचे जब कुरि डन पुर जाई ॥ उतरे भूपति की फुलवाई ॥

चिभंगी कुं० देखी बनवारी जनु नय नारी अपचल अगा-

री धिर न रहै ॥ परि रहत दिगम्बर पुष्पवती वर गिरा विरूप

नर मोह लहै ॥ लहै गर्भन गभ दिन प्रति अर्भे अर्पत स-

र्वे परस करे ॥ परसल पति पावै तदपि सोहावै सवति न भोंबे भा-

ग्य वारे ॥ बोलीहि बहु बोला निज निज दोला धरि धरि चोला

विपुल मखी ॥ आमाहिं जनु सारी रहीं कसरी हर्षित प्यारी प्रेम लखी ॥

चौ० इहां रुविप्रणी करत विचार ॥ अजहं नहिं आये कारतार

पुनि पुनि चढ़ि महलें पर जावै ॥ चेहुं दिशि चितै विकल फिरी आवै

इतने में द्विज आहु बखाना ॥ मनहुं लहैं जल मालि मुखान

प्रभु दिन हैं दीन्हे बरदान ॥ जाहु सदा रहि हों धनवान ॥

बहु रि कह्यो हविते अधरियो ॥ देवी पूजन में मोहिं हरियो ॥

पाहुं ते आयि बल देऊ ॥ छप्यन कोटि वादवातेऊ ॥ ॥

सुनि माहि पाल मिलन चलि आया ॥ सो सब हाल रूप प्रभु निपाव

बोला नृपति ऐसे दिन का ॥ कौने इहो बोलायो दुन का ॥

जहां जानत हैं करत बरवरा ॥ भीष्म कहा कहु मोहिं नवरा

तिसरे पहर नगर दोउ भाई ॥ आये लखि कहैं लोग लोग आई

जस गुरारूप तें ससन बंधा ॥ निमि सुदि सोने माहिं सुगंधा

दुन के दरश माहिं सुख जैसे ॥ मुक्तिहु माहिं नशेई ऐसा ॥

हो० गौर आस सुख मासदन बदन बिलोचन चारु ॥

सहित बसन भूषण बसहु उरसि अहं निमि दारु ॥

चौ० यहि दीध कहि सब दिन सुख पाव ॥ शिषु पालहि तब रुचन जनाव



अब सब खबर दार ते रहना ॥ आये हैं उपाधि के गहना ॥ ॥  
 तब शिशुपाल समूह सिपाही ॥ पठदुदिय रक्षा हित नाही ॥  
 इत उत गई कनात तनई ॥ देवी पूजन कुंवार सिधई ॥ ॥  
 संग सरवी सों हैं बिधि वारा ॥ कीन्ह तन पौड़ श सिंगार ॥  
 कुराडलिया मंजन पट अंजन तिलक सक कुराडल  
 ताम्बूल बिसरि अंगिया किंकिरी कंकन पायल मूल ॥  
 कंकन पायल मूल सुनू पुर कुंकम बेनी ॥ यइ पौड़ श शंगार  
 वियन के औरहु अनी ॥ अनी मानहु मदन के रि निकसी  
 मद गंजन ॥ गीत साथ रघुनाथ करत सुनि मुनि मन मज्जन ॥  
 रोल्ना कुं ॥ कोइ पद्मिनि सुकुमार लाज युत सहित सुगं-  
 धा ॥ कोइ चित्रिनि समरूप चहत उपबोध प्रबंधा ॥ कोइ  
 संखिनि युत रोस दया बिन बेगि प्रचालै ॥ कोइ हस्तिनि बड़  
 उदर पयोधर कमर करालै ॥ कोइ स्वकीय सुख दुख माहि  
 निज नाथे जानै ॥ कोइ पर किय पर पुरुष केर संग छिपि के  
 ठानै ॥ कोइ गुण रूपा शक्त प्रेम बस कोइ रस धावै ॥ कोइ सा-  
 मान्या दर्वि लोभ बस प्रीति बड़ावै ॥ संधि भय कोइ अकु-  
 च जननि योवन कोइ मुग्धा ॥ कोइ ज्ञाता अज्ञान वपु पबय  
 भोग निरुग्धा ॥ कोइ मध्या सामान्य काम युत लाज जनौ वै  
 कोइ प्रौढा परबीन अधि करस के लि सोहावै ॥ कोइ धी सइ-  
 त बिंग कोइ अधीर रिमानी ॥ कोइ ज्येष्ठा पति प्रीय कनि-  
 ष्ठा कोइ कम चहती ॥ कोइ गुणा गति अलख कोइ पर प्रीति  
 लसिता ॥ कोइ मुहिता सिक मिलन विदग्धा कोइ सुरसि-  
 ता ॥ कोइ अनुसयना दुरि वन जासु संकेन न मान्यो ॥ कोइ कु-  
 लटा आतृ प्रचिन चिरंठोर लोभान्यो ॥ कोइ स्वाध्याना स्व-  
 वस कीन नाहि निज गुनते ॥ कोइ उक्ता केहि हेतन आयो प्री-



तम सुनते ॥ बासक सज्या कोइ कंत को आगम देखे ॥ कोइ क-  
ल हं तरितादि निदरि करि शोच बिशेरे ॥ कोइ खंडिता  
अपर पास लखि पतिहि रिभावे ॥ द्विजलब्धा कोइ जौन  
पतिहि संकेत न पावे ॥ कोइ ग्रीभ सारि निआपु जाइ की  
हरिहि हं कोरे ॥ प्रवृत्त पतिका कोइ जासु पति गवन बिचैरि  
कोइ प्रोषित पतिकाहि कंत परदेश म जाको ॥ आगत पति-  
का कोइ होइ उत कंठा ताको ॥ कोइ दूरि बना दुखित होत ॥  
लखि बाधक जानै कोइ गरबित पति रूप अधिक कोइ जे  
ठर प्रभानै ॥ आई करत कलोल सकल देवी के पास ॥ पूज-  
न कीन्ही कुंवरि कृष्ण की करि उर आसा ॥

दो० और सरखी जे संग की करि प्रणाम कहैं बात ॥  
यहि कन्या के कृष्ण पति देहु दया करि मात ॥  
पूजन करत न पतिहि जब धर्यो महिप कुमारि ॥  
लगी करन प्रतिशोचत बर्यहि विधि हृदय बिचारि ॥

कुराड लिखा बीसन बुड़ की में दई मुकता लग्यौ न हाथ ॥  
सागर के रन दोष यह निज अभाग रघुनाथ ॥ निज अभाग र-  
घुनाथ नाथ मनु सबहि कुलावे ॥ पातन लहै करील ढील को ता-  
की गावे ॥ गावत सुनै न बाधर भानु दुति तम चर दीसन ॥ रहत  
गंध बिन बेनु मलय दिग यहि विधि बीसन मन चाहत है मि-  
लन को मुख देखन को नैन ॥ अघरा बहत मुख प्रद सुन्यो आशा-  
म सुन्दर के वैन श्याम सुंदर के बयन सैन बस होन न पावत ॥ हाय दई  
का करों यतन एको न लखावत आवत एक प्रतीत यहि प्रभु प्रणत  
पाल घन ॥ शरणा समुभि सुधि लेहै लेहै पुनिलेहै ठोक मन ॥

दो० यहि विधि मन में ठीक दे चली चहें दिशि हेरि ॥  
इतने में हरि आइ तहें परदा दी न्यो रोरि ॥

कुंवरि कुंवर को रूप लखि भे मुद्रित भट सर्व ॥  
 कर गहिर यथै ठागि प्रभु चले गंजि नृप गर्व ॥ ॥  
 जोरावर ते नहिं चलत छल बल बुद्धि उपाह ॥  
 टटकन टरी न गाज जिमि मेरवन ते भृग राह ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास  
 रामसेनेही कृत कृष्णायणा स्किन्नी ह सा बर्गानो नाम एकदशोऽध्यायः ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गराप गिरा सुख दानि ॥  
 नीति सहित रुकुमिन कथा हरि कृत कहत बरवनि ॥

चौ० यहि विधि जब श्री कृष्ण मुगरी ॥ हरि चलि भेभीषम ककुमारी  
 तब तो जरासंध अपस कहई ॥ धृग धन्वीं हम सब को अहई ॥  
 जिन के जियत गोप नृप बारी ॥ हरि ले गो जिमि शिव हरि नारी  
 यही पुरुष कहें अपयश होई ॥ मरन नीक भल जियन न सोई  
 अपस कहि गहि आयुध सब दौ ॥ धरु धरु मारु मारु कहि वौरे ।  
 इत हल धरया दौ ले धाये ॥ भिरि गंधे दौर दौर भट पाये ॥ ॥  
 पै दर ते पै दर हय ते हय ॥ रथिन ते रथि जूटे गय ते गय ।  
 छूटे चक्र बान बिक राला ॥ तोमर परशु शक्ति सम काला  
 सुदगर शूल भुशुगिड सो हरि ॥ पुनि रूपान ते मची लराई ।  
 कोटिन मुगड धरिया परगिर हीं ॥ धरु कहि कबंध बहु भिर हीं  
 भूत प्रेत योगिनी कराला ॥ मुद्रित भये स्वग स्थान अगाला  
 यहि विधि सैन नृपन की नाशी ॥ शंख शब्द कीन्हो बल राशी

दो० जरासंध शिशु पाल दौउ गये सुरत ही भागि ॥  
 धरि जदे सठ रुक्म तब चढ़ा रुक्मिणी लागि ॥  
 जैसे पारवी की दशा देखत पारवी अपा न ॥  
 तद्यपि कूटन दीप में अपस बिमोह बलवान ॥

चौ० जरासंध बहि कृष्ण हिल लकारा ॥ जान कहा करि विघ्न हमार



रह्यो इहं कि कदरन के बीचा ॥ जानहुं आजु आपनी मीचा ॥  
 अस कहि निकट आइ प्रभु पाहीं ॥ मारि सि गदा मांभ उर माहीं ॥  
 पकरि कृष्ण शिर काटन लागि ॥ कह रुक्मिणी जोरि कर आगे ॥  
 बंधु भीख मां कह प्रभु दीजे ॥ इतना कहा चेरि कर कीजे ॥  
 मोह मुड़ाइ राखि पुनि चोटी ॥ पाछे बांधि लिहिनि निज जोटी ॥  
 कटक निधनि आये बल भाई ॥ सने मान करि दीन छुड़ाई ॥  
 बाले हरिते उचितन कीन्हें ॥ बंधु बिरूप बिरचि दुख दीन्हें ॥  
 राजा सुत दुख पावा होई ॥ लघु मति हमै कह सब कोई ॥  
 बंधु कोरे जो बंध कर कामा ॥ तदपि न हतिये हित परिनामा ॥  
 जो बहु लाभ कुसंगम होई ॥ तदपि न कीजे संगति सोई ॥  
 होइ धनी धन रहित जो कीजे ॥ तदपि ताहि लघु प्रकृति न लीजे ॥  
 जो न होइ बल देन को दाना ॥ तदपि न तजिये सम सनमाना ॥  
 घटें प्रीति जो मित्रते कबहुं ॥ सुखते उघरि न जूटिय तबहुं ॥  
 जो निशि दिवसन हरि जिपये ॥ तदपि न मांभ सुख बिसरै ये ॥  
 जो नर नारि होइ दोउ त्यागी ॥ तदपि रक्षिये जिमि तरा आगी ॥  
 परहित करत प्रारा जो जाई ॥ तदपि न तजिये कबहुं भलाई ॥  
 दो० राखि रोग रिपु अग्नि न्य करत तपो धन ब्याल ॥  
 जोये है वै लघु तदपि सजगरहिय सब काल ॥  
 बनिक बाम बैरी बिकल बिसनी चुगुल अजान ॥  
 कौरे कोटि सोहैं तदपि न विश्वास न अपान ॥  
 जो कामी नर कृपिगा कहि कोरे आपनी रिन्द ॥  
 तदपि अकार्य न दीजिये विद्या बिंदरु जिन्द ॥  
 जो सुरभू सुर साधु की सधै न सेवा भाव ॥  
 तदपि न निन्दा कीजिये नाहि सुनिय करि वाव ॥  
 उत्तम विद्या नीचते मिले जो दीन्हे मान ॥

तदपि तासु ते लीजियेसिरपर धरि आसान॥

जो कबहुं सत संग ते उदय होय बैराग ॥

तदपि एक ही बार कुल धर्म न कीजे त्याग ॥

चौ० जो सब तीर्थ न मिले करारी ॥ तदपि न तजिये हरि पद बारी

जो कबहुं गुरु रहै रिसाई ॥ तदपि निहो रिचू कब क साई ॥

जो धन हित विद्या लघु करी ॥ पढ़ि तद्यपि लीजे निज हेरी ॥

जो शुचि दास कबहुं फिरि जाई ॥ तदपि ताहि हे नर्म मनाई ॥

जो अपने ते बने न नेकी ॥ तदपि अपर को करत न छेकी

जो श्रुति शास्त्र मुख गार न हिये ॥ पढ़त सुनत नित तद्यपि रहिये

जो अति कष्ट हु ते सत्संगा ॥ मिलै तदपि नित करिय प्रसंगा

सुरस सन्त कहु कहै न पद्यपि ॥ करिये अदब मान लखित पद्यपि

दो० कवि बुध गुरु तिय सुत सुहृद द्विज मर सी शिष्य ॥

जो यह करें अनीति कहु तदपि तरहुं दे जाय ॥

चौ० पुनिरुक्ति गीते गिरा उचारी ॥ तजहु शोच निज वंश विचारी

छत्री कुल विधि अस निरमायौ ॥ अवनि रवि धन धाम लोभायौ

भाते भात हने करि कोहा ॥ भूय कने अस पालक मोहा ॥

सो गुण हममें एको नाही ॥ सब कर हित चाहें मन माहीं

हि नू प्रगते प्रिय अधिक आई ॥ सलभ जरै नहिं दीप लग आई

बहु रि विवाह आठ विधि तेरे ॥ धर्म शास्त्र में मुनि न निबेरे

दो० ब्राह्म देव पर जायती आर्य असुर गन्धर्व ॥

राक्षस बहुरि पिशाच अब सुनहुं व्याह विधि सर्व ॥

कु कुभी कु० सालंकार दान कन्या को ब्रह्म कहावै सोय

दान दक्षिणा में कन्या को देत देव सो होय ॥ तुम दोउ मि

लि सब धर्म करो कहि देहु प्रजा पति जानौ ॥ लीहै धेनु दे

त दुहिता जो सोई आर्य पर मानौ ॥ सुप्त प्रमस्तन की क-



न्यन को हरिबो सोइ पिशाचा । बरै कुँवरि बधि बंधु सो रा-  
सस नृपे पान यह राचा ॥ हे सकाम कन्या कर पकरे व्याह  
सो गंधर्व कहिये । असुर अनीत प्रीति नहिँ पोरुष यह उत-  
महि न चाहिये ॥

चो तेहि ते हम क्षत्री के बालक ॥ कीनि अनीति न निज कुल बालक  
मुनि बैदर भी अति सुख पाये ॥ मोह जनित वियाद बिसाये  
रुक्म लाज बस भवल न गायक ॥ निज रासन ते बोलत भयक ॥  
पहिले पुरुष ते बात जो कहिये ॥ कृत जिन मुख न देखे रावहि  
ताही ठौर नगर यक द्वारा ॥ नाम भोज कहु ताकर धारा ॥  
सब जाती सन मानि बसाई ॥ रह्यो तहां सुत नारि बोलाई  
इत शिष्य पालन कह्यो बिलसाई ॥ अब हम जावन निज पुमाई  
हंसी की बात कही नहिँ जाई ॥ मूरख चन्द बने इत आई ॥  
जरा संघ कह भूपन तीरा ॥ हानि लास रहतैं हैं बीरा ॥ ॥  
हम नहिँ प्रथमे इनते होरे ॥ पुनि दोउ बंधु शील पर जोरे ॥  
तेहि ते तात तजहु गति मन की ॥ दारुयो पिता सस गति मन की  
समुझि सो कबि सुख शोक नगहई ॥ बर्तमान सम बर्तन रहई  
मूरख गई वस्तु को सोचै ॥ दृढ पाय जेहि धर्म नरीचै ॥  
मूरख करी कृत्य को मानै ॥ हित की बात न भनै अने ॥  
मूरख पंथ चलत में खवि ॥ मूरख हंसत माहिँ बत लावि ॥  
मूरख सदेत करै बिबाह ॥ खरखें दृढ्य वित्त ते जाह ॥  
मूरख करै सबल ते बैर ॥ मूरख चर राखै अपन गेरू ॥  
मूरख बिन मतलब कहु बोलै ॥ मूरख पाप अपर के खोलै  
मूरख द्वै बिच तीसर फाँद ॥ मूरख बात बाम की कोद ॥  
मूरख निरधन के धन धरई ॥ मूरख बड़ माहिँ निय बरई  
मूरख बहिनि सार संग भेजे ॥ मूरख जाइ पराई सेजे ॥ ॥

मूरुख कर्मक्रियाने हीना ॥ मूरुख चलै न पति आधीना ॥  
 मूरुख सद मांगन में करई ॥ मूरुख प्रीति जोरि पुनिलरई ॥  
 मूरुख निज मुख निज गुणा गावै ॥ मूरुख बालक सुहे लगावै ॥  
 मूरुख त्यागी है धन जोरै ॥ मूरुख बिन मतलब फल तोरै ॥  
 मूरुख हरवलदेइ बिन जाने ॥ गंहे चपलता गुरु अस्थाने ॥  
 सबते बड़ मूरुख तेहि चीन्हा ॥ नरतन जिन हरि भजन कीन्हा ॥  
 तेहि ते तुम मूरुख के लेखै ॥ मिली न मिली वस्तु अपान मेखै ॥  
 यहि विधि सब भूपन समुझावा ॥ तब लजात निज भवन सिधावा ॥  
 पहंचे कृष्ण द्वार का तीरा ॥ सुनि कै उग्र लई बहु भीरा ॥  
 आगे लिहिनि धूम ते आई ॥ राजमहल लाये सुरब पाई ॥  
 कीन्ह विवाह वेद विधि तेरे ॥ लागे रहन सकल सुरब मेरे ॥  
 कह नृप रुक्मिणी पूर्व भकारी ॥ करी पुराय असि को निजुवारी ॥  
 दो० तीन अंश ते जानु की लीन रहे औतार ॥

वेदवती सोइ रुक्मिणी सत भामा महिभार ॥

चौ० कृष्ण रुक्मिणी केर शृंगार ॥ कहन शेष नहिं पावै हि पार ॥  
 तौ में किमपि कहौ मति थोरी ॥ पाय पपील कि सागर दोरी ॥  
 कहु दिन बादि रुक्मिणी जावा ॥ बालक नाम प्रद्युम्न पावा ॥  
 शोभा सदन सदन अवतारा ॥ हरि प्रतिबिंब मनहुं प्रतिधारा ॥  
 दो० सम्बर राजा पवन है हरि लैगा रिपु जानि ॥

दीन्हि सिडारि समुद्र महें लील लीन मीनानि ॥

चौ० धीमर मीन पकरि सोइ लीन्हा ॥ जाइ भेट संबर को दीन्हा ॥  
 चीरत सुत निकसा महिपाला ॥ सों पिदीन रतिका तेहि काला ॥  
 पांच बरख का भाजव बारी ॥ भेद पाइ सवर को मारा ॥ ॥  
 लैरति संग द्वार के आये ॥ मानहुं प्रारण रुक्मिणी पाये ॥  
 भातव आनंद सहित बिबाह ॥ बसी सदन रति सह नर नाह ॥



दो० श्रीगुरुदेवादासके चरण कमलधरिमाथ॥

कृष्णायना सह येन को पूर कीन्ह रघुनाथ॥

चौ० दुनियासेन कहों समुझाई॥ पन्द्रह सै पचास चौपाई॥

दोहा एक सै सताइ सजनी॥ सोरब चारि सोऊ पहि चानी॥

गोला छन्द नवै हैं सोई॥ नवै कुण्डलिया यामें जोई॥

कुकुभा छन्द तीनै हैं भ्राता॥ तीनै गीतिका यामें ताता॥

दो० भुजङ्ग प्रयाता एक हैं एक सवैया छन्द॥

एक कविन चामर सु एक एक त्रिभंगी के द॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथरा-

सगम सनेही कृत कृष्णायन रुक्मिणी मङ्गल प्रद्युम्न उत्पत्ति अ-

रुति मङ्गल बिवाह वर्णनो नाम द्वादशीः अध्यायः १२॥

इति कृष्णायन समाप्तः

श्रीगणेशायनमः

# अथविश्रामसागर

श्रीरघुनाथदासरामसनेही कृत रामायणावा-  
लकाराडप्रारम्भः

श्लोक

वपुवनजविनीलं लोकलावण्यधामं॥  
सुखनिधि समशीलं लोहिताक्षं विशालं॥  
करधनुशरधारी क्रीटकं पिङ्गवस्त्रं ॥ ॥  
विधिहरिहरमोक्षं जानकीं नमामि ॥  
हो० सुमिरिरामसिन्धु सन्तगुरुगणपतिरासुखदानि॥  
कहों ब्रह्माराडपुराण मतरघुपति खराडवत्तानि॥  
श्रीगुरुदेवादासकेचरण कमल धरि माथ ॥  
बरणात सीतारामगुण सुखप्रद जनरघुनाथ॥  
कथा अलौकिक कुशल सुनिकों नमनसंदेह॥  
राम अनन्त अनन्त गुण कतहुं होइ गो राह ॥  
हाथ जोरि बोलें वचन पुनि शौनक अभिराम॥  
केहि कारणा अवतार जग लीन परात्मा राम ॥  
सो० सुनि सुमन्त सुखपाद ॥ बोलें मुनि हरि गुण सुनहु॥  
जो बरणा गिरि राड ॥ गिरजा प्रति सोई कहव ॥

चौ० एक समय कैलाश में भारी ॥ बैठे रहे उमा त्रिपुरारी ॥ ॥  
मन प्रसन्न शंकर कर जानी ॥ बोली शिवा जोरि युगपानी ॥



राम सञ्चिदानन्द निकेता ॥ नरतन धरनि नाथ केहि हेता ॥  
 कीन्हिनि चरित कोन बिधि करे ॥ सो सब नाथ कहौ हित मेरे ॥  
 जानहु तेपि श्रवण सुख भरी ॥ सनकादिक जहैं रमै विचारी ॥  
 मुनि शंकर बोले मृदु बानी ॥ धन्य अनुम धन्य भवानी ॥ ॥  
 राम चरित पूछ्यो सुख दार्द ॥ सो प्रबसुनो कहों में गार्द ॥  
 कोन बहुत लीला हरि जपौ ॥ बाढ करत है कारणा तव हौ ॥  
 जैसे बिशिष चलावै कोरु ॥ प्रथम धरत निशाना सोई ॥  
 उभे देव जानै अभिमानि ॥ अरि करि शरणा भये भयानी ॥  
 तीसर हेतु मनुहि बरदाना ॥ दीन रहनि प्रभु कृपा निधाना ॥  
 तूर्य युद्ध जानु किहि देखावन ॥ पंचम जग बिराग उपजावन ॥  
 षष्ठम मुनि जन सुधिरन कीन्हा ॥ भक्त बसल लरि वदरान दीन्हा ॥  
 सप्तम देखि धरम की हानी ॥ अष्टम प्रीति जनक की जानी ॥  
 नवम बचन बिधि के बहुतेरे ॥ कीन्हें चहैं सांच तेहि तेरे ॥  
 दशम दशानन सबै सताया ॥ बधन हेत प्रगटे रघु राया ॥  
 यहि बिधि हेत हजार न जानौ ॥ इतने ही हित जन्म न मानौ ॥  
 पुनि गिरिजा बोलीं कर जेरी ॥ राम कथा पर प्रीति न थोरी ॥  
 नाथ कहौ केहि बिधि जग दीशा ॥ बपु धरि निधन कीन दश दीशा ॥  
 केहि बिधि भवन बसे सुख कारी ॥ सुनि लागे तब कहन पुरारी ॥  
**दो०** इकरावरा जय बिजय में गुल जलंधर आप ॥

तीसर रावरा शंभुगरा चतुरथ भानु प्रताप ॥

**चौ०** यहि बिधि कल्प प्रति रावरा ॥ होत करत हरि बपु धरि पवन ॥  
 जेहि कारणा साकेत बिहारी ॥ प्रगटे तासु कथा सुनु प्यारी ॥  
 नाम प्रताप सरवा प्रभु केरा ॥ महि प्रवत स्यो आइ प्रभु पंग ॥  
 सत्य केतु नृप के कै देशा ॥ तस्य भवन जनु उय उ दिनेशा ॥  
 नाम प्रताप भानु बल धामा ॥ कीन राज रिपु दल अभिरामा ॥

एक बार वन गयो शिकारा ॥ तहाँ कपट मुनि असुर निहारा  
 तिन्हें लोभ बस चीन्ह्यो नाहीं ॥ गुरु बनि किहि सिपाक घर साहीं  
 गोपल अपस न भई न भवानी ॥ विप्रन आप दीन दुरव मानी ॥  
 राक्षस होउ कुटुम्ब समेता ॥ ते जहं भये सुनौ सो हेता ॥  
 ऋषि पुलस्त मुन ब्रह्मा केरे ॥ रहे तप करत भरु के नैरे ॥  
 तहं तृणा बिन्दु राज ऋषि रहे ॥ कन्या ता सुक्रान्तिकर कोहे ॥  
 सखिन सहित सो दिन प्रति आवै ॥ कल बल मुनि के निकट मचवै  
 मुमिरन ध्यान बने नहिं गई ॥ तब पुलस्त अपस कहारि साई ॥  
 आपस पास जो हमरे आवै ॥ प्रमदा पुत्र वती है जावै ॥ ॥  
 कन्या गई रहा अवधाना ॥ जब तृणा बिन्दु ध्यान करि जाना  
 तब सोइ सुता मुनिहिं बरि दया ॥ तेहिने बिश्व अवा सुत भय अ  
 बड़े भये पितु आय सु पाई ॥ करन लाग तप कानन जाई  
 दो० भरद्वाज मुनि के रहै कन्या सुयशा नाम ॥

बिश्व अवाहि बर दीन निन नेह सहित अभिराम ॥

चौ० निन के भये कुंवर विधाता ॥ कीन्ह्यो ताहि यज्ञ पतिताता  
 तदपि एल बिल दिन प्रति आई ॥ कराहि मातु पितु की सेवा कई  
 यहि विधि बीति बरष अठारा ॥ तब कुंवर निज हृदय विचार  
 जो मम पिता अपर विषय ही ॥ सोइ न हुन की सेवा करही ॥  
 मय दानव याच्यो अभिराम ॥ माया देखि सुवक्षा नाना ॥ ॥  
 निन के हिन निज दूत पठाया ॥ सुनि मय दानव बचन सुनाया  
 विप्रे भिक्षा मांगन चाही ॥ हम निज सुना बिवाह बतानी  
 ओरो बचन कहै कहु नाना ॥ दूत धन दते आई बरवाना ॥  
 मुनि कुंवर निज सेन बंदोरी ॥ बड़े तहां भई मारु न थोरी ॥  
 लाये निन्हि जीति यहि ली ॥ दीन्ह्यो पितहि पराग सह प्रीति  
 विविधि भांति कीन्ह्यो निन सेवा ॥ देखि प्रसन्न भये मुनि देवा ॥



संभ्रम समय लोहिनि रतिदाना॥ यद्यपि मुनिवर दोष बखाना  
 भई गरभ संयुत यहि भावा॥ जन्म समय कर औसर प्रावा  
 उलका पात होन तब लाये॥ गर्जे मेघ समय बिन आगे॥  
 रवि शशि ग्रहन यवन चलि जोग॥ दिन की राति भई प्रतिधोग  
 कोंपि उठी महि देव डेराने॥ सब विप्रन के पेट पिराने॥  
 दुष्ट मुदित मुनि भये मलीना॥ अग्नि तेज हत न सुदति छोना  
 उदित केतु न भ जंम्यु कबोले॥ शुनिदल कोर लगे बिधि लेले  
 प्रथम सुत देवी युग जाये॥ रावणा कुम्भ करण कह वाये।  
 कहैं कहत के कसी माता॥ सो जय विजय समय की चाता  
 भय सुबहा के सुत पाछे॥ त्रिजटा अग्र बिभीषन आछे  
 माया सुत जन्में कर लेखा॥ खर दूषणा विशिख सुप नेखा॥  
 जब कहु भये स्यानि बीचा॥ करैं उपद्रव कानन बीचा॥  
 खग मृग एक कह बचन न पावैं॥ तपन मुनिन कहैं जाइ सत पावैं  
 दो० गारु माहन बम करन उच्चाटन अपलम्भा॥

आकर परा सब भौनिके पदें सदा कागद॥

चौ० निश्चय प्रथम सुख गता भाने॥ बने ते रहैं पताल दुगने॥  
 निन निज वंश अयनि पर जान्यो॥ छिपि करि आवा गच्छ सुखान्यो  
 एक दिन दनुज पूज्य अम कहैऊ॥ करहु तपस्या जो मुख चहैऊ  
 अंगर बिना जग स्वप्न सरीखा॥ लागे तपन सकल मुनि सीखा  
 अरध अधि रवि दिशि दृगदयऊ॥ दिव्य सहस्र दश सैव तगयऊ  
 महा कठिन तप लखि बिधि आयो॥ दश मुख खल लखि बाण बोलायो  
 वैदि गिरा तेहि जीह मै भारा॥ तब विरंचि बरु मांगु उचारा।  
 बोला मुनि रावन हम नाहू॥ नरहरित जिन मरैं कर काहू।  
 एव मस्तु कहि अज तहें आयो॥ जहां बिभीषणा ध्यान लगाये  
 मुजन जानि बोले अनुगामी॥ भावै सो लीजै बरु मांगी॥

कह्यो बिभीषणा दोउकरजोरी॥ हरि पद प्रीति बंदे प्रभुमोरी॥  
एव मस्तु कहि पुनि धरिधीरा॥ यहुं चे कुम्भकरणा के तीरा॥

दो० ताहि देखि बागीश निज मनमें कीन विचारी॥  
जो यह नित भोजन करी नाशी सब संसार॥

सो० करि यहि भांति बिबेक प्रेरि गिरा फेरी उपल॥  
मौगि सिवा सर एक । जागहुं सोवहुं मास पद॥

चौ० कहि अस्थानु बहुरि बिधि डोले॥ खर दूषणा विशिरा तबोले  
तिन मांगा हम होई बौरा॥ अन्त समय जाई हरि तीरा॥  
देखि सो विजटा शीशनवावा॥ होई प्रीति हरि पद बरु पावा  
पुनि लंकिनी नवायौ शीशा॥ बोले तब तेहि न बागीशा॥  
शारवा मृगतुमका जब मारी॥ तब छूटी यह देह तुम्हारी॥  
दिव्य रूप धरि हरि पुरवासा॥ होई तब निश्चर कर नासा॥  
यहि बिधि बिधि सब काबरी दीना॥ पुनि निज लोक पद्यान कीना  
दश मुख जी अजते बरु पावा॥ प्रभु दित है सोइ कविहि सुगवा  
कह्यो शुक्र है गै बड़ि भूला॥ नरवानर क्यौ तज्यौ समूला  
बोला कौन चूक इन लागी॥ डेरै बृथा तृणा दारुहि आगी॥  
अस कहि लाग करन रुकुण्ड॥ निश्चर निकर रहे तहें आई

दो० मय तन या मंदोदरी हे माते संजात॥

बरी दीन्ही तेहि रावरी समुझि सबल भलनात॥

मारि मनोहर पाई के उठा अधिक हरषाई॥

कुम्भकरणा विशिरादि पुनि व्याहे पाँचौ भाई॥

चौ० सानंद निब्रक दंत कुमारी॥ सो भइ कुम्भकरन की नारी  
नगदन्ती के हरि मख जाई॥ सो बल्लभा बिभीषणा पाई॥

रद भख के कन्या चै बरणी॥ खर दूषणा विशिरा की धरणी॥  
बनि तन सहित मुपाँचा भाई॥ करहि भवन मुख शोक बिहाई॥



एक दिन दशमुखपितु यहें गयऊ ॥ तेहि क्षणा धनपति आवत भयऊ ॥  
 बैठे धनद पितहि सिर नार्इ ॥ मुनि कीन्हो ॥ आदर अधिकारि  
 कछु काल रहि आय सुमंगी ॥ गये कुवेर भवन अनुगामी  
 आदर अधिक पिता कृत देखी ॥ रावण उर भाक्रोध विशेषी  
 खलन केर यहें लक्षणा आही ॥ पर प्रभुता लखि जरि बरि जाही ॥  
 उरि मृषि दिगते मन्दिर आवा ॥ जननी ते ब्रतान्त सुनावा ॥  
 तेहि तब कहा धनद ये आही ॥ कंचन की लंका भें रहई ॥  
 चारो तरफ सिंधु है जाके ॥ अमा पुरी नहिं सम सरिता के  
 सो लंका तब नाना केरी ॥ वसे आपु मम पितहि खदेरी ॥  
 मुनि दशमुख अति उठारि साई ॥ दल लै लंक गेरिसि जाई ॥  
 प्रथम कुवेर युद्ध अति कीन्हा ॥ पुनि हैं अमित त्यागि गद्दीन्हा  
 भागत देखि निशाचर राई ॥ लीन्हि सि पुष्पक यान छिनई  
 लंक बिलोकि परम मुख मानी ॥ कीन्हीं तहें रावन रज धानी  
 यथा योग्य पुनि निश्चर नाहू ॥ दीन्हें भवन बांटे सब काहू ॥  
 तब कुवेर निज कुटुंब समेता ॥ अल का पुरी बसाइ सचेता  
 आपु गये सुरपति के तीरा ॥ सकल बेवस्था कही अधीरा  
 मुनि सुरेश सब देव बोलाये ॥ हनि निशान लंकहि चदि आये  
 दशमुख लै निकसा कटकाई ॥ होइ इन्द्र ते लगी लराई ॥  
 अस्त्र शस्त्र छूटें विधि नाना ॥ अगिरात असुर होइ विन आना  
 बा सब कोपि बज्र एक मारा ॥ गिरा मूर्छित ब्रह्मनि मंभारा  
 निज गज ते तनु मर्दन लागेयो ॥ मानहुं अमति जानि अनुगये  
 कुंभ करण तब भिर्यो प्रचरी ॥ व्याकुल भये अदिति सुत भारी  
 रवि सुत सेन बिचल निज जानी ॥ भूपति दंड मार्यो उर तानी  
 रावण अपचुज दंड गहिल यऊ ॥ सहजै निज मुख मेलत भयऊ  
 राखि उदर शठ सोवन लागा ॥ षट महिना बीते पुनि जागा

दो० भयो नासु उर दाह तब उगलि दिहि सिय महराड ॥

तम कि लीन महि बेश पुनि मारे हराराड प्रचराड ॥

चो० लागत सिर तेहि पीर न व्यापी ॥ भयो नींद न सुनि खल गी  
तब हरि हने दराड अधिकार्ड ॥ सोवत सो अधिक हस चुपाई  
मुरछति तब रावरा जागा ॥ पुनि देवन ते जूझन लागी ॥  
नख भुज दराड धनुष सरलीन्ह ॥ मारि बिबुध सब व्याकुल कीन्ह  
लख दिग्गज चिक्क रिदिग आयि ॥ धनुष बान सब काटि बहाये  
गहि सि तिनैं तब भुजा पसारी ॥ मारि दुरदन दशन प्रचारी ॥  
दश मुख के उर ला महि कै से ॥ शिला सांभ बिन फर सर जै से  
लख रावरा तन की कठि नाई ॥ तब सब दिग्गज बल पराई  
धनद इन्द्र तब गे बिधि पासा ॥ श्रीसनाइ सब हाल प्रकासा  
कह बिंरिच सुनु शक्र सुजाना ॥ रावरा हैं तप बल बलवाना  
तेहि ते तुम जनि करहु लगई ॥ गिरि खाहन मा जाहु पराई  
सुन सहित सुमिरहु करतारा ॥ बिन हरि को दुख मदन हारा  
सुषाबचन सुनत मन माने ॥ देवन ते तब आइ बरवनि  
सीख पुरंदर की लहिकाना ॥ सब हुन गिरवन कीन्ह पलाय  
जाय दशानन सैन समेता ॥ सोर्धास देवन केर निकिता  
जो मुर पुर धर मारग पावा ॥ तिनैं पकरि निज लंकहि आवा  
रावरा लंकहि गा सुनिकाना ॥ वसे अमर पुनि निज आना ॥  
मुर पुर बिबुध वसे सुनि पावै ॥ तब रवल दल ले आतुर धावै  
रहै सजग जब आवत जानै ॥ भागि जाहि मुर समर न ठानै  
एक दिवस अह मित अधिकार्ड ॥ सेत दीप में यहुं चा जाई

दो० युवतिन ते बोला बल कि कहां गये सुरवंक ॥

तिन्हें जीति संग्राम में तुम्हें जाहुं लै लंक ॥

सो० सुनि एक जेठ रिसाड ॥ पकरि पछारि उछारि नभ ॥



दीन्हिसि सिंधु बहाइ ॥ हैं अचेतनिकसा सुखल ॥  
 चौ पुनि धरि धीर हो कि भुज बीशा ॥ बलि दिग जाय नवा पद सीशा  
 दोष चन सुत आदर दयऊ ॥ कुशल बूझ तब बोलत भयऊ  
 तब प्रसाद सब आनंद होई ॥ मुर सन्मुख होइ सकत न कोई  
 तुम हैं निज शत्रुहि गहि लीजै ॥ चलि महि लोक राजनि कीजै  
 कह बलि कनक कसिप के भंडन ॥ पहिरि लेहु तुम सुत दुख संजन  
 लाग उठावन उठान कोई ॥ याही पौरुष तेजय होई ॥  
 जिनये अलख अंगन धरि ॥ ते भट गे एक छिन मा मारे ॥  
 तेहि ते भवन जाहु लो शाना ॥ चला तुरत मन माहि लजाना  
 बावन दीख जात अभिमानी ॥ लीन धराइ सि मुनिके पानी  
 मारत लात जात गरि आवत ॥ निज द्वारे फिरे देख आवत ॥  
 दीन देखि प्रभु दीन छुड़ाई ॥ पंथा पुर तब गरजा आई ॥  
 प्रथमै बालि बहुत मनुभावा ॥ सुनेसि न तब गहि बगल चपरा  
 संध्या करि धर बांधिसि आवी ॥ हेरि दीन लखित मारानी  
 तब हरि पुरे खातट मयऊ ॥ सहस बाहु तहें क्रीडत रहेऊ  
 जल अस्थंभ किहिसि तेहि जाना ॥ पकारि पारिा हें शाले आवा  
 शिरनि दीप धरि नृत्य करावा ॥ मुनि पुलस्ति मुनि जाय छुड़ावा  
 लज्जित हें कुल गुरु दिग गयऊ ॥ निज बिरतांत सुनावन भयऊ  
 कह कवि नर हरि दिहे उबराई ॥ तेहि ते तुम बर बिजय न पाई  
 ता सुशोच चित धरहु न ताता ॥ सें जो कहों करहु सो बाता ॥  
 अब तुम निज उर शिव पद धरहु ॥ जय तप जाल भाल मख काहु  
 अभिमत बरु श्री कर ते लीजै ॥ विश्व सुख मकरि पुनि सुख कीजै  
 मुनि नुरे नै गा सिंधु समीपा ॥ लाग करन तप द्रवुज महीपा  
 बीस सहस्र वर्ष तप कीन्हा ॥ साल यज्ञ में पुनि मन दीन्हा  
 बरय पांच सत निज कर लीचा ॥ हुने शीश पाथक के बीचा ॥

यहि विधि मख कृत देखि पुराणी॥ कहि निमागुं बरु बिअनु हसि  
 मुनि बानी बोला दश भाला॥ अजर असर मोहिं करहु कृपा ला  
 कह शंकर सुनु बचन हमारे॥ विधि के अंक टरहिं नहिं टारे।  
 तेहि ते जात पकीन्हो भारी॥ तुव तन बल होई अधिकारी  
 शीस समधि दिह्यो तुम मोही॥ एक के कोटि देव में तोही।  
 शिव बर अचल पावु मन भावा॥ हरष सहित निज मन्दिर आवा  
 हरि गीतिका कुं० आवा भवन निज कटक साजि सु-  
 रेश पर धायत भयो। गय भागि हरि बैकुण्ठ तजि लखि क्षीर  
 दीध बलि दिग गयो॥ सोइ पहिरि भूषण सकल तन म-  
 न मारि कपि पति पुर ठह्यो। मिलि बालि जौरी मित्रता  
 मुनि सहस भुजहु सोइ कस्यो॥

मो० अमर नगनर याह। गंधर्व किन्नर वर मुता॥

जीति बैरसि परतहा। बचन लागे हाथ जे॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रन्थ आगर श्री रघुनाथ  
 दास राम सनेही कृत रावणोत्पत्ति अरु युद्ध विविजय पराजय बरी  
 ना नाम प्रथमोऽध्यायः ९॥

हो० मुगिरि राम सिय सन्त गुरु गणपतिरा सुख दानि॥

कहों बृहद सम्मत कछुक कोकिल काथ्य बखानि॥

चो० यहि विधि रावण विगत बियोगा॥ कोरे लाग सुर दुर्लभ भांगा  
 पल भंसे अरु मदिरा पावे॥ सन्तत सुर मुनि मनुज दुरखोवे  
 मय जोहि पति कृत रुचै नलेशा॥ जब तब कोरे नीति उपदेशा  
 सो शिष दश कंधे नहि भावे॥ नीच नीच ही कर्म सोहावे॥  
 एक दिवस नारद तहें आये॥ प्रथम दश मुख सभा सिधायि  
 दण्ड दोय ताकी रुचि गार्ड॥ पुनि मय जाधर ग-  
 करि अणाय सब विधि सन माने॥ आसन देवो जो मुदु बानी



देव देखि मोहिनि जपति कतनी ॥ संशे होत जात नहिं कसि  
 ताकर होई कोन हवाला ॥ त्रिकाल ज्ञा पुर कोंहों कृपा ला  
 बोले मुनि तप बल बिबुधारी ॥ करत और करिहें सुख सारी  
 पुनि सुर मुनि हित त्रिभुवन राई ॥ सूर्य वंश औ तरिहें साई ।  
 पितुनि देश करिहें बन पावन ॥ तिन की रविनि हरी तव सबन  
 लंकहि जब जगदम्बा आई ॥ तूल सरिस कपिलंक जगई  
 सेतु बांधि ऐहें प्रभु पारा ॥ कुटुम्ब सहित करिहें संहारा ॥  
 होय सुरवी सुर विप्र समाजू ॥ करिहें अभय विभीषण राजू  
 अस कहि कुंभ करणा दिग गयऊ ॥ मुनि भय जाउर प्रति दुख भयऊ  
 करि विचार मन राखि सिगोई ॥ हरि दुच्छा होई सो होई ॥  
 कुम्भ करणा तेहि ओसर जाया ॥ मुनिहिं देखि उरि वरदान वाया  
 कछु ही गुण भटपिताहि सुनाये ॥ पुनि मुनि वर विधि लोक सिधाये ।  
 कुम्भ करणा पुनि सोवत भयऊ ॥ यहि विधि कछु काल बलिगयऊ  
 विपुल पुत्र भेरावण केरे ॥ सब विद्या बल बुद्धि घनेरे ॥  
 बारिद नाद जेठ सुन ताका ॥ प्रथम जा सु सुभदन महं साका  
 सो जब बीस अब्द करि भयऊ ॥ तव तप करन हेत बन गयऊ  
 बरख सहस्र किहिसि तप भारी ॥ आय शक्ति तव गिरा उचारी  
 मांगु तात वर निज मन भावा ॥ मेघनाद अस बचन सुनावा  
 यान लोय सब साज समेता ॥ देहु एक मोहिं कृपानिकेता  
 जेहि पर चढ़ि करिमें मेदाना ॥ जीतहुं सकल बीर बलवाना  
 मुनि स्पंदन तब दीन्हों देवा ॥ बोली बचन जानि निजु सेवी  
 यहि रथ का तुम धर्यो छिपाई ॥ अति रता कठिन धीर जब आई  
 हो ॥ तब यहि पर आरुढ़ है जाय दुब्यो भयंकरा ॥  
 युगुल जाम करि युद्ध तहें जीतिहो सुभर अरार ॥  
 जो त्यागी ह्वा दशवरष नींद नारि अत आन ॥

सो सुत भारी तोहि जग अपर नमारी जन्म ॥

चौ० सुनि शिर नाइ सुदित गृह आवा ॥ ग्य दुरि धरि पुनि वनहि सिखा  
तय करि बर लीन्हि सि शिव तरे ॥ समर समय भय होय जनेरे ॥  
एव मस्तु कहिगे गिरिराई ॥ पुनि आवा गृह शोच विहाई ॥  
एक दिवस लै सुभद अपारा ॥ सुरपति के बन धनि सि सिकारा  
सुनि बासव अति बहुत रिमाना ॥ चढ़ि एगवत कीन पयाना ॥  
मेघ नाद लखि चाप चढ़ाई ॥ मोरे सरगज के बहु छाई ॥  
लागत सर बिद्रुम करि क्रोधा ॥ धावा पटल मोरे तहं योधा  
पुनि गज भयति धरनि तेहि गयऊ ॥ बारिद नाद तु राड गांहि लयऊ  
सुरपति मोरे बच घनेरे ॥ लागत मनहं कुसुम करि केरे ॥  
नाग सूं डितेहि छाडी नही ॥ लावा गांहि लंकहि पितु पाही  
देखि पगक्रम निज सुत केरा ॥ दशमुख के मुख भयो घनेरा  
बोली सकल बाजन बजवाये ॥ उत्सव करि बहरा लुटाये ॥  
लंकाहि गहरि बांधि साने काना ॥ आये जहं गवरा बलवाना  
हंसा रुद्र बिधातहि देखी ॥ दशमुख उर भाइ रथ विशेषी  
पुत्र सहित उरि नायो माया ॥ दर्शन दे मोहिं कियो सनाया  
अवसो कहौ आये जेहि हेता ॥ तब बोले अज कृपानिकेता  
बारिद नाद धन्य बल धामा ॥ अब ते इंद्र जीत भा नामा ॥  
अब्राहि देउ अमर पुर जाई ॥ अब तुम ते नहिं करी लराई ॥  
ब्रह्म वचन सुनि कहे आसुरी ॥ बचन नुम्हार सैं के को टारी ॥  
कहि सि जाउ सुरपति निज गेहू ॥ प्रभु प्रसाद कछु पुत्रहि देहू ॥  
तब विधि वारा शक्ति एक दयेऊ ॥ निरफल होवन अस कहि गयऊ  
सुनि घन नाद बहुत हरयाना ॥ नाग लोक बत किहि सि पयाना  
जहं बासुकी तहो चलि गयऊ ॥ देखि नगर अति गर्जत भयऊ  
सुनि धुनि अहि पति व्याल बंदारी ॥ आइ धरि लीन्हि नि बहं वारी



दोउ दिशितेशर कूटन लागे ॥ भीजं सकल रुधिर ते बागे ॥  
 जोरह दिन तहें भई लराई ॥ तब सब पन्नग गये पराई ॥  
 रहे अकेले अहि पति जाना ॥ राहिसि भयटिल घुदाम समान ॥  
 गुरतहि निज लंकहि लै गयऊ ॥ रावणा कहें दरशावन भयऊ ॥  
 पुनि लाजा निज मंदिर बीचा ॥ बांधे सिसे जसि राने नीचा ॥  
 बासुकि उर भई पीर अपारा ॥ तब फनीश अस बचन उचारा ॥  
 दंड चहौ सो हमसे लीजै ॥ जीवत मोहिं कैंडि अब दीजै ॥  
 कह धन नाद सुनहुं अहि नाहू ॥ कन्या दंड देहु धर जाहू ॥ ५ ॥  
 उगा राज तेहि जानि प्रचंडा ॥ देन कही निज दुहिता दंडा ॥  
 मुनि धन नाद कैंडित बंदयऊ ॥ हरष बासुकी के कहुं भयऊ ॥  
 लै आये निज लोकहि ताही ॥ दीनि सुलोचनि सुता विवाही ॥  
 अति सुन्दर धरनी जब पाई ॥ आवा तब लंकहि हर पाई ॥  
 मात पिता पद प्रीति नयावा ॥ पुनि पत्नी युत निज गृह आवा ॥  
 लाग करन सुख शाच बिहारी ॥ अपर सुनौ अब ताकर भाई ॥  
 अछै कुमार सधन बन गयऊ ॥ महा कंठिन तप साधन भयऊ ॥  
 सहस वर्ष बीते हर प्राये ॥ मांगु तात बर बचन सुनाये ॥  
 तब तेहि कहा सुनहुं भगवाना ॥ देहु मोहिं एक तीसरा वाना ॥  
 जेहि तेरा रिपु जीतहुं भारी ॥ दै कर सर अस कह्यो पुरारी ॥  
 यहि विशिखे लै धर सुत जाहू ॥ कपियक तजि जिति हो सब कहू ॥  
 मुनि समोद निज मंदिर आवा ॥ तेहि क्षणा भद्रा दरि सुत पावा ॥  
 बीस ब्याल युत मुनि विबुधारी ॥ राखन योग न मन सिबिचारी ॥  
 स्थाना नन ते कहे उबोलाई ॥ आवहु ग्राहि गाडि कहूं जाई ॥  
 दूत दाबि नै ऋत्य सिधावा ॥ पृथ्वी खोदि तो पितर आवा ॥  
 खुपति चरित करन हित आगे ॥ मरान सो बालक तेहिलगे ॥  
 खाइ सिखनि माटी एक मासा ॥ पुनि गानिकरि नीर नीध पासा ॥

तेहि लखिराहु जननि अनुरागी ॥ भवन लाइ निज पालन लगी  
 एक दिन तहाँ शुक्र बलि आये ॥ बेलि पुत्र कहों ग्रह पाये ॥  
 छाया ग्रहनि कह्यो तब गई ॥ जेहि विधि उदधि तीर ते लाई  
 दनुज पूज्य पुनि बचन उचारा ॥ यह है रावरा केर कुमारा ॥  
 आदिहि ते सब चरित सुनाये ॥ अहि रावरा धरि नाम सिधाये ॥  
 निज उत पति सुनी तेहि जवहीं ॥ कूदि परा सागर महें तबहीं ॥  
 निकसा तुरत बितल महें जाई ॥ तहाँ रहै अहि पुरी सो हाई ॥  
 सत्तारि योजन बसत ललामा ॥ चामी कर के प्रति मुहि धामा  
 दर्बी करत हैं रहै भुवारा ॥ सो बासुकी केर सग सारा ॥ ॥  
 नासु पुरी लखि कोतुं कनना ॥ पुनि गा जहं नित होत पुराना  
 तप प्रभाव तहें सुनि अधिकारि ॥ सपदि विपिनि पहुँचा हरि पाई  
 बन में लखी नदी एक बहई ॥ काम देना देवी तहें रहई ॥  
 सुधल समुझि तहें ध्यान लगावा ॥ संवत चौदा सहस बितावा  
 सब विधि देखि समाधि अडाली ॥ बरं ब्रूहि तब देवी बाली ॥  
 इष्ट बचन सुनि विविध कर जोरी ॥ माँगि सब करि विनय बहोरी  
 अमरन ते अधि की सुख करहूँ ॥ जीतहुँ तेहि जेहि के संग लखहुँ  
 दो० शेष महेश दिनेश सुर ईश अजीश अनन्त ॥

मरौं न काहु हाथ मैं होउँ निशाचर कन्त ॥

चौ० पितहि कीन्ह अपमान हमारा ॥ सोऊ मोहिँ याँचै एक बारा  
 सुनि देवी बाली सुनु ताना ॥ करि हौ तुम बहु विधिसुख गाता  
 जेता शेष समय दश ग्रीशा ॥ याची तोहिँ जोरि भुज बीशा  
 मारी तुम्हें न कोउ जग माही ॥ कपि एक मम बाचा बस नाही  
 तेहि प्रभु ते जनि कहै उ कुचाली ॥ तोनू अजर अमर कहि बाली  
 रहन लाग तह दनुज कुमारा ॥ अरारिान खग भूग नर अहारा  
 यह विधि बरष पाँच शन कीती ॥ तब खल करन लाग अनोती



विविध भेष धरि अहि पुर जाई ॥ अज गज हय खर डारहि खार्ई  
 एक दिवस दर्वी कर राजा ॥ धरन गये तेहि सहित सभा जा ।  
 अहि रावणा करि कठिन लराई ॥ दीन्हे सकल नगा विचलाई ।  
 तब दर्विक अनन्त यहं गथऊ ॥ सब कुतान्त सुनावन भयऊ  
 सुनि बोले करि शेष विचारा ॥ अहि रावणा तप बल अधिकारा  
 तेहि ते नहिं ऐहो वरि आई ॥ कन्या दे मिलि रह्यो जाई ॥  
 तब दर्विक बोल वाचा नाही ॥ दीन्ही विधिवत सुता बिवाही  
 कुन्दिनि नाम पाइ बर नारी ॥ हस्तिन ते तब गिरा उचारी ॥  
 अब सब होउ बिगत संदेह ॥ करि हों में कानन महं गेहू ।  
 अस कहि कामदना दिगगावा ॥ योजन नव कर नगर बसावा  
 असुरन सहित रहै तेहि माहीं ॥ करन लाग मुख सांगिन जाही  
 इन्हं चरित जवन में गावा ॥ आदि रमायन में सो पावा ।  
 जो रिपु कर प्रभाव कहै कोई ॥ सो तेहि घातक कर यश होई  
 तेहि ते राम लखणा हनुमत का ॥ बरन्यों बीर्जन असुरन कावर  
 यहि विधि सुत दशकंधर केरे ॥ भंय भूरि रिपु देवन केरे ॥  
 जो सब हिन के चरित सुनावों ॥ बाढ़ै कथा पार नहिं पावों ॥  
 औरों निकर निशाचर वीरा ॥ मेघनाद आदिक रणा धीरा ।  
 कुरु मुख खर मुख करि बानरा ॥ जंबुय भाल कुमुद कर वाहा ।  
 कुलिस दन्त स्वाना नन पापी ॥ अधम केतु सूकर मुख दापी  
 कुम्भनि कुम्भ अकम्पन मूरा ॥ केस प्रकेस महिष भव कूरा  
 कूट प्रहस्त समान न रोधी ॥ तारा बरबत अस्त भय दोषी  
 खर दूषणा विशिरा मति अंधा ॥ बक विराध अतिकाय कवधा  
 काल नेम सुबाहु मारीचा ॥ उर्ध्व केश मंजारा नीचा ॥  
 धूम्र केतु लवना सुर सारे ॥ एक एक जग जीनन हारे ।  
 इन सब के संयुत दशभाला ॥ करे लङ्का बसि राज विहाला ॥

इति श्री विश्वामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदासराव  
सनेही कृत मेघनाद अहिरावरा विजयवर्माने नाम द्वितीयोऽध्यायः २॥

दो० सुभिरामसिय सन्न गुरु गणपतिरा सुखदानि॥

ब्रह्म रमायण कहों कछु कोशल चरित बरानि॥

चौ० एक बार सँग लै कटकाई॥ विश्व विजय हित चला बजाई

फिरि आवा तीनों पुर माहीं॥ सन्मुख सभार कीन केहुं नाहीं॥

तब रावण मन कीन गुमाना॥ हस सस सुभट न जग में आना

तब सब योधा लिहि सिबोलाई॥ आदर करि निज दिग बेठाई॥

त्रिभुवन भेद लेन के हेता॥ बाटन लाग्यो देश निकेता॥

निश्चर अर्वि पचास संमता॥ काशमीर पठावा खर केता॥

सोरठ देश दृष्टानन गय ऊ॥ नव्वे अर्वि असुर सँग दय ऊ॥

मूक रेश करनाटक दीन्हा॥ खर्वि सवाउ असुर सँग कीन्हा

मंजारा मालवे पठावा॥ उभे अर्वि तम चरलै धावा॥॥

बक बकच निशिचरणा धीरा॥ खर्वि अढ़ाई सँग लै बीरा॥

मारवाड़ कर कानन बीचा॥ आय रहा अधमा धम नीचा॥

भेषा सन भट लै दश अर्वी॥ चला कलिङ्ग देश सह गर्वा॥

गेरा अर्वि असुर लै तारा॥ बङ्ग देश कहै मुदित सिधारा

बीस महस्र अस्थि भरवल यऊ॥ अरुणा मृत्तिका देश हि गय ऊ॥

अर्वि ऊर्द्ध कच नर भरव पाई॥ मगह देश आवा हर पाई॥

चौदा अर्वि खुर्ज नख पाये॥ मुख बिरव लै गुजरात सिधाये

असित कोटि योड़ शकल लीन्हो॥ आरब देश पया ना कीन्हो

अयुत कोटि भट लै मारीचा॥ सँग सुवाहु ताड़ का नीचा॥

गाधिपुरी दिग कानन भभी॥ रहे आय तहें खल अघकारी

लक्ष अठारह सहस्र क्रियासी॥ लवना सुर लै खलवल रासी

घन बन कोलपुरी के पास॥ हर्ष सहिन तहें कीन्हो वासा



मनु सहस्रले भट बलवाना ॥ दराडक बन इन कोन पयाजा  
हो ॥ प्रथमै खरदूयन उभै तीसरविशिरा वीर ॥

चौथविराध कवध काहि पंचम सबसाधीन ॥

चौ ॥ शतशतयोजनबनबिलगई ॥ रहे कटकले पाँचौं आई ॥  
यहि विधि सकल देश दृशरीया ॥ दीन्हें बौदि प्रथम सजनीया  
जहैं तहैं विविध भेष धरि चरही ॥ हिंसा करत न नेक दुडरही  
कोनि उ बात कतहें लखि पावैं ॥ तुरत आई रावरो सुनावैं ॥  
भुजबल विश्व स्ववस करि माखा ॥ सुभट स्वतंत्र न एक दु राखा  
मराडलीक पति पाय प्रकाश ॥ कीन्हिसि सकल देवनिजदासा  
आयसु जाहि दिहिसि करि जोई ॥ सन्तत समय भजै तेहि सोई  
साहर वेद बिरोचि सुनावैं ॥ दरशन देन पुरांतक आवैं ॥  
यम प्रतिहार पाक भख करई ॥ सक्रा पयद छत्र शशि धरई  
भारू दार पवन बल रासी ॥ महा मृत्यु धोवत पग दासी  
बरुणा कुंवर नाग नर देवा ॥ आई कौं सब ग्रहि विधि सेवा  
एक बार केलाशो गयऊ ॥ सुसन समान सुकर धरिलयऊ  
अनहुं जोखि भुजबल थलराखी ॥ आवा भवन गवन अभिलाखी  
ग्रहि प्रकार बीते बहु काला ॥ एक दिवस कर सुनहुं हवाला  
घननादादि रहैं जे वीरा ॥ तिन्हें बोलि बोला राखी धीरा ॥  
सुनो रहैं मुर शत्रु हमारे ॥ तेतौ भेसव विवस बिचारे ॥ ॥  
बिष्णु बिबुध दिशि वारक वारा ॥ आयै तहें भैं भुष्टिक मारा ॥  
शत योजन पर गरुड़ समेता ॥ गिरि जाइ फिरि फिरि नरेबता  
सुख सहाय बिन सन्मुख तेऊ ॥ कब तक रहि हैं दुरे दुरेवऊ ॥  
अब एक बचा रहत भगवाना ॥ जाहि जपत मुनि सन्त मुजाना  
सोन परत कहें दृष्टि हमारी ॥ तेहि जीतन हित बात विचारी  
साधुन बस सो रहैं श्रुति गावैं ॥ जोवैं अर्पत सोवो पावैं ॥

नहि ते सन्त सतायो जाई ॥ जप तप करन न पावैं भाई ॥  
 जब हें हें यहि बलते हीना ॥ तब तेउ मिलिहैं आइ अधीना  
 तब मरिहों की कूड़िहों देखी ॥ कीन चही रिपु सुवस विशेषी  
 मुनि धाये जहें तहें तम चारी ॥ लागे करन उपद्रव भारी ॥  
 योग यज्ञ कोइ करन न पावैं ॥ विप्र धेनु जन धरि धरि खावैं  
 हरि हर घर पुर देहिं जराई ॥ श्रुति पुराणा कोइ सके नगाई  
 जो जग दान पुराय परकासे ॥ पकरि ताहि खल बहु विधि शोसे  
 जेहि विधि होइ धर्म के हानी ॥ सोई कहैं अह निशि अभिमानी  
 बाढ़े पतित पाप समु द्वाई ॥ तब नौ अवनि उठी अकुलाई  
 धेनु धाम धरि गइ विधि लोका ॥ कहत भई निज बिपति शोका  
 धीरज दे अज कह्यो बुभाई ॥ यामें कछु नहिं मेरि बिभाई  
 तेहि ते सकल देव एक बेरी ॥ करहु सप्रेम बिनै प्रभु केरी ॥  
 दीन दयाल दीन जन जानी ॥ करव कृपा मिलि अस्तुति यानी  
 जय जय जय जग पति सुखकारी ॥ जय जय करुणा सिंधु मुरारी  
 जय जय माया रहित अनन्ता ॥ जय जय दुराधर्य भगवन्ता ॥  
 जय जय अविगत अलख अनूपा ॥ जय जय सतचित आनंद रूपा  
 जय जय वेद भूमि उद्धरता ॥ जय जय बिबुध संत हितकरता  
 जय जय सृष्टि उपावन हारे ॥ जय प्रभु संकट हरी हमारे ॥  
 रावणा असुर देत दुख भारी ॥ पाहि नाथ हम शरणा तुम्हारी  
 इमि अमरन जय विनय सुनारि ॥ गई गिरा तब गगन सोहाई  
 दो० अब सब निर भय होउ सुर भूसुर सत सुभाय ॥  
 तुम्हारे हित कोशल पुरी धरिहों नरतन माय ॥  
 वौ शिल्या दशरथ भवन लै स्वकुन्द अवतार ॥  
 करि तहें बाल चरित पुनि मरिहों शत्रु तुम्हारा ॥  
 चौ० मुनि नभ गिरा सकल सुख दाता ॥ हरे हरि मुनि सहित विवाता ॥



तब ब्रह्मा देवन ते भाखा ॥ अब सब होउ जाइ मृग साखा  
 हरि हित सदल बिबिध हरषाई ॥ धरत भये कपिन पुजग आई  
 जो अवतार सबन के कहैं ॥ बाढ़े ग्रंथ पार नहिं लहैं ॥  
 रहे पूरि महिं गिरिबन नाना ॥ प्रभु मारग चितवैं बलवाना ॥  
 यह सब चरित सुना बिबुधारी ॥ जनमत ही हत करव बिचारी  
 बसन सकल मम बस बिबंसी ॥ तेका सकि हैं मोहिं बिधंसी ॥  
 तद्यपि सजग रहे का हानी ॥ दिये असुर करि ककुत है थानी  
 उत्पति मरणा आदि कहु हेई ॥ कर समेत पहुँचावें सौई ॥  
 भये दलीप भूपजव आई ॥ जानि असुर सब दिये उदाई ॥  
 सुनि रावणा बल देखन आवा ॥ द्विज लखि सब रानिन बैठावा  
 पूजत पद प्रगटिनि निज रूपा ॥ भागी भवन भीरु मनि भूषा ॥  
 तब रावणा सरयू तट आयौ ॥ अर्चत तंदुल नृपति चलायौ  
 पूँछा लोगन ते तब कहेऊ ॥ धेनुहिं हरि एक मारन चहेऊ ॥  
 मुमिरत सपदि सालिहों पेर ॥ सत सरहैं लोग हरि केरे ॥  
 सुनि दसमुख मन अचरज आवा ॥ देखा जाय मृतकवन पावा  
 समुझि प्रताप गयो निज धामा ॥ नृपते हाल कहा नृप बाआ  
 दो० रावणा कृत सुनि अवध पति चंगुल भरि जल लीन ॥  
 पवन मंत्र पढ़ि क्रोध युत दक्षिणा दिशित जिदीन ॥  
 भये विशिख दश लाख लखि कह नृपलंक हिजाडु ॥  
 सहित त्रिकूट समुद्र महें बोरि फिरहुं तेहि नाहु ॥  
 सो० चले पवन गति मोरि ॥ जाते उलटावन लगे ॥  
 मय तनया कर जोरि ॥ दीनि दोहाई नृपति की ॥  
 दूहों नकोउ नृप आई ॥ सुनि आयि महिपाल दिग ॥  
 अकनि कह्यो गुरु पादि ॥ नृपति रह्यो नृपार अग ॥  
 चौ० रमि दश सहस्र वर्ष चलि गयऊ ॥ राघु राजा नव पर्यो दवज

मारुत बान बहून गृह लागे ॥ बनिता बिने बचन सुनित्योगे  
बहुरि भये अज अवनि पकानन ॥ माँफ देरिवरारा रचो दशानन  
अनिल अस्य ते कटक समेता ॥ दीनताहि पहुँचाइ निकेता  
तेज बान लखि रहा चुपाई ॥ तेहि पाछे भे दशरथ राई ।

दो० दश सहस्र रविकर लखे दशो दिशारथ जाहि ॥  
दश शिर रिपु प्रगटे सुवन कहिये दशरथ ताहि ॥  
सुनि रावणा निज दूत मुख माँगि पठायो दंड ॥  
हरि सर पेरे भूप कहि जडो कपाट प्रचंड ॥

चो० जो रावणा पटलेइ उघारी ॥ तौ हम करु देई बिन गारी ॥  
मन्दिर द्वार गये सब सैदी ॥ रहा उघारि असुर पति खूँदी  
दस करो पटन भटन मुख मोरी ॥ मिली मार्ग मय जाकर जोरे  
तब रावणा नभ बात बिचारी ॥ विपिनि जाइ कीन्हि सितप भारी  
वरं ब्रूहि ब्रह्मा जब भाया ॥ बोला तब दश मुख अभिलाषा  
दशरथ नृप बीरजते सोई ॥ जग में पुत्रन प्रगटे कोई ॥  
सुनि सृष्टा मन में दुख माना ॥ एव मस्तु कहि कीन पयाना  
तब दश मुख कोशल पुर गयऊ ॥ कोशिल्ये हरि लावत भयऊ  
सहित मजूषा सागर जाई ॥ राघो मच्छु दिहिसि सौं पाई  
चतुर्गनन धरि रावणा रूपा ॥ लाये माँगि सुता सोइ भूषा ।  
वन में धरि विधिगे निज लोका ॥ तहें सुमंत्र पट खोलि बिलोका  
कन्या ते बोले मृदु बानी ॥ तुम हो किनकी सुता सयानी  
तब कोशिल्या गिरा उचारी ॥ हम हैं कोशल राज कुमारी  
नहिं जाना को वन में लावा ॥ सुनि सुमंत्र तुरतै उठ बावा  
ले आये कोशल पुर तामा ॥ रोदन होत रहे नृप धामा ॥  
जाय मजूषा भूपहि दीन्हा ॥ जेहि विधि मिला सो बरान कीन्हा  
बोले नृप तुम को हो ताता ॥ कह सुमंत्र सुनिये प्रभु वाता



अथ पुनः नृप इत्यारब्धनाम् ॥ धर्म धुरंधर सब गुण धामा  
बल निधिले निधिरसु सुलक्षणा ॥ तामुराचिव ह्यसहस्रमहीष  
मुनि राजा बोला कहि धन्या ॥ तव नृपका बरिहों मैं कन्या  
तुरते नाऊ विप्र पगवादा ॥ नृपके टीका आइ चढ़ावा ।  
चली बरात विपुल नरनाहा ॥ बड़ी धूम ते भयो विवाहा ॥  
बिदा कराइ फिरे जब धामा ॥ मग खादि रोकेयो मुनि नामा  
को शिल्ले पल मुनि थल राख्यो ॥ शिव वरदान अभय पुर भाख्यो  
आपु समर करि असुर बिडाख्यो ॥ देखि बिजे सुरजयति उचार्यो

दो० तहें बिरधासन सुत सुता नाम सागरा आनि ॥

दीन्ही व्याहि सुमंत्र कहें सुभगगर्ग कुलजानि ॥

चो० दीन्हो दायज विविध प्रकारा ॥ भय मुदित मुनि सहित भुवाए  
पुनिहे बिदा निले निज आये ॥ बहु विधि दान याचकन पाये  
तव के कई सुमित्रा परनी ॥ तिन पाहु व्याही बहु धरनी  
करहि सदा सेवा सब रानी ॥ पालें भूप प्रजहि सन मानी  
नव सहस्र सव्वंत चलि गयऊ ॥ तव नृपके मन बिसोये भयऊ  
त्रेपन गे चौधो अब जाता ॥ हमें पुत्र नहिं दीन विधाना  
बिन बालक मुख कौने काजा ॥ सकल जानि दुख केर सभाजा  
जल बिन सरजिमि गृह बिन दीया ॥ तिमि बिन अंग जलिन महीष  
यहि विधि करि बिचार मग भाही ॥ आये चलि बशिशु के माही  
माता पिता गुरु बड़ भाई ॥ साधुन के ढिगा आपुइ जाई ।  
चरगा नाइ सिर आयसु पांसी ॥ निज कामना कही अनुरागी ।  
दुख मुख मंत्र ओषधी दाना ॥ सुहृद बिना नहिं करिय बराना

दो० मुनि बशिशु बोले मुदिन भूप धरु मनधीर ।

हैं हैं तुम्हरे चारि सुत गुण सागर बर वीर ।

चो० अब तुम सुत विभांड के जावो ॥ अंगी रखेइहों लें आपो

हैं नृप निकट प्राग में आयि ॥ लोम पाद मख हेत बोलाये ।  
 पढे अप्सरा कानन माहीं ॥ छल करि सोलाई नृप पाहीं ।  
 रहे अदृष्टि तासु के देशा ॥ मख कराइ मे सुखी नरेशा ॥  
 ऋषिहि आप डर जहि बिधि चाही ॥ दीन्ही शांता सुता विवाही ।  
 सुनते नृप निज मंदिर आयि ॥ हय गय बाहन बिपुल सजाये  
 रहों सात से साठिउ रानी ॥ द्वादश तीनि तायफा जानी ॥  
 मंत्री मित्र सेन अब गाहा ॥ सब के सहित चले नर नाहा ।  
 पुर बाहर निकसे नृप जैसे ॥ लगि होन सगुणा तहें ऐसे ।  
 देखि नकुल निडर दीधिमहा ॥ विप्र तिलक युत गो सहवहा  
 पूरा घट पट पीत निहारा ॥ बाये मधुप करत गुंजारा ॥  
 दीप अन्न गरि का कल गाना ॥ औ हाती त्रिय खाये पाना ।  
 नारि ससुवन फूल फल देखे ॥ दहिने पग बग ठाढ़े पेखे ॥  
 चील खान मुख भस्म समेता ॥ श्रुति धुनि आनंद होत निकेता  
 दहिने मृग मिल तीतुर कागा ॥ सारस मोर सार भल लागा  
 खंजन उत्तर दक्षिणा प्राची ॥ बाये दिशि खर जंबुक राची  
 मन महें हर्ष चलत पर होई ॥ तोहि सम सगुन और नहि कोई  
 हरि उत्पति कर कारणा पाई ॥ मानहुं सौच भये सब आई ।  
 यहि बिधि दशरथ प्रागहि आयि ॥ लोम पाद मुनिलेन सिधाये  
 लाये निज मंदिर सन मानी ॥ तब नृप नृपते बात बखानी  
 लोम पाद मुनि अति मुख पावा ॥ श्रंगी ऋषिते जाइ जनावा  
 तुम्हें लेन आयि अवधेशा ॥ जाहु नाथ अब इन के देशा ॥  
 राम जन्म कर आगम जानी ॥ भूप संग चलि भे मुनि जानी ॥  
 अवध नगर आयि ऋषि नाथा ॥ पुर बासी मुनि भये सनाथा ।  
 सरयू तट तहें भा मख साजा ॥ जुर बिपुल बोरान स राजा ।  
 गार्गिका छं नृप सारयू के तट कियो ॥ आरम्भ जव मख



केरजू। सुनिरत्ननाभा भौति हयगय भूपलाये ठेरजू। तहै लिखि अम  
 गित हेम घट द्विज भरे उदक ललामजू। यज्ञान्त के अखान कारक  
 महा मंगल धामजू॥ अरु श्रोत्राधन को सुख देन्है। श्रोत्र धीश  
 पगड़जू। विधि विशु श्रौसलिलेश सिद्धी शंभुगन सुख पाइजू।  
 दिसि पूर्व पश्चिम और दक्षिण सिंध को बर बारिजू॥ नवरत्न  
 रत्नचित सुकुंभ प्राये भरे सहस नभारिजू। धन दियो धनद प-  
 दाइ बहु रहै यद्यपि इत कम नाहिंजू॥ अमोरा पदये देवता स-  
 ब गुप्तरक्षक ताहिजू। अति अद्वि में महिपाल शोभित भ-  
 यो बरुणा समानजू॥ जब तब यथोचित कर्म कृत किय  
 गुर निदेश प्रमानजू। महिदेव भोजन रत्नदान सुंदर आहु-  
 ति पर्मजू। यजि त्रिपित कीन्है। सुगन कहै सब भौति सो-  
 सह धर्मजू॥ सुर विप्र आदिक बरुणा चारों भेर मोद लला-  
 मजू। बसु अन्नदान महान आहुति पाइ के अभिरामजू॥  
 ऋषि नारदादिक वेद विद बहु लसत बेदी पासजू। ल-  
 खि पूर्ण मखदिन अग्नि की नृप करी बिनय प्रकाशजू। जय  
 यज्ञ यति तुम देवतन के बदनहौ। अभिरामजू। तुम करत चा-  
 बन जगत ताति अहे पावक नामजू॥ हो बहत हव्य सु कहत ता-  
 ते हव्य बाह समर्थजू॥ पुनि जात बेदस नाम याते भये बेदस  
 दर्थजू॥ हरि चित्र भानु सुरेश अनलहि रत्नरेता रामजू। हो  
 स्वर्ग के तुम द्वार दाता ज्वलन सिरिब सुख धामजू॥ विंशेश  
 बिस्वा नरपुंगव सुभूरिते जस सर्वजू। सुकुमार सुभगवान  
 रुद्र हिरण्य गर्भ अखर्बजू॥ ऋषि विप्र देवत दनुज के तुम य-  
 ज कारक आमजू। जग धूम केतु अहेतु है तब पाप ना-  
 शाक नामजू॥ हे सारभुक तुम देहु हमका सुमन बाँधित फल  
 जू। कैरें होम जो मंत्र पढ़ि यह होय तो कर भलजू॥

दो० शृंगी अरुधितव प्रीति ते दीन्ही प्राहुनि सार॥  
 प्रगटे पावक तेज निधि लीन्हे हवि कर धार॥  
 चौ० बोलै रवि नृप हबि सह लीजै॥ यथायोग निज रनिन दीजै  
 हें हैं बालक चारि अनूपा॥ जो प्रथमै बरणी अरुधि भूपा ।  
 अस कहि भे मुक अंतर ध्याना॥ सुनि समाज सकलौ सुख माना  
 तब नृप लीन्हों बोलि विचित्रा॥ कौशिल्या के कई सुमित्रा ।  
 गुरु वशिष्ठ हवि बाट बताये॥ चारि भाग भूपाल लगाये ।  
 उभे दीन कौशिल्ये तहियों॥ तीसर भाग के कई कहियों ॥  
 चौथ भाग के युगुल बनाये॥ कौशिल्या के कई गहाये ॥  
 तिन मन मुदित सुमित्रहि दीन्हे॥ निज भाग पाइ सोइ लीन्हे  
 यहि विधि रूप शील गुण खानी॥ भई गरभ संयुत तिहु रानी ।  
 दिन दिन तेज बढ़त तन जाई॥ मनहुं उगे विधु मंदिर आई ।  
 सुख समेत कहु काल बितावा॥ राम जन्म कर अवसर आवा  
 भे अनकूल सकल शुभ योगा॥ प्रमुदित विश्व चराचर लोगा  
 बन उपवन फूले तरु नाना॥ शीतल मंद चले यो माना ।  
 ब्रह्मादिक नभ चर नभ आई॥ बरधि सुमन दुंदुभी बजाई ।  
 गावहि गुण गंधर्व सरागा॥ अस्तुति करि हैं देव मुनि नागा  
 चैत शुक्ल शशिकर्क प्रमाना॥ नयन पुनर्वसु अभिजित जाना  
 मध्य दिवस विश्राम द जानी॥ प्रगटे तब त्रिभुवन सुख दानी  
 चौबोला कुं० चैत्र मास सित पक्ष कृपा कर बारजू॥ नौ-  
 मी दिन श्रीराम लीन अवतारजू॥ नील जलद तन श्याम-  
 काम हृदि कोटिजू॥ अरुन अलक बिच सुमन धरे जनुर खो-  
 दिजू॥ शीस मुकुट मणि जटित जग मगत जालजू॥ अति  
 में कुंडल लालिन तिलक दिह भालजू॥ कमल नयन नासि  
 का समेत बुलाकजू॥ जनु कवि कुज गुरु राहु बसे सु कहा



कजू। बिबाधर वर बदन रदन हमकें घने। भूकुटी कुटिल  
 कपोल गोल गह्वर बने। कंबु कंद कल वचन बिसद कौ-  
 स्तुभ लसे। उर मोनिन की माल मनहुं मन में वसे ॥ भुजग  
 भोग भुज दगाड चराड धनु सर लिहे। कटि निधग सब  
 अंग अलंकृत हैं किहे ॥ पर देहों पट पीत पिछोरी पा-  
 टकी सुगुल जर कसी जाम राम जनघाट की ॥ चरणा कम-  
 ल मुनि विमल जिन्हें निन ध्यावहीं। अंकुशादि बहु चिन्ह-  
 सदा मोहिं भावहीं ॥ देखि अलौकिक रूप भूप कोशल सु-  
 ता बोली जय जगदीश चरित तव अद्भुता ॥ बरणी न जानें  
 बेद भेद बिन खेद जू। प्रसात पाल सब काल कुटिल कृत  
 छेद जू ॥ जय अनन्त सुर सन्त कंत भगवन्त जू। जन मन  
 मानस हंस वंश विचरन्त जू ॥ कोटि कोटि बुद्धाराड रोम प्र-  
 ति जासु जू। सोमम जठर निवास बड़ी उपहास जू ॥ तब प्र-  
 भु पूरव केरि कथा सकलो कही। पुनि हैं बालक रूप लगे  
 रोदन सही ॥ सुनि नृप रानी सकल उरीं हर धाड़ कैं। कोशि-  
 ल्या पहें नुरत पहें चौ धाड़ कैं ॥ दीख सुवन सुख राशि स-  
 कल सौं दय की। कीन कृतारथ हमें कृपा मुनि बर्य्य की ॥  
 खबरि पाइ अवधेश परम आनंद लह्यो। बाजहिं  
 बाजन बोलि बजनि हमने कह्यो ॥ आप सुमंत्र म-  
 मेत गये चलि धाम को। शिशु मुख मुखद विलो किक  
 स्यो परनाम को ॥ पढये कुल गुरु बोलि सहित मुनि-  
 आयहू। त्रिमुवन पतिहि निहारि महासुख पायहू ॥  
 करि मज्जन महिपाल लीन कुस हाथ में। मुदित लगा-  
 यो तिलक द्विजन के माथ में ॥ नंदी मुख निज पितर पुजा  
 ये हित बरे। गुरजन द्विज पहिराइ पाँद सब के थरे ॥ गोग

ज हे रथ हेम रतन बाँछित दये । बहुरि बन्धु बर मित्र मा-  
 न मंडित भये ॥ मागध बंदी मृत जाहि जिन याँचहु सोइ  
 सोइ दीन्ह्यो ताहि नकोई बाँचहु ॥ विप्र बयस नृप शू-  
 द्र निधन बाधन मये । राम निछावरि लेन भिरवारी सब  
 भये ॥ नगर नारि नर वृंद बिलोकन धावहीं । सहज सिंहा-  
 र सवारी मनो जल जावहीं ॥ अंतह पुर धुर जाइ उतारि  
 रती । निरखि पुत्रको रूप सरथ विसार ती ॥ धन्य आजुको  
 दिवस धन्य अब की घरी । धनि रानी की कोरिब जहाँ ज-  
 न्य हरी ॥ धन्य हमारे भाग लाग फल फूल में । करें निछा-  
 वरि छोरि गहन अन फूल में ॥ पुरुषोत्तम परसाद चुके न-  
 हि नेक हैं । याचक हैं हू भूष गये बहुते कहें ॥ बाजें बाज-  
 न बिपुल अपारा नाचहीं । गावें गंधर्व गीत समय सुख  
 सोचहीं ॥ देव दुंदुभी देइ सुमन बरसावहीं । मृग मद कुं-  
 कुम सार अनीर उड़ावहीं ॥ बंदन बार पताक केतु सजवा-  
 यहु । गोपुर कलश सुरंग अधिक रुबि छायेहु ॥ बालक  
 वृद्ध जवान जहाँ तहें डोलहीं । सुर धरि मानुष रूप भूष ज-  
 य बोलहीं ॥ तोहि क्षण डाबर केर दादि एक आय हू । रा-  
 जहि सीस नवाइ सुबचन सुजाय हू ॥ सुनि रौरे कर सुयश  
 पेज हमहू करी । निज भूषन सब देहु रुकुम गेराधी ॥ चल-  
 त देखि बड़ पुत्र कह्यो अस देरि कै । दश दन्ती मम हेत  
 लया यो हेरि कै ॥ बोला मोहित तनय तुरग ते तीस जू-  
 लायेहु ममहित मांगि ग्राम गुरु बीस जू ॥ पाछे छोटा डिं-  
 व कह्यो डंड भरन को । लायहु महिषी मांगि बयालिस-  
 नरन को ॥ तब बोली माता सु ऐसही आय हू । ममहित  
 तरहु धान पालकी लाय हू ॥ पान दान पर धान टह लुई



लीनि जू। मुनि नृप हर्ष समेत सौज सब दीनि जू॥ यहि वि-  
धि दानी देखि दास रघुनाथ जू। लीनि भक्ति वर मा-  
गि लागि गे हाथ हू॥ जो यह संगल गावै सुनै सप्रीति स-  
वसे सो हरि पुर जाइ मिटै भव भीति जू॥

इति श्री विश्राम सागर सब मन आगर ग्रन्थ उजागर श्री रघुनाथ दास  
दास स्नेही कृत राम जन्म उत्तम वर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः ३॥

दो० मुमिरि राम सिख सन्त गुरु गंगाप गिरा मुख दानि॥

कहाँ भुशुरादी चरित कहु लोभ स भगिनि वखानि॥

राम जन्म के समय दो उल्लेख शोभा सुकरव ॥

बरगिा सँकै नहिँ शेष में कहा कहौ एक मुकरव ॥

चौ० जो यह नौमी रहे उपासा॥ सो नर वसे राम के पासा ॥

बेद पुराण कहत सब कोई॥ यहि सम बरत अपर नहिँ होई

जन्म स्थान दश जो करई॥ सो गर्व मुन पुर पाउँ न धरई।

जन्म भवन के उत्तर कोना॥ बीस धनुष पर महल सलोना

नाम पुत्र के कई जावा॥ दशमी के दिन परम सोहावा।

दशिया वार मुमित्रा धामा॥ तीस धनुष पर अति प्रभिराम

जन्म उभे सुवन तिन नामें॥ रुचिर दिवस हरि तिसरे जामें

घट तिल जब त्रे अंगुल होई॥ चतुरां गुल कर मुखिक सोई

बद मुखिक का दराड बखाना॥ अष्ट दराड का धनुष प्रमाना

केके भवन मुमित्रा केरे॥ भई भीर मग मिलत न हरे ॥

यहि अवसर मुह मंगल शोभा॥ कहि को सँकै देखि मन लोभा

दश स्यंदन उरभा मुख जैसा॥ बरगिा सँकै को जग में ऐसा

तिहि क्षण जो जन मागत जोई॥ ताहि दंत हंसि भूपति सोई।

देश देश के याचक आये॥ हय गय रत्न अनेकन पाये।

भये एक ते सब धन वाना॥ जहै नहै करै बड़ाई नाना।



अग्निप्रसन्न है देहिं प्रसीता ॥ जियैं सकल सुत कोटि बरी सा  
 अग्रध पुरी शाभा अधिकई ॥ जनु देखन बरसा अटलु आई  
 अगर धूम घन घटा समाता ॥ बाजन बाजन गरजत जाना ॥  
 बंदी गरा गुन बरगान मोरा ॥ भवन बेद धुनि हादुर सोरा ॥  
 बरबन सुमन देखंग भूरी ॥ कर्म मन कुंकुम कस्तूरी ॥  
 विविधि जीव नर संकुल रजें ॥ विपुल बिटप पृथा हरित विराजें  
 जहं तहें कलश दामिनी चमकें ॥ मंदिर मनिखद्योती दमकें  
 मुदित धेनु सुर नर मुनि धारी ॥ आक जवात असुर छय कली  
 सयति पाद्य बहुरि पुर लागी ॥ घोंचक पूरा भये तड़ागी ॥  
 बचन बहत सब जहं नहं डोलें ॥ भूल भूल जनु भींगुर बोलें  
 यह सब चरित जाय न बजाना ॥ जब उर बसै प्राय भगवाना  
 निज निज नगर देव मुनि भूले ॥ देखत फिरें वीथिकन फूले ॥  
 नाचहि चपल अपरा नाना ॥ हरय समेत देहिं नृप दाना ॥  
 रज्य जदिन पलना लै प्रावा ॥ बड़ई नेग सुदृच्छित पावा ॥  
 कज रोटा ले दीन लोहारा ॥ देखि भूप नग दये अपारा ॥  
 माला कार अग्रधरि डाली ॥ पाये जलज पार भरि माली ॥  
 नृप कर बाल सुबनिक मसाला ॥ मन भावत बर दीन भुवाला  
 यहि प्रकार ते सब पुर बासी ॥ पाइनि नेग दास अरु दासी  
 को तुक देखि भूलि रवि गयऊ ॥ यास एक कर बासर भयऊ  
 खबरि पाइ उर धरि नृप ढोटा ॥ विमन गये रवि पावत वोटा  
 अस्त भये रजनी तब आई ॥ बाजहिं घर घर अवध बधाई  
 गई रोशनी सब पुर साजी ॥ लागी छूटन आतस बाजी ॥  
 अरे कमल फलूं में भाड़ें ॥ मानहुं भये नदिन मनि आईं ॥  
 स्वांग अनेक बिदूर खक करहीं ॥ सब नर मगन बिलोकत फिरी  
 जासु उदर बस भवन अपारा ॥ सोवत सो प्रमुसूप मभारा ॥



सयनेहु जेहि मन खेद न होई ॥ कहों करि रोवत सोई ॥  
 पालत विश्व सकल सुख पावत ॥ कोशिल्यातेहि हीर पियावत ॥  
 महिमा जासु जान नहि जानी ॥ तिन्हें मोद ले बैठत रानी ॥  
 दो० जाहि महेश विरचि मुनि सुमिरत ध्यान लगाइ ॥  
 मिन के तन मित सर गरी तेल लगावत आइ ॥  
 चौ० सुनै शिवा सन्तन सुख दाई ॥ भक्ति बकुलता प्रभु दिखई ॥  
 यदि विधि यासर पै चरिताये ॥ छरवें दिवस छठी करवायो ॥  
 जाति बंधु नृप नेवति जेवाये ॥ भूसुर सकल दक्षिणा पाये ॥  
 हरिष महानेहो सुमुनि सारे ॥ प्रभुदित निज भवन सिधारे ॥  
 बरहें दिवस जो बरहों कीन्हा ॥ पुनि बहु सन द्विजन कहैं हीन्हा ॥  
 कछुक काल सुख सहित चितावा ॥ नाम करणा का भव सर आवा ॥  
 गुरु बशिष्ठ नृप बोलि पठाये ॥ विजयन सहित तहाँ चलि आये ॥  
 उदि नरेश सबहिन शिर लावा ॥ घोड़ शभाति पूजि सुख पावा ॥  
 लोक वेद विधि मुनिकरवाई ॥ शिशुन सहित तिहुं रानि बोलई ॥  
 आई नुरित सुवासिनि सङ्ग ॥ उमा रमा शारद धरि अङ्ग ॥  
 मिलि ललनन भा भई शरीका ॥ देखें बाल विनोद हरिका ॥  
 चारु चौक बैठीं सब रानी ॥ शोभा श्रील सुकन की खानी ॥  
 मोद मोद निधि बालक लीन्हें ॥ चित बत बड भागी मन हीन्हें ॥  
 रक्षा ऋचा ऋषिन उच्चारी ॥ गताप गौरि द्विज साधु पुरारी ॥  
 सब सब विधि पुजाइ अनुयोगे ॥ गरिगुशिनाम धरत मुनि लगे ॥  
 दो० जासु तेज चर अचर में व्यापक व्योम समान ॥  
 तासु राम अस नाम जो सुख सागर भगवान ॥  
 विश्व भारत सोइ भरत भनि भव भंजन गुण जासु ॥  
 जेहि सुमिरे रिपु होइ हत नाम शत्रु हन तासु ॥  
 सब लक्षणा युत होइ जो जानि जिय के कासु ॥

हमानुजप्रिय भूमि धरतस्य लघन असनाम ॥

ते बड भारी जीव जे करि हैं इनते प्रीनि ॥

ये हैं बिन अम सकल फल जे हैं जगरि पुजीति ॥

यहि विधि सुन्दर नाम सुनि हरयो सब निवास ॥

दीन दान सनमान निज गेमन मुदित निवास ॥

मो० पुनि कहु दिन में आइ। पहुँच्यो प्रासन अन्न कर ॥

सुनि पुर लोग लुगाइ। हरष सहित सब से कहें ॥

कं० सखि आजु श्री अवधेश सुत को अन्न प्रासन आहि

जू। चर चलहु चलि अवलोकिये चख चरुत चाहत काहि

जू॥ सुनि सकल साजि सिंगार आई अमित मुद मङ्गल ज-

हो। लखिल ललकि लीन्हो लाइ गनिन दीन आसन जस च-

हा ॥ बहु भौतिके भये सकल व्यञ्जन विविधि विधि मिष्टान-

जू। नृप जाति बंधु बोलाइ पठये परत पहुँचे कान जू॥ त-

ब कोशिला के के सुमित्रा सुवन निज निज उवटि कै। अन्ह-

वाइ तन पहिराइ भूषण बसन सुन्दर डुपटि कै ॥ पुनि कन-

क थार भराइ जाउरि धरी घृत मधु लाइ कै। महिया ललै नै

मुख जुठारत उठी युवतिन गाइ कै ॥ परकार बटरस केर ज-

हैं लौं सकल अधर छुवायहू। पुनि तनक जलते पोंछि

आनन जननि दिग पहुँचायहू ॥ हिय हरषि शिषु मुख चू-

मि सुन्दरि सकल दुल रावैं लगी। अन पार भै जेवनार नि-

ज रुचि सरस तहैं रहैं काखगी ॥ यहि भौति सुख दिन राति

भोगत धन्य पुर नर नारिजू। रघुनाथ कोशिल नाथ सुन

हवि नाम पर बलिहारजू ॥

दो० बरष गंठि पाछे भई गई दगाई बाढ़ि ॥

चिपन दीन्ही दर्वि बहु लीन्ही कीरनि गाढ़ि ॥



बारेहिते पतिभृत्यज्यौं रामलयरामके प्रीति ॥

भरत शत्रुहन की रहत तेही तरह की रीति ॥

चो० श्यामगौरजोरी दोउ देखी ॥ जननिजनक मुख लोहें विशेषी  
ले उछंग बहुविधि दुलारैं ॥ कृविबिलोकि नृणा तोरि बहोवैं  
रूपशीलनिधि चारों भाई ॥ तदपि रागशोभा अधिक आई ।  
मेचक मुदित कलेवर पीना ॥ पहिरे पीत मांगुली भीना ।  
उनमुख चिकुर चिक्कने सोहैं ॥ शिर चोतनी अमोलिक सोहैं ।  
ललित भालमसि बिंदु बिराजे ॥ भृगुटी कुटिल श्रवणा प्रतिभ्रंजे  
कठला कंठ बाघनख नीका ॥ नीरजनयन मयन शर सीका  
हूँ हूँ दसन कपोल अनूपा ॥ बिम्बाधर आनन द्विज भूपा ।  
चिबुक चारु नासिका सोहई ॥ लटकन की लटकनि सोहिं भाई  
पंकज पानि पहुंचि यों राजें ॥ नख दुतिलखि मुकता हल लजें  
उदर बाल बिभूषन पेशा ॥ नाभि गम्भीर उदर त्रै रेखा ॥  
कटि किंकिनी कुधरि डगडेलैं ॥ भुनु भुनु भुनु भुनु नूपुर बोलैं  
पद पाथीज जनिन तल जोहैं ॥ चारु चिन्ह अरतलिस सोहैं  
स्वस्तिक अष्ट कोन श्री केरा ॥ हल मूषाल पन्नग शरहेरा ।  
नभ नीरज रथ वज्र अघाता ॥ ऊर्ध्वरेख सुरतरु मुख दाता  
अंकुश ध्वज अरु मुकुट कुर्वला ॥ चक्र सिंहासन दाडन वीला  
चमर छत्र नरजक परुमाला ॥ दक्षिण पदये चिन्ह विशाला  
गोपद पूष्पी कुंभ यताका ॥ अम्बू फल अरधा चक्र वीका ॥  
दरघट कोन चिकोला गहारा ॥ जीव बिंदु मरयू सरि धारा ॥  
शक्ति मुधा खल त्रवली मीना ॥ पूरसा विधु वंशी वर वीना ।  
धनुष तूणा चंद्रिका मराला ॥ बायें पदये चिन्ह विशाला ।  
एक एक कर अमित प्रभावा ॥ महारसागरा में शिव गावा ॥  
सन्त सहाय करन के हेता ॥ दृढ़ करि धोर कृपा निकेता ॥ ॥



इन सब चिन्हन युन रसुराई ॥ बिबरत अजिरजननि मुखदाई  
 जानु यानि किलकतत है डोलै ॥ कलबलबचन मधुराहं गिबोलै  
 कहे मानु कब चारिहु भैया ॥ हमें बोलै हैं कहि कहि भैया ।  
 कब कर बाग धनु हियांगहि हैं ॥ कब चलि राग मभा में जै हैं ।  
 कब हुंक कर मोदक पकरावें ॥ जोगागें हैं मिताहि खवावें ।

दे० जासु शक्ति ते बग चर चलत रात हरि जात ॥  
 तासु पाणि गहि ओगुरी अजिर चलावत जात ॥  
 कलारूप धरि धरिया जि नली निरव समनाये ॥  
 मोइ चदि सकत न पलंग पर रहत देहरी बापि ॥

चौ० कबहुं कहैं सि नृप मोदें आवैं ॥ कबहुं कहैं किलकिमातु टिग जावैं  
 कबहुं कहैं परि पेलना में भेलैं ॥ कबहुं कहैं विधि दिखेलो ना खेलैं  
 जिन्हें काल सब काल है राई ॥ सो प्रभु होखे डेरत निज भांडै ।  
 जासु अजा ब्रह्म शिव चतुराजन ॥ नान्त मो प्रभु नाचत आंगन  
 दंपति प्रेम बिस भगवाना ॥ बल बिनोद करत विधि नाना  
 एक दिवस करि मानु विवेका ॥ असन सँवार भाँति अनेका ॥  
 द्रष्टु देव श्री रंग सभाया ॥ बसन ओढ़ करि भोग लगावा ॥  
 तेहि क्षण तहं शिशु पावत दख ॥ पेलनानिकट गई तहं पेल  
 पुनि दूत लखि पुनि उत लाखि पावा ॥ लोखिल्या के मन भ्रम डूपा  
 मातहि विकल जानि खुबीरा ॥ देख राख निज थूल शरीरा ॥  
 सोद गोपि कटि द्यु दारा ॥ कच कच प्रति इहाराड निहारा ॥  
 अगड अगड प्रति आनि विवाता ॥ अपर दिशु शिव सुरदिशि जात  
 अगिात गदि रागि सरित डूपा ॥ किल खग पशु नर मुनि नागा  
 पितर पिशाच निशाचर जातो ॥ काल कर्म गुणाना भाँती ॥  
 देखी भाया सबै नचावे ॥ लखी भक्ति जोतिन्हें छँडि वि ॥  
 देखे द्वीप उदीधत रुखंडा ॥ देखी अवधि सकल ब्रह्मंडा ॥



अंडकोस प्रतिष्ठापन रूपा ॥ देखा मोड़ शिशु चरित अनूपा  
 हाथ जोरि तब विनती ठानी ॥ जय प्रभु गुणातीत गुणा खानी  
 जगत पिता तुम अज भगवाना ॥ मेविन ज्ञान पुत्र करि माना ॥  
 मुनि विनती बोले रघु राई ॥ हमैं छुंड़ि केहि पूजन माई ॥ ॥  
 हम तब भक्ति विवसत वनीरा ॥ गड्डु भूलिल खिबाल शरीरा  
 तेहि ते मैं निज भूति देखवाई ॥ काहु ते जान दिख्यो बताई ॥  
 कोशिल्या तब बचन सुनाया ॥ अब मोहिं ज निव्यापे तब माया  
 एव मस्तु कहि पुनि भगवन्ता ॥ हे गे बालक रूप तुरन्ता ॥ ॥  
 देखि मातु फिरि क्षीर पिवावा ॥ ईश जानि अति प्रेम बढ़ावा ॥  
 कबहुं कलै पाँदे सुदि सेजा ॥ कबहुं कलै हिलगाइ करेजा ॥  
 कबहुं कलै नीद किन आवै ॥ हित करि मेरो लाल बोलौवे ॥  
 कबहुं कलै करि सब तन शृंगारा ॥ पढवैं जहाँ भूष दरबारा ॥ ॥  
 देखि नरेश लेहिं उर धारी ॥ चितवैं नर सब पलक बिसारी ॥  
 जो कोई निज निकट बोलौवे ॥ प्रीति परखि ताके दिग आवैं  
 मुनि जन ध्यान लगावत जाही ॥ पुरजन अछुत खेलावत नाही  
 सबे सुलभतिन का सबतीरा ॥ जिन पर कृपा करैं रघु वीरा ॥  
 एक दिन कागधु शूंडी तेरे ॥ किये चरित अति अडुन हरे ॥  
 कछु दिन में कन छेदन आवा ॥ हरयि सरिबन ते सरिबन जनावा  
 गीतिका छं० सरि आजु नृप सुत करहे कन छेदनो च-  
 लि देखिये। दम दान हरि गुणा गान जीवन जन्म कर फल ले-  
 रिये ॥ नवसात साजि शृंगार आइं ॥ प्रयन जहि रचना रची  
 चहुं भाइ करन गहाइ दीन्ह्यो माल पूरी गुर सची ॥ हरि हँस-  
 त बिहैं सत ब्रह्म खरिब धक धकी मातन के हिये। भरि देत रो-  
 चन सीकते श्रुति तीर धूरे करि लिये। अति चतुर लीन्हें छे-  
 दि शिष्ये उठे शिशु अकुलाइ कै। भरि नयन नीर जनी जन

निन लीन हृदय लगाइ के ॥ मणि बस्त्र मुक्ता करि निछा-  
वरि दीन महि देवन घने ॥ पहिराइ पुरजन सकल मानहुं भा-  
रति वपु बहु बने ॥ सुर अंग नामी अवध बासी सर सदा सी-  
के नहीं ॥ रघुनाथ उपमा देइ तब जव होइ त्रिभुवन में कहीं ॥

चौ० यहि प्रकार जब चारि उभाता ॥ बड़े मये परिजन सुख दाता  
चूड़ा कर्म आइ गुरु कीन्हा ॥ नृप बहु दान द्विजन कहं दीन्हा  
अनुज सरवा सब मिलि निज सेरे ॥ खेल्तहि खेल मही पन केरे ॥  
भूपर सोई जी मन आवे ॥ जब तब मातु बोलावन जावै ॥ ॥  
क्रीड़ा शक्त देखि सब भाई ॥ बोली तब कोशिल्या माई ॥  
अहो लाल हे लछि मन भैया ॥ भरत बत्स रिपु सूदन छेया ॥  
अब क्रीडा दिशि चित्त न दीजे ॥ दूर भई चलि भाजन कीजे ॥  
बैठ बाट बिलोकत राजा ॥ सुधित भयि सब सरवासमाजा ॥  
इमि मुनि प्रेम बचन चलि आवैं ॥ बैठि भूप दिग भाजन पावैं ॥  
कोने उदिन आवैं नहि टरे ॥ जननी धरन जात तब नरे ॥  
दो० मातहि आवत देखि प्रभु दुमुकुदुमुकु चलि देत ॥  
भूपटि कहत तब भूप यहैं लै आवत करि हेत ॥

चौ० सुभग शरीर सुरभिरज लही ॥ भारि सुअंचल ते अनुरागी  
लखि नृप निकट लिये बैठाई ॥ मिलि जेवत तब चारि उभाई  
इत उतचिते चलि पुनि भागी ॥ अरुणा अधर है सिजा उर लागी  
पुनि आवै जहं बालक सरि ॥ देखि मात पितु होहिं सुखारी ॥

दो० नृप रानिन कर भाग मुख संपति सुयश सुभाउ ॥  
मैं का बरौं ॥ एक मुख कहि न सकैं अहिराउ ॥

चौ० खेल्त देखि नारि पुर केरी ॥ जाइ भवन भजि आवैं फेरी ॥  
पुनि घर छूमि शरि बनंत कहई ॥ जे दोइ पविर परी मे रहई ॥  
जब ते में भूप नय निहारा ॥ तब ते रुचत न जग ओहारा ॥



असमनु होइ खेलावहि करहुँ ॥ दोहों न परि गुरुजन कहं उरहुँ ।  
 कबहुँ कनिकसि दुवारे आवैं ॥ लैं उकुंगपुरजन घर लावैं ॥  
 वदन चूमि करगारिब मिठाई ॥ रुखलखि महल देइ पहुँचाई  
 कबहुँ कचुनत विहंगलखि पावैं ॥ हाथ पसारि धरन तब धावैं ।  
 उड़ि जब जान करन मचलाई ॥ सुकशरिक देर खत माई ॥  
 इति श्रीविश्रामसागरसद मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीधुनाथदास ।

रामसेनहीकृत श्रीरामचन्द्रबाललीलावर्णनो नाम चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

श्लो० सुभिरिरामसि यमन्त गुरु गराय गिरा सुखदानी ॥

कहौं भुशुराडी के चरित कछु रघुवंश बरवानि ॥

चौ० यहिविधि बालचरित प्रभुकरहीं ॥ देखि कोण अश्रानंद भरहीं  
 एक दिन एक सलूका आवा ॥ नृप के द्वारे कीस नचावा ॥ ॥  
 देखि रामदानी मचलाई ॥ कहि कि मोहिं कपि देहु मंगाई  
 भूय मंगाई देन बहु लागे ॥ तदपि न लेत रुदत पुनि आगे  
 तब नृप भाष्यो गुरु ते जाई ॥ सुनि बशिशु बोले हरषाई ॥

दो० जहि हित रोवत रामजी सो मर कट है आन ॥

सुनो तासु उत्पत्ति में तुम ते कौणें बरवान ॥

चौ० उत्तर दिशि सुमेर गिरि भरी ॥ तहें केशरी रहत बन चारी  
 तासु परम पति बरता नारी ॥ नाम अंजनी कृवि अधिकारी  
 तेहि एक बार कीन शंखा ॥ दादी गिरि पर पवन निहारा ॥  
 बपु धरित न अपस्य श्री सुकीन्हा ॥ लखि मोचही आप कटु दीन्हा  
 बोले तवन भसुत मुनु प्यारी ॥ मम अस पशु सकल तनु धारी  
 तेहिते मोहिं आप जनि देहु ॥ हम बरदान देनु सो लेहु ॥ ॥  
 होई तुमरे सुत बलवाना ॥ राम भक्त गुण रूप निधाना  
 अपम कहि अनल प्ररक्षित भय ॥ सुख पुत कछु काल चलि आय ॥  
 कार्तिक वदी चतुर्दशिवारा ॥ शनि क दिन भा प्रगट कुंभारा ॥

लारव पितु मातु कीन उतसाहा ॥ लागे सुत सेवन जस चाहा  
 प्रातः परा रावि निरखि फलंगा ॥ प्रसत भयो फल सरिस पतंगा  
 अपटि बज्र मारा मुराई ॥ चिबुक मध्य तेहि मुरछा आई ॥  
 देखि पवन सुतलीन उठाई ॥ राखी रोकि समीर रिसाई ॥ ॥  
 चंद उदर सब देवन केर ॥ आयत ब आसुग के नेर ॥ ॥  
 करि विनती मुर सकल मुजाना ॥ लागे देन सुतहि बरदाना ॥  
 कह ब्रह्मा होई वजरंगी ॥ लगीन मम सरशक्ति अभंगी ॥  
 बोले बृहद जरी नहिं आगी ॥ इन्द्र कह्यो मम कुलिश नलागी  
 हा शूल यमदंड मुनावा ॥ बारि न बूडैं बरुणा बतावा ॥ ॥  
 गली शक्ति भक्ति लखि नेकी ॥ बचन मोर यहि सके न छुंकी ॥  
 दो० यहि विधि सब विबुध न दये वर बरदान निहोरि ॥

सुनि प्रसन्न भे स्वसनन ब कूटी पवन बहोरि ॥

चौ० शशादान देवन जब पाये ॥ महावीर कहि भवन सिधाये ॥  
 हने मान हनि दुःख तेनासा ॥ लागे रहन मातु पितु पासा ॥ ॥  
 जब नव जाई मुनिन के तीरा ॥ डारें फेरि क मंडल नीरा ॥ ॥  
 बिदय तारि गिरि सिखर दहावे ॥ बल अति भूरि अंग धुनि होवे  
 स्थिन आपन ब दीन बिचारी ॥ भूलि जाहु निज पोरुष भारी ॥  
 जब जब कोई सुरति करी ॥ तब फिरि तुम बल है आई ॥  
 रहे तहों ककुदिन हरि आसा ॥ पुनिगे पदन सहस गोपासा ॥  
 लागे पदन जोरि कर आगे ॥ करत मुरवागर उन्मुख भागे ॥  
 विद्या सकल पाइ अस भाषा ॥ संगो जे तुमरे अभिलाषा ॥  
 बोले रवि मम सुत सुजीवा ॥ रिक मूक पर रहत मदीवा ॥ ॥  
 तिनके तीर हो मुम जाई ॥ मिलि हैं नहों तुम्हे खुसाई ॥ ॥  
 गुरु अनुसासन मानि विधाना ॥ रहन भानु सुत के दिग ताता  
 राम लाल म बले तेहि हेता ॥ लेहु गंगा ताहि करि वेता ॥ ॥



तुरत भूषभट भूरि पराये ॥ सकल सुकंठ पास चलि आयें ॥  
 जो नृप कह्यो सो बरगान कीन्हा ॥ सुनि मुकंद तुरत कपि दीन्हा  
 लै आये मन्दिर हरयाई ॥ देखि राम उर लीन लगाई ॥ ॥  
 हनोमान के अति सुख भयऊ ॥ मिलि रघुरूप न हो होय गयऊ  
 जहं जहं खेलैं राम सुरंगा ॥ तहं तहं कपि शरने निज मंगा ॥

दो० एक दिन एक शिशु अंध को डारी रज प्रभु छिष्टि ॥

बोरहन देखु नाथ तेहि देख रागो देखे विधि ॥

चौ० एक दिवस एक बानिक आवा ॥ वेचन हित नग नृपहि देखवा  
 लै रघुनाथ रूप में डारा ॥ देखु वहै हंसि भूष उचारा ॥ ॥  
 तुरतै वृक्ष कूप ने जामा ॥ लगि लाल अभा लक तामा ॥  
 फल भरत पुनि लागत भारी ॥ लैलै जात सकल नर नारी ॥  
 सात दिवस भेलूटि विशेषी ॥ पुनि साबटन परा नहि देखी  
 यह लीलाल रवि भूपनि साहू ॥ बक्रित रह मन परम उछाह ॥  
 एक दिन एक बंधक चलि आवा ॥ अद्भुत पक्षी नृपहि देखवा  
 देखि राम लै दीन उडाई ॥ बोला खग सो देखु मंगाई ॥ ॥  
 सुनि प्रभुता सुपक्ष महि गाड़ा ॥ भातरु तुरत जबै जल डारा ॥

दो० लागत फल फूटन तुरत निकमत उड़न बिहंग ॥

बैठन महल नपर धरन धावन बालक संग ॥

पुर वामिन पाले सबनि देखि बिहंग अपनूप ॥

मुनि मुनि तहं लैलै गये देश देश के भूप ॥

बांधक दीन्ही दर्वि बहु भासवक सुख सोत ॥

यह प्रभुता कछु बहुत नहि इच्छाते जग होत ॥

चौ० यहि बिधि सा नु जगम सुशीला ॥ प्रादवग कीन्ही शिशु लोला  
 जब पौगंड भये सब भाई ॥ पढ़न हेत पढ़ये रघु राई ॥ ॥ ॥

गुरु पद जाइ नवाय शीशा ॥ लगि पढ़ावन सुदित मुनी प्रा ॥

पढ़त भये प्रथमे विन खेदा ॥ साम दाम अरु दंड बिभेदा ॥  
 मिलि जनेह कीजे सोइ सामा ॥ खान पान धन दीजे दामा ॥  
 भेद सो सब लाहि केरि मिलावै ॥ दंड मार दुख त्रास देखावै ॥  
 राजन के लक्षणाये जानौ ॥ तिन पाछे अस पदो बरवानौ ॥

दो० वरणा वेद उपवेद अंग आदि शास्त्र उपशास्त्र ॥

सकल पुराणों सांहिता तंत्र मुमंत्र कलास्त्र ॥

निकस्थो नहीं तबर्ग के अंत को प्रक्षर शुद्ध ॥

जान्यो तब रघुनाथ मुनि हैं गुण विशेष बिरुद्ध ॥

चौ० अचिर काल सब विद्या लान्यो ॥ बहु विधि गुरि दक्षिणा दीन्हो  
 भये मुदित मन पितु अरु माता ॥ खलन जाहिं जहां सब धाता ॥  
 देखि लोग सब होहिं सुखारी ॥ थकित बिलोकैं कुबिनर नारी  
 जोवन जेठर अपर जे बोर ॥ लीगहिं सबन प्रारा ते प्यारे ॥

मुदिन समुझि इक दिन नर नाहा ॥ दीन जनेऊ सहित उछाहा  
 नित्यानन्द निरोधि अपारा ॥ छिन छिन बादत अवध मंहा  
 पुर बासी सब ताके माहीं ॥ रहैं निमग्न सुगति कछु नाहीं ॥

नारदादि मुनि दिन प्रति आवैं ॥ चारु चरित बहि बहं दिशि आवैं  
 मुनि मुर सकल सराहिसि प्रेमा ॥ मुमन बदावैं हित निज प्रेमा ॥

दो० एक दिन ध्यान वशिष्ठ मुनि करत देखि अथि देवा ॥

कह्यो विघ्न करवाइ कै प्राट गोद किन लेव ॥

चौ० एक दिवस प्रभु सरयू माहीं ॥ अनुज सरवन युत मुदित रह्यो

असुर एक रावगा कर प्रेरा ॥ मगर रूप धरि भुरवं में गेरा ॥

निक से सपदिताहि हरि मारी ॥ मुनि पुरजन सब भयि सुखारी

जिन जिन के बालक तेहि खाय ॥ दीन्हें कादि मनहु धारि प्राये

मातन दीन्हें दात अपारा ॥ गुरु प्रसाद कल्याण हमारा ॥

इमि पोगराइ प्रवस्था माहीं ॥ किये चरित बहु बरिगान जाहीं ॥



पुनि सब बंधु भयें के शोरा ॥ रूपगशि पुरजन चित बोरा ॥  
 दिन जीति सरयू करि अमाना ॥ बहु बलि देइं दिन कहु दाता ॥  
 कबहुं क बहि निज नाउ मै भारा ॥ देखें दृग जास ध्यने वाता ॥  
 कबहुं क सानुज सरवा सुजाना ॥ देखें गेइं जाइ चोयाना ॥ ॥  
 कर कर कंदक धूमत कैसे ॥ हरि पद बिभुख जीव जग जैसे ॥  
 कबहुं क बहि बरवाजि नचावें ॥ पुर नामी लखि अति सुख पावें ॥  
 कबहुं क बहि दानें छोड़ दोरा ॥ धारि निज निज मोहें इक सोरा ॥  
 भारत संग जब बाजी लागे ॥ तब प्रभुक से रहै निज वागे ॥ ॥  
 कहैं सकल होर पुराई ॥ जीते भरत भावने भाई ॥ ॥ ॥  
 सुनिब कसत हय गय पद हीरा ॥ प्रमुदित होइ पाइ सब बीरा ॥  
 कबहुं क अनुज सरवन के साधा ॥ बिचहिं पुरधनुशरगहि दधा ॥  
 इक दिन इक मज्जन कृत नारी ॥ देखन लगी तासु मह नारी ॥  
 बोली बसन विना कोइ देखी ॥ को अस इन्हें छुंइ मोहिं पेरवी ॥  
 तै नृप तनै न प्रबै निहारे ॥ परे दृष्टि तेहि अंग हमारे ॥ ॥  
 कबहुं क जाइ अखारे न लरही ॥ अनुज सरवन युत कल कल करी ॥  
 कबहुं क राखि निशाना मोरें ॥ मज्जन करि पुनि पुह पगु धोरें ॥  
 देविद मातु अति शय सुख पावें ॥ नृप युत भोजन हेत बोलावें ॥  
**मंजु कं** ॥ जेवन बैठे भूप मोलि निज संग सुवन लै चारी जी ॥  
 सहित सनेह परस न लागीं लषन लाल मह नारी जी ॥ मोह  
 न भोग मखाने की हवि मधुर मलाई धारी जी ॥ खोबा खाँड़  
 खरिख खर जूरी खाजा खुरमा खारी जी ॥ माल पुवा माधुनि  
 मधु मिश्री मलि मारवन मै डारी जी ॥ पत्नी पूष पद परी पापर  
 पाक पिराक पनारी जी ॥ मोती चूर मूर के मोदक बोदक की  
 उजियारी जी ॥ सेमई सेव सें जना सूरन सोवा सरस सोहारी  
 जी ॥ उज्जल भातु भटाकर भरता भौति भौति तरकारी जी ॥

भूगसाव सरहटकी पाहती चनक कनक समदारीजी ॥ ब-  
 रीवरीक बराबहु विधि के ककरी कहु कटहारीजी ॥ पाकरे  
 कन्नी कन्नी मुनि तरुकी कूकांड कचनारीजी ॥ परवरपाइ  
 पत्तौरी पालक पंढासन रुचिकारीजी ॥ अरुई आब अंबेर-  
 ती अहरख अंधरा अमित अचारीजी ॥ मोटी रुचिर मिही मे-  
 दाकी धुतमें बोरि निकारीजी ॥ मेथी मारस सेमिदल सरसों  
 मोवा मुचि मुरवारीजी ॥ चोराइ तोराइ तो तोरई मुरइ मुख्वा  
 भारीजी ॥ डुम कौरी मुग छोरी रिकवछ इंड हर क्षीर छछारी  
 जी ॥ खट्टी कडी करेला कुंदरु केला फल फलहारीजी ॥  
 गरी बराभ छोहारा किशमिश पिस्ता हारव अपारीजी ॥ खिखसा  
 खीच बेड़ा धेवर धन गुञ्जा गुडि पारीजी ॥ फनी फूल निमोना  
 डिंडसा रूप रतालू ग्यारीजी ॥ जलित जलेव अंदरसा बुकुनू  
 दाध चटनी चटकारीजी ॥ यहि विधि चारि भांति खटस के व्यं  
 जन बिपुल संचारीजी ॥ कनक थार मनि जडित कटोरि भरि  
 भरि धरे अगारीजी ॥ पंचकवर करि जेवन लागे लखि हरबी  
 नृप नारीजी ॥ शीतल जल सरयू कर बासित पीवन बारहु बा-  
 रीजी ॥ कहत कौशल्या भोजन कीजे बहुरि नपीजे वारी-  
 जी ॥ गयन अघाड आइ अब हमते तनको टरत नदारी-  
 जी ॥ दश स्यंदन नन्दन मुखरुख लखि डे जति विचारीजी ॥  
 अनुग आइ अचवन करवायौ कर अंगु छाये भारीजी ॥  
 दीनतंबूल अगजा कुमकुम लीन्हों अबध बिहारीजी ॥ सीत प्र-  
 साद दास दासिनि मिलि पायों सरब पछारीजी ॥ जेहि जूठनिको  
 मुर मुनि तर मत पगमत कबहु नडारीजी ॥ मोई जन स-  
 रधुनाथ नाच धरि पावन बारहु वारीजी ॥ दिवदनुज नर नागराग युत ज-  
 न जगदाश अगारीजी ॥ जा जेवनाराम की गावेता मुख की बलि हीरानी ॥



तोटक कुं० कबहु बन जाइ सिकार नैं। मृग घासि-  
क साउज नाहि नैं॥ जब सूकर नाहर दृष्टि परैं। तुरतै नि-  
ज बाजिन तैं उतैरैं॥ लखि राम कहैं हथियार धरै। यहिते-  
अब एकहि एक लंरो॥ करि युद्ध पछारत जौन सरवा ते-  
हि देत इनाम श्रीराम लखा॥ निज धाम पटावत साउज-  
सो। धर आवत गावत राउज सो॥ राघुनाथ कहैं यहि भांति प्र-  
भू। नव नित चरित करैं बरभू॥

चौ० एक दिन एक सूकर बन आवा॥ घुर घुराई प्रभु सन्मुख धावा  
गहि पद पद को भूमि भुजासू॥ छूटत भयो दिव्य दपु तामू।  
अस्तु निकरि अस बचन उचारा॥ पूरव प्रभु में रह्यो भुवारा॥  
एक दिवस तब जन लखि पावा॥ बस अभिमान न शीश नवावा  
निन्दा करि निज मंदिर आयो॥ तेहि अपराध को लतनु पायो  
अवत बरश दूरि दुख भयऊ॥ अस कहि परम धाम कहंग पऊ  
एक दिन में नाहर ते भेटा॥ तेहि शर प्रभु पर कीन भये दा  
साधि वारा मारा रघु राया॥ तनु तजि सो हरि लोक सिधाया  
यहि विधि बन सिकार मिलि जारि॥ पावन करैं जीव रघु राई॥  
रवग भृग निरखि निकट चलि आवैं॥ तिन्हें न कबहुं भूलि मतवैं  
जे उल पात करैं गति हेता॥ तिन्हें देइ हति कृपा निकेला॥

दो० एक दिवस एक सिंह ने बधी विप्र की गाथ॥

गरजत डोलै पुर निकट कोई पास न जाय॥

चौ० सुनिरघु पतिक मि करि पर बांधा॥ धनुष चढ़ाई पानि सरसाया  
मुदित जाइ सन्मुख ललकारा॥ खल हो सजग तोहि में मारा  
इतना सुनि सन्मुख सोधावा॥ पंचवान मुख मारि गिरावा॥  
तुरत भयो सो गंधर्व रूपा॥ बिनती करि निज हाल निरूपा  
महाराज में गंधर्व अहऊं॥ इन्द्र सभा नित गावत रहऊं॥

एक दिवस नारद तहं आये ॥ नाथ चरित तव वरिण सुनाये  
तेहि समाज में हं स्यो ठढाई ॥ सुनि मुनि बोले बचन रिमाई  
दो० सिंह नाद सम करत सब होउ जाइ हरिहार ॥

भरि हैं निज कर राम जब नव होई उद्धार ॥

यहि तन पायों अमित दुख अब सब नाशे शोक ॥

अस कहि पद शिर नाइ कै जात भयउ निज लोक ॥

चौ० तब नृप यहं आयें घुराई ॥ तहां विप्र दाने मचलाई ॥

कहत सुरभि सोई मम दीजै ॥ भूपति भनत अपर बहु लीजै

तब राघो बोले सुनु ताता ॥ करि तरु बहु रिन लागे पाता ।

गई बीति बय पुनि कहं आवे ॥ समय चूकि फिरिका पछित वि

तेहि नेत जहु आस तेहि केरी ॥ अपर धेनु लीजै बहु तेरी ॥

तदापि न विप्र तजी हउ ताई ॥ देखा चहत राम प्रभु ताई ॥

तब प्रभु कहा लखन ते जावो ॥ विप्र समेत दूढ़ि गो लावो ॥

चढ़ि रथ गये प्रथम यम लोका ॥ लखि उर भाति न के सुख शोक

षोडश भांति पूजि सनमानी ॥ हाथ जोरि बोले मृदु बानी ॥

नाथ कोन हिन आयहु आजू ॥ आय सु होइ करिय सोइ काजू

बोले लखरा विप्र की गई ॥ दीजै आपनि होइ जो आई ॥

सो० सुनि बोले यम राय ॥ पांच कोस तक अवध में ॥

जो कोई सरि जाय ॥ सो नहि आवत धाम सम ॥

चौ० करम करत भल पोच घनै ॥ तिन कर न्याउ हाथ हरि केर

जैसे राज सभा कर कोई ॥ तेहि ते कहु भल अन भल होई

ता सुनि साफ करै सोइ राजा ॥ नाहि न कहु कोतवाल ते काज

सुनि रथ चढ़ि चलि भेतत काला ॥ जाइ बिलो के सकल पताल

पुनि चढ़ि सातों स्वर्ग दुंदुय ॥ तेहि पाछे बैकुण्ठ हि आयै ।

रहत जहां श्री पति भगवाना ॥ कीन दराउ वत तिन सनमाना



पूछे ते वरणा निज हेता ॥ तिन तब कहा जाउ साकेता ॥

जो जन कोटि पचास अगारा ॥ रहत राम इच्छा आधारा ॥

दो० जहां नपावक पवन पविचन्द्र सूर्य नहिं कोय ॥

रहत एक रस सर्व दाराति दिवसनहिं होय ॥

चौ० सुनिचलि भेदे रासो इजई ॥ बसत रतन मय छवि श्रीविकरि

चारि द्वार तेहि पुर के होरे ॥ बाजत बाजन भांति घनेरे ॥ ॥

उत्तर बसत महा बैकुण्ठा ॥ महा बिष्णु जहं रहत अकुरादा

बिरजा विमल बहत पुरतीरा ॥ मज्जत सन्त सकल प्रतिधीरा

ज्याति एक जहं जरत निराशा ॥ कोटि भानु सम तेज प्रकाशा

योगी जन जेहिं सादर ध्यावैं ॥ अन्त समय तेहि माहिं समावैं

पूरब द्वार जनक पुर सो है ॥ दक्षिण चित्रकूट मन मो है ॥

पश्चिम दिशि गोलोक नेहारा ॥ जहां करत गोपाल विहारा

षोडश संवत केरि अवस्था ॥ बपुछ बिलरि वने होन मस्था

पांहुं भूषण वसन अमोला ॥ भृदु सुसक्यानि मनोहर बोला

दो० पीत वसन बनमाल उर कर मुरली मुख पान ॥

परिकर सहित समूह सरिब सोहत शमि भगवान ॥

चौ० रहती हैं सुरभी तेहि माहीं ॥ पूछा जाइ लखन तिन पाहीं

बाह्य गाकी कपिला इत आई ॥ सुनि दीन्ही गिरधर न मंगाई

मुदित मध्य साकेतें आये ॥ मंदिर बिपुल बिचित्र सोहाये

जो रचना निरखी कहूं नाहीं ॥ सो सब देवी ताके माहीं ॥

दिव्य रूप सब तहो के बासी ॥ पट विकार बिन नित्य सुपासी

आगे सीतहि देख्यो जाई ॥ रूप अनूप अमित प्रभु ताई ॥

जासु अंश उपजे गुणगवानी ॥ अगागात लक्ष उमा बहानी

अगागात सरवी करें मुदि सेवा ॥ अगागात अलीलि हे कर मेवा

अगागात अनुग करें परनामा ॥ अगागात सन्त उचारहि नामा

आगशिखर शक्ती हरि गुण गावें ॥ तिन मानें तिस मुख्य कहावें ।  
 रोला कुं० श्री भू लोला क्रांति कृपा जोगाई शाना । उन्क-  
 स्ना मीयनी चंद्रिका कूर जाना ॥ पुन्या परी कला कीर्ति-  
 अहलादि नि क्रांता । भाविन्या शोभना लंबिनी विद्या साता  
 ईलानु ग्रहम होइ या उन्नती सुबिमला । छाता नंदनि शुभद  
 सत्य सोळा हित विमला ॥ ए शक्ती नेनी स सदा सिद्ध भूकुरी  
 दिशिल रिब । कों विश्व कर काज सवन के सहस सहस सरिषा ॥  
 चौ० इन सब हिन की कीर्तिकरणी ॥ महारमायन में शिव बरणी  
 सहित विप्रलक्षणा शिर नावा ॥ करि सनमान निकट बेठाया  
 प्रीतम के गुण पृच्छन लागी ॥ कहे सकल लक्ष्मणा अनुरागी  
 हाथ जोरि द्विज बृक्ष न भयऊ ॥ स्वामी कौन कहौ तब गयऊ ।  
 हमरे पति महि अवध मंभारा ॥ लीन जाइ नृप गृह अवतारा  
 कछु दिन में हम हूँ तहें आई ॥ जनक नगर प्रगटव अंगन आई  
 सुनि शोभन प्रति शोहरायाना ॥ रामें सकल लोक पति जाना  
 अब तुम जनि भर मो सब धामा ॥ मूंदो नैन जाहु निज ग्रामा ॥  
 नयन मूंदि देखें तहें नाहीं ॥ बैठे राज सभा के माहीं ॥ ॥  
 बोले राम धेनु निजु पाथी ॥ तब शोभन चरणान शिर नाथी  
 धन्य धन्य तुम धन्य नृपाला ॥ धन्य तुम्हारे चरित कृपाला  
 प्रथमे मैं तब सुना प्रभावा ॥ जइ मति मन बिश्वास न आवा  
 नाही ने ठान्यो हठ भारी ॥ देख्यो प्रभुता अमित तुम्हारी ॥  
 दो० तब समई शान ईश कोइ तब पुर सरिस न ग्राम ॥  
 तब चरित न सम चरित नहिं तब जु नाम सम नाम ॥  
 चौ० में प्रभु कीनि दीठता भारी ॥ सो क्षमिये जन जान अनारी  
 सुनि प्रभु हैं सिबहु विधि सनमाना ॥ तात करेहु जनि अनत बराना  
 भले नाथ कहि निज गृह गयऊ ॥ पुरवासी सब हरवत भयऊ



यहि विधि राम चरितनिकेता ॥ करत चरितभक्तनसुखहेता ॥  
 एक दिन सुर ऋषि आवत रहेऊ ॥ मग मिलिलोमससे अस कहै ॥  
 चलो आजु श्रीरामहि देखेवो ॥ जीवन जन्म सुफल करि लेखेवो ॥  
 मुनि मुनि कह्यो सहित अधिमाना ॥ धिरहे करौ ब्रह्मकरध्याना ॥  
 दो० यहि विधि आवत जात बहु विश्वविषे रघुनाइ ॥

इनते तो हमही भले अचल ब्रह्म रहे ध्याइ ॥

पर ब्रह्म श्रीराम हैं हरग अखिल दुखभार ॥

मुन्यो न जब तब देव ऋषि आये अवधमकार ॥

चौ० तेहि क्षण तहो रायकी माया ॥ व्यापी लोमसको यहि भाषा ॥

उभड़े सिंधु सकल दिशि तेरे ॥ बहे ऋषे परितिन के करे ॥

प्रथम प्रलय समबन्धो विचारा ॥ पारत आये प्रागमकारा ॥

लख्यो अछे बट मेहरि स्था ॥ कह्यो मोहिं राखे सुरभूषा ॥

बोले हरि राखन हित तुमका ॥ है न रामकी आज्ञा हमका ॥

इतने माहिं लहरिके साधा ॥ अपर अंड में गे ऋषि नाथा ॥

तहो अछे बट पर हरि पाई ॥ कह्यो कह्यो नहिं राम रजाई ॥

दो० इमि अगारान अंडन बिषे गेलखि गहोन कोइ ॥

यम जातना शरीर सुमपायो दुरव अति सोइ ॥

तब मुनि कह्यो कीरायको जिनकी आज्ञा नाहिं ॥

लीन्ह्यो जिनसा केत पति जन्म अवध पुर माहिं ॥

चौ० तिनकी जायबिने जब करिहो ॥ तब तुम दुरव सागर ते तरिहो ॥

नाम रूप अरु लीला धामा ॥ रहत नित्य ये होत नरवामा ॥

हमें न हूँ दे मिली कृपा ला ॥ लहरि संग पढ्यो तब काला ॥

जल आवरनु अवध चहु फेरा ॥ तंवू समतानो तहें हेरा ॥

पुरवासी सब सुखसों जहवों ॥ रहत चहत नहिं दुरव कस कहवों ॥

तब लोमस ऋषि रघुपति केरी ॥ कीन्हो बिने मांति बहु तेरी ॥

मुनिप्रभुसेवक ते बोलवायो ॥ रामहिं लखि मुनिशीसनवायो  
कह्यो नाथ विन कृपा तुम्हारी ॥ कोइ करतूतिन सँके उचारी ॥  
तुम सब नाथन केहो नाथा ॥ जीव दशा सब तुम्हरे हाथा ॥ ॥  
चहो मसक को ब्रह्म बनावो ॥ विधिहि मसक करि लोकप्रभावो

हो ॥ अस कहि लहि आनन्द मुनिगोने निज थल फेरि ॥

पंचस्यंसिर लखि कियो नारद को गुण हेरि ॥

सो ॥ राम मंच को पाइ ॥ आइ चरित रघुनाथ के ॥

बरसो तब ऋषिराइ ॥ अस प्रभाव श्रीराम को ॥

चौ ॥ एक दिन राम पतंग उड़ाई ॥ देव लोक सो पहुँची जाई ॥

तहँ हरि सुत जयंत की नारी ॥ अति बिचित्र तेहि चंगनिहारी

हो ॥ मन में किहि सिबिचार दुषि जा सुगुड़ी ॥ असि आहि ॥

सो पूर्य कस होइ धौं हँसि गहि लीन्हें सिताहि ॥

चौ ॥ तब प्रभु हनूमान ते भारवी ॥ देख्यो केहि पतंग गहि राखी

नुरत पवन सुत जाइ निहारी ॥ दिहु छुड़ि पुनि गिरा उचारी ॥

बोली जाय बड़ यह थाही ॥ दरशन ता सुकीन्ह हम चाही ॥

नाही ते या को हम गहिऊ ॥ आइ अनिल सुत प्रभु ते कहेंऊ ॥

मुनि हरि कहा कह्यो तुम जाई ॥ चित्रकूट महें देव देखारि ॥ ॥

हनूमान चलिता सों भाषा ॥ दिहि सि छुड़ि मन कर अभिलाषा

तब रघुनाथ रेंचि सो लीन्हो ॥ निशि गृह आइ वियारु कीन्हो

मति में पलंगा गयो बिछावा ॥ शीर फेनु समवसन सोहावा ॥

कीन शयन ता परंजग बाला ॥ प्रात जाय बोली दिग माता ॥

भोर भयें जागहु रघुराई ॥ मुख छुवि परजननी बलि जाई ॥

गविहि बिलोकि गयो तम भागी ॥ ज्ञान उदय जिमि मोह विरामी

शशिन स्रव भे मलिन सुभाये ॥ जिमि सब गुणा दालि द के आये

लागे लुकन निशाचर कैसे ॥ हरि सुमिराते पातक जैसे ॥ ॥



११०

उठ फूलि सरसिजर बिदेरी ॥ जैसे सुजन सुजन कहें पेखी ॥ ॥  
 तिन पर मधुप करत गुंजारी ॥ जनु तम वपु धरि शरणा पुकारा  
 बोलत बिहै गवि विधि विधि दे ॥ मानहु सुनि बहु गुणागरा तेरे ॥  
 प्रसु दित कोक कुमुद बिलखे ॥ हानि लाभ जिमि पाइ अयाने ॥  
 अनुज सरवा बोलत यहि भौंती ॥ जिमि चातु क चाहे जल स्वाती  
 बन्दी गरा विरदा वलि भाधें ॥ याचक द्वार खड़े अमि लाधें ॥  
 सुनत उठे तब अवध दिहारी ॥ देखि मातु आरती उत्तारी ॥ ॥  
 मित्र बंधु सेवक न पद बन्दे ॥ दान पाइ याचक आनन्दे ॥ ॥  
 पुनि सरयू नद जाइ नहाने ॥ सब विधि साधु विप्र मन माने ॥  
 जहं नहं सुनै कथा करि नेहा ॥ करि प्रणाम आवें पुनि गेहा  
 दो० एक बार रघुनाथ लै संग सुजन समुदाइ ॥

तीर्थाटक करि सबन को दीन्ही विशद बड़ाइ ॥

इति श्री विश्वामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम  
 सनेही कृत रामचरित्र बरीनी नाम पंचमोऽध्यायः ॥

दो० सुमिरि रामस्य सन्त गुरुगणपति रासुखदानि ॥  
 षट्जसंहिता केरमत कहौं कछु गरुड वरानि ॥  
 एक दिन प्रभु लागे करन निज स्वरूप कर ध्यान ॥  
 पवन तनै अब लोकि इमि मनमें कृत अनुमान ॥

चौ० इन्हें सुना हम सब के स्वामी ॥ ब्रह्मादिक जाके अनुगामी ॥  
 सुमिरा आन करत हैं सोऊ ॥ इनहुन के ऊपर हे कोऊ ॥ ॥  
 पूछत प्रभु ते तिन हैं सि काहा ॥ परब्रह्म किमि जवि चाहा ॥ ॥  
 निकटौ दूरि निबाहु न होई ॥ जैहों क्षिप्रन मग कहु कोई ॥ ॥  
 मुंदरी दें उत्तर दिशि पेरा ॥ कुधर खराड बन हले धनेश ॥  
 लोकालोक अद्रि के आगे ॥ अंधकार पावक थल त्यागे ॥  
 सत संवत परगये निकेता ॥ बुढ़िया एक मिली तहें सेता ॥

ब्रह्म कहों मृतलोक पधारे ॥ सहस्रसाज भेद शरय बारि ॥ ॥  
 पुनि देखि रघुपति आसीना ॥ विधि हरि हर सेवत पद लीना  
 दो० कल दगाडवत पुनि तहां कोई पस्यो न देखि ॥

पीताम्बर को खूट लै आयि अवध विशेषि ॥

चौ० करत प्रणाम राम हैंसि कहै ॥ आयो देखि ब्रह्म कतर है ॥  
 कह कपितु सही हो सब ठौरा ॥ तुम ते पर नहै कोई ओरा ॥  
 बोलि प्रभु तुम पहुँचे नहीं ॥ अबहीं फिरि आयो मोहि पाहीं  
 तब पवन ज पद चिन्ह देखा ॥ रघुपति कर खरि डत सम पावो  
 गिरि चरणा कहि धनि तब लीला ॥ जन मन संशय समन मुशीला  
 दो० एक दिन पद चापत गुन्यो इन्हें श्रुति कहै प्रसू ॥

हैं अरूप पुनि सुनि दिनय देख रायो निजरूप ॥

चौ० एक दिन सब न सहित रघुबीरा ॥ खल त ते रायू के तीरा  
 बिहंग रूप धरि रावरा आवा ॥ घात पारि शर चहत उदावा ॥  
 जानि राम बिन फर सरगारा ॥ गिरा जाइ निज लंक मझारा  
 सात दिवस पर मुरझा जागी ॥ समुझि प्रताप लाज उर खानी  
 तब दूत न ते कहि सिबोलाई ॥ तपसिन ते लावहु कर जाई  
 आय सुपाइ आइ हठ कीहा ॥ सुनि भरि कुम्भ रुधिर तिरि लाई  
 कह्यो जाइ रावरा के पास ॥ यहि घट ते होई कुल नासा ॥  
 गगान जाइ दस मुखे सुनाई ॥ आवहु गाड़ि जनक पुर जाई  
 शंभु सभा श्रुति बाद मझारा ॥ प्रथमै रहा जनक ते हारा ॥  
 तेहि गम ते नहं कुम्भ पठावा ॥ दूत गाड़ि मिथिला पुर आवा  
 हरि इच्छा तहें पस्यो दुकाला ॥ बिन जल भे सब जीव बेहाला  
 लखि बिदेह बुधलीन बोलाई ॥ बूझे ते तिन युक्ति बताई ॥  
 उदक हेत शुभ यज्ञ करावो ॥ कनक केर लै हल बन बावो ॥  
 जोतौ अजिर सहित निज रानी ॥ होई बृषि सकल सुख दानी ॥



दो० मुनिनृपकीन्हीपुक्ति सोइ जेतत अनिमकार॥  
 प्रगट्यो सिंहासन सुभग अपडुत तेज अपार॥  
 चारि साखी चारों तरफ लीन्हें मुरछल हाथ॥  
 मध्य दिगज तभूमिजा रूप राशिरधनाथ॥  
 वेदवती रिपु बधन हित तजन हेत महि अंश॥  
 एक रूप है प्रगट भद्र आदि शक्ति निमि वंश॥

चो० देखि विदेह बिनय तब ढानी॥ भई तुरत कन्या लखु जानी  
 सरिवन सहित सिंहासन सोई॥ अंतर ध्यान गयो तब होई ।  
 रोदन सुनत सुने नानी॥ लीन उद्याइ गोद सुख मानी॥ ॥  
 मुनि पुरजन सब भये सुरवारी॥ देखव उरि धायि नर नारी॥  
 भूपति दान दीन विधि नाना॥ यथा मनोरथ जाकर जाना॥  
 दिन दिन कन्या वर्धत कैसे॥ शुक्ल पक्ष कर चन्दा जैसे॥  
 छुडीं बारही अपल परासन॥ कीन नरेश निगम अवु शासन  
 वाप करा॥ दिन नाय कड़ावा॥ सुधन जानकी नान बतवा॥  
 नारद आइ धर्यो तब सीता॥ जगत जननि सब भाँति पुनीता  
 सुर रंजन भंजन खल हेता॥ प्रगट भई नृप तब संकेता॥  
 सकल लोक पति प्रभु सुरवारी॥ मिली इन्है बरसों अबिनाशी  
 औगेल क्षणा युक्ति सनेता॥ कहि मुनि वर गे बहू निकेता ।  
 मुनि ऋषि बचन माल गुहिलीन्ही॥ सानिज उर सिय धाया कीही  
 जनक बंधु जा सरिवन समेता॥ देखैं जहं तहं रूप दिकेता॥  
 बाल बटु योवन नर नारी॥ लागहि सबे प्राणा ते प्यारी॥ ॥  
 मुनि नृप विपुला पदन बेठाई॥ अचिर काल सब विद्या पाई  
 यह चरित्र भाव्यो भव सेतू॥ अब सुनु सिया स्वयं स्वर हेतू ।  
 दो० एक समय मिथिलेश अति शंकर करत पकीवा॥  
 आइ कही हर मै गुबर तब नृप बोलय लीन॥

नाथ इष्ट जो आपुकर जोहि श्रुति नेति बखाना ॥  
 तहि देखों भरिनयन में यह बर देहु न जान ॥  
 सुनि शिव दीन्हों धनुष जो मिला रहे बिष साय ॥  
 कह्यो कि पूजेहु यही ते मिली आइ समनाथ ॥

चो० सुनि विदेह प्रभुहित अनुगं ॥ नित नेम करि पूजन लागे  
 एक दिन सिय सेवा दिग जाई ॥ लीले लीन्हों धनुष उठाई ।  
 देखि जनक अति अचज माना ॥ तेहि छिन तहां करि प्रणामना  
 जो लेई शिव चाप चढ़ाई ॥ सो नृप सम कन्या बरि पाई ॥  
 लिये बोलि कारीगर भूरी ॥ रंग भूषं बिरची तिन रूरी ॥  
 चहं दिशि चामीकर अस्थाना ॥ ताम्र मध्य मरिा मय मंचाना  
 दश सहस्र मिलि मल्ल बिषाला ॥ लावत भय धनुष मखशाला  
 देश देश प्रति पत्र पठाये ॥ सुनि सुनि भूप अपने गन आये  
 बन उपवन पुर पंथ निकेता ॥ उत्तरे निज निज सेन समेता ॥  
 सुनि दश मुख बाराणसुर आवा ॥ प्रथमे निज निज पारुष गावा  
 रावण धस्यो धनुष तब जाई ॥ बहु बिधि बल करि रहा उठाई  
 उठाने कुच प्यो कर गादे ॥ अति बल कीन कदा तब कादे  
 सभा मध्य करि कपट बहाना ॥ जात भये निज निज अस्थान  
 भूप हुनि प्रति बिपुल उठावें ॥ टोर नजब तब दुंदि मचावें ॥  
 यहि बिधि बीते कैयो मासा ॥ अब मुनु मुनिवर की इतिहासा  
 गाधि सुवन नन्दन बन रहहीं ॥ यज्ञारंभ कीन जब चहई ॥  
 तब तब असुर करहि अपकारा ॥ तखि मुनिवर निज हृदय बि  
 भानु बंश प्रगटे रघुराई ॥ लोचन सफल करहु तह जाई  
 लावहु मांगि सुभग दोउ भ्राता ॥ तेदनि खल हैं हैं मार शाता  
 कार कृष्ण ऋषि दिवस सिधायो ॥ नौ मी दिन कोशल पुर आयो  
 देखी काने अवध पुर केरी ॥ लोनि लोक ते सकल अनेरी ॥



पुर चहुँ ओर कनक कर घेरा ॥ उपवन बाग मनहु मधुसेरा ॥  
 बसुदिशि बसुदरवार विराजै ॥ आर आह सैना पतिराजै ॥  
 रहैं वेद घटिका परमाना ॥ जाहिं भवन जब आवै शाना ॥  
 विधि हरि हर धन पतिरद एका ॥ बसत मनो धरि रूप अनेका ॥  
 बापी कूप तडाग घनेर ॥ मरिा सो पा नि मधुर मधुनेर ॥ ॥  
 विस प्रसून विकसे बहु रंगा ॥ कूजतरवगगन गूजत भृंगा ॥  
 मरिा मय महल विशाल अपारा ॥ मानहुँ न भलिन ऊपर धारा ॥  
 चित्रविचित्र अनेक बनये ॥ कनक कलस शशि मरिा सो हरे ॥  
 ध्वज पताक तौरा नवराटा ॥ देहरी बिद्रुम कुलिश कपाटा ॥  
 चहुँ हट हाट फराकन होची ॥ बीथी सकल सुगधनि सींची ॥  
 आवत जात निकर नरीके ॥ गजरथ बाज भावते जीके ॥  
 बाजन विविध भाँति के बाजै ॥ मत्त गयंद अनेकन गाजै ॥  
 कतहुँ मल्ल गगा भिरें प्रचारी ॥ कतहुँ गीत गावैं मिलि नारी ॥  
 कतहुँ विप्र बर वेद विचारै ॥ कतहुँ सन्त जन नाम उचारै ॥  
 कतहुँ हंस सुकसारि कबोलैं ॥ कतहुँ केकि पारावत डोलैं ॥  
 मध्य ग्राम नृपधाम अनेका ॥ बननि विशाल एक ते एका ॥  
 भूपसभा शुभ की रुचिराई ॥ देखत बने वरिा नहिं जाई ॥  
 दो० आवैं जोइ अनेक नृप भुकि भुकि कोरें प्रणाम ॥

राजत कोशल राज जहँ सुरपति ते अभिराम ॥

चौ० उत्तर दिशि सरयू सरि बहरी ॥ अमल अपा प आप सो अहरी ॥  
 आपु अधोगति कुचित बचाले ॥ ओरी हेत ऊट पद हाले ॥  
 बाँधे घाट मनोहर नाना ॥ जहँ तहँ जीव करैं अखाना ॥  
 निकट निवास मुनिन के रहे ॥ सुमन बाग तुलसिका हजूर ॥  
 देखत मुनि वर पुर की शाभा ॥ सरयू तट आयै मन लोभा ॥  
 मज्जन कीन मुदिन जल खावा ॥ अरुधि आग पन नूति मुनि पावा ॥



सचिव सहित रहें आवत भयङ्ग ॥ करि मन मान सदन लै गय क  
 नहि सब रानि न पद श्री सा ॥ दीन्ही मुदित मुनीश अरी सा ॥  
 गहे चरणा पुनि चारों भाई ॥ पृथक पृथक हैं आशिष पाई ॥  
 मये प्रेम बस रामहि देखी ॥ चपल दृगन परिहरी निभार्वी ॥  
 बोड़ै धाति पूजि महि पाला ॥ बोले वचन नाइ पद भाला ॥  
 पूरि भाग हम तुम्हें निहार ॥ आपु कहो केहि हित गुधार ॥  
 पुनहु नीश तयोवन माहीं ॥ करन देत सरव निन्दर नाहीं ॥  
 तेहि हित याचन आप्यों ताता ॥ दीजे राम लय रा दोउ धाता ॥  
 पुनि मुनि वचन दान सम लागे ॥ बोले भूप भूमि भय त्यागे ॥

दो० याचक जन नाह क किये जगत पिता संसार ॥  
 हित अनहित न निवाह कहु मांगन ही को कार ॥  
 विविध यतन कीन्हें मिले चौथे पन भुत चारि ॥  
 निषट निदुर निर मोह तुम मांगहु नाहिं विचारि ॥

चो० कहें लुकुमार सुवन प्रसवो ॥ कहें गिरि मरि मज सुख को  
 जे भनु सर गहि जानत नाहीं ॥ तें कैसे लारि हैं ररा माहीं ॥  
 राम सनेह सहित सुनि बानी ॥ हैं प्रसन्न पुनि केह मुनि जानी ॥  
 तब देखत हैं राम नदनि ॥ अह हिं सबल अति चतुर मयनि ॥  
 इन कर रूप प्रताप जहाना ॥ जानत तब गुरु सरिस महा ना ॥  
 तेहि तेरे हलहु करि नासा ॥ याही हेत धर्यो बपुराजा ॥ ॥

दो० तुम कहें याचक जगत में बाहि विधाता कीन ॥  
 सो नहिं भूषण दानि के को बरणा तल बुपीन ॥

चो० कह नृप सत्य भूढ कहु नाहीं ॥ राम प्राण प्रिय दिये न जाहीं  
 हम तब संग चली सजि साजा ॥ तुम ते नहिं होई यह काजा ॥  
 धरिग धाम धन चहो सोलीजे ॥ केवल त्यागि राम कहें दीजे  
 मोह विषय हैं करत विवादा ॥ त्यागत निज कुल की मर्यादा ॥



इतनी कहत क्रोध उर जागा ॥ महि पताल न भहाल न लागी  
सुरनर अहि सब उठे डराई ॥ चाहत होन प्रलय का भाई ।  
तब अशिष्य मृदु वचन प्रकाश ॥ कीजे कृपा जानि निज हासा  
राजा ते बोले सुनि लेहू ॥ बालक इन्हें पुदित मन देहू ॥

श्री० इन ही के तप तेज बल बधित मंचा मख राखि ॥

ऐहें अल मंगल सहित सर्व विजय शिव साखि ॥

श्री० सुनि नरेश तब सहित सेनहा ॥ दीन्हें अपि मुवन कहिये हा  
नाथ हाथ धार बन मग जाता ॥ तुम ही हो इन के पितु माता ॥  
विष्णु मित्र लहें दोउ भाई ॥ मानहु रङ्ग महा निधि पाई ॥

कृ० मानो महा निधि पाइ तब सुनि राख हूँ संतुष्ट जू ।  
बोले अहो तुम धन्य नृप निज राज नय में पुष्ट जू ॥ हे अ-  
र्प सत्र तब सिद्धि पाते धर्म रत चति जो अहो । सुनि सु-  
खा सीन स्वधीन दीन मलीन पथ नाहीं गहो ॥ जो पूर्व पि-  
त्र पिता महादिक कीरही सद्वृत्ति जू । सो अर्थ धर्म सु-  
काम में तब भई नहिं निरवृत्ति जू ॥ मोहि देत रामहिं कि-  
हेउ कर सो नष्ट पथ नाहीं अहो । रघुनाथ प्रेम बिहीन को-  
ने धर्म फल पायो अहो ॥ तुम गहत हो नहिं काल को न्यो सु-  
द मूढन की दसा । पल्लवत फूलत फलत मुख सों सर्व रस  
तुम्हरी रसा ॥ सत शेष धीरज दया मृदु तप तोष समाम-  
स्यीर हो । निरमान मति बलवान ज्ञान निधान हर पर पीर हो ॥  
वक्त करत भीति देखाइ भौरुइ अश्रु हित गहें बिनय हो ।  
समनून को करि तेज राखत स्ववस तुम दिन दिने हो ॥ तु-  
म भ्रात पितु गुरु मित्र को रिपु बोर लखि बध करत हो ॥ अ-  
रि अन्त तक सम सन्ततति बचन प्रिय अनुसरत हो ॥ तु-  
म मारि प्रति पक्षीन पाछे कृपा करि कृत बोध हो । सुनि च-



लत पथ को कर्म लायक देत फल करि सौध हो ॥ निश्चा  
 सहू के नरन ते नहिं रहत कबहुं निशंक हो ॥ हे जासु नहिं  
 विश्वास नासों सदा शंकित अंक हो ॥ जे चार लायक लि-  
 न्है करि कै चार भेजत देश हो ॥ बहु भेष धरिते खबरि ला-  
 वत लखत तेहि तुम बेस हो ॥ तुम सदा रहत असन्न सब  
 से निदुर कारज काल हो ॥ करि मंत्र राखत पुत्र सन्तत सा-  
 वधान नृपाल हो ॥ तुम जात दीन न दीन पै कृत कार्य च-  
 हत न साथ हो ॥ निःशेष कार्यन करत पर को रखत कहु  
 निज हाथ हो ॥ तुम प्राप्त भय को देखि तासों होत अभय सं-  
 हारि हो ॥ जो कार्य आगे होइ गोलेहि प्रथम लेत विचारि  
 हो ॥ पुनि देश काल स्व भाग्य साफिक कार्य में मनु देत  
 हो ॥ करि साधु विप्रता तोष आशिरवाद लिन सों लेत हो ॥  
 तुम त्यागि मत्त नास्ती क ताल सलखत आमद खर्च हो ॥  
 गज अश्व गढ़ भर काम कारक आदि सुरकी अर्च हो ॥ अ-  
 म थोर फल बहु बिधि सो जानन प्रजन के पुर नाम हो ॥  
 रघुनाथ माला कार सम तुम करत जग को काम हो ॥ जल  
 असन धन पद अस्त्र अनुपम किये बहु अर्जिन सहो ॥ हैं  
 भूप जेतव वस्य लिन को संग नित लीन्ह रहो ॥ निरबंध पं-  
 गु अपना स्व इन को करत नित पालन अहो ॥ बुध बेंद मंत्र  
 न को भिषादन करत करि लालन चहो ॥ कर लेत बनिक-  
 न ते तिन्हें घर कुशल पहुँचावत अहो ॥ रत्ता दान में नहिं  
 गहत लालच चपलता मन में गहो ॥ हो लेत कारज जासु से  
 तेहि देत सम्पति भूरि हो ॥ हरि भक्त मन बच कर्म रहत अध-  
 र्म ते नित दूरि हो ॥ निज कुटुम्ब पाल समान सुख प्रद भये  
 पुत्र जिन के हरी ॥ हो सकत तेहि न प्रशंसि देत प्रशंसा जीवहु वय नरी ॥



चौ० पुत्रनहित करो शोचन किनका॥ कोऊन है दुखदायक इनका  
 मुनि के सकल मानु अकुलानी॥ करि हैं विद्यान समजिय जानी  
 तुरते प्रभु निज माया पेरी॥ तोहि तब हरी प्रीति सब कैरी॥  
 दुबा दशी दिन पाशा करिके॥ पुरवा सिन के धीरज धरिके॥  
 पहि रबसन भूषण प्रति अंग॥ कटि तरकस करसर सारङ्ग  
 जननि जनक पद श्रीश नवाई॥ पाइ अशीश चले हरवाई॥  
 चलत दीन हनुमाने छेरी॥ कछु दिन में बन मिलब बहोरी  
 कहत सुनत इतिहास हरीका॥ देख्यो आइ तपोवन नोका॥  
 परिवारि सताइ का धाई॥ समहि मुनिवर दीन देखाई॥  
 रुकिंग प्रभु अब लोकत नारी॥ द्विज द्रोही बध दोषन मारी  
 बेरोचन जा हीरक्ष जिह्वा॥ सुरपति तेहि माख्यो लखि लिह्या  
 भगु भामिनि निश्चर हितकारी॥ नारायण तेहि आपु संहारी  
 परसराम गंजी निज माना॥ तिमि तुम याहि हतौ गति दाता  
 गुरु आयसु मुनि नीति निधान॥ बरजित नोका द्यौ बाना॥

दो० कहत एक धनु बहत दश कर्षत भेषत बाण॥

तजत सहस तन लाग है लक्ष गये तेहि प्रण॥

चौ० तनु छूटत भै सुन्दर भामा॥ अस्तुति करत गई हरि धामा  
 लखि प्रभाव मुनि माया कीन्ही॥ विद्या निधिका विद्या दीन्ही  
 जेहि ते लागन शुधा पिपासा॥ अस्त्र शस्त्र विधिते ज प्रकास  
 पुनि मुनि ते बोलि रखुवाई॥ निरभै यज्ञ करो तुम जाई॥॥  
 आयसु पाइ करन मख लागे॥ बैठे प्रभुरक्षा हित आगे॥  
 खबरि पाइ सुबाहु मारीचा॥ धावा बिपुल संग लै नीचा॥  
 गीतिका ॐ० धावा बिपुल लै नीच बीचहि राम बिन फ-  
 र सर हयो॥ शत योज नाग बिचारि कारज पारसागर के ग-  
 यो॥ पुनि अग्नि अस्त्र सुबाहु जाख्यो लखरा सब सेना हनी॥

हरये सकल सुर सन्त वरयि प्रसून कहिरघु कुल मनी ॥

इति श्री विश्वामसागर सब मन आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदा

सराम सनेही कृत विश्वामित्र मखरसुगो नाम वन्द्यो ध्यायः ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गराप गिरा मुख रानी ॥

अगिनि वैष मत कहौं कह्यु पदुम पुराण बावनि ॥

करि अबिष्ट मख ऋषे होउ भैयन दीनि अशीश ॥

रहे तहाँ निज दूत सुनि पठ्यो निरहुत दीश ॥ ॥

चौ० दूत आर मुनि वी सुनयो ॥ महित समाज बिदेह बोलायो

हेत समुझि बोलि मुनि बाता ॥ देवन बलहु धनुष मख ताता

भले नाथ कहि कृपा निकेता ॥ चले गाधि सुत ऋषिन समेता

हरि दिन एक शिलालधि पारि ॥ कह मुनि पद प्रभु देहु दुयारि

कारा ॥ कौन सकल मुनि वरागे ॥ गौतम आप पाकरि पुकरागे

एक दिन इन्द्र सुनते कहैऊ ॥ सम त्रियते वरतिय कहैं बहेऊ

देवन रवि रवि शशि हितायौ ॥ अधिक अहिल्या सुनितहें आप्यौ

मुनि मुनि गे तम चुर समवासी ॥ गौतम वपु बास वरति रानी ॥

कह्यौ गंग कुल तुमरे गेहा ॥ भवन आपाइ लखि कहवचनेहा

एक भगहित तुम आप्यौ हमरे ॥ होइ सहस भग सब तन तुम्हरे

कह्यौ अहिल्या ते पवि रूपा ॥ हैं सब कष्ट सह्यौ सुरभूपा ॥

बिनय सुनत बोले हरि चरना ॥ कुवत तौर होई निस्तारना ॥

इन्द्र स्तुति मुनि कह मुनि भाषी ॥ धनु धुनि मुनि होइ हैं सब शोषी

बहु दिन ते पथ लखत बिचारी ॥ सुनि प्रभु पहराज दीन निहारी

परसत चरगा भई बर नारी ॥ सन्मुख हे अस्तुति अनुसारी

दो० जय जग दीपवर सर्व पर प्रेरक प्रकृति प्रभाव ॥

अद्वै ब्रह्म अनादि सुर राम अकाम मुभाव ॥

त्वत्पद पल्लव महत्पद पुराय यथाश्रित जेवा ॥



भवाधिबल पद परम्पद पद विपदानहिंतेषु ॥

जेविषइक जग जीव जइ कर्मक्रिया युतमत ॥

ताही के मद ते छुके माया मोहित ज्ञान ॥ ॥

तेनर आश्रित होत नहिं तव पद पदु ज नाथ ॥

भूली सुधि शुभ पन्थ की विषय कुपन्थ संहाण ॥

चौ० दुमि करि बिनय भक्ति बाण ॥ हरव महित पति लोक सिधार्थ ॥

सुदित सकल लखि रंगत अभिराम ॥ जाइ गत तट कीन प्ररामा ॥

पूछा प्रभु किमि आई गंगा ॥ कोशिक मुनि कह सब लखंगा ॥

धूप भगीरथ तप करि लाये ॥ पुरिवा जेहि निधि स्वर्ग सिधाय ॥

जामु प्रभाव दुनिन बहु गावा ॥ सोइ सुबोधिता केहि नहिं पावा ॥

सुनिस समाज सप्रेम नहाने ॥ दीन दान भूसुर सन माने ॥ ॥

मुनिस सब करि न सहित रघुबीर ॥ यहै चे जाइ जनक पुरतीरा ॥

दो० देखवन उपवन विविधि बापी रूप तड़ाग ॥

माने तो पान पियूष जेहि पान करत अमभग ॥

चाभी करदार सबन के चोहट हाट अनूप ॥

धनिक बशिक बेढे मनहुं धन दधरे बहु रूप ॥

मिथिल पति के महल की शाभा किमि कहि जान ॥

जहं बिहरन श्री जानु की अखिल लोक की गत ॥

दमयन्ती रति बिधु मती जान रूप श्रुति जात ॥

लाजत मदन मयंक लखि सीताजू को गत ॥

रविते मरिा शशि शम्भु ते जो वाचन ते गण ॥

लही अधिक छवित्यो लही निमि कुल सी पसंग ॥

जहं तहं टिके नरेश बहु बाल बाहन जिन साथ ॥

सुचि आश्रम लखि युनिन युत उतरे तहं रवि माय ॥

सो० खबरि पाइ मिथिलेश ॥ सहित सचिव भर भूरी दिज ॥

आये जहाँ ऋषेश। नाये मुनिपदशिरसबन॥  
 चौ० दीनअशीसनिकटबैठाये॥बूभीकुशलदरशतवपाये  
 रामलखराकररूपनिहारी॥जनकसहितसबभयेसुखारी  
 जोरिपारिाबोलेमुनिनरे॥नाथकहोयेसुतकिनकरे॥॥  
 मुनिकुलतिलककिनृपकुलजाये॥कीदेउब्रह्मरूपधरिआये  
 इन्हें देखि मोहिभासुखजैसा॥नहिंप्रियलागब्रह्मसुखतैसा  
 कीभरिजन्मयोगहमकीन्हा॥ताकाफलबिधिवतबिधिहीन्हा  
 कहमुनिसत्यकह्योतुमताता॥येप्रियसबैजहाँलगुगाता॥  
 कौशलेशदशरथबलजाका॥जानतदशमुखसुरपुरसाका  
 तिनकेतनैमनोहरचारी॥लक्ष्मणारामभरतरिपुआरी॥  
 उभैरहेअवधेशनिकेता॥लायोंमांगिमिथुनमखहेता॥  
 असुरमारिममयज्ञकराई॥पदपरसतमुनितियगतिपाई  
 धनुषयज्ञमुनितवपुरआये॥भलेनाथदृगसफलकराये  
 निजसमाजतेपुनिसुखदानी॥गाधिसुवनकीकथाबरवानी  
 इनकरबिभोजातनहिंजाना॥तेजपुंजअतिक्रोधमहाना  
 जासुसमुझितपतेजबिधाना॥अजहूँडरत रहतसुरताता  
 मुनिबशिष्ठकेपुत्रअनेका॥जिनमारेनहिंछोड़ेएका॥॥  
 जन्मिद्विकुलभेद्विजबर्गा॥सृष्टिदूसरीलागेकराई॥  
 तपबलतेजिननदीअमाना॥करीकौशकीपुरायमहाना  
 गोत्रसंकुकरिगुरुअपराधा॥दियाशरणाताकोनिरबाधा  
 ऐसेजिनकेकर्मअनेका॥मुनिमुनिबोलेसहितबिवेका  
 दो० एकलोकपरलोकनहिंयकपरलोकनलोक॥  
 एकसुखीदोउलोकमेंतिनमातुमगतशोक॥  
 चौ० मुनहुभूपसबभूपकहावें॥निजरक्षाकोइकानिसकावें  
 तुमसाधेनृपदूनहुलोका॥करतभयोंसबप्रजाविशोका॥



नाथ कृपा कहि सहित समाजा ॥ प्राति उत्तारे शुभ घन राजा  
 षोडश भांति पूजि सह चेता ॥ हरख सहित नवराये निकेता  
 दो० पहरती मरे कह्यो प्रभु मुनि पद शीघ्र नवाइ ॥  
 लख गादी ख चाहत नगर आवहु तात देवाइ ॥

चौ० प्राय सुपाइ चले दोउ भाई ॥ खबरि सकल पुर बासि नई  
 बालक बृद्ध तरुण नर नारी ॥ धाये निज निज काज बिसारी  
 देखें जब रघुपति बधु आई ॥ अंग अंग प्रति रहे लोभाई  
 करहि बात सब आपु समाही ॥ इन सम रूप वन्त कोउ नाही  
 विधि हरि हर हैं विश्व विशाला ॥ ते मुख चारि भुजा विकराला  
 मदन अपन नुशान रहत न पूरा ॥ अपर जीव अस कोही रूरा  
 कोइ कहै धन्य नगर इन केरा ॥ संतत जहं ये करत बसेरा ॥  
 धन्य सकल पुर बासी अहंहीं ॥ जब तब जे अवलोकन रहहीं  
 कोइ कहै धन्य मानु जिन जाये ॥ कोइ कहै धन्य दरश हम पाये  
 कोइ कहै भागवती नृप जाई ॥ विधि जस कात सदेत मिलाई  
 कोइ कहै अबै कठिन है कामा ॥ कोइ कहै धनुष तोरि हैं रामा  
 कोइ कहै बालक महि घोरा ॥ देखत कोइ अहं बर जोरा ॥  
 जिन मग शिला उधारी सका ॥ मखहित मारे असुर अनेका  
 कोइ कहै ऐसहि कोरे विधाता ॥ तो हम काम सब का सुख दाता  
 दो० बारी रूप अनूप बर बरणा बाम ते बाम ॥  
 कहें बाम विधि विधि करी बाम देव धनु बाम ॥

चौ० कोइ कहै इहे भूप जब देखी ॥ तजि प्रण करी बिवाह विशेषी  
 कोइ कहै प्रथम नरेश निहारे ॥ प्रण नहिं तजी लाज के मारे  
 कोइ कहै धर्म कर्म गल सोई ॥ जेहि पाछे पछि ताव न होई  
 कोइ कहै मन मै करौ उछाहू ॥ होई राम सिया कर व्याहू  
 कोइ कहै जो विधि बस अस होई ॥ तो कृत कृत्य होइ सब कोई

बार बार नृप मुता बोले हैं ॥ देखव जन तव चालन से हैं ॥ ॥  
 कोइ कहै हम चाहें नृप ठोठा ॥ हांइ न कब हूं नयन न बाटा  
 कोइ कहै भाग चही अस माई ॥ सूती में नहिं सिंधु समाई ।  
 जो नहीत बडि भाग्य हमारी ॥ तो न मिलत मिथिला पुर प्यारी  
 दो० फिर कीसी थिर की फिरें रिवीर किन प्रति नव नारि ॥

थिरि किनि तजि रखु नाथ कृपि निखरे पलक विहारी ॥  
 चौ० जब जोहि नयन वोढ चलि जावैं ॥ भई तानि अस वचन मुनावैं  
 एक कहै तुम भले निहारे ॥ भई सरि बँधे रिनि नाज हमारे ॥  
 आवत निकट बदन पट दीन ॥ भरि नयन न अवलोकि न लीन  
 एक कहै बर बस मन मोरा ॥ हरि लीन्हो सौ वरा कि प्रोरा  
 एक कहै अस जग में कोहि ॥ इन्हें बिलोकन जो न बिभीहें ।  
 कोइ कहै सत्य वचन सरि तैरे ॥ इन चित चोरि लिये सब कैरे  
 अवधों विधिक व दश देखी ॥ रंग भूमि फिरि देखव जाई  
 कोइ कहै सपने की निधि जानो ॥ बिन सन बंधवादि मुख मानो  
 कोइ कहै जो विधि होई दाहि न ॥ तो इन ते धनु उदरे चाहि न  
 नाहित दश दूरि इन कैरे ॥ अबला बपु कहु होत नहैरे ॥  
 यह विधि निज निज मति अनुहारी ॥ करैं बात जहत है नर नारी  
 प्रोभा सागर अनुज समेता ॥ सुन भद्र शस्य काहुइ देता  
 गंगास पुनि देख्यो जाई ॥ अति विचित्र रचना मन भाई ॥  
 बालक जो जोहि प्रेर बोलावैं ॥ प्रेम विच सप्रभु तोहि दिशि जावैं  
 सब के नाम कहैं मृदु वचना ॥ तुम भलि ताल देखायो रचना ।

दो० जाकी इच्छाते रचत माया अंड अनेक ॥  
 सो प्रभु चित दत्त चकित चित भक्त दत्त लहित एक ॥  
 लोचन सब के सफल करि लखरा सहित रखु नाथ ॥  
 उतरे नहैं तहें पाइ के सुनि पहनाये माथ ॥



अहं निशासोयै सकल शौचक्रिया करि शत॥

समै पाय आय मुचलै सुमन लेन दोउ धात॥

**विभंगी छं०** पहें चै नृप बागा सह अनु रागा देखत लागा-  
अति नीका। जामे जरनु राजा सहित समाजा रहत विराजा।  
नित हीका॥ नाना तरु फूले सफल समूले मधुकर भूले गुं-  
जारे। खग विधि अधिक लोले जहं तहें बोलैं जनु निज दोलैं  
हैं कारें॥ सरभध्य सोहाना मरि सो पाना जल चरना नाक  
मल लसैं। ताह तट अति नीका सहन सती का छु बिजन जी-  
का चोरि बसैं॥ अहुत फुलवाई सकल मफाई पुनि दोउ भा-  
ई प्रेम पंगे। माली गरा जेता पूछि सचेता मुदित सुमन रल  
लेन लगे॥

**दो०** तेहि अवसर सीता तहें आई सरिन समेत॥

मातु पढाई मुदित मन गिरिजा पूजन हेत॥

मज्जन करि सर सरिन युत गई गवरि के धाम॥

पूजिय थोचित मनहि मन मांग्यो बर अभिराम॥

**मोरठा** एक सखी तजि संग। देखे बालक जाइ दोउ॥

आई सहित उमंग। बूझे ते बोलत भई॥

**चौ०** मुनहें सखी यहि बाग मंफार॥ आये हैं द्वै सुभग कुमार  
गौ प्रियाम छु बिधाम किशोर॥ चितवत चित चोखौ जिन मोरा  
रूप अनूप सकों किमि भाषी॥ नैन प्रवेन बैन बिन प्रारखी  
कह्यो एक हैं हे सखि सोई॥ जिन मोहे पुरजन सब कोई।  
बरीत जहं तहें रूप विशेषी॥ देखन योग चलहु सखि देखी  
आगे करि सोइ सखी पियारी॥ चली सकल चहुं ओर निहारी  
बिदप ओट जब देखे जाई॥ गई अपन पौ सबे भुलाई॥  
बैदे ही जव रामहि देखा॥ गिरी मूर्छि यहि प्रेम विरोधा॥॥

रूप विधिरबविषविह्वल गंगा॥ जिन गिरि अधतौ नहिं लंगा  
धरि धीराज तब सखिन उठावा॥ लेहु देहु नर सुन सुनिभावा॥  
पुनि सनमुख दरसे होउ भ्राता॥ सहज सो हावन पावन गाना  
हो० सारंग हृग मुख भारि पद सारंग कटि बंधुधार॥

भारंग धर रघुनाथ कृपि सारंग मोहन हार॥

चो० रंग रंग कृबि देखि जुझानी॥ पितु प्रणाम भुवि वही रहितनी  
मकल सखिन निज मन अस बाहा॥ हर परि हरि नृप कोरे बहा॥  
तो सब के मन होइ अनन्दा॥ अपर अधिप संग कारज मंदा॥  
इत जान किहि देखि राघुर्बारा॥ बोलै लक्ष्मणा ते धरि धीरा॥

हो० तात तकहु कृबि राशि यह जनक सुता है सोइ॥

जैहि हित धनुमख होत सुनि बहुरै नृप सब कोइ॥

जामु अलौकिक रूप लखि सहस्र मुख चहु मन सोइ॥

भयो क्षुभित निज सीवत जि सो गति जानै कोइ॥

कहौ लषणा होत व्यजो सो प्रथमै दरशात॥

करल बात श्रुति तात तन मन अटक्यो सिय गात॥

इतै सखिन लखि गहरु निज डर हरि भूति लोरि॥

आई गधरि निकेत पुनि खग मृग मिसि दिशि पोरि॥

यथा पुत्र पितु प्रोक्त ते चिन्ता भारि मोहि देह॥

दरि शी दीरघ भ्राम कहु किरि आवे कहै येह॥

कमल कुं० तिमि सीया॥ लखि पीया॥ हित वरी॥

लगि कदी॥

त्रिभुंगी कुं० जय जय भव भामिनि त्रिभुवन स्वामिनि मृगपतिगा-  
मिनि ज्ञान निले॥ तडि नाग अचूष अद्भुत रूप मुख द्विज भूष पाक  
दिले॥ भुज चंड चिकाल धृत कर वालं कृत जन पालं काम प्र-  
दं॥ सुर नर मुनि बंदनि असुर निकंदनि भूधर नन्दिनि



कूट कूट ॥ जयजलज बिलोचनि रतिम दमोचनि परहित  
 मोचनि कंक विधे ॥ भवविभव प्रकाशनि कलिनल नाशनि  
 स्वदस विलासनि नीतिनिधे ॥ अति अमृत प्रसादावेदन  
 गाथा तदपिनयाया पारकुते ॥ विधनेश्वरदुलन समकतिमान  
 जन रिधि सिंधि सासन नेम युत ॥ जेने तव चरणारविनि  
 रंगां वैव वरगां लब्ध फल ॥ प्रतिपद रतिलागी तिय अपनु  
 रागी सोवड़ भागी होन हल ॥ अब मातर दाया कुरु महे  
 माया प्रगटन गाया पुन जानी ॥ सुनि इत्यं बचन मोरि सु  
 र न बोली बचन मृदुवाणी ॥

चौ० जयजय श्री सिधिनैरादुलारी ॥ जयजगनननि जनक मनुषी  
 जयजगमगत बिभुषन चौरा ॥ तड़ितवरनवपु कुबिगंभीरा ॥  
 जयजगदुस्तर दशतुम्हारे ॥ कारिकरगा बिचरत नपदारे  
 जयभव भय भंजनि मुखदेनी ॥ विधि हरि हर बन्दत मुखेनी  
 जयजप तपकारि सुगतिजे बहई ॥ बिनतय कृपानरूपनेहु बहई  
 सबके परे वेद जेहि गावै ॥ सोतव सुमिल ते कर भावै ॥  
 दिव्यवरय शत शंकर ध्याये ॥ रामगुरु हूँ पंथ बताये ॥  
 तव तव दर्शनने मुख लहेऊ ॥ इगप आस्त संहिता कहैऊ  
 शेष सहस मुखदश मुखवासी ॥ तव मरि या नहि सकत बखानै  
 हम समान तव कोटिन दासी ॥ नयन निषि नित करै खवासी  
 सो तुम मातु बिनय मम कीन्ही ॥ निज मन जानि बड़ई दीन्ही  
 चतुरकाळ काँके जब जैसा ॥ तब तहै नाच हरवनि तैसा ॥  
 तेहि ते लेद अप्पसीस हमारी ॥ पूजै मन कामना तुम्हारी ॥  
 नारद वचन सदा उर धरेऊ ॥ पाद परीक्षा पुनि परि हरेऊ ॥  
 सुनि मिय सकुचि सहित उरगली ॥ बली पूजि पुनि गृह अमिलाली  
 मीतहि जात जानि रघुगुहे ॥ चित्र चारु हृद लीन बनाई ॥

अनुज सहित आये गुरु पासा ॥ सुमन दीन सब हाल प्रकासा  
अरचन करि मुनि वचन उचारे ॥ होइ मनोरथ सिद्ध तुम्हारे ॥  
मुनि मन मुदित भये दोउ भाई ॥ भागत दिवस निशात बआई  
प्राची दिशि शशि देखि सोहावा ॥ सिय मुख सारि मन पुनि अनुमान

दो० बढत धटत नित नढत न भदिन मलीन रिपुराहु ॥  
सिय मुख सम किमि हाइ शशि दीन दुखद सब काहु ॥  
गवारि गिरा सम कहिय किमि शैल सुता वाचाल ॥  
रति अनङ्ग पति मिथुजा चपला नुज जेहि काल ॥  
कुवि पयोधि गिरि प्रम अहि शाना सुर सब जोइ ॥  
इमि मयि काढै लक्ष जो सोउ न मिय सम होइ ॥  
यहि विधि ते अंग अंग की उपमा करत विचार ॥  
भई निशा सब नाश पुनि देखि पराभित सार ॥  
बोले लक्ष्मणा ने लखहु आहवा उदै भे तात ॥  
काहुइ तौ अति सुखद है काहुइ दुखद लखात ॥

चौ० मुनि सौ भिन्न कह्यो मृदुधानी ॥ प्रभु प्रताप पूरव न पर आनी  
जिमि रबित म गंज्यो करि दाया ॥ रिमित वचन बिदली भव चापा  
उठि हैं फूलि कमल सब सत्ता ॥ होइ हैं पुरजन मुदित अनंता  
भृगु पति गति मयंक दुति कीना ॥ नृप गारा हैं हैं नखत मलीना  
खल उलूक दुरि हैं तजि धीरा ॥ हैं हैं चक्र वाक यक तीरा ॥  
गूढ गिरा मुनि प्रभु मुस वधाने ॥ एका दिन बन जाइ नहाने ॥  
नित नेम करि सहित समाजा ॥ तेहि क्षणा बोलि पदाये राजा  
सा ॥ नन्द तहें आइ बखाना ॥ अरु धन सहित मुनि कीन पयाना  
लगे लोग अनकन संग ॥ धाये विपुल प्रथम महि रंगा ॥  
चहुं दिशि फिरत विचार समेता ॥ तेहि अवसर आनन्द निकेता  
रां भूमि आये दोउ भाई ॥ जनु प्रोभा मधि प्रोभा कूई ॥



जिन जेहि भौंति भावना आनी ॥ तिन तस देवे सारंग पानी ॥  
 योगिन तत्व नृपन नृप श्रेया ॥ बुध विराट भक्तन निज इष्टा  
 मुरन नाथ असुरन सम काला ॥ सिमुन मुह द मन सिज वपु बाला  
 जनक जनक रानिन जामाता ॥ मिथिला पुरवासिन बहु नाता  
 बंदे ही देख्यो जेहि भौंती ॥ उर अनुभवत न सो कहि जाती ॥ ॥  
 सब के मन भरोस अस आया ॥ अबणि चाप तोरि हैं रघुराया

दो० भई भीरु जति जनक लखि सेवक दिये पठाइ ॥  
 यथा योग सब काहु तिन आसन दीन्हों जाइ ॥  
 रंग भूमि मुनि नाथ कहैं सकल देखी भूप ॥  
 बोलै कौशिक धन्य नृप रचना किं हो अनूप ॥  
 सब मंचन में मंचयक अद्भुत वननि विशाल ॥  
 तेहि ऊपर सब मुनिन युत बैठाये नरपाल ॥  
 धनुष ध्वंत नभ रंग महि उड़ गन लोग अपार ॥  
 राम लखण युग चन्द्र सम ऊगे सभा में भार ॥

चौ० चित्तें सकल राम की ओरा ॥ जिमि मयंक दिशि विपुल चकोरा  
 कोइ कोइ नृपन नृपन ते भाषा ॥ चलहु भवन परि हरि अभिसाषा  
 धनु दल सिय बरि हैं रघुराई ॥ तुम कत तजि हो मान बड़ाई  
 बिनहु दले यहै जय माला ॥ मुनि बोलै तब कुटिल नृपाला  
 दूंद धनुष कठिन हे व्याहू ॥ बिन भंजे को बरी कुजाहू ॥  
 कालहु कसन होइ यक जोग ॥ सिय हित समर कर बहम घोर  
 मुनि बोलै तब सज्जन राजा ॥ गाल बजावत तुम्हें न लाजा  
 कनक कशिपु स्वर नावक बीरा ॥ सहस बाहु मधु कैटभ धीरा  
 जिन ते विजयन काहु पाई ॥ तुम जिति हो अब बल अधिकारि  
 परम सुभट अवधेश कुमार ॥ बरि हैं सिय मथि मान तुम्हारा  
 जीतन हार न कोउ जग जावा ॥ कोरे चहै सो गाल बजावा ॥ ॥

जगत पिता रघुपतिकहं जानौ॥ जगजननी जानुकिहि पिछानौ  
 तेहिने दुरवासना नेवारी॥ भरिलोचन छबिलेहु निहारी।  
 नहिं मानो तो खंधक जाहू॥ हमै मिला नरतन करलाहू।  
 तेहि अथवसर मिथिलेश पदाये॥ सभामध्य बन्दी गरा आये  
 भुज उठाइ बोले तहं दोऊ॥ सुनहुं सुप्रगानृपकर सबकोऊ  
 भुवनचतुर्दश केर भुवारा॥ बैठे हैं यहि सभा मंभारा ॥ ॥  
 जो लेई शिव चाप उठाई॥ सो बार बिजय महित सिय पाई॥  
 सुनि हरये अविबेकी भूषा॥ कसि कसि कमर चले अहि रूपा  
 निज निज इष्ट सुरन शिर नाई॥ हुमकि धरहि धनु उठै नराई।  
 बल विवेक गरुवातम शोभा॥ फिरहिं हारि धनुकर बसलोभा  
 दो० लज्जित है दशसहस्र नृप मिलिकरि किहिनि विचार॥  
 लावहु डारी तोरि धनु पुनिलखि लेव पछार ॥

चौ० दशसहस्र इक संग भुवाला॥ रहे उठाइ न नेकहु हाला ॥  
 हमन योगभे ते नृप कैसे॥ बिन बिराग संन्यासी जैसे ॥  
 जे नृप रहैं चनुर मति धीरा॥ ते नहिं जाइं शरासन तीरा ॥  
 गीतिका कुं० नहिं जाइं ते धनुतीर दोबि बिदेह बद गह  
 वर हियो। सुरनाग नर नृप असुर आये सुनत जो हम प्रगकि-  
 यो॥ को कहै करवन केर काहुन अवनि अल्प छुड़ायहू।  
 बार बिजे कीरति कुंवारि पावनहार ब्रह्म न जायहू ॥ तेहिने  
 सकल तजि आश निज निज भवन गवन वसर्वजू। भटहीन  
 महि कहि अपवन कोरु वीर ठानै गर्वजू॥ जो बात यह जनत्यों  
 प्रथम तो नेम नहिं करतो मिदं। किन रहे कुंवारि कुमारि कर्म  
 न धर्म त्यागत कोवि दं ॥

चौ० सुनत वचन पुरजन अकुलाने॥ सकल सभा के नृप सकुचाने  
 भरसम वचन लयरा के लागे॥ बोलि उरि रघुपति के आगे ॥ ॥



नाथ जनक अति अनुचित भासी ॥ काहू की कछु कानिन राखी ॥  
 तेहि ते जो तव आयसु पावौं ॥ तौ इनको बीरता देखे वावौं ॥  
 कंदुक इव कर गहि ब्रह्म मंडा ॥ धनुष समेत करहुं सत खंडा ॥  
 नाथ सपथ जो अस नहिं करहुं ॥ तौ फिरि हाथ न धनुसर धरहुं ॥  
 दो० यहि प्रकार के वचन जब बोले लखण सरोष ॥  
 उग मगानि सहि कुधर सुनि पायौ सुर मुनि तोष ॥  
 चौ० जनमन मुदित जनक सकुचाने ॥ सिय समेत पुरजन हरयाने ॥  
 सयनन प्रभु अनुजहि बुपवावा ॥ सनित सनेह निकट बेठावा ॥  
 तब बोले ऋषि प्रभु ते बाता ॥ अब उरि शिव धनु तोरहु ताता ॥  
 उरु सुरत गुरु आयसु पाई ॥ सहज सुभाय चले शिरु नाई ॥  
 हरखे मुनि मुनि जन प्रभु कोरे ॥ देखि बिदेह कही ऋषि तेरे ॥  
 नाथ राम जी ते मन लोभा ॥ तेहि ते भई अपि धक तन शोभा ॥  
 धनु के करषण योग न आहीं ॥ बरजि लेहु तेहि ते जनि जाहीं ॥  
 भूष करहु मति बिसंभे कोई ॥ इन ते कदिन को दंड न होई ॥  
 रामे चित्त जनक की राती ॥ बोली बिलखि सारखिन ते बानी ॥  
 देखे सखि यहि सभा मंभारा ॥ बैठे हैं बुधि वन्त अपारा ॥ ॥  
 यहि अवसर सब की मति खेई ॥ उरि रघुपतिहि न बरजत कोई ॥  
 गरुव कठार कहाँ शिव चापा ॥ हार सकल भूष करि दापा ॥ ॥  
 तेहि हित अब बालकै पठावैं ॥ हंस सुवन कहें मेरु उठावैं ॥  
 सुनि बोली गुरु तिय तिन पाहीं ॥ ते जवन्त लघु गने न जाहीं ॥  
 कहें पावक बन दहत प्रचंडा ॥ कहें वामन नाथो ब्रह्म मंडा ॥  
 कहें रवि कहें तम तोम बिनाशे ॥ कहें आंकुस कहें क रिहि मंत्रांशे ॥  
 प्रगोणें मंत्र यक अक्षर जाके ॥ बिधि हरि हर सुर सब वसता के ॥  
 भृगु सुत व्यवन पेट ते कदि कै ॥ असुर पुलो महि जास्यो बदि कै ॥  
 चालखिल्य अङ्गुष्ठ प्रमाना ॥ सुरपति को मरद्यो तिन माना ॥

जिमि कुंभज दीध पीन पिछोने ॥ तेहि बिधितु मधनु रामहिं जने  
 मुनि भोग स रानी मन आवा ॥ तब तहैं लखि सीता दुरव पावा ॥  
 कमठ पृष्टि सम धनुय कठोर ॥ कहैं शामल मृदु गात किशोरा  
 कथम जाइ धरिज उर आना ॥ कहत तात प्रण दारुणा दाना  
 हे गणेश गिरिजा गिरि राई ॥ राम भुजन पर होउ सहाई ॥ ॥  
 हे पिनाक तव काज विशेषी ॥ होउ हलुक रघुपति तन देखी  
 दो० जो हमरे मन क्रम बचन गतिन अपर सुर केरि ॥  
 तो करिहैं भगवान मोहिं रघुनन्दन की चेरि ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास  
 राम सनेही कृत रामरंग भूमि आगम नौनाम सप्तश्लो ॥ अष्टाव ॥

दो० वेदन मुख रघुनाथ सुनि करी निवेदन देह ॥  
 वेदन मग भेदन करौं जो वेदन सो नैह ॥

चौ० जो निज चेरि करव प्रभु नाहीं ॥ तो तजित नु मिलि हों तुम काहीं  
 यहि बिधिसिय प्रण कीन्हों जबहीं ॥ धनु दिशि प्रभु प्रबल कहत बहीं  
 लखरा लख्यो अब चाहत तोरा ॥ दिखे सजग करि कुधर कठोर  
 आपु चापि महि ओम सोहावा ॥ तब रघुपति हर चाप उठावा ॥  
 प्रथम सो शशि मंडल सम भयक ॥ पुनि तेहि तीनि खंड ह्ये गजक  
 एक गयो नभ एक पतास्ता ॥ एक गिर्यो तेहि ठोर कराला ॥  
 गहत उठावत तोरत माहीं ॥ रहे सब टाढ़ लखा केहु नाहीं  
 यह शीघ्रता बहुत नहिं तासू ॥ पलमा कौं बिषव चहु नासू  
 पाछे तासु भई धुनि द्वारा ॥ रही पूरि बिभुवन महं सोरा ॥ ॥  
 गड़ गड़ान गिरितर महि खसेऊ ॥ कमठ कोल अहि पति कसमयेऊ  
 दिगगज गिरन भिरन नभ लागे ॥ सुरा विवान रवि चलत न आगे  
 चापिरो महि लखि सकल भुवारा ॥ जनक हृदय मुख भयो अपारा  
 हरये सब परजन नर नारी ॥ सिय हिय भा अपति आनंद भारी



जयजय जय कहि सुरसमुदाई ॥ बरधि सुमन दुंदभी बजाई ॥  
 तब विदेह रासहि सहव्यारा ॥ सिंहासन ऊपर बैठारा ॥ ॥  
 पुनितहं तनया बोलि पढाई ॥ सरिवन समेत सभा महुँ आई  
 पहिरे बसन बिभूषण नाना ॥ दहिने कर जय माल सोहाना  
 सिय शोभा लखि सकल भुवाला ॥ भये अपन पौरहित बिहाला  
 रामे चक्रित चितव बैदेही ॥ कहाँ गये मम परम सनेही ॥ ॥  
 रघुपति दिग लै गई सहेली ॥ देहु माल प्रीतम उर मेली ॥  
 प्रभु कृबिलखि सिय कंकन माहीं ॥ रही देखि करटारत नाहीं ॥  
 धरि धीरज पुनि माल उठाई ॥ सकुच सहित हरि उर पहिराई  
 देखि देखि रघुपति उरमाला ॥ सुरनर मुनि सब भये निहाला  
 पुनि सिय कर गहि कंचन थारी ॥ हरष सहित आरती उतारी  
 सरिवन कह्यो पति पद गहुवाला ॥ कुवत न गुनि मुनितिय कहाला

दो० पहिरे करन वरतन प्रियतिय भय धरतन हाथ ॥  
 प्रीति अलौकिक समुझि कै मन बिहै सेर घुनाथ ॥

चौ० सरिवन सहित पुनि चली निकेता ॥ तब सब भूपन कै भाचेता  
 कुटिल महीप स्वान ज्यों जागे ॥ जहं तहं गाल बजावन लागे ॥  
 कोइ कहै सीतहि लेहु छिनाई ॥ कोइ कहै धरि मारो दोउ भाई  
 जो बिदेह बरजे कहु लेशा ॥ लेहु लूटि तिनहुं कर देशा ॥  
 मुनि अनन्त करि सरिस मत कह्यो ॥ सरिस बंधु भय बोलिन सकही  
 बोले तब नृप साधु सयाने ॥ समुझि बूझि मति होउ अथाने  
 जो लक्ष्मण मुनि पै हैं कबहीं ॥ भये न रह्यो मनौं तुम तबहीं ॥

दो० बारणा ते बारणा कहै होइ जु वारणा नाहिं ॥  
 लागी बारणा बधत रिपु इन्हें सुवारणा माहिं ॥  
 दुति दिमाक बल बांक पन मान सहित तब नाक ॥  
 कीन्ही नास अपना सही दें कै हाँक पिनाक ॥

चौ० तहिते तजिक दु बचन उक्ता ॥ दिखो राम सिधा कर व्याह  
 यहि बिबिबादें बिपुल नृपाला ॥ अब सुनु परशु राम कर हात्ता  
 गोला कुं० गाधिराज की सुता रूप के सी अपस नामा ॥ भृगु  
 सुत गेचिक हजाइ अश्व देवरी ललामा ॥ भृगु बोले बरु मांग्य  
 उभे सुत दीजै देवा ॥ एक हम कायक पितहि भले करि बजक  
 रेवा ॥ हविकर करि द्वै भाग कह्यो याको तुम खाये ॥ होई सुत  
 द्विज प्रकृति मातु के नृपगुणायाये ॥ देत भाग गा बदलि बहुरि  
 तपसी बर मांग्यो ॥ सोई भये यम दग्नि जननिके कौ प्राल राग्यो ॥  
 तिन को सदल बशिष्ठ जेवाये नंदनि चलते ॥ गोमागत गेहा  
 रि भयो तापस तेहि चलते ॥ तप प्रभाव ऋषिराव ऋषिन में प्र  
 गट कहाये ॥ रच्यो स्वर्ग मखहेत मांगिरा में जे लाये ॥ यम दग्नि  
 हि परसेन रेणु का सुता बिवाही ॥ भे सुत सर में बड़े यरशु धर बि  
 णु कलाही ॥ एक दिन तिन की मातु चित्र से नै लखि मोही ॥  
 कह्यो पिता सिर का दु कै हू नहिं काट्यो वोही ॥ होउ सकल  
 जड़ रूप राम सुनि शीश निपाता ॥ बरलै चेतन बंधु को ज्याई  
 पुनि माता ॥ एक दिन सहस सुभाय हरी गोराम हत्यो तेहि ॥  
 पितु अरि भो सुत ता सुते ही ते बिपुल बारमहि विन सात्रिन के  
 करी वरी बिप्रन कहं सोई ॥ रहि महीं द्र गिरि मध्य सिंधु ते सु  
 नत चलोई ॥

चौ० इत नृप मूढन की गल मदरी ॥ मिटन न पाई जब तक सगरी  
 तेहि अपसर आयि भृगु नाथा ॥ लीन्हें धनुसर परशा हाथा ॥  
 गौरवरी शिर जटा बिशाला ॥ अरु रा नयन उर तुलसिक माला  
 सह जहु चित वै जा सुकि ओरा ॥ सो जानै जिव लीन्हि सि मेरा ॥  
 जहं तहं देखि देखि नृप भाजे ॥ बहु तेन रूप नारि के साजे ॥ ॥  
 बहुत सभय चररात शि नावें ॥ पिता सहित निज नाम चतवें ॥



जनक सहित सिय नाथी शीशा ॥ भृगु नन्दन लखि दीन अर्धशायी ॥  
 कोशिक ऋषिले दोनो भाई ॥ मुनिपद मेले नाम बताई ॥  
 रामहि देखि रहे ठगि ऐसे ॥ बोले पुनि अनजानत जैसे ॥  
 जनक जुरी केहि हेत समाज ॥ सीय स्वयम्बर है मह राजा ॥  
 आगे धनुष दूट महि देखा ॥ बोले तब करि क्रोध विशेषा ॥  
 हुर्ये रेजइ जनक बताउ धनुष कौने यह तोरा सोतजि ॥  
 सदाई समाज निकसि आवे मम ओरा ॥ नाहित नृप सब ॥  
 मारि देश तब चौपट करिहों ॥ तीन लोक में दूँढि तासु क-  
 रमद संहारिहों ॥ सुनि बिलखे पुरनारिनर हुर्ये कुदिलन ॥  
 रेश सब ॥ हृदय नहार्थ विषाद कछु बोले श्रीरघुनाथ तब ॥  
 सुनहु नाथ सब साथ प्रवल भावी लखि परई ॥ जो कुततिनु ॥  
 के कुलिस कुलिसतिनु का सम करई ॥ कहां शंभु को दूँड-  
 कहां हम बालक बरि ॥ होन हार करे सो दोस शिर पछो ॥  
 हमारे ॥ यथा तार फल पाकि के पतित होत खग नाम भव ॥  
 जो भावें सो कीजिये सब प्रकार हम दास तब ॥ सुनहु राम सो-  
 ददास सदा जो सेवा ठाने ॥ करे शत्रु कर काम ताहि को दास ॥  
 बखाने ॥ तेहिते हर को दराइ आजु जेहि खराडा होई ॥  
 सहसबाहु सम समुक्ति तासु गति करिहों सोई ॥ भृगुपति ॥  
 केर सुभाव सुनि भई सिया अति शोच बस ॥ तब तिन ते सु-  
 सक्याइ के बोले लखरा कुमार अस ॥ सुनहु विप्र पनवा-  
 ल बहुत धनुही हम तोरी ॥ तब न किहेउ रिस कबहुं आजु ॥  
 केहि हेतन थोरी ॥ तब जननी कर पाप पाप चिपुस सुर के-  
 रा ॥ अपर नृपन कर पाप चापचित चेति सवेरा ॥ रघुगति भु-  
 ज तीरथ विषं तजेसि प्राण गति हेत तेहि ॥ बिन समुक्ति रघु-  
 नाथ पर करत रोय परि तोष नहि ॥ रीतिजनक गति पद मोहि

तू ज्ञान सिखावत । सब धनुहिनि की सरिस शंभु को दराड  
 बतावत ॥ सहित राम सिय तोहिं खादि बन मांझि जुंभी  
 हों । नृप दशरथे मारि सकल पुरजनहि रोवै हों ॥ मरते धू-  
 तल तोषिके बहुरि तपै हों ताप बहु । जान करहु अस शिव स-  
 षथ तो न कहाँ वों नाम यह ॥ मुनि बोले पुनिलखरा मृखा-  
 कत मारत गाले । ईश चहे सो करे अपर ते रोष न हाले ॥ स-  
 व धनु एक समान कोन यामें अधिकाई ॥ कुवतै दूट पुरान  
 धुन न डारा रहै खाई ॥ जो नहिं प्रिय यह नाम तो लीजै अपर  
 धराइ मुनि । विप्रन की कछु कमी नहिं मुनि बोले भृगुनाथ  
 पुनि ॥ रे नृप बालक मंद देखु परसा की ओरा । जिहिते ब-  
 धि बहु भूप छीनि छीनी बर जोरा ॥ को जानै के बार सोपि विप्र-  
 न कहै दीन्ही । तो को बालक समुझि दील यत्न तो हम की-  
 न्ही ॥ अवतै परखु प्रभाव मय यम जनि फिर रोवाउ निज ।  
 नाहित डरि हों मारि फिरि निपटहि जातु न मोहिं द्विज ॥ हे मु-  
 निकत हर बार देखावत मोहिं कुदारी । फूकन ते तूरा उड़त उड़-  
 त नहिं भूधर भारी ॥ जो तुम होत उ सुभट तदपि हमरे कुल मा-  
 ही ॥ विप्र धेनु सुरसा धुलत इन ते कोइ नाही ॥ बंधे पाप हारे  
 अथश सब विधि भला जो खाइ गम । अस विचारि मन मारि  
 तव सहियत है कटु बचन हम ॥ गाधि सुवन मुनि लेहु अ-  
 है या बालक खाटा । जान चहत यम लोक ललित परिहारे  
 निज जाटा ॥ तोहि ते लीजै बरजि कछु क कहि सुयश हमारा ॥  
 नाहित सब के अक्षत आजु खल जाई मारा ॥ कौशिक स-  
 मुभयो मन बिंधे मुनि जानत हैं बालये । असन विचारत जग-  
 तपनि है कालहु के कालये ॥ हंसि बोले पुनिलखरा सुन-  
 न मुनि सुयश तुम्हारा । तुम्हें अक्षत को कहै अहे अस को



सर नारा ॥ जेन एक मुख चुकै करौ दश बीस मजूर ॥ जेहिने  
 सब सुनि लेइ सपदि है जवि पूरा ॥ सूरन बरगात सूरता का-  
 हर करत कलाप घर ॥ समुक्ति परत मोहिं कछुक दिन की-  
 नि सरहंगी आप वर ॥ मुनि लहसरा के वचन जनक मनमा-  
 हिं डेराहीं ॥ पुरवासी है बिकल बंदे आपुस के माहीं ॥ देखे  
 भूप किशोर गोर जेतने है छोटा ॥ तेतने खांट लखात डेरत  
 नहिं मन कर मोटा ॥ भृगु नन्दन करि कोप तव परणु सुधारउ  
 हाथ गहि ॥ बालक करु समर इत नाहित धरु धनु वारा म-  
 हि ॥ कह अनन्त यहि भांति हमें जो अपर प्रचारत ॥ तौ फि-  
 रि देख्यो समर चहै सो है माहारत ॥ पूजे पर रिस करे गुरु  
 कर पद लोपे पुनि ॥ पद परि रोंपे पाँव नीच के करम मिद सु-  
 नि ॥ बोले विश्वामित्र तब समहु जानि अज्ञानजू ॥ बालक  
 के गुण दोष दोउ गरात न जे बुधितानजू ॥ मुनि बोले भृगु  
 माथ याहि जो अबतक राखा ॥ सो सब शील तुम्हार भार-  
 ते कीन न माखा ॥ नाहित काटि कुठार उरि न होत उं गुरु ते-  
 रे ॥ तब मनमें सुख होत सोन मिदंते उर करे ॥ गाधि सुवन म-  
 नमें कह्यो मुनि सम अज्ञान आन कोउ ॥ इन्है विचारत रा-  
 राड मय अय मय जानत नाहिं दोउ ॥ कह्यो लयरा पितु को  
 करज जननी शिर दीन्ह्यो ॥ गुरु कर अन रहि गयो चहत हम-  
 ते सो लीन्ह्यो ॥ गये बहुत दिन बीति व्याजु बदिगा बहु भा-  
 र ॥ लीजै व्योहर बोलि तुरत में देहुं गनाई ॥ चाहि सकत क-  
 रि अचर प्रभु अचरहि जो करि देत चर ॥ तासु अनुज पर प-  
 रणु धर कैसे सके चलाइ कर ॥ मुनो जनक मुख तनक अहं  
 बालक कहु बादी ॥ मरन कहत मम हाथ चहत नहिं देखन  
 सादी ॥ बेगि करौ दृग ओट चहो जो याहि बचावा ॥ पाछे दिहो

न दोष काल याकर चलि आवा ॥ परम कठिन मम नाम सु-  
 नि गर्भ श्रवे नृप खनि सब । ताहि जरावत जंतु जड़ मुनि बो-  
 ले हैं सिलखरात ब ॥ सुनौ विप्र जो तुम्हें नीक उत साहन ला-  
 गे । तौ लीजै दृग मूदि देखि कोइ परे न आगे ॥ नाहित बन  
 भजि जाहु बोलि पठवा नहिं काहु । जरत होय जोगात पैठि  
 जल मांझ नहाहु ॥ बैदहि बोलि देखवाइये ज्वर कर होइ न-  
 दोष उर । सुनि कोपे भृगु नाथ अति डरे नारि नर जानि फु-  
 र ॥ लखि बोलि तब राम काम हों नाथ बिगारा । मोपर कीजै  
 रोष दोष बिन बालक बारा ॥ देखि धरे धनुवान कहि सि क-  
 दु जात सुभायन । जो ओत्यों मुनि भेष परत प्रमुदित तव पा-  
 यन ॥ हमरे कुल कीरीति यह काल हुते नाहीं डरें । हमहु  
 चूक अनजान की संत सदा दाया करें ॥ सुनि बोलि भृगु-  
 नाथ राम रिस जावे कैसे । अबहुं तक तव बंधु बिलोकत  
 टकार जैसे ॥ जो न याहि फल दीन कीन करि रोस कहा ह-  
 म । गर्भ श्रवे नृप नारि निकट ठाढ़े बैरी मम ॥ बहत न करव  
 रदहत तनु कटु कुठार कुशिल भयो । किधौं बसी करुणा  
 हिये की सुभाउ सो फिरि गयो ॥ सुनि बोलि पुनिलखरा ना-  
 थ में दास तुम्हारा । दूट धनुष नहिं जुरी किहै रिस बारहि  
 बारा ॥ जो अति शै प्रिय होय कछु कतौ करिय उपाई । बो-  
 लि गुरी द्वै चारि बहुरि दीजै जोर वाई ॥ बैठि जाहु करि क-  
 या अब पायन के रिपु होउ जनि । नयन तरेरे राम तब गे गु-  
 रुप है तजि कटु बकनि ॥ सुनि भृगु पति तब कोपि बचन  
 रघुपति ते भाषा । इत शठ बिन वत मोहिं भुरे उत सो दर रा-  
 खा ॥ करु मम सन्मुख समरन तौ तोहिं डरिहों मारी । त्रिप-  
 टै विप्र न जानु अहों में रिपु मदहारी ॥ धनुष तोरि अह-



मित भई मानहुं जीत्यो जगत सब । सोतव अकड़ मिटाइ हों  
 मुनि बोले रघुनाथ तब ॥ हे मुनि कहौ बिचारि बंदो जनि अ-  
 ब अधिकार्ज जो हम निदख विप्र अपर को शीश नवाई ॥  
 परसत दूट पिनाक करब हम मद केहि हेता । स्वामिहि से-  
 वक समर कहौ कस हेत निकेता ॥ यह प्रभुता प्रभुवंश ।  
 की अभें होय तुम ते डरै । गूढ़ गिरा मुनि राम की भयो ज्ञान  
 परसाधरे ॥ तब बोले हे राम धनुष श्रीपति कर येहू । आक-  
 र्षहु गहि पानि मिटे जेहि मम संदेहू ॥ कुवतै चढ़्यो पि-  
 नाक देखि भृगुपति पछि ताने । मारहु मम गति कूट कूट  
 सर सकल नसाने ॥ जानेहु राम प्रभाउ तब पुलकि गात यु-  
 ग जोरि कर । लागे पुनि अस्तुति करन जय रघुकुल म-  
 रीण मानहर ॥ जय जगदीश दयाल जयति सुर द्विज प्रति  
 पालक जय मुनि मानस हंस जयति तम चर कुल घालक ॥  
 जय शोभा मुख सिंधु जयति करुणा गुरा आगर । जय  
 बल विपुल वितंस जयति रघुवंश उजागर ॥ जय जग जा-  
 वत जीव की तव पद प्रीति न होइ है । तावत संश्रित शो-  
 क ते कूटिन मुख में सोइ है ॥

दो० जोमें अनजाने कहा सो क्षमियो दोउ धात ॥  
 अस कहि शीश नवाई मुनि मुदित भये बन जात ॥  
 हरये लखि पुर लोका सब बरखे ये चर फूल ॥  
 बाजे बाजत विविध विधि भाजे प्रति अनकूल ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम  
 सनेही कृत परशुराम वन यात्रा बर्णनो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गराप गिरा मुख दानि ॥  
 बरगो मानस मन कछु क नाटक चरित बखानि ॥

तब बिदेह मुनिने कह्यो होइ जो आयसु नाथ॥

क्यों सो मुनि कह गाधि सुत भयो व्याहु धनु हाथ॥

हूँ गीतिका छं० भयो व्याहु यद्यपि साय धनु के तदपि दू-  
त पठाइ कै । लीजै दशरथहि बोलि सहित बरात व्याहें आ-  
इ कै ॥ भल देव कहि लिखि भव दीन्हों पच ले धावन चले ।  
कार्तिक बंदो प्रति पक्ष दिन लिय बोलि कारीगर भले ॥ ति-  
न ते कह्यो पुर सकल साजहु सुभग भवन बितानजू । शिर  
राखि मन अभिलाष लागे करण गुण निरबाराजू ॥ बिर-  
चे कनक मय रंभ रंभ अचंभ मरु मणि पातजू । तिमि छै व-  
रि छनि करि बोलि लोहित सुमन मंजु लखातजू ॥ सुर-  
चित्र मित्र सरोज धारे द्रव्य कलि अलि धेनुजू । असितार व-  
न्दन बार मुकता हार हरित सुवेनुजू ॥ चहुँ और हीय अजो-  
र कुलिकारि गुलिक चौक पुरायहू । ध्वज कलस चापर  
छत्र शौरभ परिस तराग नुरायहू ॥

दो० जिमि सरगत शौपारा मणि जटित लँसे दिशि चारि ॥

बिधिवत कीन बितान तिमि निष्टन हित नरनारि ॥

चौ० कहेंत कहैं तहों की सामा ॥ जहें दुलहिन दूलह सियारामा  
नृप गृह सरिस सवन निज सजे ॥ योभा निरखि देव पतिल जे  
बसत लक्ष जहें कपट मरूपा ॥ तहें कर बिभों कि जाइ निरुपा  
कोशल नगर सकल नरनारी ॥ राम लखरा बिन रहे दुरवारी  
कोशिल्यादि कहैं नृप रानी ॥ बरि जननि सुत बादि बियानी  
राजहु के रहैं प्रिय अधिकारी ॥ मुनि लै गयो ठो रिसि डारी ॥  
तब ते मिली नख बरिय थारथ ॥ दलन दोय दुरव प्रद परमारथ  
यकुतौ बन पुनि अनुगरा लीन्हें ॥ अरि प्रसन्न हित हमहुन दीन्हें  
केहि पद ई जोख बरि लयावैं ॥ भेदिन बहु प्रब कछू न भावैं



तेहि क्षणा दूत अवध पुर आयी ॥ फरिा दिन सुनि नृप निकर बोलाये  
 करि प्रणाम पाती तिन दीनी ॥ लागे पढ़न प्रेम रस भीनी ॥ ॥  
 चौबोला छं स्वस्ति श्री श्री पत्री सुभस्थान जी । कोशल  
 पुर धुर पहंचे नृप कर कान जी ॥ लिखी बिदेह नगर ते बिस्वा-  
 मित्र की ॥ मिलि बांचने प्रशीस सहित सुर पित्र की ॥ कुश-  
 ल क्षेम तब तनै प्रहें मम साथजू । तिन हूँ केर प्रणाम चर-  
 गा धरि माथजू ॥ रौरे पुराय प्रताप प्रचल मम मख करी । ता-  
 रिनि पद रज डारि अहिल्या अध भरी ॥ धनुष यज्ञ पुरजन-  
 क जुरे नृप भूरिजू । गज इव पंकज राम सो डार्यो तोरिजू ॥  
 सीता हू जयमाल तिन्है पहिराय हू । भृगुपति करि अभिवा-  
 दन बनीहि सिधाय हू ॥ अव शुभ साजि बरात प्रार सुत  
 परगिये । सुनि नृप मुद यश लह्यो सो कैसे बरगिये ॥ जि-  
 मि काहू के क्षेत्र क्षीरा सब लै लये ॥ हें प्रसन्न तिन सहित  
 ग्राम कै यो दये ॥ धरि धीरज पुनि कह्यो जनक कैसे लखे ।  
 महाराज कहं छिपत कुमुद पंकज सखे ॥ सुनत भरतरि पु-  
 दवन दौरि आये तहौ । पूछत प्रिय दोउ बंधु कुशल युत हैं  
 कहाँ ॥ तब भूपति पत्रिका दर्श सो बांचेऊ । भये प्रफुल्लित  
 गात अधिक मुख मांचेऊ ॥ लागे निछावरि देन मुकर का-  
 नन दये । लखि समोद नृप सचिव सहित गुरु पहें गये ॥  
 दो० दीन पत्रिका बन्दि पद बांची मुनि सह मोद ॥  
 कह्यो कि सुकृती नरन कहं अवनि प्रसन्न कीये ॥  
 जिमि सब सरिता सिधु में जाहिं यदपि अनयास ॥  
 तिमि सुख सम्यति आवहीं धर्म दान के पास ॥  
 तुम सम सुकृती पुरुष को भयो अपरतनु धारि ॥  
 राम सरिस सुत जासु युग कौशल्या सीतारि ॥

सपदि सजाइ बरात वर चलहु भले कहित व॥

पुनि आये रनिवास सब बोलि सुनायो पत्र॥

भई मुदित रानी सकल दीन्हि निषिपन दान॥

पुर बासिन के हरय सुख को करि सके बखान॥

**हरि गीतिका छं०** करि सकै कौन बखान सारि स वेवान गृ-  
ह सब हिन सजे । रचना अलौकिक देखि निज चित लेखि  
चतुरानन लजे ॥ नृप धाम अति अभिराम तामाधि बन्धो दि-  
व्य बितानजू । बिधु वदनि शोभा सदन सुन्दरि करहि मङ्ग-  
ल गानजू ॥ कतहूँ पढ़े बडु वेद कतहूँ बन्दि गरा विरहा व-  
ली । कतहूँ टिके अबनी पः पाये नेवन नृत्य करावली ॥ दे-  
खत फिरें पुर लोग बदन योग सुर मुनि गात को । तब अपवधना-  
थ बोलाइ सचिवन कह्यो सज्यो बरात को ॥

**त्रिभंगी छं०** दीन्ह्यो जब आय सुमं चिन काय सु पाइ रजाय-  
सु सब धाये । लागे हरयातहि सजन बरातहि बरगान जा-  
तहि जो ल्याये ॥ कुंजर बहु कारे बड़ मत धोर परे वोहारै लक-  
ल छें । गज घंट जो बाजै जनु धन गाजै अति छुबि छाजै ध-  
क धक्के ॥ कंचन की ढारी कसो अंबारी मरि मय सारी पचरं-  
गी । बेंठे तिन माहीं नृप हरयाहीं देखि लजाहीं निरअंगी ॥  
बर बाजि अपने का एक ते एका चलनि विवेका जिन माहीं । क-  
बरे कोइ कारे सेत ललारे विविधि सँवारे टेह नाही ॥ छ-  
म छम छम कैं कुवन चमकैं फुरकि धमकैं पग धूमैं । भर-  
तादि नवीले कुंवर छबीले धसुस कीले चदि धूमैं ॥ गजर-  
थ बहु तेरे प्रखन को वृषभ घनैरे अति सो है । सुख पाल-  
अपारा मुतर सवारा परे वोहारा मन मोहैं ॥ भाले बर दोरे भं-  
डिन वारे अग रीत धारे फुलवाई । लीन्हें बहु ताजी आतष



बाजी विपुल समाजी गुनगार्इ ॥ सुंदर चौपाला एक बिष्णु-  
ला जलज प्रबाला मरिगन मयौ ॥ तामध्य बिराजै बालक छा-  
जै चमर दराजै इन उनयौ ॥ बाजै बहु बाजन विविधि अ-  
वाजन आरिणक ताजन पेधमकै ॥ बांधे हथियारा वीर अ-  
पारा तुषक तयारा असि चमकै ॥ एकवान मिठाई रुचिर  
बनार्इ सकट लदार्इ निजसंगा ॥ चौपै समि याना तंबू नाना  
छकरन पाना अरु भंगा ॥ रसमी गलीचा दीरघ बीचा छक-  
इन बीचा लदवाये ॥ कंचन के धौला अतर भरेला सुमन  
सजैला खँधवाये ॥ धन विपुल सँदूर खन भरे बिभूषन वसन  
अदृषन अति नीके ॥ अस्सरा अनेका नृत्य करेका भांड भें-  
डेका दृढ जीके ॥ यहि भौति चराता सजि भै ताता चली स-  
माता नहि मगमै ॥ सुनि सुनि नर धावाहें देखन आबहिं शी-  
स नवावैं नृप मगमै ॥ भये सगुन अनंता हित भगवंता सुर  
मुनि संता तिन माही ॥ गुरु सहित नरेणा मनहुं सुरेशाल-  
मत विशेषा लघु नाहीं ॥

कविन करन बरात को पयान नर नाह जब सुरगरा आस-  
मान देखत बहारहैं ॥ डेढ़ कोटि हैं मतङ्ग औ तुंग तीस कोटि  
पालकी पचीस कोटि पैदर अपारहैं ॥ भारवरदार सवासात  
कोटि ऊंट जाति सेवक समूह पाँच कोटि बाज दारहैं ॥ रथ  
सवातीन कोटि दशरथ राय जीके सादिलारब नौ हजार सौड़िया  
सवारहैं ॥

दो० जहं नहं करन निवास मगयहुं चे पुगमिधिलेश ॥  
लेन चले अगवान मुनि साजि समाज सुवेश ॥  
कनक कलस को पखा भरि भोजन विविधि प्रकार ॥  
दधि चूरा भूषण बसन लैलै चले कहार ॥ ॥

चौ० बरबरात अगवानिन देखी ॥ इतउत भये अप नन्ह विशेषी  
 हरखि परस्पर भे एक भेला ॥ पुनिकहु दूरि चले बग मेला ॥  
 जनु पश्चिम कर सागर भारी ॥ आवत ताहि चला लै दारी ॥  
 सकल सौज नृप आगे कीन्ही ॥ लीन्ही हरखि पाचकन दीन्ही  
 पूजन करि सब भाँति सोहावा ॥ जनवासे मह आनिटिकावा  
 मुनि सिय सिद्धी सकल बोलाई ॥ भूपपहुनई करन पड़ाई ॥  
 सुरपुर के जे भोग बिलासा ॥ दिये पूरि तिन सब के पासा ॥  
 सिय प्रभुता रामै लख पाई ॥ अपर जनक की करें बड़ाई ॥  
 पितु आगमन जानि दोउ भाई ॥ मुनि घर संग चले हरवाई ॥  
 आयै जहँ जनवासे भूपा ॥ चले बिलोकि नृबित जनु कृपा  
 कीनि प्रगाह मुनि पद धरि शीघ्रा ॥ नृपहि गाधि सुत दीनि अशीघ्रा  
 पुनि पितु चरण परे दोउ भाई ॥ मुदित भूप उर लिये लगाई ॥  
 विप्रन सहित बशिष्ठे बन्दे ॥ पाइ अशीश भये आपनन्दे ॥  
 भरत सचंधु मिले सुखमानी ॥ सकल समाज भेदि हरखानी  
 कुशल प्रश्न कहि तिष्ठत भयऊ ॥ सहित देव जनु मन्दिर नयऊ  
 नाक नदी नृत्तहि करि गाना ॥ कौतुक करहि बिदूषक नाना  
 भूप निकट सोंहें सुत चारी ॥ मुदित भये लखि पुर नर नारी  
 विविके वेद भये कोइ कहई ॥ अपा बंदे अब आयै अहई ॥  
 दाहिने दिशि हैं लक्ष्मण रामा ॥ बाँये भरत शत्रुहन नामा ॥  
 धन्य भूप भल देव मनाये ॥ जी सुत चारि मनोहर पाये ॥  
 धन्य बिदेह सुनैना दोऊ ॥ धन्य सुता सुत हम सब कोऊ  
 जित सिय सहित सुवन चहुँ हेरे ॥ पुनि देखब बिवाह इन केरे  
 दो० वीनतालिस दिन लगन ते आई प्रथम बरात ॥  
 तेहि ते पुर आपनन्द अपति सकल लोग हरयात ॥  
 चौ० बिधिते विनय कहैं यहि भाँती ॥ देहु बड़ाइ दिवस अरु राती



गये बीतिवासर यहि भावा ॥ लगन केर दिन जादिन अपावा  
 हिम ऋतु मार्ग मास सुखमूला ॥ ग्रह तिथि नखत योग अनुकूल  
 लगन शोधि विधि नारद हाथा ॥ पंढे दीनि जहं तिरहुत नाथा ॥  
 गनी जनक के ग निकन खोली ॥ हरषिक ही तिन अहे अपोली  
 मुनि बिदेह बोले सुख पाई ॥ अवध पति हि लै अपावे जाई  
 सता नन्द तब साजि समाजा ॥ आये जहं जन वासे राजा ॥  
 कोश लेश कर विभी बिलोका ॥ अतिलघु लागति न्हें सुरलोका  
 भयो समय पग धरिये नाथा ॥ साजि समाज चले तिन साथा  
 लखि सुर सकल सुमन बरषाये ॥ चढि चढि जान जनक पुर आये  
 पुर शोभा लखि देव लोभाने ॥ निज निज लोक सबन लघु जाने  
 विधिहि भयो अचरज अति भारी ॥ निज करनी नहिं कतहुं निहारी  
 शंभुक ह्यो जनि भर्म भुलाहू ॥ देखहु राम सिया कर व्याहू ॥  
 जासु किये हम तुम सब कोई ॥ यहि पुर आजु विराजत सोई  
 मुनि सुवचनु सुख लह्यो विधाता ॥ आगे दीख दशरथे जाता  
 सबन बीच नृप सोहत कैसे ॥ अमरन मध्य अमर पति जैसे  
 चढ़े तुङ्ग तं वेरम माहीं ॥ विविकर कनक लुटावत जाहीं  
 चौपाले मधि रघुपति सोह ॥ विधि हरि हर सुर देरि बवि मोहे  
 विशु विधिहि विधि भवे सराहें ॥ बसु द्रुगलखि दिशि सरसुनिकों  
 बड़ भागी भेचहु हजार ॥ अस कहि मिले बरात मंभारा ॥  
 रामहि देरि नगर नर नारी ॥ करहिं आरती हाथ पसारी ॥  
 आवत जानि बरात सुनें मा ॥ लागी साज सजावन ऐना ॥  
 विविध बधू धरिक पद सरूपा ॥ मिली मादिरनि वासे भूषा ॥  
 देरि सबन सन मान्यो रानी ॥ चीन्हे बिना प्रारा भम जानी ॥  
 समें समुभि सब सखिन समेता ॥ चली मुदित बरु परछन हेता  
 गावें गीत मनोहर नाना ॥ सुनि छूटें तपसिन के ध्याना ॥

दुलहे देरिव अधिक हाथानी॥ भई प्रेम बस प्रकुलित रानी॥  
 लाक वेद विधि करि मुखपाई॥ अर्घ देत तर मंडक लाई॥  
 प्रीति सहित आसन बैठारी॥ कनक थार आरती उत्तारी॥  
 मणि मय मांडव छुबियहि भांती॥ देरिव परीत है अगशिात बाती॥  
 भूषण बसन निछावरि करहीं॥ थाचक पाइ मोह उर भरहीं॥  
 मिले मुदित मन समधी दोऊ॥ सो उपमा कहि सकैं न कोऊ॥  
 देत पावड़े अर्घ सोहाये॥ सादर जनक मंडकै ल्याये॥  
 आसन दीन सबहि सनमानी॥ पूजे विप्रश्चन्द मुनि ज्ञानी॥  
 सहित बरात दशरथे पूजा॥ मानि ईश सम भावन दूजा॥  
 रामचंद्र मुख चन्द सोहाना॥ चितवैं सकल चकोर समाना॥  
 समे मधुमति बोलै ऋषि राई॥ बेगि कुंवरि उपब्रानहुं जाई॥  
 मुनि उपराहित की बर बानी॥ चली सियै ले सरबी सयानी॥  
 पद कसना समनारव छाई॥ मनहुं मदन साहनी सोहाई॥  
 चंद्र मुखी तहि इव मृगनयनी॥ सकल मनोहर को किल बनी॥  
 सिय प्रोभा नहिं जाइ बरवानी॥ जगदंबिका रूप गुण रवानी॥  
 आवत देरिव बरातिन सीता॥ कीन मनहिं मन प्रसात पुनीता॥  
 सुतन सहित दशरथ हाथाने॥ बरबि सुमन सुरहने निशाने॥  
 पहुंची जब मंडक बैदेही॥ लागे सांति पढ़न मुनि नेही॥  
 कुल गुरु गौरि गरोश पुजाये॥ प्रगट लेन पूजा सुर आये॥  
 सुर पुजाइ शुभ आसन दीन्ह्यो॥ पुनि मुनि बोलि सुनै नै लीन्ह्यो॥  
 जनक सब्य दिशि सोहत सोई॥ मनहुं सुकृति छुबि मूरति जोई॥  
**दो०** कनक कलस को पर रुचिर भरि पिपूष निज पानि॥  
 लागे धोवन बर चरण नृप रानी सुरब मानि॥  
 जे पद बसत महेश उर ध्यावत मुनि जन देर॥  
 ते पद पदुम परवारहीं धन्य भाग नृप केर॥



चौ० करतल जेरि कुंवरि बर दोऊ ॥ शाखो चार कीन मुनि सोऊ ॥  
 पानि ग्रहातेहि पाछे भयऊ ॥ कन्या दान भूप बर दयऊ ॥  
 करि सुहोम गरि बंधन रागी ॥ प्रमुदित होन भौवै रं लागी ॥  
 मरिण मय थंभ रही छुबि पूरी ॥ निरावत मन है मदन गति भूरी  
 भये छुकिन सब देखन हारे ॥ फेर फेरि कर धिन बैधारे ॥  
 राम मिया सिर सेंदुर दीन्हा ॥ मनहुं उरग शशि भूषित कीन्हा  
 पुनि दोउ एक आसन बैदारी ॥ दरिबलोग सब भये सुरवारी  
 कहैं खुनाथ तहों की शोभा ॥ बरणि सके जग अस कबिकोभा  
 दो० बनी बनी जाकी जनी लगत जनी दधि केरि ॥

बनो बनो जाको जनो कृष्ण जनो जनु हेरि ॥

चौ० नय बिदेह मुनि आय सुपारि ॥ लीन्ही तीनिहुं कुंवरि बोलाई  
 नाम मंडवी गुरा मय चीन्ही ॥ सो नृप व्याहि भरत कहैं दीन्ही  
 परम सुशील उरमिला नामा ॥ सो लक्ष्मणाहि बरी अभिरामा  
 श्रुति कीरति छुवि जाइ न बरणी ॥ रिपु मूदनहिं भूप सो परणी  
 राम सरिस भे सकल बिवाहा ॥ त्रिभुवन में भरि रहा उछाहा  
 सबर सुन्दरी राजहिं कैसे ॥ जिय युत बिभुन अवस्था जैसे  
 कुराडलिया वषुष बितान विचि वमधि जीव अवध अव  
 वधेश ॥ जाग्रत अवस्था श्रुति सुयश विभु विश्वक रिपु देश  
 विभु विश्वक रिपु देश स्वपन मंडवी विमल मति ॥ विभु  
 तेजैक सो भरत उरमिला उदित सुरवोपति उदित सुरवि  
 पतिकेर विभु प्रागे कं लक्ष्मणा अदुरव ॥ तुरी सिया बि  
 भु राम जी अन्तर यामी दिवि बपुरव ॥

चौ० कुंवरि कुंवर अनरूप निहारी ॥ मुदित भये सुरनर मुनिगारी  
 अवध राज लखि अपति मन भाये ॥ कियन सहित जनु चहुं फल पो  
 दो० अर्थ क्रिया आधीनता धर्म कि प्रथा शक्ति ॥

कामक्रिया करत व्यता मोक्ष के केवल भक्ति॥  
 श्रुतिकीरति रिपुहन अरथ भरत मंडवी काम॥  
 धर्मधरणी धर उर मिला मोक्ष जानु कीराम॥  
 नृप मरिा दाय जु दीन अति हय गय रथ हथियार॥  
 भूषणा पट गौरतन गरा दासी दास अपार॥  
 लीन अवध पति मुदित मन दीन जाहि जो आस॥  
 उबरि रह्यो याचकन ते सो आवा जनवास॥  
 तब बिदेह तहें सबन की बहुविधि बिनती कीन्ह॥  
 सुनिसन मान्यो अवध पति मुनिन आशिष दीन्ह॥

चौ० पुनि दशरथ जनवास सिधायो॥ देवन देरि व सुमन बरथाये  
 तब बनितन मुनि आय सुपाई॥ लरिकन कोह बरवली लचरि  
 गौर प्र्याम छवि अभित अंग॥ व्याह साज सोहें सब अंग  
 कमल नयन चितवत चितचौरें॥ देखि देखि युवती तृणा तोरें  
 कोह बरलाइ सकल अनुरागी॥ लौकिक रीति करन तहें लागी  
 प्रभुइ उमाल हकवरि सिखावें॥ सीतैं श्री शारदा बतौवें॥  
 निज कर मरिा बहुरूप निहारी॥ प्रेम बिबस सिय सकतन दारी  
 हास बिलास भूयो बहु भांती॥ पुनि आयि जहें सकल बराती  
 बहुरि रसोई भई तयारा॥ बोलि पठाये जनक भुवारा ॥ ॥  
 परत पावड़े मंदिर आयो॥ चरणा छालि चोकिन बैठाये ॥  
 सुतन सहित दशरथ पगधोये॥ आसन देइ सुवारन जोये।  
 लागे ते परसन पनवारा॥ यदर सब्यजन विविधि प्रकार  
 नाना विधि पकवान मिठाई॥ दधि गोरस फल फूल खटाई  
 बरिा मजात देखि अनुरागे॥ पंच कौर करि जेवन लागे ॥  
 वधू बिलोकि लगी गरि यादन॥ सुनहुं राम दूलह मन भवन  
 दो० बने फिरत जो आपके गुरु ही विश्वामित्र॥



तौ केहि विधिरघुनाथ तुम कारज करौ शक्ति॥  
 जनक सुता के जनक को जनक कहतु सब ग्रह॥  
 कौन कौन के जनक ये या को करौ निवाह॥

चौ० सुनियत अज के सुत दश स्थन्दन॥ दश स्थन्दन के भे अजनन्दन  
 यह अवरोव परी केहि भांती॥ समुझि परत असमकान बगती  
 मुदित होइ सब सुनिदो गरी॥ अमुके परसों कहैं पुकारी।  
 यहि बिधि सब हिन भोजन कीन्हा॥ आदर सहित आचमन लीन्हा  
 देइ पान पूजे मिथि रेशा॥ जनवासे आये अवधेशा॥  
 इति श्री विष्णु भगवत सव मन आगर यश उजागर श्रीरघुनाथ दास-  
 राम मने ही कन राम चन्द्र विवाह वर्णनो नाम नवमोऽध्यायः॥

दो० मुमिरि राम सिय सन्त गुरु गराप गिरा मुख रानि॥  
 कहौं कलेऊ मत कछुक कोशल खंड बखानि॥

चौ० निशानि रसि सब सोवन लगे॥ बड़े प्रात कोशल पति जागे  
 प्रात क्रिया करि आय सुपाई॥ चारि लाख बर धेनु मंगाई॥  
 विप्रन का दीन्ही नरनाहा॥ गजरथ बाजि जाहि जेहि चाहा  
 कीन्ही याचक सकल सुखारी॥ यथा अभ्र दै क्षेत्रन वारी॥  
 तेहि अवसर नृप मंत्री आये॥ करन कलेवा भूप बोलाये॥  
 उठे कुंवर पतु आय सुपाई॥ चदि चदि घोड़न चले सिधाय  
 कोइ अरबी जंगली पहारी॥ चिर चंचक चंपा खंधारी॥  
 कोइ कबली अंबोज कोइ कच्छी॥ पोत मेमना मुंजी लच्छी  
 कोइ किसमी भुठार फुलवाई॥ गरी गुराठ जुमिल दीर आई  
 श्याम करण कुम्भैद पठानी॥ टांघन तुल्की पच कल्याली॥  
 मुसकी सब जइरा की पोये॥ पीन नबीन विशाल अदोये॥  
 सकल अलंकृत चलनि मुगीका॥ सव तेतुंग राम कर नीका  
 बिष्व विमोहन हेतु बिचास्यो॥ बाजि भेयज नुमन सिज धास्यो॥

पहिरेपठ भूषणातन माहीं ॥ चपलतुंगनचावत जाहीं ॥  
 मनहुं मेघ युत उडगणादामा ॥ जातनचावत शिथिलभिरामा  
 देखें जहंत हें लोंगलुगाई ॥ कहें जातहें चारों भाई ॥ ॥  
 पहुंचे जब सब जनक आगारे ॥ कनक पलंग रातिन बैठारे ॥  
 बहुविध के भोजन धरि आगे ॥ नेगपाइ निज जेवन लागे ॥  
 अचवन करि बैठे तिन पासा ॥ लगीं करन तिय हास बिलासा  
 एक सरखी बोली तुव भाई ॥ केहि हित सुत जनमें हू विरवाई  
 कह्यो राम कत बूझत येह ॥ निकट नरेश परीक्षा लेह ॥  
 अपर बसन करव्यो निज ओरा ॥ मिले चोर तुम सब चित चोरा  
 तेहि क्षणाल इमी निधि की नरी ॥ सिद्धि नाम लै सरिवन सिधारी  
 सहजानन्द निमदन मंजरी ॥ चंद्र कला कमलाक्ष अपञ्जरी  
 चन्द्र मुखी चंद्रावतियोगा ॥ विमला उत कर्बिन प्रिय भोगा  
 चित्रा चित रेखा ईशाना ॥ कृपा कांचरी सत्या जाना ॥ ॥  
 सुदङ्ग सा चंद्रान निहंसी ॥ सुधा मुखी मुख मंजु प्रशंसी ॥  
 माधुर्या उज्ज्वल विषदाही ॥ चरु शिला अतिशीला साही  
 ऐरी अली अनेक अनूपा ॥ सहित सिद्धि आई अलभूपा  
 रघुपति छवि अवलोकि जुडानी ॥ बोली बिहंसि हास कीवनी  
 सुनियत लाल काम प्रतिनीका ॥ तब अंवन की हों तेहि पीका  
 हम चित चोरि सासु पहें आये ॥ तुमही देखत बदन दुगायो  
 बोली सिद्धि रावरे भगनी ॥ ऋषि किमि बरी हरी नत मगनी  
 कह्यो लषराज सलिरव्यो लिलारा ॥ तैसे होत दरत नहिं दारा  
 हम नरेश सुत जनक योगीशा ॥ भयों व्याह भावी बस दीशा  
 कबते राजकुमार कहाये ॥ पाल्यो ऋंये ऋंये उपजाये ॥  
 हलते भलतापस सब दिन के ॥ लेवो लाल हमहुं शिथिलन के  
 बोली कलावती सिद्धि भगनी ॥ लइमी निधि की सारि सुलगनी



दो० एक कुमार पुनि मुनिन संग रहिय हिरस की बात॥  
 सिरथो कहाँ ऋषि तियन पहँ की राख दिगतात॥  
 कह्यो शत्रुहन सत्य परितुमहँ कुमारी आहु॥  
 तुम कहँ पायें ज्ञान यह की कौट करि अलनाहु॥  
 चौ० बोली चन्द कला कर देकी॥ तुम साधुन के बंधु धिवे की  
 गैरे कोरस हासन चाही॥ परस्वारधी संत गति आही॥  
 हमहु सुनि असनेह तुम्हारा॥ दरश हेत द्वारे पग धारा॥  
 गइ उ चीन्हि विन कहँ पतीजै॥ तन धन ते सेवा अब कीजै॥  
 मर्य दुसित को जो नहिं भारै॥ लगे दोष नत मंत्र विसारै॥  
 यहि विधि बदिवाते सुख लेवै॥ निज निजरु चिस बरामे सेवै  
 कह्यो सिद्धि हम नारि अपावन॥ पर एक गुराहु दीन्ह जग जावन  
 जेहिते नेह करै अनुरागी॥ सर्व सुजाहु सकें नहिं त्यागी॥  
 तिमि तुम ते गनी हम प्रीती॥ कयें निबाह समुक्ति निजरीती  
 कह प्रभु मोहि सनेह समाना॥ प्रियन कह्य यह जान जहाना  
 तुम प्रिय प्राण सरिस मोहि मांस॥ मां गि विदा गवने जन वास  
 बोली बहुरि जीति हम लीन्हा॥ दिहल फेरि मुख हम तजि दीन्हा  
 यहि विधि बात न सब न हरारि॥ जन वासे आये सब भाई॥  
 इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास  
 राम सनेहो कंत राम बिबाह कलेऊ करन विधि बरीनो नाम दशा -

मोऽध्यायः १०॥

दो० राम रमत जो सब न में सब जहँ रमै सो राम॥

राम हिलरि वरघुनाथ जन लहत स्ववाञ्छित काम॥

चौ० नित नव प्रादर करै नरेण॥ भूषे चलन देत नहिं देशा॥  
 कौशिक कही जनक सुनि लीजै॥ बहु दिन भये विदा अब कीजै  
 भले नाथ कहि सभा मैफारी॥ जहँ तहँ लागी होन तयारी॥

मुनिनिश्चयेदुरजनभ्रुकुलानि ॥ जिमिचकवाकजातरविजाने  
 जनक विविधि मेवापकवाना ॥ दीहेयते पंथ अस्थाना ॥  
 बीससहस्रसंदुरसजवाये ॥ स्यंदनसहस्र पचोससोहाये ॥  
 तुंगलारवसुरभी युगलारवा ॥ वहिपीलक्षसवाई भाखा ॥  
 कनकबसनगरिभूषणभूषी ॥ अनगनभाजनसिविकारूरी  
 औरीवस्तु अनेक प्रकारा ॥ प्रथमपवाई अवधमंभारा ॥  
 तबविदेह गुरु सचिवबोलाई ॥ कह्यो लयावो भूपहिजाई ॥  
 मुनिमंत्री तितजाइ सुनायो ॥ विदाहेतमिथिलेशबोलायो  
 दशायमुनिलेदूलहसंगा ॥ तथावरातसाजिवहुरंगा ॥ ॥  
 राजभवनगवनेलखिलोगा ॥ हरयशोचबस भयवियोगा  
 एक एकतेकहें विशेषी ॥ आजुलेहुभरिदृगकुबिदेखी  
 भूरिभागबिधिदरशनहीने ॥ सोअबजाततयारीकीन्हें ॥  
 भूपभवनजबपहुंचेजाई ॥ बैरारेसबहिनसचुपाई ॥ ॥  
 विनतीभईपरसपरनाना ॥ समसमधीतिनसमकोआना  
 जनकविदाहितसोजमंगाये ॥ देरिसमासवअचरजपाया  
 मरिअनमोलअनेकअपारा ॥ कनकगनेकोकेतनेभारा  
 भूषणभुभगएकतेएका ॥ भरेमजूसाचित्रअनेका ॥ ॥  
 बसनलपदपाटअपारि ॥ परनरम्यअतिशोगुराभारे ॥  
 भाजनमनिहाटकनुकेरे ॥ अतिबिचित्रबहुभांतिघनेरे ॥  
 मेवाधिरउत्तमएकवाना ॥ धेरकूटइवसुरवप्रदनाना ॥ ॥  
 शस्त्रसकलस्यंदनगजपांती ॥ सिविकासुतरमुहेंसबजाती  
 औरीवस्तुभांतिबहुसाखी ॥ हाथजोरिअस्तुतितबभायी  
 हेअवधधरापिमलपराकेतू ॥ सकलकामपरिपूरासेतू ॥  
 मंजिलजयहसंजदेखाई ॥ जिमिकोइस्वरोसुमेरहिलाई  
 नरप्रभुईशबड़ेजेअहई ॥ तिनकीरीतिबेदरमिकहई ॥ ॥



दास फूल फल जल जो देही ॥ प्रभु तेहि अधिक प्रीति ते लेही ॥  
 आस विचारि मोहिं दृढ़ विश्वास ॥ पुनि हों यम मन की तुम आस ॥  
 मुनि नरेश निज कर सिर धारी ॥ गढ़ गढ़ हें अपस गिरा डू चारी ॥  
 करिय कहा मिथिले शब डारि ॥ जिन घर हमहु प्रतिष्ठा पारि ॥  
 निज सम सब विधि मोहि करि लोहौ ॥ उभै लोक अनधि यश रेहौ ॥  
 या भैं अचरज अहे न कोरि ॥ मलय समीप कुत रु हरि होरि ॥  
 जो गुरु लघु लघु तान नैवारी ॥ सोउ छोट कछु होत न भारी ॥  
 मिले परस्पर कंठ लगाई ॥ जय जय धन्य धन्य धुनि कारि ॥  
 यथा तथा विधि विवि विलगने ॥ बरये सुमन देव सुख माने ॥  
 तब बिदेह लहि आनंद भारे ॥ निज कर सब दूल हरि गारे ॥  
 मनि भूषण पट परम सोहाये ॥ नख सिख कवरि विचित्र चारे ॥  
 बछपि सब अनप्राकृत सामा ॥ तदपि लगत लघु तन आभा ॥  
 पुनि नरेश प्रभु पद सह गहेऊ ॥ नर तन धरे केर फल लहेऊ ॥  
 मन में कहत लोग सुत बाहे ॥ कन्या का कछु कमती आहे ॥  
 जो जानु की न होत हमारे ॥ राम चंद्र किमि ओते द्वारे ॥ ॥  
 विप्र वेद धुनि करि हर माने ॥ दान मान दैं नृप सन माने ॥  
 सकल बराती तब पहि राये ॥ यथा योग्य जो जेहि जस भाये ॥  
 बंदी जन गन गुराणी अपारा ॥ रुचिल रिव दान दीन अनपारा ॥  
 तेत हें सकल अनृप सोहाही ॥ लोक पाल लरि जिन्हें लजाही ॥  
 रघु पति छवि माधुरी अनन्ता ॥ रहे देरि व सुर नर मुनि सन्ता ॥  
 बहुरि सुने ना धाम हंकारे ॥ मिच मंडली सहित पधारे ॥  
 रानिन देरि व लह्यो सुर बभारा ॥ बैदारे सब करि सत कारा ॥  
 दिव्य जलज मनि कन का भरना ॥ बसन रम्य उत्तम बर बरना ॥  
 नख शिख दूलह सकल सजाये ॥ सरवन समेत विचित्र सोहाये ॥  
 नारि वृन्द जिमि शाशि चकोरी ॥ निरखहि प्रभु छवि पलक मोरी ॥

सिया मातु कर जोरि रसाला ॥ कह्यो बत्स तुम दोउ कुलपाला  
 सुनिये जीवन प्राण अधारा ॥ बिन ती यह मम बारहि बारा  
 भूपसचिव हम सब चरदासी ॥ जाति बंधु जहं तक पुर वासी  
 सबहि प्राण प्रिय सुता हमारी ॥ कबहुं लागि न ताति बयारी  
 दूग पुतरी दूव सब दिन पाली ॥ निरखत रहि नु यथा मनि ब्याली  
 तुमरे कर निबाहुति न केरा ॥ करहु सो मोद लहै मन मेरा ॥  
 अस कहि कुबेर लगाये छाती ॥ कीनि निछावरि नाना भांती  
 परी चरगा समुझाई सुभाये ॥ पाइ अशीश मंडकै आये ॥  
 तब नृप विहा किये शिर नाई ॥ जन वासे आये हर याई ॥ ॥

दो० आतह पुरानी सकल विकल नारिले संग ॥  
 अरिापट दिव्य अपमा पबर सजे सुतन के अंग ॥  
 नख शिख साजि सरूप सरिव लखि वोरत न आरा ॥  
 चलन निकट गुनिलहै दुख को दिन मरण समान ॥

दो० सासु ससुर गुरु देव भूसुर सन्त अनन्त हित ॥

करहु सुपति की सेवा अस कहि लिहिनि लगाइ ॥

चो० जे मति धीर नारि वय भोरो ॥ तिन मन अतिकठोरता धारी  
 कीन्ही बिलग सुता महितेरा ॥ रोवैं मिलै अपर स्वर टेरे ॥ ॥

सुनि धुनि द्रवै दाह पारवाना ॥ चेतन की को करै बखाना ॥

सुता कहै मेरी महतारी ॥ लीजै सुधिलखि दीन हमारी

सुनि महि मातु गिरी मुरझाई ॥ दोरिखनि टेकिन समुदाई

सुक सारि कजे पिंजर भीरा ॥ हाय सिया कहित जैं शरीरा ॥

तिन की दशा अपनै सी देखी ॥ दिये संग करि प्रेम विशेषी ॥

पुरजन विकल बियाग घनेरे ॥ मृत्यु मिले मांगें विधितेरे ॥

जन कहि देखि मिली लपटाई ॥ हूँ अधीर धीर धीर छुड़ाई ॥

मंजिन दिव्य बेवान सजाये ॥ मनहुं महि पगूह अपर सोहाये



असन बसन आदिक बहुसामा ॥ सेज पीदि लोवर सुख धामा ॥  
 वस्तु समस्त अनूपम सारी ॥ आपनि जानमहं धरी सुधारी ॥  
 तिनमा आपनि कुंवरि बैठाई ॥ त्रैलख नृपजा हित सेव कारी ॥  
 अरु दीन्ह बहुदा सपुत्रीता ॥ विकल लोग गावहिं गुनगीता ॥  
 उठे बैवान देखि सुर हरये ॥ हनिनिशान कुसमावलि खरये ॥  
 पाछे भूप चले पद चारी ॥ पठवन कन्या आरापियारी ॥ ॥  
 मंत्री पुरजन जे गुणा भारे ॥ नृपसंग सकल जात मनु भारे ॥  
 आवत पुरयष चले बिवाना ॥ सिविका करि हरि धरे नाना ॥  
 नगर नारिनर निरखि मनावै ॥ हेविधि कुंवरि बेपि फिर आवै ॥  
 बाहेर नगर रुके उजब जाना ॥ नृपदिग जाइ कीन सनमाना ॥  
 बत्सन रोव हरहौ चुपाई ॥ बेगिले वं में तुम्हें बोलार् ॥ ॥  
 ज्यों त्यों करि धोरज उर धारा ॥ बिदा कीन मन कष्ट अपारा ॥  
 पूजि विप्र अवधेश सिधाय ॥ मंगल मूल सगुन बहु पाये ॥  
 जय जय कहि सुरवर सहिं फूला ॥ बाजे बाजन विविध समूला ॥  
 नृप करि चिनय महाजन फेर ॥ याचक सब परतोधि निवेरे ॥  
 तब बिदेह बोले अनुरागी ॥ नाथ मोहिं कीन्हो बड़ भागी ॥  
 कोश लेश समधिहि सनमाना ॥ पुनि प्रभु ते मिलि वचन बरसा ॥  
 राम करह किमि सुमुख बडाई ॥ चितानंद तुम सब सुख दार् ॥  
 सेवक समीप दरश मोहिं दीन्हो ॥ सब विधि ते आपन करि लीन्हो ॥  
 तदपि एक बर दीजे सबहुं ॥ मनत वपद परि हो न कबहुं ॥  
 मुनि रघुपति समुरै सनमान्यो ॥ पितु बशिष्ठ कौशिक समजान्यो ॥  
 दो० भरथ लयगा ऋषुसूदन हि मिले विनै करि राय ॥  
 श्रीशानाडु बापाइ सब बंधु चले हाराडु ॥  
 कौशिक मुनि पद नारु शिर बोले निरहुतराज ॥  
 नाथ कृपातव दास के भये सिद्ध सब काज ॥

सो० सकल मुनिन शिरनाइ पाइ अशीस विदेह सब॥  
 फिरे भवन पछिताइ प्रमुदित चली बरात उत्त॥  
 गीतिका छं० इत मुदित चली बरात बालक बाजि जात न  
 चावहीं॥ मग लौ लखि रघुनाथ छवि निज जन्म को फल  
 पावहीं॥ बरवास करत निवास शुभ दिन अवध पहुँचे आ-  
 इ के॥ पुर नारि वर मुनि सकल जहै तहें चले देखन धाइ-  
 कै॥ नृप धाम प्रति अभिराम को शिल्पादि रानिन जाने-  
 हूँ॥ अनु राग बस है शिथिल मंगल चार पुनि सब ठाने हूँ॥  
 दाँधि दूवत नुल तुलसि दल फल फूल धन निशि आर-  
 ती॥ धरि थार रवनि अपार गावत चली मानहुँ भारती॥ ज-  
 व द्वार गई बरात प्रमुदित मातु सब पर छत भई॥ करि वे-  
 द विधि कुल रीति पाँडेइ देत मंदिर लै गई॥ तहें चारि-  
 सिंहासन मुनिन पर कुँवरि कुँवर पधारेऊ॥ पग धोइ करि  
 आरति निछावरि विविधि बस्तु उत्तारेऊ॥ अवलो-  
 कि सुत वर बधुन युत आनन्द बस जननी भई॥ जिमि-  
 मूक पाँवे वाक्य पार सुरेंक अंधार वी गई॥ मिलि कोँ लो-  
 किक रीति तब सुत अस्तुधा सकुचावहीं॥ सुर पितर पूजि  
 पुजाइ माँगें नीक सकल रहावहीं॥ महिपाल बोलि वरा-  
 त दीन्हें जान पट भूषण भले॥ सिरनाइ पाइ रजाइ रामे रा-  
 खि उर निज पुर चले॥ पुर नारि नर पहिराइ सेवक छुक्ति  
 सब याचक भये॥ तब भूप सहित बशिष्ठ भूसुर संत अंत ह पु-  
 र गये॥ शिरनाइ सब अन्हवाइ रानिन विविधि असन-  
 जे बाये हूँ॥ करि दान प्रति सनमान देत अशीस सकल सि-  
 धाय हूँ॥ पुनि पूजि गुरुहि नवाइ शिर मुन संपदा आगे  
 धर्यो॥ निज नेगु मांगि बशिष्ठ रामहिं रारि उर घर का



दृष्टो ॥ तब भूप रानिन सहित दिश्या मित्र की पूजा क-  
 री । कर जोरि दीन निवास भीतर भवन निरख्य हरिचरी  
 पुनि पूजि प्रिया पाहन अमर गंगा सुमन बरधि सिधाय हू  
 तब बोलि द्विजगुरु ज्ञाति सुतन समेत भोजन पाय हू ॥  
 गावें बधू मिलि गीत अचवन कीन निज धामन गये ।  
 तब भूप रानिन ते सकल मिथिलेश गुन बरान भये ॥  
 भये मुदित सब तब कह्यो लरिका अमित उस नीदे अ-  
 हैं ॥ कर बाइये अवशेन गे विश्राम मंदिर जहं रहें ॥ मनि  
 जटित पलंग बिछाइ पदु मृदु शुभ सींच सुगन्ध सों ।  
 पौढाइ चारों माइ बौली माइ करुणा कंद सों ॥ किमि-  
 तात मारेहु असुर गंगा किमि विप्र वनित हि तारेहु ॥  
 किमि कठिन भंजै उग्रं भुधनु किमि परशु धरहि ने चारे-  
 हू । भय काज सब मुनि कृपाते बलि जाहु भुज चाप नू-  
 लगी । पर तोषि प्रभु सब मातु पुनि भेनीद बस ते रंग रं-  
 गी ॥ नर बधुन ले सब सासु सोई नाग मरिा सम गोर  
 कै । भैं भोर लागे पदन बन्दी राम जागे सोइ कै ॥ करि  
 शोच विप्र न दान दै सहबंधु नृप जहं तहं गये । अवलो-  
 कि बिधि सुत गाधि सुत सब सभा युत हरयत भये ॥ शि-  
 र नाइ बैठे गुरु पितै इतिहास मुनि लागे कहै । यहि भां-  
 ति नित नव होत मङ्गल बरणिा को पारे लहे ॥ मांगे  
 बिदा अरु नाथ नित करि विनय रघुपति राख हीं ।  
 समुझे विशेषि तयार तब कर जोरि नृप अस भाव हीं ।  
 सुत धाम धन तब नाथ रानिन सहित में सबक सदा । प्र-  
 मुकरत रहियो क्छाह सब पर द्रष्टा देव जदा तदा ॥ पु-  
 नि परे चरणा सनेह सहित अशीष मुनि सब को दई ।

सिय राम कृषि उर राखि अरु बिन चले बरगात पहुँ-  
 ई ॥ रघुबीर पंद्रह बरस के बट अर्द्ध की श्रीजानकी।  
 भये व्याह द्वादश वर्ष रहि पुर राम लीला आपन की ॥ म-  
 हि देव सन्तन हेत सो समुभूत सुखद मन भावनी।  
 अबिवेक वन्तन मोह प्रद को विदन बिरति बढावनी ॥  
 सिय राम जन्म विवाह मङ्गल मुदित सुनहिं जेगाइ-  
 हैं। रघुनाथ ते प्रभु कृपा करि हरि जगह में सुख पाइ हैं ॥

दो० श्रीगुरुदेवादासके चरणा कमल धरि माथ ॥

बाल काराड संक्षेप करि बरगा जन रघुनाथ ॥

दध सुत भगनी पति ननयता सुत जननी अन्त ॥

सेल सुता पति आदि भुज कहै राखी सब सन्त

इति श्री विश्वामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ

दास राम सनेही कृत बाल काराड समग्र

नाम एकादशे

अध्यायः ॥ ११ ॥





श्रीगणेशायनमः

# अथ विश्रामसागर

अयोध्या काण्ड प्रारम्भः

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणपति गिरा मुखदानि॥  
वरगो० मानस मत कछुक अध्यात महिं बखानि॥  
जब ते आये व्याहि प्रभु नित नव मङ्गल दोत॥  
मुदित रहत पुरनारि न तात मात गुरु गोत॥  
इक दिन विश्वावसु नहों कियो गान गन्धर्व॥  
सुनि प्रसन्न हैं स्वपुर तेहि कह्यो रहन हित सर्व॥  
तेहि कह इन्द्र निदेश बिन भैन सकत रहि अन्न॥  
कह्यो के कई बसत है हमरे बल सुर कन्त॥  
हमरे आवत रिस करत अस तुम गये मोटाइ॥  
पठइ पात्रिका दान कर लखि द्रव्य रहे चुपाइ॥  
मन में समुझे के कई लिरि पठये बच बड्ड॥  
हम रिउ लागी घात तब हम हूँ देव कलङ्क॥  
लिरि पठये विश्वावसु हि कह्यो जो कहै भूप॥  
यह सत्यो पारव्यान की भैं कहि कथा अनूप॥

चौ० यहि विधि द्वादश बखे बीती॥ एक समय की सुनियेती  
केके नृपसुत के कय नामा॥ अवध आइ कह्यो नृपते कामा  
वर मुख देश हमार उजारा॥ तेहि हित दीजै भरत कुमार  
गुरु निदेश सुनि भरे दीन्हा॥ केकय सुवन गवन तब कीन्हा  
बिदा होत परराम लषरा दोउ॥ सचिव मुतन संग मुखानद रंग

गे कछु दूर पठे फिरि जाये ॥ मानुज भरत नगर निय राये ॥ ॥  
 के कय बलि आगे लय गायऊ ॥ लखि आनन्द सबन सुरभयऊ  
 विप्रन ते तब होम कगवा ॥ एर मुख मुनत सेन लय धावा ॥  
 भरथ समर करि साह्यो ताही ॥ निरभय भये देश जस चाही ॥  
 तेह दिवस है मातुल केरे ॥ रहत तहो सो चरित निचरे ॥ ॥

**दो०** यहाँ राम सिय लषरा लखि सगुन कहै यह बात ॥

समुझि परत आवत भरथ भये बहुत दिन जात ॥

बरष अठारह की सिया सत्ताइस के राम ॥

कीन्ही मल अभिलारव तब कर नोहै सुर काम ॥

ताही पूरा तहें देव ऋषि विधि संदेश कह्यो आइ ॥

पूजो प्रतिमा सहित प्रभु बिदा किये समुझाई ॥

एक दिवस श्री अवध पति मनमें कीन विचार ॥

रामहिं दीजे राज अब भापन चौथ हमार ॥

**चौ०** गुरुहि कृष्णि नृप कीन तयारी ॥ मङ्गल सामा सकल संवारी ॥

जो कछु नृप अभिषेक मचाही ॥ फल दल जल मगवायो ताही ॥

बाजहि पुर गह गहे निशाना ॥ नाक नदी नाचैं करि गाना ॥

सेवक सचिव कहैं नर नारी ॥ धन्य भूप भलि बात विचारी ॥

प्रमुदित बदे एक ते एका ॥ देखव काल्हि राम अभिषेका ॥

अमरन सो उत्साहन भाई ॥ बोलि विघन हित बाग पड़ाई ॥

नाम मन्यरा केके चेरी ॥ आइ गिरा ताकी मति फेरी ॥ ॥

पुर रचना तेहि दीख नवीनी ॥ पूछते काहु कहि दीन्ही ॥ ॥

राम राजि मुनि शर सम लागे ॥ अनमनि गई के कई आगे ॥

**दो०** मम सोदर की राजजिन बावन हं हरि लीनि ॥

करों विघन तिमि महें अब जेहिल गि सेवा कीनि ॥

**चौ०** यहि विधि करत विचार कुबंदो ॥ तजत आंसु करि प्रथम की गुदी ॥



भय मातु बोली का भयली ॥ जानि परत लक्ष्मणा सिय दयली  
 हमे सोख देई कत कोई ॥ तब दुख लखि मोहिं भा दुख सोई  
 वरत अगिनि शिर ऊपर आई ॥ सो तुम अभय जानि नहिं पाई  
 कौन वृहद बीते दिन आजू ॥ पै हैं काल्हि राम युव राजू ॥ ॥  
 सुनि रानी आत शय हरयानी ॥ लगी देन भूषणा निज पानी ॥  
 जो तब वाक्य सत्य यह होई ॥ फिरि देहों जो मगिये सोई ॥  
 हमें रीझ तुम देहो काहा ॥ तुमहीं कानहिं होई लाहा ॥  
 राम चंद्र जब राजिहि पैं हैं ॥ कौशल्या तब तुम्हें सतैं हैं ॥  
 जिमि कटू बिनतें दुख दीन्हा ॥ चित्र केतु तिय अनभल कीन्हा  
 सुरचि सुनीता को सुत बनमें ॥ पठइ दीन्ह सुरव नाहिं सपन में ॥  
 शुक्र सता सर मिष्टे कथा ॥ दीन कीन निज पति को नष्टा ॥  
 सहित गरल भेसगर सयानी ॥ भई बाँझ सब शशि की रानी  
 यदपि सवति तब सरल सुभाऊ ॥ कर परिकु अमिकरत धन धाऊ  
 भूष करत तब आदर आदर भारी ॥ देखि सरवी नहिं सवति तुझारी  
 तब सुत पड़े नय्योरे दीन्हे ॥ जेत राज निज पुत्रहिं लीन्हे ॥  
 सुवन सहित करिहो सेव काई ॥ नाहित रहि हो पितु घर जाई ॥  
 समुझि परत मोहिं विश्वाबीणा ॥ परी विपति सब तुम्हरे शीशा  
 जो कहौ राम चहत अति मोहीं ॥ निरबल भें रिपु मित्रहु होहीं ॥  
**दो०** जिमि बन जारत अगिनि तब यवन सरवा होय जाइ ॥  
 सोई मारत कृश देखि कै दीपे देत बुझाई ॥ ॥  
**सो०** सुखद दुखद शशि होइ ॥ लहिरि बिबसु अति चोथ गृह ॥  
 मृग मधु जहि बिन तोइ ॥ दहत कहत मग कृतज जम ॥  
 जो तेहिते अबहीं करहु उपाऊ ॥ जेहिन होइ पाछे पछिताऊ ॥  
 दवर नृप धाती सो लेहू ॥ सुतहि राज रामे वन देहू ॥ ॥  
 एक तो दुरिग काज सुख डरी ॥ दूसर मुर सगाम मफारी

मुनिप्रतीतरानी मन आई ॥ हरिदुच्छातुमजानहु भाई ॥ ॥  
 कोपभवन यहूँ चौतजिसाजा ॥ भावी बस आयेतहं राजा ॥  
 कोपभवन मंघरहि बतावा ॥ मुनिनरेश मन में भय पावा ॥  
 सुरपाति सुहृद दनुज अरिजोई ॥ कालहुते न डेरहि रासाई ॥  
 तियारिस मुनिभेकंपित गाता ॥ कामकूपान निसित अतिताता  
 धरि धीरज रानी हिय गयऊ ॥ शीघ्रा परसि कर बोलत भयऊ  
 केहि कल्ला कीन्हौ रिस प्यारी ॥ कोतव दूसर है तनु धारी ॥ ॥  
**दो०** कहुकहिरडूहि नृप करों नृपैरडू करि देउं ॥  
 तब आरे अमरहु होइ तेहि बध करि पांथे पेउं ॥  
**चौ०** कहों रेषालिनिज कोप प्रसंगा ॥ भूषण सजहु मनोहर अङ्ग  
 हैं प्रसन्न चितवहु मम ओरा ॥ आजु भयो मन भावत तोरा ॥  
 है है कालिहराम युवराजा ॥ हरष समय तुम दुख उपराजा ॥  
 मुनिनृपवचन भयो दुरवभारी ॥ दिहिसि पारिनिज सिनेदारी  
 पुनि धरि कर बोले अनुगामी ॥ जो भावें सो लीजै मांगी ॥ ॥  
 तवहित कछुन अदेव हमारे ॥ मुनि के कैं तब बचन उचारे ॥  
 मांगु मांगु बर जब तब कहऊ ॥ लेत देत फिरि कछु न सहऊ ॥  
 आगे देन कह्यो बर दोई ॥ अब तक मोहिं मिले नहिं सोई ॥  
 मुनिनरेश है सिबोले लीन्हा ॥ कब मांगेहु कब हम नहिं दीन्हा  
 हमरे कुल यह प्रकट प्रशंसा ॥ बचन न जाइ जाइ बरु हंसा ॥  
 भूँदे दोष देहु जनि प्यारी ॥ लेहु मांगि किन द्वै के चारी ॥ ॥  
 जोयति शपथ राम की कीजै ॥ तोहम मांगि उभे बर लीजै ॥  
 हैं सिनृप राम सपथ तब खाई ॥ मुनि बिग सरिस उठी हरखाई  
 प्रथम देहु बर यही समाजा ॥ भरथाहि बोलि करहु युवराजा ॥  
 दूसर राम धाम तजि राई ॥ चौदा बरष वसें बन जाई ॥ ॥ ॥  
 मुनिनरनाह पूछि महि परेऊ ॥ मनहुं तरङ्गिनि ते तरु गिरेऊ ॥



धरि धीरज पुनि आखि उधारी॥ पुरह किरातित सरस निहारी  
 बोली बहुरि सुनो नर नाहा॥ भरत तने तब होई न काहा ॥  
 जासु राज सुनि भा दुख भारी॥ प्रथम देन कत कहौ पुकारी  
 कह नृप सत्य कहौ तोहिं पाहीं॥ भरथ राज सुनि दुख भोहिं नाहीं  
 दूसर बर मांगेहु दुख रासी॥ सांचहु सांच कि कीन्हो हां सो  
 तोहिं प्रिय राम रहैं प्रति अंगे॥ आजु कहिन केहि कारणा लागे  
 जो कृत बेरिहु कर उपकार॥ सो किमिकरी मानु अपकारा  
 जेहि दुख दुसह देत सब काज॥ में तो से निज कहौ सुभाज  
 दो० रहै भानु विन दिवस बरु रहै मीन विन नीर॥  
 राम बिना मम प्राण नहिं रहि हैं सुमुखि शरीर॥

कु राडलिया नारद ऋषे प्रभाव नृप संजै सुत मल हेम। हो-  
 त जानि हरि हरि हतन करि ककुल ह्यो न नेम॥ करि ककु-  
 ल ह्यो न नेम तर कि तलफे पुनि भलते। हरि परि भव हित  
 गोप गृह पाल्यो गोपलते॥ तैस्वा सिंहहि देखि दबकि-  
 बिल माहिं लुकान्यो। मिल्यो सुरभि को पाप समुझि पाठे  
 पछितान्यो॥ पछितान्यो तिमि तुम्हें शोचतौ परी बिशार-  
 द। मूरख की रघुनाथ इमपि कृत होत न नारद॥  
 चो० तैहि ते पुनि मागहु भोहिं पाहीं॥ रहैं राम पुर बनहिं न जाहीं  
 जेहि ते हमहु बरख दुख का॥ देखैं भरथ राज्य अभि वेका  
 सुनि बोली बोढर जनिकरहु॥ निज कुल रीति हृदय मह धरु  
 देखे शिवि दधीच हरि चंदा॥ सहे धर्म हित दुख अति मंदा  
 मधु के दम सिर बिणुहिं दयऊ॥ बिट बहु लै ककुल कष्ट न भयऊ  
 बोलि बचन जिन नहिं प्रतिपारे॥ कहत बेद तिन के मुख कारे  
 तैहि ते तजहु सत्य जनि नाथा॥ पढ बहु जाहि विपि निरघुनाथ  
 जो न प्राप्त जैह मुनि बरगा॥ तुमहिं अयश होई मम मरगा॥

सुनि पुनि नृप बहुविधिसमुभावा ॥ होनहार तेहिं तन कन भावा  
गिस्सो भूमि हें विकल भुवाला ॥ जानेहुं तिय मिसि आयहु काला  
हृदय मनावत शंभु बिधाता ॥ करहु कृपा जेहि होइ न प्राप्ता ॥  
गुरु गणेश शारदा भवानी ॥ रहैं राम तजि घर मम बानी ॥

दो० भये जसुर अभियेक जन नेक नतिर फल जाता ॥

काल बिबस जग जाल जिमि नो चढ़ि जल बहि जात ॥

चौ० यहि विधि बिलपत भयो बिहाना ॥ बजे जहं तहं द्वार निशाना  
बंदी गंगा गुहा गावन लागे ॥ प्रमुदित प्रिय पुर बासी जागे ॥  
सुनि नरपति हिन नेकु सोहार्इ ॥ समर सवय जिमि गरी गाई  
प्रात बशिष्ठ सभा महं आये ॥ लखि सुमंत्र ते बचन सुनाये ॥  
सदा प्रथम आवत नर नाहा ॥ आजु गहर भैं कारा काहा ॥  
बेगि खबरि तुम लावहु जाई ॥ चले सुमंत्र परम चपलाई ॥  
गये कोप मंदिर सुनि बाता ॥ समय उलंछी डौं दी माता ॥

दो० प्रथम तरुणा युग जेवर पुनि बालक क्लीचाचारि ॥

पंचम योवन विरध बट सप्तम गौरी नारि ॥

चौ० अगि जाइ के कइ हि देखे ॥ परे विकल तहं भूप विशेषा  
शीश नाइ तोले मृदु बानी ॥ भूप परे कस बिबरन रानी ॥ ॥  
रामहि प्रथम लया बहु जाई ॥ भूप कुशल तब बूझ्यो पाई ॥  
नृप रुख पाइ सुमंत सिधायो ॥ बेमन राम के मंदिर आयो ॥  
देखि पिता सम प्रभु सनमाना ॥ पूछै तेतिन हाल बखाना ॥  
चले तुलत प्रभु संग उद्योरे ॥ देखि लोग सब भये दुखारे ॥  
यहं च जाइ जहाँ नृप रानी ॥ बेलि राम जारि युग पानी ॥ ॥  
जननि जनक केहि हेत दुखारी ॥ करिय सो कृत जेहि होइ सुखारी ॥  
सुनहु राम दुख मूल सनेह ॥ बहीन सुख यदि कही न यह ॥  
छाति लाभ सुख दूख किन होई ॥ कहिये न तेहि ही जे सोई ॥



विविध रंगें मंगे इन पासा ॥ भरतहि राज तुम्है वन वासा ॥ ॥  
 धर्मके तु कहु कहत नबानी ॥ तुम तैं सधैं करो सोइ जानी ॥  
 सुत सोइ जो पितु सुयश बढ़ावे ॥ आपस देइ तेहि सुत को गावे ॥  
 सुनि कै कै के बचन कठोरे ॥ बोलै राम प्रमीजतु वारे ॥ ॥  
 अतिलघुचात पितै दुख भारी ॥ अपहे तु कहु हे महतारी ॥  
 भरत सपथ भैं सत्य बरवाना ॥ कारणा जान मोर नहिं जाना ॥  
 तब रघुपति गहि नृपहि आवा ॥ हाथ जोरि अस बचन सुनावा ॥  
 तात तरकितन तजहु गिलानी ॥ मंगल समय मोइ उर आनी ॥  
 जो जननी जौंचे बरदाना ॥ तां भैं अपति हमार कल्याणा ॥ ॥

दो० एक तो वन मुनि जन दरश भरत प्राणापिय राज ॥

पुनि निदेश पितु मातु कर मोहि विधि राहिन आज ॥

चौ० अतहु पानिज करहु नकाजा ॥ जानेहु मोहि मूढ़न कर राजा ॥  
 मूढ़ सो मजा विधि के जानो ॥ कहे पूर्व मनु तैंस बरवानो ॥ ॥  
 माहि बरी कहु ॥ कहैं इमपि पूरव मनु स्वयं भू मूढ़ सबह होत जा ॥  
 जन जो अपि यहि करत शिक्षा ॥ तीन पहिले पातजू ॥ हे जो न सेव-  
 त दार दिहि धन देत दूजो तीन ॥ करि तौन तौ जो रक्षि शत्रुहि  
 कुशल चाहत जो नजू ॥ हे सो चतुर्थ जो कथत निज मुख कर्म का-  
 राज पूर्यजू ॥ जो बोर दानत प्रवल सो है निवल पंचम मूर्खजू ॥ मूढ़-  
 कृष्ट्यों करत कुत्सित कर्म जो गुरु जानजू ॥ गुरा कहत सरधा हीन  
 सो सो मूर्ख सतवां रव्यातजू ॥ गुरु गोत्र तिय सो करत निन्दित कर्म अ-  
 दवों तौनजू ॥ जो पुत्र तिय गति मान चाहत नौम सो अधा भोमजू ॥  
 निज बीज जो पर खेत डोरि दशम मूरख रेवदजू ॥ हे सो एकादश मू-  
 र्ख तिय सो कहत जो तिज मंचजू ॥ अरु देन कहिनहि देत जो सो  
 मूढ़ द्वादश गंधजू ॥ जो भेद जानो बिना जल पत तौन ते रहों अन्यजू ॥  
 जो चतुर दशवों मूढ़ गुरा तन कर्म को फल पायजू ॥ अरु पंचदश जो पाचकन

सो कहत कदु रिस छायेजू॥ जो दान भोगन करत सो रहौं मू-  
ढ़ सो धनवानजू॥ निजबंधु भागहि हरण चाहत सप्त दश-  
मन दानजू॥ जो लखत लोक प्रलोक नहिं सो मूढ़ सब में  
थेछजू॥ सोउ पाइ ऐसो समय तजवन भजबहै अस पणजू॥

**दो०** धृति समदम सुचिता दया सति प्रिय सुवचन मेम॥

ज्ञानंद बरधन समन अध दौउ दिशि दायकहेम॥

मोह दीनता भूप के करत सकल गुण नास॥

नाते दौउ तजि गारिबे स्वधरम सहित हुलास॥

सुत तिय तन धन धाम सोइ जासो सधै स्वधर्म॥

ताते देहु निदेश मोहिं वनहित परिहरि भर्म॥

**चौ०** सुनि नरेश प्रतिशे अकुलाने॥ मोह विवसर सुनायक जाने

करि प्रबोध पर्यंक सोवाये॥ बिदा होत हित हारि सिधाये॥

आये प्रथम जानु की धामा॥ देखि दीन आसन श्रीभरामा

बोले प्रभु मोहिं पितु अरु माई॥ आय सु दीन बसहु बन जाई

धर्म हेत धरमत्त नृपाला॥ प्रगट सुगाय सुचाहिय पाला॥

चौदा बरय बास करि प्यारी॥ ऐहों फिरि तुम रह्यो सुखारी॥

सासु ससुर की सेवा करेऊ॥ नारि धर्म मोहि रदय धरेऊ॥

कानन भय दुख नाना रंगा॥ नाहित लैले त्यों निज संया॥

जो हठ बस चलि हो संग प्यारी॥ तो गाल बसम होव दुखारी॥

**दो०** गाल बको शिक केर शिखि कह्यो दक्षिणा लेहु॥

सेवा ते संतुष्ट हय हमै तुष्ट नहिं रहु॥

प्रियाम करण हय आर शत हठ लखि बोलि लाउ॥

मुनि मुनि गयो ययाति नृप निकट बिचारि आउ॥

पूछि प्रयो जनति न दर्ई कन्या सो लै विप्र॥॥

नृप हर श्वते कह्यो यह लेह देहु हय सिप्र॥॥



एक सुवन जनमाइ तिन दीन्हे दुइ शत बाजा॥  
 तिमिकाशीस उसीरीपति अरघ्यो अभककाज॥  
 दुइ शत मिले नतेहु परतब मुनिमानि गिलानि॥  
 गोये विश्वामित्र दिग असहे हठ दुरवदानि॥

चौ० मुनिबोली तब जनक दुलारी॥ सुनहु प्रारापति बिनय हमारी॥  
 अनुज अपचपितु सुत सुख नाना॥ पियविन प्रमदै प्रेत समाना॥  
 तेहि विधि नाथ मोहिं जगमाही॥ तुम बिन सुख कहतहुं कोइ नही॥  
 दो० ॥ रहै चंद्र बिन चन्द्रिका रहै मीन बिन पाछा॥  
 तो घरमें मोहिं राखिये बहुत कहों का नाथ॥  
 देखि प्रीति बोले चलहु संग चली हरषाई॥  
 सुनेहु लयगावन जात प्रभु दिग आयै बिलखाई॥

चौ० शीशनाइ शोचत मनमाही॥ मोहिं प्रभु संग लेहैं की नही॥  
 देखि बिकल बोले रघुसाई॥ धीर धीर रहो घर भाई॥ ॥  
 भवन भरत नहिं प्रियरिपु आरी॥ तात मातु मम बिरह दुरवारी॥  
 जोमें तुमहिं चलैं लै साथी॥ ह्वै हैं पुरजन निपट अपनाथा॥  
 जेहि नृपराज प्रजा दुरव पावै॥ अवाधि अधिप सोन कसि पावै॥  
 अस विचारि रहिये गृह भाई॥ करहु मातु पितु की सेवकाई॥  
 भव भय हरनि मातु पितु सेवा॥ बिमुख निरय भाषत महि देवा॥  
 मुनि लक्ष्मणा अतिशे दुख पावा॥ पद शिर धरि अस बचन सुनावा॥  
 दो० नाथ बात जो कही तुम ताहि कोरे नर सोई॥

कीरति सुगति बिभूति लियत नुज जाहि प्रिय सोई॥

चौ० मोहिं एक प्रभु तुम तेनाता॥ अपर न जानहुं गुरु पितु माता॥  
 तेहि तेतजहु न किंकर जानी॥ मुनि सुपति बोले मृदु बानी॥  
 दो० तात मातु ते बिदा है आइ चलो मम साथ॥  
 जाय सुमित्रा के चरण भय युत नाथो माथ॥

चौ० बोली देखि दुखित कसताता ॥ तब तहँ लखरा कही सब बात ॥  
 मुनि गइ सहमि मुमित्रा राजी ॥ धरि धीरज बोली भृदु बानी ॥  
 तात राम सिय तव पितु माता ॥ रहैं जहाँ अवध सुरव दाता ॥  
 जो बत जात राम मुकुमारा ॥ तौ घर मे का काज तुम्हारा ॥ ॥  
 तेहि ते बन तिन के संग जाहु ॥ लेहु बच्छ जग जीवन लाहु ॥ ॥  
 मोहिं समेत भयो बड़ भागी ॥ जो तब राम चर सारति जायी ॥  
 करेहु तात सोइ बात बिचारी ॥ जेहि न राम सिय हों इ दरबारी ॥  
 मुनिलक्ष्मणा उदिशी सब वारी ॥ पाइ अशीस राम दिग आयी ॥  
 तब प्रभु सहित जान की प्राता ॥ आये जहँ कौशिल्या माता ॥  
 चरणा कुवत निज उर बैठारि ॥ भई गहर कत बचन उचारि ॥  
 बोले तब रघुपति सुनु माता ॥ बन की राज दीन मोहिं नाता ॥  
 आय सुदेहु मुदित मन ताते ॥ कुशल आइ पद देखिय जाते ॥  
 कौशिल्य मुनि अति दुख भयऊ ॥ मनहु कीनि सुरव सरब दुभाग्यऊ ॥  
 बोली केहि अपराध भुवारा ॥ राज देन कहि विपिन निकारा ॥  
 सचिव सुवन सब बात बरवायो ॥ मुनि व्याकुल हैं बोली बानी ॥  
 दो० सुर अरि ते दधि भक्षते रगावन पिता निकेत ॥  
 हे विधिराखे मोहिं तू यही देवावन हेत ॥  
 धरि धीरज बोली बहुरि नात किहे उ अति नीक ॥  
 पितु आय सु सब धर्म मय वदत वेद दै ठीक ॥  
 चौ० जो मैं कहों रहो सुत घरमा ॥ वढ़े वयरु शिर चढ़े अधर्मा ॥  
 तेहि ते अवधि जाहु बन भैया ॥ आयहु वेगि जाइ बलि मैया ॥  
 सिय एकहु दुख जानत नाही ॥ इन कर लाइ सह्यो बन माहीं ॥  
 मैं बहु भांति सिखावन दीन्हा ॥ तदपि चलन हित हरि प्रा कीन्हा ॥  
 लखरा लाल प्रीति से मुकुमार ॥ रहत नति उ संग जात तुम्हारे ॥  
 स्वरूप खर मुख इन कर देखी ॥ सहिन सक्यो सुधिलियो विशेषी ॥



है स्वर्तवन दूनों धाता ॥ करे उन कबहुं जीव कर धाता ॥ ॥  
 चलेहु सोंई जेतना चलि जावै ॥ कह्यो संदेश इतै कोइ आवै  
 मोहिं सम नारि अभागिनि कोइ ॥ भई न अहे न आगे होइ ॥  
 जो जनतिउं आगे दुरव एहा ॥ तौ नहिं करतिउं नृपते नेहा ॥  
 जात बिपिनि मम बालक वारे ॥ देखि न निकसत प्राण हमारे  
 अस कहि अवति गिरी मुर भाई ॥ प्रभु जननी बहु विधिस मुभाई  
 पुनि धरि धीर भायि सुत बक्षा ॥ लागि करन अंगन की रक्षा ॥  
**गोलांक ०** नमो विशाख पातु जानुति विक्रम बीरा ॥ क-  
 दिहि रक्ष गोविंद नाभि अच्युत रणाधीरा ॥ गुल्म पातु पदु-  
 माक्ष उदर हरि उर श्री नाथा ॥ भुज मधुसूदन पातु कुक्ष पृथ्वी  
 धर साथा ॥ कंठ जनार्दन पातु कृष्ण मुख मंडल सोहै ॥ कर-  
 गा मूल बाराह द्वारा दामोदर जोहै ॥ नेत्र निरंजन पातु भाल  
 लक्ष्मी नारायन ॥ केशो पातु कपोल सर्वतन चक्र धरायन ॥  
 पूर्व पातु पुरुषोत्तम सदा अग्ने गरुड़ ध्वज ॥ दक्षिण दिशि-  
 नर सिंह पातु नैऋत्य चतुर्भुज ॥ वासुदेव बारुण पातु बाय-  
 व्य विष्वंभराण्मरुक्ष कौबीर्य शंख ईशान गदाधर ॥ कमल  
 नाभि अध ऊर्ध्व पातु जलगिरि बल बावन ॥ व्याघ्र सिंह ते पातु  
 सदा शंकर मन भावन भूत प्रेत बैताल वृक्ष राक्षस छल का-  
 ति ॥ अग्नि चौर बिष बीछु सर्प ते पातु मुरारी ॥ पर विद्या उध-  
 यंत्र मंत्र परतंत्र जहौ लौ ॥ माघी सकल निवारु मारु रु-  
 ज शूल तहौ लौ ॥ यहि विधिरक्षा कीनि दीनि पुनि सुरवद  
 अशीषा ॥ सहित लखरा सिय चले नाइ जननी पद शीरा ॥  
 इति श्री विश्रामसागर सब मत भागर ग्रंथ उजागर श्री सुता यदा-

सुराम सनेही कृत बनयावानुप विद्या प्रदीप

नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

दो० सुमिरिगमसियसन्तगुरुगणपतिगिरामुखदानि॥  
वरगोमानससहितकछुअग्निनिवेसकृतआति॥

चौ० कछुकशोचचितकछुकउछाहा॥ अयेवहुगिजहोनरनाहा  
भेमुनिविकलसकलपुरवासी॥ मनहुंदष्टाइदिशिआगिइवासी  
करशिरधुनहिंभागिबिनजानी॥ मनमलीनतनदशाभुलानी  
कोइकहेभलनकेकईकीन्हा॥ कोइकहेनृपकाहेकबरहीन्हा  
कोइकहेविधिचाहेसोकरई॥ कोइनिजकर्मनकेशिरधरई  
कोइकहेभरतहुकरमतहोई॥ सुनिकरकान्हगारिवकहेकोई  
लागतअपअसकियेवखाना॥ रामभरतकहेंशरासमाना  
अग्निहोइजलवरुनभफूला॥ भरतनहोवगामअनिकूला  
यहिविधकहतमुनतसबधाये॥ बिरहविकलनृपसंदिरआये  
भइअतिभीरभूपदरबाग॥ वररानजाइदिवाइअपारा  
तेहिअवसरकेमुधिजबआये॥ अजहुदरारअचनिउखावे

दो० तवरधुवरसियलखराधुतनृपपदशीषनवाइ॥  
कह्योबिदागोहिंकीजियतातबियादविहाइ॥  
निरखिभूपशिधुस्तुअठिनीन्हेहृदयलगाइ॥  
हैवसधर्मसनेहकछुकह्योनरह्योचुपाइ॥  
देखिकेकपीतमकिंकेमुनिपरभाजनदीन॥  
बोलीपहिरहुजाहुवनजोचाहोहितकीन॥  
अनुजसहितबलकलयहिरिकरिपितुभातुप्रणाम॥  
कृष्णयक्षबंधाखदिनछूटेचलेवनराम॥  
विप्रबधूवरकेकपिहिरहीवहुतसमुभाइ॥  
तेनहिंकीन्ह्यो॥ कानतबचलीअधिकदुखपाइ॥  
कह्योभूपतवसचिवतेरथपरलेहुचढाइ॥  
वनदेखाइअन्हवाइसरिलावहुतातकिराइ॥



नुरतवाजिरथ साजिके गये राम के तीर ॥  
 सुनिबिनती आरूढ़ भेसिया सहित देखीर ॥  
 चले अब धारिनाइ सब पुरजन लोगे साथ ॥  
 प्रभु फेरत नाहिं फिरत सोखगधुगविकल अनय ॥  
 जाइ रहे तम सामिकर प्रथम दिवस बिन नर ॥  
 करुणा साथ भेदुरित तब देखे सब न के पौर ॥  
 लोग अभित गे सोइत ब कह्यो सचिव ते राम ॥  
 खोज भारिरथ हो किये नाहित विगरत काम ॥  
 आस सुभाय चढ़ाइ रथ हांके खोज दुगइ ॥  
 जागि लोग भे विकल तब जवन लखे खराइ ॥

चौ० राम राम कहि खोजन लोगे ॥ रथ कर चिन्ह न देखे आगे  
 फिरि जाये धुग आपुहि जानी ॥ कर दम मीन धन्य करि मानो  
 राम दृष्टाहित जयत पनेमा ॥ लगे करल पुरजन युत प्रेमा ॥  
 इहो राम सिय सांचवस भाई ॥ श्रंग भेरु पुर पहुंचे जाई ॥  
 उत्तरि कीन सुर सरि असनाना ॥ यत्तने माहिं भील पति जाना  
 लै फल फूल भेंट तहें आवा ॥ कीन्हि दगाइ वतल खिख सुख पावा  
 उठि खुनाथ लीन उरलाई ॥ पूछी कुशल पास बैठाई ॥ ॥  
 नाथ कुशल सब बात हयारि ॥ पद पंकज दुर दलन तुझारि  
 आपु कहोइत कीन पयाना ॥ तब रघुपति सब हाल बखाना  
 सुनि निबाद मन भयो विषाद ॥ बोल्यो वहीर सहित अहलादा  
 तुम प्रभु होउ इहो के राजा ॥ हम सब सेवक सहित समाजा  
 चलहु भवन प्रभु कहति न पाहीं ॥ ग्राम जानकी आजा नहीं ॥  
 तब सिंसुया तीलै गयऊ ॥ कुश साधरी बिछावत भयऊ ॥  
 तेहि पर उत्तरि सबन फल खायो ॥ शेन की निपुनि सहज सुभायो  
 सोवत प्रभु इनिषाद निहाय ॥ दुरित लखण ते बचन उचारा

**दो०** जे सो वतर हैं मरि ॥ पलंग पुरटम हल के माहिं ॥  
 ते पोंदे कुश सायरी विधि जु वाम के हि नाहिं ॥  
 मुनि बोलें सो मित्र कहु विधिकर दो वम होइ ॥  
 निज कृत कर्म अभाग फल भोगत हैं सब कोइ ॥  
 राम साक्षि दान नन्द धन रहित समस्त विकार ॥  
 करत चरित सुर सन्त हित धरि स्वतंत्र अवतार ॥

**चौ०** अस विचारि दुख परिहारे नेहा ॥ करहु राम पद पदुम सनेहा ॥  
 मृगतृणा सम जग ब्योहारा ॥ सत्संगति हरि सुमिरन सारा ॥ ॥  
 तात परम परमारथ सोई ॥ जी रघुबीर चरणा रति होई ॥ ॥ ॥  
 यहि विधिकहत सुनत भाभोरु ॥ जागे सकल सुनत खग सोरु ॥  
 करि स्नान सिर जटा बनयि ॥ लखि सुमंत्र तब बचन सुनाये ॥  
 नाथ कह्यो मोहि कौशल नाथा ॥ बन देखाइ लै आयो साथी ॥  
 कह प्रभु तात सकल तव जानी ॥ धर्म न दूसर सत्य समाना ॥  
 सो मैं सत्य न जहूँ किमि जानी ॥ अथश होइ युनि धर्म किहानी ॥  
 तेहिते तात जाहु द्वार आजू ॥ नाहित होई अवध अकाजू ॥  
 कह्यो पितासन बिनै हमारी ॥ समहित करें न संशय भारी ॥  
 जननि न ते कहियो शिर नाई ॥ आवत सपदि फिरे दोउ भाई ॥  
 कह्यो भरण जब मंदिर आवैं ॥ करहु गाजि जेहिं सब सुख पावैं ॥  
 गुरु पितु मातु बचन अनुहारी ॥ करत कहु तेहिं लागिन खारी ॥  
 यदु यमदग्नि गणेश हरी के ॥ चरित चारु जग प्रचुर परी के ॥  
 तुम पितु सम मम बिनै तुम्हारी ॥ करहु सो जेहि नृप रैं सुखारी ॥  
 अस कहि चले संबेशि नाई ॥ सुरसरितट आप्ये रघु राई ॥ ॥  
 मागी नावन केवट लावा ॥ कहै तुम्हार मरम में पावा ॥ ॥ ॥  
 पाहन ते कीन्ह्यो मुनि नारी ॥ तेहिते कठिन न नाव हमारी ॥  
 यहिते पलत मोर परिवारा ॥ नाथ न जानहुं अर प्रकार ॥ ॥



सुरसरि पार जान जो चहक ॥ तौ प्रथमै कलेश कहु सहक ॥  
 लेन देहु मोहि पद ज सोई ॥ मानुय करग सहीदे सोई ॥ ॥  
 धोय बिन न देहों जल जाना ॥ लखरा को पकिन मारहि बाना ॥  
 मुनि वारी प्रभु कि बट केरी ॥ बिहसे मिय लखपगा न नहेरी ॥  
 बोलि पुनि लीजे पर दान्नी ॥ कमठ पृष्ठ लावा जल हाली ॥  
 पद परवारि जल कीन्हो पाया ॥ सुरन देरि बड़ भागी जाना ॥  
 नाथ चढ़ाइ पार तब कीन्हा ॥ शीम नाइ जब चाले लीन्हा ॥  
 सिय मुद्रिका देन प्रभु लागे ॥ बोलना सहित जोरि कर आगे ॥  
 तुम के वट भव सागर केरे ॥ नदी नार के हम बहु तेरे ॥ ॥  
 हमरी तुमरी कसि उत्तराई ॥ नापित नापित की बन चाई ॥ ॥  
 मुनि प्रभु नाहि भक्ति बर दीन्हा ॥ पुनि सुर सरि मह मज्जन कीन्हा ॥  
 करि बिनती सिय नाथ हु शीसा ॥ दीन मुद्रित मन गगन प्रीसा ॥  
 तब प्रभु संधि कह्यो घर जाहू ॥ बोलना तब भी लन कर ताहू ॥  
 जैहों जहं तहं न क पहुँचारे ॥ फिरि हों तब प्रभु कुटी बनाई ॥  
 मुनि बलि भे प्रभु सहित हुलासा ॥ नेहि दिन भयो पथ में वासी ॥  
 नीमी दिन तीरछ पति गयऊ ॥ निरवेरी जल मज्जत भयऊ ॥  
 विश्रान्द सनमानि मिथाये ॥ भरद्वाज के आश्रम आये ॥ ॥  
 की न दूरगु बत सहित समाज ॥ उलगाइ बोले अरीध राजा ॥  
 आजु सपल मम जप न्य जाना ॥ तीरछ जग दोग परब दाना ॥  
 धन्य जन्म जग जीवन भारी ॥ मयो कृताय मुद्धें निहारी ॥  
 सब करि कृपा देहु बर भीही ॥ काय बचन मन सुमिरें तोही ॥  
 जब तक तव पद प्रेम न होई ॥ तब तक सुरवन लहे नर कोई ॥  
 ग्राम कहि मधुर मूल फल दीन्हे ॥ सबन सहित प्रभु भोजन कीन्हे ॥  
 नेहि निशि रहि करि प्रादक्षाना ॥ मुनि हि नाइ छिर कीन्ह पयना ॥  
 ग्राम निकट नेहि निक सहि जाई ॥ थाकत होहि लखि लोग लुगाई ॥



एक एक ते कहैं विचारी ॥ सबालक बनयोग न प्यारी ॥ ॥ ॥

दो० कोइ कहै इनके मात पितु हैं कठोर मम जानि ॥

कोइ कहैं होय न होय हरिनिक से मानि गलानि ॥

चौ० कोइ कहैं नृप सुवन शिकारी ॥ बन विचरत मिलि गै भुरगारी ॥

कोइ कहैं वरद स भूप कुमारी ॥ बरि भांगे बन भवन विसारी ॥

कोइ कहैं काम बामलै रूरी ॥ चंदे शम्भु पर बैर विसूरी ॥ ॥

कोइ कहैं विप्र शाय बस साही ॥ सीतै स मेत सिद्ध कोइ जाही ॥

कोइ कहैं है दग लिहें गोगरी ॥ दगत फिरत मन मति करि भोरी ॥

कोइ कहैं एक सुकती हैं कोई ॥ निज परलोक सुधारत सोई ॥

उदय भये ककु भाग हमारे ॥ भरि नयन न जोइ न्हें निहारे ॥

यहि विधि की तरकैं करि भूरी ॥ पूछे निज निज जाइ हजूरी ॥

कहें राम सति बचन तुम्हारे ॥ फलत भाउ जस बैर हमारे ॥

तेहि अवसर ताप स एक प्रावा ॥ करि विन तो हरि धाम सिधावा ॥

दो० भगवासिन सुख देत इमि उतरे यमुना जाइ ॥

मज्जन करि हरि सरवहित ब विदा कीन बरि आइ ॥

चले लषणा सिय सहित प्रभु करि यमुनहिं परताम ॥

उतरे सीतहि श्रमिल लखि बट तरु तर डिग ग्राम ॥

चौ० एक अली लखि गइ निज गेहा ॥ कहत सखिन ते सहित सेनहा ॥

सखि यहि ग्राम यथि कहैं आये ॥ गौर प्रियाम छवि धाम सोहाये ॥

दो० तिन संम सुन्दरी एक जेहि लखि लाजत जग मेव ॥

चारि सुमन फल चारि पसु विहंग चारि श्रुति देव ॥

चौ० सुनि पुरजन सब देखन धाये ॥ उतरे प्रभु जहँ तहँ चलि आये ॥

नख शिख मुभा स्वरूप निहारी ॥ सीता दिग अंई मिलि नारी ॥

पूछहि हे स्वामिनि सुकुमारे ॥ ये दो उबालक कोन तुम्हारे ॥ ॥ ॥

देवर लषणा कहें सिय बैनन ॥ निज पति प्रभु इ बताये सैनन ॥



कोशल पुर है इनकर धामा ॥ नृपदशरथ के सुत अभिरामा ॥  
 कारणा कोन भित्त बन माही ॥ कोमल पद पद जागा हुं नाही ॥  
 सासु सवति कीन्हो उत पाता ॥ दियो बन बरय सात अरु साता ॥  
 मुनि सिय बचन सकल बिलखानी ॥ दोलीं विधि गति जान न जानी ॥  
 निपट निदुर चित करत जो भावै ॥ नीके माहिं जवून लगावै ॥  
 प्राधि सीतल घट बट सकल की ॥ कोमल कु वलै किहि सि कदकी ॥  
 रूप कल्पतरु जल निधि रवारी ॥ नीच धनिक बड़ विप्र भिरवारी ॥  
 इनकर रूप अनूप म कीन्हा ॥ तेहि पाँछु कानन लिखि दीन्हा ॥  
 जो पे इन्हे दिहि सि बन बासा ॥ तो कत कीन्हि सभोग बिलासा ॥  
 यहि विधि कहि सब आपुस माहीं ॥ दोलीं पुनि रघुपतिके भाहीं ॥  
 आचुर हों बलि हमरे धामा ॥ आखिर रहा दिवस यक यामा ॥  
 कह प्रभु हमें दूरि है जाना ॥ अस कहि उरि बन कीन्ह पयाना ॥  
 लखि सब लोग उठे अकुलई ॥ मनहुं गई गूढ़ सम्पति आई ॥  
 दृग जल पूरि कहन बर जोरी ॥ फिरत करे उइत कृपा बहोरी ॥  
 हरि इच्छा जस समय बिलोकी ॥ करवत था थल परये रौकी ॥  
 प्रभु सिय लखरा जात इमिलागा ॥ भक्ति सहित जनु जान बिलागा ॥  
 मग में देखि ज्योनि बिकहई ॥ राज चिन्ह सब नुहरे अहई ॥  
 सोवन विचरत विन यह जाना ॥ ज्योतिष भूठ हमरे जाना ॥  
 बहुरि विचार करहिं गनि प्राँछे ॥ होई राज कछु क दिन पाछे ॥  
 जो देखें सो संग सिधावै ॥ मूमहित बजब बहु समुझावै ॥ ॥  
 जिन सिय राम बढोही होरे ॥ भव दुरव दूरि भये तिन कोरे ॥  
 अजहुं जासु उर वह कछु विप्रावै ॥ निश्चय सो पर धाम सिधावै ॥  
 मग निवास करि प्रात सिधाये ॥ बालमीक के आश्रम आये ॥  
**दो०** कीन्हि दगाडवत मुनिहि प्रभु लीन विप्र उल्लास ॥  
 लखरा राम सिय रूप लखि भये मुदित करि रास ॥

कंदमूलफल श्रीसम दीन्ह करि सनमान ॥  
 भोजन करि परिभृत्यते बोलै राम सुजान ॥  
 नाथ चतुरदश बरष मो बन दीन्हौ महिपाल ॥  
 सुथल बतावहु निरविघन तहौ रहौ कहु काल ॥  
 कह सुनि नाम नरेश शिर धरहु कारहु निज तंच ॥  
 अद्भुत चरित तुम्हार लखि कोन भूलि हैं मंत्र ॥  
 अकथ अलौकिक रूप तव तर्क सैं कै नहि केउ ॥  
 जानै सोइ करि कृपा तुम जाहि जनावो देउ ॥  
 निज रहिबो हित वेस्म जो पूछेउ सो सुनि लेहु  
 कहैं सुनैतव चरित जेतस्य हृदय तव गेहु ॥  
 मंत्र राजतव जपहिं जे रैं निरंतर नाम ॥  
 निरद्वंद्वो निस्पृह सदा तस्य उरसितव धाम ॥  
 परचिय जानै जननि जिमि परधन गरल समान ॥  
 समलोष्टा समकौच नहिं तस्य मनसितव थान ॥  
 जाति पाति धन धाम तजि तुम्है रहै तब लाय ॥  
 तिनके मन मंदिर बसहु सिया सहित दाउ भाय ॥  
 तिनके मानन मोह मद त्वद दासन में नेह ॥  
 काम क्रोध कटु रहित जेतै मान सतव गेहु ॥  
 तव उच्छिष्ट भोजन करैं तव प्रसाद पटलेहिं ॥  
 बसहु तासु उर राम जे सुधितहि भोजन देहिं ॥  
 दुख सुख समुझैं एक सम शांत शुद्ध चित मोन ॥  
 जगत गीति ते रहित जेतस्य उरसितव भोन ॥  
 यव विकार मय बपुल रेवे प्रातम रहित विकार ॥  
 करै सदा सत संग जेतै हि उर भवन तुम्हार ॥  
 श्रीसम सैंवै पुरु चरण नावे द्विज पद साय ॥



बसोनामप्रभावनिहतहोबसहुरधुनाय ॥

तपतीगद्यवृत्तदानकरिभागहिं तबपदधीति ॥

दसहितत्यउरपदजेचलेरागरसजीति ॥

बो० ॥ ओरहुइमिबहुआश्रमअहई ॥ बसेउरामनुमलरिवसुखतहई

यहिअवसरसमसुधलजोवहअ ॥ तौचलिचित्रकूटमेंरहअ ॥

करागतसुरमुनिमंतविधाता ॥ चित्रकूटचिंतितफलदाता ॥

मलेरामकहिंकीनपयाना ॥ आइकीनपयसरिअस्नाना ॥

हरिदिनकामदीगिरिप्रभुआये ॥ समाचारसुरतन्तनपाये ॥ ॥

आइसबनपदनायेसाथा ॥ नाथआजुहमभयेसनाथा ॥

पदकुलीसुगसुभगवनाई ॥ निजनिजलोकगयेसुखपाई

पुनिमुनिआयेकोलकिराता ॥ कंदमूलफलधरिधरिपाता

देदेभैंजोहारिजोहारी ॥ निररिवरामहविहोइसुखारी ॥

करिसनमानरामबैदारे ॥ तिनतबप्रभुतेबचनउचारे ॥ ॥

पणितजानिप्रभुदरशनदीन्हें ॥ हमसबकाहुकृत्तारथकीन्हें

अथलुमइहेंदसहुसबमासा ॥ सकलसोजकरअहेंसुखासा

हमतबदाससाहितपरिवारा ॥ आयसुदेतनकरबिचारा

करिपरितोबबिहाप्रभुकीन्हें ॥ चलेभवनचरणानचितदीन्हें

जबतेरामबसेवनआई ॥ तबतेभयउसकलसुखदाई ॥

फूलहिंफलेविटपबहुभांती ॥ सुरतरुसमबिहरतअतिपंती

दो० करिहरिकपिचककोलसुगविचरतबैबिहाइ ॥

प्रेमविवसचलिजाहिंतहैंजहैंदरशानदीउभाइ ॥

गीतिका० ॥ चलिजाहिंतहैंजहैंबंधुदोउतबदेरिवसु

रतापसकहैं ॥ येअहैंबडभागीसकलजेप्रभुइअबलोक

तरहैं ॥ हिमशेलसुरतरुजनुजागिरगहनययसरिदेखहीं ॥

तहेंभाग्यजानहिंतुच्छआपुहिंतिन्हेंबडकरिलेखहीं ॥ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसब मत्त आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दास रामस  
नेही कृत श्रीरामचित्रकूट आगमनो नाम त्रदशो

अध्यायः १०॥

दो० सुामरि राम लिय सन्त गुरु गगा पगिरा सुख दानि॥  
बरागों मानस मत्त कछुक आगि वेश कृत आनि॥  
चित्रकूट प्रभु जिमि बसे सो मे कहों बखानि॥  
अब सो सुनहु सुमंत जिमि अवध गये दुख मानि॥  
केवट है हरि ते बिदा जब आयौ निज ग्राम ॥  
देख्यो परे सुमंत महि रटै राम हा राम ॥ ॥  
जाइ निवाइ विषाद बस लीन्हों गोद उठाइ ॥  
चर्चि चढ़ाये रथ बिये बहुत भांति समुझाइ ॥  
लीन्हें सब कहोनि निज रीन्हें करि तिन साथ ॥  
चलत न हय हिहिना तहि शिंदे खिंदे रघुनाथ ॥  
इत उत ऐंचत अटत मग लेत जो हरि को नाम ॥  
चितवनत तेहिं तन हरि दिवस गहुं बे कोरल ग्राम ॥  
पुर प्रवेश नहिं करि सकत तत कत सचि वनिशि ओर ॥  
जैसे जाइ चोराइ गृह सब कर समुझा चोर ॥ ॥  
मन में करत बिचार मोहिं देखि पूछि हैं लोग ॥  
कौन उतरु दें होतिन्हें नृप रानि न तब भोग ॥  
निकसत निहरन प्राण मरहत कौन सुख लागि ॥  
धृग जीवन रघुवीर विन जरत न बपु बिरहागि ॥  
उभे धरी ति शि गत गये कौ शिल्या के धाम ॥  
सुनि नृप उदि अलाइ कह कह सुमंत कहें राम ॥  
तब सुमंत बोले समुझि धीर धरु उरनाथ ॥  
हानि लाभ जीवन भर राइ राख सुख सब के साथ ॥



सबका कौन प्रणामधु सीता लयरा समेत ॥  
 आपुगयेवनबचनलगिमोहिं पंटेदुख हेत ॥  
 सुनिमहिपालविहालहै गिह्यो धरनिपहिताइ ॥  
 अन्धआपकी सुरतिकरि कही सबन समुझाइ ॥  
 सत्रिय बिप्र देवाध सुन अवराधयोगज जानि ॥  
 तजिहों तन सुत विरह इमिदिहिनि शापदुखमानि ॥  
 पतंगिका के पूछु में सीक चलाई जेन ॥ ॥  
 लह्यो तासुफलमहा सुनि शूलतहो हमकौन ॥  
 कट्यो शंभुकोलिङ्ग जहै जलजासनको माथ ॥  
 भिटत कर्मबसभानुजहै तहै हमकारधुनाथ ॥  
 सत्य कहत सुनि कर्मबिन भोगे कूटत नाहि ॥  
 नाम रटनिते भिटत जिमि चूना परिनिशिमाहि ॥  
 राम सातु बोली बिलखि नाथ धरहु उरधीर ॥  
 तौ मिलि हैं मिय राम फिरि सो भसुनी रघुवीर ॥  
 हाथ राम सिय लयरा कहि हाथ राम वश शोक ॥  
 नृन सम हरि हित त्यागित नु भूषगयो सुरलोक ॥  
 लखि लागीं रोवन रबनि गुनबल तेज बरवाचि ॥  
 बिलपहिं दासी दास सब पुरजन परिजन जानि ॥  
 यहि विधि बीती राति सब प्रात काल सुनि आइ ॥  
 सोक मिटाये सबन कर बिबिध प्रसंग सुनाइ ॥

चौ० कहवशिष्ट मनधीरजधरह ॥ धर्मविचारिशोचपरिहरह  
 जो जनमत सोमस्त विशेषी ॥ देह दृष्टायह अघटित देरवी ॥  
 कनक कसिपुहगणाक्ष सरीखे ॥ गुणानकेर गुणा गुणायतलीखे  
 सागर सहस्रभुज प्रादिनेरशा ॥ सुमिरन मात्र रहो अबलेशा  
 जिनके रथ यहियन ते सागर ॥ भये सो भये काल बसनागर ॥

पूर्वकर्मअनुसारजहाना॥हरतमोतकरिविविधबहाना  
प्रथमसृष्टिजबरवीबिधाता॥लहेनकोइतहंजीवनिपाता  
तबरचिमोतबधायसुदीहा॥अथप्रसमुभितेहिरोदनकीहा  
आमुनतेभयरोगघनेरे॥कहविधिऐसलसंचरतैरे॥॥॥  
इतकेवोटहंगेतुमप्रानी॥करतसोईविधिआजाभानी

दो० मेहिमिमेरुमजाहिमुरसोउएकदिननधिजात॥  
गजप्युतिसमतरआयुचरताकीबेआनबिहात॥  
लहीबढ़ाईभूषवरहरिहितपरिहरिदेह॥  
यदबिकारपरतैपरेआतमआनहंगेह॥  
छेदिमकेनहिंशस्त्रजिहिपावकतैकेनजारि॥  
मारुतसकेनसांयि यहिबेरिसकेनाहेबारि॥  
जिमिविहाइजीवनवसनधारतमनुजनवीन॥  
तिमिदेहीननुजीगीतजिदूतनगहतप्रवीन॥  
आदिअल्लअल्लकहेमध्यजासुकहुव्यक्त॥  
तेहिआतमकेहलकीकरहुकल्पनात्यक्त॥  
शेयेजीमिलिजाइतेहिशेवेभलैपुकारि॥  
जीनमिलैखुनायतौधीरजधरेबिचारि॥  
सज्जनकेसंसर्गतेकस्यनमानसताप॥  
मिटोमिटतमिटिहैनसुनित्याग्यासवनकलाप॥  
तेलनावतनुरारिदृपलियेदूलपुगबोली॥  
बेगहिलावहुभरतकहंकह्योनतुमकहुखोली॥  
चलेचारइतपवनजिमिउतैभरयहोउभाइ॥  
दीखभयावनस्वप्ननिशिभावनपहुंचेजाइ॥

चो० भूतारिनतहंपहुंचेजाइ॥गुरुनिदेशसुनिदेनहुभाई॥  
चपलबाजिचदितुरतसिधाय॥कुहूदिवसनजिजगारहिआये



पुरप्रविशत भेअस गुनभारी॥ परे देखि सब जीव दुरवारी ॥ ॥  
 लोग मिले नहिं कुशल सुनावैं ॥ गवैं जोहारि जोहारि सिधायैं ॥  
 गेचलि प्रथम के कर्द गेहा ॥ बिहारेतिन सहित सनेहा ॥ ॥ ॥  
 पूछि कुशल निज नै हर केरी ॥ बोलै भरत ता सुत न हेरी ॥ ॥  
 भूप कहौ सुरलोक पधारे ॥ कारागाराम बिरह के सारे ॥ ॥ ॥  
 दुख किं दैतरहें युवराज ॥ कहिन दिहिनि किहेउ में काज ॥  
 कौन काज नृप पद तब हैता ॥ लिहेउं दिहेउं रामेवन चेता ॥  
 राम कौन सुत सवति के जानी ॥ सवति कौनि कौशिल्या रानी ॥  
 बोलत कस कहैं राम सभाई ॥ गेवन बंधु सहित महि जाई ॥  
 सुनि महि मुरछि गिरे दोउ भाला ॥ कहि हाराम लखरा सिय ताता ॥  
 हापितु स्वर्ग लाग प्रिय तोहौं ॥ रामहिं सौं पि गयऊ किन मोहौं ॥  
 हासिय राम लखरा मम पाछे ॥ सहिहैं दुख बन मुनि पद काछे ॥  
 हे जननी तैं असवर मांगे ॥ हरे सकल मुरव एकहि लागे ॥ ॥  
 जोतैं यहै रहै उर धारे ॥ जनमत सौहिं मारि किन डारे ॥ ॥  
 राम सबहि प्रिय प्राण समाना ॥ तैं किमिति न्है कहे बन जाना ॥  
 भूप प्रतीति कीन्हि भलितोरी ॥ मरन काल कहु मति भइ भोरी ॥  
 भूप लगाइ न दोष तुम्हारा ॥ दुख कर मूल अभाग हमारा ॥  
 अब दृग बोट बेढ उठि जाई ॥ तेहि छिन तहौं मं बरा आई ॥  
 लखि कर पुदवन लात एक मारी ॥ गिरी भूमि हाहाय पुकारी ॥  
 पकरि केश इत उत धसिलावा ॥ पर अपकार केर फल पावा ॥  
 भरत साधु लखि दीन छुड़ाई ॥ कौशिल्या एह गे दोउ भाई ॥  
 राम मातु उठि हृदय लगाये ॥ जनु बन राम लखरा फिरि जाये ॥  
 रोदन करि पुनि हाल सोबरना ॥ राम गवन बन भूपति मरना ॥  
 जन्म मरणा फल भल नृप लीन्हा ॥ मोहि विधि विरचि वज्र करि दीहा ॥  
 मातु गिरा मुनि दुख रस बोरी ॥ बोलै भरथ बिलखि कर जोरी ॥

मातृमृषा मोहिं विधिजनमावा ॥ ममपादे सखहुन दुख पावा ॥  
 केके सुत अपयश आधिकारि ॥ मातृमते मोहिं कौन बताई ॥

दो० जो अधगो द्विज मातृपितृसुततिथमोर होइ ॥  
 जो मम सम्मत होइ तो मोहिं अधल गे सोइ ॥  
 शिवनिरमाय लपल भयो मद विभिचाराचोर ॥  
 जो गति पावै सोइ मोहिं मिले मानिसत मोर ॥  
 जे मृतिनिंदक हरि विमुख सत संगतिन सोहातु ॥  
 तिनकी गति मोहिं मिलहि जो होइ धारमत मातु ॥  
 मातृभरत के बचन सुनि बोली मुख सुखधाम ॥

रामहिं प्रिय तुम प्राण सख तुम्हें प्राण समराम ॥  
 सो० तात मातृमत माहिं ॥ तुम्हें कहैं मतिमन्दते ॥  
 सुगति लहैंगे नाहिं ॥ अस कहि लिये लगार उर ॥

चो० यहि विधि विलपत रैनिसै रानी ॥ होत प्रातः प्राये मुनिजानी ॥  
 करि प्रबोध भरतहि समुभावा ॥ उठतुरत गुरु आय सुपावा ॥  
 नृपतन छालि बेवान बनाई ॥ राखी मातृसकल समुभाई ॥  
 गंधसार समधी बहु लीन्ही ॥ दाह किया सरयू तट कीन्ही ॥  
 पांडु पौर वाते मृतिरीती ॥ दीनि तिलांजलि सबन सप्रीती ॥  
 गौरपक्ष ग्यारस दिन जाना ॥ कीन भरत दश गाव विधाना ॥  
 द्विजहि दान दीन्हों सब भांती ॥ तिसरे दिन भइ तेरही सांती ॥  
 पितृहित भरत की निज सकरी ॥ सो मुख सह सह जाइ नवरात्री ॥

दो० एका दिन गुरुजन सकल जूर सभा मोधि प्राइ ॥  
 शोच विवसल विभरत ते तब बोले मृधिराइ ॥

चामरकुं० सुवन सुनिलीजिय ॥ सबन सुख दीजिये ॥  
 दृगन जल यों छिये ॥ नृपहि कत शोचिये ॥

कुप्ये शोचिय द्विज निज धर्म त्यागि जो रहै विधै रत ॥ शोचि



यनृप नय रहित सहित तम तोष पोष गत ॥ शोचिय बरिा-  
क बजाइ पाइ धन धर्म न ठानहिं । शोचिय तिय पिय कुलनि  
पूइ विप्रहि अय मानहिं ॥ शोचिय यती विराग विन तिय  
न शोचिय सब भांति भल । सुर दूर लम तनु पाइ जिन भजे-  
उ न राखहिं छुंदि कुल ॥

चौ० शोचन योगन जनक तुम्हारे ॥ नीति निरत विभुवन उजियारे  
प्राण दुख तजि राखे बचना ॥ प्रगदी प्रेम प्रीति की रचना ॥ ॥  
अस जिय जानि शोच परिहरहू ॥ पितु आय सु सो सिर पर धरहू  
तुम्है राज्य देंगे नृप जानी ॥ पालहु प्रजहि परम हित मानी ॥  
सुर सुर नृप पर तोखे पैहें ॥ राम लखण सिय सुनि हरवैंहें ॥ ॥  
यामें दोष न निगम बतावैं ॥ जेहि पितु राजि देइ सोइ पावैं ॥  
सुनि सुमित्र कौ शिल्या बोली ॥ गुरु आज्ञा सुत अंहें अमोली  
पुनि पितु बचन जाइ बलि अंवा ॥ होउ तात सब का अवलंदा  
सुनि मृदु बचन भरत प्रकुलनि ॥ बोलि सबन नेह बस जानि ॥  
दो० यदपि मातु पितु गुरु बचन विन विचार चहि कीन ॥  
तदपि मोह वस उतरु में देत क्षमेहु लखि दीन ॥

चौ० प्रथम पिता पन पूर निवाहा ॥ राम लखण सिय वन भल चाहा  
जो मोहिं राजि देत वर जोरा ॥ यामें हित तुम्हार की मोरा ॥ ॥  
मम हित सो रघुपति पद सेवा ॥ अपर उपाइ न जानहु देवा ।  
हित तुम्हार हम ते किमि होई ॥ केके सुवन जान सब कोई ॥  
जेहि उदगारि सब का दुख दीन्हा ॥ कारा ते कारज कहु चीन्हा ॥  
मन मुख मूल सरिस मुख दायक ॥ धर्म शील चाहिय नर नायक  
तेहिते सबै कहों शिर नाई ॥ आय सुयाहि देहु हरवाई ॥ ॥  
प्रात काल रघुपति पहुँ जावों ॥ जरनि मिटै जब दरशन पावों  
भरत बचन सुनि सब हरयानि ॥ बोलि सुनि तुम परम सयानि ॥

शोकसिंधुवृद्धतप्रवगाह ॥ तुम अपवलंबदीन सब काह ॥ ॥  
 मातु मते जी तुम्हें बताई ॥ सो सद कीट नर्क दुरत पाई ॥ ॥ ॥  
 अपवशि चलहु बन जहं अवधेषू ॥ गनिज निज गृह पाइ निदेशू  
 भरत बोलि सुचि सेवक लीन्हें ॥ भवन भंडार सौं पिसव दीन्हें ॥  
 सचि बहि दीन तिलक कर साजू ॥ बिपिनि देव गुरु रामहि राजू ॥  
 होत प्रात चदि पुरजन जाना ॥ सबन कीन बन बोर पयाजा ॥ ॥  
 जेहि राखहि गृह रक्षा हेता ॥ सो कहैं हरि चिन जौं निकेता ॥  
 सुक सारिका पिंजरन बोलैं ॥ अधिक उचाट कपाटन खेलैं ॥  
 चदि चदि रथ अरि द्विजन समेता ॥ चले सकल बन रघुपति हेता  
 शिविका सुभग समूह सँवारी ॥ चदि गवनी पुनि तिय नृप नारी  
 जेष्टा दी विवेक कहि सोहे ॥ भरत शत्रुहन चले पयादे ॥ ॥  
 भरतहि देखि लाग अनुरागे ॥ तजित जि जान चलन पग लागे  
 दा० कौशिल्यादिगजाइ कै कह्यो चंदो रथ तात ॥  
 हैं हे पुरजन विकल अति सुनत चंदे हो उभात ॥  
 प्रथम दिवस तम सारहे उभै गोपती तीर ॥  
 तिसरे दिन वसमई दिग प्रात चली सब धीर ॥

इति श्री विश्वामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दारा राम  
 सनेही कृत भारत चित्रकूट गमनो नाम च-

तुर्दशोऽध्यायः २७॥

दा० जेठ कथा चतुरथ दिवस भृगु मेरु नियवान ॥  
 आवत भरत निपाद मुनि गुणो फराद बिलखात ॥  
 प्रथम मातुमि सिंदी नवन अबलै कपट समाज ॥  
 चंदे रामसिय लखरा पर करन अकंठ कराज ॥  
 जो न होत यह बात उर तोन लेत दल साथ ॥  
 उभै भौनि गृह जाति सब बोलि लिये रघुनाथ ॥



चौ० तिन ते कहिसि सजग सब होहू ॥ पारि हारि तात सुतन कर छोहू ॥  
 सन्मुख समर भरत ते करहू ॥ राम हेतु ननु तजि भव तरहू ॥ ॥  
 चतुर चिन्त नीते मनि लेहीं ॥ मूढ रतन कोड़ी लागि देहीं ॥ ॥  
 भले नाथ कहि भट अनुरागे ॥ कसि कसि अस्त्र शस्त्र मे आगे  
 सब निज कटक देखि गुह राजा ॥ कहेसि जुभार बजा बहु बाजा  
 तेहि अवसर भइ बांयें छीका ॥ सगुनिन कहा सपुन यह नीका  
 रामहिं भरत मनावन जाहीं ॥ तुमते होब रारि कछु नाहीं ॥ ॥ ॥  
 राम नाथ सुनि सब से कहेऊ ॥ में अव जात सजग तुम रहेऊ ॥  
 लेहों भेद भरत कर जाई ॥ प्रीति अ प्रीतिन छित छिपाई ॥ ॥  
 कंद मूल फल सुर सारि तीरा ॥ घटन भराइ गयो तिन तीरा ॥ ॥  
 मुनिहिं कीन लखि दराड प्रणामा ॥ दीनि अशीस समुझि प्रियगमा  
 भरत बिलोकि तुरत रथ त्यागा ॥ चलि तेहि मिले सहित अनुरागा  
 भेटत देखि देव अनकूला ॥ जयति जयति कहि बारैं फूला ॥  
 कहें बशिष्ठ कहें भरत निषादा ॥ भेटत ताहि सहित अहलादा ॥  
 यह हरि शरणा केरि प्रभु ताई ॥ नीचहु होत पवित्र लगवाई ॥ ॥  
 पूंछी कुशल भरत ता केरी ॥ अब सब भांति कुशल भइ मेंरी ॥  
 समुझि मोहि जे प्रभुइ न भजहीं ॥ ते जग बंचक सब सुख तजहीं ॥  
 बहुरि मिले रिपु दवन कुमारा ॥ पुनि सब रानिन कीन जो हारा ॥  
 दिहिनि अशीष लखरा समजानी ॥ पुरजन लखि हरये सुख मानी  
 कहें सकल यह है बंड भागी ॥ भेटे जाहि राम अनुरागी ॥ ॥  
 तब निषाद निज लोग बोलाये ॥ घर बन बाग सकल भर जाये ॥  
 पथमें सब सुरसरि तट गयऊ ॥ करि मज्जन सुख पावत भयऊ ॥  
 मांगि मांगि रघुपति पद नेहा ॥ टिके आइ जहें तहें तरु गेहा ॥  
 तब गुह पति बहु असन मंगाये ॥ कन्द मूल फल सबहि नखाये ॥  
 भक्त सखा कहि लीन जवाई ॥ गे जहें रैन रहै रघुराई ॥ ॥ ॥

कुसुम साखी देखितरु प्रथमा ॥ परिक्रमा करि कीन प्रणामा ॥

दो० सजाल नैन है सखाते बोले सकुच समेत ॥

हाथ राम सिय लखरा बन सहत बिपति ममहेत ॥

चौ० जनक मुता अतिशे सुकुमारी ॥ सासु ससुर पति प्रारा पियारी ॥

लोने लखरा सरिस सुचि भ्राता ॥ भयो न अहै नहै है ताता ॥ ॥

मृदु मूर्ति रघुपति सुकुमार ॥ जीव चराचर सबहिं दियारे ॥ ॥

ते सौवत बन दर्भ डसाई ॥ बिधि गति मति कहु जानि न जाई ॥

जिन्हें प्रारा सम पितु महतारी ॥ जोग बत रहे नगर नर नारी ॥ ॥

तेबेन चिचरि फूल फल खाहीं ॥ देखि हृदय मम फाटत नाही ॥

धृग धृग धृग मोहिं बाराहि बारा ॥ धन्य तात प्रणामल प्रतिपारा ॥ ॥

मुनि बोला कर जोरि निषादू ॥ जानि बाम बिधि तजहु निषादू ॥

नाथ आपु प्रिय रामें भारी ॥ करत रहे उत कर्ष तुम्हारी ॥ ॥

धरहु धीर सुख समुझि प्रणामा ॥ करहु सरबन चलि गये मुकामा ॥

हरि गुण कहत भयो भिन सारी ॥ करि भज्जन सब भये तयारा ॥

कैवट नाव अनेक भगाई ॥ उत्तरि सकल चलि भे हरखाई ॥ ॥

सानुज भरत पयादे देखी ॥ सुचि सेवक सकु चाहिं विशेरवी ॥ ॥

तिसरे पहर प्राग चलि आये ॥ करि अस्नान सबन शिर नाये ॥ ॥

विप्रन दान दीन बहु भौती ॥ सांगि राम पद प्रीति सोहाती ॥ ॥

जानि काम प्रद तीरथ नाथा ॥ बोले भरत जोरि युग हाथा ॥ ॥

सब फल दायक तुम भगवाना ॥ दीजै आनु सकत मोहिं दाना ॥

दो० चहौ न मुगतिन सुमति सुख रिधिसिधिमें नहि नेहु ॥

बड़े रामपद प्रीति नित यही दान मोहिं देहु ॥

शशिचकोर धन मोर धन कृपिन मकर मधुरीति ॥

चातुक स्वाती ते अधिक प्रभु पद बाँदे प्रीति ॥

जो कहौ प्रथमें तजि निन्हें कत गवनेहु परभोन ॥



अंख अनुग अज्ञान ते अघन होय अस कोन ॥ ॥

सो० भय बचन मुनि सार । भई विवेकी में गिरा ॥

तात तजहु कुबिचार । तुम रामहिं प्रिय प्राणसम-

चौ० बेनी बचन भरत मुनि हरष । कहि बड़ साधु सुमन सुर बरये ॥ ॥

भर हाज पहें गो दोउ भाई ॥ की न दराउ बत मन सकुचाई ॥ ॥

श्रीअ चरतुं मुनि मैजल भारी ॥ पद भलकत भलका जनु खारी ॥

लखि मुनीश उठि हृदय लगाये ॥ देइ अर्शाश निकट बैठाये ॥ ॥

कहि करधि तुम सकुचत कत ताता ॥ अचलई शक्ति बाल विधाता ॥

रामहिं प्रिय तुम समनहिं कोई ॥ तब मत कहव लहव अघ सोई ॥

पल तेहु प्रजहि तदपि नहिं फीका ॥ प्रभु पदप्रेम किहेउ अति नीका ॥

तेहि पर कहि कलंक बड़ येहू ॥ हम सब का उपदेशहि देहू ॥ ॥

समुझ परत मोहि अस निरबहेऊ ॥ रामरूपा मूरति तुम अहेऊ ॥

बालक विधि सम सुयशतुम्हारा ॥ हरण ताप तम पाप अपारा ॥ ॥

भीर नयनन छुबि निरयितुम्हारी ॥ हम आपुनि बड़ भाग विचारी ॥

दो० सब साधन कर फल लहा लखण राम सिय दर्श ॥

तेहि फलकर फल अब भयो भरत त्वया अस्पर्श ॥

चौ० मुनि मुनि बचन भरत तब बोले ॥ पुलकि गात जल लोचन लोले ॥

नाथ मोहि नहिं पितु कर शोचा ॥ नहिं दुख जिय जग कहै कि पोचा ॥

बिगरे परलोक लोक नशंका ॥ नहिं कछु डर विधि भयो किवंका ॥

सकहि कष्ट हृदय मम भारी ॥ लखण राम सिय होत दुखारी ॥ ॥

यहि आमय की औषद आवै ॥ तब कछु और बात मन भावै ॥ ॥

कह मुनि कछु न शोचतुम्हारे ॥ सब दुख मिटिहै प्रभुइ निहारे ॥

आजु होउ तुम अतिथ हमारे ॥ भले नाथ कहि कटक सिधारे ॥ ॥

तब मुनि करि विचार मुख पाई ॥ ऋद्धि सिद्धि आशा मारिबोलाई ॥

कहो करेहु सबहिन की सेवा ॥ हरषी सकल पाइ बड़ देवा ॥ ॥ ॥

प्रथम कनक मय महल साहाये ॥ कैयो योजन माहि बनाये ॥ ॥  
 दीन्हों वास सुरुचि सब काहु ॥ सुभग सेज स्रक सरस उकाहु ॥ ॥  
 असन बसन बर भोग अनेका ॥ दिये तोपि तिन एक पर एका ॥ ॥  
 दासी दास अप्सरा नाना ॥ बाग तड़ाग विविधि पौ माना ॥ ॥  
 सुरदुरलभ सुख लहि सब लोगा ॥ बिसरे घर बन बिरह बियोगा ॥  
 भरथ बिलोकि मुनीश प्रभाऊ ॥ भयो राम यद अधिकहु चाऊ ॥  
 चक्र वाक सम रैनि बितायो ॥ प्रात नहाइ मुनिहिं शिर नायो ॥  
 बर बिराग बिपेन्द्र निहारी ॥ मुदित दिये संग सेवक चारी ॥ ॥  
 आयसु पाय सुसैन सिधाये ॥ बीच वास करि यमुनहि आये ॥ ॥  
 रघुपति बरणा निरखि बर वारी ॥ हरयत भये सकल नर नारी ॥ ॥  
 भरत भाव भारी सक तन धोखा ॥ अपरकबिहि अति अगम बिशेषा  
 जिमि मन मलिन मनुष्यन कैहा ॥ दुरलभ ब्रह्मानन्द जग मेहा ॥  
 तेहि निशि रहि तहें उठि भिनसारा ॥ एकै खेव भये सब पारा ॥ ॥  
 करि अस्नान चले शिर नाई ॥ देखि कहैं मग लोग लुगाई ॥ ॥  
 का दोउ राम लखरा हैं सोई ॥ होती संग सीय कहै कोई ॥ ॥  
 सैन साथ पुनि मानस खेदा ॥ तब इक सरवी कह्यो सब भेदा ॥  
 सुनि सो कथा सकल अनुरागी ॥ भरतहि बहुरि सराहन लागीं  
 केकैय योगन सुतये अहहीं ॥ ॥ एक कठोर बिधातैं कह हीं ॥  
 भली भई भव भूत बिगारी ॥ एक कहै अस कहौ न प्यारी ॥ ॥  
 दो० राज्य हरणा पुनि पितु मरन बिपिनि चरसा जग दीश ॥

देव करै ऐसी बिपति परे न काहु शीश ॥ ॥

चौ० यहि बिधि जहें तहें ग्राम निवासी ॥ कहैं सुनैं सुमिरैं सुख रासी ॥  
 भरतहि जिन देखे मग लोगा ॥ तिनके सकल मिटे भव रोगा ॥  
 सहित समाज जहां पग धरही ॥ महि कोमलतरु छाया कर हीं ॥  
 यह बड़ि बात भर कै नाही ॥ जिन्हें राम सुमिरत मन माही ॥



लखिगुरु तेबोले सुरराजा ॥ बनी बात अब होत प्रकाजा ॥  
 रामहि भरत मनावन जाहीं ॥ अस कह्यु करहु मिले जेहि नाही  
 दो० कह सुरगुरु हरिभक्त जो को उकरत कुचालि ॥  
 परत पलटि तेहि श्रीश सोइ ज्यों रजरबिहि उछालि ॥  
 सेवक की सेवा कि हे हरिहि होत पातो य ॥ ॥  
 कोरे भक्त ते बैर जो जौरे राम के रोष ॥ ॥  
 यदपि एक रस एक प्रभु गहत न सारा सार ॥  
 तदपि सुभक्त न हित करत सम अरु बिषम बिहार ॥

चौ० अस जिय जानित जहु अविचार ॥ सुमिरहु भरत चरा मुख सार ॥  
 सुनि सुरपति उरधीरज आवा ॥ बरयि सुमन पद प्रेम बदावा ॥  
 पूछत प्रभु भरतहि बलि आये ॥ नय निवास करि प्रात सिधाये  
 सब के उर अभिलाख विशेषी ॥ कबसिय राम लखरा मुख देखी  
 तब निषाद गिर बरहि देखवावा ॥ प्रेममगन सबहिन शिर नावा ॥  
 सुमिरत नाम दरशकी आशा ॥ उभयकोश चलि कीन निवासा  
 प्रात काल उदि चले विशेषवा ॥ इतसिय स्वप्न प्रात अस देखवा  
 पुरजन सहित भरत जनु आये ॥ सासु आन बिधिस ब दुखताये  
 सुनि प्रभु कह्यो स्वप्न भल नाही ॥ कीन अस्त्रान शोच मन माहीं  
 उत्तर दिशि देखी न भधूरी ॥ दुरे आइ खग मृगत हं भूरी ॥ ॥  
 तब तो चकित उठे रघुराई ॥ आइ किरा तन खवरि जनाई ॥  
 भरत आगमन सुनि रघु वीरा ॥ भये प्रेम बस पुलक शरीरा ॥  
 पुलि मन शोच कीन रघुराऊ ॥ उत सुरहित इत बंधु ह्वाऊ  
 बहुरि समुझि मन भये सुखारे ॥ भरत कहें महं ॥ पैं हं मोर  
 दो० लखरा लख्यो प्रभु शोच बस उठे मनुष्य शासाधि ॥  
 बोले सन्मुख जोरि कर सहित क्रोध अह लाधि ॥  
 चौ० नाथ कनक रसना प्रभुताई ॥ पावत पुन जात बौराई ॥

वेनु नहुष भुज सहस सुरेश ॥ शशि त्रिंशंकु यश विदित त्रिदेश ॥  
 अरु कृत वीर्य दहस गति गाई ॥ सुरती में नहिं सिंधु समाई ॥ ॥  
 भरत साधु बहुरहे सयाने ॥ ते उराज यह पाई भुलाने ॥ ॥  
 विपिन यकांकी समुक्ति सुभाये ॥ करन अकराटक राज सिधायि ॥  
 जो मन में यह बात न आवत ॥ लौं केहि करि हारि कटक सोहावत ॥  
 प्रथम मातु मिसि किहि निखोराई ॥ समय पाई कल लागत आई ॥  
 भरतहि आजु सबंधु प्रचारी ॥ नाथ सपथ ररा डरि हीं मारी ॥  
 अति अपमान रजहिं नहिं सौहे ॥ हम नृप तनै करा बंधु प्रीहे ॥ ॥  
 सुनत बचन लोक यभय मानी ॥ तब तहें भई गगन इमि बानी ॥  
 ऐंसे बलहे तात तुम्हारे ॥ परिबुध करत न केहु अविचारे ॥  
 सकुचेल यरा राम सन माने ॥ तात बचन तुम सत्य बखाने ॥  
 भरत सरिस शुचि बंधु जहाना ॥ भेयान अपहे तात तव आना ॥  
 गरुडें चहु रजु अहि गहि खांवे ॥ गोयद बूडि घटज बरु जावे ॥  
 भरतहि होब नृप मद भाई ॥ विन सकि पयनिधि खदखदाई ॥  
 गुण अवगुण मय जग विधि कोन्हा ॥ भरत हंस जलत जिपवली न्ह ॥  
 यहि विधि प्रभु इत करत बडाई ॥ उतै भरत पय सरित नहाई ॥  
 सकल समाज राखि तेहि तीरा ॥ आपु चले जहें सियर बुचीरा ॥  
 संग निषाद नाथ लघु भ्राता ॥ विविध कुतर्क करत मग जाता ॥  
 केके सुत लखि वैंत जिदे हीं ॥ सेवक समुक्ति अपव करि ले हीं ॥  
 तजेहु अपतजेहु मोहिं गलियाही ॥ शिशु तजि मातु पितहि कित जही ॥  
 यहि विधि ठहु कत बदन अधीरा ॥ आयें चलि प्रभु आश्रम तीरा ॥  
 लै बिटय अपनेक प्रकारा ॥ खग मृग मधुकर करत बिहारा ॥  
 दौ० पाकरि जंबुत माख चुत तामि धिबदत रुद्रायाम ॥  
 नेहि तर सरिता तटवनी पररा कुटी अभिराम ॥  
 दुलसी तरु सुयव चरु रुचिर वेदिका एक ॥



होत कथा नित आइ तहं बेदत साधु प्रनेक॥

चौ० बलशोभा नवभारत निहारी॥ मिटे सकल दुख भये सुहारी  
चले प्रणाम करत दोउ भाई॥ पहुँचे जबर बुझति यहं जाई॥  
उठे तुरत प्रभु जवे निहारा॥ कहूं धनुशार कहूं रूपादिभारा॥  
आइ उठाइ लाइ उर लीन्ह्यो॥ मिलि निजरीख सुरज कहे री  
प्रीति प्रतीति भारत रघुवर की॥ विधि हरि हर सुर सकहि न तर की  
हों केहि भांति कहों मति धोरी॥ मिले लख राते भरत बहोरी॥  
राम सबहि भेटे हरवाई॥ मिले शत्रुहन प्रेम बढ़ाई॥  
केवट लखरा शत्रुहन भेटे॥ पुनि दोउ बंधु सियायद लेटे॥  
दीनि अप्प्रीश सहित बेगारे॥ भे अनुकूल बिलोकि सुखारे  
तब केवट वर बचन सुनाये॥ प्रभु मुनि मातु लोग सब आये॥  
गुरु आगवन सुनत रघुवीरा॥ गये जहाँ सरित त सब भीरा॥  
मुनिहिं प्रणाम कीन दोउ भाई॥ प्रेम समेत लिये उर लाई॥  
विप्र विप्र वनित न शिर नाचा॥ आशिरवाद सबन ते पाचा॥  
आरत लोग समुझि सुरदाता॥ पलमास भे मिले दोउ भ्राता॥  
पुनि देखी सब मातु बिहाला॥ प्रथम के कहि मिले कपाला॥  
यह परी प्रभु तेहि कीन सुखारी॥ बहुरि सकल भेटी महतारी॥  
मिले सुमि बहि पुनि दोउ भाई॥ कोशिल्ये भेटे अकुलाई॥  
दो० अपति सनेह बस मातु दोउ बंधु लिये उर लाइ॥

तेहि क्षराभयो बिलाप जस तस को पे कहि जाइ॥

सो० भेटि सवे दोउ भाइ॥ गुरुहि कहौ पग धारिये॥

मुनिकर आय सुपाइ॥ उतरे जल थल दिखि सब॥

चौ० द्विज गुरु सचिव मातु ले साया॥ आये निज आश्रम सुनाया॥  
सिय उठि मुनि पदनयो माया॥ उचित अशीष दीनि नर विनाया॥  
पुनि गुरु विय द्विज प्रिय पद लागी॥ दीन अशीष सबन अनुरागी॥



मासुनमकलयिलो बैदेही ॥ लखिलखि सबे लाइ उरलेही  
 तब मुनीश सब का बैठाये ॥ प्रथम कछुक हरि बीरत मुनाये  
 पुनितृपसुरापुर गवन जनावा ॥ मुनिसियराम दुसह दुरवपास  
 करहिं विलाप लखरा युतरानी ॥ सो करुणा नहिं जाइ बरवानी  
 तब विधि मुत दीन्हो बहु जानी ॥ सबहिं न जाइ कोन्ह अस जाना  
 दशम दिवस रह्यो तेहि दिन बीहा ॥ बसत निजला सबहिं कीन्हा  
 प्रातहि जो उठाय आय सुदिहेज ॥ सो प्रभु सहित प्राति ते कहेऊ  
 करि पितु कया बैद विधि रीता ॥ मदन दिवस भे शुद्ध पुनीता ॥

सो० परम पुनीता जोइ ॥ कोइ न जानत जा सुगति ॥

नर नाटक कृत सोइ ॥ करत निजा नुग भाव बस ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास

राम सनेही कृत भरत चित्रकूट आगम नरानमि-

लाप वर्णनो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

दो० सुमीर राम सिय सन्त गुरु गराव गिरा सुख दानि ॥

बरसीं मान समत कछुक अग्नि निबेस कृत प्राति ॥

कोशल पुर बासी सकल सुख प्रद पखत पास ॥

बसत कसत ननु लसत लखि नशत जगत की आस ॥

तब रघुपति गुरते कह्यो नाथ बिकल सब लोग ॥

लखि मोहिं युग सम जात पल नहिं फल भक्षायोग ॥

चौ० बोल मुनितुम मुनहुं कृपाला ॥ प्रथम लोग सब रहे बेहाला

नबते कोन्हि निदरश तुम्हारे ॥ तब ही ते सब भये सुखारे ॥ ॥

तेहि ते रहन कछुक दिन देह ॥ भले नाथ कहि गेनि जगेह ॥

लागे रहन मुदित नर नारी ॥ हरि बंधोल सब होंइ सुखारी ॥ ॥

पय सार करहिं दिकाल सनाना ॥ कंद मूल फल लै लै नाना ॥

कोल कितात मुदित लै आवें ॥ धरि धरि आगे प्रीति नवावें ॥



देहिलेगधनलेहि नसेई ॥ कहैं हसार भला किमि होई ॥ ॥  
 तुम सुकृती हम बन चरपापी ॥ राम कृपा भय ईश कलापी ॥ ॥  
 प्रिय पाहुन तुम सब सुख दाता ॥ सेवा योग न कीन विधाता ॥ ॥  
 फल दल लेहु दीन जन जानी ॥ रो भक्त साधु प्रेम यहि चानी ॥  
 मुनि मृदु वचन सकल अनुगो ॥ तिनके भाग साराहन लागे ॥  
 प्रीति बिलो किलोहि फल फूला ॥ खुशी होहि तब लखि अनुकूला ॥  
 यहि विधि लोग सकल हरि धाही ॥ वास रवीति पलक सम जाही ॥  
 सबके मन इच्छा यह होई ॥ जहैं सिय राम तहैं सब कोई ॥  
 सिय करि सब सा सुन पद सेवा ॥ किहिनि सुबस कोइ जान न भेवा ॥  
 यहि विधि रिधि वासर चलि गयऊ ॥ दुतिया दिन सब बंदुरत भयऊ ॥  
 भरत वशिष्ठ राम मुनि रानी ॥ निज मति सारिण कहैं सब बानी ॥  
 तेहि क्षणा जनक दूत युग आयो ॥ प्रभु देरि बभे दुरित सुभायो ॥  
 बूझत गुरु बिदेह कुशल आई ॥ बोले तब सुचार शिर नाई ॥ ॥  
 प्रभु प्रव कहहु कुशल कहिलागी ॥ कुशल हेतु सो भयो विगी ॥  
 नतर कुशल गे प्रज सुत साधा ॥ मिथिलायुत भद्र प्रवध प्रनाथा ॥  
 नृप परलोक मुना जबराना ॥ भये बिकल तब सहित समाजा ॥  
 दो० पुनि धीरज धरि प्रवध पुर दूत पाये चारि ॥  
 खबरि कही तिन आइ तब आपु रचले विचारि ॥  
 किहिनि निवास नमग कहूं चलत भये दिन तीन ॥  
 आइ पहुंचे खबर हित तब मोहि आजा दीनि ॥  
 चौ० जनका गमन सुनत रघु वीरा ॥ आनन चले संग बहु भीरा ॥  
 पुर जन सुनि सब भये सुखारी ॥ कहैं किरह बब हरि दिन चारी ॥  
 गिरवर देखि जनक अथ त्यागा ॥ कीन प्रणाम सहित अनुरागा ॥  
 मग प्रम स्वत्यन काहुं पावा ॥ मनु प्रभु पास प्रथम ही आवा ॥  
 इत उत लोग सकल निय राने ॥ लगि मिलन प्रेम रस माने ॥ ॥

जनक मुनिनपदनायउमाथा॥ अरविनप्रणामकीनरधुनाथा  
 मिले विदेहें बंधुसमेता॥ लैः पाये सह प्रीति निकेता ॥ ॥  
 दोउ समाज मिलि भये बेहाला॥ रहन जान धीरु जतेहि काला  
 भूपरूप गुण शील बखानी॥ रोवहिं सकल बिकल नृपगानी॥  
 रामहिं देखि प्रीति क उर दाहा॥ हाउ बाम बिधि कीन्है काहा ॥  
 मुरनर मुनि सब भये दुखारी॥ नृप विदेह की दशा निहारी ॥ ॥  
 मोह बिदश में जनक सुजानी॥ यह रघुपति पद प्रीति पिछानी  
 जप तप योग धरति बिजाना॥ राम प्रनादि नृप सभाना ॥  
 मुनिवर सबहि बोध बहु दीन्हा॥ राम घाट तव सज्जन कीन्हा ॥  
 उत्तरे सब जहें तहें जल तीरा॥ तेहि दिन सकल रहे बिन तीरा ॥  
 जान सब न उरि की तस नाना॥ कोल किराल बात सुनि नाना ॥  
 कंद मूल फल सरस सोहाये॥ भरि भरि भार भूरि भट लाये ॥ ॥  
 मुनिवर पद जनक यहें दीन्है॥ सेन सहित नृप पारगा कीन्है ॥  
 यहि विधि भंगत बासर चारी॥ प्रभुहि देखि सब लोग मुखारी

दो० दोउ समाज कहें नारिनर अपन जाव धर दूरी॥

सियरघुपति संग रह बबन मुरपुर ते मुख भूरी॥

जेठ शुक्ल जिष्णुग दिवस जनक राजनिवास॥

आयहु मुनि सब काश तहें जहें सिय की सब सासु॥

चौ० कौशल्या सादर बैदारी॥ श्रवत नयन जल सकल दुखारी

सिया मातु बोली बिधिकरणी॥ परम कठिन कहु जात नबरणी

देखहु विष वाय सबहु तरे॥ मधुमाल कहु मिलत नहेरे ॥ ॥

जन्म विवाह उछाह अपारा॥ कहें यह मुख कहें यह दुख डारा

लवगा मातु कहें से से अहरे॥ बाल चरित सम कन जो रहरे ॥

कौशल्या कह बिधि हिन दोषू॥ निज कृत कर्म केर सब रोषू ॥

मोहिं न जांच भूपति कर कोई॥ नहिं बन जात राम सिय सोई ॥



गृहसनेह भरनकर देखी ॥ यही एक मोहिं शोच विघोरखी ॥ ॥  
 तिहिते दीब कहें उच्य पाही ॥ वहुँ लयगा भरतसंग जाही ॥  
 भरत शील गुण प्रेम बड़ाई ॥ कहें शेष परसकै नगाई ॥ ॥  
 जबतब मोसे बंदे महीया ॥ भरत भये हमरे कुल दीपा ॥ ॥  
 कनक कंठोरी चदि खुलि जार ॥ पुरुष परविष्ये ओसर पार ॥  
 सुनिबर बचन सकल बिलखानी ॥ धरहु धीर पुनिक हो सुबानी  
 लयगा मातु तब कह्यो मप्रीती ॥ देवि दगाइ युग यमिनि बोती  
 कौशल्या कह्यो अवथल जाहू ॥ हमरे तव पात हाथ निबाहू ॥  
 सुनिबोली प्रसकाहन कहहू ॥ राम मातु दशरथ प्रिय प्रहहू ॥  
 प्रीति कर करे गुरु जही ॥ नृगागिरि सम प्रतिपालत नाही ॥  
 तब हित हरि काइ का अनुसरई ॥ रचिसहाइ कहें दीपक करई  
 हो ॥ राम लयगा ॥ लय जाव बन करि मुर मुनिको काज  
 फिरि जैहें निजनगर तब पैहें त्रिभुवन राज ॥  
 चौ ॥ याग बल्क्य नारद इमिकाहा ॥ भूंद न होव मन्य हम चाहा ॥  
 प्रसकाहि सिय हित विनै मुनाई ॥ प्रारि निज थल करत बड़ाई  
 प्रिय परिजनाहें मिली लखि सीता ॥ भेसब बिकल मोह मद जीता  
 जनक सियहि उर लीन्हो लाई ॥ बोले पुनि धरि धीर जराई ॥  
 पुत्रि पवित्र होउ कुल कीन्हो ॥ यावन सुयश सकल पुर लीन्हो  
 मुनि पितु बचन सियास कुचानी ॥ रैनिहि भल यहाँ न जानी ॥  
 लखि रुख भे प्रसन्न पितु माता ॥ पठइ नित बतहं भेदि सुगाता  
 सियामातु तव पतिहि मुनाई ॥ कौशल्या कृत भरत बड़ाई ॥  
 मुनि पुलकित तन बोलिराऊ ॥ ऐसे हैं प्रिय भरत प्रभाऊ ॥  
 हम बशिष्ठ मुनि बहु प्रबगाहा ॥ मिली न भरत बुद्धि की थाहा  
 योग भोग युत नय मैं राऊ ॥ किमि जानौ हरि जन कर भाऊ ॥  
 भरत भाग्य गुण शील विचारा ॥ शेष कहें परलहें नपारा ॥ ॥

महिमाभरतकेरिसुनुयारी॥ जानै रामनसकें उचारी॥ ॥  
 तोफिरिअपरसकें कोगई॥ चिरियाउरकहुं सिंधु समाई॥

**दो०** लखगाहिं फेरहु भवनतव कहों भरतबनजान॥  
 जोमें यावहुं थाह कछु प्रीति प्रतीति अमान॥

**चौ०** रामभरतकै बात प्रमाना॥ जानै रामभरतनहिं आना॥  
 हमपि भरतकी करत बड़ाई॥ हर्य सहित सबैरनिबिताई॥  
 प्रातकाल करिमज्जन नीरा॥ जनकबशिसुभरतरघुबीरा॥  
 कौशिकादिपुजन प्रीधकाई॥ बैरे सबबट तरुतर आई॥  
 बोले तबराघव ऋषितरे॥ नाथ सहत दुखलोग धनैरे॥  
 जो आयसु मोहि होइ गोशायी॥ सोमें कंगे दास की नाई॥ ॥  
 बोले मुनि तुम धर्म जहाजा॥ कसन कहौ यहि विधि महाराजा॥  
 अस कहि बहुरि भरत ते भाषा॥ कहौ तात निज मन अभिलाषा॥  
 बोले भरत जोरि करि दोऊ॥ अवसर समुझि कहत तब कोऊ॥  
 बैर जहं प्रभु विभुवन त्वाता॥ पुनि कौशिक मुनि उभे विधाता॥  
 तुम प्रभु विधि गति छेकन हारे॥ सचिव जनक पितुं दोर हमारे॥  
 ज्यौं रो ऋषि बैरे बहु जानी॥ तहें हौं लघु किमि सकहु बखानी॥  
 जो तुम सब कर आयसु होई॥ सोइ हित मानि करें सब कोई॥  
 कह मुनि सम सम्यक्त सुनि लो जे॥ जो कछु राम कहें सोइ कीजे॥  
 तगुणा आदि दै जहं लगानी॥ राम रजाय सबन सिरजानी॥  
 कौशिक सचिव भरत सदिदेहा॥ सबन कह्यो भल सम्यक्त एहा॥  
 जानि राम निज ऊपर भारू॥ बोलि पुनि मुनि ते प्रीति सारू॥

**दो०** नाथ मपथ मुनि साह जग भरत सरिस शुचि भाइ॥  
 भयो नहै नहिं होन अब बहुत कहों का गाइ॥  
 जे गुरु पद रज शिर धरें लोक वेद बड़ तौत॥  
 तेहि पर रौर की कृपा भरत सरिस जग कोल॥



चौ० मुखपरकेहिविधिकोंवड़ाई॥ सकुचतमुमनिसमुझिलधुभाई  
 भरतैपोचकहैजोकोई॥ महामूढपापीहैसोई॥ ॥ ॥  
 सातहिदोषदेइसोउमूढ़ा॥ जानिनजाइइशगतिगूढ़ा॥ ॥  
 मातनमेंअतिप्रियसोइमाता॥ भाइनेमेंप्रियभरतसुभाता॥  
 भरतदेइमोहिंआयसुजोई॥ शम्भुसपथमेंकरिहोंसोई॥ ॥  
 सुनिप्रभुवचनडरेसुरगई॥ पठवतशारदसोनहिंआई॥ ॥  
 तबवासवशरपरअपकारी॥ निजउच्चादसदनशिरडाई॥  
 जनकभरतमुनिसचिवेत्यागी॥ सुरमायासोसबकेलागी॥  
 मनउच्चादभयेसबकेरे॥ छिनसोहातछरछिनवनहेरे॥ ॥

दो० बोलेतबमुनिभरततेतातकहौअबसोइ॥  
 जेहितेजावतजीवजगसबहिनकरहितहोइ॥  
 सुनिमुनितेबोलैभरतदेवकहौसतिभाव॥  
 मैंजानतनिजनाथकरअतिशेसरलसुभाव॥  
 जननिजनकसोदरसखासेवकसचिवपरोस॥  
 काहुनदेख्योआजुतकप्रभुकखबदनसरोस॥

चौ० सबपरकृपाकदाझलखाई॥ तदीयिप्रीतिमोपरअधिकारि  
 शिष्यपुनमेंखेलतप्रभुसंगा॥ कबहुनकिहिनिसोरमनभंगा॥  
 जोककुबस्तुअनोखीपावें॥ मोहिंदियेबिनआपुनखावें॥  
 महआजुतकअतिपृथुजानी॥ प्रभुसन्मुखकहुबातनदानी॥  
 निशारिनरहीदरशाअबिलखा॥ सोसनेहबिधिमोरनराखा॥  
 सेवकधर्मस्वामिसेवकाई॥ सोतजिगयोकरनअधमाई॥  
 पुनिप्रभुमातुपितागुरुबानी॥ परिहरीयहुंचेउपासप्रमानी॥  
 ऐमेहुअधप्रभुगनेनराई॥ शरणाजानिलीन्होअपनाई॥  
 ऐमेप्रभुनहोंअनुहरहें॥ सेवकहैसनमुखहठकरहें॥ ॥  
 दो० निजस्वार्थहितस्वामितेहंदेसोसेवकपोच॥

जोमेहिं प्रायसुदेहिं प्रभु सोइ कोतजि शोच ॥

चौ० सुखदबचन सुनिसब हरखाने ॥ भरतहि धर्मधुरंधर जाने ॥

रामभरत तेबचन उचारे ॥ तान रहत महि पुगय तुम्हारे ॥ ॥

जोहमही परराख्यो बाला ॥ तौ अब कहों सुनौ हे ताला ॥ ॥

जो प्रथमैं पितु प्रायसु दीन्हा ॥ हमैं तुम्हें सोइ चाहिय कीन्हा ॥

जिन गुरु पितु पति गिरान धारी ॥ तिन जानहु तेहि डाख्यो मारी ॥

अस जिय जानि मानि हित भाई ॥ पालहु प्रजहि अवीध भरि जाई ॥

होइहि तुम्हें नलेस कलेश ॥ मिरपर गुरु सुमंत मिथिलेश ॥ ॥

महं बिपनि रहि अवीध बितारै ॥ ऐं हों सपादि भवन सुख पाई ॥

दो० सुनिषु पतिके बचन मूढु भा भरतै संतोष ॥

मनहु लह्यो फल जन्य कर मिटे सकल दुख दोष ॥

चौ० बोलै बहुरि जोरि पुगहाथा ॥ तिलक साज सब लायो नाथा ॥

सो अब कहा करिय धुवीरा ॥ कह प्रभु चलहु बली अरि तीरा ॥

अत्रै मुनि जहं देइ बताई ॥ तहं धरि देहु काम फिरि आई ॥ ॥

अस कहि चले गये मुनि धामा ॥ करत भये सब दराइ प्रणामा ॥

पादर करि मुनि चर बंदारे ॥ भरत अत्रिते बचन उचारे ॥ ॥

नाथ नीर सब तीरथ केरा ॥ धरिय कहौ सो करहु निवेरा ॥ ॥

कह मुनि हे एक कूपर साला ॥ लोपत सोपिन कोने उ काला ॥

ताही में जल राखहु ताता ॥ सुनि तब भरत कीनि सोइ बाला ॥

भरत कृप कह बावन सोई ॥ पीवत जल निरमल मन होई ॥

दो० पुनि प्रभु ते बोलै भरत नाथ जो प्रायसु होय ॥

आबहु तीरथ देखि सब राम कह्यो भल सोय ॥

पाइ जायसु चले तब जहो जहो बलि जात ॥

नेम प्रेभल सि भरत कर मुनि जन मन सकुचात ॥

पांच दिवस में सकल वन देख्यो भरत दिदौरि ॥



हरिदिन प्रातः स्नान करि प्रभु ने कह्यो बहोरि ॥  
 रोजै मोहिं आधार कह्यो जेहि स्त्रिय अवध मिराय ॥  
 सुनि दोन्हो निज पादुका भंय मुदित मन पाय ॥  
 जननि जनक गुरु सचिव प्रिय पुरजन सरवा सुधात ॥  
 भेंटि सबन कोन्ह बिदा चले सकल बिलरवात ॥  
 तेहि क्षणा माया मून की सब का भई सहाय ॥  
 नाहित रघुपति विरह ते सरन सकत को उजाय ॥  
 बंदे प्रभु सिय अनुज पुत परन कुटी के माहिं ॥  
 कल बड़ाई भरत की इत वरनन सब जाहिं ॥  
 तेहि दिन रहिय मुनानिकट उभे भी सपति ग्राम ॥  
 तीसरा बासा गोमती चौथल अवध मुकाम ॥  
 भूला दिन आये अवध जनक रहे दिन चारि ॥  
 जहँ तेहँ सब निबसाइ के निज पुरगये सिधारि  
 भरत मुदिवस सो धाई के पुनि गुरु आय सुभायि ॥  
 सिंहासन प्रभु पादुका बँटारी अनुरागि ॥

गीतिका कं० बँटारि प्रभु पद पादुका सिरुनाइ अनुज को-  
 लाइ के । सो पाइ पुरजन मातु सब तब आपु आय सुपाइ के ॥  
 पुर दाक्षिणा योजन एक नंदि ग्राम गुफा बनायह । लागे रहन  
 फल पात भयि जग भोग सब बिसरायह ॥ सुनि अवध मुख सु-  
 राज लाजत धन दधनु स्त्रिय राग ही । तेहि त्यागि दीन्हो  
 भरत किमि जिमि मधुप चम्पक बाग हो ॥ रघुवीर पिय पु-  
 नि बंधु तेहि जड़ मोहि माया किमि सकें । जे अहँ सनमु-  
 ख राम के तेउ तासु तन नाहीं लकें ॥ यह भरत चरित पुनीत  
 पावन करन मुनि वर्णन कस्यो । रघुनाथ करि संक्षेप क-  
 ह्यु विश्वामसागर मंधर्यो ॥ कहि हँ सुनि हँ मुदित निन

की प्रीति प्रभुपद बादि हैं । नशि हैं सकल दुरवगम धामन-  
जात की ऊँचाइ हैं ॥

दो० श्री गुरुदेवादासके चरण कमल धरि माथ ॥

भरत चरित संक्षेप करि कहा कछु कर घुनाथ ॥

सो० हरिहरजन गुण गूढ़ । मूढ़ न लखै विमूढ़ विन ॥

जिमि संश्रित आरूढ़ । बूढ़ न जानत जीवगति ॥

इति श्री विश्वाम सागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास  
राम सनेही कृत अयोध्या काण्ड संपूर्ण

नाम षोडशो अध्यायः

॥ (१६) ॥



श्रीगणेशायनमः

# अथविश्रामसागर

आराधकागणेशायनमः

दो० सुप्रियसिंहसन्तपुत्र गणेशगिरासुखदानि॥

वरगोत्रादकमनकछुकआदिस्मायराजानि॥

चौ० भरतचरित्रकहेकछुताता॥ प्रबसुनियेखुपनिकीवाता॥  
सीताअनुजसमेतकपाला॥ बसतकामतापर सबकाला॥  
चहुंदिशि सघनलतातरुनाना॥ मनहुकामरतिरचितविताना॥  
सीतलमंदसुगंधितबाऊ॥ डोलतबोलतवयकरिचाऊ॥  
तामाधकटकशिलाप्रतिसेहै॥ उपमादेनहारअसकोहै॥  
तहेंएकदिनप्रभुनिजकरतौ॥ चुनिप्रसूनसकखेघनेरे॥  
सीताहिपहिरायेसुखमानी॥ तिलककरनि किमिजाइबरबानी॥  
नेहिप्रकारमिथिलेशकुमारी॥ प्रभुकेअंगनसजेसंवारी॥॥  
बैठेसहितसनेहसानकी॥ आसदोऊदिशिप्रेमपानकी॥  
करहिंप्रकाशपासमनिभारी॥ रहीछिटकिपूनोंउजियारी॥  
नेहिनिशानारिजयन्ताकेरी॥ आईतहेंलेसुमुखिघनेरी॥॥  
रघुपतिरूपविलाकिजुडानी॥ नृत्यगानकीन्हो कलबानी॥  
मनभावनबरमांगिसिधाई॥ सोसुधिकतहुजयंतैपाई॥॥  
दूरबाबसबायसबपुर्वानिके॥ माख्योसियपदचंगुलभरिके॥  
सुधिरंदरिवप्रभुत्तगायकलीन्हा॥ ब्रह्ममंत्रपदिपाछेरीन्हा॥  
ज्योंज्योंभागतजातजयन्ता॥ त्योंत्योंबढ़तबानबलहंता॥॥

**दो०** बचीबेधाबिरूपास्यस्यपादिसबपास ॥  
 गयोदयो नहिं रहन केहुं किमपि जानिनिजनाश ॥  
 सुरबह दुरबह है जाततब जबरोरवतरखुबोरा ॥  
 बिकल देखितेहि देव ऋषिकहि परये प्रभुतीरा ॥  
 हूं निराश दुरवास सम आइ नाइ शिरचैन ॥  
 बोलैंया सममुख जोरि कर जय प्रभु करुणा ऐन ॥  
 जय जग जीवन जगत पाति प्रगत पाल तुमरु ॥  
 राक्षसकल नहिं विपति में अपर जो ईश अनेक ॥  
 होत वचन सुनि शत्रु के समुझ बारा गति भेद ॥  
 एक नयन करित ज्यो तेहि जेहि न होइ फिरि रेख ॥

**चौ०** यहि प्रकार प्रभु सहित सुपास ॥ शास्त्रमासत है कोन्हो वासा ॥  
 अवध लागत है भोर रहावैं ॥ बीसक जाइ पचीसक आवैं ॥  
 तब प्रभु निज मन आन्यो टीका ॥ बन कर नगर भयो नाहिं नीका ॥

**दो०** मांगि बिदा सब ऋषिन ते द्वार मास शुभ जान ॥  
 सहित लखणामिय राम दिशि दक्षिणा कोन पयान ॥  
 प्रथम गये अवे भवन कीन्हें दराइ प्रणाम ॥  
 लीन लनाइ उर विप्र लखि छु बिपूजे सब काम ॥  
 प्रमुदित आसन दीन सुबि फल दल मूल पदार ॥  
 लागे पुनि प्रस्तुतिकरन सुनि वर प्रेम बदाइ ॥

**नाराचकुं०** नमामि रामराघवेश देशनाथ नाथकं । महेशो  
 यब्रह्मधर्मसेव्यमानदायकं ॥ दयाल दास दुरख दाय दपदम्भ-  
 गजनं । मुनीन्द्र वृन्द भूमि साधु देव धेनु रजनं ॥ भजनि जे न-  
 ते पदार बिन्द बॉभ तर्क में । पतनिते प्रभंति शशितादि अंत-  
 नर्क में ॥ त्वमेक सर्वकाल विश्व पाल मूर्वि जायति । ददामि  
 जे त्वदाश्रितं मुयोगि दुर्लभ गति ॥ अतएव प्रणम सुदरं सख



कोटिकामने। चरति शक्ति साधु जं परार्थे स्वीनाधिते ॥ स्वहं-  
दसानु कूल जक्त मूल भक्त बत्सल ॥ भवांघ्रि मध्य में सदा  
वसनि बुद्धि निर्मल ॥ \* \* \* \* \*

चौ० सुनिमुनि विनय गम मुख पावा ॥ नवसिय मुनितिय पद शिर नावा  
अन सूया लखि मिली सप्रीती ॥ दीन अशी रा मुख दजमि रीती ॥  
उपपधारि पट भूषण कादे ॥ जे पाये हरि ते निज गादे ॥ ॥ ॥  
सीतहि पहिराये हित जानी ॥ रहत नवल नित बोली बानी  
सुनु स्वामिनि जग भासिनि केरा ॥ पतिही देवन दूसर हेरा ॥ ॥  
अंध बाधिर किन होइ निकामा ॥ करि प्रपमान पंते नम वामा  
पतिव्रत कोरे छाँड़ि जल जोया ॥ विन श्रम पर पद लहेन धारका ॥  
तुम्हें प्राण प्रिय राम सुजाना ॥ यामें जग हित कोन बरवाना ॥  
मुनिसिय मुख लहि नायो माथा ॥ तब मुनि ते बोले रघु नाथा

सो० नाथ जाउं वन आन ॥ आयसु दंजि जानि जन ॥  
मुनिमुनि परम सुजान ॥ नाइ शीश बोले बहुरि ॥

दो० तुम सम नाथ न नाथ कोउ सुन्दर सरल सुभाउ ॥  
मैं सेवक कैसे कहों नयन अयन ते जाउ ॥  
मुनि पद पंक जनाइ शिर विने वचन बहु भावि ॥  
चले लषणा सिय सहित प्रभु निज मूर्ति उर गावि ॥

चौ० प्रभु चनत लखि गिरि मग देही ॥ धन सुकहा महि मृदु हँसेही  
जहं तहं मुनि आश्रम बहु भावें ॥ जाइ जाइ सब के शिर नावें ॥  
पूजें सकल सुरुचि भव भांती ॥ चलें ज्ञात बस सुथल सुराती ॥  
अग जग अग बार्सालखि कहई ॥ दुति भा भवन को बनये अहई  
निकसि गाय गुण कहें बिसरी ॥ जबत दरव पथिक हजरी ॥ ॥  
नबते मा भ मन ताच प्रदका ॥ खरी गाथ नहि सांगत लटका ॥  
यहि विधि बन नाघत प्रभु जाहा ॥ मिला विराध अमुर मग माही

महाविशालरूपविकराला॥ हाथनिधूलगहेरुग जाला॥  
 प्रभुइ पेविचोलाकुबिचारी॥ साधु भेष तुमहो कलकारी ॥ ॥  
 हरिआन्योकाहकीकावा॥ लिहेफिरतबनसंगललापा ॥ ॥  
 असकाहिगहिसियसपादिसिधावा॥ लखिरखुबीरदुसहदुखपाय  
 दो० प्रभुइबांधेलयगातबकुंडेविशिवकराल॥

उरलागतभाबिकलतजिसियधावाजनुकास॥

चौ० धावतलखितेहिदेवडेगने॥ रक्तामृगमुनिलेजीवपदमे॥  
 गिरिसमवपुषबेगयोमाना॥ फूटहिं पविट्टहिं तरुनाजा ॥  
 लयगामारितनजर्जरकीन्हा॥ महिगिरिउदतमरनगहिचीन्हा  
 तबप्रभुमुनिशरमारिगिरावा॥ दिव्यदेहंदेस्वपदपरावा ॥  
 अस्तितासुरवनिगाडिकुयाला॥ सीतेलेपुनिचलेरसाला ॥  
 सुरपतिलैतहैस्यदनआये॥ करिप्रणामनिजलाकसिधाये  
 बिबरतप्रभुसियलयगासमेता॥ पहुँचैअरविशरभंगनिकेना  
 निराधिरामकुबिअतिसुखमाना॥ मनहुं सुधितलहिअसनमयना  
 करिहरिबिनयभक्तिवरमोंगा॥ जागाननतनुतजिबडभागी॥  
 चढिविमानबैकुरावहिगयऊ॥ भेदभक्तिहितभोसनभयउ ॥  
 आगेमुनिबहुमिलेप्रवीना॥ भेंदिभेंदिसबकासुखदीन्हा ॥  
 सो० कुंभजशिष्यसुजाननाममुनीक्षणारामजन॥

प्रभुआवतमुनिकाना॥ धायोकरतमनोरथबहु॥

दो० बिसरीननसुधिप्रेमलखिउरप्रगटेसियराम॥

गौरश्यामबहुकामकुबिनिरखितह्योबिग्राम॥

चौ० तबप्रभुतिनदिगजाइबखाना॥ उठहुप्राणपियविप्रसुजाना  
 उदतनजबजान्योभगवंता॥ भयंचतुर्भुजहृदयतुरंता ॥ ॥  
 रामरूपजबउरनहिंदेखा॥ उठेबिकलजिमिमनिविनशेखा ॥  
 आगेसानुजसियरघुराई॥ लखिहरख्योजिमिगननिधपाई॥



कीनिदंडवत् प्रभु उर लाये ॥ आश्रम आनि पूजि मन भाये ॥  
 करि बिनती मांग्यो वर रहा ॥ बदे नाथ पदनित नव नेहा ॥  
 सीताल लवण सहित तुम स्वामी ॥ बसहु स्वातमम अंतस्थामी  
 एवमस्तु कहि राम सिधायो ॥ मुनि सभ त कुम्भ ज पहं प्राये  
 राम प्रणाम कीन जर बिदेखी ॥ लिये लाय उर प्रेम विशेषी ॥  
 कुशल पूछि आसन बैसारे ॥ पूजन करि मृदु बचन उचारे ॥  
 आजु भयो मोहिं आनंद कैसे ॥ चानक पाइ स्वाति जल जैसे  
 बंदे प्रभु सब दिशि मुनि रुन्दा ॥ चितवें मुख चकोर जिमि चन्दा  
 कह हरि मंत्र देहु मोहिं बोही ॥ जेहि तें मुनि मांरो सुर द्रोही  
 बोले मुनि मोहिं ब्रूफत काहा ॥ तुम्हरे भजन ज्ञान कहु लाहा  
 जेहि बस सुर मुनि अजत्रिपुरारी ॥ सोमाया किंकिरी तुम्हारी  
 काल कराल सकल जग खाई ॥ सो तब डर डर पतर बुवाई ॥  
 ते तुम ब्रूफत मनुज समाना ॥ दीन्हें मोहिं सुयश मे जाना ॥  
 ऐसे आपु अनुगहितकारी ॥ तिन्हें त्यागि सुर प्रपन्न संधारी  
 भवनिधि पार चहें पुनि लीन्हा ॥ स्नान पूछु गहि जिमि मति हीना  
 परब्रह्म पारन पांचे कहिं ॥ तिमि तब भजन बिना नर सब हीं  
 देहु सुभक्ति मोहिं रसुवाई ॥ अब सो कहें उ बसहु जहें जाई  
 दो० पंचवटी गुण गरा जटी टटनि दटी नटरास ॥  
 अष्टदश दी दुख सुख पटी कुटी कैरो तहें वास ॥  
 सो० दराड कल्प मुनि जात भोगी सुनि दियो ध्यापतिन ॥  
 गिरि बालू दिन सात ॥ जस्यो देश सो उखसियो ॥  
 मुनि अनुशासन पाइ ॥ पंचवटी सिव अनुजयत ॥  
 आयें कौशल राइ ॥ भेष सन्न शोभा निरखि ॥  
 कुंराड लिखा राम लवण सिय पद परत मिटी आप ऊरि  
 करि भयो दिव्य बन विटप तहें मिले गंध पति हेरि ॥ मिले

गोधपति हेरि पिता दुवशीति बड़ाई। गोदावरी समीप रहे हल  
कुटी गड़ाई ॥ कुटी डारि जब ते परे सोरे सनन के काम। बगि-  
स के कोता सु राज हंर जे नित राम ॥ + + + + +

चौ० आवेंत हंर जे न क मरिग जा ॥ होइ सदा सत संग समाजा ॥

एक दिवस लक्ष्मि मरा शिर नहि ॥ बोले प्रभु ते आय मु पाई ॥

नाथ बात सब विधि तुम जानौ ॥ में पूंछों संक्षेप बरवानौ ॥

जग समुद्र माधिको आधारा ॥ गुरु कृपाल पद पोत निहास ॥

गुरु को जो देखे हित बोधा ॥ शिष्य कौन जो मुने प्रबोधा ॥

बंधन को विषया अनुरागी ॥ दोषा मुक्ति विंये जिन त्यागी ॥

नरक सो कौन घोर निज देही ॥ तृष्णा त्यागि स्वर्ग सुख येही ॥

तमो द्वार किं किं कर नारी ॥ मोक्ष मार्ग सत संग विचारी ॥

सावत को जग रहे जे टेंकी ॥ जागत किं सद असद विवेकी ॥

को वा शत्रु निजे न्द्री मीता ॥ सोई सुहृद तिन्हें जिन जीता ॥

रंक कौन जेहि तृष्णा बोपी ॥ धनी सो को सब विधि संतोपी ॥

महा अंध को जो मदना तुर ॥ निज भल करे सोई बड़ चतुर ॥

समावंत को तहि धुति कहई ॥ परुष बचन सुनि जो नहिं दहई ॥

मृतक कौन जेहि कोरति नाही ॥ जीवत जासु सुख जग माहीं ॥

दीरघ रुज किं यह संसारा ॥ औषधित प्रसू अनुप विचारा ॥

दो० कोहों आयों कहंते कित जेहों कासार ॥

कोमें जननी को पिता या दो कहिष विचारा ॥

चौ० किं अनीति जहं वेद विरुद्धा ॥ परम तीर्थ किं निज मन मुद्रा ॥

बिन प्रतीति दो क अनकांता ॥ सेवा करन योग को सांता ॥

किं ज्वर चिंता चित की जानौ ॥ सठ को जो बिन धर्म पिछानी ॥

लाभ कौन बड़ भक्ति हमारी ॥ हानि न भये प्राहित नु धारी ॥

को वा मूर सुभावे जीत ॥ भूषणा किं जो शील वरीते ॥



विद्या किं जो भेद भिदि जाई ॥ भेद अविद्या है दुख दारि ॥ ॥  
 लज्या किं नहिं करै विकाय ॥ महावीर जिन मनहिं प्रहार ॥  
 धीरज वंत बली अति कोय ॥ सुमुख कदासन मोहै जोय ॥  
 दुख किं अनियदलु में नेहा ॥ सुख प्रद को मन चरा सनेहा ॥  
 पातक मूल लोभ लखि परई ॥ पढ़न सुनन की कुपथ विसरई ॥  
 त्यागी को जो मन बचकाय ॥ करि सत कर्म भजै फल पाय ॥  
 सत्य वचन किं जो मोहिं लीन्हें ॥ पंडित किं विकारत जिहीन्हें ॥  
 मम स्वरूप जानै सोइ जानी ॥ मूर्ख किं सुदेह अभि मानी ॥ ॥  
 यथ कवनि जा में मोहिं पावै ॥ दानी जो मम भक्ति बलावै ॥ ॥  
 महा पातित को हिंसा चारी ॥ धन्य कौन जो पर उपकारी ॥ ॥  
 को वास ए निरत हरि कर्म ॥ नीच कौन जो करै कुकर्म ॥ ॥  
 संग्रह योग कहा गुण भरे ॥ जाइनि किं हें कु संगति नरे ॥ ॥  
 तप किं बिषे भोग परि हरई ॥ दया जो भूत दोह नहिं करई ॥ ॥  
 किं यम जाल सुता मस मोहा ॥ प्रेम कहा जहं नहिं तन छोहा ॥  
 साधु कौन जाके उर दाया ॥ हरिते बिमुख करै सोइ नाया ॥  
 दुरव सुख सम सब काल तितीहा ॥ किं विज्ञान विवेक परीहा ॥  
 दो० हौं नहिं तन मन बचन बुधि जाति परा कुल एक ॥  
 में हों चेतन सब न में याको कहत विवेक ॥ ॥  
 यावर जङ्ग मरुदन में जहैं त क जीव जहान ॥  
 समन रूप निश्चय भयो सोइ अनन्य विज्ञान ॥  
 जीव ईश में भेद किं यत नोइ अहे मदीव ॥ ॥  
 बहु दृश में जीव कहि मोक्ष दृश में सीव ॥

कृपे जो जानो चित रूप जीवता लहत कौन विधि तो पुनि-  
 ये हे तात अविद्या रस परम निधि ॥ गुण सुख विन ईश विह-  
 ग गुण पक्ष चाहि जेव ॥ निरसत तायें भाइ होत गुण पक्ष

प्रगट तब ॥ यथा वासनाभ्रमत नित है जीवत्व उपाधि इमि ॥  
 वरज्ञान कर्म करि होत है मोक्षबंध श्रुति कहत इमि ॥

दो० जैसे महदाकासते घटाकाश को भेद ॥

तैसे मिटै उपाधि के जीवब्रह्म निरभेद ॥

श्लोक सतसंगी वासना त्याज्यो धात्म विद्या विचारयेत् ॥

प्राणास्फन्द निरोधने मुक्ति द्वारा चतुर्विधं ॥

चौ० पुरुष अयोगि हि ब्रह्म न देखे ॥ विन विराग जिमि ज्ञान न सरशे  
 विरति कहा विधि लोक प्रयन्ता ॥ काक विष्ट सम समझे जन्ता ॥

भूत कहा भय धीरज धामा ॥ परम जाप किं जो मम नामा ॥ ॥

चुगल कौन पर औ गुणार खोलै ॥ मोनी बचन युक्ति ते बोलै ॥

पिता विवेक सुमति सो इमाता ॥ हरिजन मिलन मोक्ष सुख ताता ॥

दुस्तर किं सब जननि दुरासा ॥ राखि मूल किं केवल हासा ॥

पशु को जो विन सुकृतर हावै ॥ बंधु विपति में काम जो आदवै ॥

सरधा किं जो मुदिन अवालस ॥ किया बिबे दुरव सहे निरालस ॥

किं बिश्वास गरौ सुनिसांची ॥ तोय कौन निष्काम अयांची ॥

निष्ठा किं करिये जहै प्रीती ॥ लखिन अभाव होइ विपरीती ॥

रुचि किं रहित शोच सुख पाये ॥ भाव क्षमादि सकल गुण आयै ॥

आशंती किं प्रिय विन देखे ॥ रुचतन कहु तन धन के हिले देखे ॥

भोजन किं जगतीनि प्रकारा ॥ उत्तम मध्यम नीच निहार ॥ ॥

मधुर मंजु मृदु सात्विक जानो ॥ तिक्त तातरज गुणी पिछानो ॥

भक्षा भक्षता ममिन करे ॥ तिमि त्रैविधिके मनुज निबरे ॥ ॥

पूजा तीवि भांति की हेरी ॥ प्रतिमा बेयौ आतम केरी ॥ ॥

उत्तम आतम मध्यम साधू ॥ कहु कनिष्ट प्रतिमा अवराधू ॥

सान्नि सो कौन बिकार बिहीना ॥ निरअभिमान ज्ञान किं दीना ॥

बसी करन किं कोमल बानी ॥ मारण मंत्र क्षमा बड़ जानी ॥ ॥



जीव उभे किं बंधविमोक्षा ॥ सहित रहित वासना असोक्षा ॥  
 साध्य सुखाम कुमाति परकेरी ॥ जगत मन्यता आसावेरी ॥ ॥  
 परिमल किं प्रगाधन किं धर्मा ॥ करणी बिज बादे बेसर्मा ॥ ॥  
 ईश्वर सब पर प्रकृति नियन्ता ॥ बहु विधिक ह्योजा नकी कन्ता  
 मुनि प्रभु वचन लवणा हरषाने ॥ बैसे पुनि निज जाइ ठिकाणे ।

दो० रत्नमाल मत जाल लै भगवत गीता साथ ॥

राम गीत नवनीत यह बर रायो जन रघुनाथ ॥

सो० मुनि पुनि हैं जे जीव ॥ पै हैं परमानन्द ते ॥

पुनि पृथिवि जापीव ॥ करि हैं ता पर अतिकृपा ॥

इति श्री विश्वामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास

राम सनेही कृत राम दगाडक बन आगमनो प्रश्नोत्तर

बर्गानो नाम सप्तदशोऽध्यायः १० ॥

दो० सुमिरि राम सिया सन्त गुरु गराप गिरा सुख दानि ॥

बरगो मान समत कहु कनाटकरीति बरवानि ॥

बीरासन सरचाप गहि चहि चहुं दिशि सो मित्र ॥

लगे विचारन मन विषेर घुपति वचन बिचित्र ॥

जनक नन्दनी सहित प्रभु पराण कुटी के बीच ॥

राजत लाजत लक्ष्म लखि रति पति प्रिय युत नीच ॥

तेहि अवसर रावरा स्वसा सुपने खात है आइ ॥

राम रूप मोहित वचन बोली गर्ब वदाइ ॥

विभंगी छं० मुनि ये नृप नन्दन सुर मुनि वन्दन मैं हौं राज कु-  
 लारो ॥ निज सम सुख माते पुरुष न ताते अब तक रहि उं कुमा-  
 री ॥ तुम का जब देखा कहु मन लेखा विधि कृत यह संयोगा ॥  
 तेहि ते निज दासी कुरु बन बासी जो चाहौ बर भोगा ॥ मुनि सि-  
 य दिशि हमि कैं कह प्रभु है सिके है मम अनुज कुमार ॥ सित-

तन तिन केरी हूँ चरी सोइ संयोग तुम्हाग ॥ हस्तिनितिय ला-  
यक ससाननायक दुखदायक सुखहरणी ॥ पदुमिनि मोहिं  
धारो निरस निवारो नेति नेति प्रभु वरणी ॥

चौ० नवसिगई धरनि धरियासा ॥ कहलक्षिमन में उनकर दासा  
भूषे परी कहे हो रानी ॥ नाहित जग दह दुई बरबानी ॥ ॥  
याँ कौन सुख सुख लाहू ॥ तेहि ते महाराज पहँ जाहू ॥ ॥  
मुनि पुनिगई जहाँ भगवन्ता ॥ तिन फिरि पढ़ई पास अनन्ता ॥  
बोलै लखरा तोहि सो व्याहै ॥ जो लोको परलोक न चाहै ॥ ॥

दो० नवलजार प्रकटत भई निज बिकराल स्वरूप ॥  
बदन खोह गिरि शृंग शिखर कानजनु सूप ॥

चौ० बोली तुम दोउ साधु न अहऊ ॥ परपतनी धर धाला चहऊ ॥  
मोहिं देखि जो कीन्हो हासू ॥ सो फल तुम्हें देवो आसू ॥  
मुनि सिय सभय राम गेजानी ॥ बेद बाद नभ कह्यो बरबानी ॥  
गये समुक्ति लक्षिमरा तत काला ॥ नाक कान बिन कीन कुवाला ॥  
हाय हाय करि भवन सिधई ॥ हाथि अचतंगे जहँ सब भाई ॥  
बोली धुगत वीर प्रभावा ॥ तिन पूछा छल करि समुभावा ॥

दो० मुनि खरदूयरा क्रोध करि असुर सहस दश बलि ॥  
लिये बोलि संग सब चले अस्त्र शस्त्र भट धारि ॥

चौ० कज्जलगिरि समजिन के अड्डा ॥ गर्जहि तमहिं सहित उमड्डा ॥  
बाजें विषीध जुभाऊ बाजा ॥ अस गुन होत न माने राजा ॥ ॥  
कोउ कहै धरि मारी दोउ भाता ॥ लै लो जैल लना भलिवाला ॥  
कोउ कहै निधनि न आई उनहीं ॥ चुप रहिं यहि दनु जेश भुनही ॥  
यहि विधि बहत निकट चलि प्रोय ॥ लक्षिमरा ते प्रभु बचन सुनये ॥  
साँतै लै रिकन्दर जाहू ॥ आवाच दिशिर निश्चर नाहू ॥ ॥  
लै सिय लखरा गये तेहि लगे ॥ चाप बड़ा चले प्रभु अगे ॥ ॥



जिमि केसरी द्विरदल हेरी ॥ आइ लिहिनि बगमेल गरी ॥ ॥

देखि अकेले अति सुख मान ॥ बदे समापर जिमि परवाना ॥ ॥

प्रभु कृविदेरिव कृतसब भय ॥ परदूषण मंत्री ते कहै ॥

दो० ये कोउ नृप बालक अहे नरवर रूप निधान ॥

अस शोभा भरि जन्म हम देखी सुनीन कान ॥

सो० यद्यपि किहिनि कुकर्म तहपिन मार सायोगये ॥

जाइ कहौ तुम मर्म ॥ देइ नारि फिरि जाइ धर ॥

चौ० आइ सचिव रघुपतिते काहा ॥ सुनत बिहं सिबोले सुरनाहा ॥

हम क्षत्री मन प्रांकन अनै ॥ कालहु ते सन्मुख सा रानै ॥ ॥

सुरंजन खल गंजन हेता ॥ विचरत हम बन त्यागि निकेता ॥

जो तुमरे पति होइ डेराने ॥ फिरै न हम रसा हतै पराने ॥ ॥

दूतन परदूषन ते भाया ॥ बोला सुनि मारी करि माया ॥ ॥

भायेत बतमचर करि सोरा ॥ लखि प्रभु कीन चापटै कोरा ॥

भये बीधर पुनि धीरज धारा ॥ लगे बिबिध बरसन हथियारा ॥

सरतो मरतरवारि त्रिशूला ॥ बक्र परिघ पविशक्ति सभूला ॥

तिल समान प्रभु काटि नेवारी ॥ निजन राच संधानि पवारी ॥

जाइ असुर दल काटन लगि ॥ हाइ हाइ करि भट बहु भागि ॥

कोइ कहै रसदूषन मति हीना ॥ इनते आइ समर जेहि कोना ॥

सुनिस कोपि बोलेति हुं धाता ॥ फिरी जो तेहिं हों करब निपाता ॥

मसा जानि धूमै अनुरागी ॥ चहुं दिशि मारु मारु रट लागी ॥

देखि देव सब होइ अधीरा ॥ निश्चरनिकर एकर घुषीरा ॥ ॥

रामवान लागहिं खर भारी ॥ खराइ खराइ है गिरहिं सुरारी ॥

शिर धर धरो धरो कहि धावैं ॥ गगन उड़ै बहु भगरा चलावैं ॥

बहु मरिगे बहु करहत डारे ॥ बहु कहैं कहपितु मातु हमोर ॥

बहु तनकंककाक सिव स्वाना ॥ भयन करत कटकटी नाना ॥

अन्नावलिगहिबहुनभजार्वे ॥ विपुलबालजनुगुड़ीउड़ये ॥

भूतरुप्रेतपिशाचपिशाची ॥ खरदूषणभरेयोगनीनाची ॥ ॥

दो० निजदलबिचलनिहारी ॥ खरदूषणत्रिशिरादिभट ॥

अगरीतअस्त्रप्रचारि ॥ प्रभुपरडारे एकसंग ॥

चौ० अमुपतिसबनिजसरगिनेबारे ॥ दशदशविशेषसबनकेमारे

कहि कहि रामतजेतिनप्राणा ॥ बिनअमपाये पदनिरवारा ॥

छिनमासकलकटकसंहारी ॥ सुमनबराधिसुरजयतिपुकारी ॥

सीतालषणाआइशिरनावा ॥ निरखिश्चामबपुअतिसुखपावा

तबसुपनेरवागइजहं राखन ॥ जनुदनुजनकीमोतभयावन ॥

करिगेदनबोलीतकिताही ॥ तोहिंजियतममअसंगतिबाही

समुझिपरतअबरहीनराजू ॥ नहिंदेखतनिजकाजअकाजू

दो० सुनिअकुलानीस्भासबकहरावराकहुहाल ॥

केहिकांटेपुतिनाकतवकाकरआयहुकाल ॥

चौ० अनुजगिरासुनिबोलीबचना ॥ अतिअतर्कअवलाकीखना

हैंतपसीतपसीबनआये ॥ सुन्दरिसुन्दरिसुन्दरिलाये ॥ ॥

हैंलखिहैंलखिहैंलखिवोली ॥ रामनयोधनरामनजोली ॥

दो० सोकरिकाननकानितबकरीनकरीनआन ॥

मोबिनकाननकानबिनकरीसोकरिनकान ॥

चौ० खरदूषणसुनिलागगोहारी ॥ छिनमातिनसबसैनामारी

त्रिशिरादिकबधसुनिदनुजेशा ॥ मनहुंजोरसमभयोक्लेशा ॥

सूर्यनखेप्रबोधिबलभादी ॥ भवनगयोबिस्मैमनराखी ॥ ॥

सुरनरअहिप्रभुवनमहसोई ॥ ममअनुचरेननिदरतकोई ॥

खरदूषणमोहिंसमबलधामा ॥ तिन्हेंकोमारेबिनश्रीरामा ॥

जोअकटेसुरसुनिहितकारी ॥ तौकरिवैरतरोभवभारी ॥ ॥ ॥

तामसतनकछुभजननबनई ॥ रामविमुखगतिबेदनभनई ॥



जिन नहिं निज परलोक सुधारा ॥ तौ तेहि बुधिबल जनमैं छारा  
 दो० जो नृपसुत को उजाड़तौ हरिले हों निन वाय ॥

चला अंकले यान चदि गा मारीच के धाम ॥

पूछा करि सनमान तोहि तात चलेहु केहि हेत ॥

कही कथा दश मुख सकल सुनि बोला शिषदेत ॥

सो० मुनि मुखमें मोहिं राम ॥ बिन करमा हो विशिष एक ॥

शत योजन यहि राम ॥ आयो छि ममा बिकल है ॥

यर दूखरा करि बेर ॥ भे बिनाश ताते सबल ॥

जो चाहो कुल बेर ॥ तौ फेरि जाड निकेत निज ॥

मुनि दश मुख करि कोध ॥ चला मोहिं सम सुभट को ॥

गुरु इव करत प्रबोध ॥ चलत न आई मोचु तव ॥

करि बिचार रवि पाथ ॥ चला मुदित संग मन गुणात ॥

मंगों नगाव हाथ चला मुदित मन संग गुणात ॥

भरि नयन न छवि आजु दिखि हों प्रभु सिय लवरा की ॥

तव होई मम काज ॥ जब बधि है मृगरूप लखि ॥

दो० इत सिय ते कह राम तुम क्यों उरागि निवास ॥

जब तक करि नर चरित मैं करौ न निश्चर नाश ॥

सो० स्वामि राजाय मुयाड ॥ वेदवती बपुरा रित है ॥

आपु हृदा गिनि जाड ॥ कीनवास हरियास नित ॥

चो० यह रहस्य लक्ष्मणा हुन जानी ॥ माया धीरा सकल गुण रानी ॥

बैठे प्रभु सिय परा कुटीचा ॥ आयो तहें रावरा मारीचा ॥ ॥

हेम हरिण हैं निकसा आगे ॥ लखि जान की कह्यो अनुरागे ॥

हे स्वामी मृग पकरहु पारी ॥ नाहि तब नीछाल भल मारी ॥ ॥

कह प्रभु हिंसा अघ बड़ जाना ॥ होनहार बस सिय हठ दाना ॥

भक्त बहल प्रभु धनुशर लीना ॥ आश्रम में पिशेव कहं दीना ॥

अपना चलेक पट मृग पाछे ॥ आवत देखि भाग सो आछे ॥  
 तब शर सजि धाये रघु राई ॥ थकनि न वनि चित वनि मोहिं भाई  
 प्रकटत दुरत लखत छुबि भूरी ॥ लैगा इमिर घुबीरहि दूरी ॥ ॥  
 तब प्रभु ताहि तहां तकि मारा ॥ हाइ लयरा अस आदि पुकारा ॥  
 पाछे कहि हरुगे सिय रामा ॥ तनु तजि गामुनि दुर्लभ धामा ॥  
 इन सीता सुनि आरति बानी ॥ बोली लक्ष्मणा ते छल जानी ॥  
**सो०** संकट बसत न भ्रात ॥ जाहु बेगि सुनि शेष कहें ॥  
 प्रभु इन दुरख कहें मात ॥ तुम्हें सों पिये किमि तजहुं ॥  
 सुनि सिय बचन कदोर ॥ कहै लयरा कहै लयरा तब ॥  
 रेख रंविचहुं प्रोर ॥ चले चकृत चित राम पहें ॥  
**दो०** घूनी चली रीत रावरा जली सरूप बनाइ ॥  
 मांगी भिक्षा सुनत सिय लगी देन हर याइ ॥  
**चो०** बोल कुदिल बंधी यह भीया ॥ सोन लेबें मैं मानें पीया ॥  
 माघ शुक्ल भूता दिन जानै ॥ छन्द महरल में पहिं चानै ॥ ॥  
 भाषी बस सिय बाहेर आई ॥ चररा वंदि लै चला उदाई ॥  
**दो०** जीव जोति तन में यथा अग्नि निधूम के माह ॥  
 तिमिरावरा के कर परी सिय सरूप की काह ॥  
**चो०** गगन जातरथ बिल पत सीता ॥ हार घुपति हाना घ पुनीता ॥  
 हाकरु गाकर हार राधीरा ॥ आरत हर राहरहु मम पीरा ॥  
 हावल सिंधु लयरा सुख दाई ॥ परी तात गोमर कर गाई ॥  
 कहै बचन कदुरख मैं मार ॥ सो क्षमि करि मोहिं लेहु छिनाई ॥  
 तुम्हें कलंक दीन विन होया ॥ ताकर फल पावा अति चोरवा ॥  
 अपति वचन बोरें नहि काना ॥ ते उभरें दुरख हमें समाना ॥ ॥  
 हापितु मात दूरित धामा ॥ भा के कयो केर अपव कामा ॥ ॥  
 पठै देउवन देउ कपाला ॥ हरि पति हि चहै बरा मृगाला ॥



सीताकै सुनि आरति बागी ॥ भेसब बिकल चराचर आरति ॥ ॥  
 गोधराज जाना बैदेही ॥ लीने जात असुर पति तेही ॥ ॥ ॥  
 चला कहत पुत्री धरु धीरा ॥ नीच मीचु में आयौ तीरा ॥ ॥ ॥  
 ररे रावरा सुनु मम वाता ॥ तजि जानु किहि जाहु कुशलाना  
 नाहित सकुल नाश तव होई ॥ सुनि तेहि कानन कौन्यौ कोई  
 तब खग चपरि चोच गहि केशा ॥ रथ ते महि पटकाले केशा ॥  
 सिय निज निलै राखि फिरि आवा ॥ अरि कर धनु शर काटि गिराव  
 चोच चंगुलनि तनु बिद कायो ॥ मूर्छित ह्ये पुनि असिले धायो  
 पंख काटि सोते ले भागा ॥ तब खग महि गिरि शोचन लागी  
 हम ते कहु नवनी भलि वाता ॥ पापे करत भयो वपु धाता ॥ ॥  
 दशरथ सम सुनि प्रेम न पाला ॥ राख्यो सिये न हरि यहि काला  
 भरत राम मुख देखि न पावा ॥ खस करत ब नहि प्रभु सुनावा  
 एके बात भई भलि सहा ॥ राम निहारे छूटी देहा ॥ ॥ ॥

दे० इत सिय बिलपत जात न भनग पर कपिन निहारि ॥  
 दिये डारि निज भूषणारुप पति नाम पुकारि ॥  
 आगे लखि संपाति सुत गहि रथ दीन्हों करि ॥  
 यहि बिधि लावा लंक तब बोल सिये निहोरि ॥  
 सुमुखि न शोचै नर न हित उनमें कौन प्रभाव ॥  
 पितु पेरित बन सहल दुरव निरबल रंक न राव ॥  
 अकुल अजाति कुजाति पति गति प्रति रहित भति ॥  
 जटी कपाली प्रिय प्रणात तव देखि न कर सीत ॥  
 नहिं जानी केहि कर्म करि परि उ नरन के हाथ ॥  
 अब जागे बड भाग तव जो आइ उ मम साथ ॥  
 हम सम सबल न भू कोउ जेहि बश सुर मुनि सर्व ॥  
 तेहि ते मेरी भाय्यी होउ त्यागि दुरव खर्व ॥ ॥

सुरकन्या कैयो सहस मद्दोदरी समेत ॥ ॥  
 ह्वै हैं तेरी टहलुई हों सेवक कहि देत ॥ ॥  
 सुनिसिय घ्राच सकोच बशक छून उत्तर दीन ॥  
 तब तेहि निज रेषवयी सुरय सकल देखे बैलीन ॥  
 अधिक विकल भइ जानु की विभव नीच कर देखि ॥  
 यथा विरहिनी दुरबल है शरद चंद महि पेरि ॥  
 सो पुनि बोला दृष्टासी ॥ देखे बजस रेषवयी प्रिय ॥  
 तब सीता करीस ॥ कहत भई जरा बोद करि ॥  
 सुनु दुष्ट न शिर मोर ॥ बिन मराल सर हं सिनी ॥  
 निरविकाग करी ॥ मुदित होत कहेंति मिम हूं ॥  
 सुनिसिय बचन सरोय ॥ डरि करि विपिनि प्रशोक महं ॥  
 राखिसि हित निज मोय ॥ दुरि हवि गये खवाइ हरि ॥  
 चौ ॥ इहां लख रामा अरित हंगयऊ ॥ अनुजै लखि बोलत प्रसभयऊ  
 द्वादश वरय मास सर बीते ॥ इहां रहत सियत जी नरीते ॥ ॥  
 आजु जनक तनया तुम खोई ॥ कहा लख रामा मद्दोदन कोई  
 आश्रम दोर बजाइ बिन सीता ॥ भये विकल अनुजोषित जीता  
 इत उत्त हैरि हों कि हंसि बोली ॥ आवहु निकसिन करहु देखे ली  
 तुमहरे कहा कीन में जाई ॥ अब केहि कारण रहि उ कुहाई ॥  
 लख रामा प्ररोय लखी जव नाही ॥ तब प्रभु मूर्छि गिरे माहि माहीं  
 कतहुं बानधनु पट तूनीरा ॥ लख रामा उदाइ कियेय कतीरा ॥  
 बोले नमिहे नाथ उदारा ॥ सुरमुनि हेत लिह्यो अवतारा ॥  
 जाननिधान सबल बुधि माहीं ॥ भूलत मूढ़ मनुज की नाही ॥  
 बंधु वचन सुनि धीरज धारा ॥ बहुरि अशुभ वचन उचारा ॥  
 को बोलत लक्ष्मि रामा तव दासा ॥ हमको तुम राघो बन बासा ॥  
 करत कहा दूदत प्रिय प्यारी ॥ हाहा सीते जनक दुलारी ॥



दो० कहालयरामिलिहैं बहुरि उरि दू दो बनमाहिं॥  
 धनुसर तरकस साजितन पूछि चले सबपाहिं॥  
 हे हरिकरि कुज दुज दरिल सब परमारथ रूप॥  
 तुम देखी मम प्रीतमा देहु बताइ अनूप॥  
 हे सीते जेहि नेह कहित जि पितु प्रारजगेह॥  
 हठि आइ उमम साथ अब कहा कियो सोइ नेह॥  
 भृंग जलज शुक कुन्द पिक करि हरि श्रीफल केर॥  
 मुदित मनहुं परिजीति किन हरो मान इन केर॥  
 यहि विधि खोजत कुञ्ज बन गरा गिरि गुफा तड़ाग॥  
 गये जटायू खग जहां श्री रात लखि दुख लाग॥

चौ० प्रागे परागी धपति चीन्हा॥ हा पितु हा कहि उर धरि लीन्हा  
 पूछा हालु सकल तेहि काहा॥ मोहिं बधिसिय लैगा खल नाहा  
 हे प्राणा तव दरशन हेता॥ चलन चहत अब कृपा निकेता॥  
 मुनि प्रभु पदुम नयन जलदारी॥ बोले पांसु जटा ते मारी॥  
 हे सो मित्र आइ इन शरणा॥ मोहिं लखि पस्यो न पितु कर मरणा  
 सहि न सक्यो सो आजु बिधाता॥ पक्षे पाक्ष लखि कीन्हि सिधाता  
 पुनि कहता तारि बिय देहा॥ बोला तव खग सहित सनेहा॥  
 कृपा सिंधु तुम शील निधाना॥ मोहिं खग खलहि पिता सम माना  
 अस तुम तेहि न भजे न रजोई॥ महा मूढ़ हत भागी सोई॥॥  
 जासु नाम अगनि न गति दाता॥ कस न मरहुं तिन के करताता  
 चारि उ फल न मरणा सम मोरे॥ अस कहि मुदित प्राण निज छेरे  
 राम रूप हैं अस्तुति कीन्ही॥ अविचल भक्ति माँगि सोइ लीन्ही  
 कह प्रभु सियाहरा पितु तेरे॥ कह्यो न दुरव होई मुनि सेरे॥॥  
 दो० तुम्हरे पुराय प्रताप ते कहु दिन मरिषु मारि॥  
 सकुल यदैं हों आइ सोइ सुमुख कहो बिस्तावि॥

भलेनाथ कहि नाइ सिर प्रभु मूरति उर राखि॥  
 चल्यो गगन लखि सुमन सुरवर खेजय जय भारि॥  
 पितु ज्यों दीन्हों धाम निज मृतक कर्म सब कीन॥  
 ऐसे प्रभुइ बिसारी मन तैं चाहै सुख लीन ॥ ॥

चौ० सहित शोक सिय की सुधि आई॥ बोले लक्ष्मणा ते अकुलाई  
 जावतं में यदि जीवति ताता॥ तावत जीवत विश्व लखाता  
 नाहित सुख र० प्रसुर समेता॥ करि हों भस्म अखिल जग जेता  
 सुनि प्रभु बचन सभय भव काँपा॥ लागे होन अरिष्ट अमापा ॥  
 सहित शोक लक्ष्मणा गहि चरण॥ बोले अहो दीन दुख हरणा  
 कुराडलिया मान्धाता इह्वाकु इभ भागी रथ नृप माथा॥  
 खदलीप अज आदिं दे जावत तव पितु नाथ॥ जावत त-  
 व पितु नाथ लै किंतिहुं तने समाना॥ पालत आये सदै सु-  
 यश सकलौ जग जाना॥ तिन कुल की रति बर्ध हित प्रगटे  
 आपु सुजान॥ सो किमि जरि हौ जग मखिल बिन ॥ पराध॥  
 श्री मान ॥ ५॥

सो० बंधु बचन सुनिराम॥ लज्जित हेल खिल लख कहें॥  
 लिये लाइ निज धाम॥ बोले पूरव देखि शशि॥  
 कुराडलिया लखना तकहु तरु उये रवि नाथ मलिन  
 है चन्द॥ निज कुल के अकलङ्क ते तरुणा तेज भो मन्द ॥  
 तरुणा तेज भो मन्द कमल नहि फूले नाता॥ अहो मित्र दु-  
 ख दुखी खिले कैसे जल जाता॥ अहं नखत प्रफुलित कु-  
 मुदु शत्रु बिपति लखि हंसत मन॥ पुनि न दीन उत्तर चले  
 घन तरु तरु पति लखन ॥

चौ० यहि विधि प्राकृति मनुज समाना॥ दूँदत कीन्हो पुरः पयाना  
 मिला विराध ताहि गति दीन्ही॥ चले बहुरि सेवरी सुधि कीन्ही



पूछत फूलभरे मुखतेरे ॥ निवसत बड़ भागिनि केहि सेरे ॥ ५  
 जासुभजन बलवन मुखदाता ॥ करव देखि तेहि पील लगाता ॥  
 इहो प्रात सेवरी जब जागी ॥ लखि शुभ सगुन समुझि अनुरागी ॥  
 रामलखन प्रिय पाहुन मोरे ॥ येहै आजु अनुज युत जोरे ॥ ॥  
 ब्रह्मादिक पूजित पद पूजी ॥ मोसम को बड़ भागनि दूजी ॥  
 लहि हों हों प्रभु प्रभुनि जवाना ॥ दोउ दिशिल अभन लाभ समाना ॥  
 दोनन राखि कन्द फल फूला ॥ चितवत अंब सरिस अनुकूला ॥  
 छिन द्वारे छिन भीतर जाई ॥ प्रीति परखि पहुँचे दोउ भाई ॥ ॥  
 सेवरी देखि परीत ब पायन ॥ सनमानी प्रभु मास सचायन ॥ ॥  
 आश्रम आनि पूजि जसरीती ॥ दिये रुचि फल हल करि प्रीती ॥  
 लगे खान प्रभु पुलकित गाता ॥ स्वाद सराहि सराहि न जाता ॥  
 मांगत देत देखि सुर सन्ता ॥ बरखि सुमन कहि जय भगवन्ता ॥  
 त्रिभुवन नाथ नरेश कुमार ॥ पावत फल तजि अये अपारा ॥  
 अस विचारि घुनाथ अरुखे ॥ जान्यो राम प्रेम के भूखे ॥ ॥  
 अचे उठत सेवरी बोली ॥ हाथ जोरि दोउ गिरा अपोली ॥  
 नाथहि उं में ओगुन खानी ॥ कीन्हों तुम मुद मंगल दानी ॥

दो० कह प्रभुतें निज कर्म ते भई प्रष्ट जग बीच ॥  
 जोन भजै मम चरणा प्रिय सोइ समली सोइ नीच ॥  
 सेवरी के सुनि मुनि निकर आये दिग अनखार ॥  
 पूछ्यो सरवर मुद किमि होइ कहो खुरार ॥  
 कह प्रभु पावन पुरुष को परसि कीन मुमरोष ॥  
 गये स्वच्छ हित लच्छु भयो रुधिर तोहि दोष ॥  
 अब ते सेवरी के चरणा सोइ तोइ ता मध्य ॥  
 देउ लेउ पाविष पुनिकरत भयो मुनिमध्य ॥  
 सो० ऐसे प्रभु को जोर जोनि जुल पुता दास की ॥

करे कीर्ति सब ठोर तब हरि सेवरी ने कह्यो ॥  
 अब सुधि सीता करि कहिये करि गामिनि सुखद ॥  
 मुनि सेवरी भुरव हेरि कह्यो जाउ पंपा सरहि ॥  
 नहँ मिलि हे सुधीव कह्यो मिताई ना सु ने ॥  
 सोहित करी सदीव मिलि हैं इमि सीता तुम्हें ॥  
 यह बिधि वादि सब हाल राम धाम गइ त्यागितनु ॥  
 तेहि की किया रूपाल की नय थोचित जननि जिमि ॥

गीतिका छं० जिमि जननिकी गति करे कोउ तिमि राम से-  
 वरी की करी ॥ प्रम प्रेम कौन रूपाल स्वामी शरणा जाकी प्र-  
 नुसरी ॥ प्रभु कहत सेवरी के यश सह प्रीति पंपा सर गये ॥  
 मन मुदित मज्जन की नशा भा निरखि मुनि हरयत भये ॥ ५ +  
 दो० भये मुदित मुनि चन्द तहँ मिले देव ऋषि आइ ॥  
 पूछिनि प्रभु ते मोह निज राम कहा समुझाइ ॥  
 सो० सकल दोष दुख दानि जानि हस्तो अभिमान तव ॥  
 मुमुखि वेशाक की खानि तेहि ते लिह उं बचार पुनि ॥  
 इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ  
 दास राम सनेही कृत आराधन काराउ संपूर्ण

नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥

(१८)



श्रीगणेशायनमः

# अथविश्रामसागर

किष्किन्धाकारादशरम्भः

दो० सुभिरिरामसियसन्तयुरुगणापीरासुखदानि॥  
बरगौं केकिलमतकछुकवृहदचरित्रबखानि॥  
नारदअविचलभक्तिबरुपाइचलेहरयात॥  
तबसानुजरघुवंशमरिगीकमूकभेजात॥  
सबलपुरुषसुग्रीवलरिवंडेरिपठयेहनुमान॥  
द्विजहैपूछाजाइनिजुहालकहाभगवान॥  
सो० सुनिमारुतमुतबैनप्रभुइचीन्हिचरणपर॥  
लायेकपिपतिऐनमुदितभयेसुग्रीवलरिव॥  
कीनमित्रताभावजनकमुताकीबातमुनि॥  
सियभूषणकपिरावदियेलियेउरलाइप्रभु॥

चो० कह्योलषणातेचीन्होताता॥मुनिसेमित्रकहीबरबाता॥  
कंकनकुराडलमेंनहिंजानो॥नूपुरनितपदबन्दनगानो॥  
प्रभुइदुखितलरिखकह्योसनेहो॥तजहुंशाचमिलिहैवैदेही॥  
हरषिप्रीतिहरिहरिपतिपाहीं॥तुमकेहिहेतबसहुबनमाहीं॥  
तबसुग्रीवकहासबहाला॥जेहिहितबालिबैरपतिपाला॥  
मुनिबोलेअवधेशकुमारा॥मेंसरिहोंरणाशनुतुम्हारा॥॥  
मित्रमित्रदुखदुखीनहोई॥बदनवेदमुविसरवानसोई॥॥  
मुनिमुभायबोलेकपिनाहू॥बालिवलीवधयोगनकाहू॥॥

अस्ति दुंदभी कर समूहा ॥ महा कदिन लागे दश धूहा ॥ ॥

तिन्हें एक शर बेधे जोई ॥ मुनिवर बालिहि मारे सोई ॥ ॥

दो० दूसर दुंदुभि निधन मुनि इन्द्र ताल फल सात ॥

पठये हें हें सप्त दिन अजर अमर इन्द्र वात ॥

नारद प्राय बालिक हें दोन्हें गहन मंभार ॥

महि धरि लगे नहान सो करि गा भुजंग अहार ॥

चौ० हरि सुनारि बाला बचनेहा ॥ सात ताल जामें तब देहा ॥

कह भुजंग जो हमें उबारी ॥ तेहि निशि नासतु हें सोई मारी ॥

सर्पाकृत सो ताल विशाला ॥ को एक बान दहावन बाला ॥

ती सर बरु बासव कर साधा ॥ रिपु बल सन्मुख पावन प्राधा ॥

यहिते बालि बधन के माहीं ॥ आवत मोहिं प्रतीति प्रभु नाहीं ॥

दो० हमें बोले भगवन्त तब चलो देखावो मोहिं ॥

बोध गिरावों सुसर जहि निश्चये आवे तोहि ॥

चौ० भले नाथ कहि प्रभु इलवाई ॥ दोन्हें गिरि सम अस्ति देखाई ॥

बेधे सकल एक ही बाना ॥ दश योजन शिरारि सयाना ॥ ॥

नभ महि तल सब तीर्थ नहाई ॥ रास चून अविसे पुनि आई ॥

तब सुगीव देखाये ताला ॥ सर्पाकृत सब दहे कृपाला ॥ ॥

छूटि भुजंग चला जय भायी ॥ बरये देव मुमन अभिलायी ॥

दो० प्रभु प्रभाव बल बिपुल नरि कपि पति प्रीति बढाई ॥

निश्चय भय बध बंधु हित बोले पद शिर नाई ॥

मुनो नाथ तव कृपा ते मिंदे सकल मम शोक ॥

शत्रु मित्र दुरव सुरव समधि मन कृत नहिं परलोक ॥

चौ० तेहि ते त्यागि मोह मद माया ॥ भजव सदा तव पद रघुराया ॥

बालि हमार परम हित करी ॥ मिले आई जेहि आपु अधारी ॥

माहित बच सनिक होखरि ॥ मृया होत नहिं गिरा हमारी ॥



तब सुग्रीव जाह पुर गरजा ॥ चला बालि सुनितारा बरजा ॥  
 रामा श्रित सुग्रीव न जाह ॥ कह हरि सुत सब विधि मोहि लाह ॥  
 अस कहि आवा अर्कज तोरा ॥ भिरे क्रोध करि दोनो वीरा ॥  
 बालि बृहद बिधु मुष्टिक मारी ॥ बिकल भाग सुग्रीव पुकारी ॥  
 मैं जो कहि केशव तुम पाही ॥ बालि मोर रिपु सो दर नाही ॥ ॥  
 कह प्रभु तुम एक सम होउ आहू ॥ तेहि प्रभु मैं मारा नहिं काहू ॥  
 कृपा दृष्टित कि तुहन मिटावा ॥ सुमन माल पहिराइ पढावा ॥  
 चेत्र चतुर्दशित चित चाड़े ॥ भिरे फालि भुज पुनि पुर डाड़े ॥  
 विविध यतन करि जूझत जोरा ॥ प्रभु परबत दादे तरु छोटा ॥  
 जाना जब सुक गाव हिय हारा ॥ साधि वारा बर बालि हि मारा ॥  
 गिरा भूमि व्याकुल हे वीरा ॥ तव गधव बलिंग तेहि तोरा ॥ ॥  
 प्रभु बिलोकि मुदित उरि बैसा ॥ बोला वचन क्रोध युत जैसा  
 दो० राम तुम्हार प्रभाव बल मैं घर सुना अपार ॥  
 देखा कर्म किरात कर कारगारहित विचार ॥  
 सो० मोहिं मिलि ल्यो यहि रीति ॥ तुरत मिलो ल्यो अनि स्ति ॥  
 करिका दरते प्रीति ॥ आर्यो चिन अपराध मोहिं ॥  
 चौ० कह प्रभु हम निरबल के संग ॥ अभिमानी दिग जाहिन बंगा  
 शरणा पाल कुल गीति हमारे ॥ बधा तोहि छिपि सील के मारे  
 अनुज बधू कीन्हें निज घर नी ॥ तोहि सम मूढ़ पतित को बरनी  
 प्रभु अजहूँ अपबने हमारे ॥ अन्त काल भैं दरश तुम्हारे ॥  
 मुनि कृपाल कह राखे देहा ॥ अकनि बालि बोला सहनेहा ॥  
 दो० जा सुनाम जपि जीव जड़ तरै करै मुनि ध्यान ॥  
 ते तुम मम अगे खडे कहत राखु निज प्राण ॥  
 केहि मुख संपत्ति लागे ॥ अब राखैं सरल शरीर ॥  
 सुरतरु खनि रूधैं बबुरु को अस शठ राघु वीर ॥

चौ० तेहिते अब जेहों हरिधामा ॥ पर यह बर दीजै अभिरामा ॥  
कर्मधीन जहाँ मैं रहऊँ ॥ तहें तव चरण नेह निरबहऊँ ॥

अङ्क ६ मम समान बल वन्ता ॥ तेहि कीजै निज दास अनन्ता  
सो० प्रभु यह शीश नवाइ ॥ बालि गयो हरिधाम तब ॥ ॥

पुरजन सुनि दुख पाइ ॥ प्राये जहें कपि प्रतिमृतक ॥

तार शिर उर राखि ॥ लागी इमि रोदन बदन ॥

मैं जो रही पति भावि ॥ मान्यो सीखन काल बस ॥

राम विकल तेहि जोइ ॥ बोले करहि न शोच प्रिय ॥

मिलि बिछुरत सब कोइ ॥ आपु अकेल न संग कोइ ॥

मालु मही पितु मालि ॥ काल कृपा कर सर समुझि ॥

बोइ प्रथम पुनि पालि लूनि रखात ब्रह्मादि सब ॥

चौ० असा बिचारि शोचत नहि जानी ॥ कर्मधीन देह गति जानी ॥

सब दिन एक थल बसत न कोइ ॥ पथिक मेघ इव संगति होइ ॥

भूमि बेकार घटा दिय थाई ॥ उपजत बिन सत बपुषत थाई ॥

रहत एकर सधरणी जैसै ॥ जीव अनिथ्या होत न तैसै ॥ ॥

जो यह भेदन नीके जानै ॥ सो देहा दिक सत्य प्रमानै ॥ ॥

तासु विशेष योग जब लहई ॥ संश्रित परिभुगै दुख सहई ॥

ईश कृपा जब होत विशेषी ॥ नित्या नित्य परत तब देखी ॥

नित्य वस्तु भगवत सन बंधी ॥ और सकल ममता मति बन्धी ॥

सो० इमि बहु दीन्ह्यो ज्ञान ॥ बोध भानु प्रगट्यो तुरत ॥

मिटाति मिरि अज्ञान ॥ लिहि सिम गि हरि भक्ति वर ॥

चौ० तब सुग्रीव राजा सुपाई ॥ मृतक कर्म सब कीन बनाई ॥

प्रभु लह्यो राह कह्यो मजि साजा ॥ करि प्रायो सुग्रीवै राजा ॥

जाय लख रा पुर लोग बोलाये ॥ विप्र महाजन चलि सब प्राये ॥

राज नित्य क मर्ग्यै दीन्हा ॥ बालि सुतहि युव राजा कीन्हा ॥



सब विधि सबे सौख्य दे धीरा ॥ राह मुकं राठ आये प्रभु तीरा ॥  
 दिग बैराइ दीन उपदेशा ॥ जाहु भवन तजि सकल प्रवेशा  
 में सह बंधु शेल पर जाई ॥ राहैं हीं भरि बरया तह छूई ॥ ॥  
 तुम युत अङ्ग की ज्यो राजू ॥ दीजो जनि बिसारि मम काजू ॥  
 भल नाथ कहि निल बसि पावै ॥ राम प्रवर्षा गिरि पर आये ॥  
 प्रथम सुरन रांचि कंदर राखे ॥ राम रहन हित चित अभिलाखे ॥  
 जब ते प्रभु प्रविशत है आई ॥ सकल सौज मुख संपाति छूई ॥  
 नाना रूप बिरचि मुनि देवा ॥ करहिं सदा रघुपतिकी सेवा ॥  
 संतत होय सुभग सत संगी ॥ संशय समाधान बहु रंगा ॥ ॥  
 निगमा गम भत विषे पदारथ ॥ कहत सुनत सम बोध पथारथ  
 प्रायिह काल कंद न भवै ॥ गर्जत चलत पवन के पेर ॥ ॥  
 जनुर बिते बासव महि बोगा ॥ है रान्यो संगर अति धोगा ॥ ॥  
 की पावस अरु खनि न यीली ॥ प्रभु इरिफावन चली छुवीली ॥  
 की संवत की तरुणा अवस्ता ॥ की अवनी की अंव विसरता ॥  
 राम अनुज ते ताकी करणी ॥ कही जगत जीवन पर बरणी ॥  
 सरह सुंदरी सुमति समाना ॥ आइ प्रकासी पंथ प्रमाना ॥  
 गुणानता सुगति भति बिसराई ॥ बहत बंधु ते मोह जनाई ॥ ॥  
 तात न कत बरषा अरु नासी ॥ सिय सुधिक छुन मिली कदु खासी  
 जियत बियत कै सौ सुधि पावों ॥ बल करि बयहि जीति महिलावों  
 जिन भम हित सुख सकल विसोरा ॥ तिन बिन हम किमि होइ सुखो  
 सुखी बहु कहि काज बिसारा ॥ पाइ राजपुर रंपति दारा ॥ ॥  
**दो०** जो हम है अब बदलि कै बधी बालि समताहि ॥  
 तो मुनि सब मूरुय हमें कहैं न सके निबाहि ॥  
 बिरह बचन मुनि लखरा तबत मकिली न धनुवान  
 लखि प्रभु पुनि पर बोधि कै पठ्यो कृपा निधान ॥

हूत हनुमान विचारि करि कह सुकंद ते जाइ ॥  
 राम काज लहि राज सुख दीन्हों तुम बिसराइ ॥  
 सुनि सुकंद डरियो कह्यो विषय हर्यो मम जान ॥  
 अवते पठ बहु दूत ते लै आवै कपि जान ॥

सो० कह अंगद यह काम । हनुमान ते होइ है ॥  
 नाहित दूरि मुकाम । चले तुरत सुनि पवन सुत ॥

चौ० पार पत्र गिरि प्रथमै गयऊ ॥ गव गवाक्ष ते भाषत भयऊ ॥  
 राम काज लगि मरकट नाहू ॥ बोल्यो बेगि सहित बल जाहू ॥  
 सुनि कपि प्रसी संकुसत साता ॥ लै संग चले सुभट हर या ता ॥  
 पुनि रेवत कदली बन आये ॥ दुर्दूर गज ते वचन सुनाये ॥ ॥  
 सात पदुम कपि प्रसी करोरी ॥ लै दोउ चले तुरत हरि ओरी ॥

दो० पुनि पहुँचे बलवीर के सुनि कपि तेइ सत्तारव ॥  
 साठि सहस सत संग लै चले करत अभिलाष ॥  
 धुंध माल गिरि पुनि गये मिले सिरंखडी नाम ॥  
 सुनि कपि छुप्यन कोटि लै चले कहत जय राम ॥  
 पुनि पहुँचे अर्जुनी गिरि कुमुदै दीन हुकुम् ॥  
 कपि सत्तासी लारव लै गवन्यो चारि पदुम् ॥  
 पुनि चलि आये ताव गिरि मिले तील बलवन्त ॥  
 सुनि कपि षोडशारव लै चले बहुरि हनुमन्त ॥

सो० बट्टी परबत जाय । गंधमदन ते सब कह्यो ॥  
 सुनत चले हरयाय । लै संग गेरा अर्बि कपि ॥

चौ० पुनि पहुँचे अर्जुन गिरि जाई ॥ तारा वधत चले सुधि पाई ॥  
 नव्ये लाष सत्तासी कोटी ॥ संग सकल मरकट मति मोटी ॥ ॥  
 पुनि सुमेरु परबत पगु धारा ॥ मिले केसरि हि हालु उचारा ॥ ॥  
 सुनि दश कोटि लाष नव कीशा ॥ लै संग चले सहस पट बीशा ॥



पुनि कैलाश पुलिंदे कहेऊ ॥ जय अरु विजे अंड सुधिलहेऊ ॥  
 सत्रह संकु कोटियक कोरी ॥ चयकपि चले चाहहि थोरी ॥ ॥  
 पुनि बिन्दा चल भूधर आयौ ॥ बारा बसन्त सुनत सुख पायौ ॥  
 हरिहर कोटि सहस सत लैंके ॥ चले चपल चित चंचल कैंके ॥  
 तइ पे बहुरि विजय गिरि गयऊ ॥ मिलिरति मुख ते भावत भयऊ ॥  
 आठ पदुम नौसे इक्यासी ॥ लैंकपि चले सहित सर मासी ॥  
 कूदे बहुरि कास गिरि पाचा ॥ मुद मयंद ते हाल सुनाचा ॥ ॥  
 तिन कपि पदुम कोटि एक लैंके ॥ चले सपदि प्रभु पद चित दीन्हें ॥  
 जामवन्त मूधर पुनि गयऊ ॥ जामवान सुनि सांगत भयऊ ॥  
 धूमकेतु निज सोहर तेरे ॥ बारा चन्द बसु संकु सुडेरें ॥ ॥  
 छप्पन कोटि अपर मरु तारावा ॥ लैंसंग चले भालु करि मारवा ॥  
 पुनि धवला गिरि आइ विधाता ॥ बरगी सकल दुबिद ते बाता ॥  
 एक कोटि कपि तारव पचीसा ॥ गवने संग सूत्र लैं तीसा ॥ ॥  
 पुनि उदया चल पन सयल हेऊ ॥ सर्वा सर्व सत्य ते कहेऊ ॥ ॥  
 अद बुद आठ पदुम मुनि लैंके ॥ मरकट चले चहुं चित दैंके ॥  
 यहि विधि सबे बुलाइ कपीशा ॥ आइ सुकंदै नायौ शीशा ॥ ॥  
 यहमें गिनती जौन गनार्इ ॥ बृहद रमायणा महें सो पार्इ ॥ ॥  
 बाल मीक मुनि पुनि कंछु जानी ॥ युद्ध काराई में कह्यो बखानी ॥  
 इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास रास  
 सनेही कृत सुग्रीव मित्र तारामधुष्यसा निवास बरानो ॥

नाम उत्तविंशोऽध्यायः २६ ॥

दो० सुमिराम सिय सन्त गुरु गणपि सुख दानि ॥  
 सर्व रमायणा केर मत जो सो कहौं बखानि ॥

चौ० पवन तनय जहं जहं कहि आयो ॥ किह्यो सो मुनि सुकंद मन भायो ॥  
 तेहि अवसर लक्ष्मणा तहें आयो ॥ देहुं जारि पुर बचन सुनायो ॥

डरे लोय सुनिबालि कुमारा ॥ आइ पाइ करि कोध नेवारा ॥  
 मुनि सूरज सुत उंद डेराई ॥ हनोमान ते कहौ बुभुक्षाई ॥ ॥  
 नारा सहित प्रोव पहें जावो ॥ करि प्रबोध मंदिर ले आवो ॥  
 भलि ईश कहि शीश नवाई ॥ बिनती कीनि लबन की जाई ॥  
 तारा हें सिवहु वचन सुनाये ॥ करि सन मान भवन ले आवे ॥ ॥  
 मिले सुकंठ सप्रेम प्रवीना ॥ चरता परवारि बरा सन दीना ॥ ॥

द्यौ० कहा लयन सिय केरि सुधि लीन बाहिये धात ॥  
 बोलि पदाये विपुल कपि आवन चाहत तात ॥  
 अस कहि सिविका रुद है आवे जहं एवोर ॥  
 बेंडे जनु कैलाश पति सोहत प्रयाग शरीर ॥

मी० देखि नवायो माथ हाथ जोरि करि बिनय बंद ॥  
 तब माथा बस नाथ जीव सदा भरमत फिरत ॥  
 विषय बिबस मुनि देव में पशु कपि कामी महा ॥  
 कीन्ह बिन तब सेव मिटत न इन्दी जनित दुख ॥

द्यौ० मुनि प्रभु वैरायो सनमानी ॥ सिय सुधि लीन रही सुख दानी ॥  
 जेहि हित त्यागिल जत नुरावा ॥ सोन भई प्रबतक अभिलाषा ॥  
 तेहि मृत सर आवे कपि यूथा ॥ नाना बरों विशाल बरूथा ॥ ॥  
 शीतोरक्त विसंगम नीला ॥ कर वुरथूला थूल धुमीला ॥ ॥  
 सात ताल सम पृथुल कराला ॥ जिन्हें विलोकिल है भय काला ॥  
 सब कपि युद्ध बिसार देवीरा ॥ स्वामी हित कारक रणधीरा ॥ ॥  
 मिलि लंगूल पति आय सुदीना ॥ सबन प्रणाम राम कहें कीन्हा ॥  
 भये छुक्ति छुविन खशिर देवी ॥ धन्य भाग अनुराग विशेषी ॥  
 राम कुशल बूझी सब केरी ॥ बोलित बसूरज सुत देरी ॥ ॥ ॥  
 सुबहें सकल मरकट मम बाता ॥ जाते जीव केरि कुशलाता ॥  
 जपत पदान ज्ञान बहु करई ॥ बिन हरि भजन न भवनि धितरई ॥



दो० विद्याबुद्धिविवेकवितर्धर्मकर्मभलसोड् ॥  
 अर्न्तयामी रामप्रभुजातेपरसन होड् ॥  
 मुखभुजकटिपदतेभयेबरनाश्रमहरिसूत ॥  
 जोनभजैतेहि चारिमहंतेहिजानियेकपूत ॥  
 बरणाश्रमतेभूयहै सोड् परतभ्रमकूप ॥ ॥  
 पुनिपावतयमजातनानिजअधकेअनुसूत ॥  
 असविचारिछलछाड़िकैकरहुरामकरकाम ॥  
 मासदिवसमहंआयहूलयसियसुधिअभिराम ॥  
 आईअवधबिताइजोसोपाईवड्दरगड् ॥  
 गवगवाहतेकह्यौतुमजावोपूरवखराड् ॥

चौ० भलेनाथकाहिमाथनवाये ॥ सातपदुमकपिपाइसिधाये ॥  
 तारावरतमुखेनमयंदा ॥ कह्यौजाहुउत्तरसहनन्दा ॥ ॥  
 गेरापदुमकीशलयसाथा ॥ खोजतचलेविपिनगिरपाथा ॥  
 पुनिबसन्तसतबीरबोलाये ॥ कह्यौजाहुपश्चिमहिंसिधाये ॥  
 सोरहकोटिकीशलयभारी ॥ तबअंगदतेकह्यौहकारी ॥ ॥  
 जामवन्तहनुमतनलनीला ॥ सबदक्षिणादिसजाहशुशीला ॥  
 दशकोरिबानरसंगलैकै ॥ चलेसकलप्रभुपदचितदैकै ॥  
 हनोमानजबनायौमाथा ॥ करमुद्रिकादीनरघुनाथा ॥ ॥  
 कहिनिदिह्यौसीतहिसहिदानी ॥ फिख्यौबेगिमविगदवावानी ॥  
 सुनिप्रभुबचनचलेसिरनाई ॥ दूँदतगिरिवनकपिसमुदाई ॥  
 वज्रदंजदानवयकपावा ॥ अंगदतेहिरामारिगिरावा ॥ ॥  
 मगमेंतृषितभयेकपिभारी ॥ विवरंदेरिवप्रविसेहितवारी ॥ ॥  
 भवनएकतहैबिनानिकासू ॥ बैठिबामतपपुञ्जप्रकाश ॥  
 सबहिनजाइताहिसिरनावा ॥ बूकेतेवृत्तान्तसुनावा ॥ ॥  
 सुनिबोलीफलदलजलखाहू ॥ खातभयेसबसहितउछाहू ॥

पुनिःप्रायेजहंतापसबाला॥ तबसोकहतभईनिजुहाला॥  
 कुराडलियाहेमापराकीसखी स्वयं प्रभा मम नाम । ह-  
 रिःप्राणी मय स्वर्ग ते दुरि राखी यहि ठाम ॥ दुरिराखी यहि  
 ठाम इन्द्र सुनिलयगेताही । मयरहिगइ यहिः प्रयत्न राखि  
 राखव मन माहीं ॥ मन माहीं प्रभु राखि नाम सुमिस्थो नित  
 नेमा । अबकारजहें गयो भयो पारस मिलि हेमा ॥ प्रबतुम  
 मूदह नयन निज जाहु विवर के पार । मै जेहों रघुबीर पहें  
 सुनिभांये दृगतार ॥ सुनिभांये दृगतार लखें तौ सिंधु कि-  
 नारे ॥ प्रापु गइ प्रभु पास बहुरि बंदी पगु धारे ॥ इहों बिचा-  
 रहिं कीश मिलि बादिहि बीती प्रबधि सब । मिली नसी-  
 तांकेरि सुधि समुझि परत भई मीचु प्रब ॥ . . . . .

सो० सुनि कपिशन के बैयन । निकसा कहिं पातितब ॥

मिला प्रसन निज प्रयन । देखि पराने कीश सब ॥

कह अंगद अनुरागि । धन्य जटापू समन कोउ ॥

राम हेत तनु त्यापि । गाहरि पुर है धृग हमें ॥

अनुज नाम सुनि सोइ । ठाढ़ किहि सिकपि सपथ करि ॥

जामि उठे पर दोइ । मार्ग प्रसित दशमी दिवस ॥

निज गति बरगान कीन । जेरे पंख जिमि जेहि भये ॥

पुनि सिय की सुधि दीनि । हे रावण पुर बिटप तर ॥

चौ० प्रस कहि गीध गयउ निजगेहा ॥ तब सब कपिन भयो संदेहा

सत योजन सागर हित तरना ॥ निज निज बल सब काहू बरना

पार जान हित सकल सकाने ॥ जाम वलत तब बचन बरवाने ॥

हे हनुमान ज्ञान गुण धामा ॥ होई यह तुम ही ते कामा ॥ ॥

ताते निज बल प्रमुल संभारो ॥ हम सब कीजनि बाट निहारो

सुनि हनुमंत हरष उर लीन्हा ॥ तेरह योजन करतनु कीन्हा ॥



बोले करसपते सुनि लीजै ॥ का अवकरो तौ निशिष दीजै ॥  
 कहो रावनै आवो मारी ॥ कहो ले आवहुं जनक दुलारी ॥  
 दूतनी बात करहु तुम ताता ॥ सीतहि देखि कहो कुशलाता  
 गीतिका छं० कुशलात श्री सिय केर तात सुनाइये सु-  
 धि आइ कै । जेहि जानि राघो कीश लै गद लंक घेरै जाइ कै ।  
 करि सभर मारहिं रावराहिं सुर साधु बंदि छोडाइ कै । भ-  
 व सिंधु तरिहैं जीव जड यह सुयश सुनि अरु गाइ कै ॥ ८-  
 दो० सब रामायणा के विषे देख्यो जौ न चरित्र ॥  
 सोई जनरघुनाथ हूं बरन्यो कछु कपवित्र ॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ-  
 दास राम सनेही कृत किष्किंधा काराड संपूर्ण  
 नाम विंशोऽध्यायः ३९



श्रीगणेशायनमः

# अथ विश्राम सागर

सुन्दर काराड प्रारम्भः

दो० सुमिरिराम सिय सन्त गुरु गणपति गिरा सुख दानि॥  
कहों आदि कवि कहनि कछु नाटकरीति बखानि॥  
जामवंत के बचन सुनि हनौ मान बलवान ॥  
चलेलंक कहैं हरि दिवस जिमि राघुपति को बाना॥  
सुर प्रेरित बल लय राहित सुर सहि रे के जो आइ॥  
बदन पै विपुनि निकसि के चल्यो आशिषा पाइ॥  
राहु जन निरहि सिंधु महं गहिर वग कोरे अहार॥  
सोइ छल लखि हनुमान तेहि मारि भये दीधवार॥  
शिवा शाप युत शैल पर गयो भयो नहिं बाल॥

सो० यह नहिं प्रभुता प्रवंग की प्रभु प्रताप बस काल॥  
गिरि चदि देखीलंक। अति विचित्र मुनि मन हरनि॥  
फिरत असुर बंधु बंक। चहुं दिशि रक्षा हेत पुर॥  
करि बिचार कपिशेष। दशदुगारि बपु धारित ब॥  
निशि गढ़ कीन प्रवेश। लखि बोलत भइलं किनी॥  
जानत मोहि न अयान। मम अहार हरिलंक कर॥  
सुनि मुष्टि कहनु मान। हनत मरी भइ दिव्य बपु॥  
कहत भई कर जोरि। भयो सत्य बर ब्रह्म कर॥  
जाहुन गर भय छोरि। सुमिरिराम पद कपि चलेहु॥  
सब घर होरे पौन। कतहुन देखी जानकी॥



गये दशानन भौन । अतिविचित्र पुष्पक जहं ॥

दो० सर्व काम प्रद सब रतन सर्व काल जेहि माहिं ॥

सर्व सौज देखत वनै बरनि जात सो नाहिं ॥

चौ० तहें न शंक दस मुखे निहारा ॥ सोइ गयो कल करत विहारा ॥

चौदह सहस सुनाग कुमारी ॥ जहें तहें कनक लता सी डारी ॥

देखि भयो हनुमान हिं शोचा ॥ नाहक हरि सि जान किहियो चा ॥

अब ते देइ पठै जो सीता ॥ तौ न होइ यहि पुरते रीता ॥ ॥

राम काज लगि सब त्रिय देखी ॥ जनक सुता सो कतहुं न पेखी ॥

पुनि गे भवन विभीषणा केरे ॥ रामा युध तहें अंकित हेरे ॥ ॥

तब लागे मन करणा विचारा ॥ जागि विभीषणा नाम उचारा ॥

भयो मुदित कपि सज्जन जानी ॥ यहि ते मिले न होइ हे हानी ॥

लागे कहन राम गुरा धीरा ॥ सुनत विभीषणा आयौ तीरा ॥ ॥

पूछा हाल पवन सुत भाषा ॥ दोउ दिशि भइ पूरन अभिलाषा ॥

दो० कह्यो विभीषणा जे रिकर कबहुं क श्रीरघुनाथ ॥

करि हैं कृपा कृपायतन जन पर जानि अनाथ ॥

तामस तन कछु भजन नहिं नहिं पद कमल सनेहु ॥

बिन हरि कृपा न दरसत वभयो भरो सो येहु ॥

कह कपि परम कृपाल प्रभु सचिव किये कपि भाल ॥

वाकन बुद्धि न रूप कुल तोख हेतति हुं काल ॥

सो ऐसे प्रभु हे बिसारि ॥ कसन परहि न रनिरय महें ॥

सुनत भयो सुख भारि ॥ पुनि पूछ्यो कहें जान की ॥

दीन्ही युक्ति बताइ ॥ गे अशोक वन विशद जहें ॥

कनक बिटप समुदाइ ॥ नाना चित्र बिचित्र फल ॥

खाजत रव सत प्रभात गये शिंशपा बिटप तर ॥

बैठी जहें जग मात ॥ मनहुं विरह मूरति धरे ॥ ॥

देरिवनवायोशीश। मनहीं मन रहे बैठितरु॥

तेहि अवसरदशशीश। अगरीतत है संग सुमुखिसबा।

चौ० बोला जनक सुताते बानी॥ सुनहु प्राण प्रिय सुमुखिसयानी॥

में सुरः प्रसुर नाथ बल धामा॥ मन्दोदरी आदिसबभामा॥

मेघनाद आदिक सुत जेते॥ तिनकी रवनिरहत जन तेते॥

करहु सकल सुचि सेवक तेरे॥ एकवार निरखौ दिशि मोरे॥

तेरे योग सकल सुख आही॥ नृणाधरि बंद सीता तेहि पाही॥

कुप्ये रेगवगा जे अहे राम चरणान अनुरागी॥ ते सरि प-

ति चुल्लवत् लखे ललना सम प्रागी॥ चिन्ता मणि अस

मवत् सरिस खद्योत तमारी॥ स्वर्गी मेरु लोच बत् भूप भृत्य

वत् विचारी॥ कल्य विटप तिर्नवत जगरासि भारवत् देह।

तौ तैं काह देखावई मोहिल घुलंका येह॥

दो० होत प्रफुल्लित कमलिनी कहु खद्योत प्रकाश॥

कहत बचन मरजाद तजि हेत आपने नाश॥

मुनि सीता के बचन बर मनहुं लगे उरबान॥

काटि खड्ग मारन उद्यो तैं मम कृत अपमान॥

सो० मन्दोदरी गहि पाणि। समुझायो बहु भांति तब॥

बोलि बकी अघरवनि। कहि सि कि त्रासहु जनक जहि॥

मास दिवस के बीच। जो नहिं मानी बचन मम॥

तौ कटि हों शिर नीच। लज्जित है गा भवन निज॥

दो० विविध रूप धरि राक्षसी लगी सियै दुख दैन॥

विजटा तब समुझाई के जात भई निज ऐन॥

राम बिरह बस जानकी सब निनि होरि निहोरे॥

मांगहिं पावक देह जेहि मिटे विपति अति मोरे॥

चौ० सुनत पवन सुत हृदय विचारी॥ दीन मुद्रिका मत मुख डारी॥



लखि मुंदरी रघुपतिकर केरी ॥ बोली बचन ता सुत न हेरी ॥ ॥  
 श्री घर बन हम तव यह रीती ॥ अब को करि हि प्रिय न परतीती  
 कहु हैं कुशल लखार रघुवीरा ॥ कैसे तें आई ममतीरा ॥ ॥  
 तब हनुमत बोले सह चाऊ ॥ मातु भानुकुल दशरथ राज ॥  
 तिनके सुवन लखार रघुनाथा ॥ आये बन बँदे ही साथा ॥ ॥  
 महिं जैन हं हरि लैगा कोऊ ॥ ददत कि रें बिपिनि महं दोऊ ॥  
 गोधराज ते सुधि जब पाई ॥ तब तौ अधि क उठे अकुलाई  
 बहुरि सरवा सुग्रीवहिं कीन्ह्यो ॥ भूषण पाय पाह सी लीन्ह्यो  
 बरखा समुझि रहेग मरवाई ॥ अब कपि अगारि त बंदुरे आई  
 पठये चहुं दिश चाहन भूरी ॥ मोते कहि निनयन जल पूरी ॥  
 लै मुंदरी जाहु तुम ताता ॥ सीतहि देखि कहो कुशलाता  
 कारि लह मातु मैल कहि आयो ॥ खोजत आजु दरशत वपायो  
 राम चरित यहि विधि सुनु सीता ॥ भई मुदित दुख दहल वीता  
 बोली जेहि यह कथा सुनाई ॥ सो अब प्रगट होत किन भाई  
**दो०** सुनि सीता के बचन कपि आयो पुरह लजात ॥

चूके ओसर सुजन जिमि सज्जन सन्मुख जात ॥

**चौ०** कपि स्वरूप लखि सी य सकानी ॥ राम दूत में सत्य सयानी  
 तिनके गुण कहु कों बखाना ॥ श्री शनाय बोले हनुमाना ॥  
**कुकुभाहं०** प्रथम दया दुख देखि सबे नहिं उभय क-  
 पा करि गहई ॥ अनू कं पा हित करत न त्यागत करुना कष्ट  
 न सहई ॥ आनूसंस गुण सहित दोष हू ना की रक्षा चाहैं  
 अनू को शनिज सरणि केर कलिकर तब पुनि पुनि काहैं  
 दम गुण इंद्री दमन दर्य परि मव दानव संतापा ॥ सम गुण  
 सुमत विरोध बोध बपु परि पूरन निश पाया ॥ सत्य महा स-  
 च कहत गहत लखि प्रीति प्रतीति अपावन ॥ ह्या छिंद-

लखि क्षमहि सदा प्रापति सौ लभ्य सोहावन ॥ सौशिल्या  
 तज्जदीन खीन बुधि सुधि शरणा गत पाले । प्रणात विधुरबा-  
 त्सत्य भोगकृत प्रमुदित आपु कपाले ॥ सब उर फुर सर वज्र  
 अघट धटना कर शक्ति सरूपे । रज कृत गणात कृतज्ञ मे-  
 रु सम सुमिरत भक्ति अनूपे ॥ गुणागम्भीर रहितोर जासुकी-  
 गति मति जात न जानी । चतुरति चित्र विचित्र रचत रचना  
 अगणीत विचबानी ॥ थिर सुनाम गुणाधाम अचल अर्थ-  
 त अनहेतु उदारा । धीर्यधार रिपुमार मोह मधि मानस  
 टै नटारा सूर समर सुखलहत तेज जग जीवनि निज बसरा-  
 खै बल बड कारज करत होइ अम स्वल्प न पडति नारखै ॥  
 सो दय्या खिल अड्ड सुभग चख चाहत चाहन डोलै ॥  
 महा मोठ माधुर्य साम्य सौरभ सबते भल बोलै ॥ भागवान  
 ब्रह्मादि धनी बहु जाके धनते भयऊ । शिरस सुमन सुकु-  
 मार्य आर्य आज्वलि अजीत अरि जयऊ ॥ शुद्ध सुबेव-  
 किशोर सौर्य मर्दव विरक्त विज्ञानी । धर्म धाम निष्काम-  
 राम रघुनाथ अनाथ अमानी ॥

दो० कहि कै कहत न गहत गहि दै के देत न काहु ॥  
 बधिकै बधत न तजत तजि भजेहि भजत तव नाहु ॥  
 संग सुमित्रा सुवनते अधिक भरत में प्रीति ॥  
 कइ कबार मोसि कहि नि कुटिल काग की गीति ॥

चौ० सुनिहनु मानब न बैदे हो ॥ जान्यो मन क्रम राम सनेही ।  
 बोलीं अहैं कुशल दोउ भारी ॥ हमते तात न कहु बनि आई  
 सासु ससुर पति बचन नेवारी ॥ आइ न संग सनेह पुकारी ॥  
 अकृत देह जब भयो बिछोहा ॥ तजे न प्राणा कौन बड़ मोहा  
 यह उसहे उदुख दुसह अभागी ॥ जरि न गयो बपु विरह दवागी ॥



तेहि ते तान प्रीति की बाना ॥ जानत भरव कर दम जल जाता  
 आरज सुवन दया के सिंधू ॥ सरल सुभाव दीन के बंधू ॥ ॥  
 निज दिशि देखि चहे सो करहीं ॥ हमरे काम सदा दुरव भरहीं  
 मुनि पवन ज कह पुलकित गाता ॥ दीन वचन कत भायत माता  
 जन के दुख राखु नाथ दुखारी ॥ तब वियोग संभव दुख भारी ॥  
 करतु अपन रोध सोध बिन पाय ॥ ज्यों त्यों इतने दिवस बिताये  
 नाहिन कह राखु पति सरभाजू ॥ तम वस्तु कहै निश चर जानू  
 जो मैं हारि लै जावों आजू ॥ बिन निदेश बिगरे मुर काजू ॥

दो० तेहि ते कछु दिन धीर धरु कपिन सहित सो उभाइ ॥

आइ तुम्है लै जाइ हैं धरि हरि पुर पहुँचाइ  
 मुनि बोली सिय की शपथ हैं सुत तोहि समान ॥  
 तब तो कीन्हों स्वर्ग गिरि सरिस सुत नुहनु मान ॥

सो० बिन कीन्ह करतूति कथत ताहि लघु जानिये ॥  
 काल्ह कहों गोभूति ॥ धोइ समर सरिव दन मसि ॥

मै जो सुने कटु वैन ॥ कहै जो निश्चर नीचने ॥  
 धरि राखे उर ऐन ॥ समय याइ सब कादि हों ॥  
 भइ सीतहि परतीत ॥ देखि बुद्धि बल की शकर ॥

दीन्ह अप्रीति सप्रीति ॥ प्रजरु प्रमर सुत हो उषिय ॥

मुनि कपि नायों माथा हाथ जोरि बोल्यो बहुरि ॥

सुधा लागि मोहिं मात ॥ हरषि कहौ सुत खाहु फल ॥

३ ति श्री विश्रामसागर सब मत सागर ग्रंथ उजागर श्री राखु नाथ दास राम सने-  
 हो कृत मास्त नंदन श्री सीतापति श्री राम संदेश बरानो नायक विशोध्यः

चौ० सुमिरि राम सिय सन्त गुह गराप गिरा सुख दानि ॥  
 कहों आदि कवि कथनि कछु नाटक रीति बखानि ॥  
 मेघ नाद ते अधिक प्रिय पुरहुत ते बर बाग ॥

दसमुखदुखहितखाइ फल कपितरुतोरनलाग ॥

बरजत मारे असुर कछुकछुक गये गृह भागि ॥

कछुनजनायौ रावराहि सुनत लागि जनु आगि ॥

चौ० तुरत बोलि मंत्री सुतलीन्ह ॥ लखि किन्नर कहं आय सुदीन्ह ॥

असी सहस्र सुभट संग लैंके ॥ आघानिकट डुंद भी दैंके ॥ ॥

हरये हरि सुत सैन निहारी ॥ बोलैं जे रघुनाथ खरारी ॥ ॥

जेल स्मरा सुधीव कपीसा ॥ लखि किन्नर मारे शरबीसा ॥

तब हनुमत हसित रुए कलीन्ह्यो ॥ तेहि एक विशिखं वडै के कीन्ह्यो ॥

कपियो जन की शिला उपाटी ॥ लख्ख बाणा करि किन्नर काटी ॥

तब बजरङ्ग रोस करि धायो ॥ पटाकि पानि शिर मारि गिरायो ॥

पाछे अपर निशाचर मारे ॥ भागि बचे ते जाइ पुकारे ॥ ॥

सुनि तब अछे कुमार पठावा ॥ उभै लाख भट लैं सो आवा ॥

देखि ताहि गरज्यो कपि भारी ॥ भागे हय गय ह हरि पछारी ॥

दो० साधिसकल प्राये नि कटकहि कहि बानी विंग ॥

कूदेहु कपि तिन मध्य इमि जिमि मेरवन महेंसिंग ॥

कछु कोनाय कोडे करि कछु माडे धरि पाइ ॥

कछुक मिलाये धारे महें भूरि मसन की नाइ ॥

चौ० निज बल बध लखि अछु य कुमार ॥ लोहरं वलैं की शहि मारा ॥

लागत सो मुरछा सी आई ॥ मारे तब लाखन सर धाई ॥ ॥

भयो चेत तनु पूरित देख्यो ॥ भानु किरि निजनु चहुं दि सिले रव्यो ॥

फिटकि देह सब बान गिरयो ॥ गहि गिरि एक अछे पर धायो ॥

आवत लखि मारे बहु बाना ॥ दहि ने करते खस्या परवाना ॥

तुरत बाम गहि सिर दै मारा ॥ सहित सूतर थभा संहारा ॥ ॥

तासु सचिव सुत पंच प्रचारे ॥ कछु खेलाइ पुनि सोऊ मारे ॥

बैठे बहुरि महल पर जाई ॥ बोलै लंका दिसि गोहराई ॥ ॥



मैंहों कौशलेन्द्रकर दासा ॥ बैठ लवावन कीन्हे नासा ॥ ॥  
 जासु सुभट मन होइ खुशाली ॥ प्राइ करे सो समर कुचाली ॥  
 अछे निधन सुनि निश्चर राई ॥ मेघ नाद कहं लिहि सिबोलाई  
 कह्यो बांधि वानर कह लावो ॥ मारेहु जनि सुत मोहिं देखावो ॥  
 आयसु मानि अनीलें संगी ॥ आवात हं जहं कपिरा रंगा ॥ ॥  
 लखि पवनज फांद्यो निन बीचा ॥ मारे छिटकि अनेक न नीचा  
 पुनि प्रचारि ब्यरि पुते भिरेऊ ॥ मृग पति सम महि कोउन गिरेऊ ॥  
 भरि अनंग दिन भई लराई ॥ जाना यह हरि जीत न जाई ॥ ॥  
 ब्रह्म अस्त्र तब साधि चलावा ॥ करि बिचार हनुमान बंधावा  
 लीलें लें आय जहं रावरा ॥ देखा कपि जनु कुधर भयावन ॥  
 अरु गानयन रिस बस अंग जरहों ॥ समय देव सब आयसु करहों  
 लखि प्रभाव कपि शक न आनी ॥ बोला तब दशकंधर बानी ॥  
**गीतिका छं०** कपि कौन तू सुत अक्ष धानक कौन ब-  
 ल रघुनाथ के । रघुनाथ को खर दूय रां तक अनुज लक्ष्म-  
 गा सात के ॥ लषरा को तब भगिनि जानत परशु धरि मद्-  
 जाह हस्यो ॥ परशु धर को सहस भुज रिपु दीप जेहि तब-  
 शिर धस्यो ॥ पठवाजु केहि सुग्रीव का हरि बालि से द-  
 र जानिये । कपि बालि को तुम रह्यो जाकी कोष में सुधि-  
 आनिये ॥ किमि सिंधु नाथे गोप दज्यों केहि हेत सिय बोंरे-  
 लखै । सिय कौन कव्या जनक की तुम बानगे जाके मखै ॥  
 कस वान सोरु बलि सुवन जेहि तेहि बांधि नाचन चा यह ॥  
 को कहत यहि विधि पदुमिनी जेहि जलध सांभ चलायह ॥  
 सठ बांधि आयसि यही बात नबान यह नहिं आन है ॥ तब त्रि-  
 यन लखि अघ लाग पुनि तोहिं देन शिक्षा ज्ञान है ॥ दे कौन  
 शिक्षा देत याही वयर प्रभु से जनि करौ ॥ परि पाइ सीतहि देहु

सब विन मोत जाते नामरौ ॥ को मारि है मोहिं कर्म तेरे कोन  
 तिन ते राखि है । श्रीराम करुणा धाम जब तें शरणा मुख ते  
 भाखि है ॥ मम शरणा चिधुवन आजुतौ हम शरणा काकी आ-  
 हिरे । नहिं जाइ है तौ पाइ है फल कटुक कछु दिन माहिं-  
 रे ॥ मृग नारि द्विज कपि नाह हों खर दूषाणा धक निरवली ।  
 मोहिं भेंटि जब फिरि जाइ है तब बात कछु आगे चली ॥  
 जब समर रोरि है राम तब को सुभट सायक सहि सकी । सु-  
 नि समुझि बूझत नाहिं बीसहु नयन फूटे बर वकी ॥ रेपोच  
 कपि नहिं डरत काको मोहिं तू सठ है कहौ । नहिं दीन आ-  
 य सु ईश नातरु ख्याल कर त्यों जस चहा । रसरज तोहिं  
 करि सुभट रस युत लेक खल ग्वल तो स्वयं । पुट पाक क-  
 रि मुर पतिहि देतो घने धर धल तो त्वयं ॥ सुर नाग नर दि-  
 ग पाल सब जग जाल जेहि कर तल अपे है । तेहि शत्रु ते-  
 करि गरि जीवन मरणा दोनो भल रहैं ॥ अपवलीन सेना मापि  
 तब नहिं सबल कोउ मोते हवै । पर डरत आय सु भंग ते नत  
 सबन करि जातो सबै ॥ सुनि किहि सि निश्चर बोलि यह क-  
 पि काल बस बध को जिये । बर बाग की गति किहि सि जि-  
 मि ति मि बाँटि तन को लीजिये ॥

**सो०** सुनि धाये जिमि भूत । कह्यो विभीषणा जोरि कर ॥

नाथन मारिय दूत । घटत कि दधि दलि बूंदयक ॥

**चो०** अपर दराइ की जे जो चहऊ ॥ तौ बाल धिपाव कते दहऊ ।

जहि ते फिरि तप सिन यहै जावै ॥ कपिन समेत इहो ले आवै ॥

एक गये जो मिलै अनेका ॥ तौ तुरतै तजि दीजै एका ॥ ॥

सबहिन कहा मंत्र यह मूला ॥ लगे लयावन घृत पट तूला ॥

जहै तहै लगे लपेटन बोरी ॥ कपि खेलार करल मव दोरी ॥



दोर दोर पावक पर जारी ॥ उये कोटि रवि किधों देवारी ॥ ॥  
 लघुहूँ निबुकि मेरु समभयऊ ॥ रावनभवन कूदिचदिगयऊ ॥  
 नाराचहुँ ॥ चढ्यो फलंगिधाम लूम लाम को उठायऊ ॥  
 मनो अकाश ते नदी कसानु की बहायऊ ॥ किलंकलील  
 नेक काल जीह सो पसारैहू ॥ किधों अनीक अयक सूर सय  
 फ सीनि कारैहू ॥ किधों सुरेश चोप की कलापदामिनी मंहें ।  
 विलोकि जातु धान सो परात भे जहें तहें ॥ फिराइ लाइ लाइ  
 अयन मयन से लगे बोरै गयंद छोरि बाजि छोरि बाजि छोरि  
 रि ऊँठ छोरि ये खोरै ॥ अनेक बाल बाल की सुतात मात बोल  
 लहीं ॥ बचाइ लीजिये हमें समे समान डोलहीं ॥ अनेक ना-  
 रि मारि रिंभ डिंभ कादिल आवहीं ॥ अनेक डारि डारि बस्तुवा-  
 रि लेन धावहीं ॥ अनेक कंत बीर ते पुकारि वयन यों कहें ।  
 उठाइ लेहु लाल माल जाल दे परान हैं ॥ विलोकि देव्यों  
 कहैं कपीश यज्ञ साठनी ॥ सुरारि सौ जलंक कुंडहाक स्वाह सी-  
 मनी किधों विराट के सुरारि राज रोग जानिजू ॥ तिमितता सुवदज्यो  
 रभृंगा कठानिजू ॥ मयंति मंदराज की मनोज फागु खलई ॥ विराय भू-  
 न्य बोध को बिभोह बंधु डेलई ॥ गिरै कपूर दूरित तब कहैं मंदोदरी ॥  
 बिहाइ लोक लाज कानि भागतीन बेंगो ॥ अरी ॥ अरे अकंपनाय किला  
 प कंठ की मंहो धरं ॥ लबाइ लेहु पद गाति पूत नाति सो दरं ॥ अ-  
 नेक बार मैं कही बुझाइहू विभीषरां ॥ नमामि दादि जार को कुठार  
 वंस तीयरां ॥ निकेत द्वार पई उहु हाट बार मैं जहैं ॥ लुका-  
 त जाय नीर की श तीर देखिये तहों ॥ घने स्व बक्ष जात के-  
 नि सात स्वस्ति पावहीं ॥ बोलाइ शेष राघव वेषा जानकी क-  
 हा वहीं ॥ बधू जो कुम्भ करी की पसारि यानि भायिये ॥  
 सोहाइ रामचन्द्र केरि मोर कन्त राखिये ॥ अनेक धाइ

धाड़ जाड़ रावरो सुनायहू । बिचारि वीर मेघनाद से बली  
 पढायहू ॥ अनेक अस्र शस्त्र लाय आइ मारने लगे । सु-  
 माइ दीनि बालधी पुकारि कूर से भगे ॥ सुमंत्र जाइ यों क-  
 ही बडो बलाइ कीश है । निशंक बंकहू बडो सुनोन ऐसही  
 स हैं ॥ बिशाल ज्वाल जानि कोपि मेघ बोलियों कही । बु-  
 ताइ देह आगिरे बहाइ जन्तु को सही ॥ भले सुनाय चाप  
 आय पुंज पाथ कूदेऊ ॥ यथा सनेह पाइ चोगुनी रुषानु  
 बादेऊ ॥ लगी जु अङ्ग अङ्ग बाण प्राण ले भगे सवे । निहा-  
 रि गति मालवान स्यान बोलियों तवे ॥ न आहि याहि अपि  
 सूम आहि ईश बामता । समीर स्वांस सीय की जु राम रोषा  
 मामता ॥ बिडो ज ब्रह्म बिष्णु रुद्र दादि देव जौन हैं । डिरा-  
 त मोहिं सर्व बङ्ग ईश और कान हैं ॥ बोलाइ काल ते क-  
 ह्यो लगूल लाउ मारि के ॥ बटोरि भूत पेत गह्व दराइ चंड  
 धारि के ॥ बिलोक बात जात घात कीनि सयन तासु को ।  
 उठाइ गाल में धस्यो पस्यो रवै भार जासु को ॥ समेत शंभु भा-  
 स राम दास पास आयहू ॥ समीत पंक जा सनादि बीन-  
 ती सुनायहू ॥

**दराइ कहे** ॥ जयति श्री वात संजात विख्यात बल विपु-  
 ल पन बाल रवि गाल धर्ता ॥ लोक लिपि कसी धृत शास्त्र  
 विद्यानि पुण निरस संसार महिं भार हर्ता ॥ जयति बजरं  
 ग रण रङ्ग अरि भङ्ग कृत कर्म निहिं भर्म रिक् मूक बोसं ।  
 सत्य सुग्रीव सुख हंतु ब्रह्म केतु वपु वचन मन काय रघुना-  
 थ दासं ॥ जयति गुण ज्ञान विज्ञान बैराग निधि नाम बसु-  
 जाम उर धाम धारी । साधु सुर रंजन असुर गण गञ्जन ड-  
 ष्ट मुख भजन बिपति हारी ॥ जयति कपि मिष्ट पर मिष्ट-



पावक परम धर्म धुर धरौ हरि दर्प हन्ता। स्वर्ग सौत्नाभ ज-  
ल दाम विग्रह बरणा विमल यथा सूर बीराग्य गन्ता॥ जय-  
ति जन कात्मजा शोच मोचन विपिनि निधन निर्द्वन्द-  
श ग्रीव जाता। निपट निर संक गढ़ लंडू दाहक काम क्रोध  
मद देव दानंद दाता ॥ जयति शिर श्रवणा दृगदेत कटि उ-  
दर कर शूल निरमूल नाभि सु आसं। पातु पूरव दक्षि बिदि-  
शि पश्चिम उत्तर ऊर्ध्व अध सर्वदा सर्व ठामं ॥ जयति पर  
यंत्र पर मंत्र नेवारण साकिनी डाकिनी घोर मारी ॥ भूत य-  
म दूत बेताल पावक प्रेत चौर बिग बिच्छू अहि बंधनारी ॥  
जयति सुर सिद्ध मुनि वृन्द वन्दित चरणा सरणा भय हरणा  
धून कुधर हाथं। अंजनी आनि दोहाइ श्री राम की हरहु दु-  
ख सपादि रघुनाथ नाथं ॥

**दो०** देहु छांडि यम राज कहें यही जीनती मोरि ॥  
परबस आंखें लखन सुनि दीन गाल ते छोरि ॥  
जरत देखि पुर जान किहि भयौ शोच कपि हेत ॥  
लागी सोंपन सब बिबुध बिभुहि प्रीति समेत ॥  
बैदेही की सुरति करि हरि हुलास पछितान ॥  
पुनि अपनी दिसि देखि कै दूर कीन अज्ञान ॥  
बच्यो बिभीषणा भवन अरु कुंभ करणा कर द्वार ॥  
अपर लंक सब जारि कपि कूट्यो जलाधि मंभार ॥  
पूछ बुझाद बनाइ लखु वपु प्राय सिय तीर ॥  
कह्यो चिन्ह कहु देह मोहि जिमि दीन्ह्यो रघुवीर ॥  
सुनि सह प्रीति उतारि निज चूड़ा मति तब दीन्हि ॥  
गहवर बोली तात तुम भले समय सुधिलीन्हि ॥  
जिमि मनि बिन व्याकुल भुजग जल बिन व्याकुल मीन ॥

तिमिदेखैरघुनाथबिनुतलफलहोंमेंदीन॥  
 कहसुतअबकबआइहैंदीनबंधुयहिपार॥  
 दहैंराजबिभीषणोकरिनिशिचरसंहार॥  
 बिजैपादकबराजिहैंमोहिंसहितदलमाहिं॥  
 देवबंदितेछूटिकबबिनयकरबप्रभुपाहिं॥  
 कबधोंबिधियहुंचाइहैंफिरिकौशलपुरतात॥  
 भरतशत्रुहनलोगसबकबलहिहैंमुदमात॥  
 हूहैंमंगलकाजकबपुजिहैंबाचककाम॥  
 नखसिखकबअबलोकिहोंरघुपतिछुबिभीमराम॥  
 सीसमुकुटभरिगाराजदितअवरानिकुंडललोल॥  
 जगमगातकबदेखिहोंदोपीदियेअमोल॥  
 अलकेंसींचीअंतरसोनिकटकपोलनमुक्त॥  
 भरिलोचनकबदेखिहोंकुसुमकलिनसंयुक्त॥  
 भालतिलकभासितउरदभकुटीधनुअनुहायि॥  
 भूरिभागकबदेखिहोंनयननयलकविसारि॥  
 चंचलचारुबिणालबिविलोचनमोचनमान॥  
 चितवतदिसिकबदेखिहोंमनकोकरिकुरबान॥  
 कीरतुंडसमनासिकालटकनकीछुबिभूरि॥  
 कबचकोरसमदेखिहोंमुखमयंकतूनातूरि॥  
 अरुनअधरदाडिमदशनरसनचारुमृदुहास॥  
 हेहरिकबअबलोकिहोंससिकरसरिसप्रकास॥  
 मधुरवचनजनमनहराकबसुनिहोंनिजकान॥  
 बिबुकचारुकबदेखिहोंचितवनअमीसमान॥  
 कंबुकराटतुलसीसुभगमनिमोतिनकीमाल॥  
 उरदीरघअबलोकिहोंकबत्रिवलीसुखजाल॥



भुजविशालकरिकरसरिसकरतलकमलसमान॥  
 सहितविभूषणादेविहोंकबलीनेधनुवान॥  
 भीनभगापहिरेललितताऊपरपटपीत॥  
 कबनिजनयनसेराहोंदेखिउहरउपचीत॥  
 कटिकेहरिहरिकरधनीपटपरदनीसुरंग॥  
 कबपदपदुमपलोढिहोंजानुपानिसबअङ्ग॥  
 प्रेसुतकंतअनन्तकरजानतसरलसुभाउ॥  
 नातिकहतनसहतदुखतुमतेकोनदुराउ॥  
 विरहअगिनिनेदेखितोहिसीतलभयनिजेह॥  
 सोउकहततुमजानफिरिसोइदुखसहबनेह॥  
 दीनवचनसुनितीयकेभयौबिकलकपिराय॥  
 नाकिनलागीअमरताछलबलकछुनबिसाय॥  
 हीन्होमातुप्रबोधतबहोईतुवमनजौन॥  
 चलयोनाइशिरनादकरिकूट्योसागरलौन॥  
 आवतजानिलंगूलसबचंदेबिटपगिरिधाइ॥  
 देरवतयहुंचेआइहनुकुहूदिवससुखदाइ॥  
 भयेछानतेपीनसबशाखाभृगएकसाथ॥  
 बृहदरमायनकेरमतकहाकछुकछुनाथ॥

इति श्री विश्रामसागरसबमत आगरग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदा-  
 सराम सनेहाकृत हनुमानलंकापुरीविध्वंस-  
 वर्णनानामहाविंशोऽध्यायः २३॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगरापगिरामुखदावि॥  
 साररमायणाकहैकछुगीताबलिमतआनि॥  
 सियेरंजिवनभंजिपुनिपुरजराइमनिपाइ॥  
 आयोमारुतसुतहिलखिहरयेकपिसमुदाय॥

भेंटि भेंटि पूछा सबनि हाल कहा हनुमान॥  
 सुनत बले सानन्द है जहें सुकराव भयवान॥  
 मार्ग पञ्चमी शुक्ल दिन मधुवन पहुँचे प्राद॥  
 खाये फल दल मधु सब निरख वारे बिड़रा॥  
 षष्ठी दिन कपि पतिहि मिलि सुदित कहा सब हाल॥  
 सत येँ दिन पाये परिवल जहें रघुनाथ कृपाल॥

चौ० चरगा परत भेंटै रघुवीरा॥ सानुज बैठे निज तीरा॥ ॥  
 जाम वन्त तब सकल बरवाना॥ जेहि बिधि काज कीन्ह हनुमान॥  
 सुनत समोद गोद भरि अङ्गन॥ हनुमान हिं पुनि मिले श्रीरङ्ग॥  
 उपपधारि बूझी कुशलाता॥ किमिसिय खबरि लयायो ताता॥  
 गीतिका छे० किमि तात लायहु सीय सुधि मुनि पवन॥  
 सुत पद गहि कहा॥ प्रभु पास ते जब चलेन दूँदत दूरि एक॥  
 सागर चहा॥ शत योजन कर तेहि नांघि चालिस कोस ते॥  
 कः पाराम है॥ पुनि हेम के चैंकूट लङ्क सुबेल सुन्दर नाम॥  
 है॥ तहें पाँच लाख पवान के गृह दारु के नव लक्ष हैं॥ पु०  
 निताम्र के मुनि कोटि घर श्रुति कोटि रज के स्वस्त हैं॥  
 ते तनेहि कञ्चन केर केवल कोटि पङ्कज राग क॥ यट को०  
 टि तूरा के वंश छूट के कोटि सत बहु भाग के॥ प्रमृटि  
 क के नव कोटि मेचक दाम कोटि महस से॥ में दीख इतने  
 नि लैं लंका दुर्ग सत योजन नव सैं॥ दश शीश ताको ईश  
 जाके कोप ते त्रिभुवन कंपै॥ उपबाग तमं जान की तव विरह  
 पावक में तपै॥ जहै रहत तहें के बिहंग निज निज भवन तजि  
 भजि भजि गये॥ भट्ट भेंट स्वास मभोर ते तित फिरि न तिहुं मर  
 पग दये॥ कृश गात सो जरि जान तजि दृग बारि निज हिन रा०  
 वही॥ तव नाम सुमिरत याम आँखों ओर कहु नहि भाषहो॥



जब प्रारा मीन समान बिन जल जानि तन त्यागो चहैं ।  
तब सींच प्रभु गुरा राखि विजटा जाय मैं देखी तहैं ॥ फिर  
नाइ दीन्हों मुद्रिका कहि कुशल बन भंजन कह्यो । बधि अ-  
क्ष लङ्क जराइ चूड़ा रत्न सीता ते लियो ॥ सोलीजिये र-  
घुनाथ ले निज हाथ हृदय लगाय हू । भेषम पुलकित गात  
शिथिल नवात मुख ते आय हू ॥ सुनि शोग सीय बिबेग सा-  
गर माभ बूड़न लागे हू । हनुमान बोहित सरिस लीन उड़ाइ  
आतुर जागे हू ॥

चो० शोशनाइ बोले हनुमन्ता ॥ केतनिक बात करे प्रभु चिन्ता  
कहौ रावरी दल युत मारों ॥ कहौ अनित्य चरगान डारों ॥  
कहौ लङ्क ले सागर बोरों ॥ कहौ त्रिकूटे घट दब फोरों ॥ ॥  
कहौ लाइ गिरि सागर तोषों ॥ कहौ पान करि जल उर लोषों ।  
कहौ थरों में सयन बदार्इ ॥ तापर सैन उतरि सब जार्इ ॥ ॥  
कहौ तुम्हें लेमिये दिखावों ॥ कहौ जान को आवि मिलावों ॥  
तब प्रताप ते सब कहू करिहों ॥ बिन निदेश पथ पाँउन धरिहों  
ताते जो भावें सो कहऊ ॥ कह प्रभु तुम सुन ऐसे अहऊ ॥  
सब विधिहों निज मन अनुमाना ॥ तुम सम भार हित नहिं जाना  
प्रति उपकार योग में नाही ॥ तेहि तेहों अनियानुम पाही ॥ ॥  
सुनि हनुमान सकुचि अस भाषा ॥ तब प्रताप मे का मृग साषा  
दो० धूरि मेरु गोपद जलधि जल पावक भय प्रीति ॥

नाथ कृपा जापर करहु विपरीते विपरीति ॥

सुनि प्रभु लीन लगाइ उर बोले सम्मत नीक ॥

मांग्यो जौन राजा तुम तात रहे सो दीक ॥

चो० परे में निज शायक बरि आवे ॥ रहि है सुधित तुम्हारे भाखे ॥  
अरु जग हित लीन नहिं बादी ॥ मिटी आस दस मुख की गादी ॥

कर्म प्रधान बिश्व में कीन्हा ॥ देव चहें निज बदला लीन्हा ॥  
 सो सब फिर रहि जाई ताता ॥ ताते अब कीजै यह वाता ॥ ॥  
 ले कपि भालु चलहु चढिल डू ॥ देखों महं के सगढ़ बडू ॥ ॥  
 कह कपि नाथ बेगिही कीजै ॥ अभिजित समुझि कूच कर दीजै  
 दो० सख दिन यह साइति सुभग जहं अपयोग न जान ॥  
 मुनत अरु भी दिवस प्रभु रवि लारि कीन पयान ॥  
 गीतिका ॐ० प्रभु कीन लडू पयान जव तब धनुष निज  
 टंकोरि हू ॥ सुनि शब्द धेर कठोर चैंके धामु विधि मुख मोरि हू ॥  
 भयो काम सकल निकाम शिर से गंग धारा बहि चली ॥ ध-  
 रि धीर हृदय बिचारि निज निज काज लागे विधि भली ॥ भ-  
 य विकल सखा दिगपाल चौदह भुवन के बासी डेर ॥ दश मो-  
 लि सभय बेहाल पुरजल गर्भ तिन के गिरि परे ॥ कपि भाल  
 रौ कहिं ताल अति विकराल गढ़ कट कट करे ॥ बदि बाद कू-  
 हहि नाद करि हरि सप्त उपरो पर परे ॥ अति पीन परम विशाल  
 कर गिरि चिटप धृत चञ्चल मंहें ॥ मुख विकट लोचन पिड्ड  
 जिन्हें विलोकि भय कालहु लहें ॥ धरु मारु भुजा उखारु  
 अरि दल डारु मागर लोपई ॥ नेहि दोय देखव ताहि जो ते-  
 हि हेत नन को को पई ॥ यहि भाँति मर कट कटक बोलत  
 चलत मरु पंगुल भये ॥ शशि भानु लोप जान न भ थल धू-  
 रि परिसर पाटि गय ॥ अति मेख रहत नि मेख मानलि स-  
 हस दृग अकुलाने हैं ॥ सुनि हाँक श्री हनुमान की पर अपन  
 काहु न जाने हू ॥ बल खात दिगाज काल कूरम शेष शिर  
 हालत मही ॥ मुख मुहुर मुहुरा मरि कर्षत गई नन करक  
 य सही ॥ श्रीराम राजत पवन पर जिमि उँदै गिरि पर रबिल  
 से ॥ सोमित्र अंगद कंध मानहुं अग्नि घर चेदा बसे ॥ कसम



सुत इमि मग बसत बिसयें दिवस हीं तट आयहू । उतरे नि-  
 रखि जल रासि फल हल फूल सबहिन खायहू ॥ इतर रह-  
 त असुर सशंक जब ते लंक गो कपि जारि कै । सुत सचिव  
 रावरा बोलि बूझ्यो मंत्र कहो विचारि कै ॥  
 चौ० मुनि घट श्रुति बोला अहं कारी ॥ कोहे विभुवन सरिस हमारी  
 जो सन्मुख सकनयन मिलार्इ ॥ अस कहि चला बिस अंगो घाई  
 तब सक्रोध बोला श्रुति काया ॥ आय मुजोहिं देहु करि दाय ॥  
 अबही छिति नर हरि बिन कहूं ॥ ओर मंत्र का बहुत उचर हूं ।  
 काम रूप बोला धन नादा ॥ मम प्रभाव जग जानत जाहा ॥  
 बिधि हरि हर बस किं हेउं जुभासू ॥ नर बन न हित कोन बिचारू  
 कुंभनि कुंभ दंभ छल कारो ॥ बोले विभुता बिदित हमारी ॥ ॥  
 रुपा दृष्टि सब देव निहारें ॥ देवत उद्यासन बेगारें ॥ ॥  
 भोजन हित कहियत तिन पाहीं ॥ हम काहु करहु नारवाहीं ॥  
 डाटत बोलि सवै नहिं एकू ॥ कपि मानुष हम गौन नैकू ॥ ॥  
 मत्सर रूप अकंपन कहई ॥ हमें गियत अस को सियल हई ॥  
 कहा उपाइ करौ अब सोई ॥ नर बानर जेहि बचै न कोई ॥ ॥  
 अपर कथा कहिये काछो भी ॥ तब भा भनत महोदर लोयी ॥  
 जो आवै अनगन्त करोगी ॥ डारों खाइ भरे महि भोगी ॥ ॥  
 तो कपि सहस लाख केहिले खे ॥ जेहें धूमि न अब हम देखे ॥  
 बोला तब दुर्मुख पारखंडी ॥ छल करि हरि आनो होउ दंडी ॥  
 जो चाह्यो सो कीन्ह्यो पाछे ॥ बढम कराहु कपट बपु काछे ॥  
 विपुल विप्र जांमैं बरि आनी ॥ भूसुर बनि कोइ सके न जानी ॥  
 जनिबो करत सकत करि काहा ॥ सो किमि जात जा सुन न नाहा  
 मुनि प्रहस्त बोला डर पाई ॥ मम मत सीतहि देहु पठाई ॥ ॥  
 नारि पाइ जो फिरि चढ़ि आवै ॥ करहु युद्ध जेहि जान न पावै ॥

यामें नहिं अधर्म की बाता ॥ बोलत बहिंसक नर घाता ॥ ॥  
 सकल वस्तु भोगन हित आवै ॥ धर्मा धर्म कहाँ कह बावै ॥ ॥  
 करत बत कही कादर केरी ॥ यह नहिं मारिहि सब नख देरी ॥  
 नीति कहत हम कादर ठहरे ॥ जाना अब तुम सोइ हो छहरे  
 दो० कह्यो सुमति मंदोदरी सुनहु कंत प्रभवात ॥

कर जामय रिपु अग्नि नृपलघु कारि गने न जात ॥  
 भुवनेश्वर सरवज्र जो गनत छोट तुम ताहि ॥  
 मोचु ये साहत सुकर यह भली बात नहिं आहि ॥  
 सुचन सचिव तव मंद मति कहत बचन मुख रसि ॥  
 नगर जरत तव सचन करलीन पराक्रम देखि ॥  
 तेहि ते श्री जानु की कहें पठइ देउ सन मानि ॥  
 नाहित दूषण बालि की होइ गति सति जानि ॥  
 नारि बचन सुनि मोह बस बोला मोहिं समान ॥  
 सबल कुटुम्बी नृप धनी परतापी को आन ॥  
 भागत सुरजहि नाम सुनि सकी को ताते जूझि ॥  
 जान्यो तेहिं हे काल बस परे न ताते सूझि ॥  
 ब्रूहि विभीषण नाइ शिरु तेहि अनुसासन पाइ ॥  
 जो चाहौ निज भद्र तो सीतहि देउ पढाइ ॥  
 तात राम नहिं नर अधिप अखिल लोक करतार ॥  
 गो द्विज सुर महि संत हित लीन मनुज अबतारा ॥  
 जयत पतीरथ ध्यान करि जिन के दर्शन दूरे ॥  
 सो प्रभु आयो अकृत अधिधन्य भागत वधूरि ॥  
 मेघनाद भर आदि जे बँडे मारत गाल ॥  
 ते कि सकव धरि धीर जब छुटि हैं बान काल ॥  
 तेहि ते सकल बेकार तजि नाउ राम पदशीश ॥



धिटे सकल अपराध जेहि बने रहैं भुजवीश ॥  
 सो० सुनि तिरछे करि अक्ष। बोला शठ जीवत इहाँ ॥  
 कात शत्रु कर पक्ष। जाउन कहि माँखो चरता ॥  
 करि विचार शिरुनाइ। आयो घर निज मातु दिग ॥  
 कही कथा सब गाइ। सुनि बोली सनमानि सो ॥  
 कहा भयो जो लात। मारी पितु सम भ्रात बड़ ॥  
 इहाँ रहैं कुशलात। वहाँ गये नहिने कु भल ॥  
 समुभि विमोहित बयन। चले उवन्दि सचिवन सहित ॥  
 आये धनपति अयन। लखि कीन्हों सनमान तिन ॥  
 कह्यो सकल निज हेतु। सुनि कुवेर सोचन लगे ॥  
 बोले तब बृय केतु। तात किहे उ अति नीक तुम ॥  
 दो० औषधि हित उपदेश बहु करत न लागत जाहि ॥  
 रुज असाधि शठ जानि केत जत सुजन जनताहि ॥  
 चौ० पर अवशर रा राम की जाह ॥ शपदि मंत्र बूझो मति काह ॥  
 सुन सुत राम बिमुख जे पानी ॥ भूले भव वन गज चढ़ि मानी ॥  
 आगे रुद्र राक्षसी देख्यो। पाछे सिंग भयानक पेर्यो ॥ ॥  
 तब तो गज वह गयो बिलाई ॥ आपु कूप गृह गिर्यो डेराई ॥  
 दो० तेहि तरता क्यो काल सम अजगर छाड़ी नाहि ॥  
 तब गहि दुर्वा अशर बल लटकि रहा तेहि माहि ॥  
 चौ० तहें सुंदरि मधुल गिनिहारी ॥ प्रमुदित हूँ तेहि गहिसि अनारी ॥  
 सहित कुदुम्ब उड़ी सब मारवी ॥ लपटि गई पग कटि मुख औखी ॥  
 परय कबूँह किहिसि मधुपाना ॥ सो सुख मूढ परम सुख माना ॥  
 श्याम सेत बिबि मूषक खूवा ॥ लागे निशि दिन काटन दूबा ॥  
 चुकि गेज बेगिराह हरई ॥ तुरतै अजगर लीन चबाई ॥ ॥  
 यह गति सब जीवन की जानौ ॥ बिन हरि शरण न कहैं ठिकानौ ॥

दो० रामशरणाविन काल तेवचा चहै भजि ज्ञान॥  
 सोशठ अहि मय गरुड तजि हादुर पक्ष लुकान॥  
 राम विमुख जग जीव जेत पत ताप त्रेमाहिं॥  
 तेहि दुख नाशन हित यत्न बढ धुति सोइ मि आहिं॥  
 जिमिहि सुहित पितुरोग गह नीर ख हित नाव॥  
 पालत पावत चढत परचिर कर होत अभाव॥  
 याते सौंचे सुचि सुख दशरणा पालखु वीर॥  
 केवल ताके शरन चिन मिटे न भव भय भीर॥

चौ० सुनि सुख पाइ सिधे सिरु नाया॥ मंजिन सहित सभोद सिधावा  
 अंतह करणा सहित जिमि जीवा॥ हरि हित के दुख ससुं भ अतीवा  
 करत मनोरथ मग इमि जाहीं॥ शंभु मिलन गुरा अति हरषाहीं  
 एही भाग्य मम उदे अपारा॥ कौन कौन अस शुभ आचारा  
 साधु विप्र करका अस दीन्हा॥ कौन अपूरवत पहम कीन्हा॥  
 जो सर्व परशु सुख अथना॥ देखि हों जाइ आजु भरि नयना  
 निज जन हित श्री वपु प्रगटाय॥ धरा भार भंजन महि आये॥  
 शोभा सिंधु दरश जब पैं हों॥ तब का परमानन्दन लै हों॥॥  
 जे पद पदुम भजें सब सत्ता॥ विधि हरि हरसन कादि अनन्ता  
 जिनके चिन्ह धरा दुख हारी॥ रजकन परसित री अरवि नारी  
 जा सुवारि भव निज सिरधारा॥ जेहिं तारे जग अधम अपारा  
 जिन पद पीठ भरत मन रंजा॥ धरि हों में शिरुतिन पद कंजा  
 जेहिं कर कमल असुख बहु मोरा॥ भर्म साधु धुति रसरा हारे॥  
 जेहिं कर गहि भंज्यो भव चाया॥ परसत मिटत काल परि ताया॥  
 करत प्रणाम नाथ मोहिं जानी॥ मम मस्तक धरि हें सोइ पानी॥  
 पुछि हें जब तब कहि हों नामा॥ नाथ होब मैं तोर गुलामा॥॥  
 चिन चित निज करि हों भव काई॥ छुडि कपट हठ मान बड़ाई॥



यहिरव पट उतरे जो येहों ॥ बची बचाई जूबनि रेवेंहों ॥ ॥ ॥  
 मुनिलेहे अपनाइ कृपाला ॥ तब होयहों सब भोति निहाला  
 निस दिन देखिहों प्रभु की भोंकी ॥ तब कारही करण को बाकी  
 मरतो जाइ कहों बिललाई ॥ यह गति प्रभु कृपा हम पाई ॥  
 निज दिस देखि शंक मन धारे ॥ हरये जब प्रभु रीति बिचारे ॥

दो० यहि विधिकरत मनोरथ आये जहँ हरि सेन ॥  
 करि विचार न भदूरिते बोलै गदगद बैन ॥  
 जय सरबज कृतज्ञ प्रभु कृपा सिंधु गुन गाथ ॥  
 शरणा भये पाले विपुल अब मोहिं पालहु नाथ ॥  
 नाम विभीषण असुर कुल रावण रिपु कर भात ॥  
 अबरा सुयस मुनि शरणा तव प्रायो लेनि जगत् ॥

चौ० मुनि प्रभु बोलि सचिव सब लीन ॥ वृंभ्यों यहि का चाहिय कीन ॥  
 कहै कपि पति रिपु सो दरयेहू ॥ भेद लेन आवागहि लेहू ॥  
 कह अंगद आरिवर बध करना ॥ अबहीं क्यों नहत तहे सरना  
 जामवन्त कह रिपु कर भाता ॥ अब हम ते यहिते कस नाता ॥  
 सीय हरी तब क्यों नहिं आवा ॥ देहु जान मुख प्रनत सुनावा ॥  
 कह नल दूत पठे मत लीजै ॥ ऐसेहि कैसे विदा करीजै ॥ ॥  
 उत्तम होइ तो राखहु यासा ॥ नाहित हत तब नील प्रकासा ॥  
 सांचेहु यह शरणागत आवा ॥ राखिय देव मोहि प्रसभावा ॥  
 सभय तजे अघ लाग प्रनन्ता ॥ होइ जो मात पिता कुल हन्ता ॥  
 कह हनुमन्त सुनहु रघुराया ॥ राक्षस हैं शरणा जो आया ॥  
 बलि प्रह्लाद सुकंठ यथाधू ॥ जानहु तुम तिन सम यह साधू ॥  
 क्लीन प्रभु तव मन मुख होई ॥ फिरे सभित द्वार ते कोई ॥ ॥  
 बहुरि बात कहु कहन न पाई ॥ बीच विभीषण गिरा सुनाई ॥  
 दो० अब तब आवत दीन के हरत रह्यो दुख भार ॥

अस अभागनइ मोरजोहि सुरतह करत विचार॥

हीनबंधु सुनि हीनके वचन उठे अकुलाप॥

कह्यो लयसा हनुमान ते अबही लावहु जाय॥

सो० लाये करि सनमान। पूतबदी भूता दिवस॥

प्रभु कुविदेखि जुड़ान। कीनदंडवतवाहिकहि॥

चौ० प्रभु उगड़ भेदे उरलाई॥ बड़े निज समीप बैठाई॥ ॥ ॥

पूछी कुशल कह्यो लंकेशा॥ दुष्ट संग समक कुन कलेशा॥

बोले नाइ विभीषणा भाला॥ सुमिरन जेतब करत कपाला॥

तिन्हें कुशल मंगल कल्याण॥ हेत विरंचि विनै करि नाना॥

जो मूरति मुनिजन मनुमारी॥ कराहें ध्यान नहिं सकै निहारी॥

तेहि भारि अंक मिल्यो में आजू॥ याहिते अधिक कवन सुख साजू॥

कह प्रभु सत्य कह्यो में तोही॥ दास सरित प्रिय अपरन मोही॥

जिनके हों हित अनत न नेहा॥ तिनहित आइ धरो में देहा॥

अस कहि जलुसागर करलीन्हा॥ तिलकु विभीषणा के शिर कीन्हा॥

सुनि सुभाव लखि कपि सब हरये॥ जय जय कहि प्रसून सुरवरये॥

दो० जो पुरकलह कलेश करि रावरा शिव पहं लीन॥

सो प्रभु कुदिन विभीषणा हितरा आश्रम सब दीन॥

ऐसे प्रभु बिसारि जे करत आनकी आस॥

तेशर धन हित धनि हित जि भजत दास को दास॥

चंद्रोदय परबोध मत भूल सारथक गाथ॥

वरन्यो सुंदर काराड शुभ सुख प्रद जनर बुनाथ॥

इति श्री विश्वामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दास

राम सनेही रूत सुंदर काराड से पूरी नाथ त्रयो

विंशोऽध्यायः २३॥



श्रीगणेशायनमः

# अथविश्रामसागर

लङ्काकाराडशरम्भः

दो० सुगिरिराजसिय सन्त गुरु गणादगिग सुखदनि॥  
वरगों के किल कहनि कछु अग्नि बेस मत आनि॥  
प्रात पंचमी दिवस प्रभु पूछा सचिव बोलाइ॥  
केहि विधि उवरिय उदाधि सुनि बोले निशचराइ॥  
नाथ आपु कर एक सर सोखे सागर कोटि॥  
तदपि नीति असि सिंधु तें मांगह सागर बोदि॥  
कह्यो तात भल होइ हित जो कोइ देव सहाइ॥  
लखरा बृहिसर मारिये श्वेत सो को आइ॥  
बोले प्रभु नहि रुचत मोहि साधु अवज्ञातात॥  
तोहि ते यह कारे लीजिये पुनि बहान वबात॥

चौ० अस कहि दर्भ डासि दांघतीरा॥ बेंठे करि प्रतामर धुवीरा॥  
बिन वत तीनि दिवस चलि गयऊ॥ तव प्रभु को पिशरा सन लयऊ॥  
अग्नि बान संधान्यो जवहीं॥ लार्यो जल वारी निधित बहीं॥  
विप्र रूप धरि हरि दिग आवा॥ रतन भेंट दे पद शिरु नावा॥  
नाथ सूर्य सब तुहरी अहई॥ जैहि जस कीन्ह्यो सो तसरुई॥  
अब जस आग सु होइ तुहारा॥ सोई करौ भें परम उहारा॥॥  
कह्यो सुखाइ जाउ यह बाबा॥ मरि जैहें जल जीव अपारा॥॥  
कृपा सिंधु बोलें सताता॥ कपि दल तरे करौ सोइ बाता॥॥  
तेहित ब कहा नील नल कीया॥ तिन परसे जल तरत गिरिणा॥

आयसुदेहरचै ते सेतू ॥ महं सहायकरव तव हेतू ॥ ॥ ॥  
 अपस कहि नौ नौ दिन सो गयऊ ॥ परा रंभ दशमी ते भयऊ ॥  
 चहुं दिशि शैल देहि कपि प्राणी ॥ सो नल नील लेहि निज पानी  
 रचहिं सेतु अति सुदृढ बनई ॥ शिव स्वस्व थाप्यो रचुराई ।  
 कह्यो महातम चिरजग हेतू ॥ तेर सि दिवस सिद्ध भा सेतू ॥  
 बिस्तीरा दश योजन केरा ॥ दीरघ को स चारि सत हेरा ॥ ॥  
 प्रभु नल नील हि बहुत सगहा ॥ पूजी भुजा सहित उत्त साहा ॥  
 प्रात चतुर्दश लाग उत्तारा ॥ प्रभु छवि देखत जीव अपारा ॥  
 राजत हनो मान के कांधे ॥ लछिमन बालित नै के रांधे ॥  
 दो० विपुल चले जल चरणि कपि विपुल सेतु असमान ॥  
 जैसे भव निधि तरा हित कर्म उपासन ज्ञान ॥

चौ० इमि उतरत निश दिन स्कंधारा ॥ द्वितीया दिवस भये सब पारा  
 पाइ राजा निकट फल खाये ॥ तृतीया दिन सुवेल गिरि आये  
 कोष्टा टाल कगी पुर श्रृंगा ॥ दशमी तक उत्तर पल बंगा ॥ ॥  
 हरि दिन रावरा दूत पठाये ॥ दल देखन सुक सारगा आये ॥  
 चरचि चपल गहि मारगालागे ॥ राम शपथ दीन्हा तब त्यागे  
 आये तब दशमुख के तीरा ॥ बोलाल खि कहु कपि दल भीरा  
 काल बिबस आये यहि पारा ॥ होइ हैं एक दिवस कर चारा ।  
 पुनिकहु रहै विभीषणा भीरू ॥ जानि बूझि भाजब कर कीरू  
 बहुरि भाखु तपसिन की बाता ॥ जिन्हें निकारि दीनि पितु माता  
 मुनि बोलि शुक्र सारन ऐसे ॥ सुनो कृपा करि बूछ्यो जैसे ॥  
 कुराडु लिये सहस लाख कर कोटि एक सहस कोटि  
 कर शंकु । सहस शंकु कर अदबुद सहस दबुद बिर्दकु ॥ स-  
 हस दबुद बिर्दकु सहस कर पदुम प्रमाना । सो अष्टा दश-  
 मुने संग युत्य बलवाना ॥ बलवाना कपि जाल मय काल-



सरिस हम लखि गहस । कहत मिलावन लंक तव पंख  
माहि ऐसे सहस ॥

दो० आयसु मिलत न पिलत पुरभये विभीषणा राज ॥

तिन ते समत वृषिके करत आपहु काज ॥

सुनि बोला होम वादि क्यों करे बड़ाई भूरि ॥

जासु विभीषणा से सचिव परी कि तिव ते पूरि ॥

चौ० तब शुरु कह कछु दूर न भारी ॥ चदि अट्टालक लेहु निहारी  
साहित सुमुख भट चरते हिं बारा ॥ चदि देखी कपि कटक अषारा  
शुक सारन कहि नाम बताये ॥ अंग दाहिजे भट संग आये ॥

दो० वै अंगद हनुमान वै वै सुकराठ नल नीला ॥

वै सुखेन वै च्छ पति वै दीध सुख सन शीला ॥

जदा मुकुट मुनि पद धरे धनुर्वाणा नूणीर ॥

अस्थित हरी मृग चर्म पर सेवत पद बहु बीर ॥

गौर श्याम छवि धाम वै सहित लक्ष्मि मगारा म ॥

बेठि विभीषणा पुरह लगि कीन्हि सिमन परनाम ॥

ओरो कपि दल दरसि के बोला विहै सिनिसंघ ॥

देख्यो कोनु क काल कर दिहि सिपि पिलकन पंख ॥

इत प्रभु कुच समेत तकि मास्यो शरयक सङ्ग ॥

मुकुट प्रसून गिराइ पुनि प्रविष्टा आइ निषङ्ग ॥

चौ० देखि अचम्भि रहे सब लोग ॥ कोइ कहै प्रथम भयो अपयोग ॥

बोला यामि अस गुरा काह ॥ सिर हूख से भट करे उमाहा ॥ ॥

तेहि ते शयन करहु सब जाई ॥ चलि भे सकल राजाय सु पाई ॥

तव प्रय सुता कह्यो भय भीता ॥ हे पति काल भयो विपरीता ॥

जे तव सम्मुख सके न बोली ॥ ते अब नुम ते कात डोली ॥ ॥

जेहिं पुर सके विष्णु नहिं आई ॥ ताहि तुच्छ कपि गयो जराई ॥ ॥

जेहि जगनांघसके नहिं कोई ॥ तांमें सेनु कि गिरि कर होई ॥  
 जामु नाम सुनिसुरभिजि जावै ॥ तापर कीश असन चदि आवै ॥  
 जो सोहर निजु करात बिलासा ॥ सो कि जाइ फिरी शचुन पासा ॥  
 तुमहूँ अस हठ कबहुँ न दानी ॥ तेहिं ते परत वाम विधि जानी ॥  
 अवते परि हरी हठ सठ तारै ॥ करहु काम किन होइ भलाई ॥  
 जेहिं प्रभु मधु कैटभ संहारा ॥ हिरनाकुस हिरणासहि मारा ॥  
 जेहिं खरादि बहु भट बध कीन्हें ॥ बालि शरा एक बाराहि लीन्हें ॥  
 सोइ प्रभु सेतु समुद्र में बांधा ॥ बीसहु नयन होहिं जनि आंधा ॥  
 मोहिं समेत जगदम्ब हिलै के ॥ पायन परहु राम कहें दै के ॥ ॥  
 प्रगात पाल प्रभु रुपा अगाधू ॥ तुरत हि क्षमि है तव अपराधू ॥  
 बोला सत्य बचन तव प्यारी ॥ परइ क बात न जानि तिहारी ॥ ॥  
 कुराडु लिग्या शिव निर्माल्य शीश ये रघुपति लायक-  
 नाहिं ॥ तेहि ते इन्हें निवारि हों समर रसांक माहि ॥ समर रसा-  
 के माहिं प्रथम बल तिन्हें देखै हों ॥ प्रभु आये जेहि हेत तस्य-  
 मन साध मिटै हों ॥ साध मिटै हों तस्यमें आपन काइ शरीर भव ॥ मिलि  
 हों निज नाथेव सो जस गैहें सन कादि शिव ॥

दो० चौंसठियुग जिन बाँह बल कियो रोक टकराज ॥  
 तिन्हें अकूत अपरिपद परो धृग काहर कर काज ॥

चौ० मम बस सकल जीव जग जेता ॥ ते यहि भांति डरत केहि हेता ॥  
 जामु विनाश निकट जब आवै ॥ तेहि विपरीति क्रिया अपति भोवे ॥  
 अस कहि सो सोई चुप साधी ॥ जागत निशि बीती सोइ आधी ॥  
 प्रात काल उदिस भासि धावा ॥ आपन बल सब भटन सुनावा ॥  
 सुनि सठ सचिव सेन पति हरये ॥ लगे कहन काहर जन करये ॥  
 इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री गुरुनाथदास रामस-  
 नेही कृत श्री राम सुवेल आगमनो नाम चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥



दो० सुमिरि राम सिपकन गुरु गणपति गमुख दानि॥  
 वरसों मानस मन कछु क को किल काव्य बखानि॥  
 दश मुख दश हृदिसि दरसि हो न्ह दल पति पोरि॥  
 आपु जान की पास है आयो तेहि थल फेरि॥

चौ० उहो माध परिवादिन प्राता॥ अंगद ते बोले सुर जाता ॥  
 बालित नै बल बुद्धि विशाला॥ लंकहि जाहु जहो दश भाला  
 हित उपदेश दिह्यो नुम भूमी॥ नहि मानै तौ आयो धूमी ॥ ॥  
 भले नाथ कहि माधनवाई॥ चले राखि उर प्रभु प्रभु तारि ॥ ॥  
 पुर प्रविसत सब दान रोका॥ सुनियुत राजसवन कहें ठोंका॥  
 रावरा सुत विय मुख तेहि दीशा॥ बोला बदि तैं काकर कीशा॥  
 राम केर की जाकी भामा॥ हरि लायो पितु अपने धामा ॥ ॥  
 सोई राम जिनके लघु आना॥ तब फूफूकास नियाला ॥ ॥ ॥  
 इतना सुनि तेहि पाँव उठारा॥ अंगद पकरि भीम है मारा ॥ ॥  
 होखि असुर सद कै तेहि काला॥ एक एक ते कहै न हाला ॥  
 पुरजन चाहि चट पट देखे हो॥ बूके बिन बताइ मग देखीं ॥ ॥  
 मन में कहें दृष्टान्त नीचू॥ सिध का आनी सब की मीचू॥  
 आवा प्रथम नगर जेहि जारा॥ यह धों काह करे करतारा ॥ ॥  
 जहें अब निमहि न मची लराई॥ तेहि पुर बसि पुनि कोनि भलाई  
 आवत कपि रावरा सुनि पावा॥ दूत पढ़े निज सभा बोलावा ॥  
 दश मुख बेंदि दीख कपि आई॥ सहित हंस जनु गज गिरि आई ॥  
 सुर मुनि असुर नाग गंधर्वा॥ बितवत तेहि भूकुटी दिशि सर्वा ॥  
 हरि लखि उठे सकल इक दारा॥ बोला तवरि स करि प्रति हारा ॥  
 छुप्यो पढ़े न कोनि विधि बिनै शंभु कत दारान देवै॥ जीव करे  
 कत सोर धर्म क्यों चराचर सेवै॥ रहे न दूर दिनेश देव ऋषि  
 स्वर लय गावै॥ पश्यत सहित कुबेर बर करि क्यों नित आवै॥

चंदन बोलि मंद मति मातलि सभान यह अहे । वैठि जाहु  
 ग बैठि सब तब रावणा कपिते कहै ॥ रे बानर तू कोन दूत ह-  
 म रख्यति केरे । इन आयो केहि हेत अहं रक्षा हित तेरे ॥  
 कोन विपति सब मोहिं शत्रु शिर पर प्रभु आयो । ईश कोपि  
 रघुनाथ जासु तुम तिय हरि ल्याये ॥ कोन कहत हनुमान  
 को जेहि तेरी लंका रही ॥ करुणा सिंधु सर्वज्ञ सो सुनि-  
 व्याकुल है यों कही ॥ जाय जाय कोइ जाय धाय रावणो सु-  
 नावे । जेहि सिय देहि बताइ रंक कर जिउ बचि जावे ॥ सु-  
 नि बोले सब सुभट नाथ जो हम चलि जेहें । उजुर करी क-  
 रु शत्रु ताहि बिन बधे न रेंहें ॥ तब प्रभु नहिं पठ्यो तिनहें ॥  
 मोहिं कह्यो लखि साधु सुनि । भेरिहु मन आइ दया निज  
 पितु कर तोहि मित्र पुनि ॥ ताते आयों तात बात अब मा-  
 नहुं मेरी । जाते तब भल होइ बंचे सब रें अत तेरी ॥ श्रीमं-  
 द महिष सुभाव जान अथवा बिन जानेहुं । हरि आन्यो ज-  
 गदब्ध आदि भल यहै न जानेहुं ॥ सो जस भा तस भा अज-  
 हुं सीतें लैं निज नारि पुत । जाहु शरणा श्री राम के मिटिहें ।  
 सब अपराध उत ॥ रे बानर रेहु चुप्य बादि बक वा द-  
 न ठानै ॥ विश्व विदित ते मोर अभे पर भाव न जानै । सुर-  
 नर मुनि पणु नाग जीति सब निज बस कीन्हों । शिवे दिखों  
 सिर स्वकर गिरिहि कंदुक इव लोन्हों ॥ अस में पुनि धा-  
 ता सुभट जेहि देखत दुनिया दुरे । मेघनाद अस सुवन जो-  
 महि आन्यो सुर पति धुरे ॥ कह अंगद सो सत्य अहे ऐसे ब-  
 ल तोरा । पर नहिं राखव साथ सिंह हित जमि गज जोरा ॥  
 जे जे भे प्रति कूल परी नहिं किसी कि पूरी । सब नारुका सुवा-  
 हु मिले खर दूषणा धूरी । विश्व सुभट बल शंभु धनु हरि-



बेक्यों तेहि धरि दलो। ताको मिलि तजि सान मद् जो चाहै  
 आयन भलो॥ रेभर कट मम सारिस अहे को सुभट अना-  
 रो। सो कहू को तब पिता बालि कपि नाथ विचारी॥ रहार-  
 हा कपिरहा भले कहू हैं सो नीके। कछु दिन में तहें जाइ  
 कुशल पूछ्यो निज श्रीके। राम विमुख कर जो न फल हो-  
 त सो सब नीके पदी। जावि बूझि बातें गदत रदत मो-  
 त तब शिर चदी॥

दो० मरम वचन युवराज के सुनि रावणारिसों कि॥

बोला सुख मुर भेद हित प्रथम सुकरम हियें कि॥

रुप्यो हे अंगद बल वन्त बालि सुत तोही आही। तब स-  
 म जाके पुत्र तासु ऐसी गति चाही॥ जन मत क्यों नहिं मख्यो  
 बालिकर नाम धरायो। जेहि डार्यो पितु मारि तासु शठ दू-  
 त कहायौ॥ अवत मम दल ले सकल कपि तुव करु निज  
 राज चलि। हनिरन भल सु सुशत्रु ये आह आह दिशि दे-  
 दू बलि॥ कह अंगद रे नीच मीच बस मति बादि बोलै। म-  
 म मन ठानत भेद पवन ते गिरि कहें डोलै॥ जासु भृत्य ब्र-  
 ह्मादि तासु हम हें करि दाशा॥ बोरि दीन कुल कहसि अह-  
 क्षितै निशि चरखाशा॥ तेहि कछु करत विचार नहिं सो फ-  
 ल पैहें सपादि बरु। जावत आवत अवधि नहिं तावत भाव-  
 त सोइ करु॥ रेरे कपि जग माहिं मोहिं को हय फल दाई।  
 लोक पाल यम काल नमत मोको नित आई॥ चहों जाहि  
 नृप करों चहों तेहि रंक बनावों। उजुर न करता कोइ बहुत  
 का तोहि सुनावों॥ कह अंगद तैं अजित अस सो रावण औ-  
 रें दियो। जदर सहस भुज बालि बलि अवध नृपन जेहि दुख  
 दियो॥ मुनि अंगद के वचन मूढ़ लज्जित हें बोला। बाल पने

की बात गात तब निरवल होला ॥ कौशल नृप सब जीनि  
 प्रथम अपने बश काह्यो ॥ जब ते भये दलीप छाड़ि तब ते क-  
 र दीह्यो ॥ ताहि तजे कछु घटि गयो भयो नमन में एक ति-  
 ला ॥ विदित बरोहु शिर शिवहि शिव गिरि करि धार्यो ॥ यथा  
 शिल ॥ कह अंगद का भयो शीश जो निज कर काटे ॥ वाजी  
 गर बहु करे बैठि कौडी हित हारे ॥ कहा भयो गिरिलयो भालु  
 कपि धारे डोलै ॥ तहों न पायो सुयशु आजु रोउना सब बोलै ॥  
 कहा भयो सब जग जयो भयो न जो रघुनाथ जन ॥ तो सब जा-  
 नो स्वप्न सम अपनि रवनि सुत धाम धन ॥ कह रावण हंसि-  
 राम दास तुमहीं जो भयऊ ॥ दिहिनि काल मुख आइ लाभया-  
 में काल यऊ ॥ लीन लोक परलोक शोक सब तन के नाशे ॥ मि-  
 लिहैं तो तब बियत जियत जब जाव इहां से ॥ तहें ऊँतव सुग्री-  
 व रिपु तासु विभीषणा केर में ॥ अपर कीश खेहें असुर ऐहें तप-  
 सी धर में ॥ कह अंगद रे चोर बालि जिन दूक सर मारा ॥ भृगु-  
 पति कर बल दर्प सर्प लीलै संहारा ॥ खर दूषणा त्रिशिरादि-  
 दनुज यदि बचि न भागे ॥ तो रिचाप सिय बरी सकल भूपन के  
 आगे ॥ यस्य अनुगइ कलंक दहि चतुर अप्स तब भट दले ॥  
 तिनसों तै लरिहै कहा गाल मारि ले चहु भले ॥ कह रावण  
 जो अहे सबल अपस स्वामि तुमारा ॥ तो पठवत केहि हेत बसी-  
 दी बारै बारा ॥ करहि आइ कलि कर्म धर्म जो अघिन कोहै ॥  
 रिपु ते दानत शीति लाज नहिं लागत जोहै ॥ मन कद राइ तौ-  
 जाइ फिरि भागे को नहिं हम हनै ॥ चदि आवै जो मौत बस  
 सकल कोन पन की बने ॥

दो० प्राणि समुद्र बांधे कहा अभें पोर भुज वीश ॥  
 रहै न नाघनहार कोउ सुनि बोल्यो पुनि कीश ॥



**कुराडलिया** कारणा ज्ञान अज्ञान का बल निरबल कर  
 र अन्त कारज ते खुलि जात जिमि नारि कपट सुत पंथ ॥  
 नारि कपट सुत पंथ तुम्हें हम तबहीं जान्यों । जब धरि ता-  
 पस रूप विपिनि सिय ते छल दान्यो ॥ दान्यो लेखा गृह्य  
 गयो धनु रेखा पारगा ॥ आयों में न बसोठ राम पठयो यहि कारणा ॥  
**छुपे** बोले कपि सब आजु चलो प्रभु शत्रुहि मारी । कह  
 हरि तोहि बध किहे कौन होई यश भारी ॥ जिमि मृग पति ह-  
 ति भेष शेष सर खप शिर लीन्हें । तिमिल घुता लघु दान  
 ज्ञान मूरुख कहें दीन्हें ॥ यद्यपि यह जानत तदपि छुत्रि  
 जाति कर रोष अपति ॥ ताते अबहूँ दीन है सीते ले मिलु  
 मन्द मति ॥ कह रावरा नृप सुवन संग सब कीश लचारा ।  
 प्रथमैं आवा एक भूँठ ही जाय पुकारा हमहीं दीन छुड़ा  
 भीर में मर्यो अपक्ष सुत । लागि गई गृह आगि कहिसि मैं  
 कीन काम उत्त ॥ तैसे तोह नरन की करत बड़ाई कूर गति ॥  
 मोको जानत छोट करि विश्व विदित जो सूर सति ॥ कह अ-  
 गद मति मन्द दन्द रत बोल्नु विचारी । कल्प बिटप सम वि-  
 टप सकल सीता सम नारी ॥ चिन्ता मरिण पाखारा सरित  
 शर खान समाना ॥ अभै दान विज्ञान सरिस लौकिक कर  
 ज्ञाना ॥ यगली बातें एकनि तब अस मन होत हमार ह-  
 रि । तोहि सहित सब लंक लै वीरों उदधि मझार परि ॥  
**कुराडलिया** शोचुन शालत साधु फिरि राज करी के-  
 हि भौन । मोहिं जियत किमि होइ नृप तोहि जियन कहें कौ-  
 न ॥ तोहि जियत कहें कौन काम बस अजसी मृदा । जीव-  
 त मृतक समान मरुज हरि विमुखति बूदा ॥ तव शोणित  
 के मृयित पुनिरुपति के नाराच । तोहि ते राखत रोकि

रिस नाहित बन त्यों सांच ॥

कृप्ये कह रावरा जो होत हिरस यहि विधि बलतेरे । तो-  
कत कर त्यों आइ बेराई पितु अपरि कोरे ॥ करत मानु संग  
मोग सूर सुत सो तप जानै । मरत नशठ बिष खाइ बात ह-  
मति बाढ़ि दानै ॥ नर बन रन की कौन गति तीनि लोक मि-  
लि जो बदै । करौ लख रसन मुख तभू कभू न पग पीछे प-  
दै ॥ तब अंगद करि कोप पटक होइ भुज माहि दीन्ह । गि-  
रा अधर मुख मुद मुकुट कर में श्रुति लीन्ह ॥ प्रेरे प्रभु के पा-  
स धरे पवन जमहि आगे । भूरि भानु सम तेज तरकि कपि-  
बखन लागे ॥ राम बिभीषणा के शिरसि भूषित किये सबो-  
रि तित । देखि देव बोले विमल जय जानकि पति प्रसात हि-  
त ॥ तब तम चर पति तम कि कह्यो धरि धरि हरि खाइ । मि-  
लि सारो होइ बंधु बंक कपि कलमत जाइ ॥ अब तक नीति  
बिचारि बचन सुनिरोसन कीन्हा । आखिर चढ़्यो कपार अ-  
धिक अधमैं सुख दीन्हा ॥ जिन बल बाहत बलीक बलति-  
न के अहैं न अलपतन । पर तिय पर धन पर अहित क-  
रत डरत जो छाम छल ॥

कुराहु स्त्रिया तब अंगद कह चरा मम जो कोइ देखै  
ठारि । फिरें राम निज धाम में जाहुं जान किहि हारि ॥ जाहुं  
जान की हारि सुनत घन नादिक योधा । लगे उठावन भूरि  
भूरि बल करि करि क्रोधा ॥ उगमगात माहि सुतल नभ  
उछर सिंधु सुर विकल सब । बालि बलीके सुवन कर प-  
ग नहिं हाल्यो नेक तब ॥

कृप्ये लख रावरा हिय हारि आपु उरि कपिहि प्रचाख्यो ॥  
चरा कुवत तोहि देखि बचन युवराज उचाख्यो ॥ मम पद



परेन ठीक गँहे किन हरि पद जाई । सुनि सिंहासन सपदि  
बेठ मन माहिं लजाई ॥ कहिनि कौन पननेइ से क्यो नहि  
डारन खाइ खर । हैसि कपि कुन पगहाइ निज कहि कै च-  
ल्यो उडाइ अर ॥

सो० दीरघ एक प्रमाद पर पद परसत पतेहु सोउ ॥  
बहुरि चल्यो करि नाइ प्रभु पद नायो आइ शिर ॥

दो० लाख बोले रघुनाथ हैसितात किहेउ भल काम ॥  
कह अंगद मय मान नहि तव प्रभाव सब राम ॥

इति श्री विश्रामसागरसबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ  
दास राम सनेहो रुत अंगद रावण सम्वाद व-  
र्णनो नाम पंचविंशोऽध्यायः ॥

दो० सुमिरिराम हिय सल्ल गुरु गणप गिरा सुख दानि ॥  
बरगो मानस मत कहु क को किल कहनि बखानि ॥  
इहो दशानन अभै निशि निवसित उर धार ॥  
लागे निरखन निरत की कौतुक करें अपार ॥  
राम लखरा कपि भालु सब है से समुक्ति अभिमान ॥  
साहेन संके सुग्रीव दिन पूरे कीन पयान ॥  
दश योजन कर दीच तहें पहुँचे एक कुलौच ॥  
सिंहासत ते अवनि पर पद को मारित माच ॥  
गिरा नबीचें सभरि कै भिराऊ अध करि सोउ ॥  
कर पद सुष्टिक पेंच फिर निज निज मारै दोउ ॥  
यहि विधि बाजे नाम भरियर कोउ सकान हारि ॥  
लाग्यो माया करण तब कपि पति चलै विचारि ॥

चौ० रहौ न प्रभु सुग्रीव देखा ॥ भये पाद बस सोधि विशेरवा ॥  
इतने में सोयहुँ चो आई ॥ बूझते सब बात जनाई ॥ ॥ ॥

कह शुभु अस अधिपे नहिं चाहिं ॥ सो कहु होत रहत गहि काही  
 हम सिय लय का करत नु ताता ॥ दिते नु त्यागि तुरत निज गाता  
 सुनि नासत सब कुटुम्ब हमारा ॥ नाथ कृपा को भारन हारा ॥  
 अस कहि पाद रजाय सु सोये ॥ उवि प्रभात पुनि हरि पद जोये  
 दुनिया दिन करि कटक बिचारा ॥ लंका धेरी चारिउ द्वारा ॥  
 पूरव दिशि नल नील विराजा ॥ दक्षिण सेन सहित युवराजा  
 पश्चिम पवन पुत्र बल धामा ॥ उत्तर रहे अनुज युतरामा ॥ ॥  
 मध्य मुकंद मोह संग योधा ॥ चहुं दिशि लत विभीषण सोधा  
 यहि बिधि पुरनि रोध सुनि रावणा ॥ चहुं दिशि निज भट लग पठाव  
 प्राची दिशा प्रहस्त परावा ॥ जाम्बा द्वार महोदर आवा ॥  
 मेघनाद दिसि गयो प्रतीचा ॥ रहा दशानन द्वार उदीचा ॥ ॥  
 विरूपाक्ष तिष्ठामधि देशा ॥ नारंतक चहुं वोर प्रवेशा ॥ ॥  
 यहि बिधि राखि सब न ते बोला ॥ गहि गहि खाउ भालु कपिलोला  
 दौ० भले नाथ कहि हाथ गहि परसु भिंड अंसिसांग ॥  
 तोमर मुगदर मूल सब धायें दै बांग ॥ ॥  
 बाजे बाजन युद्ध के मुनि भट गनै न बोध ॥  
 आवत तम चर चाहि कै धायें कपिकरि क्रोध ॥

**गीतिका छं०** करि क्रोध धायें भालु कपिग-  
 हि बिटप परवत अन गने । दौउ वोर ते लागे चला  
 वन अस्त्र शस्त्रादिक धने ॥ कोउ गिरत कोउ उ-  
 ठि मिरत कोउ पुर फिरत कोउ लल कारई ॥ को  
 उदुरत कोउ भट मुरत नहिं कोउ हटत कोउ चदि-  
 मारई ॥ एक साथ सब रघुनाथ बल पल बंग गढ़-  
 पर चदि गये । बिकलाइ असुर निकाय मर्दे अपर  
 लखि भागत भये ॥ पुर पुरेउ हाहाकार विपुल कुमार बनिता



रोवहीं। दुरिदेहि गारी दशमुखै अघजासु हम दुरद जोवहीं॥ दि-  
 शिशीशनिजदल बिचल लखि सबते कहिय गोहरादेहै।  
 घर आइ है जो भागियो मम हाथ मारा जाइ है॥ सुनि सु-  
 भट मानि गलानि धूमै जानिबध दोउ वोरते। करियुद्धकी-  
 न्है चासित बानर भागि चलै गद घोरते॥ एक एक दिनि-  
 सुत दारि कूंदे ताहि नीचे राखि कै। बिन प्राणा करि हरिबो-  
 र बोले बचे अपारति भारिबैके॥ हनुमान पश्चिम वोर सुनि  
 घननाद के पगमारेहू॥ रथ सूत हति तेहि विकल करि पु-  
 निलंक आइ प्रचारहू॥ इत कूदि आयो बालि बच मिलि  
 उभे रावरा गृह गये। लागे दहावन भौन जहं तहं राम गु-  
 रा गावत भये॥ कपि खेल करि उर बाइ राम कहाइ तिन्है  
 निबारेहू। फाँदे बहुरि रिपु सयन महं अगगिरात निशा-  
 चर सारेहू॥ खरभरि परी सब शाम तमचर बाभ शिर  
 धुनियो कहें। उत पात के घर कीश दोऊ आजु घर आयो  
 अपहैं॥ केतनेक खग गाहि पटक रावरा निकट दीन चला-  
 दैके। केतने भिके प्रभु पास गति तेहि देत राम बजाइ के॥  
 निशि जानि आयो नाथ पहें दोउ देखि प्रभु बिन श्रम को।  
 हनुमान अंगद गये थल सुनि भानु मर्कट सब फिरे॥ अनि-  
 रोष पाइ प्रदोष बल धाये असुर जय बोलि कै। कपि देखि  
 भिरे प्रचारि पुनि सब चलै निश्चय डोलि कै॥ निजहारि ल-  
 खि अपतिकाय आदिक अपनिप निज माया रनी। भरे नि-  
 मिरि में अधियार भूकन हाथ भागी कपि अनी॥ चहुं वा-  
 र ते मग मिलत नहि कच रुंधर बरयत बालु॥ लखि  
 राम माख्यो बिसिय एक मिटि गई माया मालुका॥ कपि  
 रुपेखि प्रतिप पल्लटे बहुरि रिपु भागत भये। तब शनि

द्वाये राम यहें एग परत सबके दुख गये ॥ यहि भांति बा-  
 सर आठ निज निज घाट कपि कौन पल्लो । तब कही गलत  
 साचिव ते कस करिय इत बहु भट भरे ॥ सुनि भाल बंत सु-  
 मंत्र बोलेहु आपु जब ते सिय हरी । तब ते कियो बहु बात  
 एकहु तात नहिं पूरी परी ॥ अब ते समुझि भल जान कि-  
 हिं गहि पाइ प्रभु कहें दीजिये । भये मूढ मारहु तोहि कापर  
 बोट मुख करि लीजिये ॥ कहू गेति पुछियत जाहि सो सा-  
 द अधिक भांति देख आवई । जिमि कहें कोइ गिरि मेरु ते भु-  
 कि जाहु आंधी आवई ॥ तेहि तुरत जान्यो काल बसर स-  
 नाहि उठि घर का गयो । तब मेघ जाह सहर्ष समुख आइ अ-  
 स बोलत भयो ॥ देख्यो पराक्रम काल्हि मम बहु आशु-  
 का निज मुख भनो । सुत वचन सुनि हरषान मन रासूर  
 सुनि करखा मनो ॥ उठि प्रात नोमी दिवस रथ चढ़ि मुकुत  
 कपि दल आयहु । कहें राम कहें सोमि कहें हनुमान कहें  
 कच जायहु ॥ सुनि भालु कपि धिये कुधर गहि देखि सो मा-  
 रन लगा । लखिता सुवाना वरी सब अकुलाइ मर्कट दल  
 भगा ॥ तब भिरे लयगा प्रचारि बागान मारि तोहि व्याकुल-  
 कियो । जब भयो बितरथ सूत जानिसि मारि इन मोको लि-  
 यो ॥ तब ब्रह्मदत्त प्रचराइ शक्ती लयगा के हिर दे हनी । म-  
 हि सुरछि गिरे अनंत रहा उदार करि माया धनी ॥ किमि-  
 उठै जगदा धार लखि हनुमान मुष्टिक मारिहु । पुनिलान  
 मारि अचेत करि धरि लंक ऊपर डारिहु ॥ निशि जानि नव  
 हनुमान शेषहि लाहि प्रभु यहें लायहु ॥ लखि राम हृदय  
 लगाइ भातहि विरह वचन सुनायहु ॥ हा ईश जग तन दी-  
 श मैं इक पात तैं विरचा रहै । भट भक्ति भायप मित्र गुणनि



चढ़ाई अब बीरा चहै ॥ हातात तजि पितु मातु बनमम  
 बिधति आइ बढायहू ॥ तिन साथ हों सुर लोक लोहें सि  
 प्राणा नाहिं पढायहू ॥ निज कर्म निज कर तूति ते तुमता-  
 त सब सुकृती जेयों में राखि तुम बिन देह दीरघ लाहि सि  
 अप यश लख ॥ अस समुझि परत कदेर ता मम हृदय ते  
 कुलिसे भई ॥ जो समुझि आप सनेह तुरतै दर कि दर ज-  
 न है गई ॥ पितु मरणा भाषिनि हरणा रग लघ दहिन भु-  
 जा गवायहू ॥ सब भौति अपने बंधा मुचिमें कालि मा में ला-  
 यहू ॥ जिन तुम्है सों प्यो मोहिं तिन सों कहा कहि हों जाइ  
 कै ॥ पिय बंधु खोयों बाध हिन तेहि सक्यों नाहीं लाइ कै ॥  
 कपि भालु जैहें गिरि गुफन तब संग मो को रोचहें ॥ हें है विभी-  
 यणा की कबनि गलि यही बड़ मोहिं शोचहें ॥ दुख देरि वस-  
 कत न रह्यो मम अब हेत केहि करुना तजी ॥ जेहि देत न-  
 हिं उदि बाध दीरन कौन बल धनु शर सजी ॥ धन धाम सु-  
 त तिय कुटम्ब जग हें जात पुनि पुनि आवही ॥ पितु मातु  
 सो दर जन्म भारि नहिं मिलत जब ते जावही ॥ प्रभु बचन न-  
 र अपनु हारि सुनि कपि भालु सब हिय हारे हूत बरी छ पति  
 हनुमान कहें तेहि समय जानि प्रचारेहू ॥ \* ॥ \* ॥ \*  
 चौ० कह हनुमंत जोरि युग हाथा ॥ लखरा शोच जव की जै नाथा  
 कहौ चन्द्र में पट इव गारी ॥ अबहीं देहूं अमी मुख डारी ॥  
 कहौ बिबुध बैदै गहि आनौ ॥ मोत मारि सब के दुख भानौ  
 कहौ फेरि न भरविहि निकारौ ॥ रिपु तेहि द्वार राहु बैठारौ ॥  
 कहौ ब्रह्म हरि हर का आनी ॥ अमर अमर बोलवावों बानी  
 कहौ पताल जाइ हति नाया ॥ आनौं अमी कुराड यहि जागा  
 कहौ देहूं निज देहै त्यागी ॥ अबहीं उठौ लखरा घट जागी

दो० जो कछु तब मनमें रुचै सो मोहिं शायसु होइ ॥  
 नाथ सपथ क्षरा भें करों प्रभु प्रताप बल सोइ ॥  
 पवन तने के बचन सुन सहित राम कपि भाल ॥  
 उठे जागि जिमि मंत्र सुनि सर्प ग्रसित द्रुम जाल ॥  
 बोले श्रीपति सत्य सुत सब लायक तुम आइ ॥  
 चाही वैद सुखिन है अरि पुर आनन जाइ ॥  
 पहुँचे तुरत बिचारि तेहि ल्याये सदन समेत ॥  
 ता सुबचन सुनि पुनि चले शीघ्र सजीवन हेत ॥  
 काल नेम मग मारि कै सब गरा साठि हजार ॥  
 रोकत लूमल पेदि सोइ देखे जाइ पहार ॥  
 देखी जहँ तहँ श्रेष्ठ धी तब मन माँझ बिसरि ॥  
 लोलै चले उडाइ गिरि दलि दश मुख भटभूरि ॥  
 किधौं अपत्र पलास बन किधौं प्रभात लखाइ ॥  
 छँडि शंभु गरा बहुरि मग दस्यो अवध पर आइ ॥

चौ० देखि भरत मन असुर बिचारा ॥ बिनु फरवान हृदय महँ मारा ॥  
 कपि महि गिरत राम मुख भाया ॥ पवन साधि द्रोणा चल राखा ॥  
 तेज तासु पुर गयो समाई ॥ ज्यो सरिता सागर महँ जाई ॥ ॥  
 होरि भरत गहि हृदय लगावा ॥ जागन जब तब बिलरिख सुनावा ॥  
 जोर घुपति पद प्रीति हमारी ॥ बहुरि होइ अनकूल खरारी ॥  
 तो कपि होउ बिगत श्रम पीरा ॥ सुनि उठि बैठ राम कहि बीरा ॥  
 भरत रिपु हनै लखि भ्रम छायो ॥ का घर राम लखरा फिरि आयो ॥  
 पुनि यहि चानि पुलकि शिर नावा ॥ पूँछा सब बिरतान्त सुनावा ॥  
 व्याकुल है बोले धृगहमहीं ॥ प्रभु के काज न सायों कबहीं ॥  
 कुसमय जानि कह्यो धरि धीरा ॥ चदि सरसपदि जाहु प्रभु तीरा ॥  
 सुनि सह गर्व बैठ सर जबहीं ॥ सुमन समान उठायो तबहीं ॥



देखि प्रभाव उत्तरि कपि पोरु ॥ शीशानवाइ प्रशंसा करेऊ ॥  
 तव प्रताप उर धरि रघुबीरा ॥ जैहों अति लाघव प्रभु तीरा ॥  
 भले भरत कहि बोले ताता ॥ पाछे सुनि दुख पै हैं माता ॥ ॥  
 तेहि ते चलि दीजैं समुझाई ॥ आइ भवन सब कथा सुनाई ॥  
 सुत घायल सुनि साधु सुमित्रहि ॥ भयौ हरय अरु शोच विचित्रहि  
 बोली धन्य सुवन मम आजू ॥ जू भयौ समर स्वामिके काजू ॥  
 परइ क कलक होत बड़िताता ॥ कुसमय भये राम विन भ्राता  
 पुनि सुभायरि पुहनते कहैऊ ॥ जाहु तात तुम प्रभु पहँ रहेऊ ॥  
 सब विधि कह्यो भजन सोइ सच्चा ॥ नरतन को फल याही बच्चा  
 सुनत उठे मुद सहित प्रकासा ॥ विधि बस सुदर दरे जनु पासा  
 दो० अम्ब अनुज गति देखि मन मानी सब नगलानि ॥

बोली रघुपति मातु तव कपिते धीरज आपनि ॥  
 प्रथम भेंट कहि कह्यो शमिकह्यो करि न उर अम्ब ॥  
 लाल लक्ष्मि मरा तेल लित लागत अहौ कदम्ब ॥  
 बोले मारुत सुवन तव सकल धरहु मन धीर ॥  
 कुशल जान की लय रायुत ऐहें घर रघुवीर ॥  
 अस कहि चले समेत गिरि आपि जहँ भगवन्त ॥  
 श्लोष धि कीन सुखेन उठि बैदे तुरत अनन्त ॥  
 कृपा सिंधु बंधुइ मिले मिट्यो सकल दुख भार ॥  
 मुदित भालु कपि जन लह्यो समर ययो निधि पार ॥  
 भेंटि सचिव बूझन लगे बड़ दुख पायो तात ॥  
 कहत न छुत मेरे लग्यो पीर भई प्रभु गात ॥  
 होत पदिक के कान्ति जिमि दुख सुख लहे भुवार ॥  
 सुक मुक जानत पाठ करि अरथ पदावनहार ॥  
 विमल बचन सुनि शेष के कहन लगे सब वीर ॥

रामलषणा की प्रीति के उपमा क्षीरन नीर॥

इति श्री विश्वामसागर सब भक्त आगर ग्रंथ उजागर श्री गुरुनाथदा-  
सराम सनेही कृत लक्ष्मण हितराम बिरहव-

रानो नाम षट् विंशोऽध्यायः २६ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरुगणपतिगुरुमुखदानि॥

बराँ मानस भक्त कह्यु कसार रमायण जानि॥

चौ० पुनि ताही थल पवन कुमार॥ धरि आये गिरि वैद अगारा  
मुनि रावण मन पंथोरवभारा॥ प्रात लगे कपि चारहु द्वारा॥

मधनाद पुनिरथ चढ़ि आवा॥ बरषि बान कपि दल बिचलावा

दशदश बिशिष सबन के मारे॥ जहै तहै भट कहरत हैं डारे  
पुनि पिथि बचन लागि दोउ भाई॥ नाग फँसते लीन बंधाई॥

मुदित पिता दिगलं कहि लावा॥ रावण देखि परम सुख पावा॥

बिबिधि प्रशंसा करि सुत केरी॥ सीतहि जाइ देखाइ सिंदरी॥

प्रभु बन्धन लखि सिय शकुलानी॥ गरुड़ तब पठयो विधि जानी॥

आइ सकल पन्नग बिचलाये॥ पुनि दोउ बंधु कटक महं लाये॥

अस्तुति करि मुनिरघुपति बवना॥ हरि पुरगये गुरात प्रभुरचना॥

इहो बिभीषण हनुमत दोऊ॥ सोधा दल अचेत सब कोऊ॥

कह्यो बिभीषण रिच्छ पतेरे॥ है कह्यु चेत चलहु गे सेरे॥ ॥

जामवन्त तब बचन बरवाना॥ कह्यो अहैं नीके हनुमाना॥ ॥

मुनि दनु जेश कह्यो धरि धरौ॥ पूछ्यो नही लषणारघुवीरै॥

तजि कपि पति युवराज समेता॥ हनुमाने बूझ्यो केहि हेता॥

जो होइ है जीवत हनुमंता॥ तौ जानौ सब जियत अनन्ता॥ ॥

जो कदापि गिरिगे हनुमानो॥ तौ तुम मृतक सबन कहैं जानौ॥

मुनि लंकेश सरस सुख पावा॥ पवन तने चरणान शिर नावा॥

आयसु होइ करी सोइ वाता॥ लावहु चारि शेषधी ताता॥ ॥



हो० एक विसल्य करनी अहेयुग सौवस्तीनाम॥

तीसरि संजीवनि तुरत संधानी अभिराम॥

चो० मुनि मारुत सुत तुरतै धाये॥ अनि जरी सब सुभट जिघांथ  
भये सबल सब गाजन लागे॥ देरिव राम लक्ष्मन अनुरागे॥  
हरि दिन चढ़ि धुमराक्षस गुरी॥ आइ कीनि अतिसंगर भारी॥  
भये विकल कापि भालु अपारा॥ दुहा दसी दिन पवन जमारा  
आवा बहुरि अकंपन घोधा॥ महा समर कीन्हि सह सह क्रोधा॥  
तेरसि दिन गंजेहु युव राजा॥ बहुरि प्रहस्त आइ रागा गाजा॥  
किहि सारि सर जर जर गाता॥ परिवा दिन तेहि नील निपाता  
तीनि दिवस तबलरा करीशा॥ पंचम्या दिन मुनि दशशीशा  
कुम्भ करन कहं अनि जगावा॥ नाना विधिकारि कुटिल उपावा  
पुनि बहु भांति कराइ सिभोजन॥ बोला सो निज कहौ परोजन  
कह रावणा हें मानुष आये॥ शत्रु समुझि हम तिय हरि लाये  
सेतु बांधि उत्तरे यहि पारा॥ सुभट समूह किहि नि संहारा॥  
मिला विभीषणा जाइ अयाना॥ मोहिं तोहि नहि नेकु डेराना॥  
कपिन सहित तेहि भक्षणा कीजै॥ सहित कुटुम्ब मोहिं सुख दीजै  
मुनि घट करन कहौ सुरासाली॥ प्रथम पूछि किन किहे उकुचाली  
यक दिन बात जनाई थोरी॥ प्रकटी नहिं सीता की चोरी॥  
त्रिभुवन पति सों बैर बढ़ाई॥ पुनि मुख चहत कहा अब भाई  
ताते त्यागि कुटिल पन येहु॥ जग दम्बालै रामहिं देहु॥  
जेहि ते करौ सकल मुख भेरी॥ मुनि बोला रावणा मुख हेरी॥  
कितौ करौ चलि संगर भारी॥ कितौ रहौ पुनि सोइ सभारी॥  
नाहित भीरु विभीषणा जैसे॥ परो पाइ रिपु पायन जैसे॥  
मैं निज बल विरोध यह ठाना॥ करि हों तिभि सब कर कल्याणा  
मुनि घट करन काल कृत जानी॥ प्रभु दशानहित मन में अपनी

अनुजै भोंटे समोद सिधावा ॥ लखिरावसा बहु सुरा पियावा  
 करिमद पान भयो मतवारा ॥ चला कहत कहै भूपकुमारा  
 हाय हाय करि रेचर भागे ॥ लखितेहि मिले बिभीषणा आगे  
 चरणा परसिति जनामवतावा ॥ सुनिसराहि प्रभु पास पठावा  
 कहिनि नाइर धुपति पदमाया ॥ कुम्भकरा पहा आवत नाया  
 रावरा बंधु बिडुल बल लाह ॥ जोचि भुवन में गनत न काह ॥  
 उडै अकास ब्योम चर मारै ॥ धंसै पताल फनिक फन फारै  
 मरिा उतारि लावत है कैसे ॥ उपवन ते पुहपन को जै से ॥  
 बिनही प्रले प्रले करि देतो ॥ जो बट मास न सूतत येते ॥  
 पर प्रभु भृकुटी कुटिल निहारी ॥ लोप होत भव कातम चारी  
 सुनिक पिभालु चले करि हूहा ॥ डारिनि तेहि शिर शैल समूहा  
 सुमन सरिस बरसत जिय जानी ॥ धावा सुख पसारि दोउ पानी  
 कोटिन कपि चपिगे तरताके ॥ कोटिन कर समेदि मुख भोंके  
 कोटिन श्रवणा नाक मग माखी ॥ निकसहिं जिमिं वा बिनते पांखी  
 कोटिन दिशा दिशा उडि भागे ॥ कोटिन प्रभु के पाछे लागी  
 कोटिन हनुमंतादिक बोले ॥ कोटिन कुन पद रावत डोलै  
 कोटिन गये समुद्र महै बूझी ॥ कोटिन कादि चलाये मूडी  
 आगे लखिरावना ये पावा ॥ करि प्रणाम मन वचन सुनावा  
 दो० नामें प्राहों ताडुका नामें प्रहों सुबाहु ॥  
 नाहों धनु मारिच मग नाहों खर कपि नाहु ॥  
 मैहों देवन के रिपु आइ करौ रन राम ॥  
 जेहि चदि प्रापि न बिकरि सो प्रव पृजौ काम ॥  
 चौ० सुनिसुग्रीव लात यक मारी ॥ पकारि तिन्हें पुर चला प्रचारी  
 लखि सब हनन लगे यक साया ॥ सौ स पाइ निकस्यो कपि नायाया  
 नाक कर मुख ते कारी ॥ गयो राम महं प्रभु डारी ॥



चला रुधिर तब देखि लजाना ॥ फिर कपिनिकर किहे सिविन शन  
हने मान निज लूम लपेटी ॥ डारिन सिंध मौं भू जिमि फेंटी ।  
धावा तब करि क्रोध कराला ॥ मारे कीस सब किहिसि बिहाला  
नारद आइ कही असि बाता ॥ बध उबे गि प्रभु प्रोक्त विधाता ॥  
श्रीश नाइ जब कीन पयाला ॥ तब हरि धनुष वान संधाना ॥  
मारे शायक विपुल प्रचारी ॥ धावा मुख पसारि गिर धारी ॥  
लखि राधो भुज काटि गिराई ॥ लिहि सि वाम कर सोउ उड़ाई  
बिन भुज गिरि मंदर सम धावा ॥ श्रीस काटि प्रभु लंक बहावा  
लुराड मुराड बिन चलो प्रचंडा ॥ तब प्रभु काटि किये युग खंडा  
हो ॥ देखि देव दारि सुमन हरये मुनिन समेत ॥

मुदित भालुक पि कटक मीध सोहे रुपानिकेत ॥

चौ० ॥ प्रनुज श्रीश लखि रावरा शोचा ॥ असन बसन तेहि भये शोचा  
तेवहिं रगिा बरगिा गुणा तांके ॥ चला महोदर लै भर बाँके ॥  
कपि दल अपार समर अतिशना ॥ एका दिवस हता हनुमाना  
फालगुणा कृष्ण पादि दिन भोरा ॥ चढ़ान रंत कलै भट घोरा ॥  
नाना विधि तेहि युद्ध मचावा ॥ जाना कपिन काल निजु आवा  
हरि बल पाइ लरत तेहि चीन्हा ॥ फनि दिन निधन शानन कीन्हा  
तब अति काय आय रन ठाना ॥ अष्टम्या दिन भेगत प्राना ॥  
कुम्भ करण सुत कुंभ निकुंभा ॥ आइ किहिनि दोउ युद्ध आंभा  
लरत लरत दिन पांच बिताये ॥ तेरसि दिवस गये दोउ पाये  
तब खर सुत मकराक्ष सिधावा ॥ कपि दल दल तुल्य ग्राहं आवा  
मारे अस्त्र शस्त्र भर नाना ॥ कटैन बपु विधि कर बर दाना  
भूपटि लखरा कहं निगलिसिधावा ॥ अनहुं मयंक हितु इन्द्रावा  
हाहा कार भयो दल भारी ॥ निकसे लखरा उदर तेहि फारी ॥  
फालगुणा शुक्ल प्रथम दिन जूभा ॥ भारावने मोह पशू चूभा ॥

मेघनाद लखि बचन सुनावा ॥ केहि हित तुम अस खेद बड़ावा  
 जब लग में जीवत सुत तोरा ॥ तब लगि करहु राज्य बर जोरा  
 देखो ॥ आजु मोर संग्रामा ॥ अस कहि चला दिव्य रथ तामा  
 एक अदृश्य पुनि निसिन भगामी ॥ आवा जहां भालुक पिस्वामी  
 गर्ज्जा प्रलय पयोद समाना ॥ सुनिक दु शब्द सबन भयमाना  
 अस शस्त्र पुनि बरघन लागा ॥ मघान स्वत सम असि सर सांगा  
 गहि गिरि तरु कपि जाहिं अकासा ॥ मिलेन को उत बफिरे उदासा  
 भये विकल कपि भागन लागे ॥ जहां जोइ मग मिलेन आगे ॥  
 अंगद हनो मान नल नीला ॥ शेष सुकंठ विभीषणा कीला ॥  
 शैरो दुई रादि जे बीरा ॥ मारि सबन कहि किहि सि अधीरा  
 पुनि अति समर राम ते ठाना ॥ नाग फांस बस भै भगवाना ॥  
 जासु नाम भव बंधन हर्त्ता ॥ सो कि होइ परबस जस कर्त्ता ॥  
 समय समान चरित प्रभु करहीं ॥ अस बिचारि बुध भर्मन परहीं  
 देखा सबन विकल घन नादा ॥ तब भा प्रगट कहत दुर्वादा ॥  
 देखि नर अति चले प्रचारी ॥ तब तेहि तीव्र शक्ति तकि मारी  
 जामवन्त सोइ मारि गिरावा ॥ चरणा पकरि पुनि लंक पठावा  
 गरुड़ आइ प्रभु बंधन काटा ॥ भे सब सबल राम जव डाटा ॥  
 गहि गहि गिरि गुरु पाद पधाये ॥ मारि सकल निश्चर विचलाये  
 मेघनाद मुरछा ते जागा ॥ जाय अजै मल करन सो लागा  
 दो० जानि विभीषणा प्रभु सों कह्यो जेरि युग पानि ॥  
 इन्द्र जीत निकुम्भ लै गाम ख हित रिसि आनि ॥  
 सा० जब लगि होइ न सिद्धि तब तक ताको मारि अपु ॥  
 पाछे पाइ प्रसिद्धि बेगि न जाइ हि जीति रिपु ॥  
 चौ० सुनि प्रभु कहा लखण ते तबहीं ॥ जाहु ता तलै कपि हल अवही  
 मरष बिध्वन्सि पुनि मारे हुताही ॥ भले नाथ तव आयसु आही



अस कहि माजि धनु सरतूनी ॥ चल संग हनुय तयुत वीरा ।  
 जलहि कपिन भंग भव कान्ही ॥ मारत लखि भव हीनो हिलीही  
 ह सर जामयन्त के छेदे ॥ तानि बारा अंगद के भेदे ॥ ॥  
 चारि विभाधरा अंगान पावे ॥ पांच विरिष पवनज के मारे ।  
 एक एक सर सब के दयऊ ॥ पुनिल हारा पर छोड़त भयऊ  
 भकल अनंत काटि माहि डोर ॥ पुनि निज बारा कराल पवारै  
 आवन लखि सर भयो अलोपा ॥ छंडि सिव हुरि मूल करि कोपा  
 नुगत कीनि सत रवाड अहीशा ॥ तब थक गिरिगिह डारि सिरीशा  
 रजमम करि मोऊ माहि पारा ॥ अख शस्त्र पुनि तजे सि अपारा  
 सोत बल धरा नेवारत भयऊ ॥ यहि विधि वीति मास दिन गयऊ  
 महा पुद्गल खसु भनि सारे ॥ हर्य शोच बस होइ विचारे ॥  
 नवल हारा करि कोप कराला ॥ छंडि उ एक नगच विशाला  
 जातहि शिर भुज काटि उतास ॥ गर्जत पुनि मरि शर आसू ॥  
 राख लखरा काह सह अनुगा ॥ तेर मिदिव मभयो तन त्यागा  
 सुनि बोले अंगद हनुमाना ॥ धन्य मानु तब तोहि बलवाना  
 कटि तनु पस्यो समर महितामा ॥ दहिनी भुजा गई तेहि धामा  
 शिर ले कीश राम पहं आये ॥ अनुज हिलखि प्रभु हृदय लगाये  
 फेरि कमल कर छत हरि लीन्हा ॥ बरखे देव सुमन जय कीन्हा  
 पुनि रघुपति कपि भालु बिलोके ॥ भये सकल अमर रहित विशाके  
 अरि पुर मेघ नाद की नारी ॥ पति भुज लखि मन सुशो धारी ॥  
 दीन्ह कलभ खरि कर गहिलीन्ही ॥ लक्ष्मणा की कीर्तिलिखि दीन्ही  
 कोटि कलय जो योग कमावै ॥ सो उन लयरा कीशम सरि पावै ॥  
 सुनत सारि वन युत रोवन लागी ॥ आजु दशानन भयो अभागी  
 करिहैं कीश मुदित पुर फेरी ॥ छूटि बंदि सब देवन केरी ॥ ॥  
 कोइ जय लहे हमै का करना ॥ जस्यो जगत जो आपन जरना ॥

अस कहि भुजपाल की चढ़ाई ॥ आपु बैरि रावरा पहं आई ॥  
 सासु ससुर पद शीश नवाई ॥ रोदन करि सब कथा सुनाई ॥  
 जो पावों निज पति कर माथा ॥ तौरि चिंता जरहुं तेहि साथी  
 मय तन यादि जहां तक रानी ॥ लगी बिलाप करन दुख मानी  
 सुनि दश मुख ह मुखि महि पोक ॥ पुनि धरि धरि बचन अनुसोक  
 सुमुखि समुभि जिय करहु नशोक ॥ प्रकटनामया को मृत लोका  
 मातु भूमि पितु बीज बेसारा ॥ काल किसान जीव नृणा भारा ॥  
 पालत पुनि लूटत सोइ खाई ॥ कौन कौन हित राखे धाई ॥

दो० रह्यो न कोई रहेंगो पुनि कछु जाइ न साथ ॥  
 धन्य भाग्य इन सबन के जो जूमे प्रभु हाथ ॥  
 सब सम जानन मोहि तू मेहों प्रति बलवान ॥  
 देखो कालिहि कपिन कर मेदि हों जाइ गुमान ॥  
 बालि विभीषणा पवन विधिताप स नील कपीश ॥  
 इन सब शीशान सहित तव आनौ पति कर शीश ॥  
 बड़ बिमोह बस जानि तेहि कुछू न उत्तर दीन ॥  
 नारद के बर बचन तव मय जाबरान कीन ॥  
 ताते निज हित राम पहं जाहु सकल न जिशंक ॥  
 होइ भूप धर मज्ज जहं तहं कोउ रहे किंवंक ॥  
 बहुरि रहत तहं ससुर तव भयन कछू शिर नाइ ॥  
 चली पान चादि भदन युत पहं ची कपि दल जाइ ॥

सो० लखि हरये कपि भालु ॥ बिन थम आई जान की ॥  
 मिटा सकल जंजालु ॥ भयो सुयश हम सबन कहै ॥

चो० यहि विधि गई जहां घुगई ॥ नख सिखल खिंदो उबं धूलानाई  
 कीनि दराइवत बिनय समेता ॥ तब लंकेश कहा सब हेता ॥  
 सुनि कृपाल बोलै अनुरागी ॥ जो भावें सो लीजै मारी ॥ ॥



कहों देहुं पति तोर जियाई ॥ भूजहु राज कल्पभरि जाई ॥  
 मुनि सुर मुनि कपि भालु डेराने ॥ बहरि सुलोचनि बचन बखाने  
 कृपा सिंधु में दीख बिचारी ॥ यहि मरने ते जीवन खारी ॥ ॥  
 बिस बदले जो अपमृत पावै ॥ लेइ फेरि सो मूढ़ कहावै ॥  
 ताते नाथ देहु पति प्रीति ॥ दीन देवाइ तुरत जग दीशा ॥  
 दो० मस्तक पाइ हंसाइ तहं लाई सागर पास ॥ + ॥  
 भई सती पति सहित पुनि किहि सिसत्य पुरवास ॥

इति श्री विश्रामसागर सवमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ रा-  
 म राम सनेही कृत मेघनाद बध और सुलाचना-

सती बरानो नाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गराप गिता मुख दानि ॥  
 बरानों मान समत कछु कसार माधगा जानि ॥  
 तेहि दिन भयों न मर कछु दशमुख शांचे लीन ॥  
 अहिरावरा को यादिकार आर्कषन जप कीन ॥

चो० दंड चारि महं सो तहं भावा ॥ रावरा लखि निज हाल सुनाव  
 सकल सैन कपि भालु न मारी ॥ तातर हीय कप्रास तुम्हारी ॥  
 सुनि बोला यह केतिक बाता ॥ जैहों लै पताल दो भ्राता ॥  
 देहों बलि कामद कहं सोई ॥ जानै हुन भ प्रकाश जब होई  
 अस कहि बिरचि विभीषण रूप ॥ गयो जहां लछिमन सुरभूषा  
 सोवत लखिले गगन उड़ाना ॥ दशमुख देखि सत्य तेहि जाना  
 यहि विधि सो लै गयो पताला ॥ प्रभु बिन भे कपि भालु बेहाला  
 तब सब हाल विभीषण काहा ॥ अहिरावरा लै गानर नाहा ॥  
 रहत नाग पुर जो कोइ लावै ॥ सो सब कोइ प्राण जियावै ॥  
 कह हनुमान तजहु सब शोका ॥ लैहों प्रभुहि दंडित हु लोका  
 चले खबारी मग खगते पाई ॥ छिन महं परि पुरे पहुंचे जाई ॥

द्वारपालमकरध्वजप्रादा॥ तामुपैहितोहियं ध्यागादा॥  
 पुनितनयुवनदेवीमहगयऊ॥ होतहोमतहं देवतभयऊ॥  
 तवतहं विकटरूपधारलीन्हा॥ गैधमिशांतं मुतलचनरीन्हा  
 देरिवसहितकुलहरयाराजा॥ प्रगदीदेविभजाअवकाजा  
 नानाविधिमेवापकवाना॥ आनिचहायेपूरजननाना॥  
 पावनिबस्तुसकलकपिरवाई॥ पुनिबलहितअनेरोडभाई  
 बाजहिं बाजनगावहिं तारी॥ पुनिनिश्चरसबहोइसुतरागि॥  
 तवप्रभुतेबोलेसरसाई॥ सुमौरोजोकांडनुम्हरोहोई॥  
 सुनिरघुपतितवकीनवधाना॥ यहिअवसाचहियहनुमाना  
 मारनहितशिवभेसबठादे॥ घनसमानकपिगर्जहगांटे॥  
 निश्चरडरिअसकहतविशेषी॥ क्रोधकीनदेवीनरैरखी॥  
 बहुरिगर्जिकपिबपुशगटावा॥ दोउभेयनदोउकंधबड़ावा  
 निजलंगूरकरकोटबनाई॥ अमिलेभारेहखलमभुदाई  
 अहिरावराशिरकाटिकुमारा॥ देवीकीआहुतिमेंदारा॥  
 ओरोअसुरमिलेतेभारे॥ पुनिलेप्रभुचलेहुलखिद्वारे  
 बिनैकीनिमकरध्वजभाये॥ राजदेइनिजसेनाहिंआये  
 लखिकपिभालुमुखीसबभयऊ॥ बूडतमनहुंथाहमिलिगयऊ  
 हनुमानैसबलोगसराहे॥ कहप्रभुइनविनकोममआहे  
 बोलेपवनतनैशिरनाई॥ आपुचहेतेहिदेउबड़ाई॥

दो० यहाँदशाननदूतमुखसुनिअहिरावराणाचा॥

एकादिननिजसेनलखिचदासमरबिनवास॥

बाजहिं बाजनविधिधिअसगुणाहोइअपार॥

गनहिंनएकहगर्वबसमहिसहिसकतनभार॥

चौ० निजनिजनाथकोरजेभारवी॥ धायेइतउतभटअभिलाखी  
 कपिकरमुकदलसंगमभयऊ॥ जनुवतण्यामसेतमितिंगयऊ



गर्जहिं मनहुं बाजने बाजैं ॥ चमकहिं खड्ग कटासी राजैं ॥  
 बर्यहिं बानवूद जनु भारी ॥ छूटै तोब गाज जनु पारी ॥ ॥  
 भयो अंधेर उडी राज कूरा ॥ इन्द्र धनुष बहु लसे लगूरा ॥  
 गिरहिं सुभट मंदिर हहराई ॥ आनित मरित चली उमड़ाई ॥  
 भुज अहि कच्छ पचर्म सोहावै ॥ कुंजर अश्व ग्राह दूति पावै ॥  
 फिरत चक्र आवत अनेका ॥ उछराहिं शीश मूसि दिगएका ॥  
 भूषण भेक उपल सम रेनु ॥ धनुष तरंग बहै पर फेनु ॥ ॥  
 कर पद मान जुके स सेवाला ॥ दोउ दल कूल विट पर थाला ॥  
 बहु भट बहैं चढ़े खग नीचा ॥ जनु नेवार खेलहिं मरि बीचा ॥  
 खैचै आत गोध गहि तीरा ॥ वंशी मनहुं लगाई कीरा ॥ ॥  
 भूतरु प्रेत पिसाच पिसाची ॥ मंजहिं मुद्दिन जोगनी नाची ॥  
 बीर बिनोद लहैं सर देखी ॥ कायर त्यागाहिं प्राण विशेषी ॥  
 देखि करि न कोपहु हनुमाना ॥ मर्दन लोग निशाचर नाना ॥  
 गजने गज घोड़न ते घोरा ॥ खरते खर रथ ते रथ तोरा ॥ ॥  
 महिष ते महिष ऊंट ते ऊंटा ॥ पैदर ते पैदर दल कूटा ॥ ॥  
 कोटिन कर शिर लातन मारे ॥ कोटिन पटक सिंधु महेंडारे ॥  
 कोटिन हाथ पाय बिन कीन्है ॥ कोटिन फेंकि गगन महेंदीन्है ॥  
 हंसि प्रभु कहैं लखरा ते हेरी ॥ देखउ लरनि पवन सुत केरी ॥  
 निज दल बिचल देखि दश शीशा ॥ धावा लै धनुसर भुज बीसा ॥  
 जहें तहें उड़े कीस भये पाये ॥ यथा पात बौंडर के जाये ॥ ॥  
 अंगद हनुमदादि भट भारी ॥ लै लै गिरि मारे एक वारी ॥ ॥  
 फूटहिं पविसो मुरे न नैका ॥ लाग निपातन कीस अनेका ॥  
 दीन्हिसि पूरि दशहु दिशि बाना ॥ भागत कतहुं न मिलै रिकाना ॥  
 विकल पुकारहिं जहें तहें ठाढ़े ॥ पाहि राम लछिमन दिन गाढ़े ॥  
 मुनि लछिमन धनु बान सिधारा ॥ सरिस झाड़ु सन्मुख ललकारा ॥

होउसजग अब सुन दशभालू ॥ पहुंचेउ आइ तोर में कालू ।  
 सुनि तेहि अस्त्र शस्त्र बहु मारे ॥ सकल काटि सो मित्र निवारे  
 पुनि छांड़े निज बान अही शा ॥ सूत समेत भयो रथ खी शा ॥  
 सत सत विशिष दसों शिर मारे ॥ मनहु चले बहु सीधर पनारे  
 पुनि सत सर छाती महं दीन्हें ॥ बीसहु भुज बरही सम कीन्हें  
 धावा बिकल क्रोध करि भारी ॥ बिधि की दीनि संगित कि मारी  
 लागत उर लक्ष्मिन महि पोरु ॥ रहा उठाइ न नेकहु टरे ऊ ॥  
 जेहि शिर रज सम भुवन प्रपारा ॥ तेहि उठाइ किमि सकेल वारा  
 देखि पवन सुत मुष्टिक हनै ऊ ॥ है अचेत अवनीठन मने ऊ ।  
 प्रभुलै गयो जहां भगवाना ॥ देखि दसानन अचरज माना  
 दो० चैव कुल नौमी दिवस अनुजै लखि रघुवीर ॥  
 कहों काल के काल तुम सुनत उठोरन धीर ॥  
 पुनिरिपु सन्मुख जाइ तेहि बिकल कीन सर मारि ॥  
 लखि अचेत निज नगर तब लेगा सूत निकांरि ॥

चौ० भवन दीख जब राबरा जागा ॥ निज सुमंत्र कहें खोजन लगा  
 रे मति मन्द भीरु धृग तो हीं ॥ रघाते बिमुख कराये मोहीं ।  
 अस कहि दशमी दिवस सचेता ॥ लाग करन मार बजें केहेला  
 सुनि प्रभु भट पठये बहु आसू ॥ करहु विध्यस जाइ मरव जासू  
 अंगद हनुमदादि कपि वीरा ॥ कौ तुक हीं आयें तेहि तीरा ॥  
 लखि लागे सब मारन लाता ॥ उठे न सो स्वारथ मन राता ॥  
 तब कपिकरन उपद्रव लागे ॥ दिये छोरि हे गे मृग भागे ॥  
 फारे पट बितान घट भोरें ॥ छत्र चमर बिज्जन गहि दोरे ॥  
 लखि मंदोदरि उठी रिसाई ॥ दुरी चित्रशाला महं जाई ॥  
 अंगद हू घुसि गे तहं फूले ॥ ॥ विविधि चित्र पुतरी लखि भूले  
 धाड़ धरें पुनि तजै निहारी ॥ पांचे किमि सुन्दर बन वारी ॥



देखि हंसी सुर कन्याशका ॥ गहत बताइ सिनारि अनेका  
 तेही देखवाई रावरा रानी ॥ असुर निकट लाये गहि पानी  
 भूषण बसन परे सब कूटी ॥ कामपुरी जनु शिव गगालूटी  
 अपारत बचन पति हिलसि कहई ॥ जे जस करै सो तस फल कहई  
 सो तहि दिह्यो भूव दुख भारी ॥ देखहु निरगति सोचु हमारी ॥  
 नारि बचन सुनि उठारि साई ॥ गये भागिक पिजहें धुराई  
**त्रिभङ्गी छं** ॥ गे भागिक पीशा तब दशशीसा गहि भुज  
 बासा धनु तीरा ॥ संग सेन अपारा चले उजुभारा मद मत-  
 वारा रणाधीरा इत सुर प्रभु तीरा ॥ कह्यो अधीरा मेदहु पी-  
 रा बेगि भले ॥ कटि कसि पट बांधा धनु शर सांधा दल-  
 न प्रवाधा हेतु चले ॥ लखि इंद्र अजाना स्पदन आना  
 पवन समाना देखि प्रभु ॥ हरि दिन तेहि माहीं चदि स-  
 ब पाहीं कह्यो कि नाही नीक अभु ॥ सुनि सब बन चारी भ-  
 ये सुखारी देखि सुरारी कोष ठन्यो ॥ कहि बचन करोरा  
 शायक घोरा तजि चहुं वीरा कीश हन्यो ॥ हे बिकल परा-  
 ने सकल ठिकाने लखि अकुलाने विमिख भरे ॥ तब रा-  
 म सुजाना पावक बाना छौं नाना सकल जरे ॥ दश मुख  
 दिशि दयऊ रथ विन भयऊ दूसर लयऊ कोध जुत ॥ पुनि  
 सर बर पाटे सब प्रभु कटि निश्चर डोंटे बालि सुत ॥ क-  
 टिकटि भट परहीं पुनि उठि लरहीं बल करि धरहीं यक  
 खाले ॥ कौटिन बिन माया धावहिं साया कह रघुनाथा  
 सिर बोलै ॥ धरु धरु धरु मारु यकरि पछारु करहु अहा-  
 रू कोउ न बचै ॥ अति चंचल कीसा बध बन रीसा जो वा-  
 गीसा भूलि रचै ॥ धाये कपि भालू जनु बपु कालू मा रि  
 बेहालू असुर किये ॥ नख उदर बिदारै आत निकारै निज

गर डोरें हर्य हिये ॥ लखि रावरा कोपा प्रभु रथ तोपा दे-  
 रिव अलोपा देव डोरे । हय मारि गिराये राम उठाये सन्धु-  
 ख धाये क्रोध किये ॥ कर खेउ सर दावा श्रुति तक आवा-  
 तव करवावा यों बोला । भोजन हित हारू रहत अगा-  
 रू समर पछारू क्यों डोला ॥ सुनि कहों जु आहुं पृच्छ-  
 न जाहुं दश शिर दाहुं की सका । प्रभु सकल बताये अ-  
 स कहि धाये जाइ गिराये सिर तेका ॥ पिरि भये नबीने  
 पुनि प्रभु बीने पुनि हरि दीन्हे पुनि काटे । पुनि पुनि दमि जा-  
 में राम गिरा में दस दिशि तामें भरि पाटे ॥ जब असुर रि-  
 साई सांग चलाई लखि रघुराई आपु सही । चहि चल्थो  
 विभीषणा जहं रिपु तीघन बदत मुसी धन नीच गही ।  
 अस कहि लल कारा गदा प्रहारा लगत प्रहारा सरिस  
 गिरा । मुख अव ननि दाहा योगिन बाहा उरि करि हा-  
 हा बहुरि भिरा ॥ मारै एक एकै अस्त्र अनेकै हरि बल छै-  
 कै अमित लखा । पवन ज तब धायो मारि गिरायो प्रभु दि-  
 ग आयो राम सरवा ॥ रावरा हनुमाना मेरु समाना भिर-  
 त बहाना असुर ठनै । नभ सुर मुनि हेरी दूनहुन केरी ज-  
 य जय तेरी देरि भनै ॥ कपि मालु निहारे हनु मति हारे  
 गिरि तरु धारे सब धाये । लखि निश्चर भूपा धरि बहु रू-  
 पा कीश अनूपा बिचलाये ॥ भागत भट घेरहिं आनुर ते-  
 रहिं मुख में गेरहिं भुज बीशा । दुरि देव पराने बहुरि पुजाने  
 रहे ठिकानि अज ईशा ॥ व्याकुल लखि बंदर हौसि कमु-  
 कंदर सब दस कन्ध नाश किये । पुनि एक निहारा मर्क-  
 ट धारा धाई अपारा असुर छिये ॥

दो० पुनि छोड़े निज बारा प्रभु काल सरिस बधे हेत ॥



लगे काटन असुर के यथा हाथ तुरा खेत ॥  
 सो० सात दिवस दिन राति ॥ बाजे डधरा दाधनु बकर ॥  
 हरि पूजा की भांति ॥ भये सुभट संहार सब ॥  
 कुंदुलिया घंटा की आमान अब सुनु जेहि संगर दीच ॥ नाम अ-  
 युत दश लाग्य है रथी डेद सत मीच ॥ रथी डेद सत मीच लहे पैर द-  
 सको दी ॥ तब यक नटे कबंध कोटि पर खेचर चोटी ॥ खेचर नाचहिं को-  
 टि बिनाशिर के निह कंटा ॥ तब राधा के धनुष कर बाजत अजंटा ॥  
 फोका नागा नाम युतं तुरंग नियुत ॥ नाद रथी नाशतं ॥  
 पैदा नांदस कोटि सन्नियतने निरत कबंधारणे ॥  
 एवं कोटि कबंध निरत विधौ नृत्ये तथा खेचर ॥  
 स्तेयां कोटिक निरत नखुपते कोराड धंटा रक ॥  
 एवं सप्त दिनियातं स्वर्ग मृते रसा तले ॥  
 भवे न्मूरि भट नाश राम रावरा संगरे ॥  
 चौ० दशमुख आपुहि जानि अकेला ॥ लाग करन माया कर खेल  
 भूत पिशाच प्रेत बैताला ॥ अमित जंतु प्रकटे तेहि काला  
 लोहे धनुष सिली मुख बोरखे ॥ मारु मारु धरु बोलहिं रोखे  
 नितीहिं करहिं रुधिर कर पाता ॥ गहि कपाल योगिनी नाना  
 मुख पसारि दोरै हम खावा ॥ भागै कपितहं देखहिं दावा ॥  
 ऊपर ते वारैं बहु बालू ॥ भये थकित सब मर्कट भासू ॥  
 शेष सहित वारैं हाथ खगरी ॥ सुनि प्रभु माया सकल नेवारी  
 देखि सुभट धाये करि हुहा ॥ प्रकटे तेहि कपि भालु समूहा ॥  
 सन्मुख चले चिटप गिरि धारी ॥ देखि कोय बोलै हिय हारी ॥  
 सब मर्कट हे गेरि पु बोर ॥ कोन कुशल जो विधि घर फोर ॥  
 आपुहु आप लखे लहिं कोई ॥ भागे अब कहु जीति न होई ॥  
 बहिरि हरी माया भगवाना ॥ तब तेहि देखे लख हनुमाना ॥

लखिकपि भालुसकहि नहिं मारी॥ घेरिनि रामहि धनुहिं गिर धारी॥  
 डरे देव कयि प्रभु हर खाने॥ पुनि समूह शायक संधाने ॥ ॥  
 छांडत रिपु शिर काटन लागि॥ जनु समूह शरते स्वग भागे॥  
 रहे पूरि नभ केतु समाना॥ छेदे निकर एक यकवाना ॥ ॥  
 लोक लोक गिरि गिरि बन जहई॥ भयो राम रावरा रात हई॥  
 सुर नर नाग सबै प्रकुलाने॥ जाइ कहा कोउ सुर यह ठिकाने  
 मारु मारु धरु धरु शिर बोलैं॥ काल ब्याल से खेदे डोलैं ॥  
 प्रभु काटत शिर वारहिं बारी॥ मनहुं अनार उड़े फुल्ल लारी॥  
 सो० यहि विधि छानत माथ बीते प्रष्टा दिवस तब॥  
 बोले श्री रघुनाथ॥ सुयश देन हित घटजते ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास  
 राम सनेही कृत राम रावरा समर वर्णनो नाम

अष्टविंशोऽध्यायः २६॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणाय गिरा सुरवदानि॥

सार रमायणा केर मत कहों इति हास बखानि॥

चौ० जाय थकित भे भुजा हमारे॥ तदपि असुर मरत नहिं मारे॥  
 ताते यत्न करहु जेहि छोजे॥ कह अंगस्य मुनि प्रभु सुनिलीजे  
 प्रथम तुम्हारे पितर दिनेश॥ जासु प्रताप विदित सब देश  
 तिनकी विनय करहु कर जेरी॥ होइ बिजे आनंद बहोरी ॥ ॥  
 सुनि प्रभु देन बड़ाई हैता॥ बोलै रविदिशि प्रीति समेता ॥

**भुजंग प्रयात छंद**

नमो मारतंडं प्रचंड तमारी॥ नमो कल्मषा मेदुरवातं कहारी॥  
 नमो भानुमें पातु प्राच्यादिबासं॥ नमो पातु वेदांगजाम्यात नाशं॥  
 नमो पातु तापेन्द्र देव प्रतीचं॥ नमो मेरवि रक्षरसे दुदीचं ॥  
 नमो रक्षि गर्भसिद्धान् देशं॥ नमो संयमापातु दैन सुवेशं ॥



नमो पातु नैऋत्य हीरन्य रेतं । नमो पातु वायव्य देवार्क मेतं ॥  
 नमो मित्र मूर्द्धा निसे धिलु मूर्द्धा । नमो चारुणा पातु सर्वत्र बर्द्धा  
 नमो मातु सर्वांग सुर्या सतोषा । नमो जन्म मृत्युर्जरा व्याधिसौष  
 नमो धर्म का मार्थ निर्वीनहाता । नमो होयहारिद्र संतापहाता  
 नमो विश्व भूता ह भूतात्मभूषा । नमो ज्ञान विज्ञान रूपं ज्ञानूप  
 नमो लोक नाथादि मध्यांतयेकं । नमो तीव्र तेजार्क नामं अनेकं  
 नमो मेक चक्रं रथं दिव्य गामी । नमो कंद कालज कारुण्य स्वामी  
 नमो निर्मलं निर्विलोकं विरालं । नमो भूषितं भूषणां रत्न जालं  
 नमो स्वर्गा संकाश माकाश वासी । नमो सज्जन नंद दा वेग रासी  
 नमो सुहृम भाविक्त प्रागल्भ्य मीसं । नमो ब्रह्म विद्या विभो वैक्ली  
 सं । नमो त्रैगुणा त्वं त्रिभूतिं त्रिकालं । नमो त्वं तुरीयं निरीहं  
 निरालं ॥ नमो त्वं सुरा सुर्म ता सेव्य मानं । करो सो कृपा ज्यो  
 तज्यो शत्रु प्रानं ॥ यही चीन ली दास खु नाथ की है । यथा  
 बाल बानी लेहो जानि ही है ॥

श्रीलोक सूर्या एकं जे भुमि दं परे नराः मध्याह्न काले शु  
 चि नैम युक्तः नश्यन्ति सर्वा निरुजानि तस्य प्राप्नोति मो  
 दार्थे जया भिरामं ॥

चौ० यहि बिधि करि विनती जन दोषा ॥ छुं डे शरि पुरि शिर कती श  
 यक शर नाभ सरा मृत सो बा ॥ दोस भुजा काटे करि रोषा ॥  
 दस शिर काटि दणो दिशि माही ॥ शरि आयेर बुन नदन पाही ॥  
 विन भुज शिर धावा करि कोषा ॥ कहां राम राग करहु अली प  
 तब प्रभु काटि किये युग रंदा ॥ गिरत भूमि हाल्यो ब्रह्म राड  
 ता मु तेज प्रभु बदन समाना ॥ देखि देव न भहने निशाना ॥  
 जय धुनि पूरि रही चहुं वारा ॥ तिन भधि कोशलाज किशोर  
 कुसमित किंसुक तरु के बीचा ॥ राजत तरु तमाल जनु सीचा



जटा मुकुट सोहत मुनि चौरा ॥ कर कमलन फेरत धनुतीरा  
 राजिव दृग करि क्रियानिहारे ॥ सुरनर मुनि सब भये मुखारे  
 यह कृवि सुखद बंसे उर जासू ॥ मोह असुरत बहोइ बिनासू  
 पति बध मुनि मै जादिक राखी ॥ आइ तहें शिर पीटत यानी  
 रावन गति लखि देखे बिमारी ॥ लागी कहन तसु गुण भारी  
 जहि भुजबल जीते उर सरवी ॥ तन सुख किहे उर सकल सहारी  
 सोइ बधु बाहु स्नान शिव खाही ॥ राम बिमुख कहु अच जानाही  
 जासु कमे फल चाहिय सोका ॥ तहायि कृपाल दीन निज लोका  
 देखि विभीषणा हूं दुख पावा ॥ प्रभु प्रेरित लखि मन समुभावा  
 अनुज क्रिया कीन्हो जस बाही ॥ हितिया दिन आयि प्रभु पाही  
 तवरघुपति लिय बोलि अंतहि ॥ कापि रिच्छा अंगद हनुमंतहि  
 दो० कह्यो विभीषणा जाइ पुराज रेहु जस रीति ॥

भलिनाथ कहि आइ शिर कीन्हो तिलक संपीति ॥

बाजे बाजन बहु किये युवतिन मंगल गान ॥

सहिन विभीषणा लषरा पुनि आयि जहं भगवान ॥

चौ० तब प्रभु कह्यो पवन सुत तैरे ॥ जनक सुत हिला बहु दिग मेरे  
 मुनि पवन ज अंगद लंके रा ॥ आइ मातु पद नाथी श्री रा ॥  
 पूछी कुशल कुशल सब भाषी ॥ पुनि पवन ज बोले मन माषी  
 मातु तम चरित तोहि दुख दीन्हा ॥ तेहि ते इन्हें चही बध कीन्हा  
 कह सीता जनि मारिय ताता ॥ रिछु मनुज की वरणी वाता ॥  
 मुनि सुख सहित विभीषणा भावा ॥ बोझ विधि अंगार करावा  
 शिविका सुभग मोक्ष बैठारी ॥ लाये साहर जहों खरारी ॥ ॥  
 पावक ते प्रगटन के हेता ॥ कहि बचन दुखीद समेता ॥ ॥  
 मुनि जानकी बहुरि दुख पाई ॥ लखि मन ते पावक मंगवाई  
 चिता खाइ कह्यो तेहि पाहीं ॥ रघुपति तजि गति दूसरि नाहीं



नौ जल सरिस होउ तुम केश ॥ अस कहितामैं किये प्रवेश  
 विप्र रूप धरि पावक लाये ॥ प्रभुइ सों पिय प्रसवचन सुनाये ॥  
 राम वाम दिशि आसन द्यऊ ॥ हरि बालु कपि हर बल भयऊ ॥  
 लय रा राम सिय गोभाहरी ॥ निरखि सुमन बरखे सुर भरी ॥  
 हारथ सहित राम पहं ॥ ॥ लवरा सहित प्रभु सीत लवये  
 बोले तव प्रसाद रिपु मारे ॥ मुनि बिनती सुर लोक पधारे ॥ ॥  
 तव विरंचि बिनती बहु कीन्ही ॥ प्रभु पहं प्रीति मोगि सो लीन्ही  
 आइ बिनै तव कीन पुरारी ॥ भल कीन्हे प्रभु बधे सुरारी ॥ ॥  
 मन बाँछित वर मोगि सिधायै ॥ तव सुदेश जर बचन सुनाये ॥  
 नाथ कृपा करि सुर मुनि रंजे ॥ दास जानि सब कंडुख भंजे ॥ ॥  
 अब मोहिं जोन जाय सु देह ॥ करहुं सो मुनि बोले प्रभु येह ॥  
 तात देह कपि भाल जियाई ॥ दिये जियाय प्रमी वर धाई ॥  
 तब लंका पति बचन उचारा ॥ नाथ करिय कहु अंगीकारा ॥  
 कह प्रभु तोर कोश गृह मोरा ॥ मोर कोश गृह तवन निहोरा ॥  
 करहु कल्प भरि राज भिराजा ॥ अंत समय प्रायो मम धामा ॥  
 पुनि बोले पट भूषण लाये ॥ कपि भालुन बहिये वर लाये ॥  
 कह प्रभु होई गहरु विशेषी ॥ मम मन है भरतहि कब देखी  
 लालै ॥ प्रकाश महं जाहू ॥ देह बरसि मिलि हे सब काहू ॥  
 जाइ बिभीषण न भवर सायि ॥ यहिरे यहिरे सब प्रभु पहं जायै  
 नाना जिनिसि देखि कपि भालू ॥ जिहंसि सकल ते कह्यो कपालू  
 तुम्हरे बल मँरि पुरा जीता ॥ भेलं केश मिली मोहिं सीता ॥  
 होई त्रिभुवन सुयश तुम्हारा ॥ पुनि येंहो पर धाम हमारा ॥  
 अबहिं जाहु निज निज गृह भाई ॥ मुनि कपि भालु चलै हर धाई  
 दो० सहित जान की लय रा पुत पुत्य प सब लंका ॥  
 फनि दिन पुष्य क पान बदि चले आपने देण ॥

लखत लखावत बास निज आये दंडक तीर ॥  
मिलि घट जादिक मुनि न कहें पुनि गवने रघुबीर ॥

सो० चित्रकूट में आइ। पर तोषे मुनि साधु सब ॥

पुनि तीरथ पति पाइ। न्हाइ दान दीन्हे हिजन ॥

सो० भरद्वाज कहें मिलि सनमाना ॥ सिंग मेरु पुनि आयउ जाना  
मिला गुहा अति प्रीति समेता ॥ पवन जते कह कृपा निकेता  
जाइ अवध भरतहि सुधि देह ॥ तिन के रहसि कहे उमोहि तेह  
मुनि चलि भे कपिकरि परनामा ॥ आइ रहे तेहि निशिते हि यामा  
इहो सकल शोचहि पुर वासी ॥ आवत हैं की नहिं मुख रासी  
रघुपति विरह अनल सब जाही ॥ सगुण समुझि सुभधी जग रही  
अवधि बीच एकहि दिन जानी ॥ कौशल्यादि मातु प्रकुलानी  
फरादिन रवि भरणी सह चावा ॥ तिसरे पहर गतिक बोलवावा  
यग परि पूछेहु सह अनुरागा ॥ सुनि जोतयो विचारै लागा ॥  
कुण्डलिया तिथि रुयहर संयुक्त करि बारहु तार मिला-  
य। देइ सात कर भाग जो बचै तासु फल गाइ ॥ बचै तासु फ-  
ल गाइ एकते तेहि अस्थाना ॥ दै ते आवन कहत तीन ते  
मग में जाना ॥ चतुर्थ यहुंचे आइ दिग पंचम पुनरावृत्ति  
विधि। षष्ठे व्याधि समेत मुनि मृतक कहें इमि विष्णु तिथि ॥

दो० यहि विचार ते जानिये। आये प्रभु पुर पास ॥

मुनि सब मातन दान बहु दीन्हे सहित हुलास ॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रा-  
म सनेही कृत लंका कांडे रावरा बध और श्री राम  
अयोध्या आगमन वर्णनो नाम ऊनविं-

शोऽध्यायः २६ ॥

लङ्का काण्ड समाप्तः ॥



श्रीगणेशायनमः

# अथ विश्राम सागर

उत्तर काण्ड प्रारम्भः

दो० सुधिरगमसिय सन्नगुरु गणपतिरासुखदानि॥  
सारगमायगाकेरमत कहों इतिहासबखानि  
रहा एक दिन अवधिकार भरत समुक्तिमनमाहिं॥  
लागे शोचन विरह बस धीरज आवत नाहिं॥  
तेहि अवसर हनुमान तहें अये विप्रस्वरूप॥  
रत नाम अवलोकिकें लोले वचन अनूप॥  
जासु विरह शोचत प्रहो आवत सो सम्राट्थ॥  
लषणा जानुकी सहित सुनि प्रमुदित मिले भरत॥  
तात कह्यो सन्देश जस तस कह्यो नहिं जो देहुं॥  
ताते सुनिया आपकर हों में उरगान लेहु॥  
देखि भरत की प्रीति कपि कही गम ते जाइ॥  
सुनत चढ़े प्रभुयान चदि पुर दिगपहुं चे आइ॥  
भरत शत्रुहन सहित गुरु पुर जनसचिव सपाज॥  
लेन सिधायें रघुपतिहि कहि जननिन ते काज॥  
जहें तहें सुनि पुर नारि नर धायें दरशन हेत॥  
एक एक ते कहें तुम देखे कृपानिकेत॥॥  
कोटिन चदि गिरित रु अटनि निरखें व्योम विमान॥  
कोटिन मंगल द्रव्य लैं करहिं राम गुन गान॥  
कुवाडालिया अवध बिराजत आजु यामिनी जिमि-

विरहिनि विय चारु । पति-प्रावत सुनि मुदित मन कीन सु-  
 तन सिंगारु ॥ कीन सुत नसिंगारु कोटि कटि किंकिनि जानो  
 मनि बिद्रुम मय भवन अंग प्रतिभूषण मानो ॥ साजे वस-  
 न सुरंग संग सरि चित्र अनेका । पगनू पुर पुर सार धार ग-  
 ति बाजत एका ॥ चंचल अंचल पानि पताका धुज फह-  
 रही । ग्राम धाम के लोग सकल धाये प्रभु पाहीं ॥ कंच अ-  
 टनि पर छत्र उचकि वितत मत मग फूली । कनक कलस  
 कुच प्रगट मोद बस कंचुकि भूली ॥ भूली कंचुकि मोद ब-  
 सनेत्र भरोषा खरब बंध । एक टकर रहे निमेष तजि ना-  
 रिरूप भय इभि अवध ॥

दो० भरतहि आवत देखि प्रभु त्याग्यो तुरत विमानु ॥  
 सज्जुख चले सनेह बस पठै धनद पहें जानु ॥  
 प्रथम मिले गुरु द्विजन पुनि गहे भरत प्रभु पाय ॥  
 बल करि तुरत उठाइ हरि भेटे हृदय लगाय ॥  
 राम शत्रुहन मिले पुनि भरत लक्ष्मिन दोउ ॥  
 पुरवामी छिनमें मिले बाल बृद्ध सब कोउ ॥  
 भरत शत्रुहन सीय पद परसे पाय प्रशीला ॥  
 पुनि भेटे सब कपिन कहें विप्रन सहित मुनीश ॥  
 बाजहिं बाजन विपुल सुरवर यहिं सुमन सराहि ॥  
 द्वार द्वार प्रति आरती करहिं लोग सब चाहि ॥  
 सुनि सुनि धाई मातु सब ज्यों बच्छा हित धेनु ॥  
 प्रथम केकई भेंदि पुनि मिले सबन सुख देनु ॥  
 एके दिनगे सबन गृह सब के भोजन कीन ॥  
 केहू न जानेह मर्म यह कच उतरावै लीन ॥  
 प्रात सप्रभा दिवस मुनि कह्यो राज पद देन ॥



सुनिष्पुपति सब ऋषिन तेबोले कोमलबैन॥  
 नाथ द्रव्य मद राज मद विद्या मद बपुलेखि॥  
 जोबन मद तहें राज मद सब ते यहै विशोखि॥  
 तेहि पीने कछु सुरबन ही केवल निरे नेवासु॥  
 पुनि चंचल नहि होत निजु ताते चहै न दासु॥

सो० नरतन कर फल एक। कहत वेद बुध आपु सम॥  
 परि हरि काम अनेक। भजै सदा जग दीश कहै॥  
 सुनि बोले ऋषि नाथ। तुम बिन अस को कहै प्रभु॥  
 सो माया तव हाथ। काल कर्म गुण जा सुवस॥  
 जो सुमिरत तव नाम। ते छूटत अभिमान ते॥  
 प्रभु परि पूरन काम। तेहि की होइ श्री राजपद॥

चौ० तेहि ते लेहु राजपद राखा॥ पूजे हम सब की अभिलाखा  
 भले भारि वषट भूषणा साजे॥ धर धर मोद बधाये बाजे॥  
 मंगल दर्वि अनेक प्रकारा॥ लै लै आये अनुग अपारा॥  
 जो जन एक कनक की छोनी॥ नाम धि चंद्र वेदिकालीनी॥  
 ताके बीच महल यकरंभा॥ मनि में चहुं दिशि षोडश रंभा॥  
 कोनेन प्रति सुरतरु तहें आसन॥ तेहि गृह मध्य रत्न सिंहासन॥  
 तेहि पर कमल अष्टदल केरा॥ धरे विविध भाजन चहुं फेरा॥  
 गुरु बशिष्ठ शुभ सम्वत चाहा॥ तेहि ऊपर बैठन हित काहा॥  
 करा डलिया विप्रन श्रीश नवाइ के सिंहासन श्री राम॥  
 बैठे श्री सीता सहित मानौ रति युत काम॥ मानौ रति युत  
 काम किधौ श्री युत भगवाना॥ किधौ तडित युत मेव कि-  
 धौ विद्या युत ज्ञाना॥ किधौ सिद्धि युत बृंहद रविक-  
 ल्य लता प्रद छिप्र॥ छवि सिंगारु ध्रम कीर्ति लखि  
 वेदु उच्चरे विप्र॥ ससि सम छत्र सुकराठ कर चवर

विभीषणा हाथ। लवणा लिहे आर्दश वर अंगद पावन पा-  
 थ॥ अंगद पावन पाथ पात रिपु दल नप बावै। बिंजन क-  
 रत निषाद भरत सब का दिग लावै॥ जामवन्त हनुमन्त  
 कर छरी रुबीली शक्ति असि। वचन सुधारत तरनि तन  
 चंदनु शिर चंद्रिका शशि॥ नाक नदी गुन गव जटी लटी नछ  
 टी धनूप। मटनि उटी नहिं कहु पटी मननि पटी पट रूप। पन  
 नि पटी पट रूप दहि बिछटहि गति ऊपर॥ भटकि मुकर कटि म-  
 टकि लटकि पट कहि पग नूपुर॥ नूपुर पट कहि लटकि  
 छवि लखि मट के बुधि बाका। तान कटी मुनि चट पटी ल-  
 हे मनुज मुनि नाक॥ जान्यो जब अविशेष की आर्द्ध-  
 टिका सिद्ध। प्रथमे श्री रघुनाथ सिर कीन्हों तिलक ब-  
 शिषु। कीन्हों तिलक बशिषु अपर सब तिन क पाछे क-  
 रहिं आरती मातु निछावरि पट अलि आछे॥ विघ्न दी-  
 न्हों दान सोई जेहि जे मन आन्यो। नूपन धरी बहु भेंट  
 बंदि विभुवन पति जान्यो॥ तब बिरंचि कर जोरि के बोले  
 सन्मुख बयन। जय रघुनाथ अनाथ पाति प्रगात पाल सु-  
 ख अयन॥ प्रगात पाल सुख ऐन मगन छवि कोटि बिरा-  
 जे। धन्य भाग्य बड़ तासु लखा जिन याहि समाजे॥ लखा  
 समाजे आज मोहि दान देहु निज भक्ति अब। सुनित थास्तु  
 बेटे पुरह आयि मुदित महेश तब॥ बन्दे हंत्य तब प्रभो संसृ-  
 ताब्धि हृद पोत। परि भवाधि धेयं सदा तीर्थोस्पद सुख सो-  
 त तीर्थोस्पद सुख सोत नुतं कमल जहं रिईशं। प्रगात पाल आ-  
 भीष्ट दोह भृत्यारत खीस खीसं कृत अघ वोष सव्य श्री मुनिमान-  
 दे। गुनागार में पातु सत निस्थाहं बंदे॥ विघ्न रूप धरि वेद तब बोले  
 गित अनूप॥ जय जगदीश अजीस पाति निर्गुण सगुण सत्पु॥ निर्गुण



सगुण सूर्य भूषभवाउताराजे नर तजि तव भक्ति पचत  
जग सुखके कारणा ॥ सुर दुर्लभ तनु पाइ ते पत तनकर्म  
हैं छिप्र। चरणा कमल रति देहु सुनि सबहि नजाने वि-  
प्र ॥ बोले विश्वामित्र तव जय जन बन मन हैस। रघुकु-  
ल कुमुद चकोर शशि शिव धनु रूत विध्वंस ॥ शिवध-  
नु रूत विध्वंशवंश सुत असुर निकंदन। जय सुर नर मु-  
नि पाल काल सब दशरथ नन्दन ॥ दशरथ नन्दन भक्ति  
देहु निज मोहिं अडोले। तब तहं बाल सूर्य आइसन  
काहिक बोले ॥ जय भगवन्त अनन्त अज अनघ अना-  
में एकाकरुणा सिंधु सर्वेश शिव सुख प्रद नाम अनेक ॥  
सुख प्रद नाम अनेक कर मतव पावन कारी। काम कोध म-  
द मोह लोभ गज सिकव खरारी ॥ जगद धिता रन पोत दि-  
द कहत सुनत हरि लेत भय ॥ बसहु सदा मम उर अयन  
सीता लक्ष्मी समेत जय ॥ कह बशिष्ठ कर जोरि सब जय  
प्रभु रूप पुनार। बचन अगोचर बुद्धि पर जाने कहा गंवार ॥  
जाने कहां गंवार परस धर सके नजानी। प्रगट बिन्दु अरु  
नार वेग निज कीन्हिनि हानी ॥ शिव अरधंगिनि दस जा  
धम बस बहु संकट सहा। खग पति काग भसुराड से भू-  
ले तो जड़ नर कहा ॥ सगुण सूर्य भूषभवाउतारा।

दो० आपुजना बहु जाहि सो विन थम लेरि छानि ॥

मम उर करहु नेवास नित यहि समाज सुख रानि ॥

कुराडुलि या यहि विधि सुर नर नाग नृप सबहि न वि-  
वती कीनि। तब रघुपति सब कपिन कहें निज पर सादी  
दीनि ॥ निज पर सादी दीनि सुकुट लंका पति पावा ॥ कुंड-  
ल लहे सुकुराट भालु हनुमत गर नावा ॥ पीताम्बर

युव राज कहें दीन्हो जामा रिछ पहि ॥ श्योरो गहन मंगाइव-  
 पु बच्यो न कोई भांति यहि ॥ सब विधि सबहि प्रसन्न करि  
 बोले मुनिते रामा विपति मांझ सखा सब आये मेरे काम ॥  
 आये मेरे काम नाम जिन केर बताये । तिन जो कीन पुरुषा-  
 र्थ ता सुसह प्रीति सुनायो ॥ भरत हु ते मोहिं अधिक प्रि-  
 व देहुं कहा अपस कवनि निधि । लषणा चरित का कहउँ  
 जिन सेवा कीन्ही सकल विधि ॥

सो० सुनत सभा हरयानि । जय कहि सुरवरखे सुमन ॥

शरणा सुखद प्रभुवानि । पहिरे पद भूषणा बहुरि ॥

छं० पुरवासी नर नारी जे कहैं कि आज विशेषि । नयन  
 सफल करि लीजिये रघुपति छवि देखि । नीलजलद मनि  
 सरिस बमुदिन करमनि सम तेज ॥ कोटि मनौ भवतै रुचिर  
 राजत मनि मेज ॥ रतन जटित मनि मुकुट सिर जग म-  
 गत अपार । श्रुति कुंडल निज केतु के दीन्हें जनु मार ॥  
 भृकुटी ललित लिलार में दिहे तिलक सुभास । जनु  
 लाये अलि रवि किरिनि हित कमल प्रकास ॥ चंचल  
 चारु विशाल हृग मधि प्राणा सो हाव । मानहुं विविधं ज-  
 न लरे सुख करत बराव ॥ श्याम सुकेश प्रसून धर ज-  
 नु मनि युक्त नाग । उत्तरे सुख शशि अमी हित लखि रिपु  
 डर लाग ॥ बिंबा दाड़िम दसन मदि रसन सुरंग ॥ कमल  
 कोस में कुलिस जनु बसे दामिनि संग ॥ मंद हास बोल  
 त मधुर खायै मुख पान । धर कृपा दृष्टि की बृष्टि सों करै  
 अमी समान ॥ कुंबु कंद कौस्तुभ लसे मुकतन की माल  
 पयद मध्य सोही मनो वग पैति विशाल ॥ भुज अप जानु-  
 वर जनु बही युग यमुना वार । धनुशर तट भूषणा भंवर



कर कंज उदार ॥ असित शयल उपवीत उर बोदे उपवीत ॥  
 लसत क्षीर सरिता मनो लपला लखि मीत ॥ नाभि शिरसि-  
 त्रिवली सुपथ रोमालि सेवाल ॥ कटिके हरि हरि किंकि-  
 री जनु मुरवर मराल ॥ कदलि जंघ युग गुलफवर नूपुर अ-  
 नमोल ॥ पुरट पदुम के कलिन में जनु अलिगत बोल ॥  
 अरुणा चरणा चिर चिन्ह युत युग पद जन रवाभ ॥ श्यामर-  
 क्त हरि हलनि जनु बेचे जल दाभ ॥ विधि हरि हर ध्यावत  
 जिन्हें सुनि गनत जि साथ ॥ तिन पायन में प्रीति दृढ चा-  
 है जन रघुनाथ ॥

**दो०** यहि विधि नख सिख रूप लखि मुदित होए सब कोए ॥

एक एक ते आइ गृह बोली बूझेउ सोइ ॥

चौ० हे सखि आजु राम छवि देखी ॥ नयन न मम परि हरी नि मेखी  
 तहें पुनि बसब अंग प्रभु कोरे ॥ अद्भुत रचना हेरी नेरे ॥ ॥  
 युगल कंज दस दलतिन माहीं ॥ बसत मराल उड़त ते नाहीं  
 पिक बक कीरलाल मिलि डोलें ॥ बैठे घेरि चहें दिशि बोलें ॥  
 तिन के मध्य मयन रथ कोरे ॥ चक्र विराजत मेनि मय हरे ॥  
 कमल नाल रति गल की हासा ॥ रंभा तरु तेहि ऊपर बासा ॥  
 तेहि पर राज करि पर मृग राई ॥ दिव्य बसन ते दीन उदाई ॥  
 हरि पर सर मधि भवरु बिराजै ॥ विविध बरणा के पंछी राजै  
 सर पर कनक केर गिरि दोई ॥ तिन पर रहा नील घन सोई ॥  
 तेहि पर सुमन पंचरंग फूले ॥ तामधि बैठि पोर वा भूले ॥ ॥  
 तेहि पर कुसुम कुसुम परि अलि मुत ॥ तेहि पर युग बिंबा फल अद्भुत  
 तेहि पर सुक अति से लागत भल ॥ लीले पल्लव वोच सहित फल  
 सुक तर पिक ऊपर बिबि रंजन ॥ रंजन पर धन पर शशिरंजन  
 इत उत दिन मनि उदित सोहाये ॥ मानहुं शशिसहाय हित शाये

शशि ऊपर बहु नखत सोहावन ॥ इन्दु मइन्दु लसत मन भावन  
 तेहि पर गिरि गिरि परवन सोहे ॥ तेहि बिचलाल पंथ मन मोहे  
 तेहि पर मनि धर नागिनि देखी ॥ तेहि अध दीरघ सरिता पेरौ ॥  
 तेहि ते बही सरित युग जोई ॥ जल चर विपुल विविधि विधि सोई  
 फूले कमल मिथुनयक संग ॥ कीड़त बिहंग जानि बहु रंगा ॥  
 सुनत सखी सो देखन धाई ॥ मुदित भूप के मन्दिर आई ॥ ॥  
 दम्पति रूप देखि हरथानी ॥ आई भवन तोरि तूरा पानी ॥  
 दो० यहि विधि सायंकाल भोरहे दीप पुर धारि ॥  
 मनहुं शेष आयै मिलन किधौ धरनि सुत धारि ॥

चौ० तब मुनि मुदित जाय सुदीन्हा ॥ संध्या बंदन सबहिन कीन्हा  
 राज सभा पुनि बैदे आई ॥ हरयि पहर भरि रयन चिताई ।  
 सेवक आई कही तब बाता ॥ चलहु भवन प्रभु बोलत माता ॥  
 उठे तुरत पुरजन शिरु नाई ॥ गे निज भवन जाय सु पाई ॥  
 आयै रघुपति जहें महें तारी ॥ अनुज सिया युत कीन बियारी  
 अपचवन करि पुनि बीरी खादी ॥ हनुमदादि जन लिहिनि प्रसारी  
 बोला सुख चलि सोवहु श्यामा ॥ आयै तब प्रभु कंचन धामा ॥  
 देखि सरिवन हंसि पाइ परधारे ॥ मनि में अद सिल्या बैदारे ॥  
 सुक सुगंध मेवा पकवाना ॥ धरे कनक भाजन भरि नाना  
 सुर नर नाग मुता अनुरागी ॥ नृत्य गान मिलि करने लागी ॥  
 देखत हीगे सोइ कपाला ॥ लखि प्रभात बोला तब साला ॥  
 उठहु नाथ जग नाथ हमारे ॥ बिधि हरि हर मुनि रादे द्वारे ॥  
 मिलि सबहिन कहें दर्शन दीजै ॥ याचक सकल अजाचक कीजै  
 बिहंग बचन मुनि उठे खरारी ॥ देखि सरिवन आरती उतारी ॥  
 प्राति सहित दातूनि कराई ॥ मिले सबनि पुनि द्वारे आई ॥  
 बिप्र न दान देइ बहुरंगा ॥ सेवक सरवा अनुज लै संग ॥ ॥



जाइ कीन सरजू असनाना ॥ देखि लोग सुख लहैं निदाना ॥  
 पूजन करि पुनि मंदिर आये ॥ सुदित मातु तब असन कराये  
 कछु क बार करि सयन कृपाला ॥ पुनि सब मिलि आये नृपशाला ॥  
 राम राज बड़े जब तेरे ॥ त्रिभुवन दुःख मिटे सब केरे ॥ ॥  
 काम धेनु भय भूमि सो हारि ॥ सांगे मेघ देइ जल आई ॥ ॥  
 चारिहु बरज धर्म निज चरहीं ॥ कोउ काहू ते बर न करहीं ॥  
 बाल ब्रह्म चौवन नर नारी ॥ सब के प्रभु पद प्रीति अपारी ॥  
 रघुपति चरित सुने नित कहई ॥ परमानन्द मगन सब रहई ॥  
 अजहूं जे हरि पद मन लावै ॥ राम राज कर सुख ते पावै ॥  
 रघुपति चरित सुने जे कहहीं ॥ निश्चेते अपच्यय पद लहहीं

**दो०** राम चरित बिचित्र अति कहि कोइ लहै किशार ॥

सुख प्रद निज मति सरिस में तुम्हें सुनाये सार ॥

सुनि हरखे श्रोता सकल धन्य भाग्य निज जानि ॥

कहत दास रघुनाथ अब सहित जोरि युगपनि ॥

हे प्रभु सीता नाथ तुम जस फुर मायौ मोहि ॥

तस में भाख्यौ ग्रंथ यह सो अरपत हौं तोहि ॥

श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि माथ ॥

राम चरित सुख प्रद कछु क वर ने जन रघुनाथ ॥

**तोमारुं०** श्री राम चरन प्रताप ॥ कछु कीन किरी आप ॥ ते-

हि नाथ चरित सिरवालि ॥ अब कहत गुरु पर नालि ॥ + ॥

**कविन** श्री रामानुज संप्रदाय द्वारा अग्र दास जू को तहो  
 के महन्त मे गोविन्द राम जानिये ॥ तिनहीं के शिष्य सन्त दा-

सतस्य कृपा राम कृपा राम जू के राम चरन पिछानिये ॥ राम

चरण जू के राम जन्म तस्य कान्ह रमे कान्ह र के शिष्य हरि

राम को बरवानिये ॥ हरी राम जू के देवा दास राम नाम भाल

देवा दामजू के रघुनाथ मोहिं जानिये ॥

दोहरहृ हमारे रामसिय राम नाम प्रिय भाल ॥ ॥

राम रकार मकार है बिन्दु जानुकी लाल ॥

पावन को पावन करन शिव को धनुमुनि परी ॥

सुचिसतन के प्रान है राम नाम दोउ बगी ॥

विविध ग्रंथ बहुविध सुमन मममति मारो जानि ॥

विश्रामोदाधिग्रंथ मधुकीन इकट्टे आनि ॥

स्वस्वमधुर आरोग्य सुचि आवत सब के कस ॥

जतन किहे सह जे मिले नाहित महेगे दाम ॥

कथा रामिक जे संत जिमि गुन गाही रस चोर ॥

ते आहरि हैं ग्रंथ यह देखि परिश्रम मोर ॥

लहि हैं सुख सम्पति विविध जे हैं भिरिति हुं ताप ॥

चारों मुगं में प्रबल है रघुपति भक्ति प्रताप ॥

कुं० अति प्रबल भक्ति प्रताप सब पर ईश जेहि निज ब-

स करे। कलिकाल हू हरि भजन करि बहु जीव भव सा-

गर तेरे ॥ सरबज शंभु बिराग मुनि जप योग तप प्रेमी

जने। सब कोष जामुनि बर्जि शुचि नव नन्द गोपा दिक

घने ॥ अहि नाथ सुरु तरु तरनि नीवा दित्य तम भ्रमहा-

रेहू। सम मेघ मध्वाचार्य स्वामी बिष्णु वोहित तारेहू ॥

गुरु निष्ठ लाला चार्य रामानन्द श्रीरङ्ग रंगियो। पयपा-

नकृत की लाग शंकर नाम सुर पारस वियो ॥ जय देव

श्रीधर बिन्द मङ्गल जान देव विलोचन। भय जासु से-

वक आइ श्री पति प्रेम बस दुख मोचन ॥ एय रूप बल्ल-

भ भूपजन जेहि राम सिय दधि मे लखे। विविध कूवा

गदा धर हर प्रेम निधि मङ्गल सखे ॥ गति गूढ़ हरि अनु-



करन राजहि पानि पुर खातम दियो ॥ प्रिय लागि कर्माके-  
 रि स्वीचरि बोलि निज मंदिर लिये ॥ सिय दूक भजि नि-  
 ज सुतन बिये दे प्रभुइ पिय वाई भई ॥ हरि हंस मामा भा-  
 नजे सद बुनिकी कसनी लई ॥ भई भुवन की अपसि सा-  
 रकी सित केश देवा हित करे ॥ दियो दाह काम ध्वज क-  
 लेवर प्राइजे मल दिशि लरे ॥ घर दीन महिषी गोपकी  
 द्विज हेत चलि साखी भरी ॥ शिर नयो गनिका काज शक्ती  
 दास लागि निज उर धरी ॥ सुख पाव सुन्दरि राम कहि रे दा-  
 स हरिहि बोलाय हू ॥ वहु वार राम कबीर हित धनु दीन ब-  
 र दी लाय हू ॥ बिन बीज जामेहु धना को शशि सैन हित  
 छुर हरि गही ॥ रघुनाथ माधो दास जनको सौच कर वा-  
 यो सही ॥ हरि व्यास देविहि दीनि दिष्टा नर हरी समधी  
 लई ॥ त्रिपुरारि तत्वा जीव नित्या नन्द नामा अपन भई ॥  
 भूगर्भ देव मुरारि गज गोविन्द गिरधर को सरवा ॥ गोपाल  
 रूप सनात नातद दीन नग लीन्हे लखा ॥ बिठि लेश ला-  
 खा भक्त नरसी खलनि बहु पर चै दये पर मार्य के रसरू-  
 प पीपा पतित बहु पावन किये ॥ कोतल के सौ भद मीरा  
 लीन गिरधर में भई ॥ रतना वती कर मैति भक्ति गरौ शदे  
 दूद करि गई ॥ चतुरोग तुलसीदास पावन राम जस जिन  
 उर धरेहु ॥ कविकुल लखरा प्रयाग जूड़े युगुल हरि जन आ-  
 दरेहु ॥ भे और हू बहु सन्त अवजे अहे आगे होइ है ॥ र-  
 घुनाथ तिन के चरित सब कहि सके नहि अस कोइ है ॥  
 जिमि स्त्रीर सिंधु अपार खग निज चोच सम भरि पावही ॥  
 तेहि भौति कवि निज मति सरिस हरि सन्त जन गुन  
 गावही ॥ ॥ ॥

कुंडलिया अहो सन्त भगवन्त गुरु बिने करहं मम  
 कान। चहों नमहि सुखदेव सुख बिधि सुख पुनि निर्वाण।  
 बिधि सुख पुनि निर्वाण गिद्धि सिद्धि सकल धरीजै। जहं  
 राखो प्रभु मोहिं तहां निज पद रत दीजै॥ दीजै पुनि स-  
 त संग जहं तव गुन सुन वाको लहों। भक्ति बिमुख कर  
 बदन जनि देख रायो सुख प्रद अहों॥

चौ० अयन तीसरे संख्या गाई॥ युग सहस्र नव सैं हैं भाई।  
 और सतत्तर जानो जोई॥ इतनी हे चौपाई सोई॥ ॥  
 दोहा पांच सैं साठि सब जानौ॥ नव्वे सोरठ सोड पिछानो  
 हे छप्पे बावन यहि भाही॥ गितिका छन्द वन्ता लिस आही  
 चौबोला युग यामे होई॥ मंजु छन्द एक सुन्दर सोई॥  
 छंदे हैं मुनि कहा सोहाई॥ कुराडलिया मोहि बीस लखाई  
 टोटक एक एक दगड़क जानौ॥ कमल एक एक तोमर मानौ  
 रोला वेद वेद असोका॥ रुद्र त्रिभङ्गी छन्द बिलोका॥  
 एक मालिका यामे भाई॥ संख्या अयन कहा में गाई॥

सो० महिखर छन्द जो एक। युग नराच छंदे अहैं॥  
 भुजग प्रिया ता एक। एक कवित यामे विशद॥  
 दो० जो कछु देख्यो चूक मम हृस्यो जानि अज्ञान॥  
 पराधीन जग जीव सब जानी इक भगवान॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री मज्ज गज्ज-

न निजनक जानकी राम स्थानु गानु गोहं श्री  
 राघुनाथ दाम राम सनेही निर्मित विश्राम-

॥ मसागर ग्रंथः समाप्तः॥



(१)

प्रस्तावली १

(२)

कमल सहादेव हंस	कुन्द यमराज गरुड़	नेवारी हनुमान पपीहा	दुपहरिया इन्द्र गीध	गुलाब हरि सुवा	निवारी हनोमान पपीहा	कदम्ब सूर्य होरिल	दुपहरिया इन्द्र गिद्ध
बेला राम मैना	केवड़ा गरीश कोयल	गुल्दावरी शनिश्चर खूसट	पियावासा भैरों बया	बेला राम मैना	भोतिया कृष्ण बाज	गुलाचीन शत्रुहन सुरेला	गुल्दावरी शनिश्चर खूसट
कलगा भरत टीटीरी	सुदर्शन पवन भरद्वल	गुल्मेहरी जल खड्गरेचा	नरगिस शारदा चंडूल	चमेली ब्रह्मा काग	जृही पावक चकोर	अनार नरसिंह तीतर	गुलाबास बृहस्पति शारदूल
कंदयल अन्न गरावा	मरुवा शुक्र कटनास	गुलफिरा अश्विनीकु तृती	सेवती स्वामका सारस	कलयर अन्न गरावा	मरुवा शुक्र कटनास	नरगिस शारदा चंडूल	गुलफिरा अश्विनीकु तृती

(४)

(८)

चौदली सीता लाल	कुन्द यमराज गरुड़	गुलाला गुरुजन कठफोरा	भोतिया कृष्ण बाज	गेंदा लक्ष्मी बकुला	केवड़ा गरीश कोयल	कदम्ब सूर्य होरिल	दुपहरिया इन्द्र गिद्ध
चमेली ब्रह्मा काग	निवारी हनुमान पपीहा	कलगा भरत टिटीरी	गुलमेहरी जल खड्गरेचा	गुलाला गुरुजन कठफोरा	भोतिया कृष्ण बाज	पियावा भैरों बया	नरगिस शारदा चंडूल
गुडहल देवी महरी	जृही पावक चकोर	केतकी मुनि बटेर	सेवती स्वामका सारस	कलगा भरत टिटीरी	चंम्पा बुध बुलबुल	केतकी मुनि बटेर	सेवती स्वामका सारस
कनैर अन्न गरावा	मरुवा शुक्र कटनास	गुलाबास बृहस्पति सारदूल	गुलफिरा अश्विनीकु तृती	कनैर अन्न गरावा	अनार नरसिंह तीतर	गुलाबास बृहस्पति शारदूल	गुलफिरा अश्विनीकु तृती

हरिसिंगार चन्द्रमा कबूतर	मुद्गर्शन पवन भरदूल	गुलाचीन शत्रुहन मुरेला	गुल्दावरी शतीचर खूसट	अंगुलीएवकारइस प्रश्न कोनि- कालते हैं ॥
गुडहल देवीजी महारि	गुल्मेहरी जल खड़ोचा	पियाबा भै-रां बया	नरगिस शारदा चंडूल	१ २ १३ ८ २६ २४ ३१ २३ २८ ११ ७ ५
जूही पापक चकोर	चम्पा बुध दुलबुल	केतकी मुरवर बटेर	सेवती स्वामका मारस	१७ १४ २० २७ १८ ५ ८ १८ ४ २२ ५ ५
मरुवा शुक्र कटलास	अजार नरसिंह तीतर	गुलाबास हहस्पति शारदूल	गुलाकि अश्वनीकु नूती	३ २६ १६ ६ ३० ५ १५ १० १२ २५ २१ ५

### श्रीगणेशायनमः

बंदि गाराधिप शारदा रामसिया गुरु बिल्लु ॥  
 हरि शेरित रघुनाथ जन बरणात मानस प्रल्लु ॥१॥  
 कह महेश प्रभु पद कमल भज कुरि भेष मराल ॥  
 है है मंगल लाभ बहु मिटि है सब दुख हाल ॥२॥  
 जैमारंग गुलाब का तैसा यह संसार ॥ ॥  
 कह हरि मति मूलै सुवा यामें दुख अपार ॥३॥  
 यदि मैना बैदि में पस्यो अबतै सुमिरहु राम ॥  
 जब वह बेला आइहैं तबहीं सरि है काम ॥४॥  
 कह सिय पिय गुन लाल से सुयश चौदनी छाया ॥  
 मिलत मोद गावन सुनत गनत बिपति सब जाय ॥५॥  
 कुंद सरिस तन आउ बदि लक्ष्मि मता भल कुल नीक ॥



कहत धर्म करि गरुड़ पति भजे होइ सब वीर ॥ ६॥  
 काक भक्ष को त्यागि कै लीन चमेली बास ॥ ॥  
 कह बिधि अस सत संग है करु पूजी सब आस ॥ ७॥  
 सुमिरि नाम चानूक सरिस मनका मेल निवारि ॥  
 कर तल तेरे चारि फल कह हनुमान पुकारि ॥ ८॥  
 जिन करि नू मुख चहत है तिन ते होई दुख ॥  
 बक गेंदा सम कुटिल तजि श्री पति मन मुख सुख ॥ ९॥  
 बुद्धि मान गणपति सरिस बोलत कोकिल बैन ॥  
 भजहु हरिहि है केवड़ा तुम सम को मुख ऐन ॥ १०॥  
 मित्र मिली होरेल मिली सम्पति मिली कदंब ॥  
 भूलेहु जनि रुपनाथ को मतिहि दुखायो अम्ब ॥ ११॥  
 कीन किया जिमि गोधि की तर्ज्यो इन्द्र सुत जानि ॥  
 तासु चरन दुपहर सरिस भजु नू मुख की खानि ॥ १२॥  
 सबहु गुरु जन प्रीति करि फूली मुद पुत्ताल ॥  
 कठ फोरवा सम गिषु मिदो मिली सुहृद सुत बाल ॥ १३॥  
 भरत रहनि धरु हृदय मह तजु दीडी सुत मूल ॥  
 कलगा भक्ति बड़ाये निशि दिन मंगल मूल ॥ १४॥  
 गई ताहि अब भखै मति रही ते भजु नंदलाल ॥  
 काल बाज सिर सूझ नहिं पक्षो सोतिया जाल ॥ १५॥  
 कर्म कृषी अलि कीजिये जेहि उपजे मुख अन्न ॥  
 चुगहि गरगवा जीवतब होइ न कैं दयल मन्न ॥ १६॥  
 सोम परबा काल खै करु तू हरि अंगार ॥  
 देखु नयन भरि मुखद छवि सहि अब सर एहि वार १७॥  
 भरुही के अंडा वच्चे बच्चो पवन सुत जानि ॥  
 तिमि तू बचि मुख भोगि है सुमिरु सुदर्शन पाति ॥ १८॥  
 गुला वीन कर हार करि रिपु हंतहि पहि राड ॥  
 यहै विजे विनोद यश धार तोर मति गाड ॥ १९॥  
 बसै शरीर पाय तेहि फिरे दावरी जैस ॥  
 बिन हरि सुमिरे मुख नही खोउ नख मटवैस ॥ २०॥  
 गुड़ हल सम तन हरि भगति देवी शीस चहाउ ॥

होइ सिद्धि कल्याण जेहि महारि सुवन यश गाउ ॥ २१ ॥  
 दुस मुख आवत समय पर ज्यों खंजन ऋतु पाइ ॥  
 आनंद जलवारयत उठी गुल्मे हरी हरि आइ ॥ २२ ॥  
 जूही अपने मित्र हिन पावक खात चकोर ॥  
 जो हरि सुमिरे शीति ते क्यों न होइ भल तार ॥ २३ ॥  
 नारि खहरिया सरिस हे छू मति मन कट नाश ॥  
 मरुवा पकारि फुलाइ है कवि कौटो की आश ॥ २४ ॥  
 ज्यों मधुकर चंपहि तजै त्यों तूतजि यह काज ॥  
 बुलबुल से लड़ि जाइ हों कह बुध फिर बन राज ॥ २५ ॥  
 बिन बर्या धन समुझि घर दीने वयन विसारि ॥  
 पिया बास तव तिम तजा भैंरों आस निवारि ॥ २६ ॥  
 तीतुर त्यगे प्राण निज गा अनार तरु सूरि ॥  
 नर सिंह को करु आदि अब तू मति काहुइ दूरि ॥ २७ ॥  
 सुमिरि शारदा के चरण बटै न क्यो चंडूल ॥  
 नर गस करि का करहि गे जो ईश्वर अनुकूल ॥ २८ ॥  
 रहिये रहनि बटेर की चाहिये सुयश गजारि ॥  
 लहे केत की बास किमि मुनिवर कहत बिचारि ॥ २९ ॥  
 शारद बद को आदिकरु है सो मंगल खानि ॥  
 स्वाम कार्तिक रत जेहि शंभु सेवती मानि ॥ ३० ॥  
 गुला बास की आस तजि शारदूल को ध्याउ ॥  
 होइ मुख परदेश में कहत बृहस्पति जाय ॥ ३१ ॥  
 गुलफिरंग फूली बिपनि भई कृपण के दर्वि ॥  
 कह रवि मुत हरि बिन ब्रथा तूती बोलै अर्वि ॥ ३२ ॥  
 श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि माथ ॥  
 बरौं मानस प्रभु यह पूरा जन रघुनाथ ॥ ३३ ॥  
 देव सुमन अरु खगन के नाम जानि यक तीस ॥  
 पंच धाम कोठा असी अंक पाँच तिन शीस ३४ ॥  
 सकल सुनावै नाम जो धाम मध्य दहराइ ॥  
 अंक जोरि दोहा समुझि सगुनहिं देउ बनाइ ॥ ३५ ॥



नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
छन्दोसविपिंगल	होहावलीरत्नावली	ज्ञानचालीसी
कविकुलकल्पतरु	गोकर्णसहान्त	मनमोजचरित्र
रसरज	हनूमानवाहुक	सोदागरलीला
सत्सईसटीक	जनकपञ्चीसी	विनयप्रकाश
सभाविलास	वनयात्रा	वैद्यकवेदान्तआदि
तुलसीशब्दार्थप्रकाश	कल्पसूत्र	योगवाशिष्ठ
प्रेमरत्न	समरबिहारविद्रावन	प्रबोधचन्द्रोदयनाटक
युगलबिलास	बिहारविद्रावन	सांख्यतत्त्वकोमुदी
चित्रचन्द्रिका	अनेकार्थकोष	रामाभिषेकनाटक
बारहमासाबलदेवप्र-	स्त्रीदर्पणा	कैवल्यकल्पद्रुम
सादछत	शृङ्गारप्रकाश	ज्ञानन्दाऽमृतवर्षिणी
जगद्विनोद	शंकरदिग्विजयभाषा	निषण्ठभाषा
रामप्रकाश	ब्रह्मसार	अमरविनोद
लावनीवशेरबनारसी	परमार्थसार	वैद्यजीवन
शृङ्गारवन्तीसी	बारहमासाफकीरअ-	श्रीयधसंग्रहकल्प-
शिवसिंहसरोज	लाबरक	वल्ली
नानार्थनौसंग्रहावली	सुन्दरीचरित्र	अमृतसागर
शनिश्चरकीकथा	रामकलेवा	अमृतसागरवही
ज्ञानमाला	गंगालहरी	वैद्यमनोत्सव
गोपीचंदभरतरी	कथाचित्रगुप्त	ज्योतिष
कथाश्रीगंगाजी	भजनावली	जातकचन्द्रिका
अवधयात्रा	रुद्रबाललीला	जातकालंकार
भरतरीगीत	कायस्थदर्पणा	सैवज्ञाभरणा



नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ज्ञान स्वरोदय	याज्ञवल्क्यस्मृति	जातकालङ्कार
रमलसार	ब्रतार्क	षट्पञ्चाशिका
इन्द्रजाल	निर्मयसिन्धु	मुहूर्तगणपति
सामुद्रिक	लघु कौमुदी	मुहूर्तचित्रामणिसटीक
मुहूर्तचक्रदीपिका	सिद्धान्त चन्द्रिका	मुहूर्तमार्तण्डसटीक
संस्कृतपुराणस्मृति	अमरकोष प्रथमकांड	मुहूर्तदीपक
व्याकरण इत्यादि	अमरकोष भा. टी. स.	होरा मकरन्द
श्रीमद्भागवत पुराण	सन्ध्योपासन	शीघ्र बोध सटीक
मार्कण्डेय पुराण	संग्रह शिरोमणि	मुत्तफरकात
भविष्योत्तर पुराण	शिवार्चन	विश्वविनय
महितीया	कायस्थ कुल भास्कर	अक्षरावली
श्रीसत्यनारायणकथा	कायस्थ धर्म निरूपण	सत्यस्वोध
भगवद्गीता	मथुरा सभा	ज्ञान चालीसी
श्रीभगवतीगीता	तुलसीतत्व भास्कर	बाला बोध
भगवद्गीता विष्णुसह-	श्रीगोपाल सहस्रनाम	विद्यार्थी की प्रथम पु-
स्रनाम सहित	शार्ङ्गधर सटीक	स्तक
दुर्गापाठ सटीक	गीतगोविन्द भा. ति. स.	गणित कामधेनु
दुर्गा पाठ स्तोत्र	ज्योतिष	लीलावती भाषा
महिम्न स्तोत्र	जातका भरण	पटवारियों की पुस्तक
अपराध भञ्जन स्तोत्र	पाराशरी सटीक	चार भाग
मनुरस्मृति उर्दूटीकास	दृहज्जातक सटीक	पद्मावत
हारीतस्मृति	लघु जातक	इति









one  
24